मानविकी पारिभाषिक कोश
ENCYCLOPAEDIA OF HUMANITIES

मनोविज्ञान खण्ड : Psychology

मानविकी पारिभाषिक कोश
ENCYCLOPAEDIA OF HUMANITIES

मनोविज्ञान खण्ड
PSYCHOLOGY

कोश के सम्पादक

डॉ० नगेन्द्र

आचार्य तथा अध्यक्ष

हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

इस खण्ड के सम्पादक

डॉ० पद्मा अग्रवाल

मनोविज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

लेखक-मण्डल

डॉ० कृष्ण शिवरामन

डॉ० हरिशंकर अस्थाना

राममूर्ति लुम्बा

शंकर शरण श्रीवास्तव

अयोध्या प्रसाद अचल

राजकमल प्रकाशन

विदेशी शब्दों के उच्चारण का विधि निर्देश

देवनागरी के स्वर और उनकी मात्रायें कुछ विशिष्ट स्वरों या स्वरसमवायों के लिए उद्दिष्ट संकेत नहीं देतीं। ऐसे स्वर प्रायः देवनागरी के स्वरों के अर्द्धमात्रिक रूप हैं। इन्हें व्यक्त करने के लिए रोमन लिपि में प्रयुक्त सम्बन्ध चिह्न (') का प्रयोग इस कोश में किया गया है। नीचे दिये गए कुछ उदाहरण इस प्रयोग के उद्देश्य को, और उद्दिष्ट स्वरोच्चार को, स्पष्ट कर दें। aid = एड, add = ऐड, press=प्रे'स, vocabulary= वो'कै'बुलरी, इत्यादि। देवनागरी की (ऐ= ै) मात्रा का 'भैया' या 'मैया' वाला उच्चारण अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी रूप में, इस मात्रा के लगाने पर भी, कहीं भी उद्दिष्ट नहीं है।

इस चिह्न (') का इस उद्देश्य से प्रयोग करने का सुझाव केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के श्री भगारत्न पाण्डेय ने दिया, जिसके लिए हम उनके आभारी हैं।

प्रथम संस्करण, 1968

मूल्य : पन्द्रह रुपये

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, नवीन प्रेस, दिल्ली 6 द्वारा मुद्रित।

मानविकी पारिभाषिक कोश

वक्तव्य

भारतीय भाषाओं में सामान्यतः, और हिन्दी में विशेषतः, स्वातन्त्र्योत्तर युग बड़े द्रुत और गतिशील निर्माण एवं विकास का युग रहा है। वास्तव में, स्वतन्त्रता-संघर्ष का युग हमारे यहाँ बौद्धिक पुनर्जागरण का भी युग रहा है। इसी बौद्धिक उन्मेष की परिणति वाङ्मय के सर्वांगीण विकास में हुई और हो रही है। हमारी भाषाओं में ज्ञानात्मक साहित्य का जैसा विकास विगत १७ वर्षों में हुआ है, वैसा शताब्दियों में भी नहीं हुआ था। निस्सन्देह इससे भाषा की प्राणवत्ता, उसकी अभिव्यक्ति-क्षमता और जीवन के विविध क्षेत्रों में उसके प्रयोग का विकास-विस्तार हो रहा है।

शास्त्रीय वाङ्मय के सामान्य अभाव के अनुरूप ही हमारे यहाँ कोश-कला भी अत्यन्त अविकसित अवस्था में रही है। अनेक ऐतिहासिक-मनोवैज्ञानिक कारणों के फलस्वरूप हमारी भाषाएँ एक विषम चक्र में फँसी रही हैं—पारिभाषिक शब्दावली का अभाव रहा, इसलिए शास्त्रीय साहित्य का निर्माण नहीं हुआ; इसलिए पारिभाषिक शब्दावली का विकास नहीं हो सका; शास्त्रीय साहित्य नहीं, इसलिए हमारी भाषाएँ शिक्षा का माध्यम नहीं बन सकतीं; अपनी भाषाएँ शिक्षा का माध्यम नहीं, इसलिए हमारे यहाँ शास्त्रीय साहित्य का लेखन नहीं हो रहा'''आदि। बौद्धिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यही स्थिति रही है—और दुर्भाग्यवश राजनीति के प्रताप से आज भी यह निष्फल तार्किक मीमांसा यथावत् होती चली जा रही है कि वृक्ष का उद्भव पहले हुआ अथवा बीज का।

मैं समझता हूँ आज की स्थिति में सबसे बड़ी आवश्यकता है शास्त्रीय साहित्य के सर्वांगीण विकास की। यह क्षेत्र ऐसा है जिसमें सहकारिता के आधार पर अनेकविध अभावों की पूर्ति के प्रयत्न किए जा सकते हैं और किए जाने चाहिए। 'मानविकी पारिभाषिक कोश' इसी प्रकार के प्रयत्न का फल है। *'मानविकी' शब्द का प्रयोग हमने 'ह्यूमैनिटीज़' के पर्याय के रूप में किया* है। 'ह्यूमैनिटीज़' बड़ा सुनम्य शब्द है, जिसकी परिभाषा एवं अर्थ-विस्तार की रेखाएँ उतनी सुनिश्चित, सुनिर्धारित नहीं हैं, न जिसके क्षेत्र की व्यापकता के विषय में सर्वत्र एकमति है। एक सामान्य और प्रचलित परिभाषा के अनुसार 'मानविकी' के अन्तर्गत वे विधाएँ आती हैं जो 'मानव के मानवीकरण' में सहयोग दें, अर्थात् जो उसके व्यक्तित्व का संस्कार-परिष्कार करें।

प्रस्तुत योजना की पूर्ति पाँच खण्डों में होगी—ये पाँच खण्ड साहित्य, दर्शन, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र एवं ललित-कलाओं के खण्ड हैं। सम्पादन का भार क्रमशः मुझे, डॉ० वी० एस० नरवणे, डॉ० (कुमारी) पद्मा अग्रवाल, डॉ० श्यामाचरण दुबे और डॉ० सुरेश अवस्थी को सौंपा गया है। सामान्यतः पाँचों खण्डों में एक आधारभूत एकता बनाये रखने का प्रयत्न किया गया है, फिर भी प्रत्येक में विषयानुरूप वैविध्य होना भी अनिवार्य है। किसी भी योजना के विविध

अंगों को कठोर शिकंजे में जकड़ देने से उनमें एक निर्जीवता आ जाने का भय रहता है, इसी लिए हमने एक वृहत्तर वृत्त के भीतर रहते हुए प्रत्येक सम्पादक को अपने विषयानुकूल लघुतर वृत्त में यथोचित गतिमत्ता की छूट दी है। मैं समझता हूँ इससे नई एकरूपता की भले ही कुछ हानि हुई हो, पर अपने विषय एवं विषयगत संकल्पनाओं के प्रति सम्पादक अधिक ईमानदार रह सकेंगे।

'मानविकी पारिभाषिक कोश' स्वभावतः परिभाषात्मक कोश है, जिसमें विविध क्षेत्रों की मूलवर्ती पाश्चात्य संकल्पनाओं के ऐतिहासिक विवेचन एवं स्वरूप निर्देशन के साथ साथ, *यथावश्यक समानान्तर भारतीय संकल्पनाओं के संदर्भ में, तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया गया है।*

प्रस्तुत कोश हिन्दी में अपनी तरह का प्रथम प्रयास है और कहने की आवश्यकता नहीं कि प्रथम प्रयास की दुर्बलताएँ-अक्षमताएँ इसमें होंगी ही। इस प्रकार के बौद्धिक प्रयत्नों में परिष्कार एवं पूर्णता तो क्रमशः ही आती है। अतः विद्वानों से मेरा निवेदन है कि वे इसे वाङ्मय की एक दिशा विशेष में अभाव पूर्ति के प्रथम प्रयत्न के रूप में ही देखें।

—नगेन्द्र

१ १ ६५ प्रधान सम्पादक

मनोविज्ञान खण्ड

Psychology

मनोविज्ञान-खण्ड

: :

मानविकी पारिभाषिक कोश

Ability [एबिलिटी] : योग्यता।

कार्य, समझ अथवा समायोजन की क्षमता। यह दैहिक रचना, बौद्धिक परिपक्वता, रुचि तथा अभ्यास पर निर्भर होती है और परिवेश तथा संस्कृति द्वारा भी प्रभावित होती है। मूल योग्यताएँ दो प्रकार की मानी जाती हैं : सामान्य तथा विशिष्ट। सामान्य योग्यता की धारणा के प्रमुख प्रवर्तक स्पियरमैन (१८६३—१९४५) ने उसे वह क्षमता कहा है जो परीक्षण प्रतिक्रियाओं के सांख्यिकीय विश्लेषण द्वारा सिद्ध तथा निरूपित होती है। इसी को बुद्धि कहने की परम्परा है। बहुत-से मनोवैज्ञानिक बुद्धि को 'शब्द-योग्यता', 'संख्या-योग्यता', 'स्मृति' तथा 'चिन्तन-योग्यता' का समास मानते हैं। विशिष्ट योग्यताएँ बहुत-सी मानी जाती हैं, जिनमे विशेषत 'भाषा-योग्यता', 'गणित-योग्यता', 'यंत्र व्यवहार-योग्यता', 'पठन-योग्यता', 'सामाजिक योग्यता' आदि का अध्ययन किया गया है। प्रचलित विश्वास है कि किसी भी व्यक्ति में कुछ विशिष्ट योग्यताएँ अन्य योग्यताओं की अपेक्षा अधिक मात्रा में हो सकती हैं।

योग्यता का वितरण एकत्रित समूह में प्रायः प्रसामान्य सम्भाव्यता वक्र के सानुरूप हुआ करता है। किसी क्षेत्र मे किसी व्यक्ति की योग्यता का परिचय प्राप्त करने के लिए यह देखा जाता है कि वह उस क्षेत्र के अन्दर अनुकूल परिस्थिति मे प्रयत्न करने पर क्या कर पाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए प्रेक्षणाधारित आंकन अथवा पूर्वनिर्मित मानकीकृत परीक्षणों का उपयोग किया जाता है और योग्यता के भिन्न स्तरों को समूहगत पदों अथवा अकों के रूप में व्यक्त किया जाता है। योग्यता परीक्षणो का व्यावहारिक उपयोग मुख्यतः विद्यार्थियों की योग्यतानुसार कक्षाएँ बनाने मे, औद्योगिक क्षेत्र में उपयुक्त व्यवसाय देने में, वेतन निश्चित करने मे, तथा मानसिक रोगियों के वर्गीकरण, निदान तथा उपचार-निर्णय में किया जाता है। मनोवैज्ञानिकों ने अनुभव, प्रयोग तथा सांख्यिकीय खण्ड-विश्लेषण के आधार पर मूल योग्यताओं की जाँच-परख और निर्णय के लिए उपयुक्त परीक्षणों का निर्माण किया

है।

प्रत्येक क्षेत्र मे विशिष्ट योग्यता भी दो प्रकार की होती है १ निष्पत्ति और २ क्षेत्रीय सफलता या सम्भाव्य योग्यता। व्यक्ति ने जो कुछ करना सीखा है जो ज्ञान अथवा कौशल उसने शिक्षा अथवा अनुभव द्वारा अर्जित किया है वह उसकी निष्पत्ति है। जो कुछ करना वह सीख सकता है शिक्षा अथवा अनुभव प्राप्त करके किसी क्षेत्र मे जो सफलता प्राप्त करना उसके लिए सम्भाव्य प्रतीत होता है वही उसकी क्षेत्रीय सफलता, सम्भाव्य योग्यता अथवा शिक्षा योग्यता है।

Abnormal [ऐब्नार्मल] अपसामान्य, विकृत।

इस शब्द का तात्पर्य है—सामान्य से भिन्न अथवा पृथक्। इस प्रकार का मानसिक पक्ष अथवा व्यवहार की विशृङ्खलता अपसामान्य मनोविज्ञान की विषय-सामग्री है। अपसामान्य की स्पष्ट अर्थाभिव्यक्ति सामान्य' (normal) की परिभाषा देने पर ही स्पष्ट की जा सकती है। 'सामान्य का अर्थ है 'आदर्श क्रिया अथवा 'सर्वाधिक सम्भव अभियोजन। 'सामान्य' का यह अर्थ शरीरवेत्ताओ द्वारा प्रतिपादित किया गया है, परन्तु 'सर्वाधिक सम्भव अभियोजन की परिभाषा नही दी जा सकती क्योकि यह एक व्यक्तिगत तत्व है। 'सामान्य का दूसरा अर्थ है समूह की औसत या मुख्य भावना। यह वस्तुगत एव सत्यात्मक विचारधारा है तथा वैज्ञानिक उद्देश्य के कारण स्वीकृत है। अपसामान्य का तात्पर्य है—प्रमुख भावना से भिन्न। प्रमुख भावना से भिन्नता निरन्तर बनी रहती है तथा आवृत्ति वितरण (Frequency Distribution) मे कोई व्यवधान नही रहता।

Abnormal Psychology [ऐब्नार्मल साइकॉलोजी] अपसामान्य मनोविज्ञान, विकृत मनोविज्ञान।

मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमे (१) विकृत व्यक्तियो की मानसिक प्रक्रियाओ और व्यवहार का तथा (२) अस्वाभाविक मनोवैज्ञानिक तथ्यो का, अध्ययन होता है। विविध मानसिक रोग, उनके कारण और उपचार का इसमे विस्तार से अध्ययन होता है। मानसिक रोग विकृत मनोविज्ञान के मुख्य विषय हैं, इनका सामान्य वर्गीकरण है १ मनोदौर्बल्य (Psycho neuroses) और २ विक्षेप (Psychoses) जिसमे मानसिक हीनता (Mental Deficiency) और अपराध भी निहित हैं।

विकृत मनोविज्ञान के इतिहास मे फ्रास के डाक्टर पीनल (१७४५—१८२६), एसक्वीरोल (१७७२—१८४०), शारको (१८२५—१८९३), और वियना के डॉक्टर सिगमण्ड फ्रायड (१८५६—१९३९) के नाम विशेष महत्त्व के हैं। १७९२ मे पीनल ने पहले पहल यह नया अन्वेषण किया कि विक्षिप्तावस्था एक प्रकार का मानसिक रोग है। यह आसुरी या दैव प्रकोप का फल नही। पीनल ने ही इस मानसिक रोग की व्याख्या के प्रसग मे इसके उपचार के लिए दैविक के स्थान पर औषधि सिद्धान्त का पर्याप्त प्रचार कर दिया था। उनके पश्चात् दैविक प्रभाव की मान्यता ही मिट गई। अब तो मानसिक रोगो पर अलग से अन्वेषण हो रहे है और इस सम्बन्ध मे अनेक सिद्धान्त स्वतन्त्र रूप से प्रतिष्ठित हो चुके हैं। उपचार के लिए प्रमुखत मनोविश्लेषण, निर्देशन, सम्मोहन, पुन-शिक्षण, विश्राम इत्यादि का उपयोग किया जाता है। मनश्चिकित्सा (Psychotherapy) पर्याप्त न होने पर औषधि-उपचार का प्रयोग होता है। इसमे मस्तिष्क शल्य उपचार (Brain Surgery), विद्युत उपचार (E S T), इन्सुलिन इत्यादि विशेष प्रसिद्ध हैं। इस प्रकार अपसामान्य मनोविज्ञान मे मानसिक रोग के कारण वर्गीकरण, निदान तथा उपचार पर विस्तारपूर्वक मनन-अध्ययन

हुआ है ।

Abreaction [ऐ'बृरिऐक्शन] : शोधन ।

यह धारणा मनोविश्लेषण मे फ्रायड द्वारा प्रतिपादित हुई है । शोधन का अर्थ है—दमित स्मृतियो से सम्बन्धित भावों को व्यक्त क्रियाओ अथवा अतिवर्धक संवेगात्मक प्रदर्शन द्वारा निष्कासित करना, जैसे विरोध-भाव की अभिव्यक्ति स्वरूप त्योरी बदलना, गाली-गलौज करना, अपशब्द व्यवहृत करना इत्यादि ।

Abscissa [ऐब्सिसा] : भुज ।

द्वि-पैमिक क्षेत्र के सन्दर्भ मे क्षैतिज अक्ष (Horizontal axis)। किसी भी क्षेत्र मे किसी बिन्दु 'ब' के स्थान को ठीक-ठीक निश्चित करने के लिए एक-दूसरे को समकोण पर काटती हुई दो रेखाएँ—एक पडी (क्षैतिज) और दूसरी खड़ी (उदग्र) खीची जाती हैं । ये क्रमश य-अक्ष (X-axis) तथा र-अक्ष (Y-axis) कहलाती है । अब यदि बिन्दु 'ब' से नीचे की ओर य-अक्ष तक एक सीधी रेखा खीची जाए तो उससे कटनेवाला य-अक्ष का भाग (य-मूल्य) भुज कहलाता है; *और स्वयं उस सीधी रेखा की लम्बाई* (र-मूल्य) बिन्दु 'ब' की कोटि (ordinate) कही जाती है । बिन्दु रेखन में वर्गों को तैयार करने में स्वतन्त्र परिवर्त्य (यथा, क्रम-संख्या, काल-व्यवधान आदि) को भुज पर और आश्रित परिवर्त्य (यथा अशुद्धियों, प्रयासों मे लगे समय आदि) को कोटि पर चिह्नित किया जाता है ।

Absolute [ऐ'ब्सोल्यूट] : निरपेक्ष ।

सामान्यत. इस पद का अर्थ है : वह जिसका अन्य वस्तुओं से किसी प्रकार का सम्बन्ध न हो, जो अन्य बाह्य आरोपण तथा वस्तुओ से सब प्रकार की सापेक्षता या तुलना से मुक्त हो । निरपेक्ष की धारणा का उपयोग एक मनोभौतिक विधि (Psycho-physical method) के रूप में भी किया गया है जिसमे उत्तेजकों के मूल्यांकन अथवा न्यायीकरण के लिए एक ही उत्तेजक उपस्थित किया जाता है, अर्थात् तुलना के लिए कोई मानक उद्दीपक (Standard Stimulus) नही दिया जाता ।

Absurdities Tests [ऐ'ब्सर्डिटीज़ टे'स्ट्स] : विसंगति परीक्षण ।

एक प्रकार के बाल-बुद्धि-परीक्षण जिनमें बच्चे के समक्ष एक-एक करके कुछ अयुक्तिपूर्ण वाक्य अथवा मूर्खतापूर्ण चित्र उपस्थापित करके उससे पूछा जाता है कि इनमे मूर्खता की क्या-क्या बात है । मूर्खतापूर्ण वाक्य कुछ इस प्रकार के होते है .

"एक जगल मे एक निर्धन बालिका का शव बारह टुकडो मे कटा हुआ पाया गया है और कहा जाता है कि उसने आत्महत्या की है ।" चित्र-मूर्खता का एक उदाहरण यह होगा कि चित्र मे एक झडा हवा मे दायी ओर को फहराता दिखाया जाए और एक बालक के द्वारा उड़ाया हुआ पतग बायी ओर उड़ता हुआ दिखाया जाए ।

इस प्रकार के परीक्षणों में विद्यालयी *शिक्षा का बहुत कम प्रभाव पडता है*, इसलिए इनके द्वारा स्वाभाविक बुद्धि का अच्छा अनुमान हो जाता है । परन्तु इनके उपयोग मे उपस्थापित वाक्यों अथवा चित्रों के विषय भिन्न-भिन्न प्रकार के होने चाहिए तथा उपस्थापित समस्याएँ अलग-अलग कठिनता की मात्रा और कठिनता के क्रम से उपस्थापित होनी चाहिए । प्राय: इनका उपयोग आयुदण्डो मे किया गया है, परन्तु इनसे अकदण्ड भी बनाए जा सकते है ।

Abulia [ऐ'ब्यूलिआ] : दुर्बल सकल्प ।

इच्छा-शक्ति का अभाव । किसी समस्या के बारे में निर्णय न दे सकना । यह मानसिक रोग का लक्षण है । साधारण व्यक्तियों मे भी यह दोष मिलता है, विकृत व्यक्तियो मे यह अत्यधिक रूप में रहता है ।

दे०—Will.

Accommodation [ऐ'कॉमोडेशन] अनुयोजन, प्रतियोजन।

ज्ञानेन्द्रियों मे साधारण मात्रा की निरन्तर उत्तेजना के प्रति थोडी देर के पश्चात् सवेदन का धीरे-धीरे सर्वथा लोप हो जाना। इस प्रकार का समायोजन सभी सवेदना क्षेत्रों म पाया जाता है, परन्तु त्वचा मे दबाव, शीत एव उष्णता की ओर विशेष मात्रा मे।

इस प्रतियोजन के दो लक्षण विशेष ध्यान देने योग्य हैं। एक यह कि प्रतियोजन तभी सम्भव है जब उत्तेजना की मात्रा स्थिर रहे। उत्तजना की मात्रा मे परिवर्तन होते ही उसकी सवेदना फिर होने लगती है। यह बात इस सिद्धान्त को पुष्ट करती है कि उत्तेजना से नहीं, उत्तेजना-परिवर्तन से ही सवेदना की उत्पत्ति होती है। दूसरा लक्षण यह है कि यदि प्रतियोजन स्थापित हो जाने के पश्चात उत्तेजना हट जाए या हटा दी जाए तो सम(Positive) अथवा विषम(Negative) उत्तर-सवेदनाएँ (after-sensation) हुआ करती हैं। यह प्रतियोजन प्रयोगात्मक अध्ययन का विषय है। एक प्रयोग मे तीन बर्तनो मे एक-सा जल भरकर प्रयोज्य का दायाँ हाथ एक बर्तन मे और बायाँ हाथ दूसरे बर्तन मे डाल दिया जाता है। दाएँ हाथवाले जल को धीरे धीरे गरम किया जाता है और बाएँ हाथ वाले जल को धीरे धीरे ठण्डा किया जाता है। कुछ देर पश्चात् दोनो हाथो को निकालकर पूर्ववत् रखे तीसरे बर्तन मे डाला जाता है। इस तीसरे बर्तन का वही जल दाएँ हाथ को ठण्डा लगेगा और बाएँ हाथ को गरम, क्योंकि दायाँ हाथ उससे अपेक्षा गरम जल से प्रतियोजित हो चुका है और बायाँ हाथ ठण्डे जल से।

Accomplishment Quotient (Aq) [एकॉम्प्लिशमेंट कोशेन्ट] निष्पत्ति अक।

'शिक्षा आयु' अर्थात् वास्तविक निष्पत्ति-माप का 'मानसिक आयु' अर्थात् निष्पत्ति-सम्भाविता के माप से अनुपात। यह अनुपात शिक्षालाभ परीक्षण द्वारा प्राप्त निष्पत्ति-आयु को बुद्धि-परीक्षण द्वारा ज्ञात मानसिक आयु से भाग करके और १०० से गुणा करके प्राप्त होता है। सूत्र रूप मे—

$$\text{निष्पत्ति अक} = \frac{\text{निष्पत्ति आयु}}{\text{मानसिक आयु}} \times १००$$

उदाहरणार्थ, यदि किसी छात्र की बुद्धि-परीक्षण के द्वारा ज्ञात मानसिक आयु ११ वर्ष की हो, और निष्पत्ति परीक्षण द्वारा उसकी आयु ९ वर्ष की स्थिर हो, तो उसका निष्पत्ति अक $\frac{९}{११} \times १०० = \frac{९००}{११}$ = लगभग ८२ हुआ। निष्पत्ति अक का उपयोग प्राय किसी व्यक्ति अथवा समूह की समान क्षमतावाले लोगो से निष्पत्ति क्षेत्र मे तुलना करने के एक साधन के रूप मे किया जाता है। यह निम्न स्तर एव उच्च स्तर पर काम करनेवालो को पहचानने का एक अच्छा साधन है। किन्तु इसके प्रयोग मे कठिनाई यह है कि निष्पत्ति के स्तर अथवा भाजक प्राय आयु क्रम से नहीं, कक्षा क्रम से निर्धारित किये हुए होते हैं। जब किसी व्यक्ति को अपनी शारीरिक अथवा मानसिक आयु के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नही मिलता तब भी निष्पत्ति अक का उपयोग अनुपयुक्त हो जाएगा।

Acculturation [एकल्चरेशन] सस्कृति-सक्रमण, उत्सस्करण।

किसी एक जाति वर्ग या वन जाति (Tribe) का किसी दूसरी जाति वर्ग या वन-जाति से अथवा किसी और उन्नतिशील जाति से ससर्ग स्थापित करके प्रसारण अथवा अनुकरण द्वारा सस्कृति उपार्जन करने की विधि।

किसी भी सामाजिक समुदाय की सस्कृति का, अथवा सस्कृति के केवल कुछ अगो का, किसी दूसरे समुदाय की सस्कृति मे सक्रमण या दो भिन्न समुदायो की सस्कृतियो का एकीकरण ही सस्कृति-

सक्रमण कहलाता है।

यह पद उस क्रिया या विधि की ओर भी निर्देश करता है जिसमे कि एक सस्कृति मे पला हुआ व्यक्ति किसी दूसरी सस्कृति के अनुकूल बन जाता है। यह सामाजिक तनाव अथवा समुदाय-सघर्ष कम करने का एक उत्कृष्ट साधन है।

Achievement Tests [अचीवमेन्ट टेस्ट्स] : उपलब्धि परीक्षण।

किसी व्यक्ति को किसी विषय की औपचारिक शिक्षा से प्राप्त ज्ञान, योग्यता अथवा कौशल से होनेवाले लाभ को मापने के लिए उपयोग मे आनेवाले परीक्षण। चिरपरिचित निबन्धात्मक परीक्षाओ के विपरीत ये परीक्षण तथ्यात्मक होते हैं। इनमे प्रत्येक प्रश्न मे शिक्षा विषय का कोई एक तथ्य ही पूछा जाता है और परीक्षार्थी को प्रायः प्रत्येक प्रश्न के कुछ दिये गए सम्भव उत्तरों मे से सर्वोत्तम उत्तर चुनकर उस पर स्वीकृति अथवा वरण का चिह्न मात्र लगाना होता है। यदि अपनी ओर से कुछ लिखना भी पडता है तो बहुत ही कम—कदाचित् दो-चार-दस शब्द ही। प्रत्येक प्रश्न के प्रत्येक सम्भव उत्तर के अक भी पहले से ही निश्चित किये हुए होते हैं। परिणामस्वरूप परीक्षक की ओर से अक देने में तथ्यात्मकता सुरक्षित रहती है और समय बहुत कम लगता है। साथ ही प्रश्न-संख्या पर्याप्त मात्रा में बडी रखी जा सकती है और इससे परीक्षार्थी के उस विषय के ज्ञान का अधिक विश्वासयोग्य न्यादर्श उपलब्ध हो जाता है। इन परीक्षणो मे कुछ विशेष प्रकार के प्रश्न ही पूछे जाते हैं, जिनमे सत्य-असत्य प्रश्न, हाँ-नही प्रश्न, बहुविकल्प प्रश्न, मेल प्रश्न, विन्यास प्रश्न, वर्गीकरण प्रश्न तथा समानता प्रश्न मुख्य हैं।

Achromatic [एक्रॉमैटिक] : अवर्णक, वर्णाध।

वे रग जो वर्ण-विहीन होते है और इस कारण रंगो की उस श्रेणी मे आते हैं जो केवल शुभ्रता में काले से सफ़ेद तक भिन्नत्व रखते हैं। कोई भी दृष्टि-प्रणाली, जिसमे किरणों का अन्तिम बँटवारा पूर्ण रूप से, अथवा सक्षिप्त रूप से, तरग आयामो से अप्रभावित रहता है।

वर्ण-विहीन रग—एक दृष्टि गुण, जिसका सम्बन्ध काले, भूरे एव सफेद रग की श्रेणी से है, जिसमे वर्ण का कोई गुण नही होता एव जो केवल शुभ्रता से परिभाषित है।

Acosmism [एकॉस्मिज़्म]: जगन्नास्तिवाद।

वह सिद्धान्त जिसके अनुसार बाह्य भौतिक जगत् का अलग अस्तित्व नहीं होता। इसका आदर्शवाद अथवा आभ्यान्तरिकवाद से निकटवर्ती सम्बन्ध है—ज्ञान का वह सिद्धान्त जिसके अनुसार जगत् मन मे स्थित है; मन से पृथक् इसकी कोई सत्ता नही है।

Acromegaly [ऐक्रोमेगैली] : अस्थि-वृद्धि।

एक प्रकार का शारीरिक रोग जिसमें प्रौढावस्था में मुख, हाथ और पैर आदि की हड्डी धीरे-धीरे बढ जाती है। इसका कारण पोष-ग्रन्थि (Pituitary gland) का निष्क्रिय हो जाना है। पोष ग्रन्थि के निष्क्रिय हो जाने का प्रभाव शारीरिक बनावट और कामभाव के विकास पर अत्यधिक पडता है।

Acrophobia [एक्रोफोबिया] : उत्तुगता-भीति।

ऊँचे स्थान, जैसे पर्वत या ऊँची अट्टालिका, को देखकर भयभीत होना; या वहाँ जाने पर अत्यधिक भय का अनुभव करना। यह भीतिरोग (Phobia) का एक प्रकार है जिसमें ऊँचाई उत्तेजक-स्वरूप होती है।

Action-Current [एक्शन करेन्ट] : क्रिया धारा, उत्तेजना-प्रदत्त-विद्युतधारा।

एक विद्युतधारा जो कि एक स्नायु, माँसपेशी अथवा ग्रन्थि-अग मे उद्दीपन-तरगों के साथ प्रस्तुत रहती है और जो

विपुलन (amplification) द्वारा अंकित की जा सकती है। यद्यपि डूब्वांज, रेमाड फ्लूइगर और हेल्महोल्स ने तन्त्रिका संवेदन-प्रवाहन म प्रारम्भिक अध्ययन शुरू किया, लेकिन ऐड्रियन ने ही पहले पहल प्रदर्शित किया कि—(१) उत्तेजना प्रदत्त विद्युत्-धारा, अणुपुदावय के एक अश श्रम का एक शवय परिवर्तन है, (२) ये द्विरूपी धाराएँ है और (३) इनको विपुलन के द्वारा अंकित किया जा सकता है।

उत्तेजना-प्रदत्त विद्युत्धारा तन्त्रिकीय आवेगो के मार्ग का पता लगाने का एक उत्कृष्ट माध्यम है। पहले यह विश्वास किया जाता था कि तन्त्रिकीय संवेदन-प्रवाहन अपने चारो ओर के वातावरण के प्रभाव से स्वतन्त्र, तन्तु मे एक भौतिक रासायनिक व्यूहाण्वीय परिवर्तन है, परन्तु अब यह प्रदर्शित किया जा चुका है कि यह विद्युत् रासायनिक परिवर्तन, तन्त्रिकीय सतह को, अपने चारो ओर के वातावरण के माध्यम के साथ होनेवाली क्रिया-प्रतिक्रिया द्वारा भी प्रभावित होता है।

Activism [ऐक्टिविज़्म] क्रियावाद, कर्मण्यतावाद।

वह सिद्धान्त जिसमें सत्य का मूल तथ्य क्रिया-कर्मण्यता माना गया है, विशेष रूप से आध्यात्मिक कर्मण्यता। इस धारणा का उद्भव अरस्तू की दैव धारणा से हुआ है और यह मनोवैज्ञानिक क्षेत्र मे सस्थापित है। इसके अनुसार सत्य की कुजी 'क्रिया' है। व्यक्तिगत अर्थ मे कर्मण्यतावाद का तात्पर्य 'रचनात्मक इच्छा' मात्र नही है, इसका सकेत ज्ञान से भी है जो अबाध दैविक क्रिया के लिए उत्तरदायी है। यह एक प्रकार का आकस्मिकवाद है। आधुनिक मनोविज्ञान को यह धारा कि मन का अर्थ क्रिया-मात्र है, कर्मण्यतावाद की ही देन है।

Act Psychology [एक्ट साइकॉलॉजी] क्रिया मनोविज्ञान।

उन्नीसवी शताब्दी मे प्रचलित वह मनोवैज्ञानिक सम्प्रदाय या पद्धति जिसमे मानसिक तथ्यो की मान्यता क्रिया के रूप मे हुई है विषयवस्तु के रूप मे नही। क्रिया मनोविज्ञान के अनुसार मनोविज्ञान का विषय मानसिक अनुभूतियाँ नही होती, मानसिक प्रक्रियाएँ होती हैं यद्यपि कोई भी क्रिया बिना विषयवस्तु (object) के सम्भव नही होती। दृष्टात-स्वरूप जब कोई व्यक्ति रग का अवलोकन करता है, रग स्वय मानसिक तथ्य नही है, रग के अवलोकन की क्रिया मानसिक होती है। अवलोकन की प्रक्रिया का कोई भी अर्थ-महत्त्व नही, यदि उससे सम्बन्धित वस्तु प्रस्तुत नही है। वस्तु क्रिया मे निहित है। इस प्रकार मानसिक क्रिया, जो मनोविज्ञान का मुख्य विषय है, स्वत पूर्ण नही है, इसके अन्तर्गत विषयवस्तु तथ्य भी निहित होता है। भौतिक-विज्ञान और मनोविज्ञान मे मूल रूप से यह भेद है कि भौतिक विज्ञान के अध्ययन के तथ्य वस्तुएँ सम्पूर्ण हैं, मनोविज्ञान का विषय ऐसी मानसिक क्रियाएँ हैं जिनका पृथक् सम्बन्ध सदैव बाह्य वस्तु से रहता है।

पिछली शताब्दी के अन्त मे जर्मनी मे मनोविज्ञान के क्षेत्र मे विचारार्थ दो केन्द्र-बिन्दु थे (१) विषयवस्तु (content) और (२) क्रिया (act), जिनमे एक का प्रतिनिधित्व वुट ने किया और दूसरे का इटली-निवासी ब्रेन्टेनो (1838 1917) ने, जो अरस्तू के सिद्धान्तो से अत्यधिक प्रभावित थे। 'क्रिया मनोविज्ञान' का प्रादुर्भाव वस्तुत आस्ट्रिया और दक्षिणी जर्मनी मे हुआ। आस्ट्रिया के क्रिया-मनोविज्ञान और प्रायोगिक मनोविज्ञान मे सम्बन्ध होने का सबसे प्रमुख आधार 'आकार गुण' (Form quality) का वह सिद्धान्त था जिसमे प्रत्यक्षीकरण को प्रारम्भिक सरल संवेदनाओ का समुच्चय मानने के सिद्धान्त की आलोचना की गई है। इसी से वर्तमान समष्टि मनोविज्ञान (Gestalt Psychology) का प्रादुर्भाव हुआ है। क्रिया मनोविज्ञान ही व्यवहारवाद तथा

वर्तमान गतिक मनोविज्ञान (दे० Dynamic Psychology) का भी उद्गम-स्थान है। इसमे इस पर मुख्य रूप से बल दिया गया है कि व्यवहार प्रयोजनयुक्त होता है। आस्ट्रियाई क्रिया-मनोविज्ञान के क्षेत्र मे ब्रेन्टैनो, लिप्स, मेनौंग, एहरेन्फेल्स, कार्नेलियस, विटासेक, बेनुसी इत्यादि प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त स्टूफ, क्लिपे और मेसर के नाम भी उल्लेखनीय हैं। आस्ट्रिया के वियना, ग्राज, प्राग, म्युनिक विश्वविद्यालयों मे क्रिया-मनोविज्ञान का प्रचुर विकास हुआ। आधुनिक मनोविज्ञान की महत्त्वपूर्ण धारणाएँ, जैसे 'अभिवृत्ति' (Attitude) तथा 'विन्यास' (Set) भी इसी क्रिया-मनोविज्ञान की ही देन है। क्रिया-मनोविज्ञान के आन्दोलन के कारण प्रायोगिक मनोविज्ञान का विकास हुआ और इसमें संवृद्धि हुई है। विचार-प्रक्रिया का प्रायोगिक अध्ययन क्रिया की दृष्टि से हुआ है—यह कि. किस प्रकार धारणाएँ प्रतीक बनती हैं और गणित, तर्क, सौन्दर्य तथा नीति की समस्याएँ सुलझती हैं। क्रिया-मनोविज्ञान की इन सब उपलब्धियों से अवगत होना आवश्यक है।

Adaptation [अडेप्टेशन] : अनुकूलन।

व्यक्ति को स्वयं अपने मे अथवा परिवेश के साथ अपने सम्बन्धों मे अनुभव होनेवाले परिवर्तन जब परिस्थिति के अनुकूल होते हैं तो व्यक्ति को अनुकूलित कहा जाता है। अनुकूलन का अध्ययन विशेष प्रकार से संवेदना, व्यावसायिक कार्य और सम्पूर्ण व्यक्तित्व के प्रसंग मे किया गया है। संवेदनात्मक अनुकूलन का सर्वस्पष्ट उदाहरण दृष्टि का है। दृष्टि प्रायः प्रकाशानुकूलित अथवा अन्धकारानुकूलित होती है। प्रकाश से अनुकूलित दृष्टि अँधेरे मे आने पर और अन्धकार से अनुकूलित दृष्टि प्रकाश मे आने पर कुछ देर तक सामान्य प्रक्रिया के अयोग्य हो जाती है। परन्तु अन्धकार में आने पर, जो दृष्टि पहले प्रकाश के अनुकूल थी वह, धीरे-धीरे, अन्धकार के अनुकूल हो जाती है और अन्धकार में भी कुछ-कुछ दीखने लगता है। यही बात प्रकाश मे आने पर अन्धकारानुकूलित दृष्टि के साथ भी घटती है।

व्यावसायिक कार्य के क्षेत्र में अनुकूलन, मन अथवा ध्यान का कार्य में इतना जम जाना है कि व्यक्ति सरलता से विचलित न हो सके।

सम्पूर्ण व्यक्तित्व के सम्बन्ध मे मनोचिकित्सा का एक प्रमुख आधार अनुकूलन सिद्धान्त है। इसके अनुसार व्यक्ति की व्यवहार शैली को उसके उपलब्ध अवसरों की सीमाओं के अन्दर आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने का प्रयास माना जाता है। कभी-कभी इस प्रयत्न में व्यक्ति अपनी उत्प्रेरणाओं के बल तथा वेग को दबाता है और एकान्तवास, विस्मरण, थकान अथवा कल्पनामग्नता जैसे लक्षण देखने मे आते हैं।

Adequate Stimulus [ऐडिक्वेट स्टिमुलस] : पर्याप्त उद्दीपक।

उत्तेजन-विशेष जो साधारणतः एवं स्वभावतः किसी इन्द्रिय-विशेष को उत्तेजित करता है ; यथा, प्रकाश-तरंग दृष्टि का, स्वर-लहरी कर्ण का उपयुक्त उद्दीपक होता है। स्वर-लहरी को दृष्टि के लिए और प्रकाश तरंग को कान के लिए अनुपयुक्त उद्दीपक (Inadequate Stimulus) कहा जाएगा।

Adjustment [एड्जस्टमेन्ट] : समायोजन, सामंजस्य।

निरीक्षण और मापन के विशेष अर्थ में यह परिणामों की एक ऐसी परिवर्तित श्रृंखला है जिससे विशेष परिस्थितियों का सफलता से सामना हो पाता है और समस्या सुलझ जाती है। नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology) में मानव के जीवन के प्रमुख ध्येय सामंजस्य पर विशेषतः बल दिया गया है। साधारणतः समंजन तीन प्रकार से लाया जाता है : (१) परिस्थिति मे परिवर्तन करके

उसे व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषता और प्रकृत मांग के अनुकूल बनाना,—यह वातावरण का परिवर्तन है, (२) उपयुक्त शिक्षा द्वारा व्यक्ति विशेष की प्रकृत इच्छाओं का परिमार्जन कर उन्हें वातावरण तथा समाज के आदर्श और नियम-परम्परा के अनुकूल बनाना,—इसमे वातावरण मे नहीं, व्यक्ति विशेष मे परिवर्तन किया जाता है और (३) वातावरण और व्यक्ति की प्रकृत इच्छा दोनो मे ही उचित परिवर्तन करके दोनो को एक दूसरे के अनुकूल बनाना।

Adjusted Type [ऐडजस्टे'ड टाइप] समायोजित प्रकार।

समायोजित व्यक्ति परिस्थिति के अनुकूल-उपयुक्त प्रतिक्रिया करता है। उसकी सभी मानसिक क्रियाएँ सन्तुलित रहती हैं—उनमे विरोध नहीं रहता। उसका संवेग समायोजित रूप मे रहता है, अर्थात् जिसका बाह्य जगत् समृद्ध है, जिसे हरेक विषयवस्तु अर्थयुक्त अनुभव होती है, जो वातावरण मे परिवर्तन होने पर समय और स्थिति के अनुरूप प्रभावात्मक प्रक्रिया करता है—निरुत्साह और अकर्मण्य नही हो जाता—वह व्यक्ति समायोजित प्रकार का है।

Advertisement [ऐ'डवर्टाइज़्मे न्ट] विज्ञापन।

विभिन्न प्रकार के सुझावो द्वारा लोगो मे इच्छित विचार उत्पन्न करने का प्रयत्न। इसमे सफलता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति की मनोवृत्तियो को जानना आवश्यक होता है। इस क्षेत्र मे मनोवैज्ञानिको का कार्य उपभोक्ताओ के मनोभावो का अध्ययन करना और उनके अनुसार विज्ञापन बनाना है। विज्ञापन मे अधिकतर जनसाधारण की मूल प्रवृत्तियो एव इच्छाओ से लाभ उठाने का प्रयत्न किया जाता है। संवेदना की तीव्रता, आकार, वर्ण, गति, पुनरावृत्ति, नवीनता आदि के द्वारा व्यक्ति का ध्यान आकर्षित किया जाता है। सूक्ष्म अथवा स्पष्ट रूप से सुझाव दिये जाते हैं। विज्ञापनो की प्रभावोत्पादकता की परीक्षा करने की मनोवैज्ञानिक विधियो मे निम्नलिखित मुख्य हैं .

(i) उपभोक्ता पचायत विधि (Consumer Jury Method)—जिसमे उपभोक्ताओ से स्वय विभिन्न विज्ञापनो का मूल्यांकन कराया जाता है।

(ii) एकान्तर व्यवहार विधि (Split Run Technique)—जिसमे विभिन्न विज्ञापनो को एकान्तर से प्रकाशित करके यह देखा जाता है कि इनमे से किस विज्ञापन का जनसाधारण से अधिक प्रत्युत्तर मिलता है।

(iii) प्रत्यभिज्ञा परीक्षण (Recognition Test)—जिसमे व्यक्तियो द्वारा देखे गए विज्ञापनो को ऐसे अन्य विज्ञापनो मे मिला दिया जाता है जिन्हे उन्होने शायद ही कभी देखा हो और तब उनसे परिचित विज्ञापनो को पहचानने के लिए कहा जाता है। यह विधि इस विश्वास पर आधारित है कि श्रेष्ठतर विज्ञापन अधिक मात्रा मे पहचाने जाएँगे।

(iv) मार्का-वरण परीक्षण (Brand Preference Method)—जिसमे लोगो से उपयोग, उपलब्धता, रूप, मूल्य आदि सभी बातो मे समान वस्तुओ के आकृति मे असमान, विभिन्न व्यापार-चिह्नो अर्थात् मार्कों मे से उनकी पसन्द का मार्का पूछा जाता है।

(v) पुन:स्मरण परीक्षण (Recall Test)—जिसमे पदार्थ का नाम लेकर प्रयोक्ता से उसके प्रथम याद आनेवाले औद्योगिक मार्के अथवा निर्माता का नाम बताने को कहा जाता है।

(vi) विक्रय परीक्षण (Sales Test)—जिसमे विज्ञापन के पूर्व एव विज्ञापन के पश्चात् के विक्रय के अन्तर को विज्ञापन की प्रभावोत्पादकता का लक्षण माना जाता है।

मनोवैज्ञानिको ने विज्ञापन मे रग, चित्र तथा मार्के की उपयोगिता पर, और विज्ञापन पढने वालो की विशेषताओ पर

भी विशेष अनुसन्धान किये हैं।

Aesthesiometer [ऐस्थिसियोमीटर] : स्पर्श-संवेदन-मापी।

दे०—Aesthesiometric Index

Aesthesiometric Index [एस्थेसियोमीट्रिक इन्डेक्स] : स्पर्श-संवेदन-मापी सूचकांक।

वह न्यूनतम दूरी जिस पर दो स्पर्शों का अलग-अलग अनुभव होता है। इसे देश-बोध सीमा' (Spatial Threshold Limit) भी कहा जाता है। इसके ज्ञात करने में कई प्रकार के प्रचलित स्पर्श-संवेदनमापी यन्त्रों (Aesthesiometer) का उपयोग किया जाता है। प्रायः धातु की परकार की तरह की चापाकार मापनी स्पर्श-मापी का काम देती है। स्पर्शमापी की दोनों नोकों को किसी एक दूरी पर स्थित करके प्रयोज्य की त्वचा पर एक साथ समान दबाव से रखा जाता है, और उससे अपना अनुभव बताने को कहा जाता है। यही क्रिया स्पर्शमापी की नोकों को विभिन्न दूरियों पर रखकर की जाती है। ऐसा करने में या तो 'न्यूनतम परिवर्तन विधि' (Method of Minimal Changes) बरती जाती है या यत्र-तत्र 'स्थिर उद्दीपन विधि' (Constant Method)। प्रत्येक विधि के साथ अलग-अलग सांख्यिकीय क्रियाएँ उपयुक्त होती हैं।

वेबर का अनुमान है कि त्वचा में अनेक संवेदन-वृत्त (Sensation Circles) हैं। एक ही संवेदन-वृत्त में दो स्थानों पर स्पर्श होने से एक ही स्पर्श का बोध होगा। दो विभिन्न स्पर्शों का अनुभव दो अलग-अलग संवेदना-वृत्तों के दो स्थानों पर स्पर्श होने से ही हो सकेगा।

स्पर्श-संवेदन-मापी सूचकांक शरीर के विभिन्न भागों में अलग-अलग है।

इससे सम्बन्धित कुछ प्रयोग प्राप्त मापें ये हैं :

जीभ की नोक पर—१ मिलीमीटर
अँगुली के सिरे पर—२ मिलीमीटर
गाल पर—११ मिलीमीटर
एड़ी पर—२२ मिलीमीटर
हाथ के पृष्ठ पर—३१ मिलीमीटर
घुटने पर—३६ मिलीमीटर
पैर के पृष्ठ पर—५४ मिलीमीटर
सीने के पीछे—५४ मिलीमीटर

स्पर्श-संवेदन-मापी सूचकांक का व्यावहारिक उपयोग है। इसके द्वारा किसी व्यक्ति के स्पर्श-अनुभवों की तीक्ष्णता का ज्ञान हो जाता है। थकान की अवस्था में द्वि-बिन्दु स्पर्शबोध-सीमा अपने-आप बढ़ जाती है, इसलिए इसको थकान की परीक्षा का माध्यम भी माना गया है।

Aesthetics [ईस्थे'टिक्स] : सौन्दर्यशास्त्र।

सौन्दर्यशास्त्र विषय की अब एक स्वतन्त्र व्याप्ति है : (१) यह कलात्मक कृतियों का अध्ययन है; (२) कला की उद्भूति और अनुभूति की प्रक्रियाओं का अध्ययन है, (३) प्रकृति की कुछ ऐसी अवस्थाओं और मानव की ऐसी रचनाओं का अध्ययन है जो कला की परिधि के बाहर हैं किन्तु जिनमें सौन्दर्य है।

सौन्दर्यशास्त्र कला-मनोविज्ञान में प्रस्तुत सौन्दर्य का वैज्ञानिक और दार्शनिक अध्ययन है। सौन्दर्यशास्त्र और मनोविज्ञान में भेद है। कुछ विशेष प्रकार की वस्तुओं तथा परिस्थितियों के होने पर सौन्दर्यशास्त्र का केन्द्रीयण मनोदैहिक क्रिया-व्यापार की कतिपय चुनी हुई अवस्थाओं पर होता है। सौन्दर्यशास्त्र में आकार और कला की विशेषताओं पर अन्वेषण हुआ है जो कि मनोविज्ञान में नहीं किया गया है। मनोवैज्ञानिकों की रुचि सरचना, आस्वादन, कल्पना, सौन्दर्यानुभूति, भाव, मूल्यांकन इत्यादि में होती है। यह प्रगति 'सौन्दर्यशास्त्र मनोविज्ञान' अथवा 'कला मनोविज्ञान' में वर्णित की जा सकती है।

Aesthetics, Experimental [ईस्थे'टिक्स, एक्स्पे'रीमे'न्टल] : प्रायोगिक सौन्दर्यशास्त्र।

विभिन्न मनोवैज्ञानिक समस्याओं में से जो सौन्दर्यशास्त्र से सम्बन्धित हैं उनमें

से कुछ को प्रयोगशाला और सांख्यिक मनोविज्ञान का विषय बनाया जा सकता है। इनकी सही-सही गणना और माप का प्रयास हुआ है। यह उपगमन 'प्रायोगिक सौन्दर्यशास्त्र' है। प्रायोगिक सौन्दर्यशास्त्र में फ़वनर का नेतृत्व माना गया है। उन्होने सौन्दर्यबोधी रुचि (Aesthetic Sense) का अध्ययन किया है तथा सौन्दर्यशास्त्र को अनुभवात्मक दृष्टिकोण से परखने का प्रयास किया है।

Affect [ऐफेक्ट] भाव।

यह एक व्यापक शब्द है। इसका प्रयोग प्राय सामान्य भावात्मक विशेषताओं, विभिन्न प्रकार की संवेगात्मक अनुभूतियो तथा भाव एव संवेग के सहकारी तत्त्वो के लिए किया जाता है। मनोविश्लेषण मे यह संवेग के गतिशील एव सारभूत विधायक तत्त्वो के लिए व्यवहृत होता है। इसके अतिरिक्त कभी कभी निम्न अर्थों मे भी प्रयुक्त होता है (१) प्रत्यक्षीकरण अथवा विचारो की अपेक्षा भावात्मक अथवा भावप्रधान अनुभूतियो को जाग्रत करनेवाले उत्तेजन अथवा प्रेरण, (२) उक्त उत्तेजनो एव प्रेरणो से उत्पन्न विस्तृत नियामक भावात्मक प्रक्रिया जिसमे आन्तरिक शारीरिक परिवर्तनो का भी योग हो।

भाव विस्थापन (Displacement of Affect) एक विचार (व्यक्ति अथवा घटना) से सलग्न भावात्मक अनुभूति का दूसरे ऐसे विचार (व्यक्ति अथवा घटना) पर स्थानान्तरित हो जाना जो किसी-न किसी रूप मे पहलेवाले का ही प्रतिनिधित्व करता हो। स्वप्न मे इस प्रकार का स्थानान्तरण विशेष रूप से देखने को मिलता है, यथा किसी अत्यधिक निकट सम्बन्धी के प्रति उत्पन्न वर्जित कामेच्छा को उसी नाम के अथवा उसकी किसी अन्य विशेषता से युक्त दूसरे व्यक्ति के साथ तुष्ट करते हुए देखना।

भावस्थिरण (Fixation of Affect) व्यक्ति के मनोदैहिक विकास के साथ-साथ उसकी रुचियो एव भावात्मक अनुभूतियो म भी परिमार्जन होता जाता है। लेकिन कभी कभी कारणवश उसकी रुचि विकास की पूर्वावस्था की वस्तुओ, चिन्तन-धाराओ एव क्रियाओ से ही सलग्न बनी रह जाती है। वह आगे की ओर नही बढती। राग का मनोदैहिक विकास के साथ-साथ विकसित होकर नयी नयी वस्तुओ और क्रियाओ की ओर न जाकर प्रारम्भिक अवस्था की वस्तुओ और क्रियाओ पर ही स्थिर रहना भावस्थिरण है। इसी को भाव का केन्द्रीयण कहते हैं।

Affective Psychosis [ऐफेक्टिव साइकोसिस] भावात्मक मनोविक्षिप्ति।

विक्षेपो का वह विशिष्ट वर्ग जिसमे भाव वृत्तियाँ अथवा भावावस्थाएँ अत्यधिक अस्थिरता की अवस्था म पाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त चिन्तन और व्यवहार मे भी विकृतियाँ दृष्टिगत होती हैं। इन विक्षेपो के तीन प्रमुख उपवर्ग हैं

(१) उन्माद अवसाद मनोविक्षिप्ति (Manic Depressive Psychosis) इसमे कभी उत्साह, कभी विषाद और कभी उत्साह विषाद बारी-बारी से अत्यधिक बढे हुए रूप मे पाए जाते हैं। अपर्याप्त प्रत्यक्षीकरण, चेतना का अभाव तथा मिथ्या निर्णय इसके प्रमुख लक्षण हैं।

(२) विक्षिप्ति अवसाद मनोदशा (Psychotic Depressive Reaction). जीवन के प्रति सर्वथा उदासीनता तथा अत्यधिक आत्मग्लानि इसके प्रमुख लक्षण हैं। इसके रोगी मे पाप और अपराध का भाव इतना प्रबल हो जाता है कि उसका सुधार असम्भव होता है।

(३) अपविकासजन्य विषाद रोग (Involutional Melancholia) यह रोग बढी हुई अवस्था के लोगो को ही होता है। इसका रोगी मलीन, हतोत्साह, जीवन से पूर्ण निराश तथा अत्यधिक आत्मग्लानि और हीनताभाव से पीडित होता

है। अपनी मनोदैहिक अवस्था के सम्बन्ध मे उसमे तरह-तरह के भ्रमात्मक विचार पाए जाते हैं।

Affective Scales [ऐ'फे'क्टिव स्केल्स] : भावात्मक मापनी।

ऐन्द्रीय गुणो, पदार्थों आदि के भावनात्मक महत्व के मापनार्थ निर्मित अंकन-दण्ड। ये उभय ध्रुवीय अर्थात् दो विपरीत सीमाओं की दिशाओ मे अन्तरो के परिचायक होते हैं। इनमे प्राय: भावात्मक महत्व की विभिन्न मात्राओ को उपयुक्त अक भी दिये जाते हैं। अक देने की दो शैलियाँ प्रचलित हैं : एक मे शून्याक एक सीमा पर रखा जाता है जो प्राय: अप्रियता की सीमा होती है, और भावात्मक महत्व की मात्रा दूसरी सीमा के जितना समीप होती है उतना ही उसको वडा अक दिया जाता है। दूसरी शैली मे शून्याक समभाव पर देकर प्रियता की दिशा में +१, +२, +३ आदि और अप्रियता की दिशा में —१, —२, —३ आदि अक रखे जाते हैं। रंगों तथा गन्धों के भावात्मक मापन के लिए प्रयुक्त निम्नलिखित अंकन-दण्ड के साथ इन दोनों शैलियों का उपयोग नीचे दर्शाया गया है :

भावात्मक महत्त्व की मात्रा	प्रथम अंकन शैली	द्वितीय अंकन शैली
सर्वाधिक कल्पनीय मात्रा मे प्रिय	१०	+५
सर्वाधिक प्रिय	९	+४
बहुत ही प्रिय	८	+३
साधारण मात्रा में प्रिय	७	+२
थोडी मात्रा में प्रिय	६	+१
न प्रिय, न अप्रिय	५	०
हल्का सा अप्रिय	४	−१
साधारण मात्रा में अप्रिय	३	−२
बहुत ही अप्रिय	२	−३
सर्वाधिक अप्रिय	१	−४
सर्वाधिक कल्पनीय मात्रा मे अप्रिय	०	−५

Afferent Conduction System [एफरे'ण्ट कंडक्शन सिस्टम] : अभिवाही संवहन तन्त्र।

व्यावहारिक रूप से अन्दर आनेवाले आवेगों के सक्रमण हेतु, सभी संवेदन-ग्राहकों अथवा इन्द्रियों को, मस्तिष्कावरण के साथ संयुक्त करने वाले, स्नायु चक्र-मण्डल को कहते हैं। यह प्रणाली बहिर्गामी सचारण प्रणाली के, जो बृहत मस्तिष्क और प्रभावक या कार्यवाही अगो को संयुक्त करने वाले स्नायु चक्र मण्डल की ओर निर्देशित करती है, ठीक विपरीत है। तान्त्रिक सगठन स्पष्ट रूप से द्विपार्श्वीय है तथा अन्दर आने वाले सम्कारों के प्रतिरूप मस्तिष्कावरण पर कटानों के रूप मे होते हैं।

इस प्रणाली मे मुख्यत:, जिसका सम्बन्ध कपाल नाडियो से है, दृष्टि, श्रवण सचारण प्रणालियाँ आदि आती हैं।

दृष्टि-सचारण प्रणाली का सक्रमण अक्षिपट से दृष्टि-नाडी मे होता हुआ, दृष्टि स्वस्तिक पर, थैलमस के पार्श्वीय अगो को काटता हुआ, कैलकराइन दरार के निकटवर्ती क्षेत्र, दृष्टि-खण्ड में समाप्त हो जाता है।

इसी प्रकार श्रवण-सचारण प्रणाली मे, आवेगों का सक्रमण, कान के शंख प्रणाली अग मे, कान की भीतरी झिल्ली से होता हुआ, मस्तिष्क मूल और कपाल नाड़ी से गुजरता हुआ, आगे थैलमस के मध्य-ग्रन्थियुक्त अगों से होता हुआ, श्रवण खण्ड मे समाप्त हो जाता है।

इसी प्रकार स्पर्श, न्यादाता भी अन्तर्गामी प्रणालियाँ हैं। अन्य अभिवाही संवहन तन्त्र प्रणालियो में घ्राण-सम्बन्धी, स्वाद-सम्बन्धी, साम्य-सम्बन्धी और अन्तरांगी भी सम्मिलित हैं।

Afferent Nerve [ऐफरे'ण्ट नर्व] : अभिवाही तन्त्रिका।

एक प्रकार की नाड़ी विशेष जो ग्राहक अंगों से प्राप्त प्रवाहो को केन्द्रीय तन्त्रिका-संस्थान की ओर पहुँचाती है।

दे०—Afferent Conduction System.
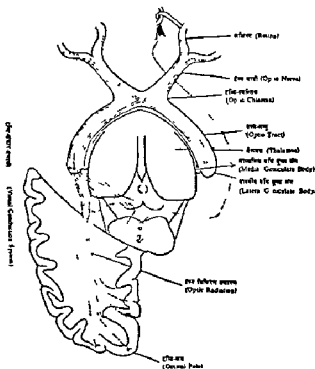
After Effect [आफ्टर ऐफ़क्ट]
अनुप्रभाव ।
दे०—After Sensation

After Image [आफ्टर इमेज]
अनुबिम्ब ।

किसी विशेष उत्तेजन और ज्ञानेन्द्रिय के सन्निकर्ष के समाप्त हो जाने के पश्चात् भी व्यक्ति को उस उत्तेजना की जो अनुभूति होती रहती है उसी को अनुबिम्ब कहते हैं। यह प्रतिक्रिया केन्द्रीय स्नायु संस्थान पर अवशिष्ट प्रभाव के कारण घटित होती है। जब ज्ञानेन्द्रिय पर उत्तेजन के अवशिष्ट प्रभाव के कारण इसी प्रकार की प्रतिक्रिया घटित होती है तब इसे उत्तर संवेदन (After-Sensation) कहते हैं। अनुबिम्ब प्रायः दृष्टि-संवेदना के क्षेत्र में ही पाए जाते हैं।

अनुबिम्ब दो प्रकार के होते हैं अनुलोम और विलोम। जब अनुबिम्ब की अनुभूति मूल उत्तेजन के अनुरूप होती है तो उसे 'सम अनुबिम्ब' (Positive After Image) कहते हैं और जब अनुबिम्ब की अनुभूति मूल उत्तेजन की विरोधी अथवा पूरक रंग के रूप में होती है तो उसे 'विषम अनुबिम्ब' (Negative After Image) कहते हैं। लाल वस्तु का अनुबिम्ब यदि लाल हो तो वह अनुलोम और हरा हो तो विलोम कहलाएगा।

अनुबिम्ब की कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं : (१) सम की अपेक्षा विषम अनुबिम्ब की अनुभूति अधिक होती है। (२) अनुबिम्ब की चमक पृष्ठभूमि की चमक पर निर्भर है। (३) अनुबिम्ब मूल उत्तेजन के होते ही अथवा कभी विराम से भी प्रकट होता है। (४) अनुबिम्ब की अनुभूति अनवरत रूप से नहीं होती, वह आती जाती रहती है। इस परिवर्तन में कभी-कभी अनुलोम और विलोम अनुबिम्ब भी बारी-बारी से आते देखे जाते हैं।

अनुबिम्बों की उत्पत्ति में चित्त की एकाग्रता और ध्यान का प्रमुख प्रभाव पड़ता है। नेत्रों की किंचित् गति अथवा

ध्यान का रंचमात्र भी भटकना अनुबिम्बों का अन्तर्लयन कर देता है।

After Sensation [आफ्टर से'न्सेशन] : उत्तर संवेदन।

उत्तेजक के समाप्त होने के पश्चात् ज्ञानेन्द्रियों में अनुभव-प्रक्रिया का इस प्रकार जारी रहना कि संवेदना होती रहे। इसे 'आफ़्टर ऐ'फ़ेक्ट' भी कहते हैं। अनुसवेदन अनुबिम्ब से भिन्न है। अनुबिम्ब एक केन्द्रीय प्रक्रिया है, अनुसवेदन परिणाही प्रक्रिया है।

Age Norms [एज नॉर्म्स] : आयुमानक।

मनोवैज्ञानिक परीक्षण के रूप मे विभिन्न मानसिक स्तरों के सूचक ऐसे अक, जिनमे विभिन्न आयु के व्यक्ति-समूहों के लक्षण पाए गए हों। ऐसे मानक अथवा प्रतिमान उन गुणो के विषय मे ज्ञात किये जाते हैं जो आयु के साथ बढा करते हैं, जैसे बुद्धि अथवा लम्बाई। किसी आयु के व्यक्तियो मे ऐसे किसी गुण की माध्यक अथवा औसत मात्रा ही उस आयु का प्रतिमान मानी जाएगी। इस गुण के कुछ विभिन्न आयुस्तरों के प्रतिमानों के आधार पर प्राय: एक प्रतिमान वक्र बना लिया जाता है, जिससे मानकीकरण में न प्रयुक्त हुए आयु-स्तरो के मानक भी अनुमानित किये जा सकते हैं। अब आयु अंक-सम्बन्धी सारणी के आधार पर यह देखा जा सकता है कि किसी व्यक्ति का उस गुण में प्राप्त परीक्षाक किस आयु के व्यक्तियो का माध्यांक होता है, तब यह कहा जा सकता है कि इस गुण की इस व्यक्ति में इतनी मात्रा है जितनी प्राय: अमुक आयु के व्यक्तियों में हुआ करती है। यदि इस व्यक्ति की वास्तविक आयु इस आयु से अधिक है तो यह व्यक्ति इस गुण में पिछड़ा हुआ है। और यदि इसकी वास्तविक आयु इस आयु से कम है तो यह व्यक्ति इस गुण मे औसत व्यक्तियों से आगे बढा है।

परन्तु वय-मानक केवल ११ वर्ष की आयु तक के मानसिक स्तरों के विषय में ही सार्थक होते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि ११ वर्ष से अधिक आयु के परीक्ष्य समूह को एकत्रित करना कठिन होता है। मानसिक अथवा शिक्षण आयु की इकाइयाँ भी ११ वर्ष की आयु के पश्चात् समान नही रहतीं और इस आयु के पश्चात् इन इकाइयों का अर्थ भी एक-सा नही रहता है।

Age Scales [एज स्केल्स] : आयु-मान।

वह मनोवैज्ञानिक मापदण्ड जिसमे प्रश्नों अर्थात् समस्याओ को आयु के अनुसार वर्गीकृत किया हुआ होता है। प्रत्येक आयु के लिए उन्ही प्रश्नो अर्थात् समस्याओं को उपयुक्त समझा जाता है जिन्हे उस आयु के अधिकाश व्यक्ति सफलतापूर्वक कर सकें। इस सन्दर्भ मे ५०%, ७५% आदि कई अलग-अलग प्रतिशतों को अलग-अलग अनुसन्धानको ने 'अधिकाश' माना है। इस प्रकार वर्गीकृत प्रश्नो मे से कोई नवीन व्यक्ति जिस आयु के प्रश्नो के यथार्थ उत्तर देता है वही उस व्यक्ति को मानसिक-आयु मानी जाती है। कुछ आयु-मान में किसी आयु के लिए निश्चित सब प्रश्नों में से कुछ ही कर पाने पर व्यक्ति को आंशिक अर्थात भिन्नात्मक आयु-अंक देने की व्यवस्था भी होती है। आयु-मापदण्डों में एक व्यावहारिक असुविधा यह होती है कि किसी एक परीक्षण प्रकार के अलग-अलग कठिनता मात्रा के प्रश्न अलग-अलग बुद्धि-आयु स्तरो पर रखे जाते हैं, जिससे वे एक साथ नही कराए जाते। एक साथ कराने से उनमें समय कम लगेगा और व्यक्ति का कार्य व्यर्थ ही बार-बार नही बदलेगा।

Agoraphobia [ऐ-गोराफ़ोबिया]: विवृत स्थान-भीति।

रिक्त खुले स्थान का अतिवर्धक, विकृत रूप में भय। यह भीति-रोग (Phobia) का एक प्रकार है। साधारण व्यक्ति को भी भय खुले स्थान से रहता है; इसमें भय अकारण होता है—वस्तुत: रिक्त स्थान भय के लिए पर्याप्त उत्तेजक नही होता।

Allo-eroticism [ऑलो-इरोटिसिज़्म] : पररति, बाह्य वस्तु-प्रेम।

कामशक्ति के विकास का वह स्तर जिसमे इसका प्रवाह बाहर की ओर होता है, अथवा विषय बाह्य वस्तु रहता है। आकर्षण का पात्र सहवर्गी होता है और परवर्गी भी। प्रारम्भ मे आकर्षण का केन्द्र बिन्दु माता पिता रहते हैं। प्रकार-प्रकार की भाव-ग्रन्थियाँ माता-पिता के सम्बन्ध मे बालक मे पड जाती हैं। तत्पश्चात् आकर्षण का विषय मित्र गण होते हैं। प्रथम सहवर्गी से सहज स्नेह सम्बन्ध बनता-जुडता है—बालक बालिकाओ का और बालिकाएँ बालको का मखौल उडाती हैं। उनको अपने ही वर्ग के मित्रो के साथ खेल कूद, वाग्विनोद प्रियकर होता है। बाल्यावस्था के पश्चात् किशोरावस्था—विकास की दूसरी अवस्था—मे प्रवेश करने पर परवर्गी की ओर ध्यान आकर्षित होता है। सामान्यत इस शब्द का सकेत विषमलिंगीय समायोजन (Hetero Sexual Adjustment) से ही है।

परर्रति के विकास की तीसरी अवस्था मे अन्य व्यक्तियो का सम्पर्क विशेष रूप से होने के कारण मनुष्य मे सामाजिक भाव, सहानुभूति, आदान प्रदान की क्षमता इत्यादि के भाव की उद्भूति होती है। यह अवस्था स्वस्थ विकास के लिए परमावश्यक है। जिसकी कामशक्ति का बाह्यीकरण नही होता उसका समाजीकरण नही हो पाता और उसका व्यक्तित्व एकागी रहता है और कई प्रकार के मानसिक रोगो के लक्षण दृष्टिगत होते हैं।

All or None Law [ऑल ऑर नन लॉ] पूर्ण या शून्य नियम।

इस सिद्धान्त के प्रवर्तक शरीरवेत्ता बाउडिच थे। इस सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक नाडी-सूत्र अथवा मासपेशी-कोष मे शक्ति की एक निश्चित मात्रा रहती है। उस कोष पर प्रभाव डालने वाले उत्तेजन यदि अधिक क्षीण हैं अथवा उस कोष की शक्ति व्यय हो चुकी है और वह पुन शक्ति सम्पन्न नही हो सका है, तो उस उत्तेजन का कोई प्रभाव कोष पर नही पडता। और, यदि उत्तेजन पर्याप्त सबल है तथा कोष भी शक्ति सम्पन्न है तो वह अपनी सारी-की-सारी शक्ति के साथ प्रतिक्रिया-वित होता है। किसी एक कोष मे उत्तेजन से उत्पन्न प्रतिक्रिया की तीव्रता उस काल विशेष मे कोष की स्थिति पर निर्भर करती है।

स्नायु-सूत्रो की बनावट कुछ ऐसी है कि किसी क्षण विशेष मे उनके ग्राही तन्तुओ के किसी भी पर्याप्त सबल उत्तेजन के सम्पर्क मे आते ही जब तन्त्रिका आवेग (दे० Nerve Impulse) अपनी सारी शक्ति के साथ उत्पन्न होकर आगे की ओर बढ जाता है तो तुरन्त दूसरे ही क्षण ग्राही तन्तु पुन शक्ति-सम्पन्न हो जाते हैं। स्नायु की शक्ति के व्यय होने ही वह पुन शक्ति-सम्पन्न हो जाता है और इसमे अति अल्प समय लगता है।

Allport-Vernon Study of Values [ऑल्पोर्ट-वर्नन स्टडी ऑफ वैल्यूज] . ऑल्पोर्ट वर्नन मूल्य परीक्षण।

व्यक्ति मे सैद्धांतिक आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनीतिक एव धार्मिक छ आधारभूत रुचियो, प्रेरणाओ अथवा मूल्यो के सापेक्ष प्राधान्य को मापने के लिए ऑल्पोर्ट तथा वर्नन द्वारा रचित विख्यात परीक्षण। इसम अपनायी गई मूल्य-सूची स्प्रागर द्वारा प्रतिपादित मानव-प्रकार सिद्धान्त पर आधारित है। परीक्षण प्रश्नावली रूप मे है। इसके दो भाग हैं। प्रथम भाग मे ३० प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न मे व्यक्ति के समक्ष दो क्रियाओ का वर्णन करके उसे पूछा जाता है कि उसका इन दोनो क्रियाओ मे से किस क्रिया की ओर अधिक झुकाव है। प्रत्येक क्रिया भिन्न प्रकार की रुचि की ओर सकेत करती है। द्वितीय भाग मे १५ प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न मे किसी विशेष परिस्थिति अथवा समस्या के विषय मे चार सम्भव मनोभाव अथवा विचार व्यक्त किये गए हैं और परीक्षार्थी को यह बताना होता है कि उसे इनमे से कौन-सा

मनोभाव अथवा विचार सबसे अधिक ठीक जँचता है, कौन सा उससे कम, कौन-सा उससे भी कम, और कौन-सा सबसे कम। प्रत्येक उपस्थापित विचार अथवा मनोभाव अलग-अलग प्रकार के मूल्य के अनुसरण का परिचायक है। परीक्षार्थी से प्राप्त उत्तरों के आधार पर उसे प्रत्येक प्रकार के मूल्य के अनुसरण पर अंक दिए जाते हैं। यह परीक्षण विशेषतः मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान के लिए तथा शिक्षात्मक एवं व्यावसायिक पथप्रदर्शन के लिए भी उपयोगी माना गया है।

Alpha Rhythm [अलफा रिदम] : अलफा लय।

यह मस्तिष्क की स्वाभाविक लय है जिसकी खोज हाउस बरगर ने १९२४ ई० में की थी। इसकी गति प्रति सैकंड में दस है। विस्तार दस और पन्द्रह है। इसकी उपस्थिति विकसित रूप में लगभग नौ या दस वर्ष की अवस्था में दिखाई देती है। अलफा लय की उत्पत्ति कौरटेक्स के पृष्ठ खंड में मालूम होती है।

दे०—Brain Wave.

Altruism [अल्ट्रूइज़म] : परार्थ।

उदारता सिद्धान्त, नि:स्वार्थवाद, परहित-वाद। वह सम्प्रदाय जो स्वार्थ-विरोधात्मक है। यह धारणा समाजवेत्ता कामटे द्वारा निर्मित की गई है। इसका अर्थ है नियंत्रण रखना, अथवा स्व-केन्द्रित इच्छाओं का उन्मूलन। मनोविज्ञान में इस शब्द का प्रयोग नि:स्वार्थभाव की ओर रुख और सामान्य पशु-जीवन से अपने को मुक्त रखने के प्रसंग में हुआ है। सीमित अर्थ में कभी-कभी इसका प्रयोग चिन्तनशील व्यक्ति के लिए किया गया है।

व्यक्ति के परार्थ भाव से उसमें प्रस्तुत सामाजिकता गुण-विशेष का अनुमान लगाया जा सकता है और यह कि उसका सामाजिक विकास कहाँ तक आदर्शात्मक स्तर पर हुआ है।

Ambiguous Figures [ऐम्बिग्युस फिगर] : अनेकार्थक आकृतियाँ, संदिग्ध आकृतियाँ।
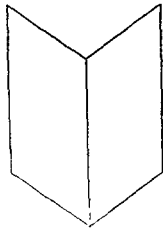
(१) इस आकृति के बनानेवाले का आशय, सम्भव है, खुली हुई पुस्तक के अन्दर के पृष्ठ दिखाना हो, परन्तु देखनेवाले को ऐसा लग सकता है कि खुली हुई पुस्तक की जिल्द ही दिखाई गई है।
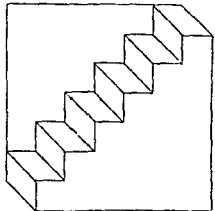
(२) सम्भव है इस आकृति को सीढ़ी के ऊपर का दृश्य समझा जाए, परन्तु इसे सीढ़ी के नीचे का दृश्य भी समझा जा सकता है।
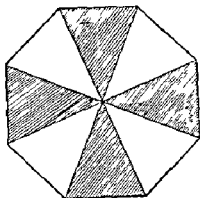
(३) इस आकृति को दिन के प्रकाश मे काली चरखी का चित्र समझा जा सकता है और रात के अंधेरे मे चमकती हुई प्रकाशित चरखी का भी।

Ambivalence [ऐम्बिवेलेन्स] *उभय-भाविता।*

ब्लूलर ने इस शब्द का प्रयोग पहली बार किया है। फ्रायड के ग्रन्थो मे इसका स्पष्टीकरण हुआ है। यह मानव-स्वभाव है कि एक ही व्यक्ति दो प्रतिद्वन्द्वी विरोधी भावो की अनुभूति किसी वस्तु व्यक्ति के प्रति करता है। द्विभाव सामान्य अनुभूति है। व्यक्ति मे एक स्तर पर राग और दूसरे स्तर पर घृणा का भाव रहता है। जब ज्ञात मन मे आकर्षण का भाव होता है, अज्ञात मन मे घृणा उपेक्षा का भाव मिलता है। इसका प्रमाण प्राचीन साहित्य और जीवन की अनुभूतियाँ हैं। यह प्राचीन प्रथा है कि राजतिलक के पूर्व स्वीकृत व्यक्ति को कडी से कडी यातना दी जाती थी जब कि राज्याभिषेक के पश्चात् वह आदर का प्रमुख पात्र बनता। बालक को माता पिता का अनुशासन अप्रिय लगता है। वह विद्रोह करता है और उसमे प्रेम और सम्मान का भाव भी होता है। द्विभाव मनोवैज्ञानिक तथ्य है और अनुभव और *निरीक्षण के आधार पर इस धारणा की* स्थापना की गई है। इसका सैद्धांतिक महत्व और व्यावहारिक मूल्य है। वस्तुत मानव-व्यवहार के जटिल होने का यह मुख्य प्रमाण है। विकृत व्यक्तियो मे इसका अतिवर्धित रूप मिलता है।

Ambivert [एम्बिवर्ट] उभयमुखी, उभयवर्ती।

एम्बि (Ambi) लैटिन का प्रिफेक्स है, जिसका अर्थ है 'दोनो'। यह परिकल्पना युग की है। व्यक्तित्व का एक प्रकार। युग के अनुसार व्यक्तित्व तीन प्रकार का होता है अन्तर्मुख, बहिर्मुख और उभयमुख। उभयमुख का स्थान अन्तर्मुख और बहिर्मुख के बीच मे है। उभयमुख प्रकार का व्यक्ति कल्पना की लम्बी उडान मात्र नही लगाता, भाव शृखला मात्र मे जकडा नही रहता, सच्चा दार्शनिक बन विचार-शृखला मे खोया नही रहता, और इस प्रकार आस-पास, संगी साथी इत्यादि का किंचित् ध्यान नही रखता—न तो वह बाह्य जगत् मे उलझा मात्र रहता है जब कि उसे विभिन्न संगी-साथी, राजनीति, इत्यादि का एकमात्र ध्यान बना हो। उभयमुख प्रकार का व्यक्ति बाह्य और आभ्यन्तरिक मे समान रूप से रस लेता है। वह कल्पना की उडान लेना जानता है, भाव लहरी मे बहता है और दर्शन के गूढ तत्त्वो पर विचार करता है। वह समाज, संगी-साथी, राजनीति मे भी रुचि रखता है। उभयमुख प्रकार का व्यक्ति अपने आभ्यन्तरिक और बाह्य जगत् मे समझौता बनाये रहता है और इस प्रकार उसका व्यक्तित्व और व्यवहार समायोजित प्रकार का होता है। उभयमुख औसत और सामान्य वर्ग का होता है।

Ament [अमेन्ट] दुर्बल मनस्क, अबुद्धि।

बुद्धि के सामान्य स्तर से नीचे के व्यक्ति को 'अबुद्धि' कहते हैं। जीव-विज्ञान की दृष्टि से अबुद्धियो का मस्तिष्क अविकसित होता है। सामाजिक दृष्टिकोण से अबुद्धि व्यक्ति वह व्यक्ति है जिसमे मानसिक *विकास की सामर्थ्य की इतनी न्यूनता होती* है कि वह वयस्क हो जाने पर भी दूसरो द्वारा सहायता अथवा निरीक्षण के बिना *अपनी पर्याप्त देखभाल नही कर सकता।* अर्थात् जीवन की साधारण परिस्थितियो मे

भी स्वरक्षा में असमर्थ होता है। अंग्रेजी दृष्टिकोण से वह जो आन्तरिक कारणों से अथवा रोग अथवा मस्तिष्क क्षति के कारण अठारह वर्ष की आयु से पूर्व उपस्थित अपूर्ण अथवा अवरोधक मानसिक विकास की अवस्था में हो। अमरीका मे भी प्राय. यही परिभाषा मान्य है। परन्तु वहाँ के किसी-किसी प्रदेश के न्यायालय शिक्षामनोविज्ञान अथवा मनोमिती से कुछ अधिक प्रभावित हुए है और किसी को अबुद्धि स्वीकार कर लेने से पहले उसमें शिक्षा से लाभ उठा सकने की असमर्थता का प्रमाण अथवा सामान्य से निम्नस्तर का बुद्धिमाप आवश्यक समझते हैं। शिक्षामनोविज्ञान के अनुसार अबुद्धि बहुत ही मन्द रहते हैं और उनकी अध्ययन में सफल होने की सम्भावना बहुत कम या नही के समान ही होती है। मनोमिती के दृष्टिकोण से बुद्धि के मापदण्ड पर ७५ से नीचे की बुद्धि-लब्ध वाला व्यक्ति अबुद्धि माना जाता है। अबुद्धियों के तीन मुख्य वर्ग माने जाते हैं: (१) ४८ से ७० तक बुद्धिलब्ध वाले दुर्बल बुद्धि (Moron), (२) २८ से ४८ तक बुद्धिलब्ध वाले क्षीणबुद्धि (Imbecile), तथा (३) २८ से कम बुद्धिलब्ध वाले जड़बुद्धि (Idiot)। इनमें से भी प्रत्येक में उच्चस्तर, मध्यमस्तर एवं निम्नस्तर में भेद किया जाता है।

व्यवहार-लक्षणों के आधार पर अबुद्धि तीन प्रकार के हैं:

(१) सुसमायोजित, साधारण प्रतिक्रियाशील अबुद्धि, जिनकी सामाजिक कठिनाइयाँ केवल साधारण बुद्धि की न्यूनता के कारण होती हैं, किसी व्यक्तित्व अथवा उद्वेग के विकार के कारण नहीं, (२) वातूनी अबुद्धि, जिनका भाषा-प्रयोग उनकी सामान्य बुद्धि की अपेक्षा उच्चस्तर का होता है और परिणामस्वरूप सामाजिक व्यवहार बुद्धि-परीक्षण फल की अपेक्षा उच्चस्तर प्रतीत होता है; (३) उत्तेजनाशील अबुद्धि, जो चिड़चिड़े अर्थात्, विध्वसशील स्वभाव के होते हैं और साधारण बच्चों में भी प्रक्रिया उत्पन्न करने में अशक्य उत्तेजनाओं से ही असगत मात्रा में तीव्र उद्वेगावस्था को प्राप्त हो जाते हैं।

Amentia [ऐमेन्शिया] : बौद्धिक दोष, बुद्धि-दुर्बलता।

बौद्धिक प्रक्रिया से सम्बन्धित मन के अधः-सामान्य विकास की अवस्था की ओर संकेत। इस शब्द के पर्यायवाची 'मानसिक दुर्बलता', मानसिक-हीनता (Mental Deficiency) आदि है। सामान्यत. यह पद उस बौद्धिक असामर्थ्यता पर लागू होता है जो या तो जन्म से प्रचलित है अथवा जीवन के प्रारम्भिक काल से। इस प्रकार के बौद्धिक दोष जन्म से ही अथवा जन्म के थोड़े दिन बाद से ही दिखाई देने लगते हैं।

बौद्धिक दोष अर्जित भी होता है, जिसे गौण बौद्धिक दोष भी कहते हैं। यह वातावरण-सम्बन्धी तत्त्वों पर आधारित होता है। इसको वचितजन्य-बौद्धिक दोष (Deprivative Amentia) भी कहते हैं। यह अवस्था उस समय उत्पन्न होती है जबकि वातावरण के कुछ ऐसे सघटकों का अभाव है या अपर्याप्त मात्रा में हैं जो कि मस्तिष्क के पूर्ण विकास के लिए आवश्यक है। अथवा वातावरण में कुछ ऐसे विपरीत तत्त्व हैं जो कि विकास के लिए हानिकारक हैं।

विकासजन्य बौद्धिक दोष (Developmental Amentia) उन मानसिक अपूर्णताओं की ओर निर्देश करता है जिनमें इस अवस्था की उत्पत्ति, कुछ भागों में कीटाणु-सम्बन्धी और कुछ भागों में वातावरण तत्त्वों से सम्बन्धित प्रतीत होती है।

मानसिक अपूर्णता शिरोवृद्धि (Hydrocephalus) का रोग होने से भी उत्पन्न होती है जो कि गुहाओं मे प्रमस्तिष्क मेरु तरल द्रव (Cerebro Spinal Fluid) के भर जाने से होता है।

प्रमस्तिष्क संसर्ग (Cerebral Infection) सिफलिस रोग, मस्तिष्क-क्षति होने से भी इस रोग की उत्पत्ति होती है।

Amnesia [एम्नेशिया]

शब्द के प्रारम्भ मे ग्रीक प्रेफिक्स 'ए' का अर्थ है 'अभाव', अवदास्मृति अभाव।

मानसिक रोग का एक लक्षण। कभी स्मृति का पूर्ण ह्रास होता है कभी आंशिक। आंशिक विस्मृति काल और स्थान से बँधी रहती है—एक विशेष प्रसग स्थान अथवा काल की घटना का स्मरण न हो सकना। यह नियतकालिक रहता है। एक रोगी को १२ १५ की आयु की घटनाएँ न स्मरण रही बाकी बातें घटनाएँ स्मरण रही। यह हिस्टीरिया का प्रमुख लक्षण है। हौफमन के दृष्टिकोण से इसका कारण विचार-केन्द्र (Ideational Centres) का रुग्ण होना है। जेम्स (१८९०) ने इसे मनोविच्छेद का सूचक बतलाया है। इस प्रसग मे कुछ मनोवैज्ञानिको ने सवेदनात्मक अग और सवेदनात्मक ततु की रुग्णावस्था की ओर सकेत किया है।

Amoeba [ऐमीयबा] अमीबा।

अत्यन्त सरल रचनावाला अनियमित तथा सतत परिवर्तनशील आकार का अधतरल-सा प्रतीत होने वाला एक कोष विशिष्ट जीव जो जीव सुलभ हर प्रकार की क्रियाएँ—यथा पोषण, गति, उत्सर्जन जनन आदि—करता है। इन क्रियाओ के लिए इसमे अलग-अलग अग नही होते, अत न तो इसम सरचना का विभेदीकरण होता है और न उससे सम्बन्धित श्रम का विभाजन, जैसा कि बहुकोष विशिष्ट प्राणियो मे पाया जाता है। इसकी अधिक से-अधिक लम्बाई एक चौथाई मिलीमीटर के लगभग होती है। इसके शरीर से छोटे बडे एक या अधिक प्रवर्ध निकले रहते हैं जो बराबर बनते बिगडते रहते हैं। इन्हे कूटपाद (pseudopodia) कहत हैं। अमीबा इन्ही की सहायता से गतिशील होना है तथा भोजन ग्रहण करता है।

Anal Eroticism [एनल इरोसिज्म] गुद-कामुकता।

विसर्जन कामभाव। मनोविश्लेषण की एक विशेष धारणा। कामशक्ति के विकास की विभिन्न अवस्थाओ मे यह प्रारम्भ की अवस्था है जिसमे काम सम्बन्धी रुचि और तुष्टि ऐनल मे सस्थापित रहती है। मलमूत्र त्यागने मे बालक को आह्लाद मिलता है और यह आह्लाद काम प्रकार का होता है।

Analgesia [ऐनल्जेशिया] पीडा-शून्यता।

वेदना की ओर से सम्पूर्ण अथवा आंशिक रूप से सवेदनहीन हो जाना।

Analysis [ऐनालसिस] विश्लेषण।

सामान्य मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेषण का अर्थ है किसी जटिल अनुभूति अथवा मानसिक प्रक्रिया के विभिन्न तथ्यो से अवगत हो जाना अथवा उनका निर्धारण करना। अधिकाशत इस शब्द का प्रयोग मनोविश्लेषण और इसके सहगामी सिद्धान्त और विधि के विशेष अर्थ मे हुआ है। यहाँ तक कि यह मनोविश्लेषण के पर्यायवाची रूप मे भी स्वीकृत है।

देखिये—Psycho analysis।

Analysis of Variance [ऐनालिसिस ऑफ वैरियेन्स] परिवर्त्यन विश्लेषण, प्रसरण विश्लेषण।

कई प्रकार के अन्तरो वाले और कई प्रकार से वर्गीकृत प्रदत्तो के एक साथ सयुक्त विश्लेषण की एक साख्यिकीय विधि जिसका उद्देश्य यह अनुमान करना है कि प्रदत्त वर्गों मे किसी प्रकार के अन्तर महत्त्वपूर्ण हैं कि नही। यदि सम्पूर्ण प्रदत्त वितरण केवल सयोग मात्र से ही होना सम्भव प्रतीत होते हैं, अर्थात् प्रत्येक वर्ग की सयोगिक रचना के कारण उसमें विद्यमान न्यून अथवा अधिक परिवर्त्यता का परिणाम है तो अन्तर महत्त्वपूर्ण नही माने जाने। किसी प्रदत्त वर्ग के अन्तर्गत व्यक्तियो के परस्पर अन्तर का मापन परिवर्त्यनामापन कहलाता है और उसका एक माप परिवर्त्यन (Variance) है। यह प्रदत्त वर्ग मे गुण वितरण के प्रमाप-विचलन (Standard deviation) का वर्ग हुआ करता है। परिवर्त्यन विश्लेषण से यह पता चलता है कि प्रदत्त वर्गों के

परस्पर अन्तरों के संयोग मात्र से हो जाने की सम्भावना कितनी है—१ प्रतिशत, ५ प्रतिशत या और कुछ। जितनी ही यह सम्भावना कम होती है उतना ही प्रदत्त वर्गों के परस्पर अन्तर महत्वपूर्ण माने जाते है। परिवर्त्यन विश्लेषण मनोवैज्ञानिक प्रयोगों की सार्थक योजनाएँ बनाने मे विशेषतया उपयोगी होता है।

Analytical Psychology [ऐनालिटिकल साइकॉलो'जी] : विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान।

इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक कार्ल गुस्टाव युग (१८७५—१९६१) हैं। युग फ्रायड (१८५६—१९३९) के ही सहयोगी हैं और प्रारम्भ मे इन्ही के विचारो के समर्थक रहे। आगे चलकर कुछ मूल सिद्धान्तो से मतभेद होने के कारण सन् १९१२ मे उन्होने विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की नीव डाली जो मनोविश्लेषण से एक स्वतन्त्र सम्प्रदाय के रूप में स्थापित हुआ। विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान मे अज्ञात मन, मानसिक शक्ति स्वप्न-विश्लेषण, व्यक्तित्व-विकास और मानसिक रोग के निदान-उपचार पर गूढ और विस्तृत विचार-विमर्श हुआ है और इससे सम्बन्धित अन्वेषण प्रसिद्ध है।

युग के अनुसार अज्ञात मन के दो भाग हैं: (१) व्यक्तिगत अज्ञात मन (Personal unconscious) और (२) सामूहिक अज्ञात मन (Collective unconscious)। सामूहिक अज्ञात मन युग की एक नयी परिकल्पना है।

युग के मानसिक शक्ति-सिद्धान्त मे यह प्रतिपादित किया गया है कि लिबिडो' अर्थात् 'मानसिक शक्ति' कामशक्ति मात्र नहीं; यह एक सामान्य शक्ति है जिसका प्रयोग समस्त प्रवृत्ति-इच्छा भावनाओ की तुष्टि मे होता है। कामशक्ति वस्तुत. मानसिक शक्ति का एक भाग मात्र है। व्यवहार और व्यक्तित्व के सतुलन होने पर मानसिक शक्ति का उपयोग हरेक दिशा मे समान होता है, अन्यथा इसका उपयोग अनुपात मे नहीं होता। मानसिक शक्ति का एक दिशा में अधिक व्यय होने का अर्थ है, दूसरी दिशा मे अभाव। यह युग का मानसिक शक्तिपूरक सिद्धान्त है।

विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान मे स्वप्न की वैज्ञानिक व्याख्या दी गयी है। युग के अनुसार स्वप्न का सम्बन्ध अतीत, वर्तमान और भविष्य से रहता है; इसमे अतीत मात्र का प्रसग नही मिलता। स्वप्न में व्यक्तिगत भावना-ग्रथियों का प्रदर्शन होता है तथा इसमे सामूहिक अज्ञात मन की भावात्मक प्रतिमाएँ भी अभिव्यक्त होती है। इस प्रकार स्वप्न के व्यक्तिगत और अव्यक्तिगत रूप दोनो ही महत्वपूर्ण हैं। स्वप्न मे जिन प्रतीको का प्रयोग होता है उनका अर्थ मूल्य-महत्त्व स्थिर नही होता; अर्थ परिस्थिति के प्रसग मे होता है। जिन प्रवृत्तियो का अभिव्यक्तिकरण होता है वे बहुरगी प्रकृति की होती है। काम-प्रवृत्ति अन्य प्रवृत्तियो मे से एक प्रवृत्ति मात्र है।

'विकसित व्यक्तित्व' (Individuation) की धारणा का प्रयोग युग ने एक विशेष अर्थ मे किया है। इसकी चार अवस्थाएँ हैं। पहली अवस्था मे व्यक्ति को अपनी भावना-इच्छा, स्वाभाविक प्रकृति के साथ समझौता करना होता है। 'शैडो' व्यक्ति का आवश्यक अंग है; इसका निष्कासन करके, व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास सम्भव नही होता; इसकी प्रकृति को समझकर व्यक्ति को इसे अपनाना है। दूसरी अवस्था वह है जिसमे स्त्रीभाव-प्रतिमा (Anima) तथा पुरुष-भाव-प्रतिमा (Animus) का ज्ञान होना है। जब तक ये भाव प्रतिमाएँ अज्ञात मन में पड़ी रहती है, व्यक्ति का जीवन एक उलझन-सा रहता है। पुरुष का असगत आकर्षण स्त्री की ओर और स्त्री का पुरुष की ओर बना रहता है। इनकी चेतना होने पर व्यक्तित्व मे स्थिरता आती है। तीसरी अवस्था मे ओल्ड वाइजमैन और मेगना मैटर से

तादात्म्य होना है। चौथी अवस्था मे आत्म (self) का आविर्भाव होता है और व्यक्ति एक विशेष शक्ति का अनुभव करता है और सुख दुख के परे हो जाता है। यह आध्यात्मिक संवेगात्मक और बौद्धिक प्रौढता का सूचक है।

युग का वृत्ति सिद्धान्त बहुमुखी है। विभिन्न व्यक्तियो म विभिन्न प्रेरको का प्राधान्य होता है। मानव के प्रेरक रूप मे कई एक प्रवृत्तियाँ क्रियमाण होती है। इनम धार्मिक, नैतिक काम, आत्म प्रतिपादन इत्यादि प्रमुख है। जब इन प्रवृत्तियो की तुष्टि नही होती तत्सम्बन्धी भावना ग्रन्थियाँ पड जाती है। हरेक भावना-ग्रन्थि स्वतन्त्र रूप से चालित होती है। युग की मुक्त भावना-ग्रन्थि की परिकल्पना (Autonomous complex) प्रसिद्ध है और इनका मानसिक रोग के सम्बन्ध म विशेष महत्त्व है। भावना-ग्रन्थियो के बारे म विशेष अन्वेषण उपलब्धियो के होने के कारण विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान को काम्प्लेक्स साइकालोजी भी कहते हैं।

विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान का विशेष स्थान और महत्त्व मनोविज्ञान क्षेत्र मे रहते हुए भी इसम प्रमाणित अन्वेषित मूल तथ्यो को मनोवैज्ञानिक उपलब्धियो के रूप मे न स्वीकार कर दार्शनिक महत्ता दी गई है। इसम अनेक धारणाएँ हैं जो मूलत दार्शनिक महत्त्व की हैं। कारण यह है कि उन्हे वैज्ञानिक आधार पर स्वीकृत करना सम्भव नही है। किन्तु वस्तुत युग वैज्ञानिक थे दार्शनिक नही।

Anchor Stimuli [ऐंकर स्टीमुलाइ] कर्षकोत्तेजन।

किसी मापदण्ड के दोनो सिरो के अतियात्मक पद जिनका कार्य यह होता है कि माप वितरण को अपनी-अपनी दिशा की ओर खीचकर फैलाये रहे और इस प्रकार मापको के मध्यमपद की ओर स्वाभाविक आकर्षण के प्रभाव को कम करके माप-वितरण की वास्तविकता को बढायें। विशेष प्रकार से आकलन दण्डो के उपयोग मे आकको म अतियात्मक पदो के अनुपयोग की स्वाभाविक मनोवृत्ति हुआ करती है। इसलिए मनोवैज्ञानिक यदि आकको द्वारा पचपदीय-अष्टपदीय आदि मापदण्ड के सभी पदो का उपयोग चाहता है तो उसे चाहिए कि उस मापदण्ड मे दोनो सिरो पर एक एक अतिरिक्त पद कर्षकोत्तेजना का काम देने के लिए जोड दे। कभी-कभी मापदण्ड के वर्तमान विस्तार के अन्दर ही कर्षकोत्तेजनाएँ जोड दी जाती हैं। कुछ मनोवैज्ञानिको ने यह मत भी प्रकट किया है कि किसी प्रयोग म उपयोग होने वाली प्रत्येक उत्तेजना अन्य सभी उत्तेजनाओ के प्रति की जाने वाली प्रतिक्रियाओ को प्रभावित करती है और इसलिए प्रत्येक उत्तेजना कर्षकोत्तेजना का काम देती है।

Anecdotal Method [ऐनकडोटल मेथड] घटना-वर्णन विधि।

बालको तथा पशुओ के व्यवहार को अध्ययन करने की एक विशिष्ट विधि, जिसके अ तर्गत उनके जीवन की छुट पुट महत्त्वपूर्ण घटनाओ को लेकर उन्ही के आधार पर उनके क्रिया-व्यापार, स्वभाव के सम्बन्ध म अनुमान लगाया जाता है। यह विधि अवैज्ञानिक है।

Anesthesia [ऐनेसथेसिया] संवेदन-हीनता।

संवेदन प्रक्रिया (Sensation) सम्बन्धी विकृति। प्रमुखत यह हिस्टीरिया का लक्षण है। इसम शरीर का कुछ भाग स्पर्श उत्तेजना की ओर संवेदनहीन हो जाता है। संवेदनहीनता कभी पूर्णत होती है और कभी आंशिक रूप से। पूर्ण संवेदन-हीन हो जाने पर शरीर का जो भाग संवेदनहीन होता है, उसे यदि नोचा या काटा जाय तो भी अनुभव नही होता। कभी स्पर्श का तो अनुभव नही होता, किन्तु किसी प्रकार का वार किया जाए तो संवेदना होने लगती है। यह आंशिक संवेदनहीनता है।

Anima [एनिमा] स्त्रीभाव-प्रतिमा,

अन्तर्नारी ।

विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान की एक प्रमुख धारणा । इसकी व्याख्या वैज्ञानिक रूप में एक विशेष अर्थ में की गई है। स्त्रीभाव-प्रतिमा सामूहिक अज्ञात मन की निधि है। यह प्रतिमा पुरुष में भी विद्यमान रहती है और इसी से मनोवैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्ति द्विलिंगी कहा गया है। यह भाव-प्रतिमा स्त्री-गुण विशेषता का प्रतीक है। जिस पुरुष में इस भाव-प्रतिमा की प्रधानता होती है, उसमें स्त्री गुण अधिक होते हैं। ऐसे पुरुष भीरु-लज्जालु स्वभाव के होते हैं। उनमें आत्मस्थापन की वृत्ति निष्क्रिय-सी रहती है और हीनत्व ग्रन्थि सम्बन्धी भाव रहते हैं। व्यक्तित्व के विकास के लिए स्त्रीभाव-प्रतिमा से समझौता करना पुरुष के लिए आवश्यक है। इस भाव-प्रतिमा का ज्ञान मन में प्रवेश होने पर ही पुरुषों में गम्भीरता और परिपक्वता का होना सम्भव है। पुरुषों के व्यक्तित्व के आध्यात्मिक विकास की यह आवश्यक दूसरी सीढ़ी है जिसमें स्त्री भाव-प्रतिमा चेतना में प्रवेश कर जाती है और वह व्यक्ति विशेष स्त्री-सम्बन्धी भावना-ग्रन्थियों से मुक्त हो जाता है। तब उसमें स्त्रियों की लिप्सा तथा कामुकता का भाव अवशेष नहीं रह जाता।

Animal Learning [ऐनिमल लर्निंग] : पशु अभ्यसन, पशु अधिगम ।

प्रयास व त्रुटि, सम्बन्ध प्रत्यावर्तन, अनुकरण, अन्तर्दृष्टि आदि विधियों द्वारा पशुओं का नये व्यवहारों का उपार्जन। पशु उन प्रक्रियाओं द्वारा कोई नया व्यवहार सीख लेता है। ये प्रक्रियाएँ अभ्यसन में मदद देती हैं। पावलॉव, थार्नडाइक, कोहलर, मॉर्गन इत्यादि के अन्वेषण पशु-अभ्यसन के प्रसंग में उल्लेखनीय हैं।

Animal Magnetism [ऐनिमल मैगनेटिज्म] : जीव-आकर्षण-शक्ति, प्राणि चुम्बकत्व ।

जीव-आकर्षण-शक्ति एक प्रकार की रहस्यमयी प्रकृत शक्ति है। चुम्बक ऐसे पदार्थ हैं जो दिक् में व्याप्त अपने सूक्ष्म प्रवाह द्वारा ग्रहों के समान मानव को प्रभावित करते हैं। पहले-पहल वैनहाल्मट ने जीव-आकर्षण शक्ति के सिद्धान्त का प्रचार किया कि प्रत्येक व्यक्ति के शरीर से एक प्रकार का चुम्बकीय रस प्रवाहित होता है। व्यक्ति इसके द्वारा अपनी इच्छानुसार अन्य के शरीर और मन पर प्रभाव डाल सकता है। वियाना के डाक्टर मेसमर (१७३४—१८१५) ने व्यक्ति पर पड़ने वाले चुम्बक के प्रभाव का अध्ययन-मनन किया और यह निष्कर्ष निकाला कि चुम्बक के स्पर्श से व्यक्ति को सम्मोहित किया जा सकता है। उन्होंने स्वयं अपनी चुम्बकीय शक्ति से एक मनोदौर्बल्य (Psychoneuroses) के रोगी का सफलता से उपचार किया। किन्तु विज्ञान की दृष्टि से यह अन्धविश्वास था और ओषधि-क्षेत्र में इसे मान्यता न मिली।

Animal Psychology [ऐनिमल साइकालोजी] : पशु मनोविज्ञान ।

यह मनोविज्ञान की वह शाखा है, जिसमें मनोवैज्ञानिकों ने प्रायोगिक विधि द्वारा पशुओं के व्यवहार का अध्ययन किया है। पशु-मनोविज्ञान शब्द रोमंस द्वारा निर्मित और प्रचलित हुआ है। इसका सूत्रपात इंग्लैण्ड में हुआ। डार्विन की 'मानव एवं पशुओं में संवेगों की अभिव्यक्ति' (१८७२) लेख के प्रकाशन से आधुनिक मनोविज्ञान में नये युग का सूत्रपात होता है। अमरीका में पहले-पहल मनोविज्ञान का विशिष्ट विभाग खोला गया और वहीं पशु-प्रयोगशालाओं की भी स्थापना हुई। डार्विन के समय से ही पशु-मनोविज्ञान का प्रमुख विषय पशुओं एवं मानव के मनों में निरन्तरता अथवा अनवरत विकास की एकसूत्रता की स्थापना है। अनेक अन्वेषणों द्वारा पशुओं में भी बुद्धि एवं सप्रयोजन क्रियाओं के अस्तित्व को सिद्ध किया गया। व्यवहार की यह व्याख्या कि यह चेतना-रहित है—इससे

यान्त्रिक सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव हुआ। पशु मनोविज्ञान, जो पशु-चेतना में विश्वास करता था इसका विरोधी रहा। मुख्य समस्या थी चेतना की कसौटी का निर्धारण करना और इसके आविर्भाव की परिभाषा को जटिलताओं के प्रसंग में देना। यन्त्रवादी अपना अन्वेषण निम्न स्तर के जन्तुओं से प्रारम्भ करते हैं, पर वे कभी भी बन्दरों या मनुष्यों तक नहीं पहुँच सके। इसके विपरीत मनोवैज्ञानिक अपना अन्वेषण उच्च श्रेणी के जीवों से प्रारम्भ करते हैं, पर वे भी अभी तक अपृष्ठवंशियों तक नहीं पहुँच सके। उक्त दोनों ही सम्प्रदायों ने बहुत वाद विवाद के बाद चेतना के संकेत, साहचर्यात्मक स्मृति तथा प्रतिक्रिया में परिवर्तन प्रस्तावित तथा खण्डित किए।

बीसवीं शती के प्रथम दशक में पशु बुद्धि पर थॉर्नडाइक द्वारा प्रस्तुत विवरण वर्तमान प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का आविर्भाव माना जाता है। सीखने के सन्दर्भ में पशु प्रयोज्यों का अधिक-से-अधिक उपयोग किया गया। मनोवैज्ञानिकों ने अनुभव किया कि वे पशुओं में केवल उनके शिक्षण और भेद निर्धारण के परीक्षण द्वारा ही उनकी उच्च मानसिक क्षमताओं का पता नहीं लगा सकते। थार्नडाइक का यह दृढ़ दृष्टिकोण था कि पशु केवल प्रयत्न और भूल द्वारा ही सीख सकता है। इसी से अनुकरण, स्मृति, स्वतन्त्र कल्पनाएँ आदि सभी की प्रयत्न और भूल के माध्यम से व्याख्या की गई।

वर्तमान युग में पशु-मनोविज्ञान के निष्कर्ष भिन्न हैं। पशुओं एवं मनुष्यों के बीच उनकी विकास-परम्परा में कोई अनिरन्तरता नहीं मानी गई। वनमानुष भी अपने लिए रुचिकर और समक्ष में आने वाले व्यवहार को मानव एवं वनमानुष में देख उसका अनुकरण कर सकता है। इसी खोज क्रम में पशुओं में विलम्बित प्रतिक्रिया, जटिल निर्णय तथा सूझ आदि के भी संकेत मिले। इन क्रान्तिकारी प्रयोगों ने मन की निरन्तरता विकास-परम्परा में स्थापित की है।

पशु मनोविज्ञान को तुलनात्मक मनोविज्ञान (Comparative Psychology) अथवा विकास मनोविज्ञान (Developmental Psychology) भी कहते हैं।

Animism [ऐनिमिज़्म] सर्वात्मवाद। वह सिद्धान्त जिसमें यह प्रतिपादित है कि आत्मा नित्य है। ऐनिमा का अर्थ होता है—आत्मा। मनोविज्ञान में इस पद का संकेत उस सिद्धान्त-सम्प्रदाय की ओर है जिसके अनुसार जीवन का मूल तथ्य और आधार सूक्ष्म आत्मा मात्र है, स्थूल शरीर नहीं। जीवविज्ञान और मनोविज्ञान के प्राग्वैज्ञानिक युग में सर्वात्मवाद एक स्वीकृत सिद्धान्त था और इसमें यह प्रतिपादन हुआ कि आत्मा हरेक वस्तु में विद्यमान है तथा वास करती है, अथवा यह आन्तरिक स्वतः सिद्धान्त के रूप में है।

Animus [ऐनिमस] पुरुषभाव प्रतिमा। सामूहिक अज्ञात मन की एक भाव-प्रतिमा—वह भाव-प्रतिमा जो पुरुष के गुण-विशेषता का प्रतीक है। जिस स्त्री में इस भाव प्रतिमा की प्रधानता रहती है उसमें पुरुषत्व के गुण अधिक होते हैं। ऐसी स्त्रियाँ पुरुषों से समानता और स्पर्धा लेती हैं, उनमें आत्म प्रतिपादन की वृत्ति प्रमुख रहती है और वे शासनप्रिय होती हैं। व्यक्तित्व विकास के लिए चेतन मन में पुरुषभाव प्रतिमा का प्रवेश होना आवश्यक है। तभी स्त्रियों में सौम्यता का गुण और व्यवहार और भाव में परिपक्वता आती है, व्यक्ति पारदर्शी बनता है। इस अज्ञात भाव-प्रतिमा का चेतना में प्रवेश होना अध्यात्म-विकास का सूचक है।

Anorexia [ऐनोरेक्सिया] क्षुधा-अभाव। हिस्टीरिया रोग का एक लक्षण। कभी-कभी रोगी में क्षुधा का न रहना अतिवर्धक रूप में रहता है। औसत रूप में होने पर समस्या नहीं उठती। इसकी तीन अवस्थाएँ होती हैं और कम से कम १८ मास तक चलती हैं . (१) पहली अवस्था

जठर-सम्बन्धी (Gastric period) कही जाती है। इसमें पेट पर असर होता है। रोगी सदा अपच की शिकायत करता है। किन्तु बाहर से देखने में पूर्णतः स्वस्थ लगता है। इस अवस्था म रोगी डॉक्टर या मित्रों के सुझाव मान लेता है। (२) दूसरी अवस्था में वह डॉक्टर की बात नहीं मानता, 'भूख नहीं है'—यही रट लगाता है। अल्प आहार से उसका भार घट जाता है। (३) तीसरी अवस्था में शारीरिक कष्ट प्रारम्भ होता है। वह कब्ज से पीड़ित हो जाता है और वह अन्य प्रकार के उदर-रोग से भी आक्रान्त हो जाता है। हठ से भोजन न करने पर सम्भव है उसकी मृत्यु भी जल्दी हो जाए।

Anosmia [एनोस्मिया] : घ्राण-संवेदन-हीनता, अघ्राणता।

घ्राण-सम्बन्धी उत्तेजक के प्रति संवेदन का कम होना अथवा क्षीण होना। यह अवस्था जन्मजात हो सकती है; यह बाद में भी उत्पन्न हो सकती है। इसकी उपस्थिति भिन्न-भिन्न लोगों में अधिक समय अथवा अल्प समय के लिए हो सकती है। यह घ्राण-संवेदनहीनता, ठीक वर्णान्धता अथवा ध्वनियों के लिए बहरे-पन के समान है।

Anthropology [ऐन्थ्रॉपोलोजी] : मानवशास्त्र, मानवविज्ञान।

मानव तथा जगत् का एक अध्ययन। इसके दो आधारभूत पक्ष हैं :(१) मनुष्य का एक अवयव के रूप में अध्ययन (जातिवाद, सामाजिक मानवशास्त्र, सांस्कृतिक मानवशास्त्र, पुराविद्या, जातिवृत्त); (२) मानवशास्त्र प्राकृतिक तथा सामाजिक दोनों ही प्रकार का विज्ञान है। ऐतिहासिक दृष्टि से इसका अध्ययन-क्षेत्र प्रागैतिहासिक तथा आदिम संस्कृतियों तक है। इसमें पूर्वीय मानवों तथा उनकी संस्कृतियों की भी खोज हुई है। वर्तमान में समसामयिक अमरीका तथा यूरोप की संस्कृतियाँ भी इसके अध्ययन का विषय बनी हैं।

मनोविज्ञान का मानवशास्त्र से निकट-वर्ती सम्बन्ध है। व्यक्तित्व का विकास संस्कृति का परिणाम है।

Anthropometry [एन्थ्रॉपोमेट्री] : मानवमिति।

न्याय तथा अपराध आदि के क्षेत्र में १८८३ में बर्टिलो ने व्यक्ति की पहचान के लिए एक विशिष्ट शारीरिक माप-पद्धति निश्चित की और अपनी इस व्यक्ति-पहचान-पद्धति को मानवमिति नाम दिया। इस पद्धति में मूल माप यह थे—सिर की लम्बाई तथा चौड़ाई, बीच की उँगली और बाएँ पैर की लम्बाई और अग्रभुजा की कोहनी से बीच की उँगली के सिरे तक की लम्बाई।

१८८४ में इंग्लैण्ड में फ्रांसिस गाल्टन ने भी एक मानवमिति प्रयोगशाला स्थापित की। उसमें छह वर्ष में ९,३३७ व्यक्तियों के विषय में लम्बाई, भार, चौड़ाई, श्वसन शक्ति, खींचने और दबाने की शक्ति, मारने की गति, श्रवण, दृष्टि, वर्ण-संवेदना तथा अन्य व्यक्तिगत प्रदत्त ज्ञात किये गए। गाल्टन ने इन सबसे सामान्य निष्कर्ष यह निकाला कि स्त्रियाँ पुरुषों से हर प्रकार से हीन होती हैं। इसके अति-रिक्त गाल्टन ने संयुक्त फ़ोटो-पद्धति से अपराधी आदि की लाक्षणिक सामूहिक आकृतियाँ निश्चित करने का भी प्रयत्न किया।

अपराधियों को पहचानने के लिए फिर इस मानवमिति के स्थान पर अंगुलछाप पद्धति का उपयोग होने लगा। परन्तु मनोविज्ञान में शारीरिक विशेषताओं तथा मानसिक विशेषतः व्यक्तित्व गुणों के परस्पर सम्बन्ध की खोज के लिए शरीर-आकृति-मापों का उपयोग होता ही रहा है और उनके आधार पर निकाले जा सकने वाले निष्कर्षों के सम्बन्ध में पर्याप्त विवाद चलता रहा है।

१९०६ में एन० नोर्सवर्दी ने कई प्रकार के मापों का प्रयोग किया। इनमें चार दैहिक माप थे, तीन संवेदनात्मक प्रत्यक्ष

के परीक्षणो पर आधारित थे, तथा पाँच शब्दो के प्रयोग तथा अर्थ ग्रहण के प्रतीकात्मक क्रिया परीक्षणो से प्राप्त होते थे।

१९१६ में ई० एo डौल ने अल्पबुद्धि के मनोनिदान के लिए मानवमापन विधि की व्याख्या की है। इसम तीन शारीरिक रचना के मापो का एव तीन मनोदैहिक क्रिया गुणो के मापो का उपयोग किया गया है। शारीरिक माप खडे होकर लम्बाई बैठकर ऊचाई एव भार हैं। मनोदैहिक क्रिया गुण माप वाएँ हाथ की ग्रहण शक्ति और सामान्य बल है। प्रथम तीन मापो के शतासको का मध्यक ज्ञात करके उसे 'शारीरिक रचना मध्यक' और अन्य तीन मापो के शतासकों का मध्यक ज्ञात करके उसे 'मनोदैहिक प्रक्रिया मध्यक' नाम दिया गया है। शारीरिक मध्यक म से मनोदैहिक मध्यक घटाकर प्राप्त फल को शारीरिक अतिरेक माना है। इन मापो का सामान्य से कम होना अल्पबुद्धि का लक्षण पाया गया और इससे अल्पबुद्धि की मात्रा का सकेत मिल जाता है।

इसी प्रकार एल० ए० तीरा पे गुई ने सामान्य व्यक्ति-समूहा तथा अल्पबुद्धि व्यक्ति समूह के लिए बहुत-से दैहिक माप एकत्रित किए हैं। प्रत्येक प्रकार के समूह के विषय मे प्रत्येक दैहिक माप के मध्यक विचलन को मध्यकाक से भाग करके परिवर्त्यता भागफल प्राप्त कर लिया गया है और यह देखा गया है कि दोनो का अन्तर सामान्य समूह के परिवर्त्यता भागफल का कितना प्रतिशत है। इसे उस दैहिक गुण का अल्पबुद्धि लक्षण अथवा अल्पबुद्धि-जन्य दैहिक न्यून माना गया है।

Anxiety [ऐन्क्षाइटी] चिन्ता।

भयावह एव वेदनाजन्य परिस्थितियो के प्रति व्यक्ति की एक प्रतिक्रिया अथवा सवेगात्मक वृत्ति विशेष जिसका सम्बन्ध प्राय भविष्य से रहता है तथा जिसम तरह तरह की आशा-आशकाओ का योग रहता है।

चिन्ता के दो रूप हैं (१) साधारण—किसी भी भयावह एव घातक परिस्थिति के प्रत्यक्ष होने पर उससे घबराना (यथा सामने से विषधर साँप को आता हुआ देखकर उससे भागना, तैरना न जानने के कारण गहरे पानी से भयभीत होना आदि)। साधारण चिन्ता विवेकपूर्ण होती है और उसका सम्बन्ध प्राय वर्तमान से रहता है। (२) असाधारण—अकारण ही चिन्तित रहना। असाधारण चिन्ता का सम्बन्ध प्राय भविष्य से रहता है। इसके भी दो रूप हैं (क) मुक्ताचारी चिन्ता (Free floating Anxiety)—इसमे व्यक्ति बिना किसी स्पष्ट कारण के अत्यधिक चिन्तित रहता है। (ख) निश्चित चिन्ता—इसमे व्यक्ति अपने लिए कोई व्यर्थ का कारण खोज उसी को लेकर चिन्तित रहता है।

असाधारण चिन्ता का बढा हुआ एव विकृत रूप ही चिन्ता मनोरोग (Anxiety Neurosis) तथा चिन्ता-उन्माद (Anxiety Hysteria) है। चिन्ता का वास्तविक कारण अथवा ग्रन्थि अचेतन म रहती है। रोगी को उसका कोई ज्ञान नही रहता। वह उस अचेतन ग्रन्थि के प्रच्छन्न रूप से व्यक्त चेतन लक्षणो को लेकर ही चिन्तित रहता है।

Anxiety Neurosis [ऐन्जाइटी न्यूरोसिस] चिन्तारोग।

यह एक प्रकार का मानसिक रोग है, जिसका प्रमुख लक्षण चिन्ता है। विशेषत रोगी की चिन्ता भविष्य के लिए रहती है, अतीत की ओर उसका ध्यान नही जाता। साधारण व्यक्ति की चिन्ता और विकृत व्यक्ति की चिन्ता में भेद है। साधारण की चिन्ता परिस्थिति जन्य है और असाधारण की चिन्ता आन्तरिक कठिनाइयो के कारण होती है। रोगी अपनी चिन्ता का कारण नही जानता और उसम अपनी चिन्ता को न्यायसगत प्रमाणित करने की हठ-सी होती है। विकृत चिन्ता दो प्रकार की होती है.

(१) मुक्ताचारी चिन्ता, (२) मूर्त स्थल वस्तु-सम्बन्धी चिन्ता। चिन्तारोग में शारीरिक और मानसिक दोनो लक्षण मिलते हैं। शारीरिक मे हृदय और नाड़ी की गति का तेज होना, रक्त-प्रवाह का बढ़ना और ग्रन्थि-स्राव का वेग बढ़ना है। इसमे रोगी दुःखी और म्लान रहता है। स्वभाव से वह न तो अन्तर्मुख होता है और न बहिर्मुख—प्रायः स्वार्थी प्रकृति का होता है और किसी वस्तु के प्रति उसका अनुराग लगातार बहुत दिनो तक नही रहता। फ्रायड ने चिन्तारोग का मूल कारण काम-वासना का दमन माना है। वस्तुतः चिन्ता का मूल कारण काम-वासना तथा उस पर प्रतिबन्ध ही नही है। यह रोग किन्ही दो संवेगो के संघर्ष का परिणाम भी हो सकता है। एडलर ने आत्म-स्थापन की प्रवृत्ति पर जोर दिया है। बहुधा बचपन तथा यौवन में माता-पिता तथा शिक्षकों की उदासीनता के कारण बच्चों में अहम् भावना जागृत नहीं हो पाती जिससे उनमे हीनत्व-ग्रन्थि पड़ जाती है और व्यक्ति अकारण चिन्तारोग से आक्रान्त होता है। वस्तुतः चिन्तारोग का मूल कारण दमन है—दमन की हुई मूल प्रवृत्ति किसी भी प्रकार अथवा स्वभाव की हो। यह मुख्य रूप से कठिनाइयों का सामना करने का प्रबल प्रयास है।

मनोविश्लेषण के अनुसार चिन्तारोग के उपचार की मुख्य विधि अबाध-मनःआयोजन है।

देखिये—Free association.

Apathy [ऐपथी] : उदासीनता।

मानसिक अस्वस्थता का एक लक्षण। आभ्यन्तरिक क्षेत्र में अधिक तनाव-संघर्ष (देखिये—tension) होने पर व्यक्ति में हर विषय-वस्तु की ओर विराग का भाव उत्पन्न हो जाता है और तब ऐसी परिस्थितियाँ भी, जो सामान्यतः भाव-संवेग को उद्दीप्त करने के लिए पर्याप्त हैं, संवेगात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करने मे असमर्थ हो जाती हैं। रोगी के लिए सभी उत्तेजक निर्बल हो जाते हैं। यह असामयिक मनोह्रास (देखिये – Dementia Praecox) का एक प्रमुख लक्षण है, जिसमें रोगी स्व-केन्द्रित हो जाता है और बाह्य जगत् से पूर्णतः विमुख-उदासीन।

Aphasia [एफेसिया] : वाचाघात, वाक्-विकृति।

वाचन-प्रक्रिया की योग्यता का नाश। प्रायः इसका कारण मस्तिष्क की क्षति माना जाता है। १८६१ मे ब्रोका ने कुछ शब्दो से अधिक बोल सकने मे अशक्त पुरुषो मे मस्तिष्क के क्षत हुए स्थान का पता लगाया था। १९२० और १९२६ में हैड ने इस रोग की मानसिक एवं कायिक अवस्थाओ का वर्णन किया था, और इसका कारण मस्तिष्क मे है, इसमें विश्वास न करते हुए भी, यह माना था कि मस्तिष्क के कई क्षेत्रो मे क्षतियाँ आ जाने से वाचन-प्रक्रिया की कई योग्यताएँ नष्ट हो जाती हैं।

वाक्-विकृति कई प्रकार की होती है। इनमे मुख्य हैं: (i) गत्यात्मक विकृति अर्थात् बोलने की सामर्थ्य का नाश, (ii) इंगित द्वारा विचारों को प्रकट करने की योग्यता का नाश, (iii) मूक रहना, (iv) इंगित अथवा विचारो मे असामंजस्य, (v) लेखन-क्षमता नाश, (vi) पाठन-नाश—लिखित शब्दों की आकृतियों के प्रत्यक्षीकरण न कर सकने के कारण उनको पढ़ने की योग्यता का नाश, (vii) विशेष प्रकार के चिह्नों के अर्थ ग्रहण करने की सामर्थ्य का नाश, (viii) उच्चारित शब्दो को समझने की योग्यता का नाश, (ix) संगीत को समझने की योग्यता का नाश।

Appetite [एपिटाइट] : तृष्णा।

(१) तात्कालिक इच्छा। (२) किसी भी वस्तु, विशेषकर भोजन की उत्कट अभिलाषा (आमाशय की अनैच्छिक मांस-पेशियों में श्रमिक आकुचन-प्रसारण के कारण जागृत भोजन की इच्छा-क्षुधा अथवा भूख तथा बिना भूख के भोजन की

उत्कट इच्छा 'तृष्णा' है)। (३) दैहिक परिस्थितियो से उत्पन्न जन्मजात अथवा अर्जित वेगवान अन्त प्रेरणा—जन्मजात होने की अवस्था मे प्राय इसे मूलप्रवृत्यात्मक कहा जाता है।

Appetition [एपिटिशन] तृष्णा।

दार्शनिक लाइब्रनित्ज के मनोवैज्ञानिक अनुसन्धानो मे तृष्णा शब्द का प्रयोग 'अन्त प्रेरणा' के अर्थ म किया गया है, जिसका प्रभाव एक वस्तु से दूसरी वस्तु के प्रत्यक्षीकरण पर पड़ता है। कभी-कभी यह शब्द 'चेतन तृष्णा' के लिए प्रयुक्त हुआ है। इस अर्थ म इस शब्द का प्रयोग दार्शनिक स्पिनोज़ा ने किया है। यह मानव का मूल तथ्य है, क्योकि मानव की क्रियाएँ किसी-न-किसी तृष्णा-भाव से निर्धारित निश्चित रहती है।

Apperception [एपरसेप्शन] सम्प्रत्यक्ष।

अस्पष्ट से पृथक स्पष्ट प्रत्यक्षीकरण का भेद दर्शाने के लिए इस शब्द का प्रारम्भ म प्रयोग हुआ। जर्मनी के दार्शनिक लाइब्रनित्ज ने मानसिक क्रियाओ तथा घटनाओ का वर्गीकरण क्रम से उनकी स्पष्टता के आधार पर किया—चेतन, स्पष्ट, निश्चित से अस्पष्ट, गूढ और अचेतन का उन्होने क्रम रखा। जहाँ स्पष्ट प्रत्यक्षीकरण मिलता है वहाँ पहचान और तादात्म्य भी होता है। फ्रान्स और इग्लैण्ड के मनोवैज्ञानिको के अनुसार सम्प्रत्यक्ष का यही मूल अर्थ रहा। हर्बर्ट के शिक्षा-मनोविज्ञान मे यह आत्मीकरण की आधारभूत प्रक्रियाओ एव ज्ञान प्राप्त करने मे नये सस्कारो अथवा सवेदनो (impressions) की व्याख्या के लिए हुआ है। हर्बर्ट ने वर्तमान ज्ञान 'एपरसेप्टिव मास' की महत्ता पर बल दिया है। वुट के अनुसार यह वह प्रक्रिया है जिससे हमारे अनुभव के विभिन्न तथ्य समायोजित किए जाते हैं और स्पष्ट रूप से चेतना मे प्रविष्ट होते हैं। वुट के अनुसार सभी मानसिक प्रक्रियाओ मे यह प्रक्रिया आवश्यक है। किसी भी प्रक्रिया मे तीन अवस्थाएँ होती हैं : (१) सवेदना, (२) प्रत्यक्षीकरण जिसमे चेतन मे अनुभूति मात्र होती है, (३) सम्प्रत्यक्ष जिसमे अनुभव का एकीकरण, समायोजन, सश्लेषण हो जाता है। परिणामस्वरूप इच्छा क्रिया होती है और प्रतिक्रियाएँ सम्पादित होने लगती हैं।

इस धारणा का ऐतिहासिक महत्त्व यह था कि मनोवैज्ञानिको ने केन्द्रीय (local) और सीमा की प्रतिमाओ मे विभिन्नता देखी, अथवा ध्यान केन्द्रीयण की समस्या का गूढ अध्ययन प्रारम्भ हुआ। आधुनिक मनोविज्ञान मे सम्प्रत्यक्ष की धारणा पर बहु आक्षेप हुआ है और ध्यान-केन्द्रीयण की समस्या के प्रसग में इसका थोड़ा बहुत उल्लेख हुआ है।

Applied Psychology [अप्लाइड साइकॉलोजी] व्यावहारिक मनोविज्ञान, प्रयुक्त मनोविज्ञान।

यह मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमे प्रमुखत प्रायोगिक मनोविज्ञान (देखिये—Experimental Psychology) की विधियो, युक्तियो तथा परिणामो का उपयोग व्यावहारिक जीवन तथा समस्याओ के लिए किया गया है। व्यावहारिक मनोविज्ञान का उद्देश्य मानव के जीवन मे अधिक-से-अधिक सामजस्य लाना है। इसमे मनोविज्ञान के व्यावहारिक पहलू का उल्लेख हुआ है। इसमे नये किसी सिद्धान्त का प्रतिपादन नही हुआ, केवल मनोविज्ञान के सिद्धान्तो की उपयोगिता पर विस्तार से विचार हुआ है। व्यावहारिक मनोविज्ञान की नींव १९१० मे पड़ी और इसका श्रेय जर्मनी के मनोवैज्ञानिक मुनस्टर्बर्ग को है। इनका ध्यान मनोविज्ञान के परीक्षणो के व्यावहारिक उपयोग की ओर पहले-पहल गया, तब तक परीक्षण प्रयोगशाला के अध्ययन तक ही सीमित रहा। विस्तृत अर्थ मे व्यावहारिक मनोविज्ञान मे शिक्षा, अपराध, औषधि और उद्योग सम्बन्धी सभी समस्याओ का

समावेश है। संकुचित अर्थ में यह उद्योग से केन्द्रित है। १९३७ में अमेरिका में एक व्यावहारिक मनोविज्ञान परिषद् बनी।

पीफेरबर्गर ने व्यावहारिक मनोविज्ञान की सारगर्भित परिभाषा दी है: "व्यक्तियों को उनके पृथक्-पृथक् स्वभाव, बुद्धि और अभिरुचि के अनुकूल उपयुक्त शिक्षा देकर, उनमें परिवर्तन करके तथा उपयुक्त वातावरण चुनकर उनके जीवन में इस प्रकार सामंजस्य लाना है जिससे उन्हें अधिक-से-अधिक व्यक्तिगत सन्तोष मिले और समाज का विकास हो।"

मानव-विकास की तरह इसकी भी चार अवस्थाएँ मिलती हैं :

(१) प्राग् जन्म-काल (Pre-natal Period) : इसका विस्तार १८८० से १९११ तक है। जब १९१४ में प्रथम महायुद्ध छिड़ा और मनोविज्ञान के प्रयोगों की आवश्यकता पड़ी, तब पहली बार बोध हुआ कि जीवन में भी मनोविज्ञान के सिद्धान्त व्यवहृत हो सकते हैं।

(२) जन्म-काल (Birth Period) : मनोविज्ञान के सिद्धान्त जीवन में व्यवहृत हो सकते हैं, इसका अंकुर १९१८ में हुआ।

(३) बाल्यावस्था और युवावस्था : इसका विस्तार १९१८ से १९३७ तक था।

(४) प्रौढ़ावस्था : व्यावहारिक मनोविज्ञान के विकास की सबसे उच्च अवस्था १९३९ तक हुई।

Apriori [एप्रिआरी] : पूर्वतः सिद्ध-प्रागनुभव।

इस धारणा का प्रयोजन उस निर्णय और सिद्धान्त से है, जिसकी सार्थकता इन्द्रिय-अनुभव से सदैव मुक्त है। इस अर्थ में इस पारिभाषिक शब्द का प्रयोग दार्शनिक काण्ट ने किया है जो शुद्ध पूर्वतः सिद्ध है वह अनुभव-मिश्रित नहीं होता। काण्ट के सिद्धान्त में अनुभव की आवश्यक अवस्थाएँ होती हैं (फार्म और कैटेगरीज)। जो पूर्वतः सिद्ध है वह सार्वभौम और आवश्यक है। मनोविज्ञान में पूर्वतः सिद्ध शब्द का प्रयोग उस सिद्धान्त के लिए किया गया है, जो अनुभव और कल्पना से परे है, जो विचार से ही जाना जा सकता है। इस शब्द के प्रयोग की दृष्टि से ट्रान्सेन्डेन्टल और प्राग्वैज्ञानिक मनोविज्ञान (देखिये—Arm-chair Psychology) में एक ही प्रकार की विचारधारा दृष्टिगत होती है।

Aptitude [एप्टिट्यूड] : अभिरुचि।

शिक्षा पूर्व विशिष्ट योग्यता—वह वर्तमान योग्यता जिसके आधार पर यह निश्चित किया जा सके कि व्यक्ति आगे को मिलने वाली किसी विशिष्ट क्षेत्र की शिक्षा में, अथवा उस विशिष्ट क्षेत्र की शिक्षा के पश्चात् उससे सम्बन्धित व्यवसाय में पर्याप्त सफलता प्राप्त कर सकेगा। इसी से विशेष प्रकार के अभिरुचि-परीक्षणों का निर्माण किया गया है—जैसे संगीत, कला, विज्ञान, यान्त्रिक अभिरुचि परीक्षण इत्यादि। एक ही मूल विशिष्ट अभिरुचि कई व्यवसाय अथवा क्षेत्रों में काम आती है। इसलिए किसी विशिष्ट व्यावसायिक अथवा शिक्षा-क्षेत्रों के लिए विशिष्ट अभिरुचि मापने के लिए उस क्षेत्र से सम्बन्धित विशिष्ट अभिरुचि के परीक्षणों का समुचित उपयोग उपयुक्त होगा।

Archetype [आरसेटाइप] : प्रत्न भाव-प्रतिमा।

विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के प्रवर्तक युग (१८७०–१९६१) ने इस धारणा का प्रयोग सामूहिक अज्ञात मन (Collective unconscious) के प्रसंग में किया है। प्रत्न भाव-प्रतिमाएँ सामूहिक अज्ञात मन की निधि हैं और व्यक्ति इन्हें अपने पूर्वजों से ग्रहण करता है। इनका स्थानान्तरण होता रहता है। हरेक प्रत्न भाव-प्रतिमा सामान्य मानव-स्वभाव की द्योतक होती है। इनके द्वारा स्वतन्त्र रूप से सामान्य मानसिक तथ्यों का दिग्दर्शन होता है। प्रत्न भाव-प्रतिमाएँ स्थिर हैं तथा सामान्य प्रकार के प्रतीक के रूप में हैं और हरेक व्यक्ति में विद्यमान हैं। विभिन्न प्रत्न

भाव प्रतिमाओ मे स्त्रीभाव प्रतिमा, (देखिये—Anima), पुरुषभाव-प्रतिमा (देखिये—Animus), मातृभाव प्रतिमा, पितृभाव प्रतिमा और ईश्वर-प्रतिमा प्रमुख हैं। ये व्यक्तिगत नही हैं।

इन भाव प्रतिमाओ का अभिव्यक्तिकरण निर्बाध रूप से स्वप्न मे होता है। युग ने अपने ग्रन्थ 'इन्टेग्रेशन आफ पर्सनैल्टी' मे इस वर्ग के स्वप्नो का विस्तार से विवरण दिया है। इनका अभिव्यक्तिकरण मानसिक लक्षणो मे भी मिलता है। काव्य कला म भी इनका अभिव्यक्तिकरण होता है।

प्रत्न भाव प्रतिमाओ का अज्ञात से ज्ञात मन मे प्रवेश करना व्यक्तित्व विकास का लक्षण है। युग के अनुसार जब तक व्यक्ति को इन भाव प्रतिमाओ की चेतना नही हो जाती उसका जीवन एक पहेली के रूप मे होता है। इसी से असन्तुलन बना रहता है। इनसे पूर्ण रूप से परिचित रहना व्यक्तित्व विकास का लक्षण है। जब ये अज्ञात मन से ज्ञात मन मे प्रवेश करती हैं, व्यक्ति के ज्ञात मन का विस्तार बढ जाता है—व्यक्ति मानसिक दृष्टि से समृद्ध हो जाता है और यह अध्यात्म-विकास का सूचक है।

Arithmetic Mean [ऐरिथमेटिक मीन] अकी मध्यक समान्तर मध्य।

प्राप्त मापो के योग को माप सख्या से भाग देने से प्राप्त फल। इसे ज्ञात करने के लिए कई सूत्र प्रचलित हैं—यदि प्रदत्त अवर्गीकृत हो,

$$\text{मध्यक} = \frac{\Sigma \text{माप}}{\text{माप सख्या}}$$

यदि प्रदत्त वर्गीकृत हो,

$$\text{मध्यक} = \frac{\Sigma \text{आवृति} \times \text{मध्य बिन्दु माप}}{\text{माप सख्या}}$$

इन सूत्रो मे Σ का अर्थ योग होता है।

मध्यक प्राप्त करने की सबसे अधिक सुविधाजनक विधि यह है कि किसी भी माप को मध्यक मान लिया जाए और ऐसा करने से रह जाने वाली कमी को ज्ञात करके उसे माने हुए मध्यक म जोड दिया जाए। इस प्रकार वास्तविक मध्यक प्राप्त हो जाता है। तब सूत्र यो होता है—

$$\text{मध्यक} = \text{माना हुआ मध्यक} + \text{वर्ग विस्तार} \left(\frac{\Sigma \text{आवृति} \times \text{माने हुये मध्यक से वर्गान्तर}}{\text{माप सख्या}}\right)$$

अकी मध्यक मनोविज्ञान मे किसी व्यक्ति-समूह, परिस्थिति समूह अथवा प्रेक्षण-समूह के सामान्य वृत्तान्त मे किसी गुण की सामान्यत उपस्थित मात्रा के सक्षिप्त वर्णन का सर्वोत्कृष्ट साधन है। इसका एक कारण यह है कि अकी मध्यक, मध्यिका (देखिये—Median) भूमिष्ठक (देखिये—Mode) तीनो प्रकार के मध्यो मे से यह सबसे अधिक विश्वसनीय है अर्थात् सबसे कम परिवर्तनशील है। अकी मध्यक ज्ञात कर लेने से आगे बहुत सी अकशास्त्रीय गणनाएँ सम्भव, सुलभ एव सार्थक हो जाती हैं। जब माप वितरण पर्याप्त मात्रा मे सीमित होता है तब अकी मध्यक ही सर्वोपयुक्त माध्य होता है। परन्तु यदि माप वितरण बहुत असीमित हो तब अकी मध्यक की अपेक्षा किसी अन्य माध्य का उपयोग ही यथार्थ होता है।

जब प्रदत्त बहुत अधिक सख्या मे होने हैं तब उनम से नमूने के लिए कुछ प्रदत्तो को लेकर उन्ही के आधार पर मध्यक ज्ञात कर लिया जाता है। ऐसी अवस्था मे यह प्रश्न उठता है कि प्रयुक्त न्यादर्श से प्राप्त मध्यक सम्पूर्ण समूह के वास्तविक मध्यक से कितने अन्तर पर होगा। यह जानने के लिए न्यादर्श से प्राप्त मध्यक की प्रमाप त्रुटि इस सूत्र के अनुसार ज्ञात कर ली जाती है—

$$\sigma \text{ मध्यक} = \frac{\sigma}{\sqrt{\text{माप सख्या}}}$$

इस सूत्र मे σ मध्यक का अर्थ प्राप्त मध्यक का प्रमाप विचलन है और σ का अर्थ न्यादर्श के मापों का प्रमाप विचलन। सम्पूर्ण समूह के वास्तविक मध्यक की प्राय प्रयुक्त न्यादर्श से प्राप्त मध्यक के $3 \times \sigma$ मध्यक ऊपर या नीचे तक होने

की सम्भावना हुआ करती है। यह विस्तार जितना बड़ा होगा, नमूने स प्राप्त मध्यक उतना ही अविश्वसनीय और कम महत्व-पूर्ण समझा जाएगा।

Armchair Psychology [आर्मचेअर साइकॉलोजी] : प्राग्वैज्ञानिक मनोविज्ञान, विप्रयोग मनोविज्ञान।

उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्व प्रचलित अप्रायोगिक मनोविज्ञान के सन्दर्भ में इस शब्द का प्रयोग होता था। इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग एडवर्ड ह्वीलर के धर्मग्रन्थ में हुआ। उनका यह ग्रन्थ जनसाधारण के लिए था। मनोविज्ञान का उद्देश्य मानव-मात्र की सेवा है। इस उद्देश्य से इस शब्द का प्रयोग हुआ। किन्तु वर्तमान युग में यह अर्थ हास्यास्पद है और इसका एकमात्र अर्थ है 'वह मनोविज्ञान जिसमें वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग नहीं होता।"

Army General Classification Test [आर्मी जनरल क्लासिफ़िकेशन टेस्ट] : सामान्य सैनिक वर्गीकरण परीक्षण।

अमरीका में बनाया गया सामान्य बुद्धि का एक विख्यात परीक्षण। इसकी प्रथम आकृति का द्वितीय विश्व-महायुद्ध में अमरीका के सेना विभाग ने सैनिकों का सैनिक कार्य सीखने की योग्यता के अनुसार वर्गीकरण करने के लिए व्यापक उपयोग किया था। परीक्षण के आधार पर व्यक्तियों को पाँच मोटे वर्गों में छाँटा जा सकता था—(१) बहुत शीघ्र सीखने वाले, (२) शीघ्र सीखने वाले, (३) साधारण गति से सीखने वाले, (४) धीरे सीखने वाले और (५) बहुत धीरे सीखने वाले।

अब इस परीक्षण की एक आकृति उपयोग के लिए उपलब्ध है जिसको साइंस रिसर्च एसोशियेटस ने प्रकाशित किया है। उसका प्रयोग नवीं से सोलहवीं कक्षा पर तथा प्रौढ़ व्यक्तियों पर किया जा सकता है। इसमें ४० से ५० मिनट तक का समय लगता है। द्वितीय विश्व-महायुद्ध में लगभग दस लाख व्यक्तियों की परीक्षा के आधार पर इसकी विश्वस्यता ०.९२ बताई गई है और प्रतिमानों के रूप में इस पर प्राप्त अंकों का व्यावसायिक वर्गों से निम्न प्रकार सम्बन्ध स्थापित किया गया है।

प्रमापांकी मानक (Norms in the form of Standard scores)

	१०वाँ शतांशक	२५वाँ शतांशक	५०वाँ शतांशक	७५वाँ शतांशक	९०वाँ शतांशक
लेखाकार	११४	१२१	१२९	१३६	१४३
अध्यापक	११०	११७	१२४	१३२	१४०
वकील	११२	११८	१२४	१३२	१४१
मुख्य क्लर्क	१०७	११४	१२२	१३१	१४१
डाक क्लर्क	१००	१०९	११९	१२६	१३६
सामान्य क्लर्क	९७	१०८	११७	१२५	१३३
पुलिसमैन	८६	९६	१०९	११८	१२८
बढ़ई	७३	८६	१०१	११३	१२३
भारी ट्रकचालक	७१	८३	९८	१११	१२०
रसोइया	६७	७९	९६	१११	१२०
श्रमिक	६५	७६	९३	१०८	११९
नाई	६६	७९	९३	१०९	१२०
खान-श्रमिक	६७	७५	८७	१०३	११९

Ascending Series [एसेन्डिंग सिरीज़] आरोही श्रेणी ।

न्यूनतम परिवर्तनों की विधि से किये जाने वाले मनोभौतिकीय प्रयोगों में उत्तेजनाद्वार, अन्तरबोधद्वार अथवा समानताबोध परिमाण का एक माप प्राप्त करने के लिए उत्तेजना की समान न्यूनतम मात्राओं में प्रयोजक द्वारा बढ़ाया जाने में उपयोग की जाने वाली परिमाण श्रेणी ।

देखिये—Method of Minimal Change

Aspiration Level [एसपिरेशन लेवेल] महत्त्वाकांक्षा स्तर ।

एक स्तर जहाँ तक पहुँचने के लिए कोई व्यक्ति आकांक्षा रखता है । यह स्वशक्ति का ऐसा प्रमाप अथवा स्तर है जिसके अनुसार कोई व्यक्ति सफलता अथवा असफलता का अनुभव करता है । इस स्वशक्ति का प्रत्येक व्यक्ति एक अनुमान रखता है और वही उसकी स्वशक्ति का मापस्तर है ।

हम 'स्व' को दो प्रकार से देखते हैं । (१) एक तो हम स्वशक्ति को किसी अंश तक वास्तविकता के दृष्टिकोण से देखते हैं । यह 'अह-स्तर' है । इस स्तर का निर्माण पिछले वास्तविक तथ्य पर आधारित है । (२) दूसरे स्वशक्ति को पूर्ण स्पष्ट या कम स्पष्ट रूप से एक ऐसी वस्तु समझना है, जिसका अनुभव अभी करना है यह महत्त्वाकांक्षा स्तर है । दोनों में थोड़ा अन्तर है । जिन लोगों का महत्त्वाकांक्षा स्तर, अहं स्तर से थोड़ा ही आगे रहता है वे लोग किसी काम में सफल रहते हैं तथा जिनका महत्त्वाकांक्षा स्तर उनके अहं स्तर से बहुत आगे रहता है वे साधारणतः अपने कार्य में असफल रहते हैं ।

देखिये—Zeigarnik Effect Tension

Association [ऐसोसिएशन] साहचर्य ।

मनोविज्ञान के अनुसार 'साहचर्य' वह प्रक्रिया है जिसके कारण विचार-भाव-क्रियाओं में पारस्परिक सम्बन्ध ऐसा स्थापित हो जाता है कि व्यक्ति के मन क्षेत्र तथा क्रिया व्यापार में एक क्रम और व्यवस्था दृष्टिगत होती है, अथवा यह सम्बन्ध स्थापित करने की प्रक्रिया है । यह अरस्तू के काल से ही स्वीकृत एक प्रक्रिया सिद्धान्त माना गया है ।

साहचर्य के दो सामान्य नियम हैं प्राथमिक (Primary) और गौण (Secondary) । प्राथमिक में सामीप्य (contiguity), समानता और विरोध (contrast) है, गौण में प्रमुखता (primacy), तात्कालिकता (recency), बारम्बरता (frequency) और स्पष्टता (vividness) ।

साहचर्य प्रारम्भ से ही प्रयोग का प्रमुख क्षेत्र रहा । इस पर गाल्टन ने पहले-पहल प्रयोग किया । गाल्टन के प्रयोग में विभिन्न प्रकार के साहचर्य का अध्ययन परिमाणात्मक रूप में मिलता है और इसी का परिष्कृत रूप वुट में विद्यमान है । गाल्टन ने एक एक शब्द बारी-बारी से उत्तेजन के रूप में प्रयोग किया और प्रतिक्रिया में कभी शब्द मात्र का प्रयोग हुआ और कभी वर्णन के रूप में । यह नियम बनाकर कि एक शब्द की प्रतिक्रिया में एक ही शब्द होना चाहिये, वुट ने इस प्रयोग को सरल बना दिया । इससे प्रतिक्रियाओं का वर्गीकरण सहज हुआ और समय-सम्बन्ध का भी अनुमान लग सका ।

बीसवीं शताब्दी में भी मनोविज्ञान में साहचर्य को महत्ता दी गई है यद्यपि इसे मानसिक क्रियाओं का एकमात्र आधार नहीं माना गया है । आधुनिक मनोवैज्ञानिक साहचर्य के स्थापन की प्रक्रिया से प्रारम्भ कर बाद में पुनरावाहन द्वारा उन साहचर्यों की शक्ति का परीक्षण करते हैं । पुनरावाहन में सक्रिय साहचर्यों से प्रारम्भ कर वे बाद में उन प्रक्रियाओं का पता लगाने अथवा उन तक सोचने का प्रयास नहीं करते जिनके द्वारा सम्भवत

उन साहचर्यों की स्थापना हुई होगी। कार्य से कारण का पता लगाने के स्थान पर वर्तमान मनोविज्ञान ज्ञात कारणों एवं उपाधियों से प्रारम्भ कर उनके प्रभाव का निरीक्षण करता है।

Association Area [ऐ'सोसियेशन एरिया] : बृहत् मस्तिष्क।

साहचर्य-क्षेत्र का वह क्षेत्र जो ज्ञानवाही तथा क्रियावाही क्षेत्रों की साधारण प्रक्रियाओं में सम्बन्ध स्थापित करता है अथवा उन्हें एकसूत्रता प्रदान करता है। ज्ञानवाही क्षेत्र (Sensory area) मस्तिष्क में आगमन मार्ग और क्रियावाही (Motor area) निर्गमन-मार्ग के तुल्य है, इनके बीच का वास्तविक काम तो साहचर्य क्षेत्र ही करते हैं। मस्तिष्क के प्रत्येक ओर के साहचर्य-क्षेत्र परस्पर एक-दूसरे से, क्रियावाही तथा ज्ञानवाही क्षेत्रों से, अपने ही समान दूसरी ओर के क्षेत्रों से तथा थैलेमस से सम्बद्ध रहते हैं। उच्चस्तरीय मानसिक क्रियाएँ—स्मृति, चिन्तन, प्रेरणा आदि मस्तिष्क के अग्रखण्डीय साहचर्य क्षेत्रों पर निर्भर हैं। इनको किसी प्रकार भी हानि पहुँचने से व्यक्ति की पुनरावाहन तथा समस्या-समाधान करने की क्षमताएँ विकृत हो जाती हैं। वह निष्क्रिय और अनुत्तेजनशील हो जाता है।

Associationism [ऐ'सोसियेशनिज्म] : साहचर्यवाद।

वह मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है जिसमे साहचर्य को मानसिक जीवन का आधारभूत सिद्धान्त माना गया है। साहचर्यवादियों का मत है कि समस्त मानसिक क्रियाएँ वस्तुतः संवेदनमात्र होती हैं; ये अनुभूति का आधारभूत है, जैसे भी रूप में चेतन प्रारम्भिक संवेदनाएँ अनुभूति से सम्बन्धित हों।

निरीक्षण के आधार पर अरस्तू ने यह निष्कर्ष निकाला कि 'अ' से 'ब' की स्मृति आने का कारण 'अ' और 'ब' में परस्पर सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध सामीप्य (contiguity), समानता (similarity) अथवा विरोध (contrast) किसी भी प्रकार का हो सकता है। बाद में ये ही साहचर्य के नियम कहलाए। अंग्रेजी साहचर्यवादियों ने इन्हीं को अपने वाद अथवा सम्प्रदाय का आधार बनाया और अनुभूति में एकमात्र 'सामीप्य नियम' की आस्था स्वीकृत की। उन्होंने संवेदना के अतिरिक्त इसे प्रमुख मानसिक प्रक्रिया माना। इसका शक्ति मनोविज्ञान (Faculty Psychology) से विरोध रहा, क्योंकि शक्ति मनोविज्ञान में विभिन्न क्रियाओं के लिए विभिन्न शक्तियाँ मानी गई हैं। हार्टले ने अठारहवीं शताब्दी में इस मनोवैज्ञानिक पद्धति का आधार शारीरिक दिया था। साहचर्यवाद का पूर्ण विकसित रूप हमें मिल, बेन और स्पेन्सर के ग्रन्थों में मिलता है। बीसवीं शताब्दी में अन्तर्दृष्टिवाद (Introspectionism) का लोप होने से और व्यवहारवाद (Behaviourism) का प्रसार होने से साहचर्यवाद को एक नयी प्रगति प्राप्त हुई। मनोविज्ञान की मुख्य समस्या यह हुई कि किस प्रकार उत्तेजन-प्रतिक्रिया (Stimulus-response) में सम्बन्ध स्थापित होता है न कि संवेदन, विचार इत्यादि में। नव-साहचर्यवाद और प्राचीन साहचर्यवाद में यही भेद है।

देखिये—Association

Associative Inhibition [ऐ'सोसियेटिव इनहिबिशन] : साहचर्यात्मक अवरोध।

एक साहचर्यात्मिक सम्बन्ध का किसी अन्य सम्बन्ध के कारण असमर्थ या शिथिल हो जाना या एक नवीन साहचर्य के उत्पादन में अधिक कठिनाई होना।

इसके विरुद्ध साहचर्यात्मक निर्विघ्नता में एक साहचर्यात्मक सम्बन्ध का एक अन्य सम्बन्ध के कारण सहज होना।

Associative Learning [ऐ'सोसियेटिव लर्निंग] : साहचर्यात्मक अभ्यसन।

अभ्यसन का वह सरल रूप ... उत्तेजना और प्रतिक्रिया के ...

स्थापन द्वारा ही किसी विषय को सीखा जाता है। एक ही उत्तेजना के प्रति एक ही प्रकार की प्रतिक्रिया प्रकट करते रहने से दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध दृढ हो जाता है और भविष्य में उस उत्तेजना के उत्पन्न होते ही सम्बद्ध प्रतिक्रिया के प्रकट होने की सम्भावना बढ जाती है। सम्बद्ध प्रत्यावर्तन (Conditioning) इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

देखिए—Conditioning, Association

Associative memory [ऐसोसियेटिव मेमॅरी] साहचर्यात्मक स्मृति।

विषय को उसके पारस्परिक सम्बन्धों पर ध्यान रखते तथा समरूप पूर्व अनुभूतियों से सम्बन्ध स्थापित करते हुए स्मरण करना साहचर्यात्मक स्मृति है। वह स्मृति हमारे अनुभव में आयी हुई घटनाओं के परस्पर सम्बन्धों को समृद्ध बनाती है। स्थापित साहचर्य समय पर प्रत्यावाहन करने तथा प्रतिक्रिया प्रकट करने में अत्यधिक सहायक होते हैं।

साहचर्यात्मक स्मृति को विकसित करने के दो प्रमुख सहायक तत्त्व हैं (१) प्रत्येक सीखे हुए विषय में स्वाभाविक सम्बन्धों की खोज तथा (२) स्मृति में सहायक कृत्रिम सम्बन्धों को तैयार करना।

देखिये—Association

A. S. Study [ए० एस० स्टडी] अभिभव, अभिभावन मापदण्ड।

गॉर्डन ऑलपोर्ट तथा फ्लॉयड ऑलपोर्ट द्वारा रचित मापदण्ड। इस परीक्षण का उद्देश्य दैनिक जीवन के परस्पर सम्बन्ध में अन्य व्यक्तियों पर अभिभावी रहने अथवा उनसे अभिभूत हो जाने की मनोवृत्ति की जाँच करना है। इसमें व्यक्ति के सामने ३३ विभिन्न परिस्थितियाँ प्रश्नों के रूप में प्रस्तुत की जाती हैं। व्यक्ति से यह बताने को कहा जाता है कि किसी विशेष परिस्थिति में वह प्राय किस प्रकार की प्रतिक्रिया किया करता है—उदाहरण 'किसी भीड में खड़े होकर फुटबाल इत्यादि कोई खेल देखते हुए, आपने जान बूझकर, दूसरों को स्पष्ट सुनते वाले शब्दों में परिहासजनक, प्रोत्साहक, निन्दक अथवा अन्य प्रकार की टिप्पणी की है?—१ बहुत बार, २ कभी-कभी, ३ कभी नहीं।'

ये परीक्षण दो प्रकार के हैं एक पुरुषों के लिए और दूसरा स्त्रियों के लिए। इनका वैयक्तिक अथवा सामूहिक दोनों प्रकार से उपयोग किया जाता है। समय सीमा कोई नहीं होती परन्तु प्राय २० मिनट का समय पर्याप्त बताया जाता है। परीक्षण का उद्देश्य गुप्त रखा जाता है।

Astasia-Abasia [ऐसटेसिया-ऐबेसिया] अनवस्थान, गति भ्रश।

दैहिक गति की अर्जित आदतों-जनित विकारों में से एक। इसका सम्बन्ध बैठने तथा चलने से है। इसमें व्यक्ति बिना सहारे खड़े होने अथवा चलने में असमर्थ होता है। यह प्राय हिस्टीरिया अर्थात् मिरगी के रोगियों में पाया जानेवाला एक प्रकार का लक्षण है। इसके परिणामवश व्यक्ति की क्रियाएँ बेढंगी, अव्यवस्थित और अटपटी हो जाती हैं। वह लडखडाता हुआ, झूमता हुआ भुजाओं तथा टाँगों को हर ओर घुमाता हुआ चलता है कभी कभी केवल घिसटता हुआ चलता है। ठीक से स्वाभाविक ढग से नहीं चलता।

Ataxia [ऐटेक्सिया] गतिभग।

एक प्रकार का रोग जिसमें ऐच्छिक समुचित गति विशेषकर भग होती है। सचलित गतिभग में सचालन प्रक्रिया क्षीण होती है। गतिभग-लेखी—प्रयोग का वह यत्र जिसके द्वारा स्थिरतामाप, गतिभग निश्चय किया जाय।

Atomism, Psychological [ऐटोमिज़्म, साइकॉलॉजिकल] परमाणुवाद, मनोवैज्ञानिक।

इसे मूल तत्त्ववाद भी कहते हैं। यह वह मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है जिसके अनुसार

चेतन अवस्थाओं का बिना किसी ह्रास के मूलभूत तत्त्वों में विश्लेषण किया जा सकता है। मन की संरचना-सम्बन्धी कोई भी सिद्धान्त, कोई भी मानसिक अवस्था, जिसका उसके पृथक अवयवों में विश्लेषण कर सकना सम्भव है। यह पृथक् मानसिक तत्त्वों-अणुओं के मिश्रण अथवा मिलन के महत्व का ही प्रतीक है। यह सिद्धान्त विशेष रूप से साहचर्यवाद (Associationism), संवेदनवाद (Sensationism) और प्राचीन रूढ़िवादी व्यवहारवाद (Behaviourism) अथवा सहजवाद (Reflexology) के लिए व्यवहृत होता है।

जब भौतिक विज्ञान में परमाणुवाद का बोलबाला था तभी मनोविज्ञान पर भी इसका प्रभुत्व था। भौतिकवादी परमाणुवाद के पतन के साथ ही मनोवैज्ञानिक परमाणुवाद भी करीब-करीब समाप्त हो गया। आगे चलकर समग्रतावादी मनोविज्ञान तथा क्षेत्र-सैद्धान्तिक दृष्टिकोण (Field Theory) ने इसका स्थान ले लिया।

देखिये—Associationism, Sensationism, Behaviourism, Reflexology, Field theory.

Attention [अटेन्शन] : ध्यान।

मनोदैहिक तन्त्र की वह अवस्था-विशेष जिसके अन्तर्गत व्यक्ति वातावरण में वर्तमान अनेकानेक उत्तेजनों के प्रति अत्यधिक सजग हो जाता है। अनुभूति के जिस अंश के प्रति वह अत्यधिक सजग रहता है वह तो उसकी चेतना के केन्द्र में तथा अन्य अनुभूतियाँ केन्द्र से परे चेतना के छोर पर रहती हैं। यह अवस्था वस्तुतः किसी प्रतिक्रिया-विशेष को प्रस्तुत करने के लिए तैयारी की अवस्था है।

ध्यान प्रक्रिया की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ हैं : (१) चंचलता—ध्यान किसी भी उत्तेजन-विशेष पर कुछ क्षण से अधिक नहीं टिकता। (२) चयनात्मकता—ध्यान में उत्तेजनों का चयन होता है। (३) सीमित विस्तार—एक समय में कुछ निश्चित वस्तुओं की ओर ही ध्यान दिया जा सकता है। (४) शारीरिक अभियोजन—ध्यान देने की क्रिया में शरीर और उसके भिन्न-भिन्न अंगों में अभियोजन की क्रिया पाई जाती है। बाधक उत्तेजनाओं के कारण ध्यान-भंग भी होता है। ध्यान-भंग दो प्रकार का होता है : अनवरत तथा अनवरत। बाधक उत्तेजनों का प्रभाव प्रायः प्रतिकूल परन्तु कभी अनुकूल भी पड़ता है।

ध्यान तीन प्रकार का होता है : ऐच्छिक (Voluntary), अनैच्छिक (Involuntary) और स्वाभाविक (Spontaneous)। अपनी इच्छा से किसी वस्तु-विशेष की ओर ध्यान देना 'ऐच्छिक ध्यान' है और इच्छा के न रहते किसी वस्तु-विशेष की ओर ध्यान देना अनैच्छिक ध्यान है। स्वभाव अथवा आदत के कारण वस्तुओं की ओर गया हुआ ध्यान स्वाभाविक ध्यान है।

किसी वस्तु-विशेष की ओर ध्यान आकर्षित करने के जो कारण हैं उन्हें ध्यान-प्रतिबन्धक कहते हैं। ध्यान-प्रतिबन्धक दो प्रकार के हैं : (१) बाह्य जो उत्तेजनों की विशिष्टताओं के रूप में स्वयं उनमें पाए जाते हैं—इनमें उत्तेजन का स्वभाव, तीव्रता, आकार, स्थिति, नवीनता, गतिशीलता और परिवर्तन आदि हैं (२) आन्तरिक। जो अनुभवकर्ता के अन्दर पाए जाते हैं—इनमें व्यक्ति की रुचि, मनोवृत्ति, जिज्ञासा, प्रतीक्षा, आदत, अर्थज्ञान आदि सम्मिलित हैं।

Attitude [ऐटिट्युड] : मनोवृत्ति, अभिवृत्ति।

किसी विषय-विशेष के सम्बन्ध में किसी उत्प्रेरणा-विशेष में प्रवृत्त होने के लिए प्रस्तुत मनोस्थिति। इसे विषय के सम्बन्ध में विशेष क्रिया, अनुभव, विकार अथवा भावना की पूर्वोपस्थित मनोवृत्ति भी कहा जा सकता है। इसमें प्रायः न्यूनाधिक/

मात्रा म विषय का किसी प्रकार का मूल्यांकन अवश्य रहता है। परन्तु प्रमुख विशेषता पूर्व अनुभव के आधार पर उत्पन्न ऐसी मानसिक अथवा तन्त्रिकीय वृत्ति होती है जिसके प्रभाव मे व्यक्ति विषय मे सम्बन्धित पदार्थो एव परिस्थितियो की ओर विशेष प्रकार की प्रतिक्रियाएँ करता है। जिन जिन प्रकार की मनोवृत्तियो का विशेषतया अध्ययन हुआ है उनमे जनमत अन्तर्समूह विरोध, व्यक्तिगत एव सामूहिक प्रतिद्वन्द्विता, धार्मिक एव अन्य प्रकार के विश्वास तथा वैयक्तिक एव सामाजिक पूर्वाग्रह प्रमुख है।

किसी किसी विद्वान ने मनोवृत्ति को वशानुक्रमजनित स्वभाव या स्वाभाविक जैव विरोध अथवा आक्रामकता पर आधारित समझा है। परन्तु प्राय इन्हे एक से अनुभवो की पुनरावृत्ति, भेदबोध, विशेषतया प्रभावित करने वाली किसी एक घटना, माता, पिता, गुरु, साथियो आदि के अनुकरण, अथवा पारिवारिक अनुभवो तथा भावनाओ (के परिवार से बाहर स्थानान्तरण) द्वारा निर्मित पाया गया है।

Attitude Scale [एटिट्यूड स्केल] मनोवृत्ति मापदण्ड।

किसी विषय के प्रति किसी व्यक्ति अथवा समूह के भाव मनोवृत्ति अनुमोदक अथवा तिरस्कारयुक्त है और इन भावो का तीव्रता अथवा मात्रा कितनी है यह ज्ञान करने के लिए निर्मित मनोवैज्ञानिक परीक्षण।

तीन मुख्य प्रकार के मनोवृत्ति मापदण्ड प्रचलित हैं (१) धारणाबद्ध मापदण्ड—भाव की सर्वाधिक विरोधी तीव्रताओ के तथा उनके बीच की तीव्रताओ के व्यवहारिक धारणा चित्र बनाकर भाषा मे व्यक्त किए जाते हैं और व्यक्ति से पूछा जाता है कि उसका झुकाव इनमे से किस की ओर है। प्रसिद्ध उदाहरण बोगार्डस द्वारा अन्तर्जातीय भावो के माप के लिए निर्मित सामाजिक दूरी मापदण्ड (Social Distance Scale) है। इसके एक छोर पर जिस जाति के प्रति भाव ज्ञात करना है उस जाति के लोगो को अपने देश स बाहर रखने की धारणा है, बीच म देश म आने देने, परन्तु नागरिक अधिकार न देने की, नागरिक अधिकार देने परन्तु व्यवसायिक स्वतन्त्रता न देने की, आदि धारणाएं हैं और दूसरे छोर पर अपने परिवार के व्यक्ति से विवाह सम्बन्ध की अनुमति की धारणा है।

(२) मनोभौतिक अथवा यौक्तिक मापदण्ड—मनोभौतिकी की समानान्तर बोध विधि के अनुसार भाववाक्यो से छंटन द्वारा निर्मित मापदण्ड। इस पर किसी व्यक्ति का भावाक उन भाववाक्यो के मध्यका मानो का माध्य होता है जिनसे वह सहमति प्रकट करता है।

(३) लिकर्ट मापदण्ड—लिकर्ट द्वारा अपनाई गई आकृति के मापदण्ड। इनमे विषय से सम्बन्धित बहुत से भाववाक्य एकत्रित करके व्यक्ति के समक्ष उपस्थापित किए जाते है और प्रत्येक वाक्य के विषय मे उससे पूछा जाता है कि वह उसका (१) दृढतापूर्वक अनुमोदन करता है, (२) अनुमोदन करता है, (३) निश्चयपूर्वक अनुमोदन अथवा तिरस्कार नही करता, (४) तिरस्कार करता है, अथवा (५) दृढतापूर्वक तिरस्कार करता है। इन प्रतिक्रियाओ के लिए क्रम से ५, ४, ३, २, १ अक दिए जाते हैं और इस प्रकार व्यक्ति के प्राप्त किये अको को जोडकर उसका भावाक आ जाता है।

Audile Sensation [ऑडाइल सेन्सेशन] श्रवण सवेदना।

यह कानो के माध्यम से मस्तिष्क के श्रवण केन्द्र (Temporal lobe) पर होने वाली स्वर लहरियो की प्राथमिक प्रतिक्रिया है। कान के तीन भाग है, बाह्य, मध्य और अन्त कर्ण। बाह्य कर्ण और मध्य कर्ण के बीच कर्णपटह होता है। मध्य कर्ण में तीन छोटी छोटी अस्थियाँ हैं: मुग्दर, निहाई और रकाब। रकाब एक

गोलाकार खिड़की के द्वारा मध्य कर्ण को अन्त.कर्ण से मिलाती है। अन्त कर्ण में श्रवण संवेदना की दृष्टि से अर्द्धचक्राकार नालियाँ और कॉकलिया महत्वपूर्ण अग है। कॉकलिया तरल पदार्थ से भरा रहता है। इस तरल पदार्थ में एक झिल्ली (वैसिलर मेम्ब्रेन) पर सेवार के समान अनेक लोमकोष रहते है। उक्त झिल्ली से ही निकलकर अनेक ग्राहक-स्नायु श्रवण-नाड़ी के रूप मे मस्तिष्क के श्रवण केन्द्र तक पहुँचते है।

बाह्य कर्ण वातावरण से सग्रहीत स्वर-लहरियों को अन्दर की ओर भेजता है। स्वर-लहरियाँ कर्ण-पटह मे प्रकम्प उत्पन्न करती है। फलत पटह से सलग्न मुग्दर और मुग्दर से निहाई गतिशील होती है। पुन: यह गति रकाब के द्वारा अन्त: कर्ण में प्रविष्ट हो कॉकलिया मे स्थित लोम-कोषों को प्रभावित करती है। फल-स्वरूप लोम-कोषो मे उत्पन्न स्नायु-प्रवाह श्रवण-नाड़ी द्वारा श्रवण केन्द्र को प्रभावित कर श्रवण संवेदना को उत्पन्न करता है।

स्वर लहरियाँ अज्ञात द्रव्य ईथर में उत्पन्न एक प्रकार के प्रकम्प है। ये प्रकम्प बारम्बारता, फैलाव और मिश्रण मे एक-दूसरे से भिन्न होते है। उनमे से बारम्बार स्वर की कोटि को और मिश्रण नादगुण अथवा स्वरभेद को जन्म देता है।

स्वर दो प्रकार के होते हैं: लयात्मक और अलयात्मक। लयात्मक स्वर क्रमबद्ध स्वर लहरियों की और अलयात्मक स्वर क्रम विहीन स्वर लहरियो की उपज है। व्यवहारिक जीवन मे हमे शुद्ध लयात्मक अथवा अलयात्मक स्वरों का नहीं प्रत्युत लयात्मकता-प्रधान अथवा अलयात्मकता-प्रधान स्वरों की अनुभूति होती है।

Audition [ऑडिशन] : श्रवण।

इन्द्रिय विशेष जिसके ग्राहक कान में स्थित हैं और जो स्वर-लहरियो द्वारा उत्तेजित होती है। (दे० Audile sensation)

Audio-Visual Aids [ऑडियो-विजुअल एड्स] : श्रव्य-दृष्य सहायक।

अध्ययन के क्षेत्र मे हुए आधुनिक अन्वेषणो से यह सिद्ध हुआ है कि ज्ञानार्जन मे जितनी ही अधिक ज्ञानेन्द्रियाँ एक साथ प्रभावित हो सीखने मे उतनी ही सुविधा होती है। इसीलिए बच्चो तथा प्रौढ़ो के अध्ययन मे, उनके ज्ञानवर्धन के लिए चित्रो, पोस्टरो, सिलैनों, रेडियो, चल-चित्र तथा प्रदर्शन का अधिकाधिक उपयोग किया जाता है। इससे उनकी दृष्येन्द्रिय और श्रवणेन्द्रिय दोनो ही साथ-साथ प्रभावित होती हैं। अध्ययन में सहायक इन्ही तत्वो को, जो श्रवण और दृष्येन्द्रियों को प्रभावित करते है, "श्रव्य-दृष्य-सहायक" कहते है।

Authoritarian Personality [अथॉरिटेरियन पर्सनलिटी] : प्राधिकारी व्यक्तित्व।

कैलीफोर्निया विश्वविद्यालयके टी० डब्लु अडोर्नो ने प्राधिकारी प्रकार के व्यक्तित्व की परिभाषा दी है। इस वर्ग के व्यक्तित्व मे जातीय संकीर्णता अत्यधिक होती है और ये लोकतंत्र विरोधी होते है। इनका भाव दूसरे देश, जाति, समूह के प्रति सामाजिक और नैतिक दृष्टि से रुग्ण प्रकार का होता है। किंतु इनको मानसिक रोग से ग्रस्त व्यक्तियों के साथ वर्गित नही किया जा सकता।

संक्षेप में इनकी मुख्य विशेषताएँ है: १. अपरिवर्तनशीलता २. जातिकेन्द्रीयण ३. मिथ्या दकियानूसी ४. दूसरों मे कामात्मक दोष देखना ५. मुखिया से तादात्म्यता ६. प्रभुता मे विश्वास।

Autism [आटिज्म] : स्वलीलता, स्वरंजित चिंतन, आत्मानुकल्पन।

व्यक्ति की इच्छा-आंकाक्षा द्वारा नियन्त्रित मानसिक प्रक्रिया। यह एक ऐसी विचार-प्रक्रिया है जो वास्तविक चिंतन से सर्वथा भिन्न है। वास्तविक चिंतन में चिंतन का नियन्त्रण ऐसी अवस्थाओ द्वारा होता है जो घटनाओं तथा वस्तुओ की वास्तविक प्रकृति संबंधी रहती है; यह

व्यक्ति की आकाक्षा-इच्छा द्वारा नियन्त्रित होता है। तर्क सबधी नियमो द्वारा नियन्त्रित होने का अभिप्राय है—व्यवहारिक मार्गो द्वारा नियन्त्रित होना। वास्तविक चिंतन वास्तविकता की ओर उन्मुख होता है, तथा चेतन एव उद्देश्यपूर्ण रूप से जानकारी की प्राप्ति की ओर निर्देशित रहता है। यह गतिशील वस्तुओ के उत्पादन की ओर निर्देशित रहता है, उदाहरणार्थ खेल। स्वरजित चिंतन के अपने अलग तर्क रहते हैं। यह अचेतन प्रेरणा द्वारा सचालित होता है—अर्थात् इसमे सभी चिंतन प्रक्रिया साधारण इच्छित दिवा-स्वप्न से लेकर विक्षिप्त व्यक्तियो की उग्र तरगमयी कल्पना तक सन्निहित हैं।

स्वरजित चिंतन की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं. १ इसमे अज्ञात, अस्पष्ट, प्रच्छन्न प्रतीकवाद सन्निहित है। २ यह व्यक्तिगत पारस्परिक सबध की ओर उन्मुख रहता है। असबद्ध तथा सामन्जस्यहीन तत्व इनके साथ विचित्र सरचना के रूप मे सम्मिश्रित रहते हैं और यह प्रतीत होता है कि ये व्यक्तिगत तर्क का अनुकरण हैं। प्रयोगात्मक मनोविज्ञान मे स्वरजित चिंतन के बारे मे अन्वेषण स्वतत्र साहचर्य-पद्धति (Free-association) तथा अन्य प्रक्षेपण प्रविधियो (Projective technique) द्वारा हुआ है।

Autobiographical Method [ऑटोबॉयग्राफिकल मेथड]. आत्मकथाविधि।

बाल स्वभाव के अध्ययन की एक प्रमुख विधि जिसके अन्तर्गत प्रसिद्ध व्यक्तियो के स्वलिखित जीवन चरित्रो मे वर्णित उनकी बाल्यावस्था के विवरणो के आधार पर बालविकास के सिद्धान्तो की खोज की जाती है। यह विधि आनरिक है, राग द्वेष और पूर्वग्रहो से अभिलेखन इसमे प्रभावित रहता है। इस कारण यह विधि अवैज्ञानिक और अप्रचलित है।

Auto eroticism [ऑटो इरोटिसिज्म]: स्वरति।

स्वत प्रेरक काम भाव—यह काम शक्ति के विकास की वह अवस्था है जिसमे व्यक्ति को कामतृप्ति स्वत उसके कामोत्तेजक क्षेत्र से मिलती है। इसमे ओरल और एनल दो अवस्थाएँ हैं : भोजन अथवा ओष्ठ द्वारा सतोष पाने की व्यवस्था ओरल अवस्था है, मलमूत्र त्याग सबधी क्रियाओ की ओर ध्यान देना और उसमे रुचि रखना एनल अवस्था का सूचक है। इसमे कामशक्ति शरीर के विभिन्न अवयवो की प्रारम्भिक सवेदनाओ मे केन्द्रित रहती है। कभी-कभी ओरल तथा एनल अवस्था मे ही कामशक्ति केन्द्रित रह जाती है और व्यक्ति का कामविकास स्थगित हो जाता है। यह काम विकृति का विषद् कारण है।

Autokinetic Phenomenon [ऑटोकिनेटिक फेनॉमिनन] स्वयगामी घटना।

शरीर के अन्तर्गत स्वानुग्राही उत्तेजनों के फलस्वरूप उत्पन्न क्रिया अथवा गति का आभास। यथा—किसी व्यक्ति को घने अधकार मे किसी पूर्ण एकाकी प्रकाश-बिन्दु के स्थिर होते हुए भी, बिन्दु कभी एक दिशा मे और कभी दूसरी दिशा मे जाता हुआ प्रतीत होना। उसे वह प्रकाश-बिन्दु स्थिर नही मालूम होता। कभी एक दिशा मे चलते-चलते रुककर दूसरी दिशा मे चलने लगता है। लेकिन इन गतियो का प्रसार प्राय ४० डिगरी के अन्दर ही होता है। इसी को स्वयगामी गति (Autokinetic Movement) अथवा स्वयगामी विपर्यय ((Autokinetic Illusion) भी कहते हैं।

Automatic Writing [ऑटोमेटिक राइटिंग] स्वत लेखन।

व्यक्ति की चेतना एव क्रियाशीलता से विच्छिन्न लेखन-क्रिया। यह परामानसिक अवस्थाओ में, व्यक्तित्व-विच्छेद मे अथवा मिरगी सम्बन्धित सवेदना भाव और स्मृत्याभाव के साथ पाई गई है। इसम व्यक्ति क्या लिखता है, इसका उसे स्वय कोई बोध नही होता। कभी-कभी इस

प्रकार का लेखन अपने आप हो जाने वाली निद्रावत सम्मोहनावस्था में होता देखा गया है। कभी-कभी पूर्णतया जाग्रत अवस्था में भी व्यक्ति का हाथ पूर्णतया संवेदना रहित हो जाता है और लिखने लगता है। यदि उसके हाथ के आगे पर्दा डाल दिया जाय तो उसे पता नहीं चलता कि हाथ से कोई क्रिया हो भी रही है। कुछ व्यक्तियों को स्वतः लेखन के समय केवल इतना पता होता है कि हाथ हिल रहा है; अपना लिखा हुआ पढ़ने पर ही उन्हें पता लगता है कि उन्होंने क्या लिखा है। कुछ स्वत लेखियों को जैसे-जैसे शब्द लिखे जाते हैं उनका बोध होता जाता है; यह ज्ञात नहीं होता कि अब क्या लिखा जाने वाला है। उनके मन में लेखन के विषय के सम्बन्ध में कोई अभिप्राय-योजना अथवा कल्पना नहीं होती।

इस प्रकार की स्वतः लेखन-क्षमता कुछ ही व्यक्तियों में होती है; परन्तु सम्मोहितावस्था में दिये गए सुझावों से उत्पन्न तथा विकसित की जा सकती है। यदि कोई व्यक्ति हाथ में पेन्सिल लेकर और उसे सामने कागज पर रखकर किसी रुचिकर पुस्तक अथवा लेख के पढ़ने में डूब जाए तो संभव है कि उससे अपने आप स्वतः लेखन होने लगे।

Automatism [*ऑटोमेटिज्म*] : स्वचलता।

यह सिद्धान्त कि पशु और मानव यंत्रमात्र हैं। जीव का यह अवयव एक ऐसा यंत्र है जो भौतिक तथा यान्त्रिक विज्ञान के सिद्धान्तों से संचलित होता है। देकार्ट द्वारा प्रतिपादित यंत्रवाद में निम्न स्तर के जीवों को यंत्रमात्र माना है और मानव का एक ऐसा यंत्र जो विचारशील आत्मा से संचलित है। यंत्रवाद के वास्तविक समर्थक सत्रहवीं शताब्दी में फ्रांस के भौतिकवादी लामेट्रिक थे जिन्होंने मानव और पशु सब वर्ग के जीवों को समान रूप से यंत्रमात्र माना है। उन्नीसवीं शताब्दी में यंत्रवाद उपतत्त्ववाद (दे. Epiphenomenon) के साथ मिश्रित हुआ और यह हीज़राल, हक्सले और क्लीफोर्ड द्वारा संपादित किया गया। यंत्रवाद का आधुनिक रूप व्यवहारवाद (दे० Behaviourism) है। मनोवैज्ञानिक यंत्रवाद उन कार्यों से सम्बन्धित है जो प्रयोजनयुक्त नहीं प्रतीत होते हैं, जैसे स्वतः लेखन, जो चेतन मन के हस्तक्षेप के बिना होता है।

Autonomous Complex [ऑटोनॉमस काम्प्लेक्स] : स्वतंत्र मनोग्रंथि, भाव-ग्रंथि।

यह धारणा विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के प्रवर्तक युग द्वारा निर्मित हुई है। युग के अनुसार भाव-ग्रंथियां अनेक प्रकार की होती हैं और प्रत्येक भाव-ग्रंथि स्वतंत्र रूप से सक्रिय और क्रियमाण रहती है—एक भाव-ग्रंथि को दूसरी से कुछ लेना-देना नहीं रहता। वे एक दूसरे पर निर्भर नहीं करतीं; इनमें पारस्परिक सम्बन्ध नहीं रहता। प्रत्येक भाव-ग्रंथि का प्रभाव उसकी प्रकृति और तीव्रता के अनुरूप और अनुपात में व्यवहार पर पड़ता रहता है। एक प्रकार से भाव-ग्रंथि व्यवहार और व्यक्तित्व का बड़े पैमाने में निर्धारक है। मानव में द्वैध व्यक्तित्व (दे० dual personality) अथवा बहु व्यक्तित्व (दे० multiple personality) होने का बहुत कुछ कारण कई प्रकार की भाव-ग्रंथियों का समान रूप से सबल होना है। रोगी में जितने प्रकार की भाव-ग्रंथियां पड़ी हैं उनमें उतने प्रकार का व्यक्तित्व मिलने लगता है। इस प्रकार युग ने अपनी मुक्त भाव-ग्रंथि की धारणा के आधार पर विभक्त व्यक्तित्व की एक नये प्रकार की व्याख्या दे रखी है।

Autonomic Nervous System [ऑटोनॉमिक नर्वस सिस्टम] : स्वायत्त तन्त्रिका-तंत्र।

तन्त्रिका तंत्र का वह भाग जिससे अनैच्छिक गतियों (चिकनी मांसपेशियों और ग्रंथियों की क्रियाएँ) का

संचालन और नियमन होता है। केन्द्रीय तन्त्रिका तन्त्र से यह दो बातों में भिन्न है १ इसके अधिकांश उच्चतर केन्द्र प्राचीन मस्तिष्क (वृहत् मस्तिष्क के अतिरिक्त मस्तिष्क के अन्य भाग) में पाए जाते है। २ इसकी तन्त्रिका-सन्धियां केन्द्रीय तन्त्रिका तन्त्र के बाहर स्थित है। स्वायत्त तन्त्रिका-तन्त्र के दो भाग हैं अनुकम्पी (sympathetic) तथा सहानुकम्पी (para sympathetic)। इन दोनों भागों का काम एक दूसरे के विपरीत है। इनमें से एक यदि किसी अंग को फैलाता है तो दूसरा सिकोड़ता है। यथा यदि सहानुभूतिक प्रभाव हृदय गति को बढ़ाता है तो परा-सहानुभूतिक प्रभाव उसे घटाता है। स्वायत्त तन्त्रिका तन्त्र के इस विरोधी प्रभाव के कारण व्यक्ति के अंग-उपांग अपनी गतियों पर उपयुक्त नियन्त्रण प्राप्त करते है और शरीर तथा वातावरण में होने वाले परिवर्तनों के प्रति परिस्थिति के अनुकूल अभियोजन करने में सफल होते हैं। संवेगों की स्थिति में आन्तरिक अवयवों में होने वाले परिवर्तनों में स्वायत्त तन्त्रिका तन्त्र का महत्वपूर्ण योग है।

स्वायत्त कहलाते हुए भी यह तन्त्रिका-तन्त्र पूर्णतः स्वतन्त्र नहीं है। इसकी अधिकांश क्रियाएँ केन्द्रीय तन्त्रिका-तन्त्र के अधीन है और उपयुक्त साधनों द्वारा इन पर भी नियन्त्रण प्राप्त किया जा सकता है।

(चित्र Freeman's Physiological Psychology p. 169)

Auto Suggestion [ऑटो सजेशन]. आत्म संसूचन।

अपने ही को आदेश-निर्देश देना। आत्म संसूचन के लिए आध्यात्मिक विकास आवश्यक है। जिसका आध्यात्मिक विकास नहीं हुआ है, उसके लिए आत्म संसूचन संभव नहीं होता। जिसमें आत्म संसूचन की समर्थता है वह मानसिक रोग से पीड़ित नहीं होता, वह अपनी भाव-ग्रन्थियों को सफलता से सुलझा सकता है। उसके व्यक्तित्व में सन्तुलन-समायोजन रहता है। यह संसूचन की एक युक्ति अथवा विधि है, दूसरी विधि परसंसूचन है। (दे० Suggestion)

Average Error, Method of [एवरेज एरर, मेथड ऑफ] माध्य त्रुटि-विधि।

एक प्राचीनतम मनोभौतिकीय प्रयोग विधि, जिसमें प्रयोज्य दी हुई किसी परिवर्त्य उत्तेजना को अपने नियन्त्रण द्वारा एक दी हुई स्थिर उत्तेजना के बराबर करने का प्रयत्न करता है। विभिन्न प्रेक्षणात्मक तुलनाओं में होने वाली त्रुटियों का माध्य ज्ञात करके उसे प्रयोज्य के प्रेक्षण की सामान्य विशेषता तथा प्रयोज्य का व्यक्तिगत गुण माना जाता है। इस विधि को प्रेक्षक को दी हुई स्थिर उत्तेजना का प्रत्याकार तैयार करने के कारण प्रत्याकार विधि, उत्तेजना का नियन्त्रण प्रयोज्य के हाथ में होने के कारण समायोजन विधि तथा प्रयोज्य का काम, स्थिर-उत्तेजना, परिवर्त्य उत्तेजना के सम करना होने के कारण, समोत्तेजना विधि भी कहा गया है। इस विधि का उपयोग दृष्ट देशों, ज्यामितिक विपर्ययों, दृष्ट तीव्रताओं, वर्णों, शब्दों, शारीरिक गति, आकार-आकृति स्मृति तथा काल प्रत्ययों के मापन के सम्बन्ध में किया गया है।

Awareness [अवेअरनेस] जागरूकता।

मनोविज्ञान में चेतन मन की क्रियात्मक अवस्था जागरूकता है। जागरूकता की क्रिया—जैसे रंग को देखना, दुःख के भाव की अनुभूति करना इत्यादि—उस वस्तु से पृथक् है जिसकी हमें जागरूकता होती है, जैसे कि अनुभूति किया हुआ रंग या दुःख-भाव वस्तु-विशेष से भिन्न है। प्रेरणा क्रिया का मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त ब्रेन्टैनो द्वारा संपादित किया गया है और इसका प्रमाणवादी विकास मीनांग, हुसर्ल, लेआर्ड और ब्राड द्वारा हुआ है।

Backward Child [बैकवर्ड चाइल्ड]: पिछड़ा हुआ बालक।

बौद्धिक तथा सामाजिक विकास की दृष्टि से अपनी ही अवस्था के अन्य बालकों से अपेक्षाकृत हीन अथवा पिछड़ा हुआ बालक जिसकी बुद्धि-उपलब्धि ७५ से लेकर ६० तक पाई जाती है। मूढ़, मूर्ख एवं मन्द-बुद्धि से श्रेष्ठ होते हुए भी उसकी बौद्धिक क्षमता साधारण बालकों की अपेक्षा कम होती है। गणित, विज्ञान, व्याकरण आदि के प्रति उसमें सहज अरुचि पाई जाती है। इन विषयों को वह प्रायः स्मरण नहीं रख पाता। नैतिक दृढ़ता एवं आत्मविश्वास के अभाववश अस्वस्थ वातावरण के फलस्वरूप तरह-तरह की चारित्रिक दुर्बलताओं का आविष्ट होता है। बोलता कम, सुनता अधिक है। शारीरिक कार्यों में उसकी विशेष रुचि होती है। कभी-कभी अनुकूल वातावरण एवं उपयुक्त पथप्रदर्शन के प्रभावस्वरूप वह जीवन में सामान्य बालकों के समान ही सफल होते देखा जाता है।

Barrier [बैरियर]: उपरोध, अवरोध (क्षेत्र-सिद्धान्त)।

मनोविज्ञान में इस धारणा का प्रयोग लेविन (१८६०-१६४७) ने पारिभाषिक अर्थ में किया है। जीवन की परिस्थितियों में, अपने लक्ष्य की प्राप्ति में मनुष्य को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ये कठिनाइयाँ ही 'बाधा' या 'अवरोध' हैं। अवरोध भौतिक भी होते हैं—जैसे, चहार दीवारी; ये अवरोध सामाजिक प्रकार के भी हैं—जैसे प्रकार-प्रकार की सामाजिक वर्जनाएँ। मानव का व्यवहार सदैव ध्येय-निहित (goal oriented) होता है। वह ध्येय की प्राप्ति के लिए प्रयास करता है। कभी तो वह अपने ध्येय स्थल पर पहुँच जाता है और कभी बाधाएँ-अवरोध होने से वह अपने ध्येय को प्राप्त नहीं कर पाता। बाह्य और आन्तरिक बाधाएँ ऐसी टांस रहती है अथवा ध्येय के बीच की दीवार ऐसी अविच्छिन्न कि व्यक्ति रास्ता नहीं बना पाता। फलस्वरूप तनाव होता है। ध्येय तक सफलतापूर्वक पहुँचना अथवा नहीं—यह अवरोध का प्रश्न है। ध्येय की प्राप्ति सफलता सूचक है; अभाव विफलता का लक्षण है।
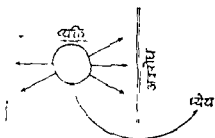
Behaviour [बिहेवियर]: व्यवहार।

किसी परिस्थिति-विशेष में अवयव की सम्पूर्ण प्रतिक्रिया ही व्यवहार है। व्यवहार के अन्तर्गत मांसपेशी और ग्रंथि सम्बन्धी प्रतिक्रियाएँ भी निहित हैं। वह सम्प्रदाय जिसमें व्यवहार पर बल दिया गया है चेतन मानसिक अवस्था का विरोधी है जिसमें अध्ययन की एकमात्र विधि अन्तर्दृष्टि मानी गई है। पहले मनोविज्ञान चेतन मानसिक अवस्थाओं और अनुभूतियों का अध्ययन मात्र माना जाता था; अब मनोविज्ञान 'व्यवहार का विज्ञान' माना जाने लगा। अमेरिकी व्यवहारवादियों ने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया और व्यवहार व तत् सम्बन्धी परिवर्तन मनोविज्ञान के अध्ययन का मुख्य विषय बने और अब वह सहधर्मी चेतन अनुभूतियों के स्थान पर उत्तेजन-प्रतिक्रिया परिस्थिति के माध्यम से अध्ययन किया जाने लगा।

बीसवीं शताब्दी में आकर व्यवहार की व्याख्या मूल रूप से आणविक (molecular) व पुंज व्यवहार (molar) के रूप में हुई। किसी भी क्रिया का आधारभूत तत्वों में विश्लेषण आणविक और सहजवाद है; पुंज व्यवहार का संकेत पूर्ण से है और प्रयोजन से है। इसी प्रकार उद्दीपन-

प्रसूत व्यवहार (respondent behaviour) और क्रियाप्रसूत व्यवहार (operant behaviour) का भी पृथक्करण हुआ है। प्रतिक्रियात्मक व्यवहार उत्तेजन से सम्बन्धित सहजक्रिया मात्र है, क्रियात्मक व्यवहार उन प्रतिक्रियाओ की ओर इंगित करता है जो बाह्य-उत्तेजन के बिना होती हैं। (देखिये—Behavioural Environment)

Behaviourism [बिहेविअरिज्म] व्यवहारवाद।

(वाटसन) व्यवहारवाद मनोविज्ञान का वह सम्प्रदाय है जिसमे प्रतिक्रियाओ के वाह्य अध्ययन की महत्ता पर मूल रूप से बल दिया गया है। जिसमे 'मन' विषय पर तो विचार किया गया है किन्तु चेतना पर नही। ऐसा मनोविज्ञान ही 'बाह्य मनोविज्ञान' है। व्यवहारवाद मे मन और मन-सम्बन्धी धारणाओ का भी लोप है। व्यवहारवाद के प्रवर्तक जे० वी० वाटसन हैं। उन्होने ही 'उद्दीपन-अनुक्रिया' (stimulus-response) मनोविज्ञान का निर्माण किया। वाटसन ने प्राचीन प्रचलित शब्दावली की आलोचना की और व्यवहारगत सम्प्रत्ययो (Behaviour concepts) का निर्माण किया। इस प्रकार संवेदन भेदबोध (discrimination), स्मृति, चिन्तन, भावना, संवेग इत्यादि अन्तरावयव सम्बन्धी व्यवहार, अनुबन्धन (conditioning) अन्तरंग प्रेरणा, उद्दीपन-अनुक्रिया अथवा अन्तरावयवी तनाव मात्र समझा जाने लगा।

व्यवहारवाद के अन्य अधिकारी टॉलमैन, लैशले, हण्टर, स्किनर और हल हैं। इनमे टॉलमैन का स्थान विशेष महत्व का है। जो योजना वाटसन ने प्रारम्भ की, उसका सम्पादन टॉलमैन ने सफलता से किया है। टॉलमैन ने अनुभव-जन्य घटना के वाह्य क्रिया मे परिणत करने के लिए ऑपरेशनल लाजिक' अर्थात् क्रियात्मक तर्क का प्रयोग किया। व्यवहारवाद तथा नव-व्यवहारवाद मे यह स्पष्ट इंगित किया हुआ है। आन्तरिक को बाह्य मे परिणत करना सम्भव होता है, विशेष रूप से जबकि आन्तरिक सार्वजनिक अनुभव हो। निरीक्षण परीक्षण बाह्य रूप देने के पश्चात् ही सम्भव होता है। प्रारम्भिक और नव-व्यवहारवाद मे यही भेद है।

Behavioural Environment [बिहेविअरल इन्वायर्नमेंट]. व्यवहारिक परिवेश।

मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है। व्यवहार शब्द का प्रयोग कभी तो मांस पेशी और ग्रन्थि के क्रियात्मक व्यवहार के प्रसंग मे हुआ है और कभी लक्ष्य-निर्दिष्ट सप्रयोजन व्यवहार के लिये। इनमे से पहला आणविक (Molecular) व्यवहार है और दूसरा पुंज (Molar)। इन दोनो मे भेद वातावरण के कारण है। मौलेक्यूलर अथवा आणविक व्यवहार भौतिक वातावरण मे घटता है; पुंज व्यवहार ऐसे वातावरण मे जिसे 'व्यवहारिक वातावरण' कहा-समझा जाता है। विशेष अर्थ मे जिस व्यवहार का वातावरण से जीवित क्रियात्मक सम्बन्ध है वह पुंज व्यवहार है और यह वातावरण जो व्यवहार से नियात्मक रूप से सम्बन्धित है 'व्यवहारिक वातावरण' है। भौतिक और भौगोलिक वातावरण जो सभी व्यवहारिक वातावरण मे समान रूप से होता है हरेक व्यवहार मे विशेष अर्थ प्रसंग मे होता है। वर्तमान शताब्दी मे यह विभिन्नीकरण गेस्टाल्टवादियो ने किया है और इसने सीखने के क्षेत्र मे क्रान्तिकारी परिवर्तन उपस्थित किए हैं।

Belief [बिलीफ] विश्वास।

विश्वास वस्तुओ के अस्तित्व मे अथवा प्रस्तावना की स्वीकृति मे है। वस्तुओ मे विश्वास विशेषत तत्कालिक होता है। वह अनुमानिक नही होता। प्रस्तावना मे विश्वास, विचार और अनुमान पर ही निर्भर करता है। विश्वास के सिद्धान्तो का वर्गीकरण निम्न प्रकार है: (१) भावात्मक (२) बौद्धिक (३) ऐन्द्रिक।

ह्यूम का यह सिद्धान्त है कि विश्वास प्रत्यक्षीकरण और स्मृति में उपस्थित स्पष्टता से सम्बन्धित है; इसका सम्बन्ध मिथ्या करना से नहीं है जो भावात्मक सिद्धान्त का दृष्टान्त है।

Bell Magendii Law [बेल मेज़ेन्डी लॉ] : बेल मेज़ेन्डी नियम।

यह नियम बेल, एक अंग्रेज शरीरवेत्ता और मेज़ेन्डी की ज्ञानवाही और कार्यवाही नाड़ियों के अन्तर के बारे में किये गए अन्वेषण से सम्बन्धित है। इसे बेल-मेज़ेन्डी नियम कहते हैं। इस अन्वेषण के प्रभाव से नाड़ी-शरीर-विज्ञान को ज्ञानवाही और कार्यवाही, संवेदना और गति के अध्ययन में पृथक विभाजित किया गया। यह नियम सहज क्रिया और प्रतिवर्त चाप (reflex arc) की अवधारणा की पीठिका है।

Beta Waves [बीटा वेव्स] : बीटा तरंगें।

मस्तिष्क सम्बन्धी विद्युत क्रिया मापक यन्त्र एलेक्ट्रोएनसेफलोग्राफ, जिसमें एक रीति से मस्तिष्कावरण की विद्युत क्रिया को अंकित किया जाता है, में सापेक्ष रूप से स्पष्ट, भिन्न-भिन्न प्रकार की मस्तिष्क तरंगों की प्रतिक्रियाएँ दिखलाई पड़ती हैं। बीटा-तरंग उनमें से एक है। उनके बीच में पाया जाने वाला समय अन्तर अलफा तरंगों की अपेक्षा छोटा होता है, लेकिन आवृत्ति संख्या अधिक होती है।

देखिए—Brain Waves

Bhatia Battery Test [भाटिया बैटरी टेस्ट] : भाटिया परीक्षण माला।

भारतीय संस्कृति एवं वातावरण के अनुरूप भाटिया द्वारा आविष्कृत, विकसित एवं प्रमाणीकृत एक बुद्धि-परीक्षण विशेष। इसमें वाचिक एवं क्रियात्मक दोनों ही प्रकार के पाँच परीक्षण हैं :

(१) ब्लाक डिज़ाइन परीक्षण (दे० Block Design Test)

(२) पुरस्सरण परीक्षण (दे० Passalong Test)

(३) प्रतिरूप रेखांकन परीक्षण (Pattern Drawing Test)—इसमें कठिनाई के क्रम से ८ प्रतिकृतियाँ होती हैं। इनमें से प्रत्येक को बालक को कागज पर एक बार शुरू कर बिना पेन्सिल उठाए तथा किसी रेखा पर बिना दुबारा पेन्सिल चलाए पूरा करना होता है। परीक्षक सरल से प्रारम्भ करता है और पहली प्रतिकृति स्वयं बनाकर दिखला देता है।

(४) ध्वनियों के लिए तात्कालिक स्मृति (क) प्रत्यक्ष (Immediate Memory for Sounds)—इसमें बालक परीक्षक द्वारा उच्चारित ध्वनियों (दो अक्षरों से आरम्भ कर उसे क्रमशः बढ़ाया एवं परिवर्तित किया जाता है) को ध्यान से सुन स्वयं उसी प्रकार उनका उच्चारण करता है। (ख) उत्क्रमित (Reversed)—इसके अन्तर्गत बालक को परीक्षक द्वारा उच्चारित अक्षरों को उलट कर कहना होता है—यथा यदि परीक्षक कहता है 'क' 'च' 'ट' तो बालक को कहना होगा 'ट' 'च' 'क'।

(५) चित्र-निर्माण परीक्षण (Picture-Construction Test)—इसमें भी कठिनाई के क्रम में व्यवस्थित २,४,६,८ एवं १२ टुकड़ों में कटे पाँच पृथक् चित्र होते हैं। दिए हुए टुकड़ों की सहायता से बालक को चित्र पूरा करना होता है।

परीक्षा काल में परीक्षक बालक के प्रत्येक प्रयास में लगे समय एवं अशुद्धियों का ध्यान रखते हुए उसकी अवस्था के अनुरूप उसे अंक देता है। इन्हीं प्राप्तांकों की सहायता से बालक की बुद्धि-उपलब्धि जानी जाती है।

Bilateral Transfer [बाइलैटरल ट्रान्सफर] : द्विपक्षीय अन्तरण।

धनात्मक प्रशिक्षण अन्तरण का ही एक प्रकार जिसके अन्तर्गत शरीर के एक ओर के अंगों अथवा भागों द्वारा अर्जित प्रतिक्रियाएँ शरीर के दूसरी ओर के अंग अथवा भाग की प्रतिक्रियाओं के अर्जन में सहायक सिद्ध होती हैं। उदाहरणार्थ—

एक हाथ से किसी काम का सीख लेने के बाद दूसरे हाथ से सीखना सरल हो जाना।

Binet Simon Intelligence Scales [बिने साइमन इण्टेलिजेंस स्केल] बिने साइमन बुद्धि मापनी।

फ्रांस मे प्रथम मनोवैज्ञानिक पत्रिका का संस्थापक तथा उच्चबौद्धिक प्रक्रियाओं पर महत्वपूर्ण प्रयोगकर्त्ता आल्फ्रेड बिने (१८५६-१९११) द्वारा निर्मित विश्व-विख्यात प्रथम बुद्धि-मापदण्ड। इनके निर्माण मे बिने के भूतपूर्व शिष्य और अल्पबुद्धियों के व्यवहार के अध्ययन के लिए विख्यात मनोवैज्ञानिक थ साइमन ने भी हाथ बटाया था।

यह मापनी फ्रांसीसी राज्य के आदेश से मन्द-बुद्धियों का शिक्षा योग्य शिष्यों से अलग करने के उद्देश्य से बनाई गई थी। इनका मूल आधार बिने की यह धारणा थी कि बुद्धि किसी दिशा मे बढ़ने और लगे रहने की वृत्ति है, वाञ्छित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए समायोजन कर लेने की योग्यता है, और आत्मालोचना की शक्ति है।

प्रथम मापनी कई परीक्षणों से मिलकर बनी थी। यह परीक्षण वैयक्तिक थे, शाब्दिक थे और मानवीकृत मौखिक प्रश्नों के रूप मे थे।

सर्व प्रथम मापनी १९०५ ई० मे बनी थी। इसमे कठिनता क्रम से विन्यस्त ३० परीक्षण थे। १९०८ मे इसके संशोधन के रूप मे दूसरी मापनी बनी। इसमें परीक्षणों का यह निश्चित करके आयु के अनुसार वर्गीकरण कर दिया गया कि कौन-सा परीक्षण किस आयु के सामान्य बच्चे सफलता-पूर्वक कर लेते हैं। जडबुद्धियों वाले परीक्षण अनावश्यक समझकर मापनी मे निकाल दिये गए।

पुनर्संशोधन के रूप मे १९११ ई० मे तीसरी मापनी बनी। इसमें ३ वर्ष की आयु से प्रौढ आयु तक के लिए अलग-अलग परीक्षण नियत हो गये और उनकी कुल संख्या ५४ हो गई। निम्नतर स्तर पर ३ वर्ष की आयु के उपयुक्त परीक्षण थे, जिनमे सरल आज्ञाओं का पालन कराया जाता था, अंक दुहरवाये जाते थे, अपना लिंग पूछा जाता था, अपना पारिवारिक नाम पूछा जाता था, साधारण वस्तुओं के नाम पूछे जाते थे, और प्रस्तुत चित्र का वर्णन करने को कहा जाता था। बीच मे नौ वर्ष की आयु के लिए परीक्षण थे, जिनमें कठिनतर संख्याएँ दुहरवाई जाती थीं, वर्ष के महीनों के नाम पूछे जाते थे, साधारण सिक्कों के नाम पूछे जाते थे, उसी समय पढ़ी हुई सामग्री का पुनरावर्तन कराया जाता था, और साधारण परि-भाषाएँ पूछी जाती थीं। ऐसे ही १५ वर्ष की आयु के लिये नियत परीक्षणों मे कल्पना से तह किए हुए कागज के काटने से बन जाने वाली उसकी परिवर्तित आकृति बनवाई जाती थी, भिन्न प्रत्ययों के परस्पर अन्तर पूछे जाते थे, प्रस्तुत आकृति मे काल्पनिक परिवर्तन कराये जाते थे। प्रस्तुत गम्भीर लेख का सारांश पूछा जाता था, तथा राष्ट्रपति और राजा मे अन्तर पूछा जाता था। इस प्रकार के परीक्षणों के उपयोग से यह पता चल जाता था कि कोई बच्चा अपनी आयु के सामान्य बच्चों से बुद्धि मे कितने वर्ष आगे अथवा कितने वर्ष पीछे है।

Binocular Rivalry [बाइनाकुलर राइवल्री] द्विनेत्री स्पर्धा।

संवेदनों का प्रथम एक अक्षि से तत्पश्चात् *द्वितीय अक्षि* मे एकान्तरण, जबकि दोनों नेत्र युगपदेन भिन्न रंगों एवं मूर्तियों के द्वारा उत्तेजित किये जाते हैं। यह एकी-करण के विपरीत है जिसमे दो संस्कार मिलकर एक संस्कार के रूप मे आ जाते हैं।

Binomial Distribution [बाइनोमियल डिस्ट्रिब्यूशन] द्विपद बटन।

दो सम्भावनाओं की कई परिस्थितियां अथवा अवसरों पर हो सकने वाली सम्भाव्यताओं का वितरण जिसे गणित विधि से अनुमानित किया जाता है, और

जिसको मनोविज्ञान के कई सन्दर्भों में संयोग अनुमानों की परीक्षा के लिये अनायास घटनाओं का प्रतिरूप या नमूना माना जाता है। यह विशेषतया मनोभौतिकी अन्वेषणों द्विविकल्पिक विवेक शिक्षा प्रयोगों और बहुविकल्प विद्यार्थी परीक्षणों में उपयोगी सिद्ध हुआ है।

सम्भाव्यताओं को भिन्नों, प्रतिशतों आदि में आंका जाता है और उनका कुल जोड़ १ माना जाता है। एक ही परिस्थिति अथवा अवसर में दोनों सम्भावनाओं में से प्रत्येक की सम्भावक्ता ½ होती है। यदि इन सम्भावनाओं को क और ख कहा जाय तो क+ख सम्पूर्ण एक हो जाता हैं। यदि परिस्थितियाँ अथवा अवसर बढ़ा दिये जाए और उनकी संख्या को स कहा जाय तो सम्भाव्यताओं का अनुमान द्विपद प्रसरण (binomial Expansion) (क+ख) स के श्रेणी विस्तार से लगाया जा सकता है, जिसका सूत्र यों है—

$$(क+ख)^{स} = क^{स} + \frac{स}{१} क^{(स-१)} ख + \frac{स(स-१)}{१\times२} क^{स-२} ख^{२} + \cdots + ख^{स}$$

उदाहरण के लिए यदि किसी व्यक्ति से दो शब्दों की तुलना करने को कहा जाय तो उसके द्वारा की गई तुलना यथार्थ होगी अथवा त्रुटिपूर्ण। यदि ५ परिस्थितियों में उससे यही कराया जाय तो छः सभावनाएँ होती हैं—उसकी प्रतिक्रिया किसी परिस्थिति में भी यथार्थ न हो, एक परिस्थिति में यथार्थ हो, दो परिस्थितियों में यथार्थ हो, तीन में यथार्थ हो, चार में यथार्थ हो अथवा पाँच में यथार्थ हो। प्रत्येक सम्भावना की सम्भाव्यता इस द्विपद विस्तारण से ज्ञात होती है।

$$\left(\frac{१}{२}+\frac{१}{२}\right)^{५} = \left(\frac{१}{२}\right)^{५} + ५\left(\frac{१}{२}\right)^{४}\left(\frac{१}{२}\right) + \frac{५\times४}{१\times२}\left(\frac{१}{२}\right)^{३}$$
$$\left(\frac{१}{२}\right)^{२} + \frac{५\times४\times३}{१\times२\times३}\left(\frac{१}{२}\right)^{२}\left(\frac{१}{२}\right)^{३} + \frac{५\times४\times३\times२}{१\times२\times३\times४} + \left(\frac{१}{२}\right)$$
$$\left(\frac{१}{२}\right)^{४} + \frac{५\times४\times३\times२\times१}{१\times२\times३\times४\times५}\left(\frac{१}{२}\right)^{५} = \frac{१}{३२}+\frac{५}{३२}+\frac{१०}{३२}+\frac{१०}{३२}+\frac{५}{३२}+\frac{१}{३२}$$

अर्थात् यदि यह सम्पूर्ण प्रयोग ३२ बार किया जाय तो यह आशा की जा सकती है कि केवल संयोगवश ही १ बार प्रयोज्य की सभी प्रतिक्रियाएँ यथार्थ होंगी, ५ बार चार प्रतिक्रियाएँ, १० बार तीन प्रतिक्रियाएं, १० बार दो प्रतिक्रियाएँ, ५ बार एक प्रतिक्रिया और एक बार कोई भी नहीं।

संयोग सम्भाव्यताओं के इस प्रकार के द्विपद बंटन के अनुसार परिस्थितियों की संख्या को अनन्त मान लेने पर प्रसामान्य वितरण एवं सामान्य सम्भाव्यता वक्र की धारणा बनी है। इसलिए द्विपद बंटन तथा प्रसामान्य वितरण असामान्य आकृति में समान होते हैं, किन्तु संख्याओं में नहीं। द्विपद बंटन में सम्भाव्यताएँ बड़े-बड़े अन्तर पर विभिन्न अंकों के रूप में होते हैं। इसके विपरीत प्रसामान्य वितरण में इनमें बहुत धीरे-धीरे अन्तर होता है। परन्तु जैसे-जैसे परिस्थितियों की संख्या बढ़ाई जाती है, द्विपद बंटन प्रसामान्य वितरण के अनुरूप ही होता जाता है।

Biographical Method [बायोग्राफिकल मेथड] : जीवन-चरित्र विधि।

बालमनोविज्ञान में प्रयुक्त बालकों के अध्ययन की एक प्रमुख विधि जिसके अन्तर्गत प्रमुख व्यक्तियों के अन्यान्य व्यक्तियों द्वारा लिखित जीवन-चरित्रों में उनकी बाल्यावस्था के विवरणों के आधार पर बाल-व्यवहार सम्बन्धी स्थापनाएँ की जाती हैं। ऐसी जीवन-गाथाएँ साधारणतः दो प्रकार की होती हैं : (१) प्रमुख कथा-कहानी घटना सम्बन्धी जीवन-चरित्र (Anecdotal Biographies) तथा (२)

क्रमबद्ध जीवन चरित्र (Systematic Biographies)।

बाल मनोविज्ञान मे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से क्रमबद्ध रूप मे लिखित जीवन-चरित्रो का सूत्रपात टीडमन तथा प्रेयर की स्वय अपने ही बच्चो की प्रारम्भ के तीन वर्षों की लिखित जीवनी से होता है।

Biology, Biologism [बायलॉजी, बायलॉगिज्म] जीव-विज्ञान, जीवोपयोगितावाद।

जीवशास्त्र म जीवित प्राणियो का अध्ययन होता है। जीवोपयोगितावाद वह सिद्धान्त है जिसमे जीवन के सभी स्तरो पर जीवशास्त्रीय उपयोगिता को सार्वजनीन एव आधारभूत व्याख्यात्मक नियम सिद्धान्त माना गया है। जैविकीय विज्ञान औषधि विज्ञान के रूप मे प्रारम्भ हुआ। अपने मूलरूप मे यह शारीरिकी शल्यशास्त्र एव जडी-बूटियो के ज्ञान का सम्मिश्रण था। जर्मनी मे जीवविज्ञान का उदय एक महत्वपूर्ण घटना थी जो मनोविज्ञान के उदय और विकास का कारण बनी। जर्मनी निवासियो की रुचि आकारिक (morphological) विवरणो मे थी। अत उन्होने जीवशास्त्र का भी विज्ञान की श्रेणी मे स्वागत किया। इसीसे आगे चलकर मन के आकार सम्बन्धी मनोविज्ञान की सृष्टि हुई?

Biotypes [बायटाइप्स] समानजीवो। जीवो का समूह जिसम समान पितागत प्रतिकारको का मिश्रण मिलता है।

व्यक्तित्व सिद्धान्त मे शरीर रचना एव देह व्यापारीय प्ररूपो के आधार पर व्यक्तियो का वर्गीकरण, विशेषकर जब मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ अथवा गुण इस वर्गीकरण के आधार पर माने जाते हैं।

इस प्रकार क्रेश्मर ने व्यक्तियो का वर्गीकरण पाइकनिक (स्थूल, वृहत सिर एव

अ

ब

स
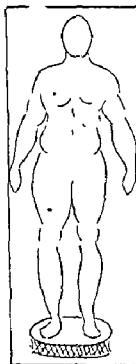
उदर तथा गोलाकार काय के साथ तथा (साइक्लेरिमक स्वभाव के लिए अनुरूप) एसथेनिक (कृश, दीर्घ एवं संकीर्ण काय के साथ, स्किसोफ्रीनिया स्वभाव के लिये अनुरूप) तथा एथलेटिक (पाइकिनक तथा एसथेनिक के बीच का सामान्य व्यक्तित्व) तथा डिसप्लास्टिक प्रकार के लोग।

इसी प्रकार शेल्डन का (अ) एन्डोमार्फिक, (ब) मेसोमार्फिक एवं (स) एक्टोमार्फिक के रूप में वर्गीकरण जिनके लिये विसरोटोनिया, सोमेटोटोनिया तथा सेरीब्रोटोनिया नामक स्वभावों का होना बताया जाता है।

Biparte Psychology [बायपोर्ट साइकोलोजी] : द्विपक्षीय मनोविज्ञान।

यह पद विशेष रूप से मनोविज्ञान की उस शाखा-सम्प्रदाय के लिए प्रयोग में लाया गया है जो विषय तथा क्रिया को जोड़ता है और दोनों को ही मानसिक जीवन के दो भिन्न पक्षों के रूप में ग्रहण करता है। मेसर तथा कुल्पे के नाम इस सम्बन्ध में विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। विषय तथा प्रक्रिया में अन्तर निर्धारित करने के लिए कुल्पे की ओर से प्रायः निम्न तर्क उपस्थित किए जाते हैं, "क्रिया तथा विषय निश्चय ही भिन्न होते है क्योंकि अनुभूति जगत में उन्हें अलग-अलग करके दिखलाया जा सकता है।" स्वप्न में क्रिया नगण्य होती है और विषय की प्रचुर तथा स्पष्ट अनुभूति होती है। इसी तरह निर्विकल्प प्रत्यक्ष अथवा आभास में क्रिया तो होती है पर विषय नगण्य रहता है। दोनो ही स्वतन्त्र रूप से परिवर्त्य हैं। जब व्यक्ति देखने के क्रम में एक-एक करके अनेक वस्तुओं को देखता है तब विषय तो बदलता है पर क्रिया वही रहती है; ठीक इसी तरह विषय के स्थिर रहते हुए भी क्रियाओं में परिवर्तन हो सकते है।

Birth Trauma [बर्थ ट्रॉमा] : जन्माघात।

(मनोविश्लेषण) प्रसवकाल में बालक द्वारा अनुभूत आघात। औटोरैंकने प्रसव को जीवन का प्रारम्भिक सर्वाधिक विश्वजनीन क्षोभात्मक अनुभव बतलाया है। भयोत्पादक उत्तेजनाओं में इसे सर्वप्रथम और मूलभूत माना जाता है। यदि बालक इस पर पूर्ण नियन्त्रण नहीं प्राप्त कर सका तो भावी जीवन में यह स्नायविक, चिन्ता अथवा भय के रोग के रूप में अभिव्यक्त होता है।

Birth Order [बर्थ आर्डर] : जन्मक्रम। एक ही माता-पिता की विभिन्न सन्तानों के पैदा होने का क्रम। इसमें से प्रत्येक अगली सन्तान को पहले की अपेक्षा भिन्न पारिवारिक वातावरण प्राप्त होता है और वह भिन्न-भिन्न रूपों में उन्हें प्रभावित करता है। पहली तथा अन्तिम सन्तान में विकृत व्यवहार के उत्पन्न होने की अधिक सम्भावना रहती है।

Bisection Method [बाइसेक्शन मेथड] : अर्धन/द्विभाजन विधि।

मनोभौतिक प्रयोग की समानान्तर बोध विधि के अन्तर्गत समान ऐन्द्रिय अन्तरपद्धति का एक रूप। इसमें प्रयोज्य से किसी विशेष मानसिक सतत विमा पर किसी प्रस्तुत दूरी के दो समान भाग कर देने की क्रिया करवाई जाती है। इसके लिए उसके समक्ष एक न्यून तथा एक अधिक परिमाण की दो उत्तेजनाएँ प्रस्तुत करके उससे कहा जाता है कि एक तीसरी बीच की उत्तेजना अन्य उपलब्ध उत्तेजनाओं में से ढूँढकर बताए जिसकी दूरी पहली दोनों उद्दीपनों से समान हो। इस विधि से किन्हीं दो उद्दीपनों के बीच, किसी भी बोध के सन्दर्भ में, मानसिक मध्यबिन्दु अर्थात मध्योद्दीपन ज्ञात करना सम्भव हो जाता है।

प्रयोग एक दूसरे के बाद आरोही एवं अवरोही श्रेणियों में आयोजित होता है। प्रत्येक श्रेणी में आरोही अथवा अवरोही क्रम से उपलब्ध उद्दीपनों में से प्रत्येक के विषय में प्रयोज्य से अनुमान कराया जाता है कि वह प्रस्तुत स्थिर उत्तेजनाओं की दूरी के मध्य में है, उससे ऊपर है या उससे नीचे। किसी श्रेणी में प्रयोज्य को

आस पास के परिमाण वाली उत्तेजनाएँ इस दूरी के मध्य म प्रतीत हो सकती हैं। इनका मध्यक, श्रेणी के साथ प्रयोग से ज्ञात, मानसिक मध्यउद्दीपन का माप है। इस प्रकार सभी श्रेणियो से प्राप्त मानसिक मध्यउद्दीपन मापो का मध्यक ज्ञात करके उसे विश्वसनीय प्रयोगफल अर्थात् तथ्यात्मक मानसिक मध्योद्दीपन माना जाता है।

इस मनोभौतिक प्रयोग विधि का मनोविज्ञान मे कई कारणो से बडा महत्त्व है। इससे मनोभौतिकी सीमान्तक उद्दीपनो क अध्ययन तक सीमित न रहकर सीमोत्तर दूरियो के अध्ययन मे भी प्रयुक्त होने लगी। दूसरे इस विधि से फेकनर के नियम की प्रामाण्यता की परीक्षा का एक सरल ढग उपलब्ध हो गया। यदि यह नियम सत्य है तो मानसिक मध्योद्दीपन प्रस्तुत स्थिरोद्दीपनो के गुणोत्तर मध्यक के सम होनी चाहिए, और इस विधि के प्रयोग द्वारा ज्ञात किया जा सकता है कि ऐसा है अथवा नही। इस विधि से यह भी देखा जा सकता है कि किसी विमा पर विभिन्न अन्तर बोध सीमाएँ सम है अथवा नही। यदि वह सम हैं तो इस विमा पर दो सम ऐन्द्रिय दूरियो मे अन्तरबोध सीमाओ की समान सख्या होनी चाहिए, जो इस विधि के अनुसार प्रयोग करके देखा जा सकता है। यदि कोई ऐन्द्रिय अन्तर बहुत बडा हो तो उसका इस विधि के अनुसार मानसिक द्विभाजन करके और इस प्रकार प्राप्त भागो का सतत पुन द्विभाजन करते रहने से उस ऐन्द्रिय दूरी पर बहुत सी उद्दीपनो का मानसिक परिमाण निश्चित हो सकता है।

Biserial r [बायसिरयल आर] द्विपक्ति[illegible] ह सम्बन्ध।

[illegible] तर्यो का सहसम्बन्ध जिनमे [illegible] का एक श्रेणीगत मापन [illegible] दूसरे परिवर्त्य के सतत [illegible] रित होते हुए भी [illegible] भेद किया गया [illegible] एक प्रचलित

सूत्र यह है—

$$\frac{स}{उ\ म} = \frac{^{म}प - ^{म}फ}{प्र} \times \frac{प\ फ}{ज}$$

इसम

$^{म}प$ = द्विभेदी परिवर्त्य के एक प्रकार मे श्रेणीगत परिवर्त्य के वितरण का मध्यक

$^{म}फ$ = द्विभेदी परिवर्त्य के दूसरे प्रकार मे श्रेणीगत परिवर्त्य के वितरण का मध्यक

प्र = श्रेणीगत परिवर्त्य के सम्पूर्ण वितरण का प्रमाप विचलन

प = द्विभेदी परिवर्त्य के प्रथम प्रकार की आवृत्ति का उस परिवर्त्य की कुल आवृत्ति से अनुपात

फ = द्विभेदी परिवर्त्य के द्वितीय प्रकार की आवृत्ति का उस परिवर्त्य की कुल आवृत्ति से अनुपात

ज = प्रसामान्य वितरण मे प तथा फ के बीच के कोटिअक्ष की ऊँचाई।

Bisexuality [बायसेक्सुएलिटी] उभयलिंगता, द्विलिंगता।

इस शब्द का प्रयोग दो अर्थो मे हुआ है (१) जीव मे पुरुष और स्त्री दोनो ही की शारीरिक एव मानसिक विशेषताओ का साथ-साथ पाया जाना। जीवशास्त्र के अनुसार कामविकास के लिए दोनो ही प्रकार की ग्रन्थियाँ—अण्डकोश तथा डिम्बकोश—प्रत्येक प्राणी मे पाई जाती हैं। अन्तर केवल यह है कि पुरुष मे अण्डकोश का विकास होता है और डिम्बकोश अविकसित रहते हैं, यथा स्त्री मे केवल डिम्बकोश का विकास होता है और अण्डकोश अविकसित रहते है। कभी-कभी किसी पुरुष या स्त्री मे विपरीतलिंगी ग्रन्थियो क अपेक्षाकृत अधिक सजग हो जाने से उसम विपरीतलिंगी गौण यौन विशेषताएँ भी दृष्टिगत होती है यथा—पुरुषो मे स्तनो का बढना तथा स्त्रियो मे दाढी-मूछ उगना आदि। (२) यौन आकर्षण की दृष्टि से प्राणी का सजातीय और विजातीय दोनो ही

व्यक्तियों की ओर समान रूप से आकर्षित होना। यह एक मनोविकार है।

युंग की एनिमा (दे० Anima) और एनिमस की धारणा (दे० Animus) भी मानव की द्विलिंगिता का प्रमाण है।

Blind Spot [ब्लाइण्ड स्पॉट] : अन्ध बिन्दु/अन्धस्थल।

दृष्टिपटल (retina) में वह सूक्ष्म स्थान जो कि प्रकाश उत्तेजनाओं के लिये सवेदनशील नहीं होता। मनुष्य में यह बिन्दु अक्षिपट केन्द्र के क्षितिज तल के समीप एवं नासास्थिति की ओर लगभग १२° तथा १५° पर स्थित है। इसमें शलाका एवं शंकु नहीं होते।

Boredom [बोरडम] . ऊब, विरसता।

कार्य की एकरसता तथा परिवर्तन लाने के प्रयास में सतत बाधक अवरोधों के कारण उत्पन्न स्थिति जिसमें एकाग्रता का अभाव पाया जाता है और व्यक्ति अपने-आपको दबा-दबा-सा एवं उखड़ा-सा अनुभव करता है। यह मानसिक मुद्रा-रुख का प्रश्न है। कार्य की गति पर इसका प्रभाव बहुत पड़ता है और इसी से यह औद्योगिक कार्यक्षमता की एक आवश्यक समस्या है।

Brain Waves [ब्रेन वेव्स] : मस्तिष्क-तरंग।

मस्तिष्क की कार्य-प्रणाली का अध्ययन अभी तक व्यक्ति के व्यवहार और उसकी दैहिक क्रियाओं में होने वाले परिवर्तनों के माध्यम से निरपेक्ष रूप से किया जाता था पर अब मस्तिष्क-तरगों की खोज ने उसके सापेक्ष अध्ययन की सम्भावना बढ़ा दी है। मस्तिष्क-तरगें मस्तिष्क में पाई जानेवाली एक प्रकार की अत्यधिक सूक्ष्म विद्युत-तरंगें हैं जो वृहद् मस्तिष्क से निकलती रहती हैं। एलेक्ट्रोएन्सीफ्लोग्राफ नामक यन्त्र की सहायता से इन्हें मापा जा सकता है। इस प्रकार प्राप्त ब्योरा एलेक्ट्रोएन्सीफ्लोग्राम कहा

में मस्तिष्क-, तरंगों के चार प्रमुख रूप मिलते हैं : (१) अल्फा तरंग—विस्तृत, व्यवस्थित तथा औसत १० प्रतिसेकण्ड वाली। (२) बीटा-तरंग : अधिक तीव्र, अव्यवस्थित तथा औसत लगभग २५ प्रतिसेकण्ड वाली। (३) गामा तरंग : अत्यधिक न्यून, विस्तारवाली जिनकी बारम्बारता ३५ से लेकर ४५ प्रतिसेकण्ड के बीच होती है। (४) डेल्टा तरंग : अपेक्षाकृत अधिक विस्तारवाली मन्दगामी तरंगें जिनकी बारम्बारता ८ प्रतिसेकण्ड या इससे भी कम होती है।

इनमें असाधारण आकार, लय, व्यवस्था तथा बारम्बारता वाली तरंगें मानसिक विकारों को व्यक्त करती हैं। मस्तिष्क के अर्बुद (दे० Brain Tumour), घाव, तथा विकृत अवस्था के स्वरूप और उनकी स्थिति का इन तरंगों की सहायता से सहज ही ज्ञान होता है। विशेषकर हिस्टीरिया या इपीलेप्सी, के रोग के निदान में इससे विशेष सहायता मिलती है।

Brain Surgery [ब्रेन सरजरी] : मस्तिष्क शल्य कर्म, शल्य-चिकित्सा।

इस चिकित्सा विधि का अन्वेषण १९३६ में तंत्रिकाविशेषज्ञ मॉनिज ने किया है। इसका प्रयोग असामयिक मनोभ्रंश (दे० Dementia Praecox) के रोगी पर विशेष रूप से होता है। विषादावस्था के रोगों के लिए यह विधि बड़ी लाभप्रद है। अग्रपालि के कुछ भाग को काटकर हटा दिया जाता है या कुछ सफेद तंत्रिका-तन्तुओं को जो अग्रपालि को थैलमस से जोड़ती है, काट दिया जाता है। इससे रोगी का जो विमुखता का भाव है वह कम हो जाता है और उसका सम्बन्ध कुछ अन्य व्यक्तियों से जुड़ता है। इससे सामाजिक जीवन में कुछ-न-कुछ समायोजन हो जाता है। दोष यह है कि मनुष्य की प्रतिभा नष्ट हो जाती है और वह अपनी प्रतिक्रिया में औसत व्यक्ति मात्र रह जाता है। ऊँचे वर्ग की मान-

सिक प्रक्रियाओ जैसे बुद्धि, तर्क, विचार मे इससे कोई सुधार नही होता। अधिकतर रोग के पुराना होने पर जब और किसी प्रकार का उपचार सम्भव नही होता, इसका प्रयोग होता है।

Brain Tumour [ब्रेन ट्युमर] मस्तिष्कार्बुद।

शरीर के किसी भाग विशेष मे तन्तुओ का अनावश्यक और असाधारण रूप मे बढकर गोल, निश्चल, अल्पपीडायुक्त और न पकनेवाला मासपिण्ड का रूप धारण कर लेना 'अर्बुद' कहलाता है। मस्तिष्क के किसी भाग विशेष मे उत्पन्न इस प्रकार का अर्बुद मस्तिष्कार्बुद कहलाता है। अर्बुद दो प्रकार के होते हैं (१) सौम्य अर्बुद तथा (२) घातक अर्बुद।

मस्तिष्कार्बुद किन-किन और कैसे-कैसे मनोविकारो को उत्पन्न कर सकता है यह दो तत्त्वो पर निर्भर है (१) अर्बुद की स्थिति, आकार और बढने की गति (२) व्यक्ति का पूर्व विकृत व्यक्तित्व। अर्बुद की वृद्धि के साथ-साथ चेतना-विकृति, दिक्कालभ्रम, अनुत्तरदायित्व, चिड़चिड़ापन, भ्रान्ति, दौरे, उत्साहहीनता तथा बौद्धिक क्रियाओ की असाधारण विकृति आदि लक्षण मिलते हैं। अर्बुद के अधिक बढ जाने से मस्तिष्क पर घातक आघात पहुँचने से रोगी की मृत्यु भी हो सकती है।

प्राचीन वैद्यक ग्रन्थो मे दुष्टदोष तथा आघात को अर्बुदोत्पत्ति का हेतु माना गया है। अर्वाचीन मतानुसार इसके तीन प्रकार के कारण हो सकते हैं —

(१) किसी अग पर स्थायी एव निरन्तर पीडन,

(२) विकारी जीवाणु तथा धातुओं की विशेष विकृति,

(३) जन्मोत्तर बालक के शरीर मे प्रारम्भिक धातुओ का शेष रहना।

अर्बुद का उपचार शल्यक्रिया द्वारा ही सम्भव है।

Campimetry [कैम्पिमेट्री]. दृष्टि-परासमिति।

मनोविज्ञान का एक विख्यात प्रयोग जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण दृष्टिक्षेत्र मे वर्णांध, रक्तहरिताध तथा सर्ववर्णग्राहक भागों की सीमाओ को ज्ञात करके उनका मानचित्र बनाना है। यह एकनेत्रीय प्रयोग है, क्योकि प्रत्येक नेत्र के दृष्टिक्षेत्र का छोर भिन्न होता है और यह भी आवश्यक नही कि दोनो नेत्रो मे उपरोक्त भाग एकसे हो। एक नेत्र के साथ यह प्रयोग करते समय दूसरा नेत्र बन्द रखा जाता है। धूसरवर्ण का एक तख्ता नेत्र से कुछ इच की दूरी पर रखकर उससे दृष्टिक्षेत्र के माप्यरूप का काम लिया जाता है। उस पर कही बीच मे एक छेद होता है जिसके चारो ओर चार मापने के फीते चिपके अथवा बने हुए होते हैं। इस तख्ते को दृष्टिक्षेत्रमापी कहते हैं। इसे खुले नेत्र के नीचे निश्चित दूरी पर रखकर छेद के नीचे कुछ दूर पर एक रगीन कागज रख दिया जाता है। प्रयोज्य के नेत्र टेकने के लिये एक चक्षु आश्रय भी होता है। वह अपनी दृष्टि को आश्रय मे से और क्षेत्रमापी के छेद मे से निकालते हुए नीचे रखे रगीन कागज पर जमाकर सम्पूर्ण प्रयोगकाल मे वही पर रखता है, जिससे दृष्टिक्षेत्र स्थिर हो जाता है। तब प्रयोगक एक सिलाई के सिरे पर लगे किसी एक रग के एक चप्पे को क्षेत्रमापी पर चारो मापने के फीतो के एक सिरे से थोडी-थोडी दूर तक रखता हुआ प्रयोज्य से उसके विषय मे पूछता चलता है और चारो फीतो पर उस रग के अननुभव के अनुभव मे बदल जाने के स्थान को निश्चित कर लेता है। इन चारो बिन्दुओ को मिला देने से वह सीमा ज्ञात हो जाती है जिसके बाहर उस रग का सवेदन प्रयोज्य को नही होता। इसी प्रकार उपरोक्त सभी सीमाओ को ज्ञात करके उनका मानचित्र बना लिया जाता है।

Cannon Bard Theory [कैनन बार्ड

थियरी] : कैनन-बार्ड सिद्धान्त।
कैनन तथा बार्ड द्वारा आविष्कृत संवेग-सिद्धान्त-विशेष जिसमें संवेगों की उत्पत्ति में हाइपोथैलेमस को प्रमुख स्थान दिया गया है। इसे संवेग का आपात सिद्धान्त (Emergency theory) तथा हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त (Hypothalamic theory) भी कहते हैं। इसके अनुसार संवेगोत्पादक परिस्थिति के प्रत्यक्षीकरण का सीधा प्रभाव हाइपोथैलेमस पर पड़ता है। तत्पश्चात् हाइपोथैलेमस तंत्रिकावेगों को एक साथ एक ओर प्रमस्तिष्क में और दूसरी ओर जठर एवं कंकालीय माँसपेशियों में भेजता है। फलतः प्रमस्तिष्क में संवेग की अनुभूति और माँसपेशियों एवं ग्रन्थियों के माध्यम से उसका प्रकाशन होता है। अतः स्पष्ट है कि यह सिद्धान्त न तो जेम्स-लैंगे सिद्धान्त (दे० James Lange Theory) के अनुसार संवेग को शारीरिक परिवर्तनों की मानसिक अनुभूति मानता है और न जनसाधारण के विश्वास के अनुसार शारीरिक परिवर्तनों को मानसिक अनुभूति पर आश्रित मानता है। इसके अनुसार संवेगात्मक अनुभूति एवं व्यवहार दोनों का स्वतन्त्र अस्तित्व है और दोनों ही हाइपोथैलेमस की क्रिया के अधीन हैं।
कैनन-बार्ड सिद्धान्त जेम्स लैंगे सिद्धान्त पर लगाए गए बहुत से दोषों का निराकरण कर संवेगों की व्याख्या में अपेक्षाकृत अधिक सफल है। फिर भी कतिपय विद्वानों का मत है कि कैनन तथा बार्ड ने इस सम्बन्ध के सभी प्रयोग पशुओं पर किए हैं। अतः उनकी खोजों का मनुष्यों पर भी पूर्णरूपेण घटित होना अनिवार्य नहीं। दूसरे, इस सम्बन्ध में औपचारिक प्रमाणों की भी प्रचुरता नहीं। संवेगों की अभिव्यक्ति में हाइपोथैलेमस के अतिरिक्त नाड़ी-संस्थान के अन्य भागों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान पाया गया है।

Card Sorting Test [कार्ड सॉर्टिंग टेस्ट] : कार्ड छँटाई परीक्षण।
सीखने के क्षेत्र में, सीखना तथा सीखने में बाधा एवं अन्तरण की प्रक्रियाओं का अध्ययन करने का एक प्रयोग। सामान्यतः इसका यंत्र एक बक्स के रूप में होता है जिसमें छोटे-छोटे बहुत से खाने होते हैं और प्रत्येक खाने पर कोई-न-कोई निशान लगा होता है। परीक्षार्थी को उन्हीं निशानों को ध्यान में रखते हुए भिन्न-भिन्न रंगों, अंकों, आकृतियों और आकारों के पत्तों को प्रयोग के अनुसार छाँटने पड़ते हैं।
आगे के अभ्यासों में छाँटने में लगे समय और त्रुटियों का कम होना सीखने में प्रगति का सूचक है। आदत-बाधा (Habit interference) के अध्ययन में कुछ प्रयासों के बाद बक्स को पलट खानों की स्थिति बदल दी जाती है।

Case History [केस हिस्ट्री] : व्यक्ति वृत्त।
मनोनिदान की एक प्रमुख व्यापक रूप से प्रचलित पद्धति जिसमें किसी व्यक्ति के व्यावहारिक अथवा मानसिक विकारों को समझने के लिये उसके जीवन के समुचित इतिहास को एकत्रित किया जाता है। व्यक्ति का भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं पारिवारिक परिवेश, शैशवकालीन उद्वेगिक संतुष्टि-असन्तुष्टि, भय, क्रोध के आवेग, शिक्षाकालीन सफलता-असफलता, व्यवसायिक और वैवाहिक जीवन से सम्बन्धित अनुभव, स्वास्थ्य, मनोवृत्तियाँ, आकांक्षाएँ, आत्मधारणा तथा लोकधारणा मनोनिदान के प्रसंग में महत्त्वपूर्ण हैं। कुछ मनोनिदान विशेषज्ञों ने इस व्यक्ति-इतिहास कथा को प्रामाणिक रूप देने का प्रयास किया है; कुछ ने इसे संख्याबद्ध करने का।

Case-Study Method [केस स्टडी मेथड] : व्यक्ति अध्ययन विधि।
मानव के व्यावहारिक अध्ययन की एक विशिष्ट विधि, जिसके अन्तर्गत किसी व्यक्ति के सम्बन्ध में प्रायः सभी ज्ञात उपयोगी तथ्यों—शारीरिक, मानसिक,

सामाजिक तथा सास्कृतिक विकास, उसकी आदतें, उसकी सन्तुष्टि, परिवार मे उसकी प्रतिक्रियाएँ आदि—का सकलन कर उनके आधार पर न केवल उसके व्यवहार का विश्लेषण होता है प्रत्युत उसके विकास की भावी दिशा का भी निर्धारण होता है। विकृत बालकों की समस्याओ पर प्रकाश डालने और उसका समाधान करने मे यह विधि विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध हुई है।

Case Worker [केस वर्कर] व्यक्ति अध्येयता।

व्यक्ति अध्ययन विधि (दे० Case study method) द्वारा मानव के व्यवहार एव अनुभूतियों का जो अध्ययन अथवा तत्सम्बन्धी तथ्यो का सकलन करे।

Catatonia [कैटाटोनिया] कैटाटोनिया।

एक प्रकार का मानसिक रोग जो असामयिक मनोभ्रंश (दे० Dementia Praecox) का एक प्रकार है। इस रोग के लक्षण हैं मासपेशि का कडा हाना या मोम के समान लचीलापन आना, नकारीवृत्ति (दे० Negativism), यात्रिक गति से कार्य करना, मूकता (दे० Mutism), आवेगी प्रकृति अथवा स्तूपर इत्यादि। कुछ रोगी एक ही मुद्रा मे बिना हिले-डोले पडे रहते हैं। रोगी आँख-मूँदकर पड जाता है। चेहरे पर कोई भाव नही रहता। भोजन और कपडे की भी सुध नहीं रहती। प्राय नली से भोजन दिया जाता है। कुछ रोगियो की शारीरिक दशा इसके विपरीत रहती है। जिस दिशा मे रोगी चाहे अपने शरीर को मोम की तरह मोड लेता है। औरो का निर्देशन भी मान लेता है। कुछ रोगियो से जो कहा जाय वह उसके विपरीत कार्य करता है। इस मे यान्त्रिक रूप से क्रियाएँ होती हैं। एक ही बात दुहराता रहता है। जो कुछ कहता है उसमे सम्बन्ध-नियम नही रहता। भय, भ्रान्ति, भ्रम की प्रतिक्रिया मे कभी दूसरो पर आक्रमण भी कर बैठता है, जिसे पाता है उसे हानि पहुँचाता है।

उचित उपचार होने पर रोगी अल्प समय मात्र के लिए स्वस्थ होता है, पुनः इस रोग का आक्रमण होता है। सोडियम अमीटल का इन्जेक्शन इस रोग के निवारण मे सफल सिद्ध होता है।

Cell [सेल] : कोशिका।

जीव का शरीर विशिष्ट अत्यन्त सूक्ष्म परमाणुओ से बना है। देह का निर्माण करने वाली इन्ही इकाइयो को कोशिका कहते है। यह अन्वेषण १८३८-३६ मे सर्वप्रथम श्लाइडेन तथा श्वान ने किया था।

कोशिका मे शहद जैसा एक अर्धतरल पदार्थ रहता है। इसे जीवन-रस (Protoplasm) कहते हैं। यह जीवन-रस ही शरीर के कोषो का जीवन है। इसकी वृद्धि से कोषो की अथवा शरीर की वृद्धि होती है। इसके नष्ट हो जाने से शरीर नष्ट हो जाता है। जीवन-रस का निर्माण प्रकृति के २३ मौलिक तत्वो से होता है। इनमे कार्बन, नाइट्रोजन, आक्सीजन और हाइड्रोजन प्रमुख हैं। कोशिकाएँ इन तत्वो से खाद्य-पदार्थों को ग्रहण करती हैं और एक विचित्र रासायनिक प्रक्रिया द्वारा पाँच प्रकार के यौगिक पदार्थो—प्रोटीन, श्वेतसार, चिकनाई, जल और खनिज द्रव्य मे खाद्य पदार्थ परिवर्तित होता है।

सूक्ष्मदर्शक यन्त्र द्वारा देखने पर जीवन-रस मे एक और अण्डाकार पदार्थ स्पष्ट मिलता है। इसे 'जीवकेन्द्र' (Nucleus) कहते हैं। जीवकेन्द्र के अन्दर जाल के समान एक दूसरे से बँधे लिपटे कुछ और पदार्थ होते है जिन्हें गुणसूत्र अर्थात् क्रोमोजोम्स (दे० Chromosomes) कहते हैं। भिन्न भिन्न जाति के प्राणियो की कोशिकाओ मे गुणसूत्रो की सख्या भी भिन्न होती है। ये गुणसूत्र जोडे-जोडे मे पाए जाते हैं। मानव म २४ जोडे अर्थात् ४८ गुणसूत्र रहते हैं। इन गुणसूत्रो मे माला की डोरी मे गुँथे हुए फूलों के समान और भी सूक्ष्म पदार्थ होते हैं। इन्ही सूक्ष्म

पदार्थों को जीन (दे० Gene) कहते हैं। ये जीन ही मानव को वंशगत विशेषताओं के वाहक हैं। कहा जाता है कि एक-एक जीन एक-एक लक्षण का वाहक होता है। स्त्री और पुरुष के जीनो के मिलने पर ही बालक के विशेष गुणों का विकास होता है। स्त्री और पुरुष दोनों के बीजकोषो में जीन समान रूप मे यथास्थान पाए जाते हैं; अर्थात् स्त्री के गुणसूत्र मे जो जीन जिस स्थान पर रहता है, पुरुष के गुणसूत्र में भी वही जीन ठीक उसी स्थान पर रहता है।

कोशिका भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं और इन विभिन्न प्रकार के कोषो से ही शरीर के भिन्न-भिन्न भागो का निर्माण होता है—यथा रक्त कोषो से रक्त, अस्थि-कोषों से हड्डियाँ, पेशीकोषो से मासपेशियाँ, तन्त्रिका कोषो से तन्त्रिकाएँ आदि।

Central Inhibition [सेन्ट्रल इनहिबिशन] : केन्द्रीय अवरोध।

केन्द्रीय स्नायु-संस्थान के अन्तर्गत केन्द्रों में स्नायु आवेगों का निरोधन :

१. यह या तो स्नायु आवेगों में वेडन्सकी (Wedensky) बाधा
अथवा
२. सक्रिय निरोधक केन्द्रों पर दबाव के कारण होता है।

अभ्यास (आदत) बाधा :—

दो या अधिक प्रतिकूल क्रियाओं में जिनका उपयोग समान परिस्थिति मे होता है, अतएव एक ही उत्तेजक से उनके उभरने की सम्भावना रहती है। द्वन्द्व (संघर्ष)।

Central Nervous System [सेन्ट्रल नर्वस सिस्टम] केन्द्रीय तन्त्रिका-तन्त्र।

तन्त्रिका तन्त्र का वह भाग (मस्तिष्क एवं सुषुम्णा नाड़ी) जहाँ से निकलकर स्नायु शरीर के भिन्न-भिन्न भागों में स्थित क्रियावाही अंगों में जाते हैं तथा ज्ञानवाही अंगों से आकर मिलते हैं, केन्द्रीय तंत्रिका-तंत्र कहलाता है। यह समस्त तंत्रिका-तंत्र का केन्द्र है और इसी से प्राणी की प्राय: सभी क्रियाओ का संचालन, नियमन एवं नियन्त्रण होता है। इसके पाँच प्रमुख भाग हैं : प्रमस्तिष्क (दे० Cerebrum), लघु मस्तिष्क (दे० Cerebellum), थैलेमस, हाइपोथैलेमस तथा सुषुम्णा नाड़ी।

Central Tendency [सेन्ट्रल टेन्डेन्सी] : केन्द्रीय प्रवृत्तिमान।

किसी मापनाक माला मे से ही या उसके आधार पर निश्चित किया गया ऐसा अंक जिसको साख्यिकीय क्रियाओ की सुविधा के लिए सम्पूर्ण अंक माला का प्रतिनिधि माना जा सके। इससे सम्पूर्ण अक समूह को एव अक पाने वाले व्यक्तियों के समूह को समझना सरल हो जाता है, और उस अकमाला को दूसरी किसी अकमाला से एवं उन अकों के प्राप्त करने वालों के समूह की अन्य व्यक्ति-समूहो से तुलना भी सुगमता से की जा सकती है। यह प्रतिनिधि स्वरूप अंक प्राय: अकमाला के बीच का अंक या उसका कोई समीपवर्ती अंक होता है। इसीलिए इसे माध्य कहा जाता है। इसे सम्पूर्ण अंकमाला का सार माना जाता है।

मनोविज्ञान में तीन प्रकार के माध्यों का प्रयोग अधिक प्रचलित है। उनको माध्य (दे० Mean) माध्यिका (दे० Median) और बहुलक (दे० Mode) कहते हैं। कभी-कभी दो अन्य प्रकार के माध्यो का उपयोग भी किया जाता है, जिन्हें गुणोत्तर माध्य (Geometric mean) और हरात्मक माध्य (Harmonic mean) कहा जाता है। माध्यिका और बहुलक वर्णनात्मक माध्य कहलाते हैं, क्योंकि वे साधारणत: अंकमाला मे से ही किसी एक अंक के बराबर होते हैं। तीनों प्रकार के माध्य गणितीय माध्य होते हैं क्योंकि सामान्यत: अंकमाला का एक भी पद इसके बराबर होना आवश्यक नही।

Cerebellum [सेरेबेलम] : अनुमस्तिष्क।

यह वृहद् मस्तिष्क (प्रमस्तिष्क) के पृष्ठ खंड के नीचे स्थित है और दो भागों में

विभक्त है। सेतु इन दोनो भागो को परस्पर और साथ ही वृहद् मस्तिष्क से भी मिलाता है। अनेक स्नायु तन्तुओ द्वारा यह सुष्मणा-शीर्ष से भी जुडा रहता है।

लघुमस्तिष्क (अनुमस्तिष्क) का प्रमुख काय विभिन्न उत्तेजनाओ मे सम्बन्ध स्थापित करना और शरीर की क्रियाओ म समता सामजस्य सयोजन अथवा सतुलन बनाए रखना है। व्यक्ति की क्रियाओ म अखण्डता और एकसूत्रता लाने मे इसका सबसे महत्त्वपूर्ण हाथ है। मादक वस्तुओ का सीधा प्रभाव अनुमस्तिष्क पर पडता है। उनसे आक्रान्त होने पर व्यक्ति की क्रियाओ म विकृति आसानी से देखी जा सकती है।

Cerebrum [सेरेब्रम] प्रमस्तिष्क।

देखने मे जुते हुए खेत के समान उभार और गहराइयो से परिपूर्ण, ऊपर से धूसर पर अन्दर से श्वेत, कपाल मे सुरक्षित यह मस्तिष्क का सबसे बडा भाग है। उसकी गहराइयो को कर्ष या दरार कहते हैं। उसकी दो प्रमुख दरारें मध्य दरार (Fissure of Rollando) तथा पार्श्व दरार (Fissure of Sylvius) है। शरीर शास्त्रियो का अनुमान है कि इन दरारो का बुद्धि से गहरा सम्बन्ध है। मध्य दरार प्रमस्तिष्क को दक्षिण और वाम दो गोलार्धों मे विभक्त करती है। पुन इनमे से प्रत्येक गोलार्ध के चार खड है अग्र खण्ड (Frontal lobe), मध्य खण्ड (Parietal lobe) शख खण्ड (Temporal lobe) तथा पृष्ठ खण्ड (Occipital lobe)। इनमे से दक्षिण गोलार्ध शरीर के बाएँ ओर के और वाम गोलार्ध शरीर के दाहिनी ओर के अगो की क्रियाओ का सचालन, नियमन एव नियत्रण करता है।

वृहत्-मस्तिष्क (प्रमस्तिष्क) के ऊपरी आवरण या बृहत्मस्तिष्कीय वल्क के विभिन्न क्षेत्र कार्यप्रणाली की दृष्टि से तीन प्रमुख भागो म विभक्त है १ सवेदी क्षेत्र (Sensory area)—उस क्षेत्र मे सवेदी अगो के प्रमुख केन्द्र हैं—यथा दृष्टि केन्द्र, श्रवण केन्द्र, घ्राण केन्द्र आदि—जो ज्ञानेन्द्रियो द्वारा प्रेषित उत्तेजना प्रभाव को ग्रहण करते हैं। २ प्रेरक क्षेत्र (Motar area) इस क्षेत्र मे शरीर के भिन्न भिन्न भागो मे स्थित मासपेशियो एव ग्रन्थियो को सचालन करने के प्रमुख केन्द्र हैं जो सवेदी अगो द्वारा ग्रहीत उत्तेजना प्रभाव के अनुरूप उपयुक्त अगो मे गति उत्पन्न करते हैं। ३ साहचर्य क्षेत्र (Association area)—मुख्यत अग्रखण्ड मे स्थित यह क्षेत्र सवेदी और प्रेरक क्रियाओ मे सम्बन्ध स्थापित कर उन्हें एकरूपता प्रदान करता है। प्राणी की सभी उच्चस्तरीय चेतन एव अचेतन क्रियाएँ उसी के द्वारा सचालित होती हैं।

Cerebrospinal Fluid [सेरेब्रोस्पाइनल फ्लुइड] मस्तिष्क सुषुम्ना द्रव, प्रमस्तिष्क मेरु द्रव।

जीव के ततुओ मे पाया जाने वाला बिना रग का वह द्रव जो कि सम्पूर्ण केन्द्रीय स्नायु, मस्तिष्क के कोषो मेरुदण्ड की केन्द्रीय नलिका, मेरु मस्तिष्क छद झिल्ली जो कि मस्तिष्क और सुषुम्ना नाडी पर मढी होती है तथा मृदु तनिका मे पाया जाता है।

Characterology [कैरेक्टरॉलोजी] : चरित्र विज्ञान, स्वभाव समीक्षा।

मनोविज्ञान मे वह क्षेत्र जहाँ मानव आचरण का अध्ययन विस्तृत अर्थ मे व्यक्तित्व को सन्निहित करते हुए किया जाता है। एक शब्द जो कुछ काल पूर्व पुरातन मिथ्या मनोवैज्ञानिको के आधीन था परन्तु अब जर्मन प्रथा के अनुसार औद्योगिक मनोविज्ञान ने इसे अपना लिया है। यहा 'आचरण विश्लेषण' का पर्यायवाची है।

Character Tests [कैरेक्टर टेस्ट्स] : चरित्र परीक्षण।

चरित्र के स्वभाव तथा विकास के मापनार्थ बनाये गए तथ्यात्मक एव मात्रात्मक

परीक्षण। इनके दो मुख्य सिद्धान्त हैं। एक यह कि व्यक्ति को ऐसी परिस्थितियों मे डाला जाए जिनमे उसके व्यवहार से उसके चरित्र गुणो का मापन हो जाए परन्तु उसे यह पता न चले कि उसके चरित्र गुणो की परीक्षा हो रही है और उसे इसमे अक दिए जाएँगे। दूसरा सिद्धान्त यह है कि इन पर विभिन्न व्यक्तियो के प्राप्तांक तुलना योग्य होने चाहिएँ। इसके लिए यह आवश्यक समझा गया है कि उनमे से प्रत्येक व्यक्ति को समान मात्रा में प्रलोभन युक्त परिस्थितियों मे डालना चाहिए—ऐसी परिस्थितियो मे जिनमे वे समझे कि वे पकडे जाने के डर के बिना नैतिक नियमो का उल्लघन कर सकते हैं। अधिकाश ऐसे परीक्षण सत्य भाषण, धन सौंपने योग्य होना, अस्तेय, निरन्तर लगन, सहयोगिता, दानशीलता आदि चरित्र गुणो के मापन के लिए बने हैं।

Check List [चेक लिस्ट] : चिह्नाकन-सूची।

मनोमापन की आकन विधि का एक प्रकार जिसका योग्यता, विकास, चरित्र, व्यक्तित्व एवं समायोजन के मापन मे बहुत प्रयोग किया गया है। इसमे किसी गुण के मापनार्थ उसके बहुत से लक्षणों की सूची बनाकर आंकक के समक्ष रखी जाती है और उससे कहा जाता है कि इनमे से जो-जो लक्षण उसने आकित व्यक्ति मे पाए हों उन पर चिह्न लगा दे। इन चिन्हों की संख्या को ही उस गुण मे उस व्यक्ति का अंक माना जाता है। कभी-कभी उस गुण के विरोधी लक्षणों की सूची भी साथ में दी जाती है और जो जो विरोधी लक्षण आकक चिह्नो द्वारा व्यक्ति मे बताता है उनकी संख्या उपरोक्त संख्या से घटाकर शेष संख्या को ही व्यक्ति का अक माना जाता है। कभी जिस गुण का मापन उद्देश्य होता है उसके प्रत्येक अंक के अन्तर्गत आने वाले विरोधी लक्षणों को एक वर्ग में डालकर लक्षण सूची को बहुवैकल्पिक रूप भी दिया जाता है।

Chi-Square Test [ची-स्क्वायर टेस्ट] : काई-वर्ग परीक्षा।

अनुमानो की जाँच के लिए उपलब्ध प्रमुख वितरण नियम रहित (Distribution free) एव अप्राचल (non-parametric) साख्यिकीय विधि। प्राय इसका उपयोग उन परिस्थितियो मे किया जाता है जब किसी जन-समूह में किन्ही दो परिवर्त्यों की परस्पर स्वतन्त्रता के अनुमान की परीक्षा करनी होती है और प्रदत्त आवृत्तियो के रूप मे होते हैं। वास्तविक और सयोगमात्र से प्रत्याशित आवृत्तियों से अनुपातों के योग को काई वर्ग कहा जाता है। दोनो परिवर्त्यों के वास्तविक आवृत्ति वितरण की सयुक्त सारणी के प्रत्येक कोष्ठ के लिए प्रत्याशित आवृत्ति निम्न सूत्र के अनुसार ज्ञात की जाती है—उस स्तम्भ की सब आवृत्तियो का योग × उस पक्ति की सब

$$\text{प्रत्याशित आवृत्ति} = \frac{\text{...आवृत्तियो का योग}}{\text{कुल व्यक्ति सख्या}}$$

प्राप्त काई वर्ग प्रेक्षण एवं अनुमान के अन्तर का द्योतक होता है। देखना होता है कि इसका परिणाम साख्यिकीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है कि नही। यदि महत्त्वपूर्ण है तो परिवर्त्यों के परस्पर स्वातंत्र्य का अनुमान त्याज्य समझा जाता है। काई वर्ग महत्त्वपूर्ण वह माना जाता है जिसकी १०० मे से ५ से कम बार ही संयोगमात्र से होने की सम्भावना हो।

Child Psychology [चाइल्ड साइकॉलोजी] : बाल मनोविज्ञान।

बाल-स्वभाव की व्युत्पत्ति तथा उसके विकास के विभिन्न पक्षों का क्रमबद्ध निरूपण। मनोविज्ञान की इस विशिष्ट शाखा मे व्यवहार के आविर्भाव काल का सूक्ष्म विश्लेषण होता है। इसके अन्तर्गत मानसिक प्रक्रियाओ की व्युत्पत्ति, प्रारम्भिक अवस्था मे उनके रूप तथा उनके विकास का अध्ययन किया जाता है।

गर्भावस्था से लेकर परिपक्वावस्था तक के शारीरिक और मानसिक विकास से सम्बन्धित सभी पक्षों का विवेचन होता है।

बाल स्वभाव की व्यक्तिगत भिन्नताओं की ओर संकेत करने वाला सबसे पहला व्यक्ति प्लेटो (४०० ई० पू०) था। उसके बाद यदा-कदा अन्य चिन्तकों की रचनाओं में भी इस प्रकार के विवरण उपलब्ध होते हैं। अट्ठारवीं तथा उन्नीसवीं शताब्दी में बाल स्वभाव के वैज्ञानिक अध्ययन का सूत्रपात हुआ। इस क्षेत्र में प्रायोगिक-अध्ययन के आविर्भाव का श्रेय स्टैनले, हॉल तथा उनके अन्य सहयोगियों, गसेल कॉन्क्लिन, गोडार्ड, कुल्हमैन तथा टरमैन आदि को है। बीसवीं शताब्दी तो "बच्चों की शताब्दी" ही कहलाती है। पिछले पचास वर्षों में विभिन्न देशों में इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण खोजें हुई हैं। इन पर बिने, वॉटसन फ्रायड, एडलर, पॉवलाव, डिवी तथा मायर आदि का विशेष प्रभाव पड़ा है।

Child Guidance Clinic [चाइल्ड गाइडेन्स क्लिनिक] बाल निर्देशन शाला।

वह संस्था विशेष जहाँ चिकित्सा शास्त्र तथा मनोविज्ञान के आधुनिक अन्वेषणों की सहायता से बालकों की दैहिक विकासात्मक तथा व्यवहार-सम्बन्धी विकृतियों का निदान एवं उपचार किया जाता है। बालकों की जन्मजात एवं अर्जित समर्थता, योग्यता और उपलब्धि का अनुमान लगाकर उनके व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए उनको अथवा उनके अभिभावकों को उचित परामर्श दिया जाता है। इस कार्य में कम-से-कम तीन व्यक्तियों की सहायता अपेक्षित है—१ चिकित्साशास्त्री जो बालक की दैहिक विशेषताओं एवं विकृतियों का अध्ययन करता है, २ मनोवैज्ञानिक जो बालक की मानसिक विशेषताओं का ब्यौरा लेता है, और ३ परीक्षक जो बालक की बुद्धि, समर्थता, योग्यता एवं उपलब्धि का परीक्षण करता है।

Chromosomes [क्रोमोज़ोम्स] गुण-सूत्र।

देखिए—Cell

Chronological Age [क्रॉनोलॉजिकल एज] कालिक आयु।

व्यक्ति के जन्म से वर्तमान तक बीते हुए समय की गणना जिसे साधारण भाषा में आयु कहा जाता है। मनोविज्ञान में इसके अतिरिक्त कई प्रकार की विकासोत्तर आयु भी मान्य है जैसे मानसिक आयु (Mental Age) शारीरिक आयु, संवेग आयु इत्यादि। परन्तु प्रत्येक प्रकार की विकासोत्तर आयु का महत्व व्यक्ति की जन्मोत्तर कालिक आयु के अनुपात से ही आका जाता है।

देखिये—Mental Age

Circular Insanity [सरकुलर इनसैनिटी] चक्रोन्माद।

उन्माद विशेष जिसमें उत्साह एवं विषाद की दशाएँ चक्रवत् आती जाती हैं। साइक्लोथीमिया (Cyclothymia) एवं उन्माद-विषाद मनोविक्षिप्ति (दे० Manic Depressive Psychosis) इसी के अन्तर्गत आते हैं।

Clairvoyance [क्लेअरवॉयन्स] अलौक दृष्टि, अतीन्द्रिय दृष्टि।

ज्ञानेन्द्रियों की साधारण क्रियाओं के बिना भौतिक पदार्थों अथवा घटनाओं का स्पष्ट ज्ञान। परामनोविज्ञान में सबसे अधिक एवं सरलता से प्रयोग का विषय बनाया जाने वाला तथ्य। अमरीका के ड्यूक विश्व विद्यालय के आचार्य जे० बी० राइन ने इस पर तीन प्रकार के परीक्षण किये हैं

१ खण्ड विधि परीक्षण—जिसमें प्रयोगकर्ता एक गड्डी में से एक एक करके कार्ड उठाता है परन्तु स्वयं नहीं देखता और प्रयोज्य पर्दे के पीछे से उस पर बने चिह्न का अनुमान करता है।

२ गड्डी विधि परीक्षण—जिसमें प्रयोगकर्ता सब कार्डों को भली भाँति फेंट कर पूरी गड्डी को प्रयोज्य के सामने उल्टकर

रख देता है और प्रयोज्य प्रयोगकर्ता के किसी कार्ड को उठाये बिना ही गड्डी के पहले, दूसरे आदि सभी कार्डों के सम्बन्ध में अपने अनुमान बताता है।

३. मेल विधि परीक्षण—इसमें गड्डी प्रयोज्य के हाथ में दे दी जाती है और वह उसमें से बिना देखे हुए सामने पंक्ति में उल्टे तथा सीधे रखे हुए प्रमाप कार्डों से मेल खाने वाले कार्ड छाँटता है।

देखिये—Para-psychology

Class Interval [क्लास इन्टरवल]: वर्ग अंतराल।

सांख्यिकी विधि में मापों की आवृत्ति वितरण की सारिणी बनाते समय सुविधानुसार बनाए गए समान वर्गों का विस्तार। माप समूह के वर्गीकरण में प्रत्येक माप वर्ग में जितने अधिक सम्भव विभिन्न माप रखे जाते हैं उतनी ही माप वर्गों की संख्या कम हो जाती है। व्यवहारिक दृष्टि से वर्गीकृत आवृत्ति वितरण सारणी बनाने में इस बात का निर्णय करना पड़ता है कि कितने-कितने सम्भव विभिन्न मापों के अर्थात् कितने-कितने बड़े वर्ग अन्तराल के कितने माप वर्ग बनाए जाएँ। इससे पहले यह भी निर्णय करना पड़ता है कि प्रत्येक वर्ग की आकृति क्या होगी अर्थात् उसकी अपर-सीमा तथा अपर-सीमा का उससे पहले और पीछे के वर्ग की सीमाओं से क्या सम्बन्ध होगा। जब मापन का परिवर्त्य खण्डित होता है, प्रत्येक मापवर्ग की अपर सीमा उससे निचले मापवर्ग की अपर-सीमा से अगली संख्या रखी जाती है और उसकी अपर-सीमा उससे ऊपर मापवर्ग की अपर-सीमा से पहली संख्या रखी जाती है। परन्तु जब मापन का परिवर्त्य सतत होता है तब मापवर्गों की अन्य आकृतियाँ भी उपयोग में आ सकती हैं। इनमें प्रत्येक मापवर्ग की अपर-सीमा ही उससे ऊपर मापवर्ग की अपर-सीमा होती है और उसकी अपर सीमा ही उससे निचले मापवर्ग की अपर-सीमा होती है। जो माप वर्ग खण्डित परिवर्त्य मापन में ८१-९० लिखा जाता है, वह सतत परिवर्त्य मापन में ८१-९० भी लिखा जा सकता है, ८०-९० भी, ८०.५—९०.५ भी, ८१-९१ भी और ८०+ भी। प्रत्येक मापवर्ग का परिमाण और मापवर्गों की संख्या का निर्णय निम्न नियमों के अनुसार किया जाता है—

(१) माप वर्गों की संख्या कम-से-कम ६ और अधिक-से-अधिक २० होनी चाहिए।

(२) जहाँ तक हो सके प्रत्येक मापवर्ग में सम्भव विभिन्न मापों की संख्या विषम होनी चाहिए जिससे वर्ग का मध्य बिन्दु सरलता से ज्ञात हो सके। आगे की अधिकतर सांख्यिकीय क्रियाओं में यह मध्य बिंदु ही इस माप वर्ग का प्रतिनिधित्व करेगा।

Clerical Aptitude Tests [क्लर्कल ऐप्टिट्यूड टेस्ट]: लिपिक अभिक्षमता परीक्षण।

दफ्तरों की क्लर्की में भावी सफलता की सूचक वर्तमान योग्यताओं के परीक्षण। इनका उपयोग क्लर्की के लिए व्यक्तियों को चुनने में और क्लर्कों की पदोन्नति के निर्णय में किया जाता है। इनमें रखे जाने वाले उपपरीक्षणों को तीन प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

(१) दफ्तरी कार्यगति एवं कार्य यथार्थता परीक्षण—इनमें प्रायः परीक्षार्थी को किसी दी गई सामग्री में से किसी विशेष नमूने से मिलते हुए अंक समूहों (संख्याओं) अथवा अक्षर-समूहों (नामों, शब्दों आदि) को पहचानकर अंकित करना होता है। कभी एक वर्णमालाक्रम से व्यवस्थित नामसूची में से किसी एक विशेष नाम को ढूंढना होता है। फिर यह देखना होता है कि यह नाम ठीक लिखा है कि नहीं, और तब इस नाम के सामने किसी धनराशि को पढ़कर उसका वर्गीकरण करना होता है।

(२) संख्या योग्यता परीक्षण—इनमें जोड़ घटाना, गुणा, भाग जैसी सरल साधारण गणित क्रियाएँ कराई जाती हैं। कार्यगति एवं कार्य यथार्थता परीक्षण तथा संख्या योग्यता परीक्षण यह दोनों वेतन-चिट्ठा बनाने वाले और इस प्रकार के अन्य काम करने वाले क्लर्क चुनने के लिए विशेषतया उपयुक्त हैं।

(३) भाषा परीक्षण—इनमें मुख्यत शब्द-प्रवाह शब्द-ज्ञान वर्णविन्यास, व्याकरण आदि के परीक्षण होते हैं। यह परीक्षण आशुलिपिकों की नियुक्ति अथवा पदोन्नति के विषय में निर्णय करने में विशेषतया उपयोगी हैं। आशुलिपिक योग्यता के विशेष परीक्षण भी उपलब्ध हैं। इनमें चिह्न बनाने और उनको उतारने की, अशुद्ध लिखे शब्दों को पहचानकर उन्हें शुद्ध करने की और बोले हुए पत्रों को आशुलिपि में लिखकर टाइप करने की क्रियाएँ कराई जाती हैं।

प्राय लिपिक अभिक्षमता परीक्षणों में प्राप्तांकों के अर्थनिर्णय के लिए शतांशक मानक दिये हुए होते हैं।

Client Centered Psychotherapy [क्लायन्ट सेन्टर्ड साइकोथेरपी] उपचारार्थी केन्द्रित मनश्चिकित्सा।

कॉर्ल रोजर्स द्वारा आविष्कृत मनश्चिकित्सा की एक विधि जिसमें केन्द्र उपचारार्थी स्वयं है। इसमें उपचारक का कार्य एक निष्पक्ष द्रष्टा की भाँति समय-समय पर रोगी का पथ-प्रदर्शन मात्र है। शेष काम रोगी को स्वयं करना होता है। रोजर्स का दृष्टिकोण है कि प्राणी में वृद्धि-विकास, अभियोजन एवं स्वास्थ्यलाभ की स्वाभाविक वृत्ति होती है। मानसिक संघर्ष एवं संवेगात्मक विघ्न्नियाँ इसे अवरुद्ध कर देती हैं। व्यक्ति अपनी मानसिक गुत्थियों को सुलझा इन अवरोधों का निराकरण कर पुन अपने व्यक्तित्व को विकसित करता है।

इस विधि के पाँच स्तर हैं। १ उपचारार्थी को सहायता के लिए आना—यही रोगी के सक्रिय सहयोग की भूमिका है। पहले ही साक्षात् में रोगी को उपचार परिस्थिति से अवगत कराते हुए स्पष्ट बना दिया जाता है कि उपचारक की सहायता से उसे स्वयं अपनी समस्याओं का समाधान खोजना है। २ भावों का प्रकाशन—उपचारक से प्रभावित हो उपचारार्थी अपने भावों का, विशेषकर निषेधात्मक एवं विरोधी संवेगों का पहले और धनात्मक भावों का बाद में, उन्मुक्त प्रकाशन करता है। उपचारक इन भावों की पृष्ठभूमि में निहित रोगी की समस्याओं एवं मनोवृत्तियों से उसे परिचित कराता है। ३ सूझ का उदय—अपनी वास्तविक उलझनों के प्रतिभिज्ञान एवं उनकी स्वीकृति से धीरे-धीरे रोगी में सूझ-समझ का विकास होता है। ४ निश्चित प्रयास—अब उपचारार्थी अपने भावी विकास की योजनाएँ बनाता है। इन योजनाओं के प्रारम्भिक अंशों में प्राप्त सफलता उसमें आत्मविश्वास उत्पन्न करती है और वह आगे बढ़ता है। ५ सम्पर्क का निवारण—आत्मविश्वास उसे आत्मनिर्भर बनाता है। वह समझने लगता है कि उपचारक की सहायता के बिना अब वह अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है। यह विचार भी स्वयं आपोआप आंतरिक क्षेत्र से उत्पन्न होता है।

Clinic [क्लिनिक] निदानगृह।

संस्था विशेष जहाँ दैहिक, विकासात्मक एवं व्यवहार सम्बन्धी विकृतियों का परीक्षण, निदान एवं उपचार होता है।

देखिये—Child Guidance Clinic.

Clinical Interview [क्लिनिकल इन्टरव्यू] नैदानिक प्रत्याक्षात्कार।

चिकित्सक की अपने रोगी (client) से निर्धारित बातचीत का एक विशिष्ट रूप, जिसका आयोजन रोगी को समझने, रोग के लक्षणों को जानने, उसकी समस्या हल

करने में मदद करने तथा रोग सम्बन्धी सूचनाओं को प्राप्त करने के अभिप्राय से की जाती है।

इस प्रकार की परिस्थिति सामान्यतः बहुत ही अधिक अनुमोदनशील होती है जिससे कि रोगी अपनी भावनाओं, वृत्तियों और समस्याओं का पूरी तरह से वर्णन कर सके। इस प्रकार का परिचय रोग-लक्षण-ज्ञान के साथ-साथ चिकित्सा में भी सहायक होता है।

Clinical Psychology [क्लिनिकल साइकॉलोजी] : नैदानिक मनोविज्ञान।

मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमें विकृत व्यवहार सम्बन्धी वैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग होता है और निदान के उद्देश्य से रोगी का निरीक्षण और परीक्षण किया जाता है। नैदानिक मनोविज्ञान का विकास दूसरे महायुद्ध के पश्चात् हुआ। जब उपचार सम्बन्धी व्यवहारिक समस्याएँ पैदा हुई थीं। नैदानिक मनोविज्ञान का उद्देश्य है : (१) किसी व्यक्ति की समस्या का उचित निदान करके जीवन में समायोजन लाना; (२) बालक तथा किशोर के भाव-संवेग सम्बन्धी समस्या का निरूपण करना और (३) बुद्धि, रुचि, व्यक्तित्व की परीक्षा लेने के पश्चात् बौद्धिक और ज्ञान की सीमा को समझकर उचित परिमार्जन करना।

Closure Principle [क्लोज़र प्रिंसिपुल] : पूर्ति सिद्धान्त।

गेस्टाल्ट मनोभौतिकी संप्रदाय का एक सिद्धान्त जिसके द्वारा व्यवहार रूप एवं इसके प्रथक्कृत क्रियाएँ प्रत्यक्षीकरण, स्मृतियाँ इत्यादि एकाकार रूप अथवा एक सम्पूर्ण रूप में होने लगते हैं। यह एक क्रिया भी है जिसके द्वारा परिवर्तनशील एवं अपूर्ण प्रणालियाँ अन्तिम स्थायित्व प्राप्त करती हैं।

Coefficient of Correlation [कोएफिशेन्ट ऑव कोरिलेशन] : सहसम्बन्ध गुणांक।

दो अथवा अधिक परिवर्त्यों के परस्पर सम्बन्ध का माप। यह सदा ही +१.०० और —१.०० के बीच होता है। इसके ज्ञात करने के लिए दोनों परिवर्त्यों पर कुछ व्यक्तियों को मापा जाता है और उनसे प्राप्त अंकों अथवा पदों के आधार पर इसे निश्चित किया जाता है। ज्ञात करने की विधियाँ विभिन्न होने से सह-सम्बन्ध गुणांक कई प्रकार के कहे जाते हैं जैसे गुणन आघूर्ण सह सम्बन्ध गुणांक (Product moment Coefficient Correlation), कोटि सह-सम्बन्ध गुणांक (Rank Correlation Coefficient) तथा द्विपंक्तिक सह-सम्बन्ध गुणांक (Biserial Correlation Coefficient)। सम्भव है कि परिवर्त्यों में परस्पर सम्बन्ध हो ही नहीं सकता। धनात्मक (Positive) अथवा ऋणात्मक (Negative) हो। पहली अवस्था में यह सम्बन्ध शून्य माना जाता है, दूसरी अवस्था में उसे अनुलोम और तीसरी अवस्था में उसे विलोम सहसम्बन्ध कहते हैं। पूर्ण धन सहसम्बन्ध +१.०० तथा पूर्ण ऋण सहसम्बन्ध —१.०० लिखा जाता है। सहसम्बन्धों की खोज विशेषतः मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की वैधता तथा विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए की जाती है।

Cognition [कॉग्निशन] : संज्ञान।

एक व्यापक शब्द है जिसमें जानने से सम्बन्धित प्रकार की मानसिक क्रियाएँ— प्रत्यक्षण, स्मरण, कल्पना, समझना, तर्क, निर्णय आदि सम्मिलित हैं। वस्तु की तात्कालिक अनुभूति से लेकर चिन्तन के विभिन्न रूप तक सभी इसके अन्तर्गत आ जाते हैं। मन का वह पक्ष जो भाव और संकल्प से भिन्न है।

Cold Spots [कोल्ड स्पाट्स] शीत स्थल, शीत बिंदु।

शरीर की त्वचा पर पाए जाने वाले वे लघु क्षेत्र जिनसे शीत संवेदना उत्पन्न करने वाले उचित उत्तेजक की प्रतिक्रिया की जाती है। इन क्षेत्रों का अन्वेषण करने के हेतु, त्वचा के ऊपरी क्षेत्रों को

एक ऐसी छोटी किन्तु नुकीली सुई द्वारा उत्तेजित किया जाता है, जो कि त्वचा के ताप से काफी अंश तक ठंडी की हुई रहती है।

साधारणत गर्मी की संवेदना ग्रहण करने वाले स्थल से इन शीत स्थलों की संख्या दसगुनी होती है। शीत स्थलों को गर्म उत्तेजकों से भी उत्तेजित किया जा सकता है।

Collective Reflexology [कलेक्टिव रैफ्लेक्सॉलोजी] सामूहिक प्रतिवर्तवाद।
देखिए—Reflexology

Collective Unconcious [कलेक्टिव अनकॉन्शस] सामूहिक अचेतन।

मन के सम्बन्ध में सी० जी० युग द्वारा प्रतिपादित एक धारणा। युग ने यह अनुसधान किया है कि अज्ञान मन के दो भाग होते हैं (१) व्यक्तिगत अचेतन (२) सामूहिक अचेतन। सामूहिक अचेतन मन सबसे निचला स्तर भाग होता है। इसमें व्यक्तिगत नहीं जातीयता के गुणों का प्रतिनिधित्व होता है। यह पूर्वजों से प्राप्त गुण विशेषताओं का कोश है और यह सामान्य विशेषता है जो हरेक व्यक्ति को बिना अपवाद सम्प्राप्ति होती है। ये जातीयता के गुण भाव-प्रतिमाओं के रूप में होते हैं। अंग्रेजी में इन भाव-प्रतिमाओं को 'आरकेटाइप्स' कहते हैं। वस्तुत सामूहिक अचेतन मन का विषय-वस्तु 'आरकेटाइप्स' हैं। भाव प्रतिमाएँ सामान्य भाव, इच्छा, वृत्ति की प्रतीक होती हैं, इनका सम्बन्ध व्यक्तिगत भाव-इच्छा, वृत्ति से नहीं रहता। युग के अनुसार सामूहिक अचेतन की भाव-प्रतिमाओं का ज्ञात मन में प्रवेश व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है। सामूहिक अचेतन की भाव-प्रतिमाओं का अभिव्यक्तीकरण स्वप्न, कला, धार्मिक कृतियों और पौराणिक कथाओं में होता है।

Colour Blindness [कलर ब्लाइंडनेस]: वर्णान्धता।

साधारणत व्यक्ति रगहीन और रगोवाली दोनों ही प्रकार की संवेदनाओं का अनुभव करता है। किन्तु कुछ व्यक्ति सभी रगों को देखने में असमर्थ होते हैं। ऐसे लोग 'वर्णान्ध' तथा उनकी यह विशेषता 'वर्णान्धता' कहलाती है।

हेरिंग ने पहले-पहल वर्णान्धता की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। इसके बीस वर्ष पश्चात् डाल्टन ने अपनी वर्णान्धता का विवरण दिया।

दृष्टि-पटल में केन्द्र और उसके निकटवर्ती भागों में शकु अधिक मात्रा में पाए जाते हैं। जैसे-जैसे केन्द्र से छोरों की ओर बढ़ें इनकी सख्या कम होती जाती है। रग-संवेदना शकुओं पर ही आधारित है। यही कारण है कि साधारणत व्यक्तियों के नेत्रों में अधिकाट के बाहरी छोरों में रगों को देख सकने की क्षमता नहीं पाई जाती। कुछ व्यक्तियों में यही विशेषता दृष्टिपटल के अन्य भागों में भी फैली हुई पाई जाती है और इसीसे उनके दृष्टिपटल के किसी भी भाग पर रगों की कोई प्रतिक्रिया नहीं होती। ये लोग जिन रगों को नहीं देख सकते उन्हें या तो काले-सफेद या अपने द्वारा देखे जा सकने वाले रगों के विभिन्न शेड्स के रूप में देखते हैं।

वर्णान्धता दो प्रकार की होती है पूर्ण वर्णान्धता होने पर व्यक्ति किसी भी रग को नहीं देख सकता, आंशिक वर्णान्धता होने पर व्यक्ति कुछ रगों को देख सकता है और कुछ को नहीं देख सकता।

आंशिक वर्णान्धता भी दो प्रकार की होती है लाल-हरे रग का अन्धापन और नीले-पीले रग का अन्धापन। पहले में व्यक्ति लाल-हरे रगों को नहीं देख सकता; नीले और पीले रगों को देख सकता है। दूसरे में नीले और पीले रगों को नहीं देख सकता लेकिन लाल और हरे रगों को देख सकता है। लाल-हरे रग का अन्धापन अपेक्षाकृत अधिक व्यापक है।

वर्णान्धता अर्जित और जन्मजात दोनों ही प्रकार का होता है। लाल-हरा रग

का अन्धापन जन्मजात होता है; अतः असाध्य है।

वर्णान्धता की पहचान के लिए मनोवैज्ञानिकों ने कुछ विशेष प्रकार के परीक्षणों का आविष्कार किया है और इनके द्वारा इस दोष का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है।

Colour Constancy [कलर कॉन्सटेन्सी] : वर्णस्थैर्य।

स्थैर्य से तात्पर्य उस तथ्य से है जिसके अनुसार प्रत्यक्ष किये हुए पदार्थ या वस्तुएँ अपने सामान्य रूप में दिखाई देती है; एवं पूर्णरूप से नही तो सापेक्ष रूप से स्थानीय उत्तेजक दशाओ से स्वतन्त्र अथवा अप्रभावित रहती हैं।

वर्ण-स्थैर्य वह तथ्य है जिसमें प्रकाश की बदली हुई भिन्न-भिन्न अवस्थाओं मे भी रंग अपना सामान्य वर्ण और प्रभा बनाए रहते है। इस प्रकार से, एक सफेद दीवार, स्थानीय उत्तेजक दशाओं के होते, सापेक्ष रूप से, अधिक या कम मात्रा में, अपना सामान्य श्वेत रग लिए रहती है। प्रकाश की परिवर्तित दशाओं में भी दीवार श्वेत ही दीखती है।

Colour-Film [कलर फिल्म] : छाया वर्ण।

रंगों का वर्गीकरण कई तरह से किया गया है जैसे सप्तरंगी और उनके बीच के सब रंग और काला-सफेद और उनके बीच के सब सम्मिलित रंग। इसी प्रकार, मूल-रंग और गौण रंग। रंगों का वर्गीकरण रंग-दर्शन की विशिष्टता पर भी आधारित करके किया गया है। इन रंगों का वर्गीकरण दो वर्गों में किया गया है : (१) पृष्ठ वर्ण (Surface Colour) और (२) छायावर्ण।

छायावर्ण एक विशिष्ट प्रकार का रंगदर्शन का अनुभव है। इसमें छाया-रूप अथवा द्रव रहित रूप में रंग का आभास होता है। अर्थात्, रंग का अस्तित्व न होने पर भी रंग का आभास होता है जैसे आसमान का नीला रंग, समुद्र का हरा-नीला रंग।

Colour Mixing [कलर मिक्सिंग] : वर्ण (रंग) मिश्रण।

भिन्न वर्णी दृष्टि उत्तेजकों को परिभ्रामी कटोर द्वारा मिश्रण कर (Filter एवं रंगों के प्रयोग द्वारा) एवं मिश्रण विपाक उत्पन्न करने के लिए लगभग एक ही समय में मूर्तिपट क्षेत्र के एक ही प्रदेश मे भिन्न रंगावलि वर्णों को प्रेषित करना।

वर्ण मिश्रण का प्रयोग वर्ण दृष्टि के नियमों के अध्ययनार्थ एवं वर्णान्धता के अध्ययनार्थ किया जाता है।

वर्ण मिश्रण प्रयोगों से उत्पन्न तीन सिद्धान्त जो वर्ण मिश्रण सिद्धान्त कहलाते हैं निम्न प्रकार है :

(१) पूरक वर्णों का मिश्रण।
(२) अपूरक वर्णों का मिश्रण।
(३) मिश्रित वर्णों का मिश्रण।

Colour-Surface [कलर सरफेस] : वर्ण पृष्ठ।

रग का वह अनुभव, जिसमे रंग प्रत्यक्ष की हुई वस्तु की सतह पर फैला हुआ-सा मालूम पड़ता है—जैसे मेज की सतह पर का भूरा रग, पेंसिल की सतह पर का चढ़ा हुआ नीला रग अथवा दीवार का सफेद रंग।

Colour Wheel [कलर ह्वील] : वर्ण चक्र।

रंग मिश्रण के लिए प्रयुक्त एक यन्त्र जिसमे अन्तर मिश्रण के लिए वर्ण उत्तेजक एक परिभ्रामी कटोर के अनुभाग (खण्ड) है। यह साधारणतया एक परिभ्रमिता पर आरोपित होता है; एवं यह परिभ्रमिता हाथ यन्त्र अथवा विद्युत द्वारा चलाई जाती है।

देखिए—Colour Mixture

Colour Zones [कलर ज़ोन्स] : वर्ण (रंग) क्षेत्र।

दृष्टि-क्षेत्र में वे प्रदेश जो वर्णी प्रतिक्रिया के लिए भिन्न विशेषताएँ रखते हैं। अधिकांश में क्षेत्र के केन्द्रीय भाग पूर्णतया वर्णी प्रतिक्रिया दिखाते है जबकि रक्त

एव हरित प्रतिक्रिया मध्यम परिणाह भाग मे तथा नील एव पीत प्रतिक्रिया चरम परिणाह पर अदृश्य हो जाते हैं।

किसी भी प्रदेश की यथार्थ सीमा प्रयुक्त उत्तेजक के विस्तार, चडता एव वर्णी शक्ति पर निर्भर करती है। वे प्रयोज्य एव प्रयुक्त विधियो के साथ-साथ भी परिवर्तित हुआ करते हैं।

यह क्षेत्र कैम्पमिटरी एव पैरीमिटरी (द्वय दृष्टि क्षेत्र मिति) द्वारा प्रायोगिक रूप से निर्धारित किए जाते हैं।
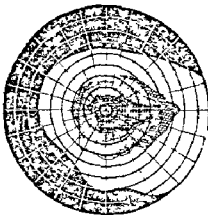
रगग्राही क्षेत्र

Coma [कोमा] अतिमूर्च्छा, निश्चेतनता।

एक प्रकार की अस्वाभाविक, दीर्घ एव गम्भीर मूर्च्छा की अवस्था जिसमे सहज-क्रियाओ एव सुरक्षात्मक अभियोजनो (Defensive adjustments) तक का अभाव पाया जाता है। श्वास प्रश्वास तथा रक्त-सचालन को छोडकर जीवन-सम्बन्धी समस्त क्रियाओ का सम्यक्-न्यास हो जाता है। नाडी की गति, शरीर का ताप एव रक्त चाप विकृत हो जाते हैं और रोगी की मृत्यु तक हो सकती है।

मस्तिष्क शोथ, मस्तिष्कगत अर्बुद मस्तिष्क की सिराओ मे रक्त के जमाव, मस्तिष्क पर लगने वाले आघात, उसके भीतर होने वाले रक्तस्राव पीन्न या सन्ताप एव विषाक्त तत्वों के प्रभाव के कारण यह स्थिति उत्पन्न होती है। इन्सुलीन की सूई देने पर व्यक्ति कोमा की अवस्था मे हो जाता है।

Hypnotic Coma —सम्मोहजनित निश्चेतनता—यह सम्मोहजनित मूर्च्छा की अत्यधिक गम्भीर अवस्था है जिसके अन्तर्गत होने वाली किसी भी घटना की चेतना प्रयोज्य को नही रहती। पुन सम्मोहित किए जाने पर भी वह इन्हें स्मरण नही कर पाता।

Comparative Method [कम्पैरेटिव मेथड] तुलनात्मक विधि।

अनुसधान करने की एक विधि जो कि कुछ समान गुण रखने वाले व्यक्तियो अथवा वर्गों का परीक्षण करती हुई एव उनकी समानताओ तथा भिन्नताओं का निरीक्षण करती हुई कार्य करती है।

(पशु मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, एव मानवशास्त्र विधियाँ)

Comparative Psychology [कम्पैरेटिव साइकॉलोजी] तुलनात्मक मनोविज्ञान।

मन के विकास का अध्ययन करने के प्रसग मे रोमेन्स ने तुलनात्मक मनोविज्ञान शब्द का प्रयोग किया है। उन्होंने पशु-विकास-परम्परा के विभिन्न स्तरो के मानसिक तथ्यो का निरीक्षण एव तुलनात्मक अध्ययन किया। लॉयड मॉरगन ने इस धारणा को व्यापक बनाया। अमेरिका मे पशु मनोविज्ञान सम्बन्धी आन्दोलन का नेतृत्व यर्कस ने किया। उन्होने विकासवादी परम्परा की दृष्टि से अपने अन्वेषण निचले स्तर के पशुओ से प्रारम्भ कर आगे बढ़ने का प्रयास किया। उनके प्रयोग का विषय केकडा, मेढक, चूहा, कौडा, कौआ, कबूतर, बन्दर तथा मनुष्य थे।

वर्तमान मनोविज्ञान मे यह पशु मनोविज्ञान का पर्यायवाची है। इसम विभिन्न प्रकार के जीवो के समायोजन, सामर्थ्य, और व्यक्तित्व की समरूपताओ व भिन्नताओं का अध्ययन सन्निहित है। मूलत

यह तुलनात्मक विधि से पशु, बाल, आदिम जाति तथा अन्य समाजों के तुलनात्मक सिद्धान्तों सम्बन्धी अन्वेषणों द्वारा विकसित मनोविज्ञान है।

देखिए—Animal Psychology

Comparative Judgment, Method of [कम्पॅरेटिव जजमेंट, मेथॅड ऑफ] : तुलनात्मक विधि।

किसी एक ही प्रकार के अनेक पदार्थों, गुणों, कृतियों आदि का किसी मनोवैज्ञानिक आयाम पर मूल्यकरण करने की एक विधि। पदार्थों आदि के सभी सम्भव जोड़े सोच लिए जाते हैं और एक बार एक जोड़ा प्रयोज्य के समक्ष रखकर उससे पूछा जाता है। दो उत्तरों में से एक देना अनिवार्य होता है—'क ख से श्रेष्ठतर' है अथवा 'ख क से श्रेष्ठतर' है। यदि अनेक प्रयोज्य उपलब्ध होते हैं तो प्रत्येक प्रयोज्य का प्रत्येक जोड़े के सम्बन्ध में एक बार अपना निर्णय देना पर्याप्त होता है। यदि एक ही प्रयोज्य उपलब्ध हो तो उसीसे प्रत्येक जोड़े के विषय में अनेक बार आंकन कराना पड़ता है। इस प्रायोगिक क्रिया से प्राप्त प्रदत्तों को गिनने से यह पता चल जाता है कि प्रत्येक उत्तेजना (पदार्थ आदि) प्रत्येक अन्य उत्तेजना से कितनी बार, तथा कितनी प्रतिशत श्रेष्ठतर आँकी गई है। इन प्रतिशतों के साथ उपयुक्त सांख्यिकीय क्रियाएँ करके समस्यागत आयाम के मनोवैज्ञानिक अंतरीय मापदण्ड पर प्रत्येक उत्तेजना का स्थान ज्ञात किया जाता है।

Complex [काम्प्लेक्स] : मनोग्रन्थि।

पूर्ण अथवा आंशिक रूप में दमित कोई भी विचार अथवा विचार समूह जिसमें अत्यधिक संवेगात्मकता पाई जाए तथा जो व्यक्ति द्वारा साधारणतः मान्य विचार अथवा विचार समूहों के प्रतिकूल हो। जैसे—हीनता मनोग्रंथि (Inferiority Complex.)

ग्रंथियाँ अनेकानेक प्रकार की हो सकती हैं। उनका निर्माण करने वाले भिन्न-भिन्न प्रकार के विचारों, संलग्न सुसाद अथवा दुखद संवेगों की तीव्रता आदि के आधार पर उनको भिन्न-भिन्न वर्गों में बाँटा जा सकता है।

ग्रंथियों में जितनी अधिक संवेगात्मकता पाई जाती है व्यक्ति की चेतना पर उसका प्रभाव भी उतना ही तीव्र हो जाता है। उदाहरणार्थ प्रेम-ग्रंथि। इससे अभिभूत व्यक्ति की सारी की सारी विचारधारा एवं क्रियाएँ एक निश्चित दिशा की ओर प्रवाहित होने लगती है। उसकी ग्रंथि से सम्बन्धित साधारण-सी भी उत्तेजना समस्त मानसिक वृत्तियों को उस ओर मोड़ देने के लिए पर्याप्त होती है।

मानव जीवन में मनोग्रंथियों का महत्वपूर्ण स्थान है। उसके मनोदैहिक विकास-क्रम में अनेकानेक ग्रंथियां निर्मित होती रहती है और अनजाने ही व्यक्ति के साधारण दैनिक जीवन को प्रभावित करती रहती है। इन पर हुई खोजों से निम्न तीन महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकले हैं : १. साधारण दैनिक जीवन की मानसिक प्रक्रियाओं का एक महत्वपूर्ण अंश व्यक्ति की इन्हीं ग्रंथियों की उपज है जिनके बारे में वह स्वयं अचेतन रहता है। (२) इन ग्रंथियों का प्रभाव निरपेक्ष रूप से पड़ता है। फलतः व्यक्ति की इनसे उत्पन्न व्यवहार में और इनमें ऊपर से कोई सम्बन्ध नहीं मालूम होता। तथा (३) व्यक्ति अपने इन व्यक्त व्यवहारों विचारों को अन्य ऐसे कारणों की उपज मानता है जिनका वस्तुतः उनसे कोई सम्बन्ध नहीं होता (दे० Rationalization)। उदाहरण के लिए, एक धर्म-संघ का सदस्य एक आस्तिक युवक कुछ समय के उपरांत नास्तिक हो गया। वह सोचता था उसका यह परिवर्तन उसके अध्ययन-मनन की उपज है। उसका मनोविश्लेषण करने पर पता चला कि वह युवक उसी संघ में सम्मिलित एक युवती के प्रति अत्यधिक आकृष्ट हो गया था और उसे अपनी जीवन-

संगिनी के रूप में पाने के स्वप्न देखने लगा था। उस युवती ने अपना विवाह सघ के किसी और व्यक्ति से कर लिया। अन्तर्मुखी युवक के मन का भाव दमित होकर एक ग्रंथि का रूप धारण कर गया। उसकी नास्तिकता वस्तुत इसी ग्रंथि की उपज थी। चेतना को मनोग्रंथियो द्वारा पूर्णरूपेण अभिभूत होना व्यक्ति मे मानसिक विकृतियो की उपज का कारण बन जाता है।

Complex Psychology [काम्प्लेक्स साइकॉलोजी] मनोग्रंथि मनोविज्ञान।

सी० जी० युग द्वारा प्रतिपादित मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त 'मनोग्रंथि मनोविज्ञान' के नाम से भी प्रसिद्ध हैं क्योकि उन्होंने अपनी पद्धति मे मनोग्रंथियों के बारे मे विस्तार से व्याख्या की है और हरेक समस्या की व्याख्या मनोग्रंथियो के प्रसग मे की और इनको महत्ता प्रेषित की है। मानसिक रोग के कीटाणु आभ्यन्तर मे पडी मनोग्रंथियाँ होती हैं। भावग्रंथिया सघर्ष का परिणाम हैं। किंतु मनोग्रंथिया सदैव अस्वस्थता के लक्षण नही होती। कुछ स्वस्थ भी होती हैं। इनके कई प्रकार होते हैं जैसे, काम, धर्म, समाज, हीनत्व इत्यादि। युग ने यह अन्वेषित किया कि प्रत्येक मनोग्रंथि अपना-अपना अलग स्वतत्र अस्तित्व स्थापित कर लेती है और उनसे प्रभावित होकर जिस मनोग्रंथि के वश मे व्यक्ति हो उसके अनुरूप वह प्रतिक्रियाएं करता है। इसीसे प्राय एक ही व्यक्ति मे कई प्रकार के व्यक्तित्व का दिग्दर्शन होता है। मनोग्रंथियो का दिग्दर्शन हमे, स्वप्न, कला और पौराणिक कथाओ म भी होता है।

Component Instincts [कम्पोनेंट इन्सटिंक्ट्स] अगभूति मूल प्रवृत्तियाँ।

मनोविश्लेपण यौन सम्बन्धी मूल-प्रवृति का निर्माण करने वाले उसके अनेक अगभूत तत्व हैं; यथा परपीडन (दे० Sadism), स्वपीडन (दे० Masochism) अग प्रदर्शन (Exhibitionism) आदि। इन्ही की समग्रता से मूल प्रवृत्ति को इकाई रूप मिलता है। कामशक्ति (दे० Libido) का निर्माण करने वाले उसके अगभूत 'अगभूत मूल प्रवृत्तियाँ' कहलाती हैं।

Compromise Formation [कम्प्रोमाइज फॉरमेशन] समझौता मनोरचना।

मनोविश्लेपण तथा विश्लेपणात्मक सम्प्रदाय द्वारा विशेष रूप से प्रयुक्त पद विशेष जो एक ऐसी मनोरचना का सूचक है जिसके अन्तर्गत दमित वासनाओ और दमन करने वाली शक्तियो के बीच समझौता हो जाता है। दमनकारी शक्तियो के कारण व्यक्ति अपनी इच्छा की तृप्ति सीधे तौर पर नही कर पाता; उसे पूर्ण सन्तुष्टि और पूर्ण असन्तुष्टि के मध्य का कोई मार्ग ग्रहण करना पडता है। उससे व्यक्ति की आशिक तृप्ति हो जाती है और दमनकारी शक्तिया भी विरोध नही उपस्थित करती।

उदाहरण के लिए प्रेम यौन-वासना और नैतिक मन की अवरोधक शक्तियो के बीच एक प्रकार का समझौता है। इसी प्रकार कटूक्ति आक्रमण और अनाक्रमण के बीच का मार्ग है। इससे यह भासित होता है कि व्यक्ति ने नई प्रेरणाओ को ग्रहण कर लिया है। पर वस्तुत ऐसा नही होता। आधारभूत चालक शक्ति अथवा अन्तिम लक्ष्य अपने मूल रूप मे अब भी वही रहता है।

Compulsion Neurosis [कम्पल्शन न्युरोसिस] : बाध्यता मनस्ताव।

एक प्रकार का मानसिक रोग। कम्पल्शन का अर्थ है—तर्कहीन व्यवहार क्रिया। एक ही क्रिया की पुनरावृत्ति से जब वह क्रिया एक निर्यमित स्थिर रूप ले लेती है और उसे कार्यान्वित करने की बान व्यक्ति मे पड जाती है, और जिसका कोई अर्थ मूल्य नही होता, अकारण रहती है—यह बाध्यता मनस्ताव है। अर्थात् बाध्यता मानसिक द्वन्द्व और भावना-ग्रंथियो का अभिव्यक्तिकरण नियमित अर्थहीन विलक्षण क्रियाओ मे होता है जिनका रूप एक

प्रकार से आदत सा रहता है। यह जानते हुए कि समस्त क्रियाएं, टेव-बान, आधार शून्य, असंगत अकारण हैं। रोगी विवश रहता है। दृष्टात के लिए हत्या के बाद लेडी मैकवेथ का हाथो का मलना, निद्रा विचरण में कुछ शब्दो का उच्चारण, एक भाव-विशेष में विस्तर से उठकर नाइट गाउन पहनना, ड्राअर खोलकर कागज निकालना, उस पर कुछ लिखना और मोहर लगाना, फिर भी निद्रावस्था मे रहना यह सब इंगित करता है कि इन साकेतिक चेष्टाओ द्वारा लेडी मैकवेथ के अज्ञात मन के अपराध भाव की अभिव्यक्ति मात्र होती है।

कुछ मनोवैज्ञानिकों ने मनोग्रस्ति (Obsession) और बाध्यता मनस्ताव को एक ही माना है। इनकी सत्ता अलग नही स्थापित की है। मनोग्रस्ति और बाध्यता मनस्ताव मे भेद है : एक विचार सम्बन्धी है; दूसरा कार्य सम्बन्धी हैं। मनोग्रस्ति मे मानसिक अभिव्यक्ति होती है; बाध्यता मनस्ताव में शारीरिक। एक अव्यक्त है, दूसरा व्यक्त। मनोग्रस्ति का रोग कभी-कभी बाध्यता मनस्ताव मे परिवर्तित हो जाता है। बाध्यता मनस्ताव में अपनी चिन्ताओं और भावों को क्रिया रूप मे व्यक्त करने की रोगी में सहज प्रवृत्ति रहती है।

Conation [कोनेशन] : क्रियावृत्ति।

इसका शाब्दिक अर्थ है 'चेतन-प्रयास'। यह एक व्यापक शब्द है और कई अर्थों में प्रयुक्त होता है—

१. कार्य करने की चेतन-प्रवृत्ति;

२. सप्रयोजन-क्रिया का प्रारम्भिक रूप;

३. आवेश, इच्छा अथवा ऐच्छिक क्रिया से सम्बद्ध मानसिक अवस्था जिसमें गति की ओर प्रवृत्ति की प्रधानता पाई जाए।

Concept *[कॉन्सेप्ट]: संप्रत्यय।*

किसी भी जाति के अन्तर्गत आनेवाली प्रत्येक वस्तु एवं विचार मे समानरूप से निहित सम्बन्ध एवं विशेषताएँ—यथा मनुष्यों में मनुष्यत्व, गायों में गोत्व आदि। प्रत्यय मूर्त वस्तुओ के हो सकते है (यथा काली गाय) और अमूर्त विचारों के भी (यथा समानता, न्याय)।

Concept Formation [कॉन्सेप्ट फारमेशन] : सप्रत्यय-निर्माण।

प्रत्ययों के निर्माण की मानसिक प्रक्रिया। यह एक जटिल प्रक्रिया है। इसमे विश्लेषण, सश्लेषण, तुलना, एकीकरण, अन्तर्निर्धारण, भावनिर्धारण एवं अमूर्तन की प्रक्रियाएँ सन्निहित हैं। इसके पाँच स्तर हैं : (१) व्यक्तियो अथवा वस्तुओ का निरीक्षण, (२) उनमें से प्रत्येक की विशेषताओ का विश्लेषण, (३) विशेषताओं को ध्यान मे रखते हुए एक की दूसरे से तुलना—समानताओ तथा असमानताओं का निर्धारण, (४) समानताओं का एकीकरण—समान विशेषताओ को एक विचार-विशेष के अन्तर्गत लाना, तथा (५) नामकरण—यथा 'नीलगाय' के प्रत्यय के निर्माण के लिए उस प्रकार के पशुओं का अधिक से अधिक संख्या में निरीक्षण करना, उनकी विशेषताओं की ओर ध्यान देना, उनकी समानताओं तथा असमानताओ विशेषकर उसी कोटि के अन्य पशुओं से) का निर्णय करना, विशेषताओ को विचार-विशेष के अन्तर्गत लाना तथा उन्हें नीलगाय नाम देना।

Concealing Memories [कन्सीलिंग मेमरीज] : संगुप्त स्मृति।

फ्रॉयड की यह परिकल्पना बचपन की विशिष्ट भेदभरी स्मृतियों की परिचायक है। बचपन की कुछ विशेष घटनाओं, की स्मृति बनी रहती है और इससे एक विशेष रहस्य का उद्घाटन होता है। जीवन मे अनेक अनुभूतियां होती है, वे स्मृति-पटल से ओझल हो जाती हैं; कुछ साधारण होते हुए भी बनी रहती हैं। ऐसी विशेष स्मृति का सम्बन्ध अज्ञात मन की ग्रन्थियो से होता है। इन स्मृतियों से उस व्यक्ति की मानसिक अवस्था के विकास का इतिहास स्पष्ट होता है। फ्रायड के अनुसार यह व्यक्ति की कामो-

त्सुकता दर्शाता है। एडलर की व्याख्या के अनुसार इससे व्यक्ति की जीवन शैली का अनुमान लगाया जा सकता है।

Co conscious [को कॉशस] सह-चेतन।

इस शब्द का प्रयोग सबसे पहले मार्टन प्रिंस ने किया। इससे उनका तात्पर्य मन की कुछ ऐसी अवस्थाओ से था जो व्यक्ति की शेष वैयक्तिक चेतना से विघटित हो उसी के साथ रहती हैं। इन अवस्थाओ का व्यक्ति को ज्ञान नही रहता। ये अत्यधिक गतिशील होती है और व्यक्ति के अनेकानेक साधारण (दैनिक जीवन की भूलें) तथा असाधारण (विभ्रम द्वै तथा बहु-व्यक्तित्व आदि) प्रकार के व्यवहार का कारण बनती हैं। यद्यपि फ्रायड की अज्ञात मन की परिकल्पना को जैने तथा मार्टन प्रिंस आदि के अन्वेषण का आधार मिला लेकिन प्रिंस का सहचेतन फ्रायड के अज्ञात मन से नितान्त भिन्न है।

Condensation [कॉन्डेन्सेशन] सक्षेपण।

इसका शब्दश अर्थ है किसी भी विषय-वस्तु-घटना को सूत्ररूप मे प्रस्तुत करना। मनोविश्लेषण मे इसका प्रयोग एक विशेष प्रसग मे हुआ है। यह अज्ञात मन की एक कार्य पद्धति है जिसके कारण एक सी अथवा एक ही गुणो वाली अनेक विषय-वस्तुएँ किसी एक ऐसी विषय वस्तु द्वारा प्रकट की जाती है जिसमे उस समानता या उन समान गुणो-विशेषताओ को व्यक्त करने की क्षमता हो। यह विशेषता स्वप्न-कल्पना की है और इसी से स्वप्न मे इसका प्रचुर प्रमाण दृष्टिगत होता है। सक्षेपण का कारण है

१ अज्ञात मन की सब इच्छा वासनाओ को जिस-तिस रूप मे प्रकट करना सम्भव नही होता।

२ कुण्ठित इच्छाएँ सक्षेप मे व्यक्त करने से वे चेतन के बहुत कुछ अनुकूल हो जाती हैं जैसे, वाक् विनोद।

सक्षेपण प्रमुखत दो प्रकार से होता है :

१ दबी-घुटी और कुण्ठित इच्छा-वासनाओ मे से सक्षेपण के समय जिनका बहिष्कार सम्भव है वे लोप हो जाती हैं।

२ अनेक विषय विचार, जिनमे देश, काल और विशेषता साम्य हो। किसी अन्य ऐसे एक विषय विचार द्वारा व्यक्त होती है जिसमे उन सबके प्रतिनिधित्व की क्षमता रहती है। इस प्रकार अज्ञात मन की अनेक इच्छा वासनाओ का समवेत प्रतिनिधित्व एक ही विषय-विचार द्वारा होता है।

Conditioning [कण्डीशनिंग] अनुबधन।

रूसी दैहिक वैज्ञानिक पावलॉव द्वारा प्रतिपादित सीखने का एक प्रमुख सिद्धात। इसके अन्तर्गत जब किसी प्रतिक्रिया विशेष को प्रगट करने के लिए जीव के सामने अस्वाभाविक और स्वाभाविक उद्दीपनो को कुछ समय तक साथ साथ उपस्थित किया जाता है तो बाद मे उस अस्वाभाविक उद्दीपन (वस्तु, व्यक्ति अथवा परिस्थिति मात्र) के उपस्थित किये जाने पर भी वही प्रतिक्रिया प्रगट होने लगती है। पावलॉव ने अपने एक प्रयोग मे एक भूखे कुत्ते के सामने घटी बजाई और उसके तुरत बाद उसे मास दिया। इस क्रम का कई बार पुनरावर्तन करने पर केवल घटी बजाने मात्र से ही कुत्ते के मुँह मे पानी आने लगा। इस उदाहरण मे घण्टी की आवाज अस्वाभाविक अथवा सम्बद्ध-उद्दीपन (Conditioned Stimulus) और उसके प्रति होने वाला लालास्राव अस्वाभाविक अथवा सम्बद्ध प्रतिक्रिया (Conditioned Response) कहलाता है।

अनुबन्धन की स्थापना के लिए निम्न बातें आवश्यक हैं (१) अस्वाभाविक उद्दीपन को बराबर स्वाभाविक उद्दीपन के पहले या साथ-साथ उपस्थित किया जाए, (२) अस्वाभाविक और स्वाभाविक उद्दीपनो को उपस्थित किए जाने के बीच समयान्तर न्यूनतम हो और (३) वातावरण मे किसी प्रकार की कोई बाधक उद्दीपन

न हो।

किसी विशिष्ट उद्दीपन और प्रतिक्रिया में इस विधि से सबध स्थापित होने पर निम्न बातें मिलती हैं :(१) सामान्यीकरण—उक्त प्रतिक्रिया का न केवल उस उद्दीपन-विशेष के प्रति प्रत्युत उससे मिलते-जुलते सभी उद्दीपनों के प्रति प्रकट होना। (२) विशेषीकरण—यदि आगे चलकर सम्बद्ध उत्तेजन से मिलते-जुलते एक अन्य उद्दीपन को लेकर दोनों को एक क्रम से बार-बार उपस्थित किया जाए और एक के बाद स्वाभाविक उद्दीपन को भी उपस्थित किया जाए पर दूसरे के बाद नही तो पहले वाले उद्दीपन के उपस्थित किए जाने पर तो प्रतिक्रिया प्रकट होगी पर दूसरे वाले उद्दीपन के उपस्थित किए जाने पर नही। (३) प्रयोगात्मक विलोप (Experimental extinction)—अधिक समय तक उपयोग में न लाने के कारण अनुबन्धन स्वतः मन्द पड़ जाता है। प्रयोग द्वारा भी—अस्वाभाविक उद्दीपन को बार-बार उपस्थित करते हुए भी स्वाभाविक उत्तेजन को न उपस्थित करना—इसे विनष्ट किया जा सकता है। इसे प्रयोगात्मक विलोप कहते हैं। (४) पुनः अनुबधन (Reconditioning) प्रतिक्रिया का इसी विधि से किसी अन्य विरोधी उद्दीपन के साथ स्वतन्त्र रूप से सम्बद्ध कर दिया जाना। (५) उच्चस्तरीय अनुबंधन (Higher Order Conditioning)—सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सम्बद्ध उद्दीपन के ही सहारे अन्य अस्वाभाविक उद्दीपन के प्रति इसी विधि से सम्बद्ध करना।

पावलॉव तथा उसके अनुयायियों का कथन है कि यह सिद्धान्त सभी प्रकार के सीखने की व्याख्या करने में समर्थ है। पर अन्य अन्वेषण द्वारा इसकी पूर्णरूपेण पुष्टि न हो सकी। पाँच-छः वर्ष की अवस्था के बाद बालको की प्रतिक्रियाओं को अनुबन्धित करना प्रायः कठिन होता है।

Conditioned Reflex [कंडीशन्ड रिफ्लेक्स] : अनुबन्धित प्रतिवर्त।

(पावलॉव) एक प्रकार का अर्जित प्रतिवर्त जो मूलतः किसी विशिष्ट उद्दीपन के प्रति प्रकट होता था पर बाद मे दूसरे उद्दीपन के प्रति भी, जो पहले वाले उद्दीपन के साथ ही उसके सामने बार-बार उपस्थित किया गया है, प्रकट होने लगता है।

देखिए—Conditioning.

Conditioned Stimulus [कन्डीशन्ड स्टिमुलस] : अनुबन्धित उद्दीपन।

ऐसा उद्दीपन जो मूलतः तो किसी प्रतिक्रिया-विशेष को प्रकट करने मे असमर्थ हो, पर किसी ऐसे उद्दीपन, जो उस प्रतिक्रिया-विशेष को जाग्रत करने मे पूर्णतः समर्थ हो, के साथ एक ही समय पर अथवा बहुत थोड़े समय के अन्तर से बार-बार उपस्थित किए जाने पर स्वय भी उस प्रतिक्रिया-विशेष को प्रकट करने मे समर्थ हो जाए।

देखिए—Conditioning.

Conditioned Response [कन्डीशन्ड रेस्पॉन्स] : अनुबन्धित अनुक्रिया।

(पावलॉव) ऐसी सरल अथवा जटिल प्रतिक्रिया जो मूलतः तो उद्दीपन-विशेष के प्रति न प्रकट होती हो पर उस उद्दीपन के किसी उक्त प्रतिक्रिया को उत्पन्न करने में समर्थ उद्दीपन के साथ एक ही समय पर अथवा बहुत ही थोड़े समयान्तर के साथ बार-बार उपस्थित किए जाने पर उसके (उस उद्दीपन के) प्रति भी प्रकट होने लगे।

देखिए—Conditioning.

Cones [कोन्स] : शकु।

नेत्र के अन्तरीयपटल या अक्षिपट में पाए जाने वाले शकु के आकार के कोष-विशेष। सबसे पहले कॉल्लिकर ने १८५४ मे दण्डो से पृथक् इन कोषो की स्थापना की थी। रंग की सवेदना इन्ही पर निर्भर है। ये अपेक्षाकृत कम सवेदनशील होते हैं। अक्षिपट के बीचोंबीच इनकी संख्या सबसे अधिक होती है, पर जैसे-जैसे छोरो की ओर बढ़ें इनकी संख्या मे भी कमी आती

जाती है। यही कारण है कि वस्तु के आँख के सामने रहने पर तो उसका रंग स्पष्ट मालूम पड़ता है पर दायें बाएँ, ऊपर-नीचे, दूर होने पर, उसके रंगो की स्पष्ट संवेदना नही होती।

Configural Conditioning [कॉनफिगुरल कण्डिशनिंग] विन्यासी सरूपण अनुबन्धन।

गाडनर मरफी द्वारा दी हुई एक उपकल्पना। इसके अनुसार अधिकतर तथ्यो मे कोई तात्विक अनुबन्धन नही होता, वस्तु स्थिति का पूर्ण प्रतिरूप (Pattern) के प्रति ही अनुबन्धन होता है। अर्थात् इस उपकल्पना के अनुसार अनुबन्धन हर अलग अलग वस्तुस्थिति के तत्त्वो के साथ नही होता है बल्कि पूरी वस्तुस्थिति के साथ सम्पूर्ण अवयव के रूप मे होता है। हर वस्तुस्थिति को विश्लेषण द्वारा उन तत्त्वो मे विभाजित मात्र किया जा सकता है जिनके फलस्वरूप वह वस्तुस्थिति उत्पन्न हुई है।

Conflict [*कान्फ्लिक्ट*] *द्वन्द्व, अन्तर्द्वन्द्व।*

मानसिक तनाव की वह अवस्था जो दो या दो से अधिक ऐसी विरोधी इच्छाओ के उत्पन्न होने से जिनकी एक ही समय पर एक साथ पूर्ति सम्भव न हो अथवा अन्य कारणो से (यथा अपनी ही कोई न्यूनता या हीनता, वातावरणगत अवरोध अथवा इच्छाओ के विघटन से) उत्पन्न होती है।

मनोविज्ञान मे मानसिक द्वन्द्वो का विशेष रूप से अध्ययन किया गया है। क्षेत्र-सिद्धान्त के प्रवर्तक लेविन के अनुसार अन्तर्द्वन्द्व के तीन प्रमुख रूप होते है (१) आकर्षण-आकर्षण-द्वन्द्व—दो ऐसी वस्तुओ की प्राप्ति के बीच मे अन्तर्द्वन्द्व जिनमे से व्यक्ति के लिए दोनो का समान महत्व है और वह दोनो को ही पाना चाहता है—यथा किसी व्यक्ति को दो ऐसी नियुक्तियो का साथ-साथ मिल जाना जिनमे से दोनो को ही वह समान रूप से चाहता हो। ऐसी स्थिति मे उसके लिए यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि वह किसे अपनाए और किसे छोडे, (२) विकर्षण-विकर्षण अन्तर्द्वन्द्व—ऐसी दो वस्तुओ के बीच मे द्वन्द्व जिनमे से वह दोनो को ही समान रूप से त्यागना चाहता हो। यथा, अध्ययन न करना पडे और पिता से डांट भी न मिले। युद्ध भी न करना पडे और कायर कहलाने से भी बच जाए, (३) आकर्षण विकर्षण द्वन्द्व—जबकि एक ही वस्तु के प्रति दोनो ही प्रकार की सशक्त इच्छाएँ उत्पन्न हो जाएँ—व्यक्ति उसे पाने के लिए भी उत्सुक हो और त्यागने के लिए भी। ऐसी अवस्था मे व्यक्ति मे मानसिक विकृतियो के उत्पन्न होने की सभावना अधिकत होती है। अभियोजनशीलता मे कमी आ जाती है।

अन्तर्द्वन्द्व परिवार, यौन और सस्कृति से सम्बन्धित होता है। पारिवारिक अन्तर्द्वन्द्वो का कारण बाल्यावस्था मे असुरक्षा, परित्याग, कठोर व्यवहार, दूसरे भाई-बहनों का जन्म तथा अत्यधिक निर्भरता होते हैं, यौन-सम्बन्धी द्वन्द्वो का कारण अविवाहित रहना, वैधव्य, परित्याग, समाज द्वारा अस्वीकृत प्रेम-सम्बन्ध इत्यादि, और सास्कृतिक अन्तर्द्वन्द्वो का कारण धार्मिक हठवादिता, अन्धविश्वास जातीयता, अत्यधिक प्रतिस्पर्धा इत्यादि होते हैं। फ्रायड ने काम-सम्बन्धी द्वन्द्व के विध्वसात्मक प्रभाव पर विशेषत ध्यान आकर्षित किया है।

Consonance [कॉन्सोनेन्स] सवादिता।

दो या अधिक स्वरो के मिलने अथवा समन्वित होने से उत्पन्न साधारणत रुचिकर प्रभाव जिसमे ऐक्य अथवा साम्य पाया जाए।

Constant Error [कान्सटेंट एरर] स्थिर त्रुटि, सतत त्रुटि।

मनोवैज्ञानिक मापन मे नियमबद्ध त्रुटि। इसके मापन की प्रचलित विधि मनोमिति की माध्य त्रुटि विधि (दे० Average error method) है। इसमे किसी उत्तेजना और उसके विषय मे माध्य अनुमान का अन्तर ज्ञात किया जाता है। अथवा विविध

अवसरों पर होने वाली त्रुटियों का मध्यक ज्ञात कर लिया जाता है। परन्तु ऐसा करने के पूर्व यह निर्णय करना आवश्यक होता है कि उत्तेजना के विषय मे सब अनुमान अथवा सब त्रुटियाँ इतनी सजातीय है कि नही कि उनको एक मे मिलाकर उनका मध्यक निकालना युक्तिसगत हो। यदि ऐसा नही होता तब प्राप्त प्रदत्तो का प्रत्येक परिस्थिति-भेद के अनुसार अलग वर्गीकरण कर लिया जाता है और प्रत्येक परिस्थिति-भेद से उत्पन्न स्थिर त्रुटि अलग से ज्ञात की जाती है। इसका उदाहरण मुलर-लायर ऐन्द्रीय भ्रम के अध्ययन मे प्रदत्तो के एकजातीय न होने पर देशगत स्थिर-त्रुटि और गतिगत स्थिर त्रुटि का परिगणन है।

Conscious [*कान्शस*] चेतन।

उन्नीसवी शताब्दी मे मन और चेतना की धारणाएँ तद्रूप थी—चेतन भाग के अतिरिक्त मन के और किसी स्तर की कल्पना स्पष्ट रूप से नही हुई थी। बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ से ही चेतन मन का एक छोटा-सा भाग समझा जाने लगा। इसमें मन की तुलना एक बड़े सागर से की है जिसमे चेतन एक छोटा द्वीप-सा है। चेतन विचारशील है, तर्कयुक्त है और नीति-अनीति का भाव इसमे सदा बना रहता है। इसकी इच्छाएँ, आकाक्षाएँ, अनुभूतियाँ विचार-गम्य होती हैं—तर्क द्वारा समर्थन की जा सकती हैं। यह वास्तविकता सिद्धान्त (Reality principle) से सचालित होता है।

देखिए—Reality Principle.

Constant Stimuli, Method of [मियड आव कान्सटेंट स्टिमुलि] : स्थिरोद्दीपन, सतत उद्दीपन विधि।

मनोमिति की एक प्रायोगिक विधि, जिसमें थोड़ी-सी उत्तेजनाएँ कई बार मिले-जुले क्रम से प्रयोज्य के समक्ष उपस्थापित की जाती हैं और उसे प्रत्येक बार यह बताना होता है कि प्रत्याशित अनुभव हुआ कि नही। उद्दीपनों की सख्या प्रायः चार से सात तक होती है। उनके उपस्थापन का क्रम प्रयोज्य को अज्ञात होता है और ऐसा होता है कि उसे उद्दीपन के घटते या बढते जाने का अनुभव नही होता। इस विधि का सबसे अधिक उपयोग उद्दीपन बोधद्वारों और समसवेदन उद्दीपनो को ज्ञात करने के लिए किया जाता है। प्रायोगिक प्रदत्त प्राप्त करने के बाद उनसे उपयुक्त निष्कर्ष निकालने के लिए रेखात्मक मध्य-निर्धारण विधि, अकगणितात्मक मध्यक विधि, योग विधि, प्रसामान्य लेखाचित्रात्मक विधि, अथवा न्यूनतम वर्ग विधि का प्रयोग किया जाता है।

Constancy Hypothesis [कॉन्सटेन्सी हाइपॉथेसिस] : स्थैर्य प्राक्कल्पना।

वह सिद्धान्त-विशेष जिसके अनुसार उद्दीपन सापेक्ष रूप से सवेदन से सह-सम्बन्धित है। अर्थात् स्थानीय उद्दीपन और सवेदन का जो सम्बन्ध एक विशेष प्रकार की परिस्थितियो के अन्तर्गत देखा गया है वही सभी प्रकार की परिस्थितियों के अन्तर्गत देखा जा सकता है जबकि ज्ञानेन्द्रिय की स्थितियो मे कोई परिवर्तन न हो। उदाहरण के लिए एक वस्तु को देखने के बाद जब हम उसे भिन्न दिशाओं से, भिन्न दूरियों से देखते है तो परावर्तित प्रकाश की किरणें भिन्न-भिन्न रूपों और मात्राओ मे अक्षिपट को प्रभावित करती हैं। तब भी वह वस्तु स्थिर, अपरिवर्तित रूप में दिखलाई पडती है। स्थिरताएँ कई प्रकार की हो सकती है : यथा, वस्तु के आकार की, रूप की, रग की, चमक की आदि।

Consummatory Response [कन्जुमेटरी रेस्पान्स] : फलागम अनुक्रिया। *परिणति अनुक्रिया।*

एक अन्तिम अनुक्रिया जो प्रारम्भिक अनुक्रिया द्वारा शक्य बनायी जाती है एव जो जीवो के लिए किसी परिस्थिति मे, जिसने सम्पूर्ण अनुक्रिया श्रेणी को जन्म दिया था, समायोजन प्रदान करती है।

इस प्रकार विशिष्ट अनुबन्धन (Condi-

tioning) प्रयोगो मे घटी श्रवण पर लार का आगमन प्रस्तुतकारी अनुक्रिया है। अनुबन्धन प्रयोगो मे साधारणतया केवल प्रारम्भिक अनुक्रिया ही सन्निहित होती है।

किसी प्रतिक्रिया माला की अन्तिम क्रिया जिसके द्वारा किसी स्थिति से पूर्ण समजन हो जाय।

देखिये—Preparatory response, conditioning

Content Analysis [कन्टेन्ट ऐनेलिसिस] अन्तर्वस्तु विश्लेषण।

भाषात्मक अथवा चित्रात्मक सास्कृतिक रचनाओ एव परीक्षण प्रतिक्रियाओ के वस्तु-तथ्यो का विश्लेषण, जो प्रकारात्मक भी हो सकता है और मात्रात्मक भी। इसका प्रमुख उपयोग राष्ट्र स्वभाव, राष्ट्र-सस्कृति का अध्ययन, साहित्य मे व्यक्त पूर्वाग्रहो एव जाति धारणा की खोज मे, तथा व्यक्तियो के निदानात्मक व्यक्तित्व परीक्षणो मे किया गया है। विशेषतया, चलचित्रो, नाटको, कहानियो, निबन्धो, अथवा रेखाचित्रो का विश्लेषण हुआ है। सास्कृतिक रचनाओ के विश्लेषण मे यह सावधानी आवश्यक होती है कि कोई ऐसे गुण किसी राष्ट्र अथवा सस्कृति के लक्षण न समझ लिए जाएँ जो वास्तव मे माध्यम के स्वरूप के कारण अथवा उसके सचालको, निर्देशको अथवा अभिनेताओ के व्यक्तिगत स्वभाव के कारण उनमे आ गए हैं।

Contiguity Law of [लॉ ऑफ कान्टिग्यूटी] सन्निधि नियम (अरिस्टोटिल)।

इस नियम से यह स्पष्ट हुआ है कि साथ-साथ घटित होने वाली घटनाओ की छाप हमारे अनुभूति जगत पर साथ-साथ पडती है और भविष्य मे उनमे से एक की स्मृति दूसरे की स्मृति जगा देती है। यथा सीताराम सुनने के अभ्यस्त व्यक्ति के मस्तिष्क मे 'सीता' का नाम सुनते ही 'राम' की स्मृति सजग हो जाती है।

सन्निधि क्रमिक (एक के बाद दूसरी घटना का घटित होना) होता है और समकालिक भी (घटनाओ का साथ-साथ घटित होना)।

सन्निधि के पाँच प्रमुख रूप है।

१ स्थानगत सन्निधि—घटनाओ का एक ही स्थान पर साथ-साथ घटित होना (यथा, कुडी-ताला)।

२ कालगत सन्निधि—घटनाओ का एक ही समय मे घटित होना (यथा, बिजली-कडक)

३ कार्य-करण सम्बन्ध (यथा, अग्नि-दाहकता)

४ वस्तुओ का उनके उपयोग के साथ साहचर्य (यथा, चटनी-चाटना)

५ वाचिक साहचर्य (Verbal Association)

यथा, फूल-फूलदान।

कतिपय मनोवैज्ञानिको ने सन्निधि के नियम को ही साहचर्य का प्रमुख नियम माना है और शेष अन्य नियमो को किसी-न-किसी रूप मे इसी पर आश्रित बतलाया है।

Contrast Law of [लॉ ऑफ कॉन्ट्राम्ट] विपर्यास नियम, विरोध-नियम। (अरिस्टोटिल) साहचर्य का एक प्रमुख नियम जिसके अनुसार विरोधी अनुभूतियाँ हमारे मानसिक जगत मे साथ-साथ रहती हैं और उनमे से एक की उपस्थिति दूसरी विरोधी अनुभूति की स्मृति दिला देती है।

यथा, राम से रावण की स्मृति, गाँधी से गोड्से की स्मृति का जाग्रत होना।

Content Psychology [कन्टेंट साइकॉलोजी] विषय-वस्तु मनोविज्ञान।

मनोविज्ञान का वह सम्प्रदाय जिसमे मन के विषय वस्तु-तथ्यो का अध्ययन हुआ है। उन्नीसवी शताब्दी मे मनोविज्ञान मे 'क्रिया' (act) और 'विषय' (content) का विभाजन हुआ।

प्रायोगिक मनोविज्ञान एक प्रकार का विषय-मनोविज्ञान था। प्रायोगिक विधि और वस्तु-तथ्य परस्पर सम्बन्धित हैं क्योंकि वस्तु-तथ्यों का ही प्रायोगिक अध्ययन सम्भव है। इसीलिए वुट तथा टिचनर के अन्तर्निरीक्षणवाद (Introspectionism), संवेदनवाद (sensationism), साहचर्यवाद (Associationism) के लिए इस शब्द का प्रयोग हुआ है। विषय-वस्तु मनोविज्ञान प्रकार्यवाद (क्रिया-मनोविज्ञान Functionalism) का विरोधी है जो आस्ट्रियन स्कूल के मनोवैज्ञानिक ब्रेन्टैनो से सम्बन्धित है।

देखिए—Structuralism.

Convulsion Therapy [कन्वल्शन थेरेपी] . आघात, कम्प-चिकित्सा।

इसी को आघात चिकित्सा भी कहते हैं। आघात चिकित्सा में रोगी के मस्तिष्क को आघात पहुँचाकर उसके असाधारण तन्त्रिका-सम्बन्धों को नष्ट करने का प्रयास होता है। इसके लिए प्राय इन्सुलिन मेट्रोज़ल तथा विद्युत आघात का उपयोग होता है। इन्सुलिन का प्रयोग सैकेल (१९३३) ने, मेट्रोज़ल का मेडूना (१९३५) ने और विद्युताघात का सरलेट्टी और बिनी (१९३८) ने किया था। इनमें से क्रमशः एक-दूसरे से अधिक सुधरा हुआ है और उपयोगी उपचार माना जाता है। विद्युताघात इसका प्रसिद्ध उदाहरण है।

विद्युत आघात में रोगी को अपेक्षाकृत कड़े बिस्तर पर लिटाकर उसके कपाल के अग्रखण्ड के दोनों ओर के उभारों पर एलेक्ट्रोड रख उनके द्वारा उसके मस्तिष्क में ०·२ से ०·५ सेकेण्ड तक विद्युत-प्रवाह प्रवेश कराया जाता है। इससे रोगी में ३० से ६० सेकेण्ड तक अपस्मार के-से संक्षोभ (दौरे) उत्पन्न होते हैं। इसके अनन्तर लगभग १० से ३० मिनट तक वह अचेतनावस्था में रहता है। बाद में चेतना आने पर भी वह तन्द्रिल एवं भूला-भूला-सा रहता है। प्रायः सर तथा सारे शरीर में पीड़ा एवं ऐंठन होती है। रोगी को साधारणतः सप्ताह में २-३ आघात पहुँचाए जाते हैं जिनकी संख्या कुछ केसों में अधिक-से-अधिक २० तक हो सकती है।

यह विशेषकर कैटेटोनिक असामयिक मनोभ्रंश एवं तीव्र अवसाद में अधिक सफल सिद्ध हुआ है। तन्त्रिकीय अवसाद में भी इसका उपयोग होता है।

Controlled Association [कन्ट्रोल्ड एसोसिएशन] : नियन्त्रित साहचर्य।

प्रतिक्रियाओं या प्रत्ययों का ऐसा साहचर्य जो कि विशेष सीमित आदेशों द्वारा नियन्त्रित होता है। प्रायोगिक अनुसन्धानों में, जो कि नियन्त्रित साहचर्य का उपयोग करते हैं, प्रयोज्य को साधारणतया आदेश दिया जाता है कि वह दिए गए मौलिक उत्तेजकों के प्रत्युत्तर, यथासम्भव शीघ्र-से-शीघ्र एक नियत वर्ग के शब्दों या वाक्यांशों के रूप में दे, जैसे एक विपरीत या पर्यायवाची शब्द या ऐसा शब्द जो कि अंश रूप या पूर्ण रूप से जाति-प्रजाति या कारण-परिणाम के रूप में उत्तेजक से सम्बन्धित हो। इसका अधिक प्रयोग मानसिक रचना, वैयक्तिक लक्षण या व्यक्तित्व के लक्षण के अनुसन्धान में या अपराध-सम्बन्धी संवेगात्मक भावना-ग्रन्थि के अनुसन्धान में होता है।

Co-Twin Control [को-ट्विन कन्ट्रोल] : यमज तुलना-विधि।

व्यक्ति-विकास के विभिन्न अंगों में परिपक्वन का अंश ज्ञात करने की एक विधि। इसमें युग्म बच्चों की एक जोड़ी लेकर एक को विकास के किसी अंग-विशेष में विशिष्ट शिक्षा दी जाती है; दूसरे को उस अंग-विशेष की शिक्षा प्राप्त करने का कोई अवसर नहीं दिया जाता। तब यह देखा जाता है कि, दूसरे बच्चों में उस अंग-विशेष का आपोआप शिक्षा बिना कहाँ तक विकास हो पाता है और इस विकास की शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चे में उसी अंग के विकास से तुलना की जाती है। इस विधि में प्रयोज्यों पर जितना प्रायोगिक नियन्त्रण चाहिए

उतने नियन्त्रण का अवसर बहुत कम युग्मो पर मिल पाता है। अधिक आयु के युग्मो के साथ इस विधि से विकास का प्रयोगात्मक अध्ययन करने मे यह भय भी रहता है कि शिक्षा से वंचित करने मे उनका विकास कही सदा के लिए अवरुद्ध न हो जाए।

Conversion Hysteria [कन्वर्ज़न हिस्टीरिया] रूपान्तरित हिस्टीरिया, परिवर्तित हिस्टीरिया।

एक प्रकार का मनोदौर्बल्य, जिसमे मानसिक संघर्ष दैहिक लक्षणो मे रूपान्तरित हो जाता है, यथा युद्धभूमि मे जाने से कारणवश अत्यधिक घबराने वाले सैनिक के पैर का पक्षाघात से आक्रान्त हो जाना। इससे रोगी एक तो अपनी मानसिक पीडा से छुटकारा पा जाता है और दूसरे सहज ही दूसरो की सहानुभूति का पात्र बन जाता है। विशेषता यह है कि पीडित अग का शारीरिक परीक्षण करने पर उसमे दैहिक विकृति के कोई चिह्न नही मिलते।

Cornea [कॉर्निया] कॉर्निया, श्वेतमडल।

नेत्र का सबसे ऊपरी आवरण। श्वेतपटल का अगला उभरा हुआ-सा पारदर्शी भाग। प्रकाश की किरणे इसी से छनकर नेत्र के अन्दर प्रवेश करती हैं। साधारणत यह सवेदनशील होता है, पर हिस्टीरिया तथा असामयिक मनोह्रास (विशेषकर कैटेटॉनिक) के कुछ रूपो मे कनीनिका का स्पर्श करने पर भी रोगी को पीडा की अनुभूति नही होती।

Correlation Ratio [कॉरिलेशन रेशो] सह सम्बन्ध अनुपात।

वक्राकारी निर्भरण वाले प्रदत्तो से प्राप्त करने के लिए उपयुक्त सह सम्बन्ध सूचनाक। मनोविज्ञान मे इसे क्रिया सिद्धि अको से वास्तविक आयु का सह सम्बन्ध चाल करने मे, सीखने और स्मरण के अध्ययन मे, स्वभाव, रुचि, मनोभाव आदि के सम्बन्ध की खोज मे, परीक्षणाको और समायोजन के लक्षणो मे अनुरूपता के अन्वेषण मे, विशेष प्रकार से उपयोगी माना गया है। सक्षेप मे इसके लिए यूनानी अक्षर ईटा (η) का चिह्न के रूप म, प्रयोग किया जाता है। रैखिक सह सम्बन्ध के एक ही गुणक द्वारा एक परिवर्त्य से दूसरे परिवर्त्य की, और दूसरे से पहले की, सूचना दे सकने के विपरीत, वक्राकारी सह सम्बन्ध की अवस्था मे किन्ही दो परिवर्त्यों मे से एक से दूसरे की सूचना और दूसरे से पहले की सूचना देने वाले दो विभिन्न सह-सम्बन्ध अनुपात होते हैं। यदि दोनो परिवर्त्यों को क और ख नाम[३] दिया जाय तो क से ख की सूचना देने वाला ईटा $\eta_{\text{खक}}$ लिखा जायगा और उसका सूत्र $\eta_{\text{खक}} = \frac{\sigma_{\text{ख}'}}{\sigma_{\text{ख}}}$ होगा। ऐसे ही ख से क की सूचना देने वाला सह सम्बन्ध अनुपात $\eta_{\text{कख}}$ लिखा जायगा और उसका सूत्र होगा $\eta_{\text{कख}} = \frac{\sigma_{\text{क}'}}{\sigma_{\text{क}}}$। इन सूत्रो मे $\sigma_{\text{ख}'}$ = क के मानो से अनुमानित ख के मानो का प्रमाप विचलन, $\sigma_{\text{क}'}$ = ख के माना से अनुमानित क के मानो का प्रमाप विचलन, $\sigma_{\text{ख}}$ = ख के समूचित आवृत्ति वितरण का प्रमाप विचलन।

$\sigma_{\text{क}}$ = क के समूचित आवृत्ति वितरण का प्रमाप विचलन।

क के किसी मान से ख के मान का सर्वोत्तम अनुमान उस क-मान के अन्तर्गत आने वाले सब ख-मानो का मध्यक होता है। यदि परीक्षण विशेष के उपयोग का पर्याप्त अनुभव उपलब्ध हो तब प्रत्येक यथार्थोत्तर के लिए अक +१' रखते हुए, अयथार्थोत्तरो के लिए अक उस पूर्वानुभव पर भी आधारित किये जा सकते हैं। इससे अकन की प्रामाण्यता मे लगभग ०२ से ०३ की वृद्धि हो सकती है।

Cortex [कॉर्टेक्स] प्रांतस्था, कॉर्टेक्स।

प्रमस्तिष्क का ऊपरी धरातल जो देखने मे धूसर रग का होता है। यह अविकासित

उन तन्त्रिकाओं के ग्राही-तन्तुओं और कोष-शरीरों से निर्मित है जिनके अक्षतन्तु अन्दर के भागों में फैले रहते हैं। इसका सम्बन्ध चेतन अनुभूतियों और उच्च स्तरीय मानसिक क्रियाओं से है।

(देखिये—Cerebrum)

Counter Transference [काउन्टर ट्रान्सफरेन्स] : परस्पर संक्रमण/प्रतिसंक्रमण।

मनोविश्लेषण द्वारा निर्मित एक धारणा जिसमें रोगी और मन समीक्षक के परस्पर संवेगात्मक सम्बन्ध के बारे में उल्लेख मिलता है। यह संभावना कि रोगी की तरह मन समीक्षक भी उसके प्रति तीव्र संवेग का अनुभव करने लगे—अथवा उसके प्रति भावना-वेदना-संवेदना बना लेना तथा उसकी ओर आकर्षित और लिप्त हो जाना। ऐसी परिस्थिति में एक नई समस्या उठती है। मन समीक्षक के भाव और व्यवहार से सम्भव है कि रोगी के आन्तरिक जीवन में नई भाव-ग्रन्थियाँ पड़ जायँ। इसी से फ्रायड ने यह प्रतिपादित किया कि मनोविश्लेषण का अभ्यास करने से पूर्व उसे (मन समीक्षक) अपनी मानसिक अवस्था का विश्लेषण कराना आवश्यक है, तभी वह कुशल विश्लेषण का कार्य सफलता से संपादित कर सकता है। मनोविश्लेषण द्वारा उपचार करने में यह एक कठिनाई पड़ती है और इसकी ओर समुचित ध्यान देना आवश्यक है।

Covariance Technique [कोवेरियेन्स टेकनिक] : सहप्रसरण प्रविधि।

सहप्रसरण का अर्थ है दोप रीक्षणों अथवा प्रश्नों के प्रमाप विचलनों और उनके सह-सम्बन्ध का गुणनफल (सह$_{१२}$σ$_१$σ$_२$)। इसे उन परीक्षणों पर व्यक्तियों द्वारा प्राप्त विचलनों के गुणनफलों का मध्यक भी कह सकते हैं (वि$_१$ वि$_२$)।

प्रत्येक प्रश्न का प्रमाप विचलन उसका यथार्थ उत्तर देने वालों और त्रुटिपूर्ण उत्तर देने वालों की संख्याओं के गुणनफल वर्गमूल ज्ञात कर लेने से प्राप्त हो जाता है। दोनों प्रश्नों का सह सम्बन्ध उपलब्ध सारणियों से ज्ञात किया जा सकता है।

किसी भी संयुक्त परीक्षण की आन्तरिक-संगति, रूप-विश्वस्तता, उसके अंश रूपी प्रश्नों के परस्पर सहप्रसरणों पर ही निर्भर होती है, क्योंकि जितने ही प्रश्नों के परस्पर सह सम्बन्ध अधिक होंगे उतनी ही परीक्षण में आन्तरिक संगति भी अधिक होगी।

Creative Synthesis [क्रिएटिव सिन्थेसिस] : सर्जनात्मक संश्लेषण।

यह उस प्रक्रिया का सूचक है जो मानसिक जीवन के विभिन्न तत्त्वों को एक-दूसरे से सम्बद्ध करती है। मनोविज्ञान के इतिहास में इस प्रकार की सम्बद्ध प्रक्रिया की आवश्यकता बहुत पहले से ही महसूस की जा रही थी। सर्जनात्मक संश्लेषण के द्वारा आधारभूत अनुभूतियों—संवेदना, प्रतिमा तथा भाव—को एक समग्रता में संगठित किया जाता है। वर्तमान प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के जन्मदाता वुण्ट (१८३२—)ने सर्जनात्मक संश्लेषण अथवा मानसिक परिणामों के सिद्धान्त का निर्माण किया। यह जॉन स्टुअर्ट मिल (१८०६—१८७३) की मानसिक रसायन (Mental Chemistry) के ही अनुरूप था। इसके अनुसार मानसिक तत्त्वों का नियमानुरूप तथा कार्य-कारण सम्बन्ध से मिलन कुछ ऐसे परिणामों तथा विशेषताओं को जन्म देता है जो पृथक् रूप से उन तत्त्वों में नहीं पाये जाते।

देखिए—Mental Chemistry.

Cretinism [क्रेटिनिज्म] : जड़वामनता।

एक प्रकार की मानसिक-हीनता जो प्रारम्भिक बाल्यावस्था में आविर्भूत होती है, जिसका कारण गलग्रन्थि का उपयुक्त सक्रिय न रहना अथवा अपर्याप्त होना है। जो व्यक्ति क्रेटिन है उसका कद नाटा, पैर-हाथ छोटे, सूखा चमड़ा, निकला हुआ पेट और बड़ी मुखाकृति होती है। वह बौना-सा रहता है। इसमें व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक दोनों का ही विकास नहीं हो पाता। शारीरिक एवं मानसिक विकास

विमदन लक्षण दृष्टिगत होते हैं। थायराक्सीन के इजेक्शन से सभव है, विकास की गति म सुधार हो। प्राय गल्ग्रन्थि *(Thyroid) से कम रस प्रवाह होने के* कारण भोजन मे आयडीन की कमी हो जाती है और व्यक्ति का शारीरिक व मानसिक विकास नही हो पाता।

Critical Ratio [क्रिटिकल रेशो] क्रातिक अनुपात।

दो मध्यको के अन्तर का अपने प्रमाप *विचल्न से अनुपात अर्थात्* $\frac{अ}{\sigma अ}$। *अतरो के प्रमाप विचल्न का सूत्र है* $\sigma अ = \sqrt{\sigma म_1 + \sigma म_2}$ जिसमे $\sigma म_1 =$ पहले मध्यक का प्रमाप विचलन $\sigma म_2 =$ दूसरे मध्यक का प्रमाप विचलन। किसी भी मध्यक का प्रमाप विचलन, उसके मूल अको के प्रमाप विचल्न को, उनकी सख्या के और यदि सख्या ५० से कम हो तो उससे σ कम के वर्गमूल से भाग दे देने से ज्ञात होता है $(\sigma म - \frac{\sigma}{\sqrt{स - _1}})$।

इस अनुपात का उपयोग मध्यकान्तर के विषय मे सयोग मात्र के अनुमान की परीक्षा करने मे किया जाता है। अनुमान यह होता है कि वास्तव मे दोनो प्रत्ययो के सपूर्ण लोक मध्यको मे कोई अतर नही है, जो भी अतर प्राप्त मध्यको मे या वह केवल सयोग मात्र के अतिरिक्त और किसी कारण से नही है। और यदि बहुत से विभिन्न लोकाशो को लेकर अतर ज्ञात किया जाए तो उनका मध्यक शून्य हो जायेगा।

कम-स-कम १ ९६ अनुपात होने पर ही इस अनुमान को कुछ भरोसे के साथ खण्डित माना जा सकता है। यदि यह अनुपात २ ५८ हो तब तो बहुत ही भरोसे से अनुमान को खण्डित मान लिया जा सकता है, क्योकि उससे यह पता चलता है कि इसकी केवल सयोगवश प्राप्त हो जाने की सम्भावना १०० म एक बार से अधिक नही है। १ ९६ से कम का अनुपात महत्त्वहीन समझा जाता है, क्योंकि उससे प्राप्त मध्यकान्तर, केवल सयोगवश प्राप्त होने की सभावना १०० मे ५ से अधिक होती है।

σ ख ज्ञात करने के लिए प्रत्येक ख' को समुचित ख-वितरण के मध्यक से घटाकर विचल्न प्राप्त कर, उसका वर्ग कर लिया जाना है और तब इन वर्गो की आवृत्तियो के अनुसार उनका मध्यक और फिर उसका वर्गमूल प्राप्त कर लिया जाता है।

Crowd Psychology [क्राउड साइकॉलो जी] भीड-मनोविज्ञान, समर्द-मनोविज्ञान।

व्यक्तियो का एक ऐसा समूह जिसमे सदस्यो के बीच न केवल भौतिक निकटता पाई जाए प्रत्युत उनम से प्राय सभी का ध्यान एक ही लक्ष्य पर केन्द्रित होने के कारण भावो एव क्रियाओ का भी सामजस्य पाया जाय जैसे आग लग जाने पर उसे बुझाने के लिए एकत्रित जन-समूह। भीड की तीन प्रमुख विशेषताएँ हैं (१) मनोवैज्ञानिक सामजस्य, (२) रुचि एव ध्यान का केन्द्रीयण तथा (३) तात्कालिकता अथवा सामयिकता। मानसिक सामजस्य भीड की प्रमुख विशेषता है। भीड की मनोवृत्ति साधारण व्यक्तियो की तुलना मे निम्न, प्रकृत एव आदिम स्तर की होती है। इसे भीड मन (Crowd mind) की उपज माना जाता है। भीड की विशेषताओ की वैज्ञानिक खोज ही 'भीड-मनोविज्ञान' है।

Culture [कल्चर] सस्कृति।

सस्कृति से तात्पर्य समूह के सभी विशेष मान मूल्यो से है। केवल भाषा, कला, विज्ञान, कानून, नीति, राज्य, धर्म इत्यादि ही नही बल्कि इसमे इमारतें, औजार, यन्त्र, यातायात योजनाएं इत्यादि भी सम्मिलित हैं, जिनमे आध्यात्मिक-सास्कृतिक विशेषताओ का व्यावहारिक प्रभावशाली रूप हस्तगत हुआ है। वैज्ञानिक अर्थ म इसम सभी तथ्य उपस्थित है जो पारस्परिक आदान प्रदान से सीखे जाने

हैं। इसमें भाषा, नियम-परम्परा, रीति-रिवाज सस्थाएं सभी निहित हैं। संस्कृति मानव-समाज की सार्वभौम विशेषता है। पशु-समूह में मौखिक भाषा नही होती। संस्कृति के आदान-प्रदान और स्फुरण का जो माध्यम है वह उन्हे नही मिलता। इसी से संस्कृति एक मानवी विशेषता मानी गयी है और इसकी उत्पत्ति मानव की उच्च योग्यता मे है जो वह अनुभव से ग्रहण करता है और अपने अनुभव ज्ञान-शिक्षण को प्रतीकों द्वारा, जिसमे भाषा मुख्य है, आदान-प्रदान करता रहता है। मानव के शिक्षण का मुख्य विषय-वस्तु अन्वेषण है और यह शिक्षा द्वारा एकत्रित और सञ्चित होता रहता है। शिक्षण का परिणाम प्रत्येक समूह की विशेष सस्कृति का विकास है।

Culture Relativism [कल्चर रेलेटिविज़्म] : संस्कृति-सापेक्षवाद।

इस सिद्धान्त के अनुसार सभी क्रियाओं, प्रेरकों और मूल्यों को उनकी संस्कृति-प्रसग मे देखा जाता है। व्यक्ति जिस संस्कृति मे पला है उसी संस्कृति के प्रभावानुसार वह व्यवहार करता है। इस प्रकार एक संस्कृति मे पले व्यक्ति का स्वभाव दूसरी सस्कृति मे पले व्यक्ति के स्वभाव से भिन्न होता है। नव फ्रायडवाद के अनुसार, व्यवहार तथा व्यक्तित्व के निर्माण का एकमात्र आधार उस देश और काल की संस्कृति है।

Cyclothymia [साइक्लोथीमिया] : साइक्लोथीमिया, उत्तेजना विषादचक्र।

व्यक्ति की मानसिक स्थिति-विशेष जिसमे वह बारी-बारी से सुख एव दुख के भावो का अनुभव करता है। देखने में उसकी ये भाववृत्तियाँ अन्तःप्रेरित प्रतीत होती हैं। तीव्रता के बढने पर ये ही उत्तेजना-विषाद का रूप धारण करती हैं।

देखिये—Manic Depressive Insanity.

Dark adaptation [डार्क ऐडेपटेशन]: अन्धकार अनुकूलन।

सापेक्ष रूप से आँख का अभियोजन ऐसा होता है जिससे कि कम प्रकाश को भी देखा जा सके। अन्धकार अनुकूलन दृष्टि-पटल मे पाए जाने वाले नेत्र-शलाकाओं (Rods) का काम है।

Data [डाटा] : उपात्त, आंकड़े, दत्त सामग्री।

प्रयोग अथवा परीक्षण के विवरण मे दिए गये एव प्रेक्षण, परिगणन अथवा मापन द्वारा प्राप्त तथ्य। ये प्रदत्त गुणात्मक होते हैं अथवा सख्यात्मक। सख्यात्मक प्रदत्त प्राय. सारिणि, लेखाचित्र, व्यक्त वर्गीकृत आवृत्ति, आँकों-आँकनो, प्रतिशत-अनुपात, आदि के रूप मे हुआ करते हैं। इनके वर्ग मद्द स्वय अनेक गुणात्मक तथा सख्यात्मक प्रकार के होते हैं—जैसे मनोभौतिकी प्रयोगों मे उपस्थित उत्तेजना के अन्य उत्तेजना की तुलना मे समान या उससे न्यून या अधिक होने के अनुमान मतमिति मे सहमति, असहमति तथा अनिश्चय, रुचि परीक्षणों मे रुचि, अरुचि तथा उदासीनता, मनोनिदान में विभिन्न मनोविकार प्रकार अथवा मनोविकार लक्षण सभी गुणात्मक वर्ग हैं। सैद्धान्तिक दृष्टि से ये सभी वर्ग सुपरिभाषित, परस्पर विभिन्न एकार्थक (univocal) तथा निःशेषी होने चाहिए। सख्यात्मक वर्ग मापांकों मे अथवा मापन के अभाव में, अंकनात्मक होते हैं। प्रदत्तो की सख्याएं विभिन्न विषयों का वर्णन किया करती हैं। योग्यता मापन मे यह परीक्षण के यथार्थ बताए गए मानसिक योग्यतासूचक प्रश्नों की संख्याएँ होती है। व्यक्तित्व मापन मे व्यक्तित्व गुण की द्योतक, कौशल मापन में किसी कार्य को करने में लगे हुए समय परीक्षणों के प्रश्नो की सापेक्ष कठिनता की मात्राएँ किसी भी विषय को प्रिय अथवा अप्रिय पाने वाले व्यक्तियों की सख्या, गुणबोध, समानता बोध, अथवा अन्तर बोध के लिए न्यूनतम आवश्यक उत्तेजना परिमाण आदि।

Death Instinct [डैथ इन्सटिंक्ट] :

मरण प्रवृत्ति, मुमूर्षा।

सम्पूर्ण जीवन का लक्ष्य मृत्यु है'—फ्रायड। मरण प्रवृत्ति का अर्थ है मानव मात्र मे यह आवश्यक-सा होना कि वह अपनी पूर्व अवस्था मे लौट जाए जिससे उसके जीवन का निर्माण हुआ। मरणप्रवृत्ति का उद्देश्य जीवनवृत्ति (eros) के विपरीत है। जीवनवृत्ति रचनात्मक है, सघटन है मरणप्रवृत्ति ध्वसात्मक है, विघटन है। मरणप्रवृत्ति के कारण कभी-कभी व्यक्ति के अदर स्वय अपने-आपको विनाश करने की इच्छा उत्पन्न होती है। कभी-कभी व्यक्ति इस वृत्ति को बाह्य जगत पर भी आरोपित करता है। बहुधा मरणप्रवृत्ति का अभिव्यक्तिकरण व्यवहार मे उतना नही होता जितना कि जीवन-वृत्ति का होता है। जब नैतिक-मन (Super-ego) की उद्भूति होती है तब नैतिक मन अह के विरुद्ध विरोध स्व-विनाश के रूप मे करता है।

देखिए—Eros

De-Conditioning [डि-कन्डिशनिंग] अपानुबधन। (पावलॉव)।

अनुबन्धन की विधि (Conditioning) से किसी उद्दीपन का किसी प्रतिक्रिया विशेष के साथ सम्बद्ध हो जाने पर उस सम्बन्ध को हटाना 'अपानुबन्धन' कहलाता है। प्रयोगशाला मे ऐसे सम्बन्ध को हटाने के लिए प्रयोज्य के सामने सम्बद्ध उद्दीपन को बार-बार प्रस्तुत किया जाता है पर उसके बाद स्वाभाविक उद्दीपन को देकर उस सम्बन्ध को पुन शक्ति-सम्पन्न नही बनाया जाता। प्रयोज्य मे सम्बद्ध-उद्दीपन के प्रति पहले कुछ प्रयासो मे तो प्रतिक्रिया प्रकट होती है, पर धीरे-धीरे मन्द पडते पडते समाप्त हो जाती है। कुत्ते मे घण्टी की आवाज के प्रति लार आने की प्रतिक्रिया के सम्बद्ध हो जाने पर आगे के प्रयासो मे यदि बार-बार घण्टी तो बजायी जाय परन्तु उसके सामने मांस का टुकडा न रखा जाय तो लार आने की प्रतिक्रिया धीरे-धीरे मन्द पडते-पडते समाप्त हो जायगी। घण्टी की आवाज के उद्दीपन के साथ उसका सम्बन्ध विनष्ट हो जायगा।

देखिए—Conditioning

Defence Mechanism [डिफेन्स मेकैनिज्म] रक्षा युक्ति।

देखिए—Mental Mechanism

Delayed Response [डिलेड रेस्पॉन्स] विलम्बित प्रतिक्रिया।

वह प्रतिक्रिया जो उद्दीपन अथवा परिस्थिति के उत्पन्न होते ही तत्काल न घटित होकर, देर से प्रकट होती है—यथा, विलम्बित अनुबन्धन। पावलॉव तथा उसके अनुयायियो ने अपने प्रयोगो मे देखा (Conditioning) कि सम्बन्ध स्थापित हो जाने के बाद यदि आगे के कुछ प्रयासो मे कुत्ते को घण्टी बजाने के दो-तीन मिनट पश्चात् भोजन दिया जाय तो भविष्य मे उसमे घण्टी बजने के बाद लालास्राव की प्रतिक्रिया तत्काल ही न प्रकट होकर, देर से होने लगती है। उद्दीपन और प्रतिक्रिया के बीच के इस काल-व्यवधान के प्रथम अर्धांश मे जीव मे अन्य प्रतिक्रियाएँ भी देखी जाती हैं। यथा, आँख बन्द करना, जम्भाई लेना आदि। द्वितीय अर्धांश मे वह उपयुक्त प्रतिक्रिया प्रकट करता है। इनमे से पहली अवस्था ऋणात्मक और दूसरी घनात्मक कहलाती है। विलम्बित प्रतिक्रिया के अन्यान्य पक्षो का अध्ययन करने के लिए मनोवैज्ञानिको ने मानव और पशुओ पर पर्याप्त प्रयोग किए हैं। ये प्रयोग विलम्बित प्रतिक्रिया प्रयोग (Delayed-Response experiment) के नाम से प्रसिद्ध हैं। इन प्रयोगो द्वारा विशेष रूप से यह जानने का प्रयास किया जाता है कि प्रयोज्य प्राप्त सकेतो को अधिक-से-अधिक कितने समय तक स्मरण रख सकता है।

Delinquency [डेलिनक्वेन्सी] अपचार।

बाल्यावस्था मे घटित सरल-साधारण प्रकार का अपराध। बर्ट और हीले ने इस पर विशेष अनुसन्धान किया है और अपराधी और निरपराध बालको के पारि-

वारिक वातावरण का अध्ययन करके यह निष्कर्ष निकाला कि वातावरण में दोष होने पर बालकों की प्रवृत्ति प्रायः अपराध की ओर हो जाती है। परिवार का दोषयुक्त शासन, पारस्परिक सम्बन्ध और व्यक्तिगत संवेगात्मक अवस्था अपचार के मुख्य कारण है। परिवार-सम्बन्धी समस्याओ मे माता-पिता का बच्चो के प्रति असन्तुलित व्यवहार, माता-पिता का परस्पर झगडा, परिवार का नैतिक ह्रास और निर्धनता प्रमुख है। दोषयुक्त वातावरण मे बालक मे संवेग-सम्बन्धी समस्याएँ उठती है और हीनत्व ग्रन्थि पड़ जाती है।

सामाजिक कारण के अतिरिक्त बालक की अपनी व्यक्तित्व-सम्बन्धी विशेषताएँ भी है जिनके कारण वह अपराध करता है। कुछ बालक स्वभाव से प्रवृत्तिशील, निर्देशनशील और अहंठी होते हैं और उनमें मानसिक दुर्बलता रहती है जिससे कि वातावरण से प्रभावित होकर वे अपराध करते हैं।

इस सामाजिक समस्या के निराकरण के लिए परिवार मे सुधार आवश्यक है।

Delirium Tremens [डिलिरियम ट्रेमन्स] : कम्पोन्माद।

बहुत काल तक अधिक मद्यपान, कम भोजन और कम विश्राम से उत्पन्न होने वाली एक प्रकार की मनोविक्षिप्ति। इसके मुख्य लक्षण उँगली, हाथ, मुंह तथा जीभ में स्पष्ट पेशीय कम्पन, स्पष्ट एवं तीव्र दृष्टि-भ्रम, दृष्टि-विपर्यय, बेचैनी तथा अनिद्रा हैं। रोगी निरन्तर उत्तेजित तथा भयभीत-सा रहा करता है और प्रायः अपने कल्पित व्यवसाय की छोटी-छोटी क्रियाओं में व्यस्त रहता है। विशेषतः सक्रिय गतिशील जन्तु चींटी, खटमल, चूहा, सर्प, हाथी, कुत्ता आदि की भ्रान्ति होती है। उन्हे देखकर व्यक्ति चिल्लाता है अथवा अन्य प्रकार से भय प्रदर्शित करता है। उसे प्रतीत होता है कि बड़े-बड़े जन्तु अथवा मानव वैरी उस पर आक्रमण कर रहे हैं। इन दृष्टि-भ्रमों में सापेक्ष आकारो का ज्ञान विकृत हो जाता है। सभव है रोगी को अपनी शय्या पर हाथियो की पूरी पंक्ति चलती अथवा कूदती-फाँदती हुई दिखाई देने लगे। उसके भय का विषय व्यक्तिगत चिन्ताएँ भी हुआ करती है। सजातीय कामुकता के अभियोग सुनाई दे सकते है। प्रतिशोध के साज सजे दीख सकते है और व्यक्ति इस प्रकार के अनुभवों से अतिभीरु तथा विषादग्रस्त हो जाया करता है। प्राय दौरा-सा आता है। दौरा लगभग तीन दिन रहता है और लम्बी नीद के बाद रोगी की मृत्यु तक हो सकती है।

Delusion [डेल्यूज़न] : भ्रान्ति मोह, विभ्रम।

किसी बात मे दृढता के साथ विश्वास करना जबकि वह वस्तुतः सत्य नही होता—यह मानसिक रोग का लक्षण है और प्रमुखतः मनोविक्षिप्ति (Psychoses) की अवस्था मे दृष्टिगत होता है। यह झूठा विश्वास है। रोगी के मन मे अनेक भ्रमात्मक विचार-भाव उठते हैं किन्तु वह उन्हें भ्रान्ति नही समझता। भ्रान्ति साधारण और विकृत दोनो वर्ग के व्यक्तियों में मिलती है। किन्तु साधारण भ्रान्ति और सविभ्रम के रोगी की भ्रान्ति मे भेद है। भ्रांति अकाल मनोभ्रंश (Dementia Praecox) और सविभ्रम रोग (Paranoia) मे विशेष मिलती है। भेद इतना ही है कि स्थिर भ्रांति रोग में विभिन्न भ्रमात्मक भावनाओं में सगठन और क्रम-व्यवस्था होती है, असामयिक मनोभ्रंश में अव्यवस्थित मोह मिलते हैं। रोगी के बाह्य और आभ्यन्तरिक क्षेत्र मे इस प्रकार का सम्बन्ध स्थापित हो जाता है कि उसका मोह उसके अपराध-भाव का आरोपण मात्र होता है। मोह या भ्रान्ति का वर्गीकरण कई प्रकार से किया गया है। मैकडूगल ने इसका वर्गीकरण इच्छा-भ्रान्ति और घृणा-भ्रान्ति में किया है। वस्तु-विषय के प्रसंग में यह तीन प्रकार का

है (१) वहिर्विषयक मानसिक भ्रान्ति (२) तनुविषयक मानसिक भ्रान्ति, (३) स्व विषयक मानसिक भ्रान्ति।

भ्रान्ति का वर्गीकरण व्यवस्थित और अव्यवस्थित रूप मे भी किया जाता है। अकाल मनोभ्रश म अव्यवस्थित प्रकार की मोह-भ्रान्ति मिलती है और सविभ्रम मे व्यवस्थित प्रकार की। व्यवस्थित भ्रान्ति मे एक विचार वस्तु-स्थिति प्रमुख रहती है और उसी के इर्द-गिर्द सब प्रकार का विश्वास बनता-बिगडता है, अव्यवस्थित मे कभी एक विचार से सम्बन्धित मिथ्या-धारणा बनती है, कभी दूसरे से इत्यादि। सामान्यत भ्रान्ति का वर्गीकरण पीडा-भ्रान्ति और ऐश्वर्य-भ्राति मे हुआ है।

देखिये—Delusion of Persecution, Delusion of Grandeur

Delusion of Persecution [डेल्यूजन ऑफ पर्सेक्यूशन] उत्पीडन-भ्रान्ति।

यह रोगी की उस विकृत मानसिक अवस्था का द्योतक है जिसमे उसके आन्तरिक क्षेत्र मे इस प्रकार का भाव उठता कि सब व्यक्ति उसका मखौल कर रहे हैं, यातना पहुँचाना चाहते हैं, उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रच रहे हैं इत्यादि। फ्रायड के अनुसार पीडा-भ्रम का कारण कामग्रन्थि है, एडलर ने हीनत्व-ग्रन्थि को इसका मूल कारण माना है।

Delusion of Grandeur [डेल्यूजन ऑफ ग्रैन्जर] ऐश्वर्यभ्रान्ति।

एक प्रकार की भ्रान्ति। मोह-सविभ्रम नामक मानसिक रोग का एक लक्षण। यह रोगी की उस मानसिक अवस्था का द्योतक है जिसमे रोगी के मन मे अपने बारे मे ऊँचे-ऊँचे विचार-भावनाएँ उठती हैं—रोगी मे इस प्रकार का भाव होता है कि वह बडा सुधारक है, ईश्वर का पैगम्बर है, जब कि वस्तुत उसकी समाज की भलाई मे रुचि नही होती। और न तो उसमे धर्म की आस्था ही है कि उसे ईश्वर का पैगम्बर माना जा सके। फ्रायड के कलेक्टेड पेपर्स के ग्रन्थ मे एक रोचक दृष्टान्त है। उसमे एक रोगी की मानसिक अवस्था का वर्णन है जो दो भ्रान्तियो मे पडा रहता है और उन्हे सच मान बैठा था (१) वह ईश्वर का दूत है और (२) स्त्री रूप मे उसका परिवर्तित हो जाना। वस्तुत मोह का मूल कारण दमन-क्रिया होती है।

Dendrite [डेंड्राइट] शाखिका।

ग्राही तन्त्रिका के दो छोरो मे से एक जो देखने मे अपेक्षाकृत घना होता है और जो ग्राहक अगो अथवा कडी के पूर्ववर्ती तन्त्रिका के अक्षतन्तु से प्राप्त प्रवाहो को कोष शरीर की ओर ले जाता है। ग्राही तन्तु एक तन्त्रिका तन्तु के समान निर्मित भी हो सकता है यद्यपि फिर भी उसे ग्राही तन्तु ही कहा जाता है।

देखिये—Nervous System

Dementia Praecox [डिमेन्शिया प्रीकॉक्स] अकाल मनोभ्रश, एक प्रकार का मानसिक रोग।

इसे स्कीजोफ्रेनिया भी कहते हैं। स्कीजोफ्रेनिया शब्द ब्लूलर द्वारा व्यवहृत हुआ था, जिसका अर्थ है 'विभक्त-मनस्कता' या 'अतराबध'। मनोविक्षिप्ति वर्ग के मानसिक रोगो मे यह सबसे अधिक प्रचलित है और इसमे रोगी को सास्थायिक देख-भाल आवश्यक होती है। यह रोग पुरुषो मे अधिक पाया जाता है और प्रौढावस्था के प्रारम्भ मे अधिकाशत होता है। यह जटिल प्रकार का मानसिक रोग है।

लक्षण उदासीनता, मानसिक ह्रास, विच्छेद, भ्रान्ति, भ्रम, परिवर्तनशून्यता और आवेगशील व्यवहार इत्यादि इस रोग के प्रमुख लक्षण हैं।

कारण कुछ मनोवैज्ञानिको के दृष्टिकोण से इस रोग का कारण वश-परम्परा है। सी० जी० युग के अनुसार इसका कारण स्वतन्त्र मनो-ग्रन्थिया (Autonomous Complex) से आक्रान्त होना और मानसिक शक्ति का प्रत्यावर्तन है। मनो-ग्रन्थियो के स्वतन्त्र रूप से कार्य करने से रोगी को नाना प्रकार की भ्रान्तियाँ होने

लगती है। मैकडूगल के अनुसार यह विभिन्न आवेगों-सवेगों के परस्पर अनुपयुक्त सम्बन्ध के कारण होता है। फ्रायड के अनुसार अहं और इदं में सहयोग न होने पर अकाल मनोभ्रंश का रोग होता है। इस अवस्था में जो मानसिक दशा होती है उसके वर्णन के लिए चाल्संवर्ग ने एक सुन्दर रूपक दिया है। इसमे अहं की उपमा अश्वारोही और इद की अश्व से दी है। इदं रूपी अश्व को निश्चेष्ट करके जब अहं रूपी चालक गाड़ी चलाना चाहता है तो व्यक्ति असफल होता है। चालक और अश्व अर्थात् इदं और अहं के सहयोग से ही गाड़ी चल सकती है, अर्थात् तभी व्यक्ति के जीवन मे समायोजन सभव है।

व्यक्तित्व विशेषताएँ : यह रोग अन्तर्मुख वर्ग के व्यक्तियो मे विशेषकर होता है। रोगी में आत्मसम्मोह की प्रधानता रहती है।

प्रकार : (१) साधारण (२) हेबेफ्रे निक (३) कैटेटॉनिक (४) पैरेनॉइड।

उपचार : (१) आघात उपचार—इन्सुलिन मेट्रोजल, विद्युत इत्यादि।

(२) शल्य उपचार

इन सबमें शल्य उपचार अधिक प्रचलित है। मानसिक चिकित्सा (Psychotherapy) का प्रभाव बाद मे लाभप्रद होता है।

देखिये—Psychosurgery.

Dependent Variable [डिपेन्डेंट वैरियेबुल] : परतन्त्र या परिचर।

'परिवर्ती' या चर से तात्पर्य परिवर्तनशील अथवा घटने-बढने वाली मात्रा से है। कभी-कभी इस मात्रा का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतीको के लिए भी इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। आश्रित परिवर्ती वह परिवर्ती है जो अपनी घटा-बढी के लिए किसी दूसरे घटक पर आश्रित हो। यथा श्वास-प्रश्वास की घटा-बढ़ी वातावरण मे आक्सीजन की मात्रा पर निर्भर है, थरमामीटर मे पारे का चढाव-उतार शरीर में ज्वर की मात्रा पर आश्रित है। प्रयोगात्मक विधि के प्रसंग में इस धारणा का विशेष मूल्य-महत्व है।

De-Personalization [डि-पर्सनैलिज़ेशन] : व्यक्तित्व-अप्रतीति।

बहुत-सी मनोविक्षिप्तियों में पाये जाने वाला एक व्यक्तित्व परिवर्तन जिसमें व्यक्ति को अपनी क्रियाएँ, अपने सकल्प से नही, स्वतः ही होती हुई लगती हैं। वह स्वय अपनी ही क्रियाओं का सचालक नही होता, द्रष्टा मात्र होता है। व्यक्ति को बाह्य परिवेश के पदार्थ, अपनी आन्तरिक अवस्था अथवा सम्पूर्ण परिस्थिति अवास्तविक प्रतीत होने लगती हैं। शारीरिक तथा बौद्धिक योग्यताओ मे कोई कमी नही होती, परन्तु रोगी को प्रायः चुपचाप अकेले, हतोत्साह बैठे देखा जाता है। आस-पास होने वाली घटनाओं मे उसे रुचि नहीं रह जाती। उसे सब-कुछ बदला हुआ लगता है जैसे उसका अपना जीवन एक स्वप्नमात्र ही है। अपने सम्बन्धियों के प्रति भी कोई भाव मन में नही उठते। अन्य व्यक्ति अपने से बहुत श्रेष्ठ और कभी-कभी अलौकिक लगने लगते हैं। उनमे अलौकिक शक्तियाँ तथा योग्यताएँ प्रतीत होती हैं। व्यक्ति स्वयं अपने को उनसे बहुत ही हीन समझता है। कभी-कभी तो रोगी को लगता है कि वह स्वयं पेचों तथा कब्जों से जोड़ खडा किया गया एक कृत्रिम पदार्थ है—कदाचित् किसी वैज्ञानिक द्वारा निर्मित एक यन्त्र। बाह्य पदार्थ भी सब, अवास्तविक ही नही, अस्वाभाविक ही नही, अस्वाभाविक मात्रा मे छोटे अथवा बड़े आकार के प्रतीत होते हैं। समय का बोध भी अयथार्थ हो जाता है। दृष्टि तथा श्रवण के भ्रम होने लगते हैं। सुख-दुःख, प्रेम-घृणा सब लोप हो जाते है। रोगी अपने को निर्जीव, मृत अथवा यन्त्र-मात्र समझने लगता है। अन्य व्यक्तियो द्वारा प्रस्तुत किया गया किसी प्रकार का तर्क उसे जगत के जीवन की वास्तविकता मे विश्वास दिलाने मे असफल

रहता है।

Depth Psychology [डेप्थ साइकोलोजी] अवचेतन मनोविज्ञान।

इसमें मनोविश्लेषण (Psychoanalysis) विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान (Analytical Psychology) और वैयक्तिक मनोविज्ञान (Individual Psycholgy) के अनुसधान सन्निहित हैं। मनोविज्ञान की इस धारा-सम्प्रदाय मे प्रमुखत अज्ञात मन के विषय-वस्तु का विश्लेषणात्मक अन्वेषण हुआ है अथवा अनुभूति और व्यवहार की व्याख्या अचेतन-अव्यक्त तथ्यो के प्रसग मे की गई है। प्रत्येक मानसिक क्रिया-व्यापार और व्यक्तित्व के विश्लेषण-व्याख्या के लिए अचेतन का उल्लेख अवचेतन मनोविज्ञान मे किया गया है और अज्ञात मन की महत्ता पर बल दिया गया है। वस्तुत मानव-व्यवहार के बारे मे कोई ज्ञान मन के निचले स्तर का विस्तार से उल्लेख बिना सभव ही नही। अचेतन के प्रसग मे ही कला, धम, स्वप्न, विकृत व्यवहार इत्यादि की व्याख्या सभव है। कला का उदय वस्तुत मन के निचले स्तर मे है। विकृत व्यवहार और प्रतिक्रियाओ को समझने के लिए मन के निचले स्तर का निरूपण आवश्यक है। अवचेतन मनोविज्ञान में यह निर्विवाद है कि अज्ञात मन, मन का एक बडा भाग है। इसीसे फ्रायड ने मन की तुलना एक बडी बर्फ की चट्टान से की है जिसमे ज्ञात मन बफ का वह भाग मात्र है जो कि जल की सतह पर दिखलाई पडता है। युग ने मन की तुलना एक बहुत बडे सागर से की है। ज्ञात मन एक द्वीप के समान है। ज्ञात मन, मन का एक छोटा-सा भाग है। इसके द्वारा व्यवहार को समझना सभव नही है।

देखिए—Psychoanalysis, Analytical Psychology, Individual Psychology

Depth Perception [डेप्थ परसेप्शन] गहराई का प्रत्यक्षण।

किसी भी वस्तु की दूरी, उसकी गहराई, इसकी स्थूलता या इसकी तीसरी विस्तार मात्रा का ज्ञान अथवा इनकी चेतना का होना। गहराई का प्रत्यक्षण सामान्यत, द्विनेत्रीय दूरबीन अथवा चित्र एकीकरण यन्त्र (Stereoscope) की विधि से देखने पर निर्भर करता है। अन्य तत्त्वो, जिन पर गहराई का प्रत्यक्षण निर्भर करता है, स्पष्टता व हवाई दृश्य, वस्तुओ का अध्यारोपण (superimposition), दृष्टिकोण और आकार हैं।

Descending Series [डिसेन्डिंग सिरीज़] अवरोही श्रेणी।

न्यूनतम परिवर्तन विधि से किये जाने वाले मनोभौतिकीय प्रयोगो मे उत्तेजना को क्रमश घटाने मे उपयोग की जानेवाली परिमाण श्रेणी। ऐसी श्रेणियो का प्राय आरोही श्रेणियो के साथ-साथ एकातर रूप से उपयोग किया जाता है। आरोही तथा अवरोही श्रेणियो का इस प्रकार एकातर प्रयोग प्रत्याशा त्रुटि (Error of Expectation) एव अभ्यास त्रुटि (Error of Habituation) कम करने के उद्देश्य से किया जाता है।

देखिए—Error of Expectation, Error of Habituation

Detour [डेटूर] चक्करदार मार्ग।

उस लक्ष्य तक का ऐसा टेढा-मेढा, अस्पष्ट रास्ता, जिसे व्यक्ति या पशु को एक समस्यापूर्ण वस्तुस्थिति म अवश्य ही खोजना पडता है। थार्नडाइक और उनके समर्थको के अनुसार पेचीदा मार्ग को अन्ध-प्रयास और भूल की विधि से खोजा जाता है। कोहलर के अनुसार यह अन्तर्दृष्टि से होता है।

Development [डेवेल्पमेंट] विकास।

जीव मे, मातृगर्भ मे आने के समय से लेकर परिपक्वावस्था तक सक्रमित होने के बीच, उसके ढाँचे और रूप अथवा आकार मे होने वाले परिवर्तनो को विकास कहते हैं। मनोविज्ञान मे वृद्धि (Growth) और विकास दो भिन्न भिन्न अर्थो मे प्रयोग किए जाते हैं। शरीर के तथा उसके भिन्न-भिन्न अग उपागो—यथा हाथ, पैर, हृदय,

मस्तिष्क आदि—के आकार और भार के बढ़ने को 'वृद्धि' कहते हैं। शरीर के विभिन्न अंगों की वृद्धि मात्र ही नहीं होती, प्रत्युत इनके भिन्न-भिन्न भाग कृत्यकारी इकाइयों के रूप में संगठित भी होते जाते हैं। शरीर के अंगों के स्वरूप में होनेवाले इन्हीं परिवर्तनों और इनके विभिन्न कृत्यकारी इकाइयों के रूप में संगठन को ही विकास कहते हैं। उदाहरण के लिए मोटर के इंजिन के भिन्न-भिन्न भागों को लिया जा सकता है। ये भाग जब तक पृथक्-पृथक् हैं, कोई काम नहीं करते। लेकिन इन्हींको इंजीनियर जब यथास्थान बैठा देता है तो ये भिन्न-भिन्न कृत्यकारी इकाइयों का रूप धारण कर लेते हैं।

विकास के दो प्रमुख रूप हैं: (१) जन्म के पूर्व का विकास (Prenatal development) और (२) जन्मोत्तर विकास (Postnatal development)। जन्म के पूर्व के विकास की पुनः तीन अवस्थाएँ मानी जाती हैं — बीजावस्था (Germinal period), भ्रूणावस्था (Embryonic period) तथा विकसित भ्रूणावस्था (Fetus period)। अण्डाणु (Ovum) और शुक्राणु (Sperm) के मिलने से एक बीजयुक्त कोष के रूप में अस्तित्व में आकर प्राणी उक्त अवस्थाओं में से गुजरता हुआ नवजात शिशु के रूप में जन्मता है। (देखिए Embryo, Fetus)। उसमें ज्ञानवाही, क्रियावाही तथा कुछ अन्य समर्थताएँ विकसित होती हैं। क्रियावाही समर्थताओं के विकास का अपना एक क्रम होता है जो एक ही जाति के सभी सामान्य शिशुओं में प्रायः समान रूप से पाया जाता है। यह विकास सर से पैर की ओर होता है।

विकासावरोध (Arrest of Development): प्राणी के मानसिक अथवा दैहिक विकास के सामान्य क्रम के कहीं बीच ही में अवरुद्ध हो जाने अथवा मंद पड़ जाने को विकासावरोध कहते हैं। यह अवरोध वातावरणजन्य अन्तर्लेपनों (Environmental Inhibitions) के कारण तथा स्वयं देह में उत्पन्न होनेवाले कतिपय अवरोधक तत्त्वों के कारण भी हो सकता है।

Developmental Psychology [डेवलपमेंटल साइकॉलोजी] : विकास-मनोविज्ञान।

मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमें मनुष्य की उत्पत्ति से लेकर उसकी परिपक्वावस्था तक के क्रम में होनेवाले दैहिक बौद्धिक, सामाजिक परिवर्तनों, कार्य-प्रणालियों, व्यवहार एवं अनुभूतियों का वैज्ञानिक वृत्तान्त मिलता है। इसकी समस्याएँ बहुत-कुछ बालमनोविज्ञान की समस्याओं के समान हैं।

देखिए—Child Psychology.

Deviation [डिवियेशन] : विचलन।

किसी व्यक्तिगत अंक की सामूहिक माध्य से दूरी। प्रायः इसको अंकों की इकाई से विचलन-समूह में प्राप्त किसी इकाई में परिवर्तित कर लिया जाता है। ऐसी तीन प्रमुख इकाइयाँ चतुर्थक विचलन, माध्य विचलन तथा मानक विचलन हैं। चतुर्थक विचलन अंक वितरण के २५वें तथा ७५वें शततमक के बीच के विस्तार का आधा होता है। मध्यक विचलन सभी व्यक्तिगत अंकों के विचलनों का माध्य होता है। मानक विचलन सभी व्यक्तिगत अंकों के विचलनों के वर्गों के माध्य का वर्गमूल होता है।

Diagnosis [डाइगनॉसिस] : निदान।

विभिन्न लक्षणों के आधार पर रोगों की व्याख्या-निदान करना। हरेक मानसिक रोग के अपने कुछ विशेष लक्षण हैं जिनका प्रेक्षण और परीक्षण करके रोग का निदान सहज ही किया जा सकता है। मानसिक प्रक्रियाओं में विकृति-विभ्रम संज्ञान (Cognition), संवेग (emotion), और क्रिया (Conation) तीनों क्षेत्रों में मिलता है।

Diagnostic Test [डाइगनॉस्टिक टेस्ट] : नैदानिक परीक्षण।

किसी क्षेत्र में वैयक्तिक बल तथा निर्बलताओं का अनुमान करने के काम में

लाए जाने वाले मनोवैज्ञानिक परीक्षण। इनके उपयोग से सामान्य निर्बलताओं, दोषो, विकारो अथवा रोगो के कारण सूझेंगे और औपचारिक अथवा चिकित्सात्मक विधियो के विषय मे मार्ग दीखने लगेगा। नैदानिक परीक्षणो के निर्माण मे पहले विषय रूपी जटिल क्रियायोग्यता अथवा क्रियाविशेषता का उसके सघटो मे विश्लेषण कर लिया जाता है और तब प्रत्येक सघटक के मापन के लिए अलग-अलग उपपरीक्षण बना लिए जाते हैं। इन उपपरीक्षणो को व्यक्ति से कराने मे यह देखा जाता है कि उस व्यक्ति मे विभिन्न सघटको मे क्या परस्पर अन्तर है और इन विभिन्न सघटको मे इस व्यक्ति और सामान्य व्यक्तियो मे क्या अन्तर है।

Dialectical Materialism [डाइलेक्टिकल मैटीरियलिज्म] द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद।

मार्क्स, एन्जिल्स तथा अन्य मनीषियो द्वारा प्रतिपादित दार्शनिक सिद्धान्त। इस दार्शनिक सिद्धान्त के अनुसार पदार्थ का स्वत अस्तित्व होता है। पदार्थ के अस्तित्व का कारण कोई दैविक अथवा जगत् परे तथ्य नही है, न तो इसका अस्तित्व मानव के मन पर ही निर्भर है।

डाइलेक्टिक अथवा द्वन्द्वात्मक शब्द से पदार्थों के प्रवेगिकी पारस्परिक सम्बन्ध का अभिव्यक्तीकरण होता है, इससे परिवर्तन की सार्वभौमता और इसके क्रातिकारी स्वभाव का परिचय मिलता है। हरेक पदार्थ जो वास्तविक है उसमे स्व-परिवर्तन की प्रक्रिया चला करती है। कारण है कि यह विषय-वस्तु-विरोधी शक्ति तथ्यो से निर्मित है आतरिक हलचल से प्रत्येक वस्तु एक-दूसरी से सम्बन्धित होती है और वह वस्तु दूसरे रूप मे बदलती है।

द्वन्द्वात्मक विधि का प्रयोजन है सभी वस्तुओ का ऐतिहासिक अन्वेषण करना। मुख्य प्रयोजन यह नही कि पदार्थ एक क्षण मे किस रूप मे प्रतिभासित होता है, वस्तुत उसके परिवर्तन, गति, दिशा, सम्भावित परिणाम की ओर है जो आन्तरिक और बाह्य शक्तियो के सघर्ष के परिणाम मे घटता रहता है।

Diastole [डाइस्टॉल] · अनुशिथिलन।

रक्त बाहर जाने से हृदय सिकुडता है और अन्दर आने से फैलता है। अनुशिथिलन हृदय के फैलाव या विस्तार के अन्तरकाल की ओर निर्देश करता है। अनुशिथिलन निपीड (Diastolic pressure) की बीमारी मे हृदय के फैलाव के समय रक्त निपीड होता है। सवेगात्मक अवस्था का इस पर विशेष प्रभाव पडता है।

Differential Aptitude Tests [डिफेरेन्शियल ऐप्टिच्यूड टैस्ट्स] विभेदात्मक अभिक्षमता परीक्षण।

ऐसा परीक्षण समूह जिससे कर्मचारियो के वर्गीकरण तथा निर्देशन मे महत्त्वपूर्ण सभी योग्यताओ का मापन किया जा सके, व्यक्ति को प्रत्येक परीक्षण के आधार पर अलग-अलग योग्यता मे अक दिये जा सकें, और जिसके अन्तर्गत रखे गये सभी परीक्षणो के मानक एक ही व्यक्ति-समूह की परीक्षा पर आधारित हो और इसलिए परस्पर तुल्य हो। सबसे अधिक प्रचलित अमरीका की साइकॉलोजिकल कॉरपोरेशन द्वारा पूर्व माध्यमिक विद्यार्थियो की परीक्षा के लिए प्रकाशित विशेषक रुझान परीक्षणावली है जिसके अन्तर्गत शाब्दिक तर्क, सख्या-योग्यता, अमूर्त तर्क, देश-सम्बन्ध, यान्त्रिक तर्क, क्लर्कीय गति एव यथार्थता वर्ण विन्यास, तथा वाक्य-योग्यता के आठ परीक्षण। इनकी विशेषता सुरक्षित रखने के लिए प्रत्येक अलग-अलग परीक्षण की विश्वस्तता इन परीक्षणो के परस्पर सह-सम्बन्धो से अधिक रखी गई है। यान्त्रिक तर्क परीक्षण विशेषता विज्ञान मे, वर्णविन्यास परीक्षण विशेषता आशुलिपि मे, सख्यायोग्यता परीक्षण विशेषतया गणित मे, और क्लर्कीय गति एव यथार्थता परीक्षण विशेषतया टाइप के काम मे

भावी सफलता के परिचायक है।

Differential Limen [डिफेरेन्शियल लिमेन] : न्यूनतम भेद-बोध देहली।

किसी प्रकार के संवेदन के उद्दीपन में अन्तर की वह कम-से-कम मात्रा जिसके उप-स्थापन पर अन्तर का बोध होता हो। व्यवहार में कोई उद्दीपन-भेद ऐसा नहीं होता जिससे कम भेद का कभी बोध न होता हो और जिससे अधिक भेद का सदैव ही बोध होता हो। इसलिए व्यावहारिक दृष्टि से भेद-बोध सीमा अर्थात् भेद-बोध देहली उस उद्दीपन-भेद को कहा जाता है जिसके उपस्थापन पर आधी अर्थात् पचास प्रतिशत अन्तर का बोध होता हो और आधी अर्थात् पचास प्रतिशत भेद का बोध न होता हो। इस सांख्यिकीय परिभाषा के अनुसार न्यूनतम भेद-बोध देहली ज्ञात करने के लिए न्यूनतम परिवर्तन विधि (Method of Minimal Change) अथवा स्थिर उद्दीपन विधि (दे० Constant stimulus method) से प्रयोग किया जाता है।

देखिये—Method of Minimal Change, Constant Stimulus Method.

Differential Psychology [डिफेरेन्शियल साइकॉलो'जी] : विभेद-मनोविज्ञान।

मनोविज्ञान की वह शाखा जिसका उद्देश्य-मानसिक एवं व्यावहारिक भेद या विभिन्नता का वैज्ञानिक अर्थात् तथ्यात्मक तथा परिमाणात्मक अध्ययन है। व्यक्तिगत तथा सामूहिक दोनों प्रकार के अन्तर इसके विषय है। खोज का विषय पशु और मनुष्य दोनों ही वर्ग हैं। विभिन्नता स्वरूप परिमाण, विस्तार तथा कारणों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। यह भी जानने का प्रयत्न किया जाता है कि प्रशिक्षण, विकास अथवा अन्य परिस्थितियों का इन अन्तरों पर क्या प्रभाव पड़ता है, और विभिन्न गुणों के अन्तर आपस में किस प्रकार सम्बन्धित हैं। विभेद मनोविज्ञान के प्रमुख विषय अन्तरों का वितरण, अन्तरों का वंशानुक्रम तथा परिवेश द्वारा निर्धारण, आयु, पारिवारिक सम्बन्ध, मनोदैहिक रचना का प्रभाव, अल्पबुद्धि, प्रतिभाशाली तथा सामान्य बुद्धि व्यक्तियों में अन्तर, लिंगानुसार अन्तर, जाति, राष्ट्र, सांस्कृतिक समूह तथा सामाजिक एवं आर्थिक वर्गों के अन्तर हैं।

Differential Reinforcement [डिफेरेन्शियल रिइनफोर्समेंट] : विभेदात्मक पुनर्बलन।

एक विधि जो कि जीव को किन्हीं दो वस्तुओं में विभेद करने की कला को सिखाने में प्रयोग होती है। विशेषत. यह विधि दो उत्तेजकों के बीच विभेद करने या दो प्रतिक्रियाओं के बीच में भेद सीखने में प्रयोग की जाती है। इसमें वस्तुस्थिति के अनुसार उन दो उत्तेजकों या प्रतिक्रियाओं में से किन्हीं एक पर प्रतिक्रिया करने पर या तो जीव को बार-बार कोई प्रतिफल देते हैं या दण्ड देते हैं।

Dispersion [डिस्पर्सन] : विक्षेपण।

अंकों के किसी वितरण में विनरण के फैलाव की मात्रा, अर्थात् उनका माध्य के दोनों ओर घना अथवा विरला होना, समीप ही अथवा दूर-दूर तक फैले हुए होना। अंकों के इस फैलाव को प्रायः अंक विस्तार, माध्यक विचलन, चतुर्थक विचलन, मानक विचलन, अथवा परिवर्तनगुणक के रूप में मापा जाता है। अंकविस्तार उच्चतम एवं निम्नतम अंक के बीच का अन्तर होता है। माध्य-विचलन विभिन्न अंकों के माध्य से दूरियों के माध्य को कहते हैं। चतुर्थक विचलन अधर अंकावली सीमा से एक-चौथाई अंकों की अपर सीमा अर्थात् प्रथम चतुर्थक तथा अधर अंकावली सीमा से तीन-चौथाई अंकों की अपर सीमा अर्थात् तृतीय चतुर्थक के बीच के विस्तार का आधा होता है। मानक विचलन विभिन्न अंकों के विचलनों के वर्गों के माध्य का वर्गमूल होता है। परिवर्तन गुणक प्रमापविचलन को १००

से गुणा करके माध्य द्वारा भाग करके प्राप्त होता है।

Displacement [डिस्प्लेसमेंट] विस्थापन।

इसका शाब्दिक अर्थ है एक विषय वस्तु से दूसरी विषय वस्तु की ओर स्थानान्तरण। सन् १६०० में फ्रायड ने इस शब्द का प्रयोग एक विशेष अर्थ में किया। विस्थापन एक मानसिक कार्य पद्धति है जिसमें अज्ञात मन की सम्पूर्ण या आंशिक इच्छा-कल्पना मूल विषय वस्तु से हटकर अन्य विषय वस्तु से जुटती है जो मूल विषय-वस्तु का मान्य रूप से स्थानापन्न कर सके। इससे संवेग-भाव का सम्बन्ध मूल वस्तु से न रहकर अन्य वस्तु विषय पर स्थानान्तरित हो जाता है। इसी से तो स्वप्न और विकृत अवस्था में आवश्यक विषय वस्तु घटना अनावश्यक और अनावश्यक आवश्यक प्रतीत होते हैं। यह स्वप्न विश्लेषण से स्पष्ट है। प्रायः जो विषय भाव सम्पन्न प्रतीत होता है उसका कोई भावात्मक मूल्य नहीं होता, जो साधारण है वह निचले स्तर की दृष्टि से भाव-सम्पन्न और वस्तुतः महत्व का रहता है। मनोग्रस्ति (Obsession) में इसके अनेक दृष्टान्त हैं। शेक्सपियर के मैकबेथ नाटक की नायिका का हस्तप्रक्षालन इसका रोचक दृष्टान्त है। हस्तप्रक्षालन में आन्तरिक शुद्धि का विस्थापन है। अभिव्यक्तीकरण की क्रिया में वास्तविक तथ्य का सम्बन्ध कृत्रिम और विकृत से स्थापित हो जाता है। प्रतिबन्धित और वर्जित इच्छाओं के अभिव्यक्तीकरण के लिए यह अनिवार्य है। जब तक वर्जित इच्छा अपने को उस विषय-वस्तु से निवृत्त-समेट नहीं लेती, जो सामाजिक दृष्टि से हेय है और अन्य विषय-वस्तु से सम्बन्ध नहीं जुटता, प्रतिरोध के कारण अभिव्यक्तीकरण सम्भव नहीं है। विषय बदलने से वर्जित इच्छा क्षम्य हो जाती है। अज्ञात मन के मूल तथ्य कृत्रिम वस्तु से सम्बन्धित करने के प्रसंग में इस कार्य-पद्धति का विशेष योग है। यह आत्म-रक्षार्थ कार्य पद्धति है और आभ्यन्तरिक क्षेत्र में समायोजन के लिए आवश्यक है। दार्शनिक निट्शे के शब्दों में यह 'ट्रान्स-वैल्येशन ऑफ ऑल वैल्यूज़' है।

Disposition [डिस्पोजिशन] प्रवृत्ति, चित्तवृत्ति।

(१) व्यक्ति की अपनी प्रतिक्रियाओं को विशिष्ट ढंग से प्रकट करने (साधारणत भावात्मक एवं वेगात्मक पक्ष) की स्वाभाविक वृत्तियों की समग्रता। (२) दैहिक अथवा स्नायुविक तत्वों (स्नायुवृत्ति) अथवा मानसिक तत्वों (मनोवृत्ति) अथवा दोनों (मनोदैहिक वृत्ति) से ही सम्बन्धित जन्मजात अथवा अर्जित व्यवस्था। (३) (जीव शास्त्र) किसी भी अंग अथवा भाग विशेष के प्रकट होने के पूर्व शरीर में वर्तमान वंश-परम्परा सम्बन्धी तत्वों के कारण किसी विशेष ढंग से वृद्धि अथवा विकसित होने की दैहिक प्रकृति।

Distributed Learning [डिस्ट्रिब्यूटेड लर्निंग] वितरित अधिगम।

स्मृति की एक विधि जिसमें कि किसी विषय पदार्थ को पूर्णतः न सीखकर, उसके सीखने के क्रम को एक आवृत्ति काल में बाँट लेते हैं। यह विधि बहुत कुछ विषय-पदार्थ के गुण, उसकी कठिनता और अन्य तथ्यों पर निर्भर करती है।

Diurnal Variation [डाइयूरनल वेरियेशन] आह्निक।

दिन प्रतिदिन होने वाले परिवर्तन की ओर निर्देश। जैसे, पशुओं के ऊपर करने वाले प्रयोगों में चूहों के व्यवहारों में होने वाले दिन प्रतिदिन के आह्निक परिवर्तनों को प्रयोगकर्ता अध्ययन करता है।

Draw a Man Test of Intelligence [ड्रा ए मैन टेस्ट ऑव इन्टेलिजेन्स] मनुष्य चित्रण-बुद्धि परीक्षण।

एक विख्यात सामूहिक क्रिया बुद्धि परीक्षण, जिसकी प्रथम वृहद् व्याख्या फ्लोरेंस गुडिनफ ने १६२६ ई० में की। इसका

मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के बौद्धिक विकास का मापन करके उसको उपयुक्त वर्ग मे रखना है। परीक्षण मे १० मिनट से अधिक नही लगते। परीक्षक परीक्षार्थियो को यह आदेश देता है कि अलग-अलग सावधानी तथा परिश्रम से एक मनुष्य का जितना अच्छा चित्र बना सके बनाएँ। चित्र बनाते समय उनको प्रशसा द्वारा प्रोत्साहित किया जाता है। परन्तु उन्हे एक-दूसरे की किसी प्रकार भी सहायता करने नही दिया जाता। प्रत्येक परीक्षार्थी द्वारा बनाए गए चित्र पर पूर्व-निश्चित नियमो के अनुसार अक दिए जाते हैं। चित्र के अलग-अलग भाग तथा गुण के लिए अलग-अलग अंक नियत है। कुल पूर्णांक ५१ होता है। परीक्षणानुभव के आधार पर प्रत्येक आयु पर प्रत्याशित अक ज्ञात किए गए हैं और मानको का काम देते है। इन मानको के आधार पर प्रत्येक परीक्षार्थी की मानसिक आयु ज्ञात कर ली जाती है। इसको उसकी वर्षक्रम आयु से भाग देकर और १०० से गुणा करके उसकी बुद्धिलब्धि निश्चित हो जाती है।

Dramatisation [ड्रैमेटिज़ेशन] : नाटकीकरण।

यह एक मानसिक कार्य-पद्धति है जिसके कारण स्वप्न मे अज्ञात मन के मूल्य तथ्य सदैव मूर्त या चित्र रूप में अभिव्यक्त होते है। यह स्वप्न की विशेषता है कि इसमे सच तथ्यो को स्थूल रूप मिलना आवश्यक रहता है। किसी व्यक्ति का विवरण अथवा घटना का सजग चित्र आसान है; दार्शनिक सूक्ष्म विचार और नैतिक गुणों का चित्रण दुरूह है। स्वप्न मे सभी बातें सिनेमा-सी घटती है।

Dream [ड्रीम] : स्वप्न।

'स्वप्न' शब्द का अर्थ है "अपने-आपमे रमण करना।" अन्य मानसिक क्रियाओ के समान यह भी एक सामान्य चेष्टा-अनुभव है। हरेक व्यक्ति को स्वप्नानुभूति होती है। आधुनिक मनोविज्ञान के अनुसार स्वप्न का सम्बन्ध सदैव अचेतन से रहता है। अज्ञात मन की सग्रहीत इच्छाएँ स्वप्न मे प्रत्यक्ष होती हैं। इसी आधार पर फ्रायड तथा उनके समर्थको ने 'स्वप्न' को अज्ञात मन के स्तर पर 'इच्छापूरक' माना। स्वप्न एक ऐसी पहेली है जिसके द्वारा अज्ञात मन की अतृप्त तथा दबी-घुटी इच्छाओ का लुके-छिपे सन्तोषण अथवा समाधान हो जाता है। कोई भी स्वप्न बाहरी दृष्टि से कितना ही हास्यास्पद अथवा असम्बद्ध क्यो न लगे यह स्वप्न-द्रष्टा के व्यक्तित्व को व्यक्त करता है। इसका अधिकतर महत्व व्यक्तिगत होता है।

स्वप्न के सिद्धान्त : १. बोधन भ्रम सिद्धान्त २ अन्वीक्षा विभ्रम सिद्धान्त ३. फ्रायड स्वप्न सिद्धान्त ४. स्वत. प्रतीकात्मक स्वप्न सिद्धान्त।

स्वप्न का मूल कारण सघर्ष और दमन होता है। फ्रायड के मत से स्वप्न का मूल कारण कामवृत्ति की तुष्टि न हो सकना है, एडलर के अनुसार इसका मूल-कारण आत्मप्रतिपादन की वृत्ति का असन्तोषण है। वस्तुत. स्वप्न का कारण अतृप्त कामवासना मात्र नही है; न तो आत्म-प्रतिपादन का असन्तोषण मात्र है। अन्य मूल वृत्तियों से सम्बन्धित इच्छाएँ भी उद्दीपन के रूप मे स्वप्न का कारण हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त सामूहिक अज्ञात मन की प्रतिमाओ का भी दिग्दर्शन स्वप्न मे होता है। स्वप्न एक प्राकृतिक क्रिया है। इसका कारण जातीय विशेषताएँ भी हो सकती हैं। इस विचार के पोषक सी० जी० युग हैं।

मनोविश्लेषण मे स्वप्न की समस्या की व्याख्या के लिए कुछ पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हुआ है और इनके द्वारा इस विषय पर एक नया प्रकाश डाला गया है। मनोविश्लेषण मे स्वप्न के दो स्वरूपों का उल्लेख हुआ है : व्यक्त स्वरूप (Manifest Content) और अव्यक्त स्वरूप (Latent Content)। स्वप्न की चार प्रमुख कार्य-पद्धतियां हैं : १. सक्षेपण

(Condensation), २ विस्थापन (Displacement), ३ नाटकीकरण, ४ प्रतीकीकरण (Symbolization)। ये सब स्वप्न-क्रिया (Dream Work) के अन्तगत आते हैं। स्वप्न-व्याख्या (Dream interpretation) की दो प्रमुख विधियाँ हैं १ मुक्त साहचर्य (Free association) २ स्थानापन्न विधि (Cipher method)

आधुनिक मनोविज्ञान मे स्वप्न पर पर्याप्त अनुसन्धान हुए हैं और इसकी उपयोगिता का एक विशेष क्षेत्र औषधि भी है। दैविक व्याख्या का अब कोई महत्व नही रह गया है। स्वप्न-सम्बन्धी अनुसन्धान की सबसे बड़ी उपयोगिता यह है कि स्वप्नो के उचित विश्लेषण की सहायता से मानसिक रोगो का निवारण सहज ही किया जा सकता है। रोगियो के स्वप्नो का विश्लेषण करके उनके व्यक्तित्व विच्छेद का कारण समझा जा सकता है। साधारण अवस्था मे भी स्वप्न विश्लेषण लाभप्रद है। इसके अतिरिक्त स्वप्न-विश्लेषण मे किसी व्यक्ति की मनोदशा को समझने मे भी सहायता मिलती है। मनुष्य के व्यक्तित्व का अध्ययन कई प्रकार से, कई साधनो द्वारा, किया जाता है। उन साधनो मे स्वप्न भी एक साधन है। स्वप्न अज्ञात मन मे प्रवेश की सीढी है। जोन्स, युग, एडलर तथा स्टेकल के अनुसार भी स्वप्न अज्ञात मन के विषय-वस्तु कार्य-पद्धतियो के सूचक हैं। "तुम अपना स्वप्न कहो, मैं बतला दूंगा तुम क्या हो।"

देखिए—Manifest Content, Latent Content

Dream Interpretation [ड्रीम इन्टरप्रिटेशन] स्वप्न-व्याख्या।

यह स्वप्न के व्यक्त अश (Manifest Content) से अव्यक्त अश (Latent Content) का पता लगाने की ओर का प्रयास है। अर्थात्, आभ्यन्तरिक क्षेत्र के मूल तथ्यो अथवा अज्ञात स्तर पर प्रस्तुत भाव इच्छाओ के अध्ययन का प्रयास है (मनोविश्लेषण)।

यह प्रक्रिया स्वप्न-क्रिया (Dream Work) के विपरीत है। स्वप्न-विवेचन की दो विधियाँ है मुक्त साहचर्य (Free Association) और स्थानापन्न विधि (Cipher Method)। स्मृति के सहारे स्वप्न द्रष्टा आवश्यक-अनावश्यक सम्बद्ध-असम्बद्ध, अतीत-वर्तमान की घटनाओ का जो निर्बाध वृत्तान्त देता है, मुक्त साहचर्य की विधि मे उसी आधार पर व्याख्या होती है। स्थानापन्न विधि मे यह ज्ञानमात्र कि स्वप्न की कौन वस्तु किस वस्तु-विषय का प्रतिनिधि है, स्वप्न की विवेचना के लिए पर्याप्त होता है। फ्रायड की स्वप्न-व्याख्या विश्लेषणात्मक है। कार्ल जेस्ट्राव युग की स्वप्न-विवेचना का प्रयास इससे भिन्न है। युग की स्वप्न विवेचन की विधि सश्लेषणात्मक-विश्लेषणात्मक (Synthetic-analytic) है। आधुनिक औषधि मनोविज्ञान मे स्वप्न विवेचन का विशेष महत्व है क्योकि इसके द्वारा अज्ञात मन मे पैठा जा सकता है।

देखिये—Dream Work, Free Association, Cipher Method

Dream Work [ड्रीम वर्क] स्वप्न क्रिया।

(फ्रायड) यह धारणा स्वप्न के प्रसग मे मनोविश्लेषण मे निर्मित हुई है और इसमे उन सब कार्य-प्रणालियो का विस्तार मे अध्ययन है जिनके कारण स्वप्न के अव्यक्त अश (Latent Content) का रूपान्तर हो जाता है और इसे एक मान्य स्वीकृत स्वरूप प्राप्त होता है। ये कार्य-प्रणालियाँ सक्षेपण (Condensation), विस्थापन (Displacement), नाटकीकरण और प्रतीकीकरण (Symbolisation) की हैं—ये सब कार्य-प्रणालियाँ अज्ञात मन के मूल वास्तविक तथ्य को विकृत रूप देने के लिए उत्तरदायी हैं। स्वप्न-क्रिया के बारे मे पूर्ण परिचय रखना स्वप्न विश्लेषण के लिए आवश्यक है। स्वप्न-क्रिया अव्यक्त कथा वस्तु से व्यक्त का

अध्ययन है; स्वप्न व्याख्या (Dream interpretation) व्यात से अव्यात का।
देखिए—Condensation, Displacement, Symbolisation.

Drive [ड्राइव] : अन्तर्नोद।
अन्तर्नोद शारीरिक शक्तियो की गतिशील अथवा उत्तेजित अवस्था है। अन्तर्नोद शारीरिक असन्तुष्टावस्था है जो सामान्य प्रवृत्तियों को क्रियाशील करती है। यह शरीर के अन्दर गतिदायक-यन्त्र (Motor) के समान कार्य करती है और परिणामस्वरूप इससे शरीर की मांसपेशियों और ग्रन्थियो को शक्ति प्राप्त होती है। अन्तर्नोद वह अवस्था है जिसमे व्यक्ति आन्तरिक क्षेत्र मे असन्तोष की अनुभूति करता है। परन्तु यह आवश्यक नही है। बहुत-सी अवस्थाओ मे अन्तर्नोद द्वारा शरीर मे रसायनिक परिवर्तन होते हैं जिसकी हमे चेतना नही होती।
मनोवैज्ञानिको ने अन्तर्नोद को ऐसे तथ्य के रूप मे स्वीकार किया है जिसे तुष्ट करने के लिए अवयव बाध्य हैं।
प्रेरणा के एक दृष्टिकोण से अन्तर्नोद प्रकृत आन्तरिक कायिक प्रवृत्तियाँ (innate biological tendencies) है जिनके आधार पर शिक्षण द्वारा सम्पूर्ण जटिल प्रेरणाएँ विकसित होती है। दूसरे दृष्टिकोण से यह अवयव की सम्पूर्ण प्रेरणात्मक शक्तियो का सीमित अश-भाग है।

Drug Psychoses [ड्रग साइकॉसेस] : औषधिजन्य मनोविक्षिप्ति। अत्यधिक औषधि जैसे अफीम, मॉरफीन, कोकीन आदि के अनावश्यक सेवन से विकृत व्यवहार का उत्पन्न होना तथा प्रकार-प्रकार के विक्षेप के लक्षण का साक्षात्।
औषधिजन्य विक्षिप्ति के प्रमुख लक्षण बेचैनी, आँतों मे ऐठन, पाचन की गड़बड़ी, होलदिली, चित्त की अस्थिरता, निराशा, चिड़चिड़ापन, आत्महत्या का भाव, भ्रम, भ्रान्तियाँ, चित्तविभ्रम, अविवेक, अन्तराबन्ध, स्थान तथा दिशा-भ्रम आदि है। नियमित रूप से इसका सेवन करते रहने से नीति-अनीति अच्छे-बुरे का भाव नही रह जाता।
औषधिजन्य विक्षिप्ति के विभिन्न कारण है जिनमे व्यक्तित्व-अव्यवस्था, चिन्ता, भय, संवेगात्मक अस्थिरता, तादात्म्य का अभाव, चित्त उदासीनता, अतृप्त इच्छाएँ, कुसगति और अनावश्यक जिज्ञासा-कुतूहल प्रमुख है।

Dual Aspect Theory [ड्वाल ऐस्पेक्ट थ्योरी] : द्वैत सिद्धान्त।
यह सिद्धान्त जिसके अनुसार व्यक्ति का मन और शरीर एक ही की दो पृथक् किन्तु अविभाज्य अवस्थाएँ हैं। स्पीनोजा ने अपने तात्विक सिद्धान्त के परिणामस्वरूप विचार-तथ्य और विस्तारित तथ्य को एक ही माना और सम्भवत. इसी से मन-शरीर के सम्बन्ध मे द्वैत अवस्था सिद्धान्त की नीव पड़ी। लॉयड मारगन, सैमुअल अलेक्जेन्डर और भारतवर्ष में श्री अरविन्द द्वैत अवस्था सिद्धान्त के आधुनिक प्रवर्त्तक हैं।

Dualism [ड्वालिज्म] : द्वैतवाद।
यह एक तात्विक सिद्धान्त है जिसमें दो स्वतन्त्र सत्ताएँ मानी गई हैं, जिनमे एक का दूसरे मे तिरोहित होना अथवा परिवर्तित हो जाना किसी प्रकार भी सम्भव नही है। प्लेटो का इन्द्रियग्राह्य और अधिगम जगत का द्वैतवाद, कार्टिजन का विचार और विस्तारित तथ्य का द्वैतवाद तथा कांट का परासत्ता और व्यावहारिक तथ्य प्रसिद्ध है।
मनोविज्ञान मे यह मन और शरीर का द्वैतवाद है—मानसिक और शारीरिक प्रक्रियाओ मे दो सहगामी प्रक्रियाओ का सम्बन्ध है, समानान्तर घटनाओ की शृंखला (Parallelism) है अथवा कार्य-कारण का सम्बन्ध (Interactionism) माना गया है। द्वैतवाद किसी-न-किसी रूप मे उन्नीसवी शताब्दी के मनोविज्ञान की विशेषता रही और इससे मुक्त करने का पहला प्रयास तभी हुआ जब मानसिक संरचनाओ का क्रियात्मक विवरण देना

प्रारम्भ हुआ। बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ मे द्वैतवाद सम्प्रदाय अथवा इस प्रकार की विचारधारा का लोप हो गया और यह घटना व्यवहारवाद (Behaviorism) तथा क्रियात्मक मनोविज्ञान (Operationism) के अन्वेषण के साथ घटित हुई। इससे मनोविज्ञान प्रकृत विज्ञानो के वग म रखा जाने लगा और निरीक्षण और प्रयोग की विधियाँ इसकी स्तम्भ हुई।

Dual Personality [ड्वाल पर्सनैलिटी] द्वैतव्यक्तित्व (मार्टन प्रिंस) व्यक्तित्व का एक प्रकार का अस्वाभाविक सगठन जिसके अन्तर्गत दो पूर्णत भिन्न व्यक्तित्व प्रणालियाँ व्यक्त होती हैं। इनमे से प्रत्येक प्रणाली की अपनी स्पष्टत भिन्न सवेगात्मक एव चिन्तन प्रक्रियाएँ होती हैं और वे लगभग स्थायी व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करती हैं। रोगी बारी-बारी से एक से दूसरे व्यक्तित्व मे प्रवेश करता रहता है और एक व्यक्तित्व की बात दूसरे व्यक्तित्व म भूल जाता है। कुछ क्षण और समय मे एक रूप और दूसरे क्षण और समय मे दूसरा रूप रखता है। साधारणत जब एक व्यक्तित्व व्यक्त एव चेतन रूप में क्रियाशील होता है तो दूसरा अचेतन अथवा सहचेतन (Co Conscious) रूप मे सक्रिय रहता है। सहचेतन प्राय चेतन की सभी बातो से परिचित रहता है पर चेतन सहचेतन से पूर्णत अनभिज्ञ रहता है। एबिंग तथा क्यूबी ने इसका एक सुन्दर उदाहरण दिया है। कुमारी बाउन (सहचेतन) कुमारी डैमस की सभी समस्याओ से परिचित है और उसकी सुरक्षा के लिए बराबर तत्पर रहती है पर डैमन ब्राउन के बारे म कुछ भी नही जानती। व्यक्तित्व के विघटन की यह स्थिति अत्यधिक मानसिक तनाव एव द्वन्द्व के कारण उत्पन्न होती है।

यह मानसिक तनाव प्राय व्यक्ति के अपने असन्तोषजनक व्यक्तित्व अथवा जीवन की किसी अत्यधिक असहनीय परिस्थिति की उपज होती है। ऐसी स्थिति मे नया व्यक्तित्व व्यक्ति की दमित इच्छापूर्ति का प्रतिनिधित्व करता है।

Ductless Glands [डक्टलेस ग्लैंड्स] वाहिनीहीन ग्रन्थि।

ऐसे ग्रन्थि अग जिनमे तल पर स्राव भेजने के लिए कोई प्रणाली या नाडी नही होती है। ऐसे दो प्रकार के ग्रन्थि अग है—(१) अन्त स्रावी ग्रन्थि अग (Endocrines), जैसे गल ग्रन्थि अग पीयूष-ग्रन्थि अग, पिनियल इत्यादि और (२) ऊतको (tissues) की तरह के ग्रन्थि-अग जैसे, तिल्ली या प्लीहा, अनुत्रिक ग्रन्थि (Coccygeal), हृद्-ग्रन्थि अग (Cordial glands) आदि। मानसिक विकास, व्यक्तित्व विकास तथा सवेगात्मक अवस्था पर अन्त स्रावी ग्रन्थि के स्राव का अत्यधिक प्रभाव पडता है और इस दृष्टिकोण का मनोविज्ञान मे मानसिक प्रक्रियाओ के प्रसग मे बहुत महत्व है।

Duplicity Theory [डुप्लिसिटी थ्योरी] द्विधा सिद्धान्त।

वानक्रीज ने दृष्टि सबधी एक उपकल्पना को प्रस्तावित किया कि अक्षिपटीय सरचनाएँ, नेत्र शलाकाएँ व नेत्र-शकुद्विगुण कार्य करते हैं। नेत्र शलाकाओ को अन्धकार अनुकूलित (dark adapted) आँखो मे अदर्णिक (achromatic) अनुभव होता है जब कि नेत्र-शकुओ को प्रकाश (light adapted) अनुकूलित आँखो मे वर्णी (Chromatic) अनुभव होते हैं।

Dynamics [डाइनेमिक्स] गतिकी, गति विज्ञान।

यान्त्रिकी (mechanics) की शाखा विशेष जिसका सम्बन्ध पदार्थों मे गति और परिवर्तन उत्पन्न करने वाली शक्तियों के प्रभाव के अन्तर्गत उनके (पदार्थों के) व्यवहार के भौतिकीय—भौतिक सम्बन्धी और गणितीय—गणित सम्बन्धी से है। यान्त्रिकी भौतिक शास्त्र की वह शाखा है जो शक्तियो के प्रभाव के अन्तर्गत जड द्रव्यो के व्यवहार का अध्ययन करती है। स्थैतिकी (Statics)

यान्त्रिकी की वह शाखा है जो शक्तियों के प्रभाव के अन्तर्गत जड़ द्रव्यों के व्यवहार की उन स्थितियों को जिनमें गति नहीं उत्पन्न होती, भौतिकीय एवं गणित शास्त्रीय विवेचना प्रस्तुत करती है।

मनोविज्ञान में वर्तमान प्रवृत्ति मन और व्यवहार के बारे में प्रावैगिकी सिद्धान्त के प्रतिपादन की ओर है। इसमें इन्द्रिय, पेन्द्रीय और सामाजिक क्षेत्रों में प्रस्तुत प्रावैगिकी अवस्थाओं पर बल दिया गया है जो इन क्षेत्रों की प्रक्रियाओं को मूलतः निर्धारित करते हैं।

देखिए—Dynamic Psychology.

Dynamic Psychology [डायनेमिक साइकॉलो'जी] : गतिक मनोविज्ञान।

मनोविज्ञान का वह क्षेत्र जिसमें प्रेरक (Motive) अध्ययन का मुख्य विषय है। यह वस्तुत. अभिप्रेरणा का मनोविज्ञान है। गति का मनोविज्ञान स्वतः में कोई सम्प्रदाय नहीं है, बल्कि इसमें कई सम्प्रदाय सन्निहित हैं—फ्रायड का मनोविश्लेषण (Psycho-analysis), मैकडूगल का प्रयोजनधर्मी स्कूल (Hormic School), टॉलमैन का ध्येययुक्त व्यवहार, वुड्वर्थ का गतिक सिद्धान्त। गतिक मनोविज्ञान के प्रमुख स्रोत फ्रायड ही है।

Dynamogenesis [डायनामोजेनेसिस]: गति विकास।

ब्राउन-सेक्वार्ड के द्वारा एक सिद्धान्त को निर्दिष्ट करने के लिए प्रयुक्त किया हुआ शब्द, जिसके अनुसार तन्त्रिका तन्त्र (तन्त्रिकीय आवेग) में उत्पन्न हुए परिवर्तन नियतः ही शारीरिक गतिविधि में विकास पा लेते हैं। बाल्डविन के मानसिक गति-विकास के अनुसार, संवेदनात्मक चेतना का शारीरिक गति-चेतना में फलीभूत होने की ओर झुकाव होता है। यह सिद्धान्त संवेदनात्मक एवं शारीरिक गत्यात्मक प्रतिक्रिया काल के प्रारम्भिक अध्ययनों में प्रभावशाली था।

Eccentricity [इक्सेन्ट्रिसिटी] : सनक, सवृत।

व्यक्ति के स्वाभाविक व्यवहार में परिलक्षित बेतुकापन अथवा विचलन जो इस सीमा तक या इस ढंग का हो कि उसे मानसिक विकृति का चिह्न माना जा सके।

Echolalia [इकोलेलिया] : वाक् पुनरावृत्ति।

मानसिक रोग का एक लक्षण। कैटेटोनिया प्रकार का अकाल मनोभ्रंश (Dementia Praecox) होने पर यह लक्षण मिलता है और रोगी यन्त्रवत् जो कहो वही बातें दोहराता है। अन्य द्वारा कहे शब्द तथा वाक्य को दोहराने के लिए भाषा का ज्ञान होना रोगी के लिए आवश्यक नहीं होता। अनैच्छिक, यान्त्रिक रूप से उसकी वह आवृत्ति करता है।

Echopraxia [इकोप्रेक्सिया] : क्रिया पुनरावृत्ति।

अनैच्छिक यांत्रिक रूप से दूसरे की मुद्रा अथवा कार्य-गति का अनुकरण करना। अकाल मनोभ्रंश का यह लक्षण है। कैटेटोनिया प्रकार का आक्रमण होने पर रोगी अन्य व्यक्तियों की जो भाव-मुद्रा तथा कार्य-गति देखता है उसका अनुकरण करता है।

Eclecticism [इक्लेक्टिसिज्म] : विविध सिद्धान्तों को मिलाने या निष्क्रिय रूप में प्रस्तुत करने का सिद्धान्त या प्रवृत्ति।

यह उन विचारकों में विशेषतः पाई जाती है जिनमें मौलिकता नहीं होती। इसमें विरोधमूलक सम्प्रदायों में एकता स्थापित करने का निश्चित प्रयत्न किया गया है। एलेक्ज़ेन्ड्रियन सम्प्रदाय वालों द्वारा यह सिद्धान्त प्रयोग में लाया गया है जिसमें प्राचीन और पाश्चात्य विचारों का मिश्रण है। मनोविज्ञान में यह विचारधारा २०वीं शताब्दी के द्वितीय-तृतीय दशक में मिलती है। विचारों के मिलने की प्रक्रिया विभिन्न मनोविज्ञान के सम्प्रदायों में मिलती है—जैसे मनोविश्लेषण और व्यवहारवादी सम्प्रदायों के योग का प्रयास, और गेस्टाल्ट-

वादी और व्यवहारवादी विचारधाराओ के योग का प्रयास था। परिपक्वता, भाषा निर्माण और क्रियात्मक कुशलता व विकास वस्तुगत अध्ययन का योग चरित्र निर्माण व्यक्तित्व शैली से हुआ। आधुनिक अमेरिकन नैदानिक मनोविज्ञान Clinical Psychology) म विविध दृष्टिकोण और अन्वेषण दृष्टिगत होते है जो कि भिन्न भिन्न साधनो से जो सहायक सिद्ध हो सके हैं उनसे बने हैं। व्यवहारवादियो के दृष्टिकोण से किया गया प्रयोगात्मक अध्ययन जिसकी विशेषता दृष्टिकोण की भिन्नता है उपचारक यह भी देखना है कि उसी बालक म क्रमबद्ध आन्तरिक सम्बन्ध जो कि गेस्टाल्ट की विशेषता है कहाँ तक है। वुड्वर्थ ने जो मध्यममार्गी है इसका अच्छा उदाहरण दिया है और उन्हे अमेरिका और इगलैण्ड के समसामयिक मनोवैज्ञानिको का अनुमोदन प्राप्त हुआ।

Ecology [इकॉलोजी] परिस्थिति विज्ञान।

विज्ञान की वह शाखा जिसमे पौधा तथा जीव का जिस वातावरण मे वे हैं उसके सम्बन्ध म अध्ययन किया जाता है। मानवशास्त्र मे इस धारणा का उपयोग जीव और प्राकृतिक वास (हैबिटाट) म क्या सम्बन्ध है तथा मानवी संस्कृति भौगोलिक वातावरण के अनुकूल होती है इस प्रसग म हुआ है। समाज मनोविज्ञान मे यह पद क्षेत्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक भावना के प्रसग म हुआ है जिनकी उदभूति सामाजिक परिस्थितियो म पारस्परिक क्रिया प्रतिक्रिया द्वारा होती है।

Educational Age [एजुकेशनल एज] शैक्षिक-आयु।

वह आयु जिसके उपयुक्त शिक्षा निष्पत्ति परीक्षण परीक्षार्थी सफलतापूर्वक कर पाता है। किसी आयु के उपयुक्त वह परीक्षण कहा जायगा जिसे उस आयु का मध्यक विद्यार्थी सफलतापूर्वक कर लेता है। किसी व्यक्ति की शैक्षिक आयु की उसकी वर्षक्रम आयु से तुलना करने पर उसकी शिक्षात्मक योग्यता मे बढे हुए अथवा पिछडे हुए होने का पता चल जाता है। शैक्षिक आयु का दो रूप मे उपयोग किया गया है—सामान्य शैक्षिक आयु के रूप म एव विशेष पाठ्य विषय आयु के रूप मे। सामान्य शिक्षा आयु विद्यार्थी के सम्पूर्ण शिक्षा कार्यक्रम से सम्बन्धित निष्पत्ति का स्तर बताती है। विशेष विषय आयु कई प्रकार की होती है जैसे भाषा आयु, पठन आयु, अक गणित आयु आदि, और एक-एक पाठ्य विषय के क्षेत्र मे अलग-अलग मापी जाती है। इन दोनो मे से किसी प्रकार की शैक्षिक-आयु को परीक्षार्थी की वर्षक्रम आयु से भाग देने पर उसकी सामान्य शिक्षालब्धि, भाषालब्धि, पठनलब्धि, अकगणित लब्धि आदि का परिगणन किया जाता है।

Educational Guidance [एजुकेशनल गाइडेन्स] शैक्षिक निर्देशन।

उपयुक्त प्रमाणीकृत विधियो द्वारा वस्तु स्थिति के आधार पर व्यक्ति के गत अर्जन, उपलब्धि, समर्थता, योग्यता तथा रुचि के अनुरूप उसे शिक्षण की योजना बनाने तथा उपयुक्त शिक्षा ग्रहण करने मे सहायता पहुँचाना।

शिक्षा के चार प्रमुख प्रकार हैं साहित्यिक, वैज्ञानिक, रचनात्मक, तथा सौन्दर्यानुभूति सम्बन्धी। सबमे सब प्रकार की शिक्षा प्राप्त करने की योग्यता समान नही होती, किसी मे कोई योग्यता अधिक होती है और किसी मे किसी दूसरे प्रकार की। अपनी योग्यता-क्षमता के अनुरूप शिक्षा मिलने से व्यक्ति अधिक सफल होता है। योग्यता-क्षमता के प्रतिकूल शिक्षा मिलने पर वह असफल होता है। शैक्षिक निर्देशन आवश्यक है। इसम अभिभावक, शिक्षक तथा मनोवैज्ञानिक के सम्मिलित सहयोग की आवश्यकता है।

Educational Guidance Test [एजुकेशनल गाइडेन्स टेस्ट] शैक्षिक

निर्देशन परीक्षण ।

वे परीक्षण-विशेष जिनके द्वारा व्यक्ति की शिक्षा-सम्बन्धी उपलब्धियों, समर्थता, रुचि, बुद्धि इत्यादि का पता लगाया जाता है ।

Educational Psychology [एजुकेशनल साइकॉलोजी] : शिक्षा-मनोविज्ञान ।

मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमें शिक्षा-सम्बन्धी केवल मनोवैज्ञानिक अन्वेषण और सिद्धान्तों का ही अध्ययन नही होता प्रत्युत शिक्षक, शिक्षार्थी और उनके पारस्परिक सम्बन्धों से उत्पन्न होनेवाली अन्यान्य समस्याओं का भी मनोवैज्ञानिक अध्ययन होता है। शिक्षा मनोविज्ञान का सैद्धान्तिक और व्यावहारिक पक्ष दोनो है। *शिक्षा-मनोविज्ञान की समस्याओं* को तीन प्रमुख वर्गों मे बाँटा जा सकता है: (१) व्यवहार-सम्बन्धी—जन्मजात क्षमताएँ, मूलप्रवृत्तियाँ, सहजप्रवृत्तियाँ, धातुस्वभाव, प्रेरक, व्यवहार-नियन्त्रक, संवेग, स्थायीभाव, आदि, (२) अर्जन-सम्बन्धी—अभ्यास, प्रेरक, सीखने की विधियाँ, सीखने का स्थानान्तरण, विषयों की मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ, आदि; (३) व्यक्तिगत भिन्नताओं से सम्बन्धित—व्यक्ति की वृद्धि और विकास का क्रम, विकास के विभिन्न स्तर, रूप और विशेषताएँ आदि।

शिक्षा के दो प्रमुख उद्देश्य है : (१) शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण और समुचित विकास, (२) शिक्षार्थी को उसके वातावरण के प्रति अधिक-से-अधिक अभियोजनशील बनाना। इन उद्देश्यो की पूर्ति तभी सम्भव है जबकि शिक्षक तथा अभिभावक स्वय अपने को समझें। शिक्षक बालकों की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को समझे और यह कि बालको के सर्वतोमुखी विकास के लिए उन्हे कौन-सा ढग अपनाना चाहिए। शिक्षा-मनोविज्ञान के अध्ययन से शिक्षकों और अभिभावको मे यह समर्थता विकसित होती है।

Efferent Nerve [एफेरेन्ट नर्व] : अपवाही-तन्त्रिका ।

एक प्रकार की नाडी विशेष जो केन्द्रीय तत्रिका-तत्र से प्राप्त प्रवाहो को प्रभावक अगो (मास-पेशियो, ग्रन्थियों आदि) की ओर ले जाती है। (दे० (Nervous System)।

Efferent Conduction System [एफेरेन्ट कन्डक्शन सिस्टम] : अपवाही सवहन तत्र ।

स्नायविक प्रणाली मे वे स्नायविक प्रवाहन मार्ग जिनके द्वारा बहिर्गामी आवेग मस्तिष्क केन्द्रो से कार्यकारी अगो तक आते हैं। क्रियावाही या बहिर्गामी ततु आवेगो को मस्तिष्क से लेकर सुषुम्ना नाडी से होते हुए कार्यकारी अगो से सक्रमण करते है।

Effect, Law of [लॉ ऑफ एफेक्ट] : परिणाम-नियम ।

सीखने का यह एक महत्वपूर्ण नियम-सिद्धान्त है जिसका आविष्कार थार्नडाइक ने किया है। यह बहुत कुछ सुखवाद (दे० Hedonism) पर आधारित है और इन सबसे प्रभावित होकर हल ने अपनी रीइन्सफोर्समेंट की धारणा की नीव डाली। परिणाम-नियम के अनुसार कोई क्रिया जो किसी परिस्थिति-विशेष मे सन्तोषप्रद सिद्ध होती है वह उसी पूर्ववर्ती परिस्थिति के साथ सहचरित हो जाती है जिससे कि जब वह परिस्थिति पुनः उपस्थित होती है तो उस क्रिया की पुनः घटित होने की सम्भावना पहले की अपेक्षा बढ जाती है। जो क्रिया वर्तमान परिस्थिति मे असन्तोषप्रद सिद्ध होती है उसका उस परिस्थिति से विघटन हो जाता है जिससे कि जब वह पूर्ववर्ती परिस्थिति पुनः उत्पन्न होती है तो उस क्रिया के घटित होने की सम्भावना पहले की अपेक्षा घट जाती है।

इस नियम पर साधारणतः निम्न आक्षेप किए जाते हैं—१. व्यक्ति ऐसी क्रियाएँ भी सीख लेता है जिन्हे सन्तोषप्रद नही कहा जा सकता तथा पागलो का अपना शरीर नोचना, माथा पटकना आदि।

२ सन्तोष या असन्तोष क्रिया की समाप्ति के पश्चात् मिलता है, अत उसका प्रभाव आगे की क्रियाओ पर पडना चाहिए, न कि पीछे की क्रियाओ पर। ३ व्यक्ति के लिए दण्ड की अपेक्षा लक्ष्य, उद्देश्य आदि अधिक मूल्यवान होते है। टॉलमैन ने अपने प्रयोगो मे दण्डित क्रियाओ को सीखने की अधिक सम्भावना पाई।

Efficiency [एफिसियेन्सी] दक्षता।

यह औद्योगिक मनोविज्ञान की एक प्रमुख समस्या है और इसका अनुमान काय के गुण और परिमाण से लगाया जा सकता है। जो व्यक्ति निर्धारित समय मे दूसरे व्यक्ति से अधिक कार्य परिमाण मे करता है और उसका कार्य गुण विशेष की दृष्टि से भी उच्चकोटि का है, उसमे अधिक दक्षता समझी जायगी।

व्यक्ति की दक्षता पर बाह्य और आभ्यन्तरिक अवस्थाओ का बहुत प्रभाव है। बाह्य मे विश्राम, कार्य करने का समय स्वास्थ्य और जलवायु है, आभ्यन्तरिक मे प्रेरणा, ऊबना, एकाग्रता, सवेगात्मक सामजस्य और अभिरुचि हैं। इन सब अवस्थाओ मे उचित सुधार करने से श्रमिक की दक्षता बढती है। श्रमिक की कार्य-दक्षता वृद्धि के लिए गिलब्रैथ ने एक नई युक्ति, समय-गति-अध्ययन (दे० Time Motion Study) निकाला है जिसका उद्देश्य या कम-से-कम समय मे कम-से-कम हलन-चलन करके कार्य पूरा किया जा सके।

Ego [इगो] . अह।

१ यह पद व्यक्तित्व के आन्तरिक पहलू की ओर निर्देश करता है।

२ किसी समय इस पद का समीकरण स्व (सेल्फ) से भी किया गया जो कि व्यक्ति के अन्दर स्वय या अपने बारे मे अवधारणा के रूप मे होता है।

३ मनोविश्लेषण मे इस पद को इदम् के उस सामाजिकीकरण हुए भाग के लिए प्रयोग किया गया है जो कि यथार्थता या वास्तविकता के ससर्ग मे आता है।

४ यह पद कभी-कभी एक व्यक्ति की उन माहात्म्य प्रणाली से सम्बन्धित क्रियाओ की ओर निर्देश करता है जिनको कि वह प्रिय मानता है, पोषण करता है, जिनकी रक्षा करता है, उनकी मानवृद्धि करने का प्रयास करता है और चाहता है कि दूसरे लोग भी उन माहात्म्यो की प्रतिष्ठा व सम्मान करें।

५ इस पद का 'अहकार' से भी समीकरण किया गया है और इस प्रकार से यह 'स्वयता' की आत्मगत अनुभूतियो की ओर भी निर्देश करता है।

सामान्य अर्थ मे अह से तात्पर्य व्यक्ति का अपने बारे मे अपना विचार है। १८९० मे जेम्स तथा अन्य मनोवैज्ञानिको ने अह शब्द का प्रयोग सेल्फ के अर्थ में किया है। मनोविश्लेपण मे अहम् व्यक्तित्व का वह भाग माना गया है जिसका कार्य इदम् की प्रवृत्त इच्छा-भाव और नैतिक मन के कठोर नियमो मे मध्यस्थता करना है। यह वास्तविकता के सिद्धान्त (दे० Reality principle) से सचालित होता है। बाह्य स्थिति का ध्यान रहने से सुदूरवर्ती सुख का यह अनुगामी है। यह तात्कालिक प्रवृत्त सुख नही चाहता। इसमे सघटन है, योजना है और यह विचारगम्य है। इदम् का सिद्धान्त इसके प्रतिकूल है। यह आशिक चेतन है और आशिक अचेतन। निद्रा मे, सुप्तावस्था मे रहने पर भी इदम् पर इसका प्रतिबन्ध रहता है। जन्मते ही व्यक्ति मे अहम् जैसा कोई तथ्य या भाग नही मिलता। अह का प्रादुर्भाव-विकास वातावरण के सम्पर्क मे आने पर होता है। अज्ञात मन की इच्छाओ पर इसका प्रतिबन्ध बाह्य और वास्तविक जीवन के नियमो के आधार पर रखा जाता है। वस्तुत अहम् इदम् का ही परिवर्धित रूप है जो बाह्य जगत् के प्रभाव का प्रतिफल है, जो चेतना से परिप्लावित है, विचारगम्य है और जिसका कार्य वास्तविकता की कसौटी पर इदम् के कुछ अश को परिवर्तित-परिवर्धित कर और

उन्हे स्वीकार कर अपने में अपनाना है।

Ego Centric [इगो-सेन्ट्रिक] : अहं-केन्द्रित।

हर वस्तुस्थिति को वैयक्तिक दृष्टि-कोण से ही देखने, समझने की प्रवृत्ति तथा अपने ही मे केन्द्रित रहने की प्रवृत्ति। यह विशेषता सामान्यतः बच्चों मे पाई जाती है, यद्यपि कुछ प्रौढ लोगो मे भी इस तरह के लक्षण व्यवहार मे पाए जा सकते है। वस्तुत. प्रौढ का व्यवहार पूर्ण रूप से अपने मे ही केन्द्रित रहने की प्रवृत्ति से भिन्न होना है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी हो, यह आवश्यक नही है।

Ego Involvement [इगो इन्वोल्वमेंट] : अहं अतर्भूतता।

किसी भी कार्य, माहात्म्य या प्रयोजन में, अह की अन्तर्भूतता प्रेरणा के लिए अति आवश्यक है। किसी माहात्म्य या प्रयोजन का स्व के गुणधर्मों में आभ्यतरित हो जाना। वह वैयक्तिक हो जाता है, उसे बाहरी दबाव की अनुभूति नही होती। माहात्म्य और क्रियाएँ पूर्णरूप से वैयक्तिक रूप मे परिवर्तित हो जाती हैं। 'स्व' को कार्य के साथ एकरूप करना।

Egoism [इगोइज़म] : अहवाद।

अहं आत्म है जो न आनुभाविक सिद्धान्त है। साधारणतः यह प्रत्यक्ष अन्तर्दृष्टि के लिए अभेद्य है, किन्तु इसे अन्तर्दृष्टात्मक आधार पर अनुमानित किया जाता है। विशुद्ध अह के मुख्य सिद्धान्त निम्न प्रकार हैं : 'आत्मा सिद्धान्त'—जिसमे विशुद्ध आत्मा को स्थायी आध्यात्मिक तथ्य माना गया है जो अस्थायी क्रमिक चेतन अनुभूतियों का आधारभूत है। २. कांट का 'इन्द्रियातीत सिद्धान्त' जिसमे स्व को अज्ञेय कर्ता माना गया है जो आनुभाविक आत्म-चेतना की एकता मे प्राग् प्रस्तावित है।

मनोवैज्ञानिक स्वार्थ वह सिद्धान्त है जिसके अनुसार प्रत्येक ऐच्छिक क्रिया का निश्चय रूप से प्रमुख प्रेरक, यद्यपि अप्रत्यक्ष है, परन्तु अपने लाभ की इच्छा-मात्र है। यह मनोवैज्ञानिक सुखवाद सादृश्य है।

Ego Libido [इगो लिबिडो] : अहं लिबिडो, अह कामशक्ति।

यह धारणा मनोविश्लेषण में फ्रायड द्वारा प्रतिपादित और निर्मित की गई है। यह कामशक्ति का अहं पर केन्द्रित होना है। तब कामशक्ति का बाह्य विषय-वस्तु से सम्बन्ध नही रह जाता। व्यक्ति एकाकी जीवन-प्रिय हो जाता है। ऐसा होने पर व्यक्ति का व्यवहार और व्यक्तित्व कभी विकृत भी हो सकता है। सविभ्रम (Paranoia) मे व्यक्ति की कामशक्ति का पूर्णतः अन्तर्मुखीकरण हो जाता है और अकाल मनोभ्रंश (दे० Dementia Praecox) मे यह अवस्था दृष्टिगत होती है।

Eidetic Imagery [आइडेटिक इमेजरी] : मूर्तकल्पी प्रतिमावली।

यह एक विशिष्ट रूप से पर्याप्त स्पष्ट प्रकार की कल्पना-प्रतिमा है जिसका स्थान तीव्रता और विभिन्न प्रकार की विशेषताओ की दृष्टि से अनुप्रतिमा और स्मृति प्रतिमा के बीच मे पडता है।

इसकी उपस्थिति से सकेत होता है:—

१. व्यक्तित्व के विकास की एक श्रेणी—इस प्रकार का तथ्य करीब-करीब सर्वत्र रूप से बच्चों मे मौजूद है। लेकिन तारुण्यावस्था तक लुप्त हो जाता है। कुछ व्यक्तियो मे यह तथ्य लम्बे समय तक घटित होता रहता है।

२. इस प्रकार की जीव-रासायनिक रचना व्यक्तित्व के एक प्रकार की ओर सकेत करती है जो विचारात्मक प्रकार की या आइडेटिक शरीर-सगठन के नाम से प्रसिद्ध है।

इस उपकल्पना के अनुसार व्यक्तित्व-विकास की प्रक्रिया सजातयता (homogeneity) से विषम जातीयता (heterogeniety) के विभेदन में सन्निहित है। विचारात्मक कल्पना उस विकासीय स्तर की ओर सकेत करती है जहाँ कि वस्तु-बोध, स्मृति-प्रतिमा का एक-दूसरे से अभी विभेद नही हुआ है। मूर्तकल्पी प्रतिमा-वली दो तरह की होती हैं। एक तो 'टी-

प्रकार' जो कि दृढ होती है परिवर्तन कठिनता से होता है दूसरी 'बी प्रकार' जो कि दृढ नही होती है और परीक्षार्थी के वश मे होती है तथा आसानी से परिवर्तित हो सकती है। ये दोनो मूर्तकल्पी प्रतिमावलियाँ दो प्रकार के व्यक्तित्व की ओर इंगित करती हैं।

Einstellung [आइन्स्टेलुंग]।

जमन भाषा का एक शब्द जिसका अर्थ अंग्रेजी शब्द सेट और हिन्दी शब्द 'मुद्रा' से अथवा सचालन प्रवृत्ति से है जिससे जीव एक प्रकार की शारीरिक अथवा चेतनात्मक क्रियाशीलता के योग्य हो जाता है। इसमे ज्ञानात्मक अथवा शारीरिक क्रिया की तैयारी मे, एक विशिष्ट प्रकार के स्नायु पेशिक-अभियोजन अथवा प्रस्तुतता की आवश्यकता होती है।

इसको जमन शब्द आउफगाबे' (Aufgabe) जिसका अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द 'टास्क' और हिन्दी शब्द 'कार्य' है, से भिन्न समझना चाहिए क्योंकि 'आउफगाबे चेतनात्मक होता है जबकि 'आइन्स्टेलुंग' सामान्यत अचेतनात्मक होता है। इस प्रकार से, 'आउफगाबे' 'आइन्स्टेलुंग' का कारण हो सकता है। इस तरह से, किसी प्रतिक्रियाकाल माप (Reaction time experiment) प्रयोग मे दिए गए आदेश परीक्षार्थी के अन्दर इन्द्रियात्मक या पेशिक प्रतिक्रिया मुद्रा (Reaction set) उत्पन्न कर सकते है।

Elementism [इलेमेन्टिज्म] तत्ववाद।

देखिए—Atomism

Electra Complex [एलेक्ट्रा काम्प्लेक्स] एलेक्ट्रा मनोग्रंथि।

एलेक्ट्रा ग्रंथि पिता पुत्री के पारस्परिक सम्बन्ध के बारे की एक प्राथमिक मनोविश्लेषणात्मक धारणा। मनोविश्लेषण के अनुसार पिता पुत्री मे सवेगात्मक, कामुक प्रकार का आकर्षण होता है। स्वभावत पुत्र माँ की ओर और पुत्री पिता की ओर आकर्षित होती है। पुत्री का पिता की ओर भावुक रुख अथवा रुझान होने से उसमे भाव-ग्रन्थि पडती है जो 'एलेक्ट्रा काम्प्लेक्स' के नाम से विख्यात है। यह शब्दावली ग्रीक पौराणिक कथा पर आधारित है।

Electrophysiology [इलेक्ट्रोफिजिऑलोजी] विद्युच्छरीर क्रिया-विज्ञान।

शरीर विज्ञान की एक शाखा, जिसमे शरीर के अगो की क्रियाओ और पूर्णदेह व्यापारिकी प्रणाली का अध्ययन उन यन्त्रो द्वारा, जो कि जैविक विद्युत तथ्य की माप करते है। जैसे, प्रातस्था कोशिकाओ (cortical cells) की विद्युत क्रिया, तत्रिकीय सवहन मे वैद्युत रासायनिक परिवर्तन, दृष्टिपटल मे होने वाला फोटो वैद्युतीय तथ्य।

E S T. [ई० एस० टी०] वैद्युत्-चिकित्सा।

उपचार की इस विधि का अन्वेषण डाक्टर सरलेटी और बिनी ने किया है। *यह अब मानसिक चिकित्सा उपचार की* एक अत्यधिक प्रचलित विधि बन गई है। इसमे रोगी को मस्तिष्क पर १०० या २०० वोल्टेज तक का सेकेण्ड के $\frac{1}{5}$ या $\frac{1}{10}$ हिस्से मे विद्युत आघात दिया जाता है। यह आघात देने पर रोगी को मूर्च्छा आ जाती है और उसमे एपीलेप्सी के सभी लक्षण दृष्टिगत होते हैं। दो-तीन मिनट तक कंपन होते है, फिर रोगी शान्त पड जाता है और उसकी मूर्च्छा दूर हो जाती है। रोगी की प्रवृत्ति और प्रतिक्रिया के अनुसार विद्युत मे कम या अधिक वोल्टेज रखने की व्यवस्था की जाती है। मूर्च्छा हटने पर रोगी को विद्युत-आघात की जो अनुभूतियाँ होती हैं उनकी कोई स्मृति नही रहती। उदासीन प्रकृति और प्रकार के रोग पर इसका प्रयोग अधिक सफल होता है। यह कैटेटोनिया मे सफल होता है। विद्युत-आघात का प्रभाव मस्तिष्क और उसके कोश और स्नायु पर अत्यधिक पडता है। कुछ स्नायु-सम्बन्ध नष्ट हो जाते है और कुछ जुटते हैं जिससे सम्भव है कि व्यक्तिगत व्यवहार समायोजित हो

जाए।

Embryo [एम्ब्रो] : भ्रूण।

गर्भस्थ-शिशु का पूर्णतः अविकसित रूप जो उसके प्राण धारण के तीसरे सप्ताह के प्रारम्भ से लेकर आठवें सप्ताह के अन्त तक माना जाता है। विकास की यह अवस्था भ्रूणावस्था कहलाती है। दो सप्ताह का भ्रूण एक सूक्ष्म मांसपिण्ड से अधिक कुछ नही मालूम होता। विकास की प्रारम्भिक अवस्था मे इस मांसपिण्ड के पृष्ठ भाग मे एक लम्बी खडी नाली-सी दिखलाई पड़ती है। शीघ्र ही यह नाली बन्द होकर एक ट्यूब का आकार धारण कर लेती है। सर की ओर का इस ट्यूब का सिरा तेजी से बढ़ता है और चौथे सप्ताह के अन्त तक मस्तिष्क के प्रमुख भागो की सृष्टि हो जाती है। इस समय तक मस्तिष्क और सुषुम्ना नाडी का निर्माण करने वाले जीव-कोष स्नायुओं का आकार नही धारण करते। बाद में ये स्नायुओं के रूप में पृथक्-पृथक् फैलते हैं। इसी समय मांसपेशियो और हड्डियो का निर्माण भी आरम्भ हो जाता है। हृदय तीसरे सप्ताह से ही अपना काम करने लगता है। हाथ-पैर भी निकलते है। यद्यपि छः सप्ताह के भ्रूण का भार केवल २ रत्ती के लगभग और उसकी लम्बाई २५ से ३० मिलीमीटर तक होती है फिर भी गर्भाशय का यह प्राणी अब पहले से २०,००० गुना बडा हो चुका होता है। आठवें सप्ताह के अन्त तक उसे देखकर पहचाना जा सकता है कि वह मानव का ही भ्रूण है।

Embryology [इम्ब्रायोलोजी] : भ्रूण-विज्ञान।

गर्भ मे शिशु के जन्मधारण और विकास का क्रमिक एवं वैज्ञानिक अध्ययन। इस सन्दर्भ मे 'एम्ब्रो' (Embryo) शब्द बड़े ही व्यापक अर्थ में प्रयोग किया गया है और इसमें शिशु के विकास की तीनो अवस्थाएँ—बीजावस्था, भ्रूणावस्था और विकसित भ्रूणावस्था—निहित है।

Emotion [इमोशन] : संवेग।

मनोवैज्ञानिक कारणो से उत्पन्न प्राणी के समग्र मनोदैहिक तन्त्र की अत्यधिक उत्तेजित अथवा क्षुब्धावस्था जो उसकी चेतन अनुभूति, व्यवहार और अन्तरावयवों मे एक प्रकार की हलचल-सी मचा देती है, उदाहरणार्थ क्रोध, भय, शोक आदि। संवेगो की अभिव्यक्ति (Expression of Emotions) अथवा अवयव की अत्यधिक उत्तेजित अवस्था या प्रतिक्रिया की प्रवृत्ति जिसकी अभिव्यक्ति विभिन्न रूप से—१, संवेगात्मक अनुभूति, २. संवेगात्मक व्यवहार, ३. शारीरिक परिवर्तनो मे होती है। इस सम्बन्ध में क्रमिक अध्ययन का सूत्रपात चार्ल्स बेल, चार्ल्स डारविन तथा पिडेरिट आदि विद्वानो की खोजो से होता है। उनके अनुसार संवेगात्मक अभिव्यजन आदिम युग की उपयोगी संवेगात्मक चेष्टाओ के अवशेष-मात्र है। संवेगात्मक अभिव्यजन के कई पक्ष हैं : (१) स्वराभि-व्यजन-स्वर अथवा वाणी के उतार-चढ़ाव, तोड-मरोड, गति, गम्भीरता आदि के द्वारा संवेगों की अभिव्यक्ति; (२) मुखाभि-व्यजन—चेहरे पर के भिन्न-भिन्न अंगों यथा आँख, नाक, कान, माथा, मुँह, होठ, भौं आदि की आकृतियों मे परिवर्तन द्वारा संवेगो की अभिव्यक्ति; (३) शारीरिक मुद्राएँ—भिन्न-भिन्न शारीरिक मुद्राएँ भी भिन्न-भिन्न संवेगों के प्रकाशन की प्रतीक मानी जाती है; यथा भय की स्थिति मे दुबक जाना, क्रोध मे तन जाना आदि। (४) अन्य आन्तरिक तथा बाह्य शारीरिक परिवर्तन श्वास-प्रश्वास, नाड़ी की गति एवं हृदय की धड़कन मे परिवर्तन; रक्त-चाप, रक्त-संचालन एवं उसके रासायनिक मिश्रण मे परिवर्तन, ऐड्रिनल-ग्रन्थि की अत्यधिक सक्रियता, पाचन-तत्र में गडबडी, स्वायत्त तंत्रिका की कार्य-प्रणाली मे परिवर्तन, हाइपोथैलेमस की सक्रियता, प्रमस्तिष्क (बृहद्मस्तिष्क) की क्रियाओं मे परिवर्तन आदि।

संवेग-सिद्धान्त (Theories of emo-

tion)—तीन प्रमुख सिद्धान्त है (१) सामान्य सिद्धात—इसके अनुसार व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक परिस्थिति के प्रत्यक्षण के फलस्वरूप पहले सवेगात्मक अनुभूति होती है तब शारीरिक परिवर्तन, यथा हम दुखी होते हैं तब रोते हैं, भयभीत होते है तब भाग खडे होते हैं। (२) जेम्स-लैगे सिद्धान्त—इस सिद्धान्त के अनुसार मनोवैज्ञानिक परिस्थिति मे व्यक्ति म पहले शारीरिक परिवर्तन होते हैं और फिर उन शारीरिक परिवर्तनो की मानसिक अनुभूति ही सवेग के रूप म प्रकट होती है, यथा हम रोते हैं इसलिए दुखी होते हैं, भागते हैं इसलिए भयभीत होते हैं। (३) हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त—मनोवैज्ञानिक परिस्थिति के प्रत्यक्षण का सीधा प्रभाव हाइपोथैलेमस पर पडता है। फलत हाइपोथैलेमस मन और शरीर दोनो मे स्नायु-प्रवाहो को प्रवाहित कर तत्सम्बन्धी परिवर्तनो को उत्पन्न करता है।

सवेगात्मक प्रतिमान (emotional pattern) किसी विशिष्ट सवेग के अन्तर्गत प्रकट होनेवाले शारीरिक परिवर्तनो का प्रतिमान। नवजात शिशु मे सवेगात्मक व्यवहार अत्यधिक अविकसित रूप म पाया जाता है। अवस्था मे वृद्धि के साथ साथ उसके व्यवहार मे धीरे-धीरे भिन्न भिन्न प्रकार के सवेगो से सम्बन्धित विशिष्ट व्यवहार का आभास मिलता है। इसी को सवेग-प्रतिमानो का पृथक्करण कहते हैं। इन भिन्न सवेग-प्रतिमानो का अवस्था के अनुरूप भिन्न-भिन्न रूपो म प्रकट होना तथा परिवर्तन और परिमार्जन 'सवेगात्मक प्रतिमानो का विकास' कहलाता है।

सवेगात्मक स्थिरता (emotional stability)—व्यक्ति म सवेगो का स्वस्थ और सतुलित विकास। यह निम्न बातो पर निर्भर है (१) उत्तम स्वास्थ्य, (२) अभिभावको का उचित दृष्टिकोण, (३) अत्यधिक उत्तेजक घटनाओं से बचना, (४) सवेगो के प्रकट-अभिव्यजन का अन्तर्लयन तथा (५) उद्दीपक उत्तेजनाओ की पुनर्व्याख्या।

सौन्दर्यबोध सम्बन्धी सवेग (Aesthetic Emotion)—किसी सुन्दर प्राकृतिक दृश्य अथवा कलाकृति के प्रत्यक्षीकरण के समय अनुभूत सवेग।

सवेगात्मक अभिनति (emotional bias—तथ्यो पर विचार, उन पर चिन्तन-मनन करते समय सवेगात्मक वृत्ति से प्रभावित एव निर्देशित होना।

Empiricism [एम्पिरिसिज्म] अनुभववाद।

वह दार्शनिक सिद्धात जिसके अनुसार ज्ञान का माध्यम इन्द्रियाँ हैं। यह मनोविज्ञान के सवेदनवाद (sensationism) और साहचयवाद (Associationism) के अनुरूप है। अनुभववादी के अनुसार प्रत्यक्षीकरण सवेदनाओ और प्रतिमाओ का साहचर्य है। अनुभववाद के प्रमुख समर्थक हौब्स लॉक बर्कले, ह्यू म तथा हार्टले, फ्रास म कॉन्डीलिक, लामट्री और बीने, स्कॉटलैंड मे रीड, थॉमस ब्राउन, और इग्लड म जेम्स, जॉन स्टुअर्ट मिल तथा बेन हैं। उन्नीसवी शताब्दी के दैहिक मनोवैज्ञानिको हैलर, सर चार्ल्स बेल, जोहनेस मिलर लॉट्ज और वुट ने अनुभववाद को दैहिकी रूप दिया। शरीर-वेत्ताओ की दैहिकी व्याख्या और दार्शनिको के सवेदनात्मक मनोविज्ञान का अत मे समन्वय हुआ। हेल्महोल्त्ज और वुट का अनुभववादी मनोविज्ञान इस समन्वय का प्रतिनिधित्व करता है।

चाक्षुष प्रत्यक्ष (visual perception) की समस्या के प्रसग मे आनुवशिकतावाद (Nativism) अनुभववाद म हुआ है। हौब्स और लॉक की परम्परा के अनुभववादियो ने यह स्थापित किया कि मन जन्मजात नही प्रत्युत अनुभवजन्य है। बर्कले पहला अनुभववादी था जिसने यह प्रमाणित करने का प्रयास किया कि प्रसार का प्रत्यक्ष मूर्त पदार्थो की गति के प्रत्यक्ष पर जो कि अनुभव मे स्पर्श और दृश्य

संस्कारों के साथ सहचरित हो जाता है, पर आधारित है। ब्राउन लॉटजे, हेल्महोल्ज, वुट इत्यादि साहचर्यवादी शुद्ध अनुभववादी परम्परा का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने आनुवंशिकतावाद का स्पष्ट खंडन किया है। बीसवीं शताब्दी के मनोविज्ञान में प्राकृत बोधवाद और अनुभववाद की समस्याएँ नहीं मिलती। अब प्राकृत बोधवाद की समस्या ने घटना-विज्ञान (Phenomenology) का रूप ले लिया है और अनुभववाद ने व्यवहारवाद (दे० Behaviorism) तथा सक्रियावाद (दे० Operationism) का रूप ले लिया है।

Empirical Psychology [एम्पिरिकल साइकॉलोजी] : आनुभविक मनोविज्ञान।

देखिए—Empirical Science.

Empirical Science [एम्पिरिकल साइंस] : आनुभविक विज्ञान।

अनुभव पर आधारित विज्ञान जिसमें निरीक्षण तथा व्यवस्थित प्रयोग की प्रणाली प्रयुक्त की गई है। आनुभाविक मनोविज्ञान प्रयोग तथा निरीक्षण पर आधारित होता है और यह तार्किक मनोविज्ञान से सर्वथा भिन्न है जो सामान्य दार्शनिक सिद्धांत से निष्कर्षित निगमन (deduction) पर आधारित है। कभी-कभी आनुभाविक मनोविज्ञान प्रायोगिक मनोविज्ञान (दे० Experimental Psychology) से विभिन्न स्थापित किया जाता है जिसमें तर्क कम होता है और वर्णन अधिक किया जाता है।

Encephalon [एन्सेफालॉन] : मस्तुलुंग। प्रमस्तिष्क का एक पर्यायवाची शब्द।

Engram [एन्ग्राम] : संस्कारांकन।

ऐसी अदृश्यस्मृतिछाया या स्मृति-चिह्न (Memory Trace) जिसको कि कोई एक दिए हुए पूर्वकालीन अनुभव के परिणामस्वरूप मस्तिष्क में चिह्न-स्वरूप में, छूटा हुआ कहा जाता है।

Encephalitis Lethargic[एन्सेफालिटिस लेथारजिक] : तंद्रामय मस्तिष्कशोथ।

मस्तिष्क में दाह या शोथ (inflammation) मन्दक मस्तिष्क शोथ का पूरा वर्णन एकनामों (१९२९) ने किया था यद्यपि सबसे पहला केस १९१५ में घटित हुआ था। इसके भिन्न-भिन्न रूप होते हैं। रोग के कारण बहुत ही अस्पष्ट और गूढ़ हैं। लक्षण जटिल होते हैं। मनोवैज्ञानिकों के द्वारा बताए हुए लक्षण ये हैं—उदासीनता, नैतिक चरित्र में परिवर्तन, सीखी हुई क्रियाओं का प्रविदारण, सकम्प पक्षाघात रोग, अवगुण्ठित मुखाकृति और प्रतिक्षेपों में विक्षोभ। इसके बाद के प्रभाव के विकृत लक्षण सिर-दर्द, अनिद्रा, स्मृति विक्षोभ, प्रकम्प आदि हैं।

Endocrines [एन्डोक्राइन्स] : अंत.स्रावी ग्रंथि।

ऐसे बहुकोशीय, प्रणालीहीन अंग जो कि सीधे रक्त में स्रावित होकर शरीर के दूसरे अंगों को प्रभावित करते रहते हैं। इस स्रावों की पदावली का उपयोग स्थिर रूप से नहीं होता है। लेकिन कुछ लेखक, उत्तेजना प्रदान करनेवाले स्रावों को 'आटोकायडस' (Autocoids) और रोध उत्पन्न करनेवाले स्रावों को 'चालोन्स' (Chalones) कहते हैं। तथा दूसरे लोग इन स्रावों को चाहे रोध या उत्तेजक प्रकृति के हों न्यासर्ग (Hormones) कहते हैं। इसमें मुख्य ग्रंथियाँ गलग्रंथि अंग, (Thyroid gland) पोष ग्रंथि अंग, गोनैड, पिनियल और एड्रिनल हैं। इनका प्रभाव मानव के व्यक्तित्व, भाव-संवेग और व्यवहार पर अत्यधिक पड़ता है।

Endopsychic Censor [इन्डोसाइकिक सेन्सर] : नैतिक प्रतिबन्धक।

यह आभ्यन्तरिक क्षेत्र का द्वारपालक है। (फ्रायड) यह ईषद् ज्ञात और अज्ञात मन के बीच एक दीवार के रूप में है जिसका प्रमुख कार्य अज्ञात मन की वर्जित इच्छाओं को चेतना में प्रवेश न करने देना है। इसकी मुहर लगने पर ही अज्ञात मन के विषय-वस्तु-तथ्य की चेतना हो पाती है। यह इसका सूचक है कि अहं और नैतिक मन व्यक्तित्व और उसकी प्रतिक्रियाओं के

प्रसंग मे बहुत प्रभावशाली है। प्रतिबन्ध होने से अज्ञात मन को इच्छाएँ चेतना मे नही आ पाती तब छद्म रूप मे प्रयास होता है। अज्ञात मन कुछ ऐसी चाल चलता है कि नैतिक प्रतिबन्धक मूल तथ्यो के वास्तविक रूप को नही समझ पाता और वर्जित निष्कासित इच्छाओ पर प्रतिबन्ध होते ही उनका अभिव्यक्तीकरण हो जाता है। अज्ञात इच्छाओ का विकृत होना अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक है। अज्ञात इच्छाओ पर अनेक आन्तरिक प्रतिबन्ध देखकर इस धारणा की कल्पना फ्रायड ने की है। यह कपोल कल्पना नही। फ्रायड की यह धारणा दूरदर्शी है और इसकी सहज ही अनुभूति होती है। मानसिक विरेचन हो जाने पर ज्ञात और अज्ञात मे स्वतन्त्र आदान प्रदान होने लगता है।

Enuresis [एन्युरेसिस] अनैच्छिक मूत्रस्राव।

तीन वर्ष की अवस्था के पश्चात् भी बालक का अपनी मूत्र क्रिया पर नियत्रण न प्राप्त कर पाना और अनजाने ही प्राय सोते मे तथा कभी-कभी जागते हुए भी मूत्रत्याग कर देना 'अनैच्छिक मूत्रत्याग' है। यह मूत्र-त्याग प्राय मूत्र-त्याग-सबधी अथवा यौन-सम्बन्धी स्वप्नो के साथ होता है। कभी-कभी यह विकृति प्रौढो मे भी पाई जाती है।

बालको मे अनैच्छिक मूत्र-त्याग के प्रमुख कारण निम्न है (१) चिन्ता, (२) वात्सल्य का अभाव, (३) मूत्र-त्याग सम्बन्धी आनन्दानुभूति की इच्छा, (४) अविभावको के प्रति (प्राय अचेतन) आक्रामक [illegible] (५) [illegible] कामेच्छा, (६) मनोदौर्बल्य [illegible] दैहिक अथवा सवेगात्मक अपरिपक्वता [illegible]

प्रौढो मे यह विकृति [illegible] युक्त तथा अपूर्ण [illegible] को पूर्ण उपेक्षा अथवा [illegible] से [illegible] ही प्रतिफल है, चिन्ता, [illegible] क्वता के प्रतीक सामान्य सवेगात्मक अपरिप[illegible]

के रूप मे भविष्य मे भी यह बनी रहती है।

अनैच्छिक मूत्रस्राव का उपचार रोगी की अवस्था, उसके मनोदैहिक विकास तथा विकृति के स्वरूप को ध्यान मे रखते हुए किया जाता है। इसमे रोगी का उपचार सम्बन्ध प्रत्यावर्तन (Conditioning) की विधि से सम्भव है। ऐसी अवस्था मे विद्युत-तरग का आघात देने पर वह जाग जाता है। इस विकृति के लिए मानसोपचार (Psychotherapy) की विधि ही अधिक श्रेयस्कर और उपयोगी है।

Environment [एन्वायरनमेट] परिवेश।

भौतिक, रासायनिक, जैव तथा सामाजिक तत्त्वो की वह समग्रता जिसमे व्यक्ति सन्निहित है और जिसका जीवन पर विशाल प्रभाव पडता है। परिवेश के दो भाग हैं· जन्म के पूर्व का परिवेश और जन्म के बाद का वातावरण। जन्म के पूर्व के परिवेश के भी दो पक्ष हैं—(१) बीजकोषान्तर्गत जब कि व्यक्ति एक बीजकोष के रूप मे ही अपनी माँ के गर्भ मे रहता है और उस कोष मे ही वर्तमान रासायनिक तरल का उस पर प्रभाव पडता है, (२) अन्तर्कोषीय परिवेश जब एक बीजकोष अनेकानेक कोषो मे विभक्त हो जीव का निश्चित आकार धारण करने के क्रम मे होता है। इनमे से प्रत्येक कोष साथ के दूसरे कोषो से प्रभावित होता है। जन्म के उपरान्त बालक नितान्त भिन्न भौतिक तथा सामाजिक परिवेश मे आता है। इस परिवेश की शक्तियाँ भिन्न-भिन्न रूपो मे उस पर अपना प्रभाव डाल उसे अपने प्रति अभियोजित करती रहती हैं। व्यक्ति बराबर इनसे सघर्ष-रत रहता है।

परिवेश के अध्ययन से निम्न महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकले हैं—(१) बालक के माँ के गर्भ मे आने के साथ साथ ही परिवेश का प्रभाव भी उस पर पडने लगता है। (२) बालक की अवस्था जैसे-जैसे बढती जाती है परिवेश का प्रभाव भी उस पर और

भी गहरा होता जाता है। (३) एक ही वंशपरम्परा प्राप्त शिशु-वृद्ध यदि भिन्न परिवेश में पाले जाएँ तो उनके व्यवहार मे कुछ-न-कुछ भिन्नता अवश्य आ जाएगी।

Enviornmentalism [एनवायरनमेन्टेलिज्म] : परिवेशवाद।

संक्षेप मे इस विचारधारा में वंशपरम्परा के विरोध और परिवेश को महत्ता दी गई है। वॉटसन का व्यवहारवाद (Behaviourism) प्रसिद्ध है। वॉटसन ने मूल प्रवृत्तियों तथा वंशपरम्परागत मानसिक विशेषताओं के अस्तित्व को नही माना है। वॉटसन का यह दृष्टिकोण है कि परिवेश पर नियत्रण रखने की स्वतन्त्रता होने पर व्यक्ति किसी भी बालक को, उसे शिक्षित करके जिसमे चाहे उसे कुशल बना सकता है, जैसे डाक्टर, वकील, कलाकार इत्यादि। उसके निर्माण मे उसके वंशज की प्रच्छन्न विशेषताएँ, भावनाएँ, योग्यताएँ, महत्वपूर्ण नही होती।

अति परिवेशवाद का समर्थन आधुनिक मनोविज्ञान मे नही किया गया है, तथा यह तथ्यो द्वारा प्रमाणित नहा हुआ है। मनोविज्ञान मे अति वंशपरम्परावाद (extreme hereditarianism) जो उन्नीसवी शताब्दी की प्रमुख विशेषता है, के विरोध के रूप मे यह एक संशोधित विचारधारा है। वर्तमान रूप इस प्रकार संक्षिप्त किया जा सकता है : "व्यवहार को जीव (biological organism) से परिवेश मे अनुमानित किया जाय; अर्थात् व्यवहार व्यक्ति के संरचना और परिवेश की क्रिया है—B=f(PE)

Epilepsy [एपिलेप्सी] : मिर्गी, अपस्मार।

इस शब्द का अर्थ है 'टु ले होल्ड आफ'। यह कनवलसिव विकृति है; यह चिरकालिक है। इसमें साँस रुकना, मुँह में फेन आना, अचेतनता, रोना, क्लौनिक ट्वीचिंग इत्यादि लक्षण मिलते है। इसका आक्रमण अधिकतर रात्रि में होता है। रोगी प्रकृति से आवेगशील, स्वकेन्द्रित, चिड़चिड़े, विषादमय होते हैं।

शार्पो ने दो प्रमुख प्रकार के आक्रमण का उल्लेख किया है : (१) ग्रैण्डमल सीजर और पेटिटमल सीजर। ग्रैण्डमल मे औरा, टौनिक क्लोनस और कोमा मिलता है; पेटिटमल का रोगी निर्णयहीन और अव्यवस्थित होना है, चेतना लुप्त-सी हो जाती है; किन्तु वह पूर्णत. अचेतन नहीं होता। ग्रैण्डमल सीजर रोगी कभी-कभी विद्रोहात्मक अपराध करता है और पुनः स्टूपर की अवस्था हो जाती है।

सामान्यत अपस्मार और हिस्टीरिया का रोग एक ही समझा जाता है। इनमे मूल भेद यह है कि अपस्मार के रोगी के मस्तिष्क-तरंग (Brain wave) का नकशा साधारणतया हिस्टीरिया के रोगी से भिन्न होता है। एलेक्ट्रोएन सेफलोग्राफ यंत्र से इसका अनुमान सहज ही लग जाता है। दोनो मे भेद शारीरिक है; मानसिक नही। रोजेनऑफ के अनुसार एपीलेप्सी का मुख्य कारण जन्माघात (Birth trauma) है और इससे सिर पर सूजन आ जाती है। अवयव सम्बन्धी दोष होने से इसका उपचार एक प्रकार से असम्भव है।

Epiphenomenalism [ए'पिफे'नामिनलिज्म] : उपतत्ववाद।

मानसिक और शारीरिक अथवा मन और शरीर के सम्बन्ध से सम्बद्ध दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार मानसिक प्रक्रियाओं का अपना कोई अभिकर्तृत्व नही होता। अर्थात्, कारण शृंखला की पूर्णता शारीरिक पक्ष में ही घटित हो जाती है; मानसिक प्रक्रियाएँ उनकी सहवर्तिनी मात्र हैं। उत्पन्न कार्यफल मे उनके कारण कोई भिन्नता नही आती। यह द्वैतवाद का अत्यधिक बढा-चढा रूप है। अठारहवी तथा उन्नीसवी शताब्दी के प्राग् वैज्ञानिक मनोविज्ञान (Armchair Psychology) मे इसका बोलबाला था।

Epistemology [ए'पिस्टे'मॉलोजी] : ज्ञानमीमांसा।

दर्शन की एक शाखा जिसमें ज्ञान के उद्भव, आकार-प्रकार, विधि और

मान्यता के विषय में अन्वेषण हुआ है। संक्षेप में यह ज्ञान का सिद्धांत है। इसका मनोविज्ञान से जो सम्बन्ध है उस पर विचार करने से ज्ञान-मीमांसा के क्षेत्र की परिभाषा प्रेषित होती है। ज्ञान-मीमांसा और मनोविज्ञान म समीपवर्ती सम्बन्ध है क्योंकि समान रूप से इनका विषय ज्ञानात्मक प्रक्रियाएँ—प्रत्यक्षीकरण, स्मृति, कल्पना, चिंतन और तर्क हैं। किंतु इनमें भेद है (१) मनोविज्ञान का विषय चेतन प्रक्रियाओं का वर्णन और व्याख्या देना है—प्रत्यक्षीकरण जैसी विशेष प्रक्रिया का अन्य चेतन घटना के प्रसंग में वर्णन करना, ज्ञान मीमासा में प्रत्यक्षीकरण के ज्ञानात्मक तथ्य वाह्य वस्तुओं के प्रसंग में अध्ययन किया जाता है। (२) मनोविज्ञान में मन की सभी अवस्थाओं का अन्वेषण होता है जिसमें मानसिक जीवन की ज्ञानात्मक अवस्था भी निहित है, ज्ञान-मीमासा में मे केवल ज्ञानात्मक मानसिक अवस्था का अध्ययन है और यह भी केवल इस दृष्टि से कि इनका ज्ञानात्मक मूल्य-महत्व क्या है। तब भी मनोविज्ञान और ज्ञान-मीमासा ऐसे विज्ञान है जो परस्पर सम्बन्धित हैं और एक दूसरे पर निर्भर है। ज्ञान-मीमासक अन्वेषण मे प्रत्यक्षीकरण, स्मृति, कल्पना, धारणा इत्यादि मनोवैज्ञानिक विवरण नगण्य नहीं हैं, ज्ञानमीमासा में दिए हुए ज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के विश्लेषण से मनोविज्ञानात्मक निर्देशन मिलता है।

Equal Appearing Interval, Method of [इक्वल एपिअरिंग इन्टरवल्, मेथड ऑव] समानर आभास विधि।

मनोभौतिकीय प्रयोगो तथा दैडीय मान निश्चयन की एक विधि, जिसमे प्रयोज्यों के समक्ष कई उत्तेजनाएँ उपस्थापित करके उनको कहा जाता है कि इन उत्तेजनाओं को समान अतरों की श्रमिक गड्डियों मे छॉटकर रख दें। प्रयोज्य को प्रयोग मे उद्दीपना का भली-भाँति निरीक्षण करने के लिए पूरा अवसर और असीमित समय दिया जाता है। प्रत्येक उत्तेजना के विषय मे सब प्रयोज्यों से प्राप्त प्रतिक्रियाओं का माध्य उस उत्तेजना का मनोवैज्ञानिक मान स्वीकार किया जाता है। इस प्रकार प्राप्त सब मान मनोमापन के अतरीय स्तर पर होते है।

Equipotentiality [इक्विपोटेनशियलिटी] समविभवता।

इसका अर्थ है मस्तिष्क अथवा किसी भी अग मे एक हिस्से से दूसरे हिस्से की क्रिया सपादन करने की सामर्थ्य। लैशले की प्रमस्तिष्कीय क्रिया के बारे का समविभवी सिद्धात प्रसिद्ध है और इससे प्राचीन 'विविध क्रिया' (vicarious functions) की धारणा विस्थापित हुई है। अब यह विचारधारा प्रचलित है कि प्रमस्तिष्कीय क्षेत्र उस कार्य को सपादन कर सकता है जो पहले यह सम्पादन नहीं करता था। शल्य-पद्धति (Brain Surgery) प्रयोग द्वारा यह प्रमाणित हो गया है। किसी भी विशेष संवेदनात्मक अथवा क्रियात्मक कार्य के लिए मस्तिष्क का कोई भाग विशेष मात्र महत्व का नहीं होता। जब चूहों के दृश्य अनुकपाल पालि (occipital lobe) पर ऑपरेशन किया गया, अस्थायी रूप से उनमे अधापन आ गया, कुछ हफ्तों बाद उनमे पुन दृश्य-क्रिया सम्पादन होने लगी। मस्तिष्क के विभिन्न भाग मे सम रूप से कार्यसम्पादन करने की सामर्थ्य है।

Ergograph [एरगोग्राफ] पेशीसंकोचन लेखी।

इस अंग्रेजी शब्द का अर्थ है 'कार्य को लिखना या अंकित करना।' वस्तुत यह एक यत्र है जिसको कि आरम्भ में एक इटालियन डाक्टर मौसो ने बनाया। इस यन्त्र द्वारा कार्य के अन्तर्गत होने वाले पेशिक सकुचन मे होने वाले परिवर्तनों को नापने और थकान सम्बन्धी प्रयोग करने का काम लिया जाता था। अभी भी इस यन्त्र का थकान और कार्य क्षमता के अध्ययन मे बड़ा महत्व है। एक विशेष प्रकार के ऐसे प्रयोग मे परीक्षार्थी की बॉह को इस यन्त्र से बाँध दिया जाता है तथा

उसके हाथ की एक उँगली (आमतौर पर बीच की उँगली) जिसके सकुचन का अध्ययन करना है, स्वतन्त्र रखी जाती है। उस उँगली में एक डोरी, जिसके दूसरे सिरे पर एक उचित वजन, एक स्वतन्त्र रूप से घूमने वाले पहिए द्वारा लटका होता है, पहना दी जाती है। परीक्षार्थी नियन समय-क्रम के अनुसार, बार-बार उस उँगली को सकुचित करता है। उसके प्रत्येक सकुचन के मान की नाप, एक घूमते हुए डोल या कागज की पट्टी पर समय-गति के साथ-साथ अंकित होती चलती है। इस पूरे यत्र को पेशी सकोचन लेखी कहते है।

Eros [एरोस] : जीवनवृत्ति।

इस वृत्ति का लक्ष्य है—(१) जीवन का सरक्षण, (२) जाति का सरक्षण। यह अहं और कामेच्छा, दोनो के कार्यों का समन्वय है। मनोविश्लेषणात्मक साहित्य मे सबसे अधिक विश्लेषण कामवृत्ति का हुआ है।

Erotic Eroticism (erotism) [इरोटिक, इरोटिज्म] : रत्यात्मक; रत्यात्मकता।

वह व्यक्ति जिसकी कामात्मक वर्ग की सवेदनाओ और भावनाओ मे अत्यधिक रुचि हो। मनोविश्लेषण मे कामोद्दीपन के लिए रत्यात्मकता एक सामान्य पद है। मनोविकृति मे इस पद द्वारा काम-भाव और इससे सम्बन्धित प्रतिक्रियाओं का अत्यधिक विकसित रूप प्रदर्शित होता है।

देखिए—Allo-eroticism, Auto-erotism.

Erotic Paranoia [इरोटिक पैरेनोइया]: रत्यात्मक सविभ्रम।

एक प्रकार का मनोविक्षेप। इस रोग मे रोगी को अकारण यह भ्रम होना कि सब परवर्गीय उसके प्रति आकर्षित है जब कि यह मिथ्या विश्वास होता है। मूलतः यह धारणा उन व्यक्तियों के प्रति होती है जो धनी है, समाज प्रतिष्ठित है और रूप मे मोहक है। रोगी के मन का यह कोरा भ्रम होता है और यह आधारहीन है, जैसे रोगी की यह धारणा कि गवर्नर की लडकी उसके प्रेम मे पागल है और उससे विवाह करना चाहती है।

देखिये—Paranoia, Delusion of Grandeur.

Error of Expectation [एरर ऑव ए'क्सपे'क्टेशन] प्रत्याशा त्रुटि।

न्यूनतम परिवर्तन-विधि से किए गए मनोभौतिकीय प्रयोगों मे प्रयोज्य को उपस्थापित उत्तेजना के घटने अथवा बढने का आभास होने से उत्पन्न होने वाली एक त्रुटि। इस आभास के कारण प्रयोज्य किसी भी श्रेणी मे आने वाले परिवर्तन के लिए अतिप्रस्तुत हो जाता है। अवधान की अति और प्रत्याशा की प्रबलता से उसे अनुमानित आगामी परिवर्तन अपने समय से पूर्व ही प्रतीत होता है कि आ गया। यदि यह प्रत्याशा-प्रभाव अभ्यास-प्रभाव से अधिक हुआ तो न्यूनतम अबोध्य अन्तर की अपेक्षा न्यूनतम बोध्य अन्तर समानता मान के समीप लगता है। अभ्यास त्रुटि की भाँति प्रत्याशा त्रुटि भी आरोही एवं अवरोही श्रेणियो के उपयोग द्वारा कम की जा सकती है।

देखिये—Method of Minimal changes.

Error of Habituation [एरर ऑव हैबिचुयेशन] : अभ्यासजनित त्रुटि।

किसी विशेष प्रकार की परिस्थिति अथवा उत्तेजना की उपस्थिति में किसी विशेष प्रकार की प्रतिक्रिया का अभ्यास पड़ जाने के कारण परिस्थिति अथवा उत्तेजना बदल जाने पर भी उसी अभ्यस्त प्रकार की प्रतिक्रिया करते रहना। मनोमिति के इतिहास मे इसका विख्यात उदाहरण वुंट की न्यूनतम परिवर्तन विधि में पाया जाता है। धीरे-धीरे बढ़ती हुई परिवर्त्य उत्तेजना बहुत छोटी से बड़ी होते-होते प्रमाप उत्तेजना के बराबर हो जाती है, परन्तु उसे छोटी समझते-समझते प्रयोज्य अब भी उसे अभ्यासवश छोटी ही

कहता है।

Ethnology, Ethnos, Ethnocentrism [इथनॉलोजी इथनॉस, इथनॉसेन्ट्रिज्म] मानव-जाति विज्ञान।

जातीय समूहों का एक वैज्ञानिक अध्ययन। सांस्कृतिक मानव शास्त्र की यह वह शाखा है जिसमे वर्तमान तथा हाल ही मे लोप होने वाली जातियो की संस्कृतियो का विशेष रूप से अध्ययन होता है। Ethnos—यह प्रत्यय ऐसे समूह का सूचक है जो राष्ट्रीय तथा जातीय विशेषताओ द्वारा एक शृंखला मे आबद्ध है। समूह के सदस्यो मे भाव-विचार मे तादात्म्य होता है। Ethnocentrism—मानव-जाति केन्द्रीयण—वह भावात्मक अभिवृत्ति जिसके कारण एक व्यक्ति अपने समूह तथा जाति को दूसरे की जाति अथवा संस्कृति से उच्च समझता है—दूसरे की जाति और समूह के प्रति घृणास्पद भाव रखता है।

Eugenics [यूजेनिक्स] सुजनन-विज्ञान, सुजननिकी।

समाज द्वारा नियन्त्रित हो सकने वाले उन साधनो का अध्ययन करने वाला शास्त्र जिनके द्वारा आगामी पीढ़ियों के नैसर्गिक, शारीरिक अथवा मानसिक जातीय गुणो का उत्थान अथवा ह्रास होता हो। यह भी ध्यान रखना कि वर्तमान स्थिति के निर्धारण मे उनके नैसर्गिक जातीय गुणो का कितना हाथ है। इस सम्बन्ध मे एक ही वातावरण मे रहने वाली भिन्न जातियो की, जुड़वे बच्चे की, अथवा अनाथालय मे रहने वालो की गुण-तुलना की जाती है। जनता मे नैसर्गिक जातीय गुणो के वितरण का विश्लेषण भी किया जाता है। इसके लिए बुद्धि-परीक्षणो का बहुत उपयोग किया गया है और बुद्धि, आर्थिक स्तर तथा सामाजिक परिस्थितियो का सम्बन्ध निर्दिचन करने का प्रयत्न किया गया है। इस शास्त्र के कुछ अन्य विषय ये हैं—विभिन्न जातीय नैसर्गिक गुणो के व्यक्तियो ने अगली पीढ़ी के उत्थान मे कितना और क्या योग दिया है। जनता के जातीय गुण बदल रहे हैं? परिवार की जातीयता किन-किन निर्धारको पर निर्भर है और कैसे? क्या जातीय अपकर्ष हो रहा है? जातीय नैसर्गिक गुणो का उत्कर्ष कैसे हो? इसके लिए समाज मे विवाह पर कुछ बंधन लगाना अनिवार्य है। इसके लिए विवाह की आयु पर नियन्त्रण प्रचलित है और कुछ सगे सम्बन्धियो मे विवाह भी निषिद्ध है। सुजननिकी का उद्देश्य है: (१) अल्पबुद्धिता, अपस्मार, मिरगी, अपराधवृत्ति तथा मद्यपता आदि दोषो से युक्त व्यक्तियो के विवाह को रोकना, उन्हे समाज से अलग रखना और उनका अनुर्वरीकरण (sterilisation) करना। (२) स्वस्थ, सबल शरीर-रचना के व्यक्तियो द्वारा प्रजनन को प्रोत्साहन देना। उपरोक्त दोनो उद्देश्यो की पूर्ति के लिए शारीरिक तथा मानसिक गुणो का सर्वेक्षण आवश्यक है।

Evolution, Evolutionism [इवोल्यूशन, इवोल्यूशनिज्म] विकास, विकासवाद।

सामान्यत विकास का अर्थ है—'संघटन'। इस प्रकार इस शब्द से अवयव की बनावट और व्यवहार के क्रमिक परिवर्तन की ओर संकेत हुआ है जो पीढ़ियो मे क्रमिक रूप से होता रहता है और पृथकता, स्वाभाविक चुनाव और वंश-परम्परा पर निर्भर करता है। सीमित अर्थ मे यह धारणा विकास का पर्याय है। Evolutionism—विकासवाद वह सिद्धान्त है जिसके अनुसार जगत्-जीवन अपने हरेक अभिव्यक्तिकरण मे और प्रकृति सब अवस्थाओ मे विकास करती है। विकासवाद उत्पत्तिवाद से पृथक् है। उत्पत्तिवाद मे हरेक जाति के जीव की पृथक् पृथक् उत्पत्ति का उल्लेख है, विकासवाद के अनुसार उपस्थित दैहिक तनुएँ प्रारम्भिक और जटिल संघटित जाति से क्रमिक परिवर्तित होती हुई उत्पन्न हुई हैं।

भारतीय और ग्रीक के प्रारम्भिक परि-

कल्पों से विकास की परिकल्पना को अब वर्तमान मे वैज्ञानिक सिद्धांतों का रूप प्राप्त हुआ है।

विकास की समस्या को वैज्ञानिक रूप चार्ल्स डारविन ने दिया है और अपने सिद्धात की पुष्टि के लिए पर्याप्त अनुसधान किए हैं। मनोविज्ञान को वैज्ञानिक रूप देने में डारविन का एकमात्र प्रभाव पड़ा है। मानसिक प्रक्रियाएँ जगत से समायोजित करने के प्रयास मे क्रियाओ के रूप मे वरती जाने लगी। जब विकासवाद मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि बन गया तब नई विचारधारा का सूत्रपात हुआ। परिणामत. पशु मनोविज्ञान के अध्ययन मे रुचि की वृद्धि हुई और मानव और पशु-मनोविज्ञान में निकटवर्ती सम्बन्ध स्थापित हुआ।

Existential Psychology [एक्जिस्टे'न्शियल साइकॉलो'जी] : सत्तात्मक मनोविज्ञान।

यह मनोविज्ञान का वह सम्प्रदाय है जिसमे विज्ञान का विषय उन अनुभूतियों के अध्ययन तक सीमित है जिनका अन्तर्निरीक्षण (Introspection) सभव होता है। सवेदन, कल्पना और भाव—ये सब निरीक्षित मानसिक प्रक्रियाएँ हैं। मनोविज्ञान का वह सम्प्रदाय ऐतिहासिक दृष्टि से टिचनर (१८६७-१९२७) और वुण्ट (१८३२-) के सरचनावाद (Structuralism) का स्वरूप है जिन्होंने मानसिक प्रक्रियाओ को मानसिक सत्ताओं (existences) के रूप मे माना है।

देखिए—Structuralism, Introspection.

Experiment [एक्सपेरिमेंट] : प्रयोग।

अनुशासित या नियत्रित दशाओ मे किया गया किसी चर (परिवर्त्य) का निरीक्षण। इसमें उन सभी अस्थिर चरो (variables) के बारे मे पहले से ही ज्ञान प्राप्त कर लिया जाता है जो कि उस चर को प्रभावित करते रहते है। उस अस्थिरशील चरों मे से एक चर, जिसके उस चर पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे मे अध्ययन करना है, को छोडकर बाकी सब चर नियत्रित कर लिए जाते हैं तथा उस स्वतन्त्र चर को, उसके विभिन्न मात्रा, गुण आदि के अनुसार बदलते रहते है। और इस प्रकार चर के ऊपर पड़ने वाले विभिन्न प्रभावो का जो कि उस एक चर की बदलती हुई विभिन्न दशाओ के कारण घटित होता है, अध्ययन किया जाता है। इस पूरी विधि को प्रयोग कहते हैं।

ऐसे प्रयोगो मे दूसरी प्रभावकारी दशाओं का नियत्रित करना नितान्त आवश्यक है। तभी किसी एक प्रभावकारी अस्थिर चर का अध्ययन किया जा सकता है। तभी प्रयोगों मे पहले से ही व्यवस्था की आवश्यकता पडती है। इसलिए सभी प्रयोग सामान्यत प्रयोगशाला मे किए जाते हैं।

देखिये—Independent variable.

Experimental Group [एक्सपेरिमेन्टल ग्रुप] : प्रयोगात्मक समूह।

किसी भी प्रयोग मे जिसमे कि किसी भी अस्थिर चर के प्रभाव का अध्ययन करना है, परीक्षार्थियों के ऐसे समूह की रचना की जाती है जिसके ऊपर, उस अस्थिर चर की परीक्षा की जाती है जिससे कि उसका प्रभाव भिन्न-भिन्न अवस्थाओ मे जाना जा सके। इस प्रकार के समूह को प्रयोगात्मक या प्रायोगिक समूह कहते है। प्रायोगिक समूह से भिन्न एक 'नियत्रित समूह' (Control Group) होता है। यह भी परीक्षार्थियो का एक समूह होता है जो कि सामान्यत: प्रायोगिक समूह मे पाई जाने वाली प्रासगिक विशिष्टताओं में समान होता है। लेकिन अन्तर केवल यह होता है कि इस 'नियत्रित समूह' को निश्चल रखा जाता है और इस समूह पर उस अस्थिर चर का परीक्षण नही किया जाता है। इस प्रकार, इस तरह की समूह रचना से किसी भी अस्थिर चर के मूल्यांकन के अध्ययन मे बहुत सहायता मिलती है।

देखिए—Control Group.

Experimental Error [एक्सपेरिमेन्टल एरर] प्रायोगिक त्रुटि।

वे त्रुटियाँ जो कि प्रयोगशाला में प्रयोग होनेवाले यंत्रों में दोष, प्रतिक्रिया काल में परिवर्तन प्रतिचयन (sampling) में दोष तथा अस्थिर चर (variables) जिन्हें प्रयोगकर्ता भली प्रकार नियंत्रित नहीं किया जा सकता है, के कारण होती हैं।

Experimental Neurosis [एक्सपेरिमेन्टल न्यूरोसिस] प्रायोगिक मनस्ताप।

जब कि किसी ऐसे प्रयोग में प्रायोगिक पशु (Experimental animal) को बहुत कठिन दण्ड का भय दिखाकर, किसी ऐसे कार्य को करने के लिए मजबूर किया जाता है (जैसे किन्हीं दो वस्तुओं में अन्तर को ज्ञात करना) जिसमें कि पशु को अपनी शक्ति या क्षमता के बाहर जाना पड़ता है तो उस समय वह प्रायोगिक पशु व्याकुलता, घबड़ाहट तथा अस्तव्यस्तता से भरा हुआ व्यवहार करता है। इस प्रकार से प्रयोग में किए हुए ऐसे सम्भ्रान्त व्यवहार व पशु की दशा को प्रायोगिक मनस्ताप अथवा चित्त-भ्रम कहते हैं। इस प्रकार तनावपूर्ण दशा (एक ओर कार्य करने की क्षमता न होना, दूसरी ओर कार्य न करने पर, मिलनेवाले कठिन दंड का भय) क्षोभ विकृति उत्पन्न कर देता है। व्यवहार ठीक है या नहीं के बारे में अनिश्चित होने के कारण वह बहुत अजीब विचित्र व्याकुलतापूर्ण तथा सभ्रान्त-सा व्यवहार करता है।

पशु के सभ्रान्त व्यवहार और मनुष्यों में पाई जानेवाली स्वत मनस्ताप की दशा के बीच की तुलना के बारे में पर्याप्त मतभेद है।

Experimental Extinction [एक्सपेरिमेन्टल एक्सटिंक्शन] प्रायोगिक विलोप।

जब बिना असम्बद्ध उत्तेजक के सम्बद्ध उत्तेजक को बार-बार उपस्थापित किया जाता है या सम्बद्धित साधक प्रतिक्रिया के घटने के बाद प्रतिफल को रोक लिया जाता है तो सबद्ध प्रतिक्रिया धीरे धीरे विलुप्त हो जाती है। यह पद इसी तथ्य को निर्देश करता है।

दे०—Conditioning

Experimental Psychology [एक्सपेरिमेन्टल साइकॉलॉजी] प्रयोगात्मक मनोविज्ञान।

वह मनोविज्ञान जिसमें व्यवहार अथवा मन के क्रिया-व्यापार का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन हुआ है और जहाँ व्यवहार के प्रसग में उत्तेजना प्रतिक्रिया (S–R) के पारस्परिक सम्बन्ध पर विशेष जोर दिया गया है। प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का दृष्टिकोण और अध्ययन करने की विधि दर्शन के विपरीत है।

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान और बौद्धिक मनोविज्ञान में अन्तर है। प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, सामान्य व्यक्तियों के सवेदना एवं प्रत्यक्षण, भाव और संवेग, अवधान, स्मृति एवं सीखना, तथा उसके विचार एवं उच्चमानसिक क्रियाओं के विशेष अध्ययन का एक सीमित क्षेत्र है। यह मनोविज्ञान की अन्य शाखाओं से आसानी के साथ पृथक् किया जा सकता है—जैसे विकास मनोविज्ञान (Genetic Psychology), असामान्य मनोविज्ञान (Abnormal Psychology), समाज मनोविज्ञान (Social Psychology), और तुलनात्मक मनोविज्ञान (Comparative Psychology) जिसमें वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग हुआ है। अध्ययन का विषय सामान्य मानव मात्र ही नहीं माना गया है।

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के इतिहास का प्रारम्भ वस्तुत १८७९ ई० में लिप्जिग में वुण्ट की प्रयोगशाला में हुआ। कुछ लोगों का कहना है कि इसका जन्म १८६० में फेक्नर के 'एलिमेन्टे डर साइकोफिजिक' के प्रकाशन के साथ हुआ। प्रायोगिक मनोविज्ञान तीन प्रमुख उपलब्धियों से प्रारंभ

होता है :

(१) बेल-मेजेन्डी का नियम (१८११-१८२२) जिससे कि ज्ञानग्राही और क्रियावाही तंत्रिका की रचना तथा कार्य विभिन्न है इसका ज्ञान हुआ।

(२) जाहनस मिलर (१८०६) का नाड़ियों की विशिष्ट शक्ति का सिद्धान्त।

(३) हेल्महोल्ट्ज (१८५०) का स्नायविक-आवेग की क्षिप्रता के सम्बन्ध में खोज।

प्रयोगात्मक मनोविज्ञान में हुए शोध-प्रारम्भ में, दृष्टि, श्रवण, मनोदैहिक, दूरी का ज्ञान तथा प्रतिक्रिया-समय तक सीमित थे। बाद में साहचर्य एवं स्मृति, भाव-संवेग आदि क्षेत्रों में भी प्रयोग होने लगा। प्रायोगिक मनोविज्ञान ने अमेरिका और जर्मन में विशेष विकसित रूप प्राप्त किया। इंग्लैण्ड और फ्रांस में इस ओर प्रगति न होने के अंशतः दो कारण थे: (१) दार्शनिक पृष्ठभूमि से उनका घनिष्ठ लगाव था तथा (२) अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान (Applied Psychology), नैदानिक मनोविज्ञान (Clinical Psychology) या असामान्य मनोविज्ञान के क्षेत्रों में उनकी विशेष रुचि थी।

विगत दशक में महत्वपूर्ण विकास हुआ है। प्रयोगात्मक युक्तियों का आशातीत विकास हुआ है। मनोवैज्ञानिकों का मनोदैहिक विधि से ही बँधे रहना सम्भव नहीं था। इसी से नए क्षेत्रों का विकास हुआ जिनमें एक परिस्थिति की वास्तविकता, प्रयोग के ढाँचे में अपव्ययी रहना तथा स्थिर तत्वों की अपेक्षा गतिशील तत्वों पर अधिक जोर दिया गया है। प्रयोग के यन्त्रों के ढाँचे में भी विकास हुआ है। विद्युत-उपकरण प्रयोग आने लगे हैं। प्रायोगिक ढाँचा अत्यधिक परिशोधित किया जा रहा है जिससे प्रयोग में अधिक से अधिक यथार्थता, विश्वसनीयता और मितव्ययता पाई जा सके।

Experimental Technique [एक्सपेरिमेन्टल टेकनिक] : प्रायोगिक प्रविधि।

देखिए—Experiment, Laboratory Experiment.

Exercise, Law of [एक्सरसाइज लॉ आफ] : अभ्यास-नियम।

थॉर्नडाइक का यह प्रमुख नियम-सिद्धान्त थार्नडाइक द्वारा आविष्कृत हुआ है। परिस्थिति विशेष में जिस प्रतिक्रिया का कुछ समय तक निरन्तर अभ्यास होता है, वह व्यवहार का एक स्थायी अंग बन जाता है और भविष्य में उस परिस्थिति के प्रकट होने पर उस प्रतिक्रिया के प्रकट होने की सम्भावना बढ़ जाती है। यह पक्ष उपयोग का नियम (Law of use) है। इसके विपरीत अनुपयोग-नियम (Law of disuse) के अनुसार किसी भी परिस्थिति-विशेष में किसी भी व्यवहार-विशेष का अनवरत अनुपयोग उसके पारस्परिक सम्बन्ध को शिथिल बनाता है। इसी से परिस्थिति के उपस्थित होने पर भी उस व्यवहार के प्रकट होने की सम्भावना नहीं रह जाती।

अभ्यास का नियम वस्तुतः साहचर्य (Association) का ही नियम है। इसमें साहचर्य के दो गौण नियमों—प्राथमिकता और बारम्बारता—पर विशेष बल दिया गया है।

Extirpation Method [एक्सटरपेशन मेथड] : उच्छेदन विधि।

शारीरिक अध्ययन में प्रयुक्त होने वाली प्रायोगिक पद्धति, जिसमें मस्तिष्क का कोई हिस्सा ऑपरेशन द्वारा निकाल देने पर उत्पन्न हुए परिवर्तनों का निरीक्षण किया जाता है। इस पद्धति का प्रयोग केवल पशुओं, (चूहा, बिल्ली, कुत्ता, खरगोश आदि) पर ही किया जाता है। इस पद्धति का उपयोग व्यवहार के शारीरिक अनुबन्धों (Anatomical Correlates) के अध्ययन में तथा तन्तु शिक्षण (Fibre Training) में होता है क्योंकि शरीर के कुछ भाग को निकाल देने पर उस भाग से सम्बन्धित तन्तु शिथिल हो जाते हैं।

Extratensive [एक्स्ट्राटेन्सिव] समाधिक तनावपूर्ण अवस्था।

रोर्शाख द्वारा प्रयोग में लाया हुआ एक प्रत्यय-धारणा जो कि बाहर उत्पन्न हुई *उत्तेजना के प्रति अति-प्रतिक्रिया शीलता* (heightened reactivity) की ओर संकेत करता है। वातावरण के साथ सवेगात्मक सम्बन्ध स्थापित करने की एक व्यक्ति के अन्दर की एक प्रबल आवश्यकता जो कि दूसरों के समर्थन की आकांक्षा और उस पर निर्भरता की ओर संकेत करती है। यह इसका विशेष गुण है। गति-प्रतिक्रिया और रंग-प्रतिक्रिया के अनुपात द्वारा (M C) इसको प्रदर्शित किया जाता है।

यह शब्द युग के बहिर्मुख शब्द से भिन्न है। रोर्शाख ने अपनी 'साइकोडायग्नास्टिक' ग्रन्थ में यह स्पष्ट कर दिया है कि समाधिक तनावपूर्ण अवस्था, अन्तर्मुखी अवस्था की प्रतिपक्षी नहीं है क्योंकि अन्तर्मुखी अवस्था, अपने अन्दर के जीवनानुभव से अधिकाधिक सत्वरता अथवा उत्साह की ओर संकेत करती है।

Extrovert [एक्सट्रॉवर्ट] व्यक्तित्व का एक प्रकार।

बहिर्मुखी—कार्ल जेस्ट्रॉव युग ने 'साइकॉलॉजिकल टाइप्स' नामक ग्रन्थ में इस वर्ग की व्याख्या विस्तार से व्यक्तित्व प्रकार के प्रसंग में की है। व्यक्तित्व का यह प्रकार होने पर व्यक्ति वस्तुवादी, कुशल राजनीतिज्ञ और समाज-सुधारक होता है और उसमें मैत्री-कौशल्य और बाह्य जगत के वस्तु-व्यक्ति में राग होता है। यह पूर्णत स्वभाव अथवा मनोवृत्ति का प्रश्न है। ऐसे व्यक्ति को अकेलापन असह्य होता है और वह सहज ही अन्य व्यक्तियों से मैत्री का सम्बन्ध जोड लेता है। इस प्रकार की प्रकृति और स्वभाव रहने पर *व्यक्ति के आभ्यन्तरिक क्षेत्र में विशेष* तनाव सघर्ष नहीं होता क्योंकि उसकी कामायन शक्ति का व्यय बाह्य दिशा में व्यक्ति-वस्तु में राग रखने से होता रहता है।

मनोविश्लेषण में इस शब्द का प्रयोग एक विशेष अर्थ में हुआ है। बहिर्मुखी वह व्यक्ति है जिसकी कामशक्ति का बाह्य *वस्तु-व्यक्ति (Object Cathexis)* की ओर अपवर्तन हुआ है। उसे कामतुष्टि अन्य व्यक्तियों के सम्पर्क से मिलती है। वह वस्तु व्यक्ति जिस पर कामशक्ति केन्द्रित—आमुख है, प्रौढावस्था युवावस्था और प्रारम्भिक अवस्था—सभी का विषय होना सम्भव है। माता-पिता प्रारम्भिक आकर्षण का विषय है।

Factor [फैक्टर] खण्ड, कारक।

सरल अविभाज्य मानसिक अथवा व्यावहारिक गुण अथवा परिवर्त्य। जटिल विभाज्य मानसिक अथवा व्यावहारिक परिवर्त्यों अथवा गुणों की अनन्त सख्या को देखते हुए मनोविज्ञान का एक उद्देश्य सरल अविभाज्य खण्डों की खोज और उनके मापने के लिए विशुद्ध परीक्षणों का निर्माण है। आधारभूत विश्वास यह है कि इन सरल अविभाज्य कारकों की सख्या अपेक्षाकृत बहुत ही छोटी होगी और इनके विशुद्ध परीक्षणों के विभिन्न सचयों में प्रयोग करने से समय तथा प्रयास की बहुत बचत होगी और सम्भव है कि मापन में अधिक यथार्थता का लाभ भी हो। अभी बहुत थोडे से कारकों का पता चल पाया है और उनमें से भी, बहुत कम के विशुद्ध परीक्षण बन पाए हैं। शब्दार्थ ग्रहण, अथवा शब्दज्ञान कारक के मापन के लिए शब्द भण्डार परीक्षण, अक प्रयोग योग्यता कारक के मापन के लिए अकीय क्रिया परीक्षण और दृश्य प्रत्यक्षगति मनोखण्ड के मापन के लिए प्रत्यक्षगति परीक्षण, इनमें से कुछ हैं।

Factor Theories [फैक्टर थ्योरीज़] : कारक सिद्धान्त।

मनोविज्ञान के इतिहास में प्रथम बार कारक सिद्धान्त विभिन्न अविभाज्य मनोशक्तियों की प्राचीन धारणाओं पर आधारित विने, स्पेयरमैन, व्हिपल आदि द्वारा

प्रतिपादित स्मृति, कल्पना, विवेक, साह-चर्य आदि के परीक्षणों के निर्माण तथा वर्गीकरण में प्रकट हुआ। इसकी विशेषता यह थी कि प्रत्येक मनोगुण एक खण्डीय होता है और स्मृति आदि किसी भी मनो-गुण के परीक्षण से केवल उसी गुण का मापन होता है और किसी अन्य गुण का नहीं। विभिन्न परीक्षणों के परस्पर सह-सम्बन्धों के अध्ययनों ने उभय खण्ड सिद्धान्त को जन्म दिया जिसके अनुसार किन्हीं दो मनोपरीक्षणों का सह-सम्बन्ध यह संकेत करता है कि एक सार्वखण्ड दोनों परीक्षणों में सामान्य रूप से विद्य-मान है और एक-एक अलग-अलग विशिष्ट मनोखण्ड दोनो परीक्षणों में से प्रत्येक में है। एक तीसरा बहुकारक सिद्धान्त (Multi Factor) है जिसके अनुसार बहुत से अलग-अलग सामूहिक खण्डों (Group Factor) होते हैं जो अलग-अलग परी-क्षण समूहों में सामान्य रूप से विद्यमान होते हैं। कुछ बहुकारकवादी इन सामूहिक मनोखण्डों के अतिरिक्त एक सर्वसामान्य कारक में भी विश्वास करते ।

Faculty Psychology [फकल्टी साइ-कॉलोजी] : शक्ति मनोविज्ञान।

यह मनोविज्ञान की प्राग्-वैज्ञानिक पद्धति है जो प्राचीन दर्शन और अध्यात्मवादी विचारधारा में स्पष्ट अथवा अस्पष्ट रूप से निहित है। इस पद्धति के अनुसार 'शक्ति' का तात्पर्य आत्मा की किसी क्रिया को सम्पादन करने की विशेष योग्यता से है। आत्मा द्वारा स्मृति, तर्क तथा इच्छा-क्रिया बराबर सम्पादित होती रहती है और इसी से स्मृति, तर्क और इच्छा इत्यादि विभिन्न शक्तियों का अस्तित्व माना गया है। इस आधार पर आत्मा का अस्तित्व है और इसके द्वारा विभिन्न क्रियाएँ सम्पादित होती रहती हैं, शक्ति मनोविज्ञान विभिन्न शक्तियों का वर्गीकरण करता है। जर्मनी में इस धारा के प्रथम प्रवर्तक क्रिश्चियन वुल्फ थे, जिनका सिद्धान्त बहुत कुछ भारतीय दृष्टिकोण के समकक्ष है। जिस प्रकार विभिन्न अवसरों पर सम्पूर्ण शरीर भिन्न-भिन्न क्रियाओं में भाग लेता है, उसी प्रकार आत्मा की विभिन्न शक्तियाँ हैं जो प्रत्येक क्रिया में आवश्यकतानुसार आंशिक भाग लेती हैं। आत्मा सदैव एक इकाई के रूप में विद्यमान है; यह विभिन्न अव-यवों अथवा अंगों का जोड नहीं है। ऐति-हासिक दृष्टि से साहचर्यवादी शक्ति-मनो-विज्ञान के कटु आलोचक थे। उनका कथन है कि बालक का मन आरम्भ में कोरी पटिया की तरह होता है और वह सभी कार्य अनुभव से ही सीखता है। कार्य करने की जन्मजात शक्तियाँ नहीं होती।

Fanaticism [फैनेटिसिज़्म] : कट्टरता, दुराग्रह, मताधता।

किसी भी सिद्धान्त, विश्वास अथवा कार्य-प्रणाली के प्रति अत्यधिक एवं अवि-वेकपूर्ण उत्साह और अन्धापन का होना। इसमें ज्ञान और तर्क का पूर्णतः अभाव होता है और भाव-संवेग की प्रचुरता होती है। मानसिक अवस्था भाव-प्राधान्य होती है—यथा, धर्मोन्मत्तता में व्यक्ति का अन्य धर्म और उसके अनुयायियों के प्रति अभावात्मक दृष्टिकोण और अपने के प्रति अतार्किक रूप से सजीले भाव का होना। इस प्रकार की मनोवृत्ति के उद्भव-विकास का कारण उस जाति अथवा समूह-विशेष की संस्कृति है। मानव की संवेग-वृत्ति का उपयुक्त रूप से सन्तोषण-परिमार्जन न होने पर ऐसी मनोवृत्ति का विकास होता है।

Family Romance [फेमिली रोमान्स] : पारिवारिक प्रेमालाप।

(फ्रायड)—परिवार के सदस्यों का पारस्परिक राग-द्वेष। साधारणतः माँ का आकर्षण पुत्र की ओर और पिता का आकर्षण पुत्री की ओर होता है। भाई-बहन तथा अन्यान्य सम्बन्धियों के प्रति भी आसक्ति-जनित आकर्षण-विकर्षण का भाव पाया जाता है। पिता इच्छा-पूर्ति में सहायक होने के कारण पुत्र के राग का

और माँ के सम्बन्ध म बाधक होने के कारण द्वेप का पात्र बनता है। इसी प्रकार मा भी लडकी के लिए राग और द्वेप दोना की पात्र होती है। बाल्यावस्था की सवगात्मक अनुभूतिया पर सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास निभर करता है।

Fatigue [फैटिग] श्रान्ति थकान।

अधिक देर और लगातार काम करने पर शक्ति का व्यय हो जाने के कारण व्यक्ति की उत्पादनशीलता, कायक्षमता अथवा योग्यता म कमी आ जाना। एसी स्थिति म व्यक्ति अपन-आपम भावो एव सवदना के एक जटिल सघात का अनुभव करता है और आगे कार्य करने म उसे कठिनाई मालूम होती है।

थकान प्रमुखतया चार प्रकार की मानी गई है १ मानसिक—चित्तवृत्तिको लगातार एक ही वस्तु पर एकाग्र रखने के कारण। २ मासपेशीय—किसी एक पेशी अथवा पशिया के विशिष्ट सघान से लगातार काम लते रहन के कारण। ३ सावदनिक—विशिष्ट ज्ञानेन्द्रिय को अनवरत कार्यरत रखने से तथा ४ तन्त्रिकीय—विशिष्ट तन्त्रिका या तन्त्रिकाओ के लगातार उत्तेजित किए जाने स।

थकान को दो तरह से मापा जा सकता है १ काम मे लगनेवाले प्रयासा की माप द्वारा—व्यक्ति जितना ही थकता जाता है काम को पूण करने के लिए उतना ही अधिक प्रयत्नशील भी होना है। २ थकान से उत्पन्न शारीरिक परिवतना की माप द्वारा—यथा, आक्सीजन का व्यय, रक्त म होनेवाले रसायनिक परिवर्तन, पेशीय तनाव, त्वचा के विद्युतीय अवरोध म कमी, रक्त तथा पेशियो मे विशिष्ट तत्वो (विशेषकर लक्टिक एसिड) की उपस्थिति। थकान की माप के लिए एरगोग्राफ यत्र का प्रयोग होता है।

थकान को कम कर उत्पादनशीलता बढाने म शक्तिशाली प्रेरको, विराम विधि तथा कतिपय औषधियो के प्रयोग से पर्याप्त सफलता मिलती है।

औद्योगिक मनोविज्ञान मे दक्षता की दृष्टि से थकान की समस्या विशेष महत्व की है।

Fechner's Law [फेक्नर लॉ] फेक्नर सिद्धान्त।

फेक्नर सिद्धान्त अथवा वेबर फेक्नर-सिद्धान्त म यह प्रस्तावित किया गया है कि उद्दीपक के मापन किए गए विस्तार अथवा तीव्रता मे तथा सवेदन के मापन किए तीव्रता अथवा विस्तार मे क्रियात्मक सम्बन्ध होता है। उद्दीपक का मापन प्रत्यक्ष रीति से हो सकता है सवेदन का मापन भी विभेदी वृद्धिया (differential increments) द्वारा हो सकता है। न्यूनतम भेद-बोध देहली (differential Limen) के निर्धारित करने म दो सवेदन होते हैं जो कि बस एक-दूसरे से भिन्न मात्र हैं और इस भिन्नता को, सवदन की इकाई के रूप मे लिया जा सकता है, जिसकी सहायता द्वारा सवेदन की तीव्रता अथवा विस्तार निर्धारित हो सकता है।

फेक्नर सिद्धान्त का प्रतिनिधित्व इस सूत्र के रूप मे किया जाता है

S=Log R 'एस' का तात्पर्य सवदन की तीव्रता अथवा विस्तार से है तथा 'आर' का तात्पर्य उत्तेजक की तीव्रता अथवा विस्तार से है। यह सूत्र यह बताता है कि—किस प्रकार लॉगारिथ्मिक त्रिया गणित तथा रेखागणित के सह-सम्बन्ध का प्रतिनिधित्व करती है। एक सवेदन की तीव्रता अथवा विस्तार म वृद्धि है तथा दूसरी उत्तेजक की तीव्रता अथवा विस्तार म वृद्धि की विशेषता को स्पष्ट करती है।

Feeling [फीलिंग] अनुभूति, भाव-भावना।

सुख दुख की चेतन अनुभूति। यह अनुभूति प्रमुखतया निम्न बाना पर निर्भर है—१ उत्तेजना का स्वरूप एव तीव्रता। २ इन्द्रिय-सवेदना का रुचिकर होना। ३ अभिरुचियो एव मूल प्रवृत्तिया की परितुष्टि, ४ सौन्दर्यानुभूति।

वुन्ट का भावना का त्रि० विमा सिद्धान्त

(Three dimensional Theory of feeling) प्रसिद्ध है जिसके अनुसार उन्होंने भावनाओं का तीन विमाओं—तनाव-शिथिलता, उत्तेजना-अवसाद तथा सुख-वेदना—में परिवर्तनशील माना है।

Fetishism [फेटिशिज्म] : प्रतीकाध-भक्ति।

पश्चिमी अफ्रीका की आदिवासी जातियाँ कतिपय जड पदार्थों को जादू की शक्ति से युक्त मानकर उन्हे पूजती थी और उनका गण्डे-तावीज की तरह व्यवहार करती थी। फिर इस शब्द का किसी भी ऐसी वस्तु के लिए, जिसके प्रति व्यक्तियो के मन मे अकारण अथवा अविवेकपूर्ण भय, श्रद्धा अथवा खिचाव हो, प्रयोग किया जाने लगा।

मनोविश्लेषण मे 'प्रतीकनिष्ठा' शब्द का व्यवहार एक विशिष्ट अर्थ में होता है। इसका सकेत रोगी की उस प्रवृत्ति की ओर है जिसके अन्तर्गत उसकी कामासक्ति का केन्द्र अपने प्रेमी अथवा प्रेमिका के शरीर का कोई भाग-विशेष—यथा, उरोज, दाँत, बाल, कान, हाथ आदि—अथवा उसके द्वारा उपभोग मे लाई जानेवाली कोई वस्तु—यथा, नीचे के कपडे, मोजे, रूमाल आदि—है। रोगी इन्हीको प्यार कर, इनका स्पर्श कर अपनी कामवासना को तृप्त करता है। इन प्रतीको को प्राप्त करने के लिए रोगी छल-कपट, चोरी, डकैती आदि सब-कुछ कर सकता है। वस्तुतः साहचर्य के कारण कोई वस्तु अत्यधिक महत्व ग्रहण कर लेती है और व्यक्ति की समग्र कामशक्ति उसी पर केन्द्रित हो इस रूप मे प्रकट होती है।

Fetus [फेटस] : गर्भ विकसित भ्रूण।

गर्भस्थ-शिशु के विकास की वह अवस्था जो उसके जीवन-धारण के तीसरे मास के आदि से लेकर प्रसव होने के पूर्व तक पाई जाती है। भ्रूण के आवश्यक अग-प्रत्यग भ्रूणावस्था मे ही आकार ग्रहण करने लगते है। विकसित-भ्रूणावस्था मे इनकी वृद्धि और विकास अनवरत गति से चलता रहता है। भ्रूण के आकार मे वृद्धि होती है। क्रियाएँ प्रारम्भ होती है। हृदय नियमित रूप से धडकने लगता है और शरीर के भिन्न-भिन्न भागो मे स्वत.चालित गति की सम्भावना बढती है। ज्ञानवाही विकास के भी कुछ सकेत मिलते है। साधारणतः नवें महीने के अन्त तक वह मानव के लघु-सस्करण के रूप मे सभी अग-प्रत्यगो से पूर्ण हो जाता है।

Fibre Tracing Method [फायबर ट्रेसिंग मेथड] : ततु अनुरेखण पद्धति।

एक शारीरीय पद्धति जिसके द्वारा दैहिक प्रणाली मे, तन्तुओ या स्नायुओं को, शरीर के विभिन्न अगो के बीच पाए जानेवाले सयोजको को निर्धारित करने के लिए अनुरेखित किया जा सके, जिससे कि उन अगो के कार्य-नियत्रण के बारे मे अध्ययन किया जा सके।

Field Experiment [फील्ड एक्सपेरिमेट] : क्षेत्र-प्रयोग।

ऐसा प्रयोग जो कि प्राकृतिक अथवा सामाजिक दशाओ मे किया गया हो। यह एक सिद्धान्त से सम्बन्धित अन्वेषण-व्यवस्था है जिसमे प्रयोगकर्त्ता किसी अनुमान या उपकल्पना की जाँच करने के लिए, किन्ही सामाजिक दशाओं मे एक स्वतन्त्र अस्थिरत्वर (Independent variable) तत्व को परिवर्तित करते हुए, उसके प्रभावो को अध्ययन करने का प्रयास करता है। इसको प्रयोगशाला के प्रयोगों से भिन्न समझना चाहिए, क्योकि प्रयोगशाला मे किसी अनुमान या उपकल्पना की जाँच करने के लिए तथ्य-सम्बन्धी घटना और उसका निरीक्षण नियन्त्रित होता है।

Field Study [फील्ड स्टडी] : क्षेत्र-अध्ययन।

एक प्रकार की सामाजिक अनुसंधान विधि जो कि समाज मनोवैज्ञानिक समस्याओ को उस क्षेत्र मे अनुसधान करने योग्य बनाता है जिसमें कि वह तथ्य जिसका अध्ययन करना है, घटित होता है।

यह सर्वेक्षण (survey) प्रकार के अध्ययन से भिन्न होता है। क्षेत्र-अध्ययन तथ्य की मूल प्रक्रियाओ की गति (Dynamics) की खोज की जाती है। क्षेत्र-अध्ययन समाज-शास्त्रीय, समाज-मनोवैज्ञानिक अथवा मानव शास्त्रीय हो सकता है।

Field Theory [फील्ड थियरी] क्षेत्र-सिद्धान्त।

आधुनिक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तो पर भौतिक विज्ञान की क्षेत्र धारणाओ (Field concepts) का बहुत प्रभाव पडा है और इसी कारण क्षेत्र-सिद्धान्त की नीव पडी। फाराडे, मैक्सवैल तथा हर्ट्ज़ ने उन्नीसवी शताब्दी मे विद्युत चुम्बक क्षेत्र पर कार्य प्रारम्भ किया और इसका पूर्ण विकसित रूप बीसवी शताब्दी मे आइन्स्टीन के सापेक्ष सिद्धान्त (Theory of Relativity) के सशक्त सिद्धान्त के साथ मिला। वास्तविक भौतिक धारणाओ तथा तथ्यो के आधारभूत मे जो नवीन वैज्ञानिक पद्धतियाँ हैं उन्हे मनोविज्ञान मे क्षेत्र-सिद्धान्त के नाम से सम्मिलित कर लिया गया है।

विज्ञान मे क्षेत्र-सिद्धान्त के प्रवेश होने से जो अन्तर हुआ उसे वैज्ञानिक पूर्वसूचना की विचारधारा के प्रसग मे स्पष्ट करना सम्भव है। विद्युतचुम्बक घटक के अध्ययन के पूर्व न्यूटन के भौतिक विज्ञान ने अगणित पार्थिव विभक्त कण को स्वीकार किया था जो गुरुत्व आकर्षण के कारण एक-दूसरे पर प्रभाव डालते हैं तथा ये चुम्बकीय आकर्षण विकर्षण द्वारा भी परस्पर प्रभाव डालते हैं।

क्षेत्र-सिद्धान्त का मनोविज्ञान मे सर्व-प्रथम महत्वपूर्ण प्रदर्शन गेस्टाल्ट मनोविज्ञान मे हुआ। गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का प्रमुख सिद्धान्त है कि किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण जिस किसी रूप मे किया जाए वह सम्पूर्ण प्रसग मे ही निर्धारित होता है—अथवा उसका निर्धारण जिस वातावरण मे वस्तुऐं उपस्थापित हैं उसके सम्पूर्ण स्वरूप द्वारा होता है। प्रत्यक्ष क्षेत्र मे वर्तमान घटको (Components) का पारस्परिक सम्बन्ध ही प्रत्यक्षीकरण का निर्धारण करता है, व्यक्तिगत अगो की निश्चित विशेषताऐं प्रत्यक्षीकरण के स्वरूप को नही निर्धारित करती। कोहलर (१८८७—) ने भौतिक विज्ञान के उन प्रयोगो की ओर विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट किया जिसमे स्थानीय घटनाऐं सम्पूर्ण प्रसग द्वारा निर्धारित होती है, जिसमे ऐसे विस्तार के वैशिष्ट्य का पता करना असभव है जो अपने मे और अपने लिए परिमापित है।

मनोविज्ञान की सभी शाखाओ मे पहले-पहल लेविन (१८९०-१९४७) ने क्षेत्र-सिद्धान्त का उपयोग किया है। लेविन ने जो नवीन धारणा पद्धति स्थापित की है उसकी सहायता से मनोवैज्ञानिक तथ्यो का सफलता से प्रतिनिधित्व किया जा सकता है। उनकी भौतिक विज्ञान से ली हुई धारणाऐं ऐसी व्यापक हैं और ऐसे प्रकार की हैं कि सभी वर्ग-प्रकार के व्यवहार पर लागू हो सकती हैं और निश्चित व्यक्ति का प्रतिनिधित्व प्रत्येक परिस्थिति मे किया जा सकता है। लेविन के क्षेत्र-सिद्धान्त की मुख्य विशेषताऐं इस प्रकार हैं व्यवहार उस क्षेत्र की क्रिया है जो व्यवहार घटित होने के समय उपस्थित होता है। सम्पूर्ण परिस्थिति के प्रसग मे विश्लेषण का कार्य घटता है और अलग-अलग घटको (Components) का विभेद किया जाता है। प्रत्यक्ष परिस्थिति मे प्रत्यक्ष व्यक्ति का प्रतिनिधित्व गणितीय दृष्टि से सम्भव है। लेविन ने भौतिक अथवा शारीरिक वर्णन की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक विवरण को अधिक मान्यता दी है और व्यवहार के निर्धारण मे आधारभूत शक्तियों को मान्यता दी है।

Figure Ground Relationship [फिगर ग्राउन्ड] आकृति-भूमि सम्बन्ध।

आकृति-भूमि भूमि पर आकृति के रूप मे होती है। आकृति-भूमि युग्मशाखिता प्रत्यक्षण मे आवश्यक-सी है। सबसे सरल साधारण आकार अभिन्न आकृति है।

आकृति और भूमि तथ्यों की उत्कृष्ट व्याख्या आकृति को पलटने में मिलती है अथवा भूल भुलैया चित्र में जब प्रच्छन्न वस्तु अकस्मात् दृष्टिगत होती है। इन सब दृष्टान्तों में प्रारम्भ से क्षेत्र सघटित रहता है। वस्तु भूमि से एक रिलीफ के रूप में पृथक् कर ली जाती है।

देखिए—Gestalt Psychology.

Figural After effect [फिगरल आफ्टर एफेक्ट] : आकृति-सम्बन्धी पश्च प्रभाव।

इस तथ्य को गिब्सन ने पहले-पहल अनुलेखित किया। इसके बाद कोहलर ने इसमें विशेष विस्तृत रूप से अनुसधान किया। किसी भी एक रेखा, मूर्ति या आकृति का लम्बे समय तक स्थितीकरण होने से (अर्थात बार-बार लम्बे समय तक उसी का अनुभव होने से) प्रातस्था (cortical medium) माध्यम में कुछ प्रकार के (आकृति सम्बन्धी) विद्युतजन्य परिवर्तन उत्पन्न हो जाते हैं जिससे कि आगामी रेखामूर्ति या आकार के उसी क्षेत्र मे होने वाले प्रत्यक्षण में कुछ सशोधन हो जाता है।

Folk lore [फोक लोर] : लोक कथा।

आदिम एव परम्परागत रीति-रिवाज, कर्मकाण्ड, गाथाएँ आदि जो सस्कृति के विकास की आदिम अवस्था में उपजी, पर सामाजिक विकास की प्रौढ स्थितियों में भी (किसी जाति विशेष में) ज्यों-की-त्यों अथवा कुछ साधारण हेर-फेर के साथ वर्तमान हैं।

Folk Psychology [फोक साइकालोजी] : लोक-मनोविज्ञान।

स्टीन्थल तथा लजारस इसके प्रवर्तक माने जाते है। १८६० में जर्मन भाषा की एक प्रमुख पत्रिका मे प्रकाशित उनके कतिपय लेखों से इसका सूत्रपात होता है। इसमें किसी भी जाति (विशेषकर आदिम) की रूढ़ियों, परम्पराओ, रीति-रिवाजो, धार्मिक तथा नैतिक मान्यताओं, श्रद्धाओं, अधविश्वासो आदि के स्वरूप और उत्पत्ति के बारे में मनोवैज्ञानिक खोज की जाती है। इसमें जातियों की विशिष्ट मनोवैज्ञानिक मान्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन होता है। यथा, एक ही वस्तु अथवा मान्यता के प्रति जातियों के दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न हो सकते हैं।

Folkways [फोक वेज] : लोकाचार।

किसी भी जाति अथवा समूह विशेष में समान रूप से प्रचलित रूढ़ि एव परम्परागत व्यवहार-प्रणालियाँ इनके औचित्य का सर्वप्रधान कारण इनका परम्परागत होना ही है। यथा विवाह, गृह-प्रवेश, गर्भाधान, अन्न-प्राशन, मुण्डन आदि। इनका पालन न करने पर व्यक्ति समाज की निन्दा एवं उपेक्षा का पात्र बनता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से लोक-रीतियाँ 'समूह-तादात्म्यकरण (Group Identification) का दृष्टात है।

देखिए—Group Identification.

Forgetting [फॉरगेटिंग] : विस्मरण, भूलना।

अर्जित अनुभूति एव व्यवहार के धारण अथवा पुनरावाहन में असमर्थता ही विस्मरण कहलाता है। विस्मरण-सम्बन्धी सबसे पहला नियमबद्ध अध्ययन एबिंग्हास ने किया। यह प्रयोग उन्होंने अपने पर ही किया। इस अध्ययन का निष्कर्ष यह रहा कि विस्मरण एक निष्क्रिय मानसिक क्रिया है और इसका प्रमुख कारण अर्जन और पुन.स्मरण के बीच का काल-व्यवधान है। समय के व्यतीत होने से व्यक्ति अर्जित वस्तु को भूलता है। अन्य अन्वेषणो से इस तथ्य की पूर्ण पुष्टि न हो सकी। इसमें काल-व्यवधान से अधिक महत्वपूर्ण तथ्य अर्जन और पुन.स्मरण के बीच के समय को बिताने का ढग या प्रकट की गई प्रतिक्रियाएँ हैं। इस बीच व्यक्ति यदि विश्राम करता है अथवा केवल ऐसे कार्य करता है जिनसे मस्तिष्क पर अनावश्यक दबाव नही पड़ता तो विस्मरण की क्रिया अपेक्षाकृत कम होती है। और यदि इसके विपरीत, इस बीच वह अन्य जटिल क्रियाओं मे उलझ जाता है तो ये क्रियाएँ पहले-

वाली अर्जित प्रतिक्रियाओं के पुनःस्मरण का अवरोध पश्चलक्षी अवरोध (retroactive inhibition)—कर देती हैं।

आधुनिक युग में विस्मरण-सम्बन्धी फ्रायड का अन्वेषण महत्वपूर्ण है। फ्रायड के कथनानुसार विस्मरण एक सक्रिय मानसिक क्रिया है। उनका विस्मरण का दमन सिद्धान्त (repression theory) प्रसिद्ध है। व्यक्ति अनेक घटनाओं को कारणवश सप्रयास और सप्रयोजन भूलता है। जीवन की कितनी ही ऐसी कटु और पीडक अनुभूतियाँ होती हैं, जिनका भूलना ही व्यक्ति के लिए श्रेयस्कर है। वह अनजान ही उन्हें तिरस्कृत कर अपने अज्ञान मन में दबा देता है।

विस्मरण के अन्य कारण भी हैं विषय की निरर्थकता, उसके भिन्न भिन्न भागों की पारस्परिक असम्बद्धता, उसका आकार, स्वरूप, अर्जन की मात्रा, ढंग, परिस्थितियाँ आदि।

विस्मरण के स्वरूप और गति को वक्ररेखाओं के माध्यम से चित्रित किया जा सकता है। इस वक्र को विस्मरण वक्र कहते हैं।

देखिए—Forgetting Curve

Forgetting Curve [फॉरगेटिंग कर्व] विस्मरण-वक्र।

पुनःस्मरण अथवा मनन के अभाव में किसी कार्य विशेष में अर्जित वस्तु के विस्मरण की गति को दर्शानेवाली वक्ररेखाएँ। इन वक्रों पर सबसे पहला प्रयोग एबिगहास ने किया और वह १८८५ में प्रकाश में आया। उनके अनुसार स्मरण करने के तत्काल बाद विस्मरण की क्रिया कुछ समय तक तीव्र गति से होती है बाद में धीरे-धीरे वह मन्द पड़ती जाती है। स्वयं अपने प्रयोगों में उन्हें यह प्रमाण मिला कि स्मरण की हुई वस्तु का ५० प्रतिशत आध घण्टे में, ६६ प्रतिशत आठ घण्टे में और ८० प्रतिशत एक माह में भूल जाता है।

Form Perception [फार्म परसेप्शन] आकार प्रत्यक्षण।

किसी वस्तु की स्थान-सम्बन्धी अथवा देशीय विशिष्टताओं का प्रत्यक्षण जो कि एक संगठित सम्पूर्ण इकाई या प्रणाली के रूप में होता है। यह वस्तुओं के बाह्य गुणों का, जो कि उनके आकार-प्रकार और आकृति से सम्बन्धित है, प्रत्यक्षण है।

Form Quality [फार्म क्वालिटी]. आकार-गुण।

यह सम्पूर्ण का गुण है—किसी अंग-विशेष का नहीं। मनोविज्ञान के इतिहास में यह 'आकार गुण' या 'गेस्टाल्ट क्वालिटी' के नाम से प्रसिद्ध है। सौम्यता, कोमलता इत्यादि गुण सम्पूर्ण वस्तु के गुण हैं—वस्तु के किसी अंग-विशेष का नहीं। एह्रेनफल्ड जर्मनी का पहला मनीषी था जिसने इस धारणा का सर्वप्रथम उन गुणों के लिए प्रयोग किया जो विभिन्न अंगों से स्वतन्त्र थे। उन्होंने इस प्रसंग में संगीतात्मक लय का उदाहरण दिया है जो स्वरों के एक विशेष क्रम में रखे जाने पर ही उत्पन्न होती है। ऐतिहासिक दृष्टि से यही धारणा गेस्टाल्ट सम्प्रदाय के अभ्युदय का कारण बनी।

Formal Discipline [फारमल डिसिप्लिन] औपचारिक अनुशासन।

अनुशासन शब्द मूलरूप में शिक्षण के पर्याय के अर्थ में ग्रहण किया जाता था परन्तु अब इसका तात्पर्य 'आचरण पर नियन्त्रण' से है। औपचारिक अनुशासन आधुनिक मनोविज्ञान का एक प्रमुख सिद्धान्त है जिसके अनुसार ज्ञान की कुछ शाखाओं अथवा कतिपय विषयों के शिक्षण से व्यक्ति में ऐसे बौद्धिक एवं नैतिक मूल्यों (यथा परिशुद्धता, चिन्तन की योग्यता, चरित्र की दृढ़ता आदि) का विकास होता है जो उन अन्य विषयों के शिक्षण में सहायक होते हैं।

अधिकांश मनोवैज्ञानिक इसे मान्यता नहीं देते। उनके अनुसार यदि प्रशिक्षण से पृथक् अनुशासन शब्द को केवल 'किसी कार्य के सम्पादन में स्वप्रेरित प्रयास' के अर्थ में

लें तभी इस सिद्धान्त में सत्यता की कुछ सम्भावना हो सकती है।

Fovea [फोविया] : खात दृष्टि-पटल।

दृष्टितालो के विपरीत दिशा मे, दृष्टिपटल के मध्यभाग मे स्थित एक छोटा बिंदु, जिसको खात भी कहते है। मानव में, इसमे केवल नेत्रशकु ही होते है। यह सब से अधिक स्पष्ट दृष्टि का क्षेत्र होता है।

दे० (Retina)

Free Association [फ्री ऐ'सोसिएशन] मुक्त साहचर्य, अबाध मन-आयोजन।

यह मनश्चिकित्सा (Psycho Therapy) की एक युक्ति है और मनोविश्लेषण के प्रवर्तक फ्रायड द्वारा प्रतिपादित-अन्वेषित की गई है। इसमे रोगी पर किसी प्रकार का नियम-प्रनिबध नही लगाया जाता। उसे मनमाना बोलने की स्वतन्त्रता देकर, सम्बद्ध हो या असम्बद्ध, नैतिक हो या अनैतिक, अनुभूति वर्तमान की हो या अतीत की उसकी मानसिक अवस्था के अध्ययन का प्रयास किया जाता है। मन की भावना-विचार को अभिव्यक्त करने के लिए रोगी को उत्साहित किया जाता है। फ्रायड का यह मूल सिद्धान्त था कि जो वातें बिना सोचे-समझे कही जाती है उनका मूल सबध सदैव अज्ञात मन की इच्छा-भाव से रहता है। इस प्रकार इस विधि द्वारा हमे अचेतन (Unconscious), उसके विषय-वस्तु और रक्षा-युक्ति (Mental Mechanism) की एक झाँकी मिल जाती है। अचेतन की प्रवल इच्छाओं को, जो सवेगात्मक मूल्य महत्व की है, दिग्दर्शन होता है।

मुक्त साहचर्य में कई कठिनाइयाँ हैं—

१. इसमे रोगी तुरत स्वस्थ नही हो सकता। कभी-कभी चिकित्सा में पूरा वर्ष लग जाता है।

२. इसमे व्यय अधिक होता है।

३. इसमे सक्रमण की समस्या उठती है।

४. इसमें आभ्यतरिक जगत् में रोध होता है और रोगी अपनी वास्तविक दुर्बलता को आसानी से नही स्वीकार कर लेता। सफलतापूर्वक उपचार करने के लिए दो वातें आवश्यक है—

(१) रोगी की मानसिक अवस्था का अध्ययन कर उसके अचेतन मन की इच्छाओं, आभ्यतरिक रोध-सघर्ष को समझना और

(२) रोगी के प्रति उचित व्यवहार और रुख कायम रखना। तभी मन समीक्षक रोगी का विश्वासपात्र वन सकता है और उसके अन्तरग मे प्रवेश कर उसमे छिपी निधि का पता लगा सकता है।

Free Floating Anxiety [फ्री-फ्लोटिंग एग्जाइटी] मुक्तचारी चिन्ता।

असाधारण चिन्ता का एक प्रकार जो अकारण है और जिसका किसी भी स्थूल-वस्तु से सवध नही होता। रोगी स्वयं अपनी चिन्ता का कारण नही जानता। ऐसी चिन्ता का सम्बन्ध व्यक्ति के आतरिक विक्षेप से होता है। यह चिता मनस्ताप (Anxiety neurosis) का लक्षण है।

देखिए—Anxiety neurosis.

Frequency Distribution [फ्रिक्वेन्सी डिस्ट्रिब्युशन] : आवृत्ति।

अंकीय मापन मे कितने व्यक्तियो का अथवा एक ही व्यक्ति को कितनी वार कौन-सा अक प्राप्त होता है अथवा कहाँ से कहाँ तक के अक प्राप्त होते हैं यह दर्शाने वाली सारणी। इस सारणी मे प्राय: तीन स्तभ होते है। पहले मे अक अथवा अंक वर्गान्तर, दूसरे में प्रत्येक वर्गान्तर मे प्राप्त अकों को गिनने की सुविधा के लिए आवृत्ति-चिह्न, और तीसरे मे प्रत्येक वर्गान्तर के आवृत्ति-चिह्न की सख्या। अंक वर्गान्तरो (Class interval) की संख्या प्राय: १० और २० के बीच हुआ करती है।

आवृत्ति वटन का लेखा चित्रीय निरूपण भी किया जा सकता है। तव वह आवृत्ति वहुभुज (Polygon), आवृत्ति आयत चित्र (Histogram) अथवा आवृत्ति वक्र

(Frequency Curve) का रूप ले लेता है।

Frequency Polygon [फ्रिक्वेन्सी पालिजन] आवृत्ति बहुभुज।

मनोमापन में आवृत्ति वटन (Frequency distribution) को रेखाचित्र रूप में प्रदर्शित करने का एक माध्यम। सुविधा के लिए पहले आवृत्तियों को समान अक वर्गान्तरो (class intervals) में वर्गीकृत कर लिया जाता है। तब प्रत्येक अक वर्गान्तर का प्रतिनिधि उस वर्गान्तर के मध्याक (mid point) को मान लिया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक वर्गांक को भुजाक्ष पर और उसकी आवृत्ति को कोटि अक्ष पर रखकर, इनका सयोग बिन्दु लिया जाता है। इसी प्रकार प्राप्त बिन्दुओं को क्रम से सरल रेखाओं से मिला देने से एक बहुभुज बन जाता है। इसीको आवृत्ति बहुभुज कहते हैं। इस आकृति को पूर्ण करने के लिए प्राय उपलब्ध अक वर्गान्तर शृखला के दोनों सिरो पर एक एक शून्य आवृत्ति वाला अतिरिक्त अक वर्गान्तर और लगा दिया जाना है। बहुभुज को सममित करने के लिए भुजाक्ष और कोटि अक्ष पर इकाइयाँ इस प्रकार चुनी जाती हैं कि बहुभुज की ऊचाई उसकी चौडाई का तीन चौथाई रहे। बहुभुज का क्षेत्रफल आवृत्ति वटन की कुल व्यक्ति-सख्या दर्शाता है।

Fringe of Consciousness [फ्रिन्ज ऑव कॉन्शसनेस] चेतना तट।

इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग जेम्स ने किया था। उनके अनुसार किसी भी काल विशेष म हमारे सज्ञान का क्षेत्र विस्तृत होना है। इस क्षेत्र की यदि किसी वृत्त से तुलना की जाए तो सबसे अधिक चेतना का स्थान 'केन्द्र' (Centre of Consciousness) और केन्द्र से परे का भाग 'तट' (Margin or Fringe of Consciousness) कहलाएगा। केन्द्र मे रहने वाली वस्तु के प्रति व्यक्ति सर्वाधिक चेतन रहता है और केन्द्र से परे जो वस्तु जितनी ही अधिक दूर होती है उसके प्रति वह उतना ही कम चेतन होता है। उदाहरण के लिए इन पक्तियो के लिखते समय 'लिखना' चेतना के केन्द्र मे है और घडी की टिक् टिक्, चिडिया का ची ची सीमान्त अथवा तट मे। केन्द्र की वस्तुएँ तट मे और तट की वस्तुएँ केन्द्र में आती-जाती रहती हैं। कभी-कभी चेतना के केन्द्र म लाने का प्रयास भी होता है—यथा, किसी भूले हुए नाम को स्मरण करना।

Frigidity [फ्रिजिडिटी] कामशैत्य।

व्यक्ति मे काम इच्छा का पूर्ण अथवा आंशिक अभाव। कामसुख अथवा कामतृप्ति के अनुभव करने की असमर्थता।

कामशैत्य प्राय मनोवैज्ञानिक कारणो से उत्पन्न होता है। यह अधिकाशत सवेगात्मक सघर्षों के कारण उत्पन्न अवरोधो का सूचक है। इसके प्रमुख कारण निम्न हैं—१ अवाछनीय प्रारम्भिक प्रशिक्षण (यथा, कामभावना को निन्दनीय और घृणित ठहराना)। २ यौन-साथी के प्रति सवेगात्मक निकटता का अभाव (अवाछित अथवा अनमेल व्यक्ति के साथ सम्बन्ध होना)। ३ क्रूर तथा स्वार्थी व्यक्ति के साथ सम्बन्ध जिसके लिए केवल अपनी कामतृप्ति ही सर्वोपरि है। ४ पीडा तथा असतोषजनक प्रथम यौन-अनुभव। ५ भय। ६ सुप्त सहयौन प्रवृत्ति। कामशैत्य का वास्तविक उपचार दोनों सहयोगियो मे एक-दूसरे के प्रति आस्था, विश्वास, स्नेह इत्यादि उत्पन्न करना है।

Frontal lobe [फ्रन्टल लोब] अग्र पालि।

मस्तक की ओर बृहत् मस्तिष्क का वह भाग जो रोलैण्डो की दरार के आगे तथा सिल्विस की दरार के ऊपर स्थित है। मानव की उच्चस्तर की मानसिक क्रियाओ—यथा स्मृति, चिन्तन, कल्पना, प्रेरणा आदि—का सम्बन्ध इसी खण्ड से बतलाया जाता है। इसको क्षति पहुँचने से व्यक्ति अपेक्षाकृत निष्क्रिय और निष्प्रभ हो जाता है। भयाग्नी और चिन्तन

विकृत हो जाता है। मानसिक क्रियाओं का पारस्परिक सन्तुलन नष्ट हो जाता है। इस सम्बन्ध मे सबसे प्रसिद्ध ऐतिहासिक महत्त्व का केस गेज का है जिसे डॉक्टर हारलो ने १८६२ में *उद्धृत किया* था। एक दुर्घटना मे एक लोहदण्ड गेज के बाएँ जबड़े से होता हुआ मस्तिष्क के अग्र पालि में जा निकला था। स्वस्थ होने पर भी उसकी दक्षता और मानसिक सन्तुलन पहले का-सा न रहा। उसका पशुत्व उभर आया और विवेक दब गया।

देखिये—Pre-frontal Lobotomy

Frustration [फ्रस्ट्रेशन]. कुंठा, कुंठत्व।

अवरोध के कारण किसी भी तीव्र प्रेरक-इच्छा की पूर्ति अथवा ध्येय की प्राप्ति न होने पर *मन की एक विच्छिन्न क्षुब्धावस्था।* मानसिक विकास और व्यवहार पर इस अनुभूति का विशेष प्रभाव पडता है। इसकी प्रतिक्रिया में व्यक्ति मे कभी हीनत्व-ग्रंथि पड जाती है, विद्रोहात्मक व्यवहार और तनाव की अनुभूति होती है, मानसिक रोग के लक्षण मिलते हैं, और विक्षिप्तता आती है; कभी इसके परिणाम मे *व्यक्ति* अधिक क्रियाशील होता है, अन्वेषक बनता है और इस प्रकार नई-नई वैज्ञानिक और कलात्मक रचनाएँ सृजन करता है। किस प्रकार की प्रतिक्रिया होगी, यह तो उस व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत विशेषता है। जो कुंठा सह्यता (Frustration tolerance) स्वभाव के हैं सम्भव है कि वे रचनात्मक कार्य में संलग्न हों। प्रेम मे निराशा मिलने पर अर्थात् कामवृत्ति की तृप्ति न होने पर प्रायः व्यक्ति कवि या कलाकार बनता है। कुंठा के कई एक कारण हैं :

१. प्राकृतिक वातावरण, २. दैहिक सीमाएँ ३. मानसिक अवस्था और ४. सामाजिक वातावरण। अकाल, बाढ, अग्नि, प्रकोप इत्यादि प्राकृतिक कारण हैं। इन्द्रियों में दोष होना दैहिक सीमा है। स्वभाव-सम्बन्धी विशेषताएँ, जैसे साधारण-सी बात मे उद्विग्न हो जाना, विमुख हो जाना मानसिक कारण है। समाज के नियम-परम्परा बंधन, अवरोध सामाजिक कारण हैं।

Fugue [फ्यूग] : आत्मविस्मरण।

यह हिस्टीरिया रोग का एक लक्षण है। इसमे रोगी इधर-उधर भागा-भागा-सा घूमता रहता है। यह उस अवस्था का द्योतक है जिसमे रोगी का किसी से न तो मानसिक सम्बन्ध रहता है और न भौगोलिक। वह यह भूल जाता है कि वह कौन है और कहाँ का रहने वाला है। जिस वातावरण मे रहता है उससे दूर भाग जाता है और जैसे एक नए व्यक्ति के रूप मे जीवन-यापन करता है। सामान्य अवस्था आने पर इस काल की अनुभूतियो का उसे लेशमात्र भी स्मरण नही रहता। आत्मविस्मरण और निद्राभ्रमण (Somnambulism) मे विभेद किया जा सकता है। किंतु इनमें बहुत-कुछ समानता भी है। दोनो ही अवस्थाओं मे रोगी को अपने अतीत की स्मृति नही रहती। अंतर यह है कि आत्मविस्मरण मे रोगी एक नए प्रकार *का जीवन-यापन* करता है और निद्राभ्रमण मे रोगी को भ्रांति मात्र होती है। आत्मविस्मरण मे मानसिक संतुलन रहता है, निद्राभ्रमण मे पूर्ण रूप से मनोविच्छेद हो जाता है। आत्मविस्मरण मे रोगी उस इच्छा को पूर्ण करने का प्रयत्न करता है जिसकी अभिव्यक्ति जीवन में नही हुई, पर जिसका अनुभव *उसे मन-ही-मन में अज्ञात* स्तर पर हुआ करता है; निद्राविचरण में रोगी अपने पिछले अनुभव का पुनः अनुभव करता है।

Functional Psycloses [फन्क्शनल साइकोसिस] : कार्यात्मक मनोविक्षिप्ति।

अत्यधिक तीव्र और जटिल प्रकार के मानसिक रोग जिनका सम्बन्ध पूर्णतः मानसिक अवस्था से होता है और जिनका कारण कायिक तथा रासायनिक रुग्णता नही होता। मनोजात विक्षेप में अकाल मनोभ्रंश *(Dementia Praecox)*, उत्साह-विषाद विक्षिप्ति (Manic Depressive

insanity) और सविभ्रम (Paranoia) प्रमुख रोग हैं। इस श्रेणी के मानसिक रोगों में व्यक्तित्व-सम्बन्धी अव्यवस्था दृष्टिगत होती है—व्यक्तित्व की विभिन्न अवस्थाओं में विच्छेद हो जाता है—भाव, विचार और क्रिया में असम्बद्धता मिलती है, इनमें क्रम-व्यवस्था नहीं रह जाती। उपचार आसान नहीं होता। अधिकतर आघात चिकित्सा (Shock Therapy) और मस्तिष्क शल्य चिकित्सा (Brain Surgery) का प्रयोग होता है।

Functional Relation [फन्क्शनल रिलेशन] कार्यात्मक सम्बन्ध।

दो परिवर्त्यों में आंशिक या पूर्ण रूप से आश्रित सम्बन्ध—अर्थात् एक में परिवर्तन होने पर दूसरे में भी परिवर्तन होता है। परतन्त्र परिवर्त्य (Dependent variable) स्वतन्त्र परिवर्त्य (Independent variable) का फलन है।

Functionalism [फन्क्शनलिज़्म] प्रकार्यवाद, कृत्यवाद।

मनोविज्ञान का वह प्रकार जिसमें मानसिक घटकों के वस्तु-तथ्यों के स्थान पर प्रक्रियाओं पर अधिक बल दिया गया है। मानसिक कृत्यवाद में मानसिक तथ्यों की व्याख्या में अनुभूति और व्यवहारगत तथ्यों का विश्लेषण-वर्णन न कर व्यक्ति के जीवन में उनके महत्त्व पर अधिक बल देता है। मानसिक प्रक्रियाओं की व्याख्या में मनुष्य की चेतन अनुभूतियों से प्रारम्भ करके व्यक्ति न केवल उनकी संरचना (structure) वरन् उसके भौतिक और सामाजिक वातावरण से उपयोग में आनेवाली क्रियाओं में भी रुचि प्रकट करने लगता है। व्यक्ति प्राप्य फलों से प्रारम्भ कर यह प्रश्न करता है कि उसने इन्हें किन मानसिक प्रक्रियाओं द्वारा प्राप्त किया, अर्थात् व्यक्ति के मन में घटनेवाली प्रक्रियाओं को समझने के लिए चेतन अनुभूतियों का सहारा लिया जाता है।

कृत्यवाद दो प्रकार का है : गौड और प्रारम्भिक। शिकागो स्कूल के डेवे, एन्जेल और हार्वेकार गौड कृत्यवाद के तथा यूरोप के क्लोपोर्ड, डेविड वार्ड और एड्गार्ड प्रारम्भिक कृत्यवाद के प्रवर्तक हैं।

कृत्यवाद मनोविज्ञान अन्तर्निरीक्षण के पूर्ण निराकरण और बाह्यवस्तुवाद के पक्ष में 'एक प्रकार का व्यवहारवाद (Behaviourism) है। मानसिक परीक्षण, बाल मनोविज्ञान, मनोरोगविज्ञान आदि व्यावहारिक मनोविज्ञान की शाखाएँ कृत्यवाद के अन्तर्गत ही आती हैं।

Functional Autonomy [फन्क्शनल औटॉनमी] कार्यात्मक स्वायत्तता।

जी० डब्ल्यू० आलपोर्ट ने इस मत को प्रतिपादित किया। आलपोर्ट के अनुसार कुछ परिपक्व-प्रौढ़प्रेरक (adult motives) आत्मनिर्भर प्रणालियों (self sustaining system) के रूप में होती हैं। प्रयत्नात्मक सचालन प्रवृत्ति के रूप में आरम्भ होकर, यह समय पाकर, प्राथमिक प्रेरक से, *जिनसे कि इनका प्रादुर्भाव हुआ*, स्वतन्त्र हो जाती है और उसके बाद स्वायत्त रूप से अपनी यथायोग्यतानुसार व्यवहार को व्यवस्थित कर सकती हैं।

Fusion Frequency [फ्युज़न फ्रिक्वेन्सी] सयोजन। सयुक्ति, आवृत्ति।

ऐसी आवृत्ति सख्या या प्रवेग जिस पर कई प्रकार के उद्दीपक, किसी इन्द्रिय के सामने इस प्रकार क्रमानुसार उपस्थापित किये जाते हैं जिससे कि फलीभूत अनुभव भिन्न भिन्न योजनाओं के एक सयोग या सम्मिश्रण के रूप में हो। अगर पूर्ण सयुक्त नहीं होती है तो फलीभूत अनुभव एक झिलमिलाहट या फुरफुरण के रूप में उस अवस्था में होगा जहाँ पर कि भिन्न भिन्न उत्तेजक एक-दूसरे के बाद आते हुए मालूम होंगे।

Galvanometer [गैल्वैनोमीटर] गैल्वैनोमीटर, धारामापी।

एक भौतिक यन्त्र जो कि विद्युत धारा की शक्ति को नापने के लिए बनाया जाता है। प्रायोगिक मनोविज्ञान में, इसी का

संशोधित रूप जो कि मनो धारामापी (Psychogalvano meter) कहलाता है मनोविद्युतवाही प्रतिक्रिया (Galvanic skin response) के अध्ययन मे प्रयुक्त होता है। इस यन्त्र-रचना मे एलेक्ट्रोडस, जो कि एक विद्युत वृत्त से जुडे होते हैं, के द्वारा विद्युत प्रवाहित की जाती है।

Galvanic Skin Response [गॅल्वेनिक स्किन रेस्पॉन्स] : गॅल्वेनिक त्वक् अनुक्रिया।

इसको मनोविद्युतवाही प्रतिक्षेप भी कहते हैं। विभिन्न वस्तुओं की तरह मनुष्य का शरीर भी विद्युतधारा के प्रवाहनमार्ग मे कुछ अवरोधन उत्पन्न करता है। गॅल्वेनोमीटर ह्वीट स्टोन ब्रिज की तरह शारीरिक अवरोधन को निरीक्षण करने का एक भौतिक उपाय है, जब कि ऐन्द्रिय या प्रत्ययात्मक (ideational) उद्दीपक का प्रयोग किया जाता है तो यह अवरोधन उस शारीरिक क्रिया (जैसे पसीने की ग्रन्थि अग की क्रिया), जो कि स्वायत्त स्नायविक मण्डल के नियमन मे है, के कारण घटता है। गॅल्वेनिक त्वक् अनुक्रिया शारीरिक अवरोधन का उपयोग परिवर्तन है।

Gene [जीन] : जीन।

जीव कोषों के वशसूत्रो मे पाए जाने वाले विशिष्ट तत्त्व जो सन्तानो मे उनके माता-पिता की वंशपरम्परा के सूचक हैं।

देखिए—Cell.

G. Factor [जी० फैक्टर] : सा० कारक, सा० खण्ड।

अनेक योग्यता परीक्षणो मे सभी मे उपस्थित सामान्य खण्ड। १९०४ मे स्पियरमैन ने अपने प्रयोगों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि सभी परीक्षण समूहो में एक वही सामान्य खण्ड होता है और उसका सार बोधक्रिया अथवा बुद्धि है। यह सामान्य खण्ड किसी परीक्षण मे कम और किसी परीक्षण मे अधिक मात्रा मे उपस्थित होता है, अर्थात् इस खण्ड का 'भार' किसी परीक्षण मे कम तथा किसी परीक्षण मे अधिक होता है। कालांतर मे स्पियरमैन ने यह भी स्वीकार किया कि किसी परीक्षण समूह में सर्वोपस्थित सामान्य खण्ड जी० के अतिरिक्त कुछ अन्य सामान्य खण्ड भी हो सकते हैं जो सब परीक्षण समूहो में उपस्थित न हों। ऐसे सामान्य खण्डो को समूह खण्ड कहा गया है और भाषा योग्यता, सख्या योग्यता, मानसिक गति, यान्त्रिक योग्यता, अवधान एवं कल्पना आदि कुछ ऐसे ही समूह खण्ड माने गए हैं। प्रत्येक परीक्षण का शेष खण्ड विशिष्ट खण्ड कहा जाता है। खण्ड जी० तथा इसके अन्य खण्डों से सम्बन्ध की यह धारणा इस चित्र द्वारा स्पष्ट की जा सकती है.
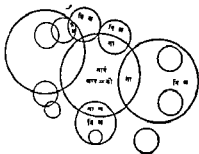
General Ability [जेनरल एब्लिटी] : सामान्य योग्यता।

देखिये — Ability

Genetic Method [जेनेटिक मैथड] : आनुवंशिक विधि, जननिक प्रणाली।

यह अनुसंधान करने की एक पद्धति है। इसमे किसी वस्तु या तथ्य के ऐतिहासिक या विकासीय प्रगति-क्रम का अन्वेषण होता है और उस क्रम की दृष्टि से उस तथ्य या वस्तु को समझने का प्रयास होता है।

यह पद विकास पद्धति का पर्यायवाची है। चिकित्सा पद्धति का एक रूप यह विकास पद्धति भी है। चिकित्सक किसी एक मनोविकृतजन्य व्यवहार के विकास-क्रम का पता पहले लगाने का प्रयास करता है कि किस प्रकार से इस व्यवहार

का प्रादुर्भाव हुआ और फिर उसकी विशिष्टताओं का अध्ययन करता है।

Genus [जिनियस] प्रतिभाशाली।

अत्यधिक उच्चस्तर की बौद्धिक योग्यता (रचनात्मक, सगठनात्मक, आविष्कारात्मक, कलात्मक आदि) का व्यक्ति, जिसकी बुद्धि-उपलब्धि १८० अथवा उससे ऊपर पाई जाती है। बुद्धि परीक्षा से किसी व्यक्ति के बुद्धि उपलब्धि (दे० I Q) का सरलता से पता लग जाता है और फिर उसका वर्गीकरण आसान हो जाता है। इससे बौद्धिक अवस्था को प्रमुखता और महानता दी जाती है।

मनोविश्लेषण के अनुसार प्रतिभाशाली व्यक्ति भी मानसिक सघर्षों से ही प्रेरित होता है। अन्तर केवल यह है कि प्रतिभाशाली व्यक्ति की दमित कामशक्ति का उन्नयन हो जाता है और वह उसे समाजोपयोगी कार्यों मे सफलता से उपयोग मे लाता है। इस प्रकार मानसिक सघर्ष का उपयोग रचनात्मक कार्य मे होता है।

Geometrical Illusion [जिओमेट्रिकल इल्युजन) ज्यामितिय भ्रम।

सरल तथा वक्र रेखाओ से निर्मित साधारण आकार जो अपने वास्तविक रूप से भिन्न दिखलाई पड यथा—पूर्ण वर्ग की ऊँचाई का चौडाई से अधिक प्रतीत होना। ज्यामितिय भ्रमो को प्राय तीन भागो मे बाँटा जा सकता है (१) अस्पष्ट अथवा परिवर्तनीय दृश्य-सबधी—इसमे आकार अपनी अस्पष्टता के कारण कभी कुछ दिखलाई पडता है कभी कुछ। (२) विस्तार अथवा दूरी-सबधी—किसी आकार की लम्बाई, दूरी अथवा विस्तार का वास्तविक से कम अथवा अधिक दिखलाई पडना। (३) दिशा-सम्बन्धी—यथा, विशिष्ट पृष्ठभूमि मे सीधी रेखाओ का टेढा, झुका हुआ अथवा टूटा हुआ प्रतीत होना।

Gestalt Psychology [गेस्टाल्ट साइकॉलोजी] समष्टि मनोविज्ञान।

गेस्टाल्ट मनोविज्ञान समसामयिक मनोविज्ञान सम्प्रदाय मे सबसे अधिक प्रभावशाली है। इसका प्रारम्भ चेतन का तत्वो मे विश्लेषण के सिद्धान्त के विरोध मे हुआ। 'गेस्टाल्ट' शब्द का अर्थ है आकार या आकृति अथवा 'तथ्य' (एसेन्स)। इसका सबध 'पूर्ण' समष्टि से है, अनुभव मे सदैव पूर्ण की अनुभूति होती है। सगीत मे स्वर-आकार (मेलौडिक फार्म) मिलता है, केवल स्वर मालिका नही मिलती। सबधित 'पूर्ण' विभिन्न हिस्सो के जोड से तथा उसके क्रमिक आकार से कुछ अधिक ही उसकी अपनी विशेषता है।

गेस्टाल्ट मनोविज्ञान मे मुख्य रूप से 'प्रत्यक्षीकरण' विषय पर अन्वेषण हुआ है। गेस्टाल्टवादियो के अनुसार प्रत्यक्षीकरण गतिकी सिद्धान्तो से निर्धारित होता है जिनके कारण इसमे विशेष प्रकार का मनोवैज्ञानिक सघटन मिलने लगता है। प्रत्यक्ष उद्दीपन का प्रतिबिंब नही है यह अवयव के तथ्यो की पारस्परिक क्रिया प्रतिक्रिया का परिणाम है। गेस्टाल्टवादियो ने 'दृश्य आकार' को प्रत्यक्ष का मुख्य प्रकार माना है और इसकी विशद व्याख्या की है। प्रत्यक्षित क्षेत्र सघटित रहता है, यह एक रूप लिए रहता है जिससे विभिन्न भाग सबधित होते है और आकार बनाने के लिए समन्वित होते हैं। इस सघटन के कई एक सिद्धान्तो मे प्रत्यक्षित क्षेत्र को आकृति भूमि (Figure-Ground) मे आकारित करना प्रमुख है। आकार साधारण और जटिल दोनो प्रकार का होता है और जटिलता की मात्रा का अनुमान स्पष्टता से लग जाता है और समाकृति (Good Figure) अच्छे रूप मे आकारित रहता है। एक दृढ आकार सबधित होता है और दूसरे से मिश्रण होने पर भी उसमे विच्छेद नही होता। सघटन स्वभावत स्थायी होते हैं; एक बार बना हुआ बना रहता है, अथवा मूल स्थिति आने पर फिर घटित होते है, यह 'पूर्ण आकृति' की पुनरावृत्ति है। आकृति अपने को

पूर्ण करने में सीमित, सन्तुलित रहती है और इसमे अनुपात होता है। इसलिए संघटित आकार अर्थयुक्त होता है। एक स्पष्ट आकार जो एक वस्तु है अपने आकार और रंग को स्थिर बनाए रहती है। उत्तेजन की परिस्थिति मे अदल-बदल होने पर भी स्थायित्व बना रहता है और इसे वस्तु-स्थिरता (Object Constancy) कहते हैं।

गेस्टाल्ट मनोविज्ञान मे सघटन के सिद्धान्त का निरूपण प्रत्यक्षण के अतिरिक्त 'शिक्षण' अथवा अधिगम और 'विवेक' क्षेत्रो मे भी हुआ है। शिक्षण के क्षत्र मे इस सिद्धान्त का, उपयोग होने के कारण अन्तर्दृष्टि (Insight) के सिद्धान्त का निर्माण हुआ। इसी प्रकार विचार-क्षेत्र मे इसका प्रयोग होने से 'रचनात्मक विचार' के सिद्धान्त का निर्माण हुआ।

(देखिए—Organisation, Figure-Ground, Insight, Good Figure)

Germ Cell [जर्म सेल] : जनन-कोशिका।

एक प्रकार का पुनरोत्पादक जीवकोष विशेष, जिसमे (मानवों मे) केवल २४ वसत्र पाए जाते है। यह दो प्रकार का होता है—स्त्री जीवकोष अथवा अण्डाणु तथा पुरुष जीवकोष अथवा शुक्राणु। अण्डाणु और शुक्राणु के मिलने से ही पुनरोत्पादन की निया होती है।

Geotropism [जियोट्रापिजम] : गुरुत्वानुवर्तन।

गुरुत्वाकर्षण के प्रति अभिविन्यास (Orientation) सम्बन्धी प्रतिक्रिया। यह दो प्रकार की होती है: (१) अनुरूप—इसमे प्राणी का सर पृथ्वी के केन्द्र अथवा नीचे की ओर होता है; (२) प्रतिरूप—इसमें प्राणी का सर पृथ्वी के केन्द्र से परे अथवा ऊपर की ओर होता है।

Gesture Language [जेस्चर लैंग्युएज] : संकेत भाषा।

साधारणत: मानव मे पाई जानेवाली भाव-सवेग के आदान-प्रदान की प्रणाली विशेष, जिसके अन्तर्गत मुद्राओं (हाथ अथवा अन्यान्य अग-प्रत्यगो की विभिन्न स्थितियों) का सुनिश्चित दृश्य चिह्नों अथवा प्रतीकों के रूप मे व्यवहार किया जाता है।

Gestalt Qualitat [गेस्टाल्ट क्वालिटाट] : गेस्टाल्ट गुण।

जर्मन भाषा से लिया गया एक शब्द जो कि किसी भी उद्दीपक वस्तुस्थिति के रूप-गुण की ओर सकेत करता है। यह एक प्रतिकृति या वाह्याकार या रूप के लक्षण होने की ओर सकेत करता है।

Gifted Child [गिफ्टेड चाइल्ड] : प्रतिभासम्पन्न वालक।

उच्चकोटि की बौद्धिक प्रखरता तथा सीखने की विशिष्ट क्षमताओं से युक्त वालक। ऐसे वालक मे प्राय: निम्न विशेषताएँ पाई जाती है : **बौद्धिक**—इनकी बुद्धि-उपलब्धि (Intelligence Quotient) १४० अथवा अधिक होती है। मौलिकता, एकाग्रता, तार्किक-साहचर्यों के निर्माण की योग्यता, स्मृति-विस्तार तथा सामान्यीकरण आदि की प्रवृतियाँ इनमे विशेष रूप से पाई जाती है। इनका सामान्यज्ञान पर्याप्त उच्चस्तर पर रहता है। जीवन मे आगे बढने का उत्साह होता है। **शारीरिक**—अपनी ही अवस्था के औसत बच्चों की अपेक्षा इनकी लम्बाई, भार, शक्ति तथा सामान्य स्वास्थ्य उत्कृष्ट श्रेणी का होता है। **व्यक्तित्व**—औसत बच्चो की अपेक्षा ये सामाजिक भाव से युक्त, ईमानदार, विश्वसनीय, प्रसन्नचित्त, कर्मठ और सवेगात्मक दृष्टि से स्थिर होते है। इनकी रुचियाँ अधिक परिष्कृत होती है। क्रियात्मक कौशल तथा व्यायाम आदि के प्रति इनका विशेष झुकाव नही होता।

आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक, यान्त्रिक, रचनात्मक, कलात्मक आदि जीवन के सभी क्षेत्रों का पथ-प्रदर्शन प्रतिभाशाली व्यक्ति ही करते हैं। अत: इनका तथा इनकी शिक्षा का विशेष

सामाजिक महत्त्व है।

मार्टिन के अनुसार प्रतिभासम्पन्न बालकों की पहचान की तीन प्रमुख कसौटियाँ हैं (१) बुद्धि-परीक्षण, (२) उपलब्धि परीक्षण एव (३) शिक्षको के निर्णय। इनके अतिरिक्त इस निर्णय मे कक्षा का काम, स्वास्थ्य-परीक्षण, अभिभावको का अभिमत, पढ़ाई की आदतो, रुचियो की पहचान आदि से भी काम लिया जा सकता है।

प्रतिभासम्पन्न बच्चो के लिए विशेष शिक्षण व्यवस्था की आवश्यकता है। साधारण शिक्षण से न तो उनकी तुष्टि हो सकती है और न उनके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास। इस क्षेत्र म प्रयोग किए गए हैं—

(अ) कक्षा मे ऐसे बालको के लिए विशिष्ट पाठ्यक्रम का प्रबंध। (ब) विशिष्ट कक्षाओ का प्रबन्ध। टर्मन ने प्रतिभासम्पन्न बालको के बारे मे विशद अध्ययन किया है और उल्लेखनीय निष्कर्ष निकाले हैं।

Globus Hystericus [ग्लोबस हिस्टरिकस] ग्लोबस हिस्टेरिक्स।

हिस्टीरिया का एक लक्षण—जिसम रोगी को ऐसा लगता है मानो उसका दम घुट रहा है और उसके गले मे कही गोली अटक गई है।

Goal [गोल] लक्ष्य।

लक्ष्य वह कार्यावस्था है जिसकी ओर व्यक्ति का व्यवहार अथवा मानसिक और दैहीय क्रियाएँ निर्देशित या उन्मुख होती हैं। गतिक मनोविज्ञान ने इस विषय पर बहुत-से अन्वेषण किए हैं। लक्ष्य उस व्यक्ति के परे वातावरण मे निहित नहीं होना जिस ओर उसका व्यवहार निर्देशित होना है। व्यक्ति लक्ष्य की प्राप्ति के लिए चेतन या अचेतन रूप से सदैव प्रयास किया करता है।

देखिए—Tension

Gonad [गोनैड] जनन-ग्रंथि।

इनको काम-ग्रंथि अग भी कहते हैं। एक सामान्य पद जो कि उन शुक्र ग्रंथियो की ओर निर्देश करता है जो कि पुरुषो मे जन्यु या शुक्र (testis) तथा स्त्रियो मे अडाशय (*ovary*) जो रज या स्त्रीजन्य उत्पन्न करता है। स्तन्यपायी प्राणियो मे जनन-ग्रंथि लैंगिक न्यासर्ग उत्पन्न करते हैं। इसका विशेष प्रभाव मानसिक अवस्था अथवा मानव के व्यक्तित्व और व्यवहार पर पडता है।

Good Figure [गुड फिगर] : उत्कृष्ट आकृति, समाकृति।

प्रत्यक्षण आकृति (perceptual figure) का एक प्रमुख सिद्धांत। उत्कृष्ट आकृति सुगठित रूप से अभिव्यक्त होती है और इसका प्रभाव द्रष्टा पर स्थायी रूप से और बार-बार पड़ता है। 'वृत्त' उत्कृष्ट आकृति है।

Grandiose Complex [ग्रैंडियोज़ काम्प्लेक्स] ऐश्वर्य ग्रंथि।

अपने किसी गुण अथवा काल्पनिक गुण की महानता से सम्बन्धित अतिशयोक्तिपूर्ण विश्वास। व्यक्ति के अज्ञात मन मे निहित यह विश्वास उसमे ऐश्वर्य-भ्रम को उत्पन्न करता है यथा—'मैं करोडपति हूँ', 'मैं गाधीजी हूँ' आदि। संविभ्रम (Paranoia) के रोगी प्राय ऐश्वर्य-ग्रन्थि के शिकार होते हैं। ऐश्वर्य-ग्रन्थि कामवृत्ति के दमन की प्रतिक्रियास्वरूप उत्पन्न होती है। कामशक्ति के अन्तर्मुख हो जाने से व्यक्ति बाह्य वस्तुओ की ओर आकर्षित होने के स्थान पर स्वय अपने ही बारे मे काल्पनिक रंगीले चित्र खीचने लगता है जो पूर्ण रूप से आधारहीन और भ्रामक होता है। अपने बारे मे उसे 'भ्रम' होने लगता है।

Graphology [ग्राफ़ॉलॉजी] • आलेख विश्लेषण।

किसी की लिखाई के विश्लेषण के आधार पर उसके व्यक्तित्व अथवा चरित्र के निदान की विधि। यह व्यक्तित्व निदान की उन विधियो मे से है जिनमे आवश्यक प्रदत्त विशेष प्रकार से नियन्त्रित परिस्थितियो मे उत्पन्न नही किए जाते

वरन् जीवन के साधारण क्रम में उपलब्ध होते ही रहते हैं। इसकी विशेषता यह भी है कि किसी भी आयु के व्यक्ति की सभी पूर्व अवस्थाओं की लिखाई के नमूने प्राप्त किए जा सकते हैं और उनके आधार पर *उसके पूर्व अवस्था के व्यक्तित्व* को भी जाना जा सकता है, अर्थात् उसके व्यक्तित्व के विकास का पूरा इतिहास ज्ञात किया जा सकता है। प्रायः इस विधि का उपयोग इस विश्वास पर आधारित होता है कि व्यक्तित्व अथवा चरित्र के प्रकार भी प्राकृतिक रचना की उन्ही विशेषताओं पर निर्भर होते हैं जिनके कारण लिखाई में वैयक्तिक अन्तर हो जाया करते हैं। इस प्रकार किसी व्यक्ति की लिखाई से उसके चरित्र अथवा व्यक्तित्व का अनुमान लगाना सम्भव है।

Group Behaviour [ग्रुप बिहेवियर] : सामूहिक व्यवहार।

समूह के उद्भव, संरचना और क्रिया का विकास समाज-विज्ञान का मुख्य विषय है। समाज-मनोविज्ञान में सामूहिक व्यवहार समूह में व्यक्ति के व्यवहार से भिन्न नहीं माना गया है। समूह एक इकाई के रूप में दृष्टिगत होता है।

Group Factors [ग्रुप फैक्टर्स] : समूह-खण्ड, समूहकारक।

बुद्धि-परीक्षणों के खण्ड-विश्लेषण से प्राप्त वह खण्ड जो विश्लेषित परीक्षणों में से सबमें तो नहीं परन्तु कुछ परीक्षणों में पाए जाते हैं।

नीचे दिए चित्रण में खण्ड क दो परीक्षणों में, खण्ड ख तीन परीक्षणों में और खण्ड ग चार परीक्षणों में दर्शाया गया है। ये *तीनों सामूहिक खण्ड होंगे।*

बुद्धि के ऐसे समूह-खण्डों की वास्तविक संख्या तो कदाचित् बहुत बड़ी हो, परन्तु इनमें से अधिकांश को कुछ प्रमुख वर्गों में
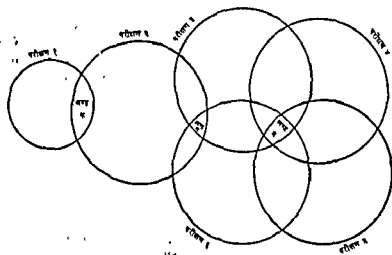
वह व्यवहार जो समूह की विशेषता है या उस व्यक्ति की जो समाज का सदस्य है—सामूहिक व्यवहार है। सामूहिक व्यवहार का उद्भव पारस्परिक अनुकूलन द्वारा "समूह के सदस्यों के व्यवहार में सामंजस्य लाने के" लिए है" जिससे कि समूह में क्रियात्मक संबद्धता हो। मानव-

रखना सम्भव पाया गया है। सबसे अधिक व्याख्या इन तीन वर्गों की मिलती है—

(१) अमूर्त बुद्धि, अर्थात् शब्दों तथा अन्य प्रतीकों के साथ व्यवहार करने की योग्यता, जिसके अन्तर्गत गणितिक तर्क, वाक्यपूर्ति, शब्दज्ञान,

निर्देश पालन, आदि की योग्यता है।
(२) यांत्रिक बुद्धि, अर्थात् मूर्त पदार्थों और वस्तुओं के साथ व्यवहार करने की योग्यता।
(३) सामाजिक बुद्धि, अर्थात् अन्य व्यक्तियों के साथ व्यवहार करने की योग्यता, जिसके अन्तर्गत बच्चों के साथ, प्रौढ़ों के साथ, सलिंगियों के साथ, एवं विलिंगियों के साथ व्यवहार करने की योग्यताएँ हैं।

Group Identification [ग्रुप आइडेंटिफिकेशन] समूह-तादात्म्यकरण।
एक प्रकार की सामूहिक प्रवृत्ति। परस्पर सम्बन्धित होने की अनुभूति। समुदाय-मार्गों का एक पूर्वाकांक्षित तत्त्व। अपने 'स्व' अथवा 'सेल्फ' का दूसरों के साथ एकरूप कर देना। जब पराङ्मुखता टूट जाती है तो एक अवसर एक-दूसरे की ओर आकर्षित होने का उठता है और इस प्रकार कुछ तादात्म्यकरण स्थान लेता है। एक-दूसरे के सम्बन्ध में अपने का प्रत्यक्षण दृढ़ होना प्रारम्भ हो जाता है। समूह के मानक (Norm) 'स्व' (Self) के गुणों के रूप में आभ्यन्तरित हो जाते हैं। उस समूह के मानक का तादात्म्यकरण उनकी अपनी आवश्यकता, प्रयोजन और महत्त्वाकांक्षा से हो जाता है। समूह मानक (Group norm) उनके मानक हो जाते हैं।
मानकों में सहकारी होते हैं, उनको भोगते नहीं। वे वैयक्तिक हो जाते हैं, व्यक्ति उनको बाहरी दबाव के रूप में नहीं अनुभव करता।

Group Leadership [ग्रुप लीडरशिप] समूह-नेतृत्व।
एक समूह की उन विशेषताओं की ओर संकेत करता जिनके रूप में समूह के लक्ष्यों की प्राप्ति का प्रयास किया जाता है। वर्तमान क्षेत्र-सैद्धान्तिक दृष्टिकोण में, समूह नेतृत्व की व्याख्या उन वस्तु स्थितियों के पदों में की जाती है जिनमें कि नेतृत्व विद्यमान है।
सिमेल के अनुसार नेतृत्व कोई ऐसी विशेषता नहीं है जो कि व्यक्ति में प्रस्तुत है। बल्कि यह एक व्यवहार करने का ढंग है जिसकी उत्पत्ति दूसरों से सम्बन्ध के फलस्वरूप हुई है। एच बोनर के अनुसार 'नेतृत्व' नेता के पूर्ण व्यक्तित्व और प्रासंगिक सामाजिक वस्तुस्थिति, जिसमें कि वह विद्यमान है, के बीच परस्पर क्रिया का फलस्वरूप है।
यह नेतृत्व के आवश्यक गुण अर्थात् 'स्वयं' को दूसरों से इस तरह से सम्बन्धित करने का नेता का कार्य, जिससे कि वे लोग अनुकल्पित व्यवहार करें, को प्रकाशित करता है। नेता समूह का एक अनुकूल सदस्य है जिसके लक्ष्यों में वह सहकारी होता है और जिसकी सिद्धि वह निर्विघ्न करने की उम्मीद करता है।
ब्राउन के अनुसार, नेतृत्व एक व्यक्ति की योग्यता है जिसके द्वारा, वह अपने निर्णय से उन वस्तुस्थितियों में क्षेत्र संरचनाकरण प्रस्तुत करे, जहाँ पर कि वर्तमान ज्ञान के बल पर उन निर्णयों की प्रकृति के बारे में केवल क्षेत्र संरचना से पूर्व सूचना नहीं मिल सकती है। नेता का निर्णय उसके वैयक्तिक व्यक्तित्व की संरचना पर निर्भर करता है और उसके चुनाव की प्रभावशालिता पूर्ण सामाजिक क्षेत्र की संरचना पर निर्भर करती है।
नेता वास्तविक रूप में, सामाजिक क्षेत्र में उच्च शक्ति का प्रतिरूपण करता है और उसकी शक्ति नेता रूप में, पूर्ण क्षेत्र-संरचना पर निर्भर करेगी।

Group Morale [ग्रुप मॉरेल] समूह मनोबल।
मनोबल से समूह प्रवृत्ति दृढ़ और प्रखर होती है। इसके रहने पर कठिनाई और विनष्टकारी तनावों के होने पर भी समूह की रक्षा हो जाती है। इससे आन्तर-समूह संगठन और व्यवहारों की ऐक्यता का पोषण होता है। मनोबल सर्वत्र एक समूह के सदस्यों के बीच, एक-दूसरे के प्रति आकर्षण और अनुराग की

विशिष्टताओं के रूप में ज्ञात है। किसी भी समूह में, जहाँ सान्द्रता (Solidarity) है, वहाँ की नैतिकता उच्च होगी। यह एक प्रकार की परस्पर सम्बन्धित होने की अनुभूति, दूसरों के साथ अपने स्व का एकरूपन है। अह का समूह के मानकों और क्रिया-कलापों के अनुरूप होना, एक बहुत ही आवश्यक गुण है।

Group Norms [ग्रुप नार्मस] : समूह-मानक।

किसी परीक्षण पर समूह, जाति अथवा वर्ग का माध्य-स्तर अथवा अंक। इसका यथार्थ महत्त्व समूह की सामान्य योग्यता अर्थात् बुद्धि, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा वर्तमान परिवेश के सन्दर्भ में ही समझा जा सकता है। किसी व्यक्ति को इसके आधार पर समूह स्तर से ऊपर या नीचे समझ लेने से पहले यह भी ध्यान में रखना आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति की मनो-परीक्षा में मापन त्रुटियाँ भी अवश्य हुआ करती है। साथ ही, क्योंकि मानक माध्य होते है, समूह के आधे व्यक्तियों के तो मानकांकों से नीचे रहने की आशा करनी ही चाहिए। इसलिए मानकांक से नीचे अंक पाने पर ही व्यक्ति को समूह स्तर की तुलना में निकृष्ट नहीं कहा जा सकता। मानकों के उपयोग का उद्देश्य दंड नहीं रचनात्मक सुधार होना आवश्यक है।

Group Structure [ग्रुप स्ट्रक्चर] : समूह-संरचना।

किसी भी सामाजिक समूह के आन्तरिक संगठन के सस्थापित आकार की ओर निर्देश करता है। यह उन सब विशेषताओं की ओर संकेत करता है जो कि उन संबंधों के पूर्ण योग में, जो कि समुदाय के सदस्यों के बीच एक-दूसरे के प्रति, तथा स्वयं समूह के प्रति विद्यमान है, पाए जाते है। यह समूह की उस विशेषता की ओर भी निर्देश करता है जो कि समूह के सदस्यों में एक विशिष्ट प्रकार की क्रम-व्यवस्था की ओर संकेत करता है जिसके आधार पर, उनके व्यवहार नियमबद्ध होते हैं।

Group Test [ग्रुप टेस्ट] : सामूहिक परीक्षण।

वे मनोवैज्ञानिक परीक्षण जो एक ही समय बहुत-से व्यक्तियों से उन्हें एक साथ रखकर सामूहिक रूप से कराए जा सकें। ये परीक्षण प्रायः मुद्रित प्रपत्रों के रूप में होते है जिससे इनकी प्रतियाँ एकत्रित परीक्षार्थियों में बाँटी जा सकें। परीक्षार्थी की प्रतिक्रिया भी मुद्रित परीक्षण प्रपत्र अथवा सलग्न उत्तर प्रपत्र पर किसी प्रकार के चिह्न बना देने के रूप में होती है जिससे सब परीक्षार्थियों की उत्तर प्रतियाँ एकत्रित करके बाद में उन पर अंक दिए जा सकें। इनके उपयोग से समय की बचत होती है। इनमें परीक्षक अथवा अंकक में किसी विशेष योग्यता अथवा परीक्षणोत्पन्न कौशल की आवश्यकता नहीं होती। परन्तु इनके उपयोग में इस बात का नियन्त्रण कठिन होता है कि सभी परीक्षार्थी उपयुक्त मानसिक अवस्था में हो, पूर्ण सहयोग दे, वेग से और आदेशानुसार ही कार्य करें, और छपे हुए आदेशों को यथार्थतया पढ़ और समझ सकें।

सामूहिक परीक्षण में 'सैनिक साक्षर परीक्षण' (Army Alpha Test), 'सैनिक निरक्षर परीक्षण' (Army Beta Test), 'ओटिस स्वशासित परीक्षण' (Ottis Self-administering Test of Mental ability) और 'सैनिक सामान्य वर्गीकरण परीक्षण' (Army General Classification Test) सम्मिलित है।

सामूहिक परीक्षण की उपयोगिता :

१. वैयक्तिक परीक्षण की अपेक्षा इसमें कम समय में एक साथ अनेक व्यक्तियों की परीक्षा की जा सकती है।

२. व्यवहार में ये ऐसे सरल हैं कि परीक्षक साधारण परीक्षण के पश्चात् उनका आसानी से प्रयोग कर सकता है।

३. इनकी निर्लेखन (Scoring) पद्धति अत्यधिक सरल है।

Growth [ग्रोथ] : वृद्धि।

कर जीभ तथा तालु, उपजिह्वा, हलक आदि में स्थित कलिकाएँ (Taste Buds) है। जीभ के खुरदरे भाग को ध्यान से देखने पर इसमे दाने-दाने से दिखलाई देते हैं। इन दानो के चारो ओर एक खाई होती है। खाई की दीवारों मे दबे बहुत-से छोटे-छोटे कोष-समूह होते हैं। ये ही स्वाद-कोष है। इनसे नि.सृत ज्ञानवाही तन्त्रिकाएँ मस्तिष्क के स्वाद-केन्द्र से सम्बद्ध होती हैं। किसी भी चीज के जिह्वा पर रखे जाने पर जब वह लार के साथ मिल तरल रूप धारण कर खाइयो मे स्थित स्वादकोषो को प्रभावित करती है और वहाँ से तन्त्रिकावेग के रूप मे मस्तिष्क के स्वादकेन्द्र मे पहुँचती है तभी स्वाद-सवेदन होता है।

स्वाद-सवेदन एक जटिल सवेदन है। इसमें गध एव त्वक्-सवेदनाओ का भी समावेश है।

मूल स्वाद : भारतीय साहित्य मे मूल स्वादो की सख्या छ. मानी गई है—मधुर, अम्ल, लवण, कटु, कषाय एव तिक्त। पर मनोवैज्ञानिक चार ही मानते है। वे कटु तथा कषाय को स्वतन्त्र स्वाद न मानकर उन्हे भी अन्य स्वादो का मिश्रण ही मानते हैं।

स्वाद का स्थानीकरण : जीभ के सभी भाग सभी रसो के लिए समान रूप से सवेदनशील नही होते। उसकी नोक अथवा अग्र भाग मीठे के प्रति, पृष्ठ भाग तीते के प्रति; दोनों ओर के किनारों के अगले भाग नमकीन के प्रति और पिछले भाग खट्टे के प्रति अधिक सवेदनशील होते है। लैमचुस ज़बान की नोक से स्पर्श कराने पर मीठा और पिछले किनारो से स्पर्श कराने पर खट्टा मालूम होगा।

स्वाद अभियोजन : एक ही प्रकार के उत्तेजन से कुछ समय तक अनवरत रूप से प्रभावित होते रहने पर स्वाद-कोष उसके प्रति अभियोजित हो जाते हैं। फिर वे उसके प्रति उतने सवेदनशील नही रहते। पर्याप्त मीठे का सेवन करने पर चाय फीकी मालूम होती है।

स्वादों का मिश्रण तथा मारक : दो या अधिक स्वादो के मिश्रण से मिश्रित स्वाद बनते हैं; यथा खटमिट्ठा। कभी-कभी एक स्वाद दूसरे स्वाद के मारक के रूप मे भी व्यवहृत होता है; यथा मीठा तीते का और तीता मीठे का मारक है।

Habit [हैबिट] आदत।

अभ्यास के द्वारा व्यक्ति के व्यवहार मे उत्पन्न लगभग स्थायी परिवर्तन; जैसे पान खाने की आदत, साइकिल चलाने की आदत। साधारणत: इस शब्द का प्रयोग क्रियावाही अर्जनो के लिए, पर व्यापक रूप में मानसिक अर्जनो या मनोवृत्तियों के लिए भी किया जाता है। आदत की निम्न प्रमुख विशेषताएँ हैं एकरूपता, तत्परता, शुद्धता एव व्यवस्था, ध्यान की न्यूनता अथवा अभाव, सरलता एव सुकरता तथा परिशोधन के प्रति अवरोध।

आदत का आधार व्यक्ति की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं. परिशोधनशीलता तथा धारणशीलता। परिशोधनशीलता का अर्थ है सुधार सकने की क्षमता। धारणशीलता का अर्थ सम्पन्न परिवर्तनों को अपने में बनाए रखने की सामर्थ्य है। परिवर्तनशीलता का तन्त्रिकीय आधार तन्त्रिका की अस्थिरता मे है। अन्तर्गामी तन्त्रिकावेगो के लिए विभिन्न रास्तों में जाने की सम्भावनाएँ रहती हैं। कोई स्नायु-प्रवाह किसी अवसर-विशेष पर किस रास्ते का चुनाव करता है यह तन्त्रिकावेग के केन्द्रों मे सक्रिय सयोगमूलक तत्त्वों पर निर्भर है। बाद में इसकी पुनरावृत्ति उस या उस प्रकार के आवेगों के लिए उस रास्ते को स्थायी बना देती है।

आदत-निर्माण (Habit formation) के सम्बन्ध मे जेम्स के चार प्रमुख नियम हैं : १. नई आदत को दृढ संकल्प के साथ प्रारम्भ करना। २. संकल्प को क्रियान्वित करने के लिए जो भी सर्वप्रथम अवसर आए उसका उपयोग करना। ३. जब तक कि नई आदत पूर्ण रूप से पक्की न हो

जाए उसमे कोई अपवाद न आने देना। ४ प्रतिदिन थोडे-से स्वाधीन अभ्यास के द्वारा अपने-आपको अभियोजनशील बनाए रखना।

बुरी आदतो को तोडने के लिए १ सकल्प को तुरन्त कार्यान्वित करना, २ समकक्ष अच्छी आदत के द्वारा बुरी आदत को अपदस्थ करना, ३ वातावरण मे आवश्यक परिवर्तन कर उसे नई आदत के लिए अनुकूल बनाना, ४ अपने शरीर को इस कार्य मे अपना पूर्ण सहयोगी बनाना, ५ इस सम्बन्ध के प्रयोगात्मक अध्ययनो मे नाइट डनलप ने एक नई विधि की ओर सकेत किया है। गलत आदत का कुछ समय तक जान बूझकर अभ्यास कराकर प्राणी को उसके प्रति सचेत बना देने पर वह उसे स्वत त्याग देगा।

आदत-बाधा (Habit Interference) एक ही प्रकार की अथवा समान उत्तेजनो से उद्भूत एक ही ढग की परिस्थिति मे अभ्यास की जाने वाली दो या अधिक क्रियाओ मे सघर्ष। यथा बाहर की ओर दरवाजा खोलने की आदत पड जाने पर उसे अन्दर की ओर खुलने वाला बनवा दिए जाने पर बाधा पडना।

आदत पदानुक्रम अर्थात् आदतो का सोपानात्मक सगठन (Hierrarchy of Habits) सरल आदतो का क्रम से जटिलतर या उच्चतर सगठनो मे व्यवस्थित होते जाना।

Habitual Error [हैबिचुयल एरर] अभ्यस्त त्रुटि, स्वभावत त्रुटि।

अकन दण्डो के प्रयोग मे क्रम निर्धारक (rater) से बहुधा होने वाली त्रुटि। व्यक्तियो के अकन मे उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व की ओर पूर्वस्थित मानसिक भाव के अनुसार ही उनके विशिष्ट गुणो को भी आँकने की ओर झुकाव होता है। क्रम निर्धारक बलात् ही उन विशिष्ट गुणों का अकन भी वैसा ही करता है जैसा वह उस व्यक्ति का सामान्य स्वभाव समझता है। अकन बहुधा न्यायरहित, असगत आधारो पर कर लिया जाता है और अत्याकन अथवा न्यूनाकन हो जाता है। उसके दो परिणाम होते हैं—(१) कुछ विशिष्ट गुणो का अकन अप्रामाण्य अर्थात् अवास्तविक हो जाता है। (२) अकित गुणो मे झूठे ही धनात्मक सहसम्बन्ध (Positive correlation) प्रतीत होने लगता है। प्राय ऐसी त्रुटि तब हुआ करती है जब—

(१) आके जाने वाले गुण का प्रेक्षण सुगम नही होता।

(२) आके जाने वाले गुण के शुद्ध अभिश्रित रूप का ध्यान बहुत कम दिया जाता हो।

(३) उस गुण की परिभाषा स्पष्ट न हो।

(४) वह गुण सामाजिक अतर्क्रिया से सम्बन्धित हो।

(५) वह गुण चरित्र-सम्बन्धी हो।

इस त्रुटि को कम करने के कई साधन प्रचलित हैं—

(१) बहुत से व्यक्तियों का एक ही समय पर एक ही गुण आँकना, और प्रत्येक पृष्ठ पर एक व्यक्ति का बहुत-से गुणो को नही वरन् एक गुण मे कई व्यक्तियो को आँकना।

(२) बद्धचयन विधि (force choice technique) का उपयोग। अनेक व्यक्तियो का अनेक गुणों मे अनेक व्यक्तियो द्वारा आंकन किया जाए तो प्रत्येक क्रम-निर्धारक का प्रत्येक अकन के प्रति होने वाली अभ्यस्त त्रुटि का परिगणन किया जा सकता है।

Hallucination [हैल्युसिनेशन] विभ्रम।

बिना किसी बाह्य आधार के किसी वस्तु का प्रत्यक्षण करना। विभ्रम सब इन्द्रियो से सम्बन्धित होता है—दृश्य, स्पर्श, श्रव्य इत्यादि। सबसे अधिक प्रचलित दृश्य और श्रव्य-सम्बन्धी विभ्रम हैं। अत्यधिक विभ्रम विक्षिप्तावस्था का द्योतक है। यह मूल रूप से अकाल मनोभ्रश (Dementıon praecox) का लक्षण है। किसी वस्तु के न रहने पर भी

कभी-कभी उसका प्रत्यक्षण करना, कोई बुला नही रहा है और यह अनुभव करना कि कोई बुला रहा है, साधारण विभ्रम हैं; किन्तु जब इस प्रकार की अनुभूतियाँ प्रायः और स्थायी रूप में होती है तब यह मानसिक रोग का लक्षण माना जाता है।

Hearing Theories [हियरिंग थ्योरीज]: श्रवण सिद्धान्त।

श्रवण-सम्बन्धी कई एक सिद्धान्त है और इस पर अनेक प्रायोगिक परीक्षाएँ हुई है। हेल्महोल्तज का अनुनय सिद्धान्त प्रख्यात है, जिसके अनुसार उद्दीपक का विश्लेषण श्रवण लहर द्वारा पलक (Corti) की बॉसीलर मेम्ब्रेन पर होता है। उच्च ध्वनि ग्रहणकर्ता के कोष के अतिम छोर को उत्तेजित करती है। प्रत्येक ग्रहणकर्ता ध्वनि लहर की ओर प्रतिक्रिया करता है। औसत व्यक्ति ऐसी ध्वनि लहर के प्रति प्रतिक्रिया कर सकता है जिसमें दोहरा प्रकंपन हो—अर्थात् जिसका क्षेत्र १६ से २०,००० प्रति सेकिंड हो। ग्रहणकर्ता का कार्य वाद्य के तार की भाँति व्यवस्थित रहता है जो कि मंद से उच्च पर जाता है। श्रवण के बारे मे दूसरा सिद्धान्त आवृत्ति-सिद्धान्त (Frequency theory) है जो हेल्महोल्तज सिद्धान्त के प्रतिकूल है। रूथर फोर्ड ने इस सिद्धान्त का विकास किया है। रूथर फोर्ड के इस सिद्धान्त के अनुसार जितना ही ग्रहणकर्ता तथा ततु कार्य करते हैं उतनी ही तीव्र ध्वनि अनुभव होती है। ततु के ऊपर, उत्तेजना की शृखला जितनी ही शीघ्रता के साथ जाती है उतना ही स्वर का अनुभव होता है। रूथर फोर्ड के सिद्धांतानुसार विश्लेषण मस्तिष्क में होता है, कॉकली में नही होता। एक अन्य सिद्धान्त है जिसे वॉली श्रवण सिद्धान्त कहते हैं। इसके अनुसार ध्वनि स्नायु के विभिन्न तंतु आवेग को क्रमिक रूप से संक्रमित करते हैं।

Heat Spots [हीट स्पाटस्]: ऊष्म स्थल।

ये शरीर के चर्म पर स्थित तापक्रम संवेदन ग्राहको के एक प्रकार है। जब इनको उद्दीप्त किया जाता है तो ऊष्मा का अनुभव होता है। इसलिए इन्हे ऊष्म स्थल भी कहते हैं।

कभी-कभी जब तापक्रम २८°-३१° सेन्टीग्रेड के करीब होता है (जो कि एक आदर्शभूत शीत उद्दीपक है) और तब भी ताप अनुभव होता है, तब इस तथ्य को ऊष्मा प्रतीति (paradoxical warmth) कहा जाता है।

Hebephrenia [हेबेफ्रेनिया]: हेबेफ्रेनिया।

यह अकाल मनोभ्रंश प्रकार के मनोविकारो के अतर्गत एक प्रकार का मनोविकार है जिसमें विशेषत. इस प्रकार के लक्षण पाए जाते हैं जैसे—तुच्छ और असगत वेमेल भाव और सवेगो का होना, विचार-भ्रम और श्रवण-भ्रान्ति का होना तथा प्रत्यावर्तित व्यवहारो का करना।

Hedonism [हिडॉनिज्म]: सुखवाद।

मनोविज्ञान मे 'सुखवाद' का प्रसंग उस सिद्धान्त से है जिसके अनुसार स्वभावतः मनुष्य की क्रियाएँ सुख की प्राप्ति और वेदना से मुक्त होने के भावों द्वारा निर्धारित होती हैं। 'सुखवाद' में हमे सुख तथा उसके विरोधी वेदना भाव का सूक्ष्म अन्वेषण-विश्लेषण होता है।

नीतिशास्त्र में इस शब्द का प्रसग उस सिद्धान्त से है जिसमें व्यक्तिगत सुख अथवा अधिकतम व्यक्तियो का अधिकतम सुख मानवीय व्यवहार-आचरण का वास्तविक मापदड होता है। सुखवाद को बेन्थम अथवा उपयोगितावाद से सम्बन्धित किया जाता है। ब्रिटेन के साहचर्यवादियो—ह्यूम, हार्टले, मिल्स, स्पेन्सर आदि द्वारा भी इसका समर्थन किया गया है। उनके सिद्धान्त में यह स्पष्ट परिलक्षित होता है कि व्यक्ति तात्कालिक वेदना मे रस भविष्य के सुख की प्राप्ति की आशा मे लेता है। इस प्रकार सुखवाद में सुख की प्राप्ति मनुष्य का प्रमुख प्रेरक है। जो क्रियाएँ सुख की ओर उन्मुख होती हैं उनकी पुनरावृत्ति

जैसे अभ्यास से होती है। जो क्रियाएँ वेदना की ओर उन्मुख रहती हैं वे प्रभाव नहीं डालती, पुनरावृत्ति के स्थान पर उनका दमन शोषण कर दिया जाता है।

फ्रायड के भाव और संवेग के सिद्धान्त की नींव सुखवाद है। थार्नडाइक का परिणाम नियम (Law Effect) और हल की पुनर्बलन (Reinforcement) की धारणा सुखवाद से ही ली गई है।

देखिए—Law of Effect, Reinforcement

Hemianopsia [हेमिएनओप्सिया] अर्धांधता।

यह मानसिक रोग का एक लक्षण है। दृश्य-क्षेत्र के केवल अर्द्ध भाग में उपस्थित वस्तुओं का दृष्टिगत होना—जैसे किसी रेखा की पूरी लम्बाई का आधा भाग दृश्य-क्षेत्र में आना। दृश्य तन्तु या मस्तिष्क के दृश्य-क्षेत्र का जब आंशिक भाग नष्ट होता है, आंशिक ह्रास होता है। रेखा का दाहिना या बायाँ कौन सा भाग व्यक्ति नहीं देख पाता, यह इस बात पर निर्भर है कि मस्तिष्क का किस ओर, और कौन-सा भाग मात्र नष्ट हुआ है।

Herbartism [हर्बार्टिज्म] हर्बार्टवाद।

हर्बार्ट (१७७६—१८४१) द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त, जिसका अर्थ है गणितीय और आनुभविक मनोविज्ञान। हर्बार्ट वैज्ञानिक शिक्षण के प्रवर्तक के रूप में प्रसिद्ध है और उसकी नींव मनोविज्ञान है। हर्बार्ट के अनुसार मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो अनुभव, गणित और तत्त्ववाद पर आधारित है। हर्बार्ट के मनोविज्ञान में निरीक्षण पर बल दिया गया है, प्रायोगिक विधि पर नहीं। हर्बार्ट के अनुसार मनोविज्ञान को तत्त्ववादी होना चाहिए। भौतिक विज्ञान से मनोविज्ञान दो दृष्टियों से पृथक् है (१) मनोविज्ञान तात्त्विक है जबकि भौतिकवाद प्रायोगिक है, (२) मनोविज्ञान में गणित का उपयोग होता है जबकि भौतिक विज्ञान ने प्रयोग को अपनाया है। हर्बार्ट का मनोविज्ञान यान्त्रिक, गतिकीय और सांख्यिकीय है। हर्बार्ट ने स्वचालित विचार और सम्प्रत्यक्ष (Apperception) के बारे में उल्लेख किया है जिसमें एक विशेष सुनिश्चित मानसिक प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व उपस्थित प्रचलित ज्ञान से होता है।

देखिए—Apperception, Mathematical Psychology

Heredity [हेरिडिटी] आनुवंशिकता।

१ वंश अथवा जातिगत गुणों-अवगुणों तथा स्वभावगत विशेषताओं का माता-पिता द्वारा सन्तानों में सक्रमण, २ सतान में माता पिता द्वारा सक्रमित जाति, वंश अथवा स्वभावगत विशेषताओं की समग्रता, यथा बालक का वंशानुक्रम। गाल, लामार्क, डारविन, वालेस, स्पेन्सर, गॉल्टन, इन्डेल, स्टार्क, पियर्सन, टरमन आदि ने इस सम्बन्ध में अनेक महत्त्वपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किए। इनकी खोजों से निम्न तीन महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकले—१ सन्तानें माता पिता से संस्कार लेकर ही उत्पन्न होती हैं, २ विभिन्न वंशों के जीवों को एक ही प्रकार के वातावरण के बीच रखकर भी एक ही ढंग का नहीं बनाया जा सकता, ३ बालकों में विकास के साथ-ही साथ उनकी वंशानुगत विशेषताओं का सक्रमण बीजकोषों (द० Cell तथा Germ cell) में वर्तमान जीवन रस तथा जीनों (Gene) द्वारा होता है। माता से प्राप्त बीजकोष के जीनों द्वारा माता की एव पिता से प्राप्त बीजकोष के जीनों द्वारा पिता की वंशानुगत विशेषताओं का सक्रमण उनकी सन्तान में होता है।

देखिए—Mendalism, Gene

Herring's Theory of Colour Vision [हरिंग थ्योरी ऑव कलर विज़न] हरिंग का वर्ण-दृष्टि सिद्धान्त।

यह सिद्धान्त चार प्रमुख और प्रारम्भिक रंगों पर आधारित है जो विरोधी जोड़ों—लाल-हरा, नीला-पीला के रूप में हैं। दृष्टिपटल में तीन फोटो रासायनिक तत्त्व

माने गये है जिसमें हेरिंग के पारिभाषिक शब्दों मे विरोधी प्रक्रियाएँ 'कैटबोलिक' और 'ऐनेबोलिक' चलती है। इससे श्वेत और श्याम, हरा और लाल, नीला और पीला उत्पन्न होते हैं। हेरिंग के अनुसार श्याम रग भावात्मक संवेदन है। श्याम सवेदन का अभाव नही होता जैसा हेल्म-होल्त्ज का कथन है।

Hetero Suggestion [हेटेरो सजेशन] : पर संसूचन।

किसी विशेष परिस्थिति मे या समस्या उठने पर दूसरे के आदेश के अनुसार कार्य-सपादन करना पर ससूचन है। इसी अर्थ मे निर्देशन शब्द का प्रयोग प्रचलित भाषा में हुआ है। मनोविज्ञान मे ससूचन मानसिक रोग के उपचार की एक युक्ति भी है। जो व्यक्ति दुर्बल भाव-प्रकृति के हैं, जिनमें दृढ इच्छा-भाव नही है, जिनका अपना व्यक्तिगत व्यक्तित्व निखर नही पाया है, वे सहज ही अन्य व्यक्तियों की संसूचन नीति व शिक्षाप्रद सुझाव ग्रहण कर लेते हैं।

Histogram [हिस्टोग्राम] : आयत चित्र।

एक प्रकार का आवृत्ति वितरण लेखा-चित्र। इसमें मनोमापन के प्रत्येक अंक वर्ग की आवृत्ति एक आयताकार स्तम्भ की ऊँचाई द्वारा दर्शाई जाती है। सभी स्तम्भों की चौडाई समान होती है और प्रत्येक अक वर्ग की सीमाएँ ही स्तम्भ की चौडाई की सीमाएँ होती है। इस प्रकार के आवृत्ति वितरण लेखाचित्र की सबसे बडी उपयोगिता यह है कि इसमे प्रत्येक व्यक्ति के लेखाचित्र मे उतना ही क्षेत्रफल दिया जाता है। इसलिए लेखाचित्र को देखने से ही प्रत्येक अंक वर्गान्तर में पड़नेवाली व्यक्तियों की सख्या का तथा उसके कुछ व्यक्तियों से अनुपात का यथार्थ अनुमान हो जाता है। परन्तु उसको देखने से यह विचार होने की सम्भावना भी है कि प्रत्येक वर्गान्तर के अन्दर पड़नेवाले अंकों मे व्यक्ति समान सख्या मे फैले हुए है। यदि दो आवृत्ति वितरण का आयतचित्र तुलना के लिए एक ही आधार रेखा पर बनाना हो तो लेखाचित्र मे कोटि अक्ष पर आधार रेखा के ऊपरवाली सभी आवृत्तियाँ उसके नीचे भी दर्शाकर एक आयत चित्र उसके ऊपर और दूसरा आयत चित्र उसके नीचे दर्पण मे दिखनेवाले प्रतिबिम्ब की भाँति बनाया जाता है।

Histology [हिस्टॉलोजी] : ऊतक-विज्ञान।

जीवकोश और तन्तुओ के बारे में विस्तार से अन्वेषण-परीक्षण करना।

Hodology, Hodological Space [होडोलोजी, होडोलोजिकल स्पेस] : मान-सिक क्षेत्र मे गमन को शक्तियों, दिशाओं और दूरियो का अध्ययन।

होडोलोजिकल स्पेस—लेविन के द्वारा अन्वेषित एक प्रत्यय। यह मनो-वैज्ञानिक या सामाजिक क्षेत्र के अन्दर गमन के लिए ली हुई दिशा की परिभाषा को भी सम्मिलित करता है। इस प्रकार के देश-स्थान के गुण-धर्म वस्तु-स्थिति की मनोवैज्ञानिक गतिकी पर निर्भर है। इसको पथ का देश-स्थान अथवा स्पेस ऑफ पाथ कहा जाता है। इस प्रकार के देश-स्थानो के गुणी धर्म वस्तुस्थिति की मनोवैज्ञानिक गतिकी पर पूर्णतः इस-लिए निर्भर हैं, क्योकि इसमे दिशा की परिभाषा तभी शामिल हो सकती है जब कि इन तत्त्वों को विचार मे लिया जाए।

Homeostasis : [होमिओस्टैसिस] समस्थिति, समायोजन।

यह शरीरशास्त्र का शब्द है। शरीर-शास्त्र मे इसका प्रयोग प्राणी की उस प्रवृत्ति के लिए है जिसके कारण अपनी तथा जाति की रक्षा के लिए व्यक्ति की दैहिक प्रक्रियाएँ सक्रिय रहती हैं। साधा-रण-से-साधारण क्रियाओ (यथा भोजन, श्वास-प्रश्वास आदि) के मूल मे भी यही प्रेरक शक्ति काम करती है। इनके द्वारा वह अपनी क्षीण शक्तियों को पुनः प्राप्त कर

शरीर की सतुलन की स्थिति को बनाए रखने में समर्थ होता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इस शब्द का प्रयोग व्यक्तित्व में उत्पन्न किसी प्रकार की कमी अथवा खतरे का सामना करने के लिए प्राणी द्वारा अपनाए गए क्षतिपूर्ति-सम्बन्धी अभियोजनों के लिए भी किया है। वस्तुत इन अभियोजनों का भी मूल उद्देश्य मानसिक सतुलन में आई कमी अथवा गड़बड़ी को पूरा कर मानसिक प्रक्रियाओं की अधिकतम क्षमता को बनाए रखना है।

Homo Sexuality [होमो सेक्सुएल्टी] समलैंगिकता।

व्यक्तित्व के विकास की वह अवस्था जिसमे वह अपने ही वर्ग की ओर आकर्षित होता है। इसमे पुरुष का आकर्षण-केन्द्र पुरुष रहता है और वह कामवृत्ति की सतुष्टि के लिए पर्याप्त होता है और स्त्री के लिए स्त्री पर्याप्त है। कभी-कभी तो यह मनस्ताप का रूप ले लेती है और यह समलिंगी मनस्ताप है। (Homosexuality neurosis)।

समलैंगिकता का महत्व मानसोपचार शास्त्र की दृष्टि से बहुत अधिक है। एडलर के अनुसार यह एक प्रकार का सुरक्षा साधन है। हीनत्व ग्रन्थि होने के कारण यह विकृति आ जाती है और व्यक्ति का आकर्षण अपनी ही जाति की ओर हो जाता है। फ्रायड और उनके अनुयायियों के अनुसार बाल्यावस्था में जिनका आकर्षण माता की ओर रहता है उनमे इस ओर झुकाव रहता है। समलैंगिकता प्रकार के व्यक्ति सक्रिय, निष्क्रिय और मिश्रित सभी प्रकार के होते हैं। इनकी सख्या पर्याप्त होती है। भावना-ग्रन्थि का निवारण होने पर इस विकृति से मनुष्य अपने को सहज ही मुक्त कर सकता है।

यह मानसिक मनोवृत्ति सविभ्रम रोग (Paranoia) में विशेषत दृष्टिगत होती है। यह मानसिक तनाव का लक्षण है। समायोजन के लिए इससे दूर रहना आवश्यक है। इससे मानसिक और शारीरिक क्षय होता है।

Homozygote [होमोज़ाइगोटे]. समयुग्मज।

'होमो' का अर्थ है समान तथा 'ज़ाइगोट' का अर्थ है बीजकोषों के सयोग से निर्मित। होमोज़ाइगोटे शुद्ध वशानुक्रम वाले प्राणी को कहते हैं। इसके द्वारा केवल समान-वशानुक्रमवाले लक्षणों से युक्त बीजकोषों का उत्पादन होता है। कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग एकसम यमजों (दे० Identical Twins) के लिए किया जाता है। विषम युग्मज (Hetrozygote) इसके विपरीत अशुद्ध अथवा भिन्न वशानुक्रम वाले प्राणियों के लिए किया जाता है।

Hormones [हारमोन्स] हार्मोन।

अन स्रावी ग्रन्थियों से श्रवित होनेवाला रासायनिक द्रव्य जो रक्त के साथ मिलकर दैहिक एव मानसिक क्रियाओं को प्रभावित करता है। गल ग्रन्थि से थायरोक्सीन का स्राव होता है, एड्रीनल से एड्रीनीन का, इत्यादि।

देखिए—Endocrinesy।

Hydrocephaly [हाइड्रोसेफेली]. शिरोजल रोग।

यह एक ऐसा रोग है जिसमे शिर में असाधारण रूप से एक प्रकार का तरल द्रव्य जमा हो जाता है। यह तरल द्रव्य या तो मस्तिष्क के प्रमस्तिष्क गुहाओं (cerelral ventricles) में या मस्तिष्क के रघ्रों या छिद्रों के बाहर जमा हो जाता है। मस्तिष्क कपाल के असाधारण रूप से बडे होने से, सामान्यत, अपर्याप्त मस्तिष्क के विकास का अर्थ लगाया जाता है। प्रचलित भाषा में शिरोजल रोग का यह अर्थ लगाया जाता है कि जिनको यह रोग होता है उनका सर पूर्णत जल से भरा होता है और मस्तिष्क बहुत छोटा होता है या ऐसे लोग कम बुद्धि के हुआ करते हैं।

शिरोवृद्धि प्राय लकवा का भी कारण बनता है। इसके लक्षण कभी तो जनमते ही मिलते हैं, कभी आगे चलकर उभरते हैं। उपचार का मुख्य साधन अतिरिक्त

जल का निष्कासन है। इसमें मस्तिष्क शल्य उपचार (दे० Brain Surgery) भी सफल रहता है। आयु कम रहने पर उपचार की सम्भावना अधिक रहती है। अधिक आयु हो जाने पर सुधार कठिन हो जाता है।

Hydrotherapy [हायड्रोथेरपी] : जल-चिकित्सा।

मानसिक रोग के उपचार के लिए जल का किसी रूप (भाप, बर्फ या तरल) मे प्रयोग। उग्र तथा उत्तेजित प्रकार के रोगी को एक विशेष प्रकार के टब मे, जिसमें निश्चित ताप मे जल रहता है, घंटो स्नान कराया जाता है। इसमे रोगी को ठडे जल मे भिगोई चादर में लपेटा भी जाता है। यह ठडा-गीला पैड उपचार है। इसमे रोगी प्रायः शान्त होता है और उसे नीद लगती है। चिकित्सा की यह एक विशेष युक्ति है।

Hypermnesia [हाइपरम्नेसिया] : अतिस्मृति।

मानसिक रोग का एक लक्षण। किसी अतीत की घटना के सस्थापन, पुन स्मरण और पहचानने की विकृत योग्यता। यह अत्यधिक भावात्मक अनुभूति का प्रतिफल है।

Hyperthyroidism [हाइपरथायरायडिज्म]: अति गलग्रंथि-क्रियता।

यह जीव की वह दशा है जबकि गलग्रंथि (Thyroid gland) से हारमोन्स सामान्य से अधिक स्रावित होता है। यह अवस्था अधिक बढी हुई विक्षुब्धता, उत्तेजना तथा व्यग्रता और अस्थिरता के लिए उत्तरदायी है।

Hypothyroidism [हाइपोथायरायडिज्म] : न्यून गलग्रंथि-क्रियता।

यह अतिगलग्रन्थि-क्रियता की विपरीत अवस्था है। जबकि गलग्रंथि-स्राव कम होता है। मानसिक प्रतिक्रियाएँ विपरीत होती हैं। सामान्यतः यह अ-जाम्बुक बाल्य अवस्था (Cretinism) के साथ सम्मिलित होता है—अ-जाम्बुक बाल जो कि पीने के जल मे आयडीन के अभाव के कारण होता है।

Hypnogogic image [हिपनोजॉजिक इमेज] : सम्मोहजन्य प्रतिमा।

परीक्षार्थी को ऐसी आभास प्रतिमा का अनुभव सामान्यतः सम्मोहावरण में उस समय होना है जबकि या तो पूर्णतः वह मोहनिद्रा-ग्रसित होने जा ही रहा है या फिर मोहनिद्रा से जगने वाला ही है। यह आभास प्रतिमा अत्यधिक और सजीव प्रकार की होती है। यह इतनी सजीव व तीव्र होती है कि परीक्षार्थी प्रायः कभी-कभी इसके प्रति प्रकट रूप से शारीरिक गतिविधि (overt motor activities) के रूप मे प्रतिक्रिया करने लगता है।

Hypnosis [हिपनॉसिस] : सम्मोह, सम्मोहन।

यह ट्रैन्स की अवस्था है। इस अवस्था में सम्मोहित व्यक्ति का मन सम्मोहक के वश में रहता है। सम्मोहित व्यक्ति में अपनी इच्छा और अपना स्वतन्त्र दृष्टिकोण नहीं रहता। सम्मोहित अवस्था की तुलना हिस्टीरिया से की गई है। जिस प्रकार हिस्टीरिया में व्यक्ति निद्राविचरण करता है, वही अवस्था उसकी इसमें होती है। शार्कों के अनुसार यह अस्वाभाविक रूप से उत्पन्न की हुई विक्षिप्तावस्था है। मैक्डूगल के लिए सम्मोहितावस्था हिस्टीरिया का लक्षण है। फ्रायड के अनुसार यह काम अवस्था से सम्बन्धित है। इसमे सम्मोहित व्यक्ति की कामशक्ति सम्मोहक की ओर लग जाती है और सम्मोहक स्वयं रोगी के आकर्षण का विषय बन जाता है। फ्रायड के इस सिद्धान्त का खडन हुआ। सम्मोहक सम्मोहित के लिए कामशक्ति का केन्द्र नही बन सकता, भले ही अल्प समय के लिए उसकी मानसिक शक्ति अन्य विषयों की ओर प्रवाहित न होकर सम्मोहक में केन्द्रित हो जाए।

Hypnotism [हिप्नाटिज्म] : सम्मोहन।

मानसिक चिकित्सा की वह विधि जिसमें एक व्यक्ति की इच्छा चेष्टा से दूसरे के मन

की अचेतन अवस्था हो जाती है। सम्मोहक अपनी दृढ इच्छा से रोगी को अचेत करके उसे स्वस्थ करने की इच्छा से या तो अचेतनावस्था में निर्देश देता है कि वह स्वस्थ हो जाए या उसे ऐसी अवस्था में रखता है कि वह स्वयं अपने संवेगों से सम्बन्धित मनोभावों को प्रकट कर दे। सम्मोहन मे रोगी को किसी भी एक निर्धारित वस्तु पर नेत्र स्थिर करने पड़ते हैं। वातावरण शान्त रहता है जिससे सरलता से ध्यान एकाग्र किया जा सके—"तुम थके हो, तुम्हारी आँखों में नींद मालूम पड रही है।" इस परोक्ष निर्देशन का रोगी पर प्रभाव पडता है।

सम्मोहन की ३ सहज विशेषताएँ है—१ सम्मोहक और सम्मोहित का सम्बन्ध, २ विस्मरण ३ मूर्च्छा। न्यूनैन्सी स्कूल के अनुसार सम्मोहक और सम्मोहित का सम्बन्ध अनिवार्य है, बल्कि सम्मोहक की *उपस्थिति ही आवश्यक है। मैक्डूगल* का भी यही मत है। हेडफील्ड ने विस्मरण को सम्मोहन का एक अंग माना है। मॉल, बर्नहम और ब्रामवेल ने इसका खण्डन किया है। सम्मोहित अवस्था में दिए हुए निर्देशन को स्मरण रखना संभव है।

सम्मोहन विधि के कुछ दोष भी हैं (१) इसका प्रभाव स्थायी नहीं होता—तात्कालिक प्रभाव पडता है, (२) रोग के आक्रमण का पुनः भय रहता है, (३) इसका प्रयोग सभी व्यक्तियों पर नहीं किया जा सकता—जो व्यक्ति दुर्बल है, जिसका अपने में विश्वास नहीं है, वही सम्मोहित किया जा सकता है और (४) इसका प्रयोग हरेक मानसिक रोग पर नहीं किया जा सकता। मनोदौर्बल्य (Psychoneuroses) के रोगी पर यह सफल सिद्ध हुआ है विक्षेप (Psychoses) के रोगी पर इसका प्रभाव नहीं पडता। मानसिक रोग के उपचार के इतिहास में सम्मोहन विधि का स्थान महत्त्व का है, क्योंकि ब्रॉयर, शारको और फ्रायड ने इसीका पहले-पहल प्रयोग किया।

Hypochondria [हाइपोकॉण्ड्रिया] : स्वकाय-दुश्चिता।

अपने स्वास्थ्य के बारे में विकृत चिन्ता—रोगी का यह भाव कि वह शरीर के रोग से पीडित है। दृष्टांत के लिए यह सोचना कि उसे अनीमिया या क्षयरोग हो गया है इत्यादि। यह अकारण और आधारहीन होता है। वस्तुत व्यक्ति शरीर से स्वस्थ होता है और यह उसकी कोरी कल्पना-मात्र रहती है। एडलर के अनुसार यह अवस्था हीनत्व ग्रन्थि के कारण होती है। इस मानसिक विकृत लक्षण को हटाने में मुक्त साहचर्य और ससूचन (दे० Suggestion) की विधियाँ विशेष सफल सिद्ध होती हैं।

Hypochondrical Paranoia [हाइपोकोन्ड्रिकल पॅरेनाइया] स्वकाय दुश्चिता-जन्य सविभ्रम।

वह मानसिक रोग जिसमें रोगी को यह *मिथ्या विश्वास होता है कि उसका शरीर* स्वस्थ नहीं है—यथा कि उसे कैन्सर, टी० बी० या अन्य संक्रामक रोग हो गया है। जो रोगी निष्क्रिय स्वभाव प्रकृति के हैं उनमें निराशा का भाव होने से यह भावना दृढ़ बन जाती है कि उनका अन्त निकट है और अब उन्हें संसार की कोई शक्ति नहीं बचा सकती। भ्रम का केन्द्र शरीर होता है।

Hypothalmus [हाइपोथॅलमस] :

यह मध्य मस्तिष्क या थॅलमस का अधर या अधोवर्ती भाग है। मुख्यत यह मस्तिष्क के मूल, परो थॅलमस के नीचे अधर में न्यष्टि के समुदाय की ओर संकेत करता है। सामान्य यह अनुमान किया जाता है कि यह आंतस को नियमित करता है और संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं में रंग मिलाता है।

मासरमैन तथा कैनन के अन्वेषणों ने यह पूर्णत प्रमाणित किया है कि संवेगों की अभिव्यक्ति में मस्तिष्क का यह भाग महत्त्वपूर्ण है। संवेग का हाइपोथॅलमिक सिद्धान्त प्रसिद्ध है।

Hypothetico Deductive Method [हाइपोथेटिको डेडक्टिव मेथड] : प्राक्-कल्पनात्मक, प्राक्कल्पित निगमन विधि।

यह विज्ञान की विधि है जिसमे वैज्ञानिक एक प्राक्कल्पना से प्रारम्भ करता है और इससे परिणाम का अनुमान करता है जो कि सीधे प्राकृतिक अवस्था मे दृष्टिगत होता है या प्रयोग मे मिलता है। यदि पूर्वानुमानित निरीक्षण सत्यापित हो जाता है तो उसे तथ्यो की प्राप्ति होती है और प्राक्कल्पना की भी पुष्टि इस निगमन परीक्षा से हो जाती है। न्यूटन ने निरीक्षणों से नियत्रित अपना आकर्षण का सिद्धान्त बनाया, भौतिकशास्त्र की यह विधि मनोविज्ञान द्वारा भी अपनाई गई। हल तथा अन्य उनके समकालीन मनोवैज्ञानिकों ने वैज्ञानिक क्रिया मे प्राक्कल्पित निगमन विधि का प्रयोग किया। हल ने जिस विधि का परिचालन किया उसमें अभ्युपगम (Postulates) प्रयोग द्वारा अनुमेय निष्कर्ष पर पहुँचते हैं और जब परीक्षा विफल होती है तो अभ्युपगमों की पुनरावृत्ति की जाती है।

Hysteria [हिस्टीरिया] :

इसका शाब्दिक अर्थ है 'युटरस'। इसलिए यह स्त्री रोग समझा जाता है। किन्तु वर्तमान अनुसधान द्वारा यह प्रमाणित हुआ है कि यह मानसिक रोग स्त्री और पुरुष दोनों मे ही होता है। प्राचीन और मध्यकालीन युग में इस रोग का कारण भूत-प्रेत माना जाता था। इसके उपचार के लिए झाड-फूंक, गण्डा-तावीज का उपयोग होता था। शारको, फ्रायड, जैने और माटर्न प्रिंस इत्यादि मनोवैज्ञानिकों ने इसका कारण मानसिक बतलाया है। हिस्टीरिया में प्रायः मानसिक विकार का परिवर्तन शारीरिक विकार मे हो जाता है। रिबट का कथन है कि हिस्टीरिया में मानसिक अव्यवस्थित अवस्था शारीरिक क्रियाओं मे प्रकट होती है। फेरेंकजी का कथन है कि परिवर्तित शारीरिक क्रियाएँ मानसिक विकार के प्रतीक होते हैं।

हिस्टीरिया के लक्षण : शरीर के किसी भाग मे लकवा मारना, बेहोशी, अकड़न, हँसना-रोना, अगो का शून्य सवेदनहीन होना, आकुन्चन, तालबद्ध गति, काम-विकृति, काम-शून्यता, निद्रा-विचरण, आत्म-विस्मरण, भोजन मे रुचि न रखना इत्यादि। हिस्टीरिया में मानसिक और शारीरिक दोनो प्रकार के लक्षण मिलते है।

हिस्टीरिया के बारे मे फ्रायड का अन्वेषण प्रामाणिक है। फ्रायड के दृष्टिकोण से हिस्टीरिया के रोग मे दो बातें प्रमुखतः मिलती है : (१) इसमें काम-प्रवृत्ति का प्राधान्य रहता है, (२) इसमें बचपन के अनुभवो का विशेष महत्त्व होता है। हिस्टीरिया कामवृत्ति-सम्बन्धी अनुभूतियों का पुनः स्फुरण है। प्रायः वे ही व्यक्ति हिस्टीरिया रोग के शिकार होते हैं जिनकी कामशक्ति का उचित विकास नही हो पाता। वस्तुतः हिस्टीरिया के रोगी की क्रियाओं और सम्मोहनावस्था और विपरीतिकरण की क्रियाओ में पर्याप्त समानता मिलती है। विकृत कामभाव होने के कारण जब हिस्टीरिया के रोगी से कुछ पूछा जाता है तो वह यही कहता है : "मैं नही जानता, मुझे स्मरण नही है।" इसका यह अर्थ मात्र है कि वह कुछ कहना नहीं चाहता; इससे उसके अज्ञात मन में पड़ी भावना-ग्रन्थि को ठेस पहुँचती है।

इस रोग के उपचार की सबसे उपयुक्त विधि मुक्तसाहचर्य (Free Association) है। प्रारम्भ मे सम्मोहन का प्रयोग होता था। किन्तु यह सफल नही रहा। मुक्त-साहचर्य से रोगी का रुख जीवन के प्रति परिवर्तित हो जाता है और वह स्थायी रूप से, अल्प अथवा दीर्घकाल मे रोग से मुक्त हो जाता है।

ID [इद] : इदं—जीवशास्त्र में इस शब्द का अर्थ पृथक् रूप से है।

मनोविश्लेषण मे इदम् की कल्पना एक प्रवेगवादी धारणा के रूप मे की गई है जो विवेकरहित, प्रहृत और अवाध प्रवृत्ति का है और जिसमे सभी प्रकृत अज्ञान इच्छाओ की उद्भूति होती है। सन् १९१६ मे जार्ज ग्रौडडेक ने फायड के सम्मुख अज्ञान मन की धारणा के स्थान पर इदम् की धारणा का प्रयोग, मानव के व्यवहार-व्यक्तित्व के विश्लेषण के प्रसग म, करने के लिए प्रस्ताव किया।

इदम् द्वारा मन के सबसे निचले भाग का प्रतिनिधित्व होता है। यह अज्ञान मन का मूल और मुख्य भाग है। किन्तु इदम् और अज्ञान मन तद्रूप नही है। इदम् के मूल तथ्यो का व्यक्ति को ज्ञान नही होता। इसकी क्रियाएँ उन्मुक्त और स्वचालित हैं, भले-बुरे की भावना से निर्धारित नही होती। यह ऐन्द्रिक सुखैष्णा सिद्धान्त (Pleasure Principle) से चालित रहता है और इस पर समाज के नियम, प्रतिबन्ध, नैतिकता, सामाजिक दायित्व का प्रभाव नही पडता। सदैव निर्द्वन्द्व कामवासना की तुष्टि मे सलग्न रहता है। कारण यह है कि यह दमित काम इच्छा का एकमात्र सग्रहालय है। अधिकाशत इसकी इच्छाएँ काम-सम्बन्धी होती हैं।

इदम् मे पूर्वजो द्वारा प्राप्त जातीय गुण-विशेषताएँ भी समाविष्ट हैं और जीवन और मृत्यु-सम्बन्धी सघर्ष भी इसमे चलता है। इदम् का अभिव्यक्तिकरण शिशु व्यवहार और विकृत उत्साह या रोमाच की अवस्था म स्वतन्त्र रूप मे मिलता है। प्रारम्भ मे व्यक्ति इदम् मात्र अथवा प्रकृत इच्छाओ का समुच्चय मात्र होता है। आगे चलकर सभ्यता-संस्कृति के फल स्वरूप इससे अह का निर्माण होता है।

Idea [आयडिया] विचार, प्रत्यय।

प्राचीन ग्रीक काल म इस शब्द का ऐतिहासिक दृष्टि मे अनेक अर्थो मे प्रयोग हुआ है। प्लेटो के अनुसार यह सार्वभौमिक काल-रहित तथ्य है, यह अस्तित्व का गतिशील मौलिक रूप है। विचार मे श्रेणियाँ होती हैं और यह उत्कृष्टता मे सावयव सम्बन्ध है। यह आदर्श अस्तित्व का प्रतिमान है और मनुष्य की इच्छाओ के उद्देश्य के रूप म है। सत्रहवीं शताब्दी मे आकर विचार मानव-मस्तिष्क के आत्मनिष्ठ सप्रत्ययो (Subjective Concepts) के रूप मे निरूपित किया जाने लगा। *लॉक ने विचार को चेतना के समस्त विषयों* के साथ सम्बद्ध कर दिया—साधारण विचार (प्रत्यय), जिसके सम्बद्धकरण से जटिल विचारो को अलग किया जाता है। इसका उद्भव इन्द्रिय प्रत्यक्षण मे होता है। ह्यूम ने विचार शब्द का प्रयोग धुंधली प्रतिमा के रूप मे, अथवा इन्द्रिय-गृहीत प्रभावो की स्मृति प्रतिलिपि के रूप म किया है। काट के दृष्टिकोण से विचार धारणाएँ हैं या उनका प्रतिनिधित्व है।

मनोविज्ञान मे सामान्यत यह एक सामान्य शब्द के रूप म प्रक्रिया या सामान्य विचार स्तर की प्रक्रिया और धारणा प्रक्रिया के अर्थ मे प्रयुक्त होता है, जिसम प्रतिमा और विचार का मिश्रण होता है, प्रत्यक्षण अलग है। मनोविज्ञान का सम्बन्ध विचारात्मक प्रक्रिया, अथवा विचारो की रचना की प्रक्रिया से भी होता है। विचार का प्रेषण मानसिक जीवन के उस स्तर की ओर है जिसका संकेत स्मृति, चिन्तन और प्रतिमा से है।

Ideomotor Action [इडियोमोटर एक्शन] प्रत्ययचालित क्रिया।

क्रिया विशेष जिसके अन्तर्गत विचार स्वत, बिना सकल्प विकल्प के, कार्य रूप मे परिणत हो जाते हैं। ये विचार अपने-आपमे इतने शक्तिशाली होते हैं कि व्यक्ति तदनुकूल कार्य करने के लिए विवश हो जाता है। उदाहरण के लिए, ऊँची जगह पर जाकर खडे होने पर कुछ लोगो को ऐसा आभास होने लगता है जैसे कि वे ऊपर से फाँद पडेंगे और अगर वे वहाँ से न हटें तो सच ही फाँद पडें।

किसी विशेष प्रकार की सिगरेट पीते हुए देखकर किसी व्यक्ति विशेष के मन मे सिगरेट पीने का विचार उठना और इसे कार्यान्वित कर बैठना।

Idiot [इडियट] : जड बुद्धि।

बौद्धिक विकास के दृष्टिकोण से अत्यधिक हीन अथवा पिछडा हुआ व्यक्ति जिसकी बुद्धि-लब्धि (दे० I. Q) ० से २५ तक के बीच पाई जाती है। बड़ा होने पर भी इसका व्यवहार दो साल के बच्चे के व्यवहार के समान ही रहता है। सामाजिक विकास के दृष्टिकोण से जड़ बुद्धि अत्यधिक हीन होता है और जीवन की साधारण-से-साधारण परिस्थितियो मे भी वह अपने को अभियोजित करने मे असमर्थ पाता है। साधारण खतरो से भी अपनी रक्षा नही कर पाता। इसकी बुद्धि कुण्ठित होती है। शारीरिक विकास विकृत होता है। ज्ञानवाही और क्रियावाही विकृतियाँ भी पाई जाती है। ऐसा व्यक्ति रोग का सहज ही शिकार हो जाता है। यही कारण है कि जड बुद्धि की प्राय: बचपन में ही मृत्यु हो जाती है। भाषा का विकास अत्यधिक अल्प और प्रारम्भिक रहता है। जीवन में इन्हे बराबर दूसरों का सहारा चाहिए।

Illusion [एल्युजन] : भ्रम।

किसी वस्तु के स्वरूप मे ऐसे तत्त्वो की प्रतीति जिनकी उसमे प्रतिष्ठा नही है—यथा रस्सी मे साँप की प्रतीति। मनोविज्ञान में भ्रम के वैज्ञानिक अध्ययन का सूत्रपात वुन्ट के समकालीन मनोवैज्ञानिक लिप्स की खोजो से होता है। दृष्टिभ्रमो के अध्ययन मे उन्होने यह स्पष्ट किया कि द्रष्टा स्वय अपनी मनोभावनाओं को अनुभूति-सघातो मे प्रक्षेपित करता है। भ्रम दो प्रकार के होते हैं: १—स्थायी अथवा सार्वजनिक : जो सभी व्यक्तियों को समान रूप से हों—यथा क्षितिज पर पृथ्वी-आकाश का मिला हुआ मालूम होना; २—क्षणिक : जिनका अस्तित्व थोड़े समय के लिए हो—यथा सूने मे किसी पेड को भूत समझ बैठना। क्षणिक भ्रमों को पुन: दो भागो में बाँटा जा सकता है : (१) स्मृति-सम्बन्धी—पुन:स्मृत अनुभूति मे ऐसे तत्त्वो की प्रतीति जिनका मूल प्रत्यक्ष मे अभाव हो। तथा (२) प्रत्यक्षण-सम्बन्धी—किसी वस्तु के प्रत्यक्षण मे मूल उत्तेजन मे अवर्तमान तत्त्वों की प्रतीति। प्रत्यक्षण-सम्बन्धी भ्रम अनेक प्रकार के होते हैं—यथा, गति-सम्बन्धी, दिशा-सम्बन्धी आदि। दिशा-सम्बन्धी कतिपय अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भ्रम उनके अन्वेषकों के नाम से ही प्रसिद्ध हैं; यथा हेरिंग, मुलर-लायर आदि।

भ्रम भौतिक और मनोवैज्ञानिक दोनों ही कारणो से उत्पन्न होते हैं। भौतिक कारणो मे वस्तु का स्वरूप तथा ज्ञानेन्द्रिय की विकृति अथवा विशेषता प्रमुख हैं। मनोवैज्ञानिक कारणो में आशा, प्रतीक्षा, चिन्ता, भय, अभ्यास अत्यधिक परिचय आदि हैं।

भ्रम शुद्धि : ज्यामिति तथा दिशा-सम्बन्धी कतिपय अनुभूतियो के भ्रमात्मक *प्रभाव* मे कमी लाना अथवा उसे पूर्णत: दूर करना। यह तीन प्रकार से सम्भव है : १—भ्रमात्मक अनुभूति को निष्फल करने वाली रेखाओ तथा क्षेत्रों की वृद्धि; २—अभ्यास; ३—आकार-सम्बन्धी किसी नए विचार अथवा अर्थ को आकस्मिक सूझ।

Image [इमेज] : प्रतिमा।

सवेदनात्मक उत्तेजन की अनुपस्थिति में सवेदन अनुभूति की पुनरावृत्ति। प्रतिमा शब्द का प्रयोग कई वैशेषिक संयोजन के प्रसंग मे हुआ है। कम्पोजिट प्रतिमा—वह प्रतिमा जो अनेक *अथवा समान* वस्तुओं की सवेदनात्मक अनुभूति हो; मूर्तकल्पी प्रतिमा (Eidetic image)—वह सामान्य प्रतिमा जिसके द्वारा एक विशेष वर्ग की वस्तु का प्रतिनिधित्व होता हो; भ्रमात्मक प्रतिमा—वह प्रतिमा जिसमें क्षण के लिए प्रत्यक्षण हो। सम्मोहनावस्था-

जन्य प्रतिमा (Hypnogogic image) —वह भ्रामक प्रतिमा जो व्यक्ति को सुप्तावस्था मे निद्रा के पूर्व या निद्रा से जगने वाला ही हो —ऐसी अवस्था मे अनुभव हो।

Imageless Thought [इमेजलेस थॉट] प्रतिमाहीन विचार।
बिना प्रतिमा के विचार या चिन्तन शृखला। यह विवाद का विषय है कि बिना प्रतिमा के विचार सम्भव है अथवा मानव की अनुभूतियो मे यह होता है अथवा नही। इस दृष्टिकोण के समर्थन मे हमे समृद्ध प्रयोगात्मक प्रदत्त मिलते हैं।

Imagination [इमैजिनेशन] कल्पना।
गत अनुभूतियो के आधार पर नवीन मानसिक सृष्टि। मानसिक प्रक्रिया-विशेष जिसमे गत प्रत्यक्षीकरण सम्बन्धी अनुभवो का—जो उसके वर्तमान अनुभव मे प्रत्ययात्मक स्तर (Ideational level) पर प्रतिमाओ के रूप मे उदित होते हैं और जोकि उसके गत अनुभव की समग्रता का पुनरावर्तन मात्र नही प्रत्युत नवीन सगठन हैं—सृजनात्मक उपयोग होता है।
कल्पना दो प्रकार की है—१ पुनरभिव्यजक (Reproductive)—गत अनुभूतियो की थोडे-से उलट-फेर के साथ पुनरभिव्यक्ति मात्र, २ रचनात्मक (Constructive)—मौलिक सृष्टि। रचनात्मक कल्पनाओ के भी दो भेद हैं—१ ग्रहणात्मक—किसी सुने अथवा पढे दृश्य का कल्पनालोक मे चित्रण। २ आविष्कारात्मक—नई स्थिति का निर्माण। आविष्कारात्मक कल्पनाएँ पुन तीन प्रकार की मानी गई हैं—१ अर्थक्रियात्मक या व्यावहारिकतापूर्ण (Pragmatic)—यथा किसी इजीनियर द्वारा किसी नए बाँध की कल्पना। २ सौंदर्यबोधात्मक (Aesthetic)—यथा किसी मूर्तिकार द्वारा पत्थर के टुकडे मे नई मूर्ति की कल्पना। तथा ३ मनोराज्यात्मक—बे-सिर पैर की कल्पनाएँ। इन्ही को अनियन्त्रित कल्पना भी कहते हैं।
कल्पना प्रक्रिया जीवन मे अत्यधिक उपयोगी है और इसके उपयुक्त विकास के लिए बचपन मे ही साधन जुटाना होता है।

Imbecile [इम्बेसाइल] बालिश।
बौद्धिक विकास के दृष्टिकोण से हीन अथवा पिछडा हुआ व्यक्ति, जिसकी बुद्धिलब्धि २० से लेकर ५० तक पाई जाती है। यह जड बुद्धि (० से लेकर २० तक जिसकी बुद्धि-लब्धि है) से श्रेष्ठ होता है। इसमे आत्मरक्षा की भावना विकसित होती है, पर मानसिक हीनता के कारण स्वय जीविकोपार्जन मे असमर्थ रहता है। वह बातचीत करता है, उसमे तर्क और विवेकपूर्ण चिन्तन सभव नही होता। प्रत्यक्षण, ध्यान, स्मृति तथा अनुकरण आदि की प्रक्रियाएँ जड बुद्धि से श्रेष्ठ होते हुए भी साधारण की अपेक्षा कम विकसित होती हैं। लिखने-पढने मे प्राय असमर्थ रहता है और केवल कुछ शरीरश्रम साध्य व्यवसायो मे ही सफलता प्राप्त करता है। इसका सामाजिक विकास ४ से ६ वर्ष तक के बच्चो के सामाजिक विकास के समान होता है। शारीरिक विकास की दृष्टि से वह निर्बल, बेडौल होता है। प्राय दौरे एव पक्षाघात का शिकार होते देखा जाता है।

Immediate Memory [इम्मेडिएट मेमरी] तात्कालिक स्मृति।
किसी विषय को अल्प समय के लिए ही अपने मस्तिष्क मे धारण करना, *यथा—टेलीफोन नम्बर*, व्यावसायिक पते आदि की स्मृति। इसमे प्रत्यक्षण और पुन स्मरण के बीच का समय अत्यधिक न्यून अथवा नगण्य होता है और इस बीच कोई अन्य क्रिया नही होती। कुछ व्यक्तियो का तात्कालिक-स्मृति विस्तार (Immediate memory span) बहुत अधिक होता है और कुछ का कम। तात्कालिक स्मृति पर परीक्षण हुए हैं। इसके अन्तर्गत सख्याओ अथवा निरर्थक पदो की विभिन्न लम्बाई की सूचियाँ प्रयोज्य को दिखलाई जाती हैं और यह पता लगाने का प्रयास किया

जाता है कि वह अधिक-से-अधिक कितनी लम्बी सूची को एक बार देखकर ही उसका पुन.स्मरण कर सकता है।

अवस्था मे वृद्धि के साथ ही तात्कालिक स्मृति मे भी वृद्धि होती है। म्युमैन के अनुसार १३ वर्ष की अवस्था तक यह अत्यधिक मन्द और १३ से १६ तक तीव्र गति से बढती है। २२ और २५ वर्ष की अवस्था के बीच इसका पूर्ण विकास हो जाता है और इसके उपरान्त इसमे ह्रास के चिह्न दृष्टिगोचर होते हैं।

तात्कालिक स्मृति मे रुचि का विशेष महत्त्व है। किसी विषय-विशेष मे रुचि होने से वह तात्कालिक स्मृति के स्थान पर स्थायी स्मृति का एक अग बन सकती है।

Impression Method [इम्प्रेशन मे'थड] : छाप-विधि।

प्रायोगिक अध्ययन-क्षेत्र की वे पद्धतियाँ जो प्रयोज्य के अन्त.निरीक्षणात्मक विश्लेषण (Introspective analysis) पर प्रमुखतः निर्भर करती हैं। अथवा जब कोई उत्तेजक वस्तु-स्थिति उपस्थापित की जाती है तब प्रयोज्य को अन्तरदर्शन या आत्मनिरीक्षण करके उस उत्तेजक वस्तु-स्थितिजन्य अनुभवों का वर्णन-व्याख्या करना होता है—यह कि उसे क्या अवलोकन-अनुभव हुआ। सामान्यत: विभिन्न प्रकार के उद्दीपनो के प्रस्तुत होने पर प्रयोज्य मे भावात्मक अनुभूति होती है। प्रयोज्य द्वारा दिए विवरण से उसकी भावात्मक अनुभूतियों से सम्बन्धित समस्याओ के बारे में ज्ञान होता है। छाप-विधि मे सबसे अधिक महत्त्व की विधि 'युग्म तुलना' (Paired comparison method) है। इस विधि मे प्रयोग के समय किन्ही या दो ध्येयों की उपस्थिति सम्भव है।

Incest [इन्सेस्ट] : अनाचार।

समाज द्वारा वर्जित निकट रक्त-सम्बन्धियो के बीच काम-सम्बन्ध की स्थापना—यथा पिता-पुत्री, माता-पुत्र अथवा सहोदर भाई-बहन इत्यादि। कतिपय राजघरानों को छोड (प्राचीन मिस्र मे) इस प्रकार के यौन-सम्बन्धो को सर्वत्र घृणास्पद माना गया है। वर्तमान सामाजिक व्यवस्था की अपेक्षा प्राचीन आदिम जातियों में रक्त-सम्बन्धो को विशेष महत्त्व दिया जाता था और इसीलिए प्राचीन साहित्य मे इस प्रकार के सम्बन्धो का उल्लघन करने वालो के लिए कठोर-से-कठोर दण्ड की व्यवस्था का उल्लेख मिलता है।

इस प्रकार के वर्जनो के सम्बन्ध मे फ्रायड, वेस्टर मार्क, ब्रेन्डा सेलिग्मन तथा ब्रिफाल्ट के सिद्धान्त विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। फ्रायड के अनुसार पुत्र का माँ के प्रति स्वाभाविक यौन-आकर्षण होता है। पिता इसे सहन नहीं कर सकता। वह पुत्र को वर्जित करता है। ब्रेन्डा सेलिग्मन का भी कहना है कि पिता-पुत्र को वर्जित कर माता के साथ, और माता पुत्री को वर्जित कर पिता के साथ अपने यौन-सम्बन्धों की रक्षा करते है।

ब्रिफाल्ट ने एक विश्वजनीन आदिम मातृसत्ता-प्रधान समाज की कल्पना की है। उनके अनुसार माताएँ अपने पुत्रों को चाहती थी और पुत्र-पुत्रियों पर उनका पूर्ण प्रभुत्व था। पुत्र को घर के बाहर की स्त्रियों को प्यार करने से रोका जाता था। इसकी प्रतिक्रिया-स्वरूप पुत्र अपनी कामतृष्णा की तृप्ति के लिए माता से विद्रोह कर घर के बाहर विवाह-सम्बन्ध स्थापित कर लेता था।

वेस्टर मार्क का सिद्धान्त इन सबसे नितान्त भिन्न है। उसके अनुसार निकट रक्त-सम्बन्धियो के बीच यौन-सम्बन्ध जीव-शास्त्रीय दृष्टिकोण से हानिकारक है। इसीलिए इस प्रकार के सम्बन्धो के प्रति मानव मे एक जन्मजात स्वाभाविक घृणा का भाव होता है। अधिकांश विद्वान् (हैवलाक एलिस आदि) इस मत से सहमत नहीं हैं। अनाचार के प्रति

घृणा को वे मूल-प्रवृत्तिजन्य नही मानते और न अभी तक इसकी स्थापना ही की जा सकी है कि निकट रक्त-सम्बन्धियो के बीच यौन-सम्बन्ध होने से जीवशास्त्रीय दृष्टिकोण से कोई विशेष हानि होती है। इस प्रकार के वर्जन सर्वथा कृत्रिम हैं और समाज मे अनुशासन, सहयोग एव सद्भाव रखने की दृष्टि से ही बनाए गए हैं। इन व्यवस्थाओं का उल्लघन करने वालो को दिया जानेवाला दण्ड वस्तुत सामाजिक ढाँचे की रक्षा के लिए प्रतिरोध-स्वरूप ही है।

Incentive [इन्सेन्टिव] प्रोत्साहन।

वे वस्तुएँ, परिस्थितियाँ या घटनाएँ जो प्राणी मे शारीरिक अतर्नादो द्वारा जाग्रत प्रवृत्ति अथवा व्यवहार को बढाती अथवा कायम रखती हैं और एक विशेष दिशा की ओर निर्दिष्ट करती हैं। भोजन भूख का उद्दीपक है, परवर्गी काम का। किन्तु सभी वस्तुएँ सभी स्थान-समय पर उद्दीपक का काम नही करती। साधारण भोजन भूख से पीडित व्यक्ति के लिए उद्दीपक है, क्षुधा न रहने पर भोजन उद्दीपक नही होता। यह भी सम्भव है कि एक ही वस्तु एक व्यक्ति के लिए एक समय पर सकारी प्रोत्साहन (positive incentive) बनकर उसे अपनी ओर आकर्षित करे और दूसरे समय पर नकारी प्रोत्साहन (negative incentive) के रूप मे उसम विकर्षण उत्पन्न करने का कारण बन जाए।

प्रोत्साहन के निश्चय करने मे सामाजिक वातावरण की भी महत्ता है। इसकी पुष्टि प्रयोग के आधार पर की गई है। मुर्गियों को दाना चुगते हुए देखकर जो मुर्गी दाना चुग चुकी होती है वह भी दाना चुगने लगती है।

Independent Variable [इन्डिपेन्डेंट वैरिएबुल] स्वतन्त्र परिवर्त्य, स्वतन्त्र चर।

वह परिवर्तनशील मात्रा अथवा मात्रा का प्रतीक जो अपने परिवर्तनो अथवा घटा-बढी के लिए किसी दूसरे परिवर्त्य के अधीन न हो, यथा वातावरण मे वर्तमान ऑक्सीजन की मात्रा। समुद्र के धरातल से हम जितना ही ऊपर की ओर उठते जाएँगे वातावरण मे ऑक्सीजन की मात्रा उतनी ही कम होती जाएगी। इसी प्रकार प्राणी के शरीर मे उत्पन्न होनेवाला ज्वर स्वतन्त्र परिवर्त्य है जबकि उसके फल-स्वरूप थरमामीटर मे चढने-गिरने वाला पारा परतन्त्र अथवा आश्रित परिवर्त्य है।

Individual Psychology [इण्डिविजुयल साइकॉलो'जी] व्यक्ति मनोविज्ञान।

इस सम्प्रदाय की स्थापना एलफ्रेड एडलर (१८७०—१९३७) ने की है। प्रारम्भ मे एडलर फ्रायड के ही सहयोगी एव समर्थक थे। मनोविश्लेषण के मूल तथ्यो से मतभेद होने पर एडलर ने एक स्वतन्त्र सम्प्रदाय की स्थापना की जो वैयक्तिक मनोविज्ञान के नाम से प्रचलित है। इसमे व्यवहार और व्यक्तित्व का मूल प्रेरक स्वाग्रह की प्रवृत्ति (Self assertion) निर्धारित की गई है। व्यक्ति प्रकृति से अन्य पर हुकूमत करना चाहता है—अपनी सत्ता और आस्था जमाना चाहता है, समाज मे उसका स्थान ऊँचा है, मित्र-सम्बन्धी मानते हैं, वह शरीर से हृष्ट-पुष्ट और मोहक है। जब यह स्वाग्रह की वृत्ति सामाजिक और व्यक्तिगत कारणो से सन्तुष्ट नही हो पाती तो व्यक्ति मे हीनता ग्रथि पडती है। व्यक्ति मनोविज्ञान के अनुसार यह हीनता ग्रथि मानसिक रोग का मूल कारण है। हीनता ग्रथि होने से व्यक्ति मे अनेक प्रकार के मानसिक लक्षण, जैसे उदासीनता, अनिच्छा, सवेगात्मक अस्थिरता, अपने मे अविश्वास, चिन्ता इत्यादि दृष्टिगोचर होने लगते हैं। एडलर ने विभिन्न मानसिक क्रिया-व्यापार का विवरण हीनता ग्रथि के प्रसग मे किया है। एडलर के अनुसार स्वप्न अधिकतर व्यक्ति की अतिरिक्त आकाक्षाओं के पूरक होते हैं—सीढी चढना,

मकान के सिरे पर पहुँचना, हवाई जहाज पर यात्रा इत्यादि के स्वप्न व्यक्ति की ऊँची अभिलाषा के सूचक है। यह मनोविश्लेषण की व्याख्या से पूर्णतः पृथक् है जिसमें ये सब काम-इच्छा के प्रतीक माने गए हैं।

व्यक्ति मनोविज्ञान में जीवन की हरेक समस्या के प्रसंग में वातावरण और सामाजिक अवस्थाओं पर बल दिया गया है। एडलर परिवेश (Environment) के पोषक है। वातावरण दोषयुक्त होने पर, मुख्य रूप से बाल्यकाल में, व्यक्ति गलत 'जीवन शैली' (style of life) डाल लेता है और इस प्रकार व्यक्ति के व्यवहार और व्यक्तित्व में समष्टिकरण नहीं दिखाई पड़ता। व्यक्ति मनोविज्ञान में सभी समस्याओं की व्याख्या व्यावहारिक ढंग से की गई है और जो साधारण बौद्धिक स्तर के व्यक्तियों के लिए भी बोधगम्य है। एडलर द्वारा निर्मित धारणाओं में मनोविश्लेषण की तरह जटिलता और दुरूहता नहीं मिलती; न तो समझने के लिए विशेष प्रयास ही करना पड़ता है।

देखिए—Self assertion, Environment.

Individual Test [इण्डिविजुअल टेस्ट]: वैयक्तिक परीक्षण।

एक समय एक ही व्यक्ति का परीक्षण। यह परीक्षण जिसमें जिसका परीक्षण होता है उसकी व्यक्तिगत क्रियागति देखनी होती है, उसका काम करने का ढंग अथवा अन्य प्रतिक्रियाओं को देखना होता है, उससे प्रश्नों के मौखिक उत्तर लेने होते है, अथवा लिखना या चिह्न लगाने के अतिरिक्त कोई अन्य क्रिया करवानी होती है। उदाहरण के लिए, बुद्धि-परीक्षणों में चित्र-निर्माण परीक्षण (Picture Construction Test) एवं वस्तु संहति परीक्षण (Assembly Test) वैयक्तिक परीक्षण हैं। व्यक्तित्व-परीक्षणों में मसि लक्षण परीक्षण (Ink Blot Test), चित्र-व्याख्या परीक्षण एवं अंतश्चेतनाभियोधन वैयक्तिक ही हैं। निदानात्मक परीक्षण भी प्रायः वैयक्तिक हुआ करते हैं।

Individuation [इण्डिविजुएशन]: व्यक्तीयन।

देखिए—Analytical Psychology, Personality

Induction [इण्डक्शन]: आगमन।

आगमन का तार्किक तथा मनोवैज्ञानिक अर्थ होता है। आगमन का तार्किक अर्थ है विशेष से लेकर सामान्य तक। पर यह मनोविज्ञान के लिए कोई महत्त्व का विषय नहीं है। जिस विशेष अर्थ में इस धारणा का मनोविज्ञान में प्रयोग होता है वह उन भावनाओं एवं संवेगों की ओर संकेत करता है जो किसी व्यक्ति में सहानुभूतिपूर्ण आगमन (sympathetic induction) द्वारा पाई जाती है। आगमन शब्द का भौतिक तथा शारीरिक अर्थ भी है। भौतिक अर्थ में यह किसी कार्य की उत्पत्ति का उसके मौलिक कार्यक्षेत्र से अन्यत्र उत्पत्ति का निर्देश करता है। इस अर्थ में आगमन वैज्ञानिक विधि का आधार है।

Industrial Psychology [इण्डस्ट्रियल साइकॉलोजी]: औद्योगिक मनोविज्ञान।

यह व्यावहारिक मनोविज्ञान की एक शाखा है जिसका मुख्य उद्देश्य उद्योग में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का उपयोग करना है। औद्योगिक मनोविज्ञान की उत्पत्ति १९१३ में हुई जब मुन्स्टरबर्ग ने अपना ग्रंथ 'साइकॉलोजी एण्ड इण्डस्ट्री' प्रकाशित किया। दूसरे महायुद्ध तक उद्योग के क्षेत्र में मनोविज्ञान के सिद्धान्तों का निर्बाध प्रयोग होने लगा। औद्योगिक मनोविज्ञान में मनुष्य के उन क्रिया-व्यापारों का अध्ययन किया जाता है जिनका सम्बन्ध व्यापार से है। औद्योगिक मनोविज्ञान की मुख्य समस्याएँ है: किसी श्रमिक के लिए उसके उपयुक्त व्यवसाय निश्चित करना, किसी व्यवसाय के लिए उपयुक्त श्रमिक की नियुक्ति करना, कार्य की व्यवस्था इस प्रकार रखना कि श्रमिक

कम से कम समय मे अधिक परिमाण मे कार्य सम्पादित करे और उसे कम थकान मालूम हो, काय विश्लेषण(Job analysis) करना जिससे यह मालूम हो सके कि अमुक काय के लिए अमुक विशेषता अनिवाय है समय समय पर श्रमिक की योग्यता परीक्षा लेकर कार्यगति का विवरण रखना, ऐसा प्रयास करना कि पूंजीपति और श्रमिक म सहानुभूति का सम्बन्ध रहे सफल विज्ञापन करना, विक्रेता के आवश्यक गुण पर विचार करना इत्यादि।

सक्षेप मे औद्योगिक मनोविज्ञान की समस्याएँ साधारणत चार भागो म बाँटी जा सकती है (१) व्यावसायिक निर्देशन (Vocational Guidance) (२) व्याव सायिक चुनाव(Vocational Selection), (३) दक्षता और (४) व्यापार।

देखिए—Vocational Guidance, Vocational Selection

Infancy [इन्फेंसी] शैशव।

जन्मोत्तर विकास की अत्यधिक प्रारम्भिक अवस्था (प्रथम दो वर्ष) जबकि बालक लगभग पूर्णत अपने अभिभावको के पोषण पर ही निर्भर करता है। व्यापक अर्थ मे कभी कभी इस शब्द का प्रयोग जन्म से लेकर परिपक्वता तक की अवस्था के लिए किया जाता है।

व्यक्तित्व विकास क दृष्टिकोण से इस अवस्था का विशेष महत्त्व है। इस बीच उसे कई महत्त्वपूण मानसिक क्षोभो का सामना करना पडता है, जैसे दूध का छुडाया जाना। फ्रायड के अनुसार, बाल्यावस्था की अनुभूतियाँ व्यक्ति के अज्ञात मन (unconscious) मे सतत वर्तमान रहकर उसके चतन जीवन को अनजाने ही प्रभावित करती रहती है। एडलर ने भी बाल्यावस्था को 'जीवन शैली' (style of life) का निर्माण-काल माना है।

देखिए—Style of Life, Infantile Sexuality.

Infantile Sexuality [इन्फेन्टाइल सेक्सुएलिटी] शैशवकालीन लैंगिकता।

(मनोविश्लेषण) फ्रायड से पहले 'काम' शब्द का व्यवहार रति और उसकी सहायक क्रियाओ के लिए किया जाता था। इस मान्यता के अनुसार यह वेग यौवनोद्‌गम काल मे प्रकट होता है और इसका प्रमुख प्रयोजन सन्तानोत्पत्ति है। पर फ्रायड की सूक्ष्म दृष्टि ने यह प्रमाणित किया कि सजातीय कामुकता, काम विकृतियो आदि का उक्त मान्यता से कोई आवश्यक सम्बन्ध नही है। फ्रायड ने काम विकास का गहन अध्ययन किया और अन्वेषण द्वारा निम्न निष्कर्षों पर पहुँचे (१) काम जीवन का आविर्भाव केवल यौवनारम्भ काल मे ही नही होता। जन्म के तुरन्त बाद ही बालक मे इसके स्पष्ट चिह्न दृष्टिगत होते हैं। आयुर्वेद मे भी फ्रायड की इसी मान्यता का समर्थन हुआ है। उसके अनुसार 'शुक्रकला' जन्मकाल से ही मूर्धा से नीचे की ओर बढने लगती है।

(२) 'काम' और 'रति' दो भिन्न प्रत्यय हैं। 'काम' की व्यापकता मे बहुत सी ऐसी क्रियाएँ सम्मिलित हैं जिनका 'रति' क्रिया से कोई भी सम्बन्ध नही।

(३) शरीर के कतिपय अगो मे अथवा उनके द्वारा आनन्दानुभूति ही काम जीवन का प्रमुख अग है। इसकी चरम परिणति सन्तानोत्पत्ति मे होती है।

फ्रायड के अनुसार बाल्य की काम तृष्णा के विकास क्रम मे निम्न स्तर मिलते हैं

(१) मौखिक अवस्था (Oral phase)—इस अवस्था मे बालक अपने मुख तथा मुख-गह्वर सम्बन्धी अगो के सचालन द्वारा ही काम-सुख प्राप्त करता है। इसके अन्तर्गत दो अवस्थाएँ आती हैं

(क) चुभलाने की अवस्था—इसकी प्रधानता जन्म से लेकर आठ महीने की अवस्था तक रहती है। इस बीच बालक अपने मुँह, होठ तथा जिह्वा से चीजो को चुभलाने, चूसने तथा निगलने आदि

में सुखानुभूति पाता है। भावात्मक जगत् में इस अवस्था में बालक पूर्णत: माँ पर आश्रित रहता है। माँ को ही सब सुख का साधन समझता है। दूध के छुडाए जाने पर उस पर मानसिक आघात पहुँचता है।

(ख) काटने की अवस्था—इसकी प्रधानता छ: से लेकर अठारह महीने की अवस्था तक पाई जाती है। इस बीच उसके काम-सुख का केन्द्र उसके दाँत और जबड़े रहते है। वह दूसरों को कष्ट पहुँचाने मे रस लेता है। इस अवस्था मे बालक को सबसे बडा मानसिक आघात परिवार मे दूसरे बालक के आने से होता है। तब वह अपने को उपेक्षित-सा अनुभव करने लगता है और उसमें निराशा के भाव अंकुरित होते है।

२. गुदावस्था (Anal stage)—इसके भी दो भाग हैं :

(क) त्यागने की अवस्था—इस अवस्था की प्रधानता तीन महीने से लेकर तीन वर्ष तक रहती है। इस काल में काम-सुख का प्रमुख केन्द्र गुदा और नितम्ब रहते हैं। मलमूत्र के निष्कासन द्वारा ही बालक इस सुख को प्राप्त करता है। शौचादि के नियमन-नियन्त्रण पर अधिक जोर दिए जाने के कारण बालक इन अगो (फलत: यौन-वैभिन्न्य) के प्रति जागरूक होता है।

(ख) धारण की अवस्था—इसकी प्रधानता एक वर्ष से चार वर्ष तक रहती है। बालक की रुचि अब मल-मूत्र को रोकने की ओर उत्पन्न होती है। भावनात्मक क्षेत्र मे बालक अब माता की ओर और बालिका पिता की ओर अधिक आकर्षित होती है (Oedipus Complex)।

(३) ऐन्द्रियावस्था—इसकी प्रधानता तीन से सात वर्ष तक रहती है। इस अवस्था मे काम-सुख का प्रधान केन्द्र जननेन्द्रियाँ रहती है। बालक अब मूत्र के त्यागन-धारण, नग्नता-प्रदर्शन आदि मे आनन्द का अनुभव करता है। अधिकांश आकर्षण सजातीय ही रहता है। बालक पिता की ओर आकृष्ट होता है। उसकी मान्यताओं, श्रद्धाओं, विश्वासों, अनुशासनों को धीरे-धीरे आत्मसात करना प्रारम्भ होता है। बालिका भी पुन माँ की ओर झुकती है और उसकी विशेषताओं को आत्मसात करती है।

(४) सुप्तावस्था—पाँच-सात से ग्यारह-बारह वर्ष तक यह अवस्था रहती है। इसी बीच बालक मे काम-सम्बन्धी चेष्टाएँ कम-से-कम दृष्टिगत होती हैं। बालक बालिकाओं के साथ खेलने में 'हीनता' और बालिकाएँ बालकों के साथ घुलने-मिलने में लज्जा का अनुभव करने लगती है। बालक की दमित काम-शक्ति अब अपने उन्नत रूपों मे प्रकट होती है। समाजोपयोगी एव निर्माण-सम्बन्धी कार्यों, कला-कौशल आदि के प्रति बालक का विशेष झुकाव होता है। शिक्षा की दृष्टि से यह काल बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है।

(५) रति अवस्था—काम-विकास के क्रम मे यह अन्तिम अवस्था है। इसका काल-क्रम १२ से लेकर २० वर्ष तक है। इस काल मे काम-सुख का प्रमुख केन्द्र जननेन्द्रिय और काम-सुख की प्राप्ति का प्रमुख साधन रति-क्रिया होती है।

Inference [इन्फरें'न्स] : अनुमिति, अनुमान।

अनुमान विचार करने की क्रिया है जिसके द्वारा पूर्व बनाये गए एवं स्वीकृत परिणाम से निष्कर्ष पर पहुँचना होता है। यह विचार की वह प्रक्रिया है जिसमें मन एक तर्कवाक्य (Proposition) से, जो सत्य मान लिया गया है, प्रारम्भ कर दूसरे तर्कवाक्य पर पहुँचता है जिसकी सत्यता पहले की सत्यता मे निहित है। अनुमान तर्कवाक्यो के सत्य होने का निश्चय करने की एक मनोवैज्ञानिक क्रिया है और उपलक्षण के तार्किक सम्बन्धो से, जो कि दोनों के बीच ग्रहण करता है, जबकि तर्कवाक्य सत्य है, पृथक् किया जाता है। तर्कशास्त्र का प्रमुख विषय अनुमान को

प्रामाण्यता या अप्रामाण्यता है जोकि उपलक्षणात्मक सम्बन्धो की उपस्थिति या अनुपस्थिति के द्वारा प्रस्थापित या निर्धारित होता है। अनुमान आगमन और निगमन है, उसके तर्क की पीठिका मे आगमन निगमन दृष्टिगत होता है।

Inferiority Complex [इनफीरियोरिटी कम्पेलक्स] हीनता मनोग्रन्थि।

मानव व्यवहार के विश्लेषण के सम्बन्ध मे एड्लर द्वारा प्रतिपादित एक धारणा। विकृत व्यवहार के प्रसग मे इसका उपयोग गुप्त रूप से है। हीनत्व ग्रन्थि का मूल कारण स्वाग्रह की प्रवृत्ति (self assertion) का सतोषण न हो सकना है। तभी व्यक्ति मे हीनता का भाव उठता है। हीनत्व भाव एक प्रकार से अपनी आलोचना है। हीनत्व भाव आतरिक है और इसका सम्बन्ध सवेगात्मक अनुभूति से है। इसमे योग्यता-अयोग्यता का प्रश्न नही है। सब गुण विशेषता रहने पर भी व्यक्ति मे हीनत्व भाव जम जा सकता है।

हीनता ग्रन्थि कभी तो नीति सम्बन्धी होती है, कभी शरीर-सम्बन्धी, कभी अध्यात्म-सम्बन्धी, कभी समाज सम्बन्धी एव धर्म सम्बन्धी इत्यादि।

हीनत्व भाव का प्रभाव शरीर और मन पर सदैव पडता है। इस कारण इसके निवारण के लिए परामर्श (Counseling) आवश्यक है। मानव का ध्येय सदैव इस स्तर पर हो जो व्यक्ति की पहुँच के भीतर हो।

एड्लर के अनुसार सब प्रकार के मानसिक रोग का मूल कारण हीनत्व ग्रन्थि है। निराशा होने पर हीनता ग्रन्थि पडती है और यह सार्वभौम रूप से साधारण और जटिल प्रकार की विकृत मानसिक प्रतिक्रियाओ का कारण रहता है।

nk Blot Test [इक ब्लॉट टैस्ट] मसि लक्ष्म परीक्षा।

प्रयोज्य की मानसिक विशिष्टताओ के अनुसधान मे प्रयोगहोनेवाला एक परीक्षण, जिसमे कागज पर बनाए हुए स्याही के धब्बो को उद्दीपक वस्तु के रूप मे प्रयोग किया गया है। कैटेल ने कल्पना की उर्वरा शक्ति का अध्ययन करने के लिए 'स्याही के धब्बो' का प्रयोग किया। रोर्शाक का स्याही का धब्बा-परीक्षण वस्तुत इस शब्द का पर्यायवाची है।

Innate Ideas [इन्नेट आइडियाज] सहज प्रत्यय। जन्मजात प्रत्यय।

इसका प्रादुर्भाव स्टोइक काल मे हुआ और आधुनिक दर्शनशास्त्र मे इसके समर्थक देकार्त, लाईबनिज, काट, रेड थे। दर्शनशास्त्र मे इन तर्कवेत्ताओ के अनुसार कोई भी विचार अनुभव के द्वारा नही प्राप्त होता है, बल्कि विचारो का मन मे इस प्रकार प्रवेश होता है कि उन्हे निश्चित रूप से स्वीकार कर लिया जाता है। उदाहरणार्थ, रेखागणित-सम्बन्धी स्थान, समय, गति के विचार। परन्तु यह विचारधारा काट आदि दार्शनिको तथा आनुवशिकतावाद (Nativism) तक ही सीमित रही।

लॉक ने इसका तीव्र विरोध किया और यह प्रमाणित किया कि कोई भी प्रत्यय मनोवैज्ञानिक अर्थ मे जन्मजात नही होता। लॉक तथा ब्रिटिश अनुभववादियो बर्कले, ह्यू म, आँग्ल साहचर्यवादियो, मिल्स और बेन, तथा आधुनिक अनुभववादियो ह्यू म, हेल्महोल्तज ने इसका विरोध किया।

देखिए—Empiricism

Insight [इनसाइट] सूझ, अन्तर्दृष्टि।

इसका सामान्य अर्थ है मानसिक ग्रहणशीलता। टिचनर के अन्तर्दृष्टिवाद मे सूझ शब्द का प्रयोग किसी विषय-वस्तु के अर्थ अथवा भाव के प्रत्यक्ष ज्ञान के रूप मे हुआ है। नैदानिक मनोविज्ञान मे सूझ का अर्थ है 'अपनी मानसिक अवस्था की जानकारी'। गेस्टाल्ट सम्प्रदाय के कोहलर ने इस धारणा का प्रयोग विशेष अर्थ म प्रत्यक्षण और सीखने की प्रक्रियाओ की व्याख्या के प्रसग मे किया है। सूझ वस्तुत. सम्बन्धो (relations) का प्रत्यक्षण है। जब सम्बन्ध साधारण होता है—बहुत-से

हिस्सों और अवस्थाओं का नही होता, तब सूझ अकस्मात उत्पन्न होती है। जब किसी पशु को प्रत्यक्ष परिस्थिति मे सूझ होती है तो इसमे किसी उच्च मानसिक क्रिया का आभास नही मिलता। यह ठीक उसी प्रकार है जैसे कि कुत्ते ने मालिक को देखा तो पहचाना और दृष्टि से ओझल होने ही वह भूल गया। अथवा उस गाय के समान जो भूसा-भरे बछडे को सत्य मानकर तब तक चाटती है जब तक कि भूसा दिखाई न पड़े और दिखलाई पडते ही वह सब भूलकर उसे चबाने लगती है। कोहलर ने बन्दर पर प्रयोग किया और यह स्थापित किया कि उसकी सूझ मे अनुपस्थित तथ्य भी सम्मिलित होते हैं। बन्दर दो छोटी-छोटी छडियों को मिला देता है और तब अकस्मात यह सूझ होती है कि पिंजड़े की छड़ के पीछे केला है जो लम्बी छड़ी से प्राप्त किया जा सकता है। वह तुरंत ही छडी से केले को प्राप्त करने की व्यवस्था कर लेता है।

सूझपूर्ण व्यवहार में पृथक् उत्तेजनों के प्रति पृथक् प्रतिक्रियाएँ नही घटती; इसमें समग्र परिस्थिति के प्रति संघटित प्रतिक्रियाएँ होती हैं। सूझपूर्ण व्यवहार द्वारा समस्याएँ हल कर दी जाती हैं। सूझ सामान्य मनोविज्ञान में उत्कृष्ट निरीक्षण परिस्थिति का समग्र रूप मे प्रत्यक्षण तथा लक्ष्य की ओर प्रेरित करने वाली परिस्थिति के विभिन्न भागों के प्रत्यक्षण का पर्याय बन गया है।

Insomnia [इन्सॉम्निया] : अनिद्रा।

यह मानसिक रोग का लक्षण है। अनिद्रा का मूल कारण आभ्यंतरिक क्षेत्र मे तनाव है। अनिद्रा कई प्रकार से होती है। कभी तो अल्प समय सोने के बाद ही रोगी की नीद टूटती है और निद्रा आना कठिन हो जाता है; कभी तो रोगी को बार-बार नीद आती और खुलती रहती है; कभी रात-भर नीद नही आती, पलक नही झपती और कोई स्फूर्ति नही रह जाती है। अनिद्रा का लक्षण तंत्रिकीय मन.श्रांति (Neurasthenia) में विशेषकर मिलता है।

I/E Ratio [आइ/इ रेशो] श्व.प्र अनुपात, श्वास-प्रश्वास अनुपात।

श्वास गति में परिवर्तन को समझने और अध्ययन के लिए इस अनुपात की रचना की गई है। यह श्वास लेने या श्वास में व्यतीत हुए समय और श्वास बाहर निकालने या प्रश्वास मे व्यतीत हुए समय के बीच का अनुपात रूपी माप है। इस अनुपात का श्वसन लेखी (Pneumograph) मे प्रयोग होता है। उसमे यह अनुपात जीव की भावोत्पादक अवस्था की ओर संकेत करता है। यह अनुपात जीव की संवेगात्मक अवस्था और ध्यान की *अवस्था में परिवर्तन होने के साथ-साथ* बदलता रहता है।

साँस लेने और साँस छोड़ने की गति का अनुपात साधारणत १ : ४ होता है। परन्तु संवेगात्मक अवस्था मे १ : २ या कभी-कभी १ : १ भी हो जाता है।

Instinct [इन्सटिंक्ट] : सहजवृत्ति, मूलवृत्ति।

लक्ष्य-विशेष की ओर प्रेरित, प्रकृत, अभियोजशील, अपेक्षाकृत जटिल प्रतिक्रिया अथवा व्यवहार—संघात जिसका दैहिक आधार सम्बद्ध अंगों की परिपक्वता पर निर्भर हो—यथा पक्षियों में घोंसला बनाने की प्रवृत्ति।

मनोविज्ञान मे मूलवृत्ति के सिद्धांत के प्रवर्तक मेक्डूगल हैं। उन्होने १४ मूल वृत्तियाँ मानी है—भोजन ढूंढना, भागना, लडना, उत्सुकता, रचना, संग्रह, विकर्षण, समर्पण, काम, वात्सल्य, सामाजिकता, आत्मप्रकाशन, विनीतता और हँसना। अन्य मनोवैज्ञानिको ने अन्य संख्याएँ दी हैं। मनोविश्लेषण मे फायड ने जीवन (Eros) और मृत्यु (Thanatos) की दो मूलवृत्तियाँ मानी हैं। ये मूल प्रवृत्तियां जन्मजात होती हैं और मानव का समस्त व्यवहार इन्ही की नीव पर विकसित होता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने, विशेषकर व्यवहारवादियो ने,

जिनमे वाटसन का नाम प्रमुख है, इस परम्परा का विरोध किया है। उनके अनुसार व्यवहार सीखा हुआ होता है जिसे व्यक्ति अपने जीवन-काल मे किसी-न-किसी रूप मे अर्जित करता है। वस्तुत यह विवाद शब्द की व्याख्या को लेकर है। मनोविज्ञान मे मूलवृत्ति के सिद्धान्त का ऐतिहासिक महत्त्व सा हो गया है।

विलम्बित मूलवृत्ति (Delayed Instinct) ऐसी मूलवृत्ति जो जन्म के कुछ समय बाद अथवा पोषण के उपरान्त सक्रिय होती है। कभी-कभी अग-विशेष मे कारणवश परिपक्वता मे विलम्ब के कारण भी ऐसा होता है।

अस्थायी मूलवृत्ति (Transitory Instinct) : व्यक्ति के प्रकृत व्यवहार का वह रूप जो इसके जीवन के किसी काल-विशेष म प्रकट होता है और पुन लुप्त हो जाता है। इसका प्रयोग विशेषकर बाल्यावस्था के कुछ ऐसे व्यवहारो के लिए किया जाता है जो उसकी वृद्धि तथा विकास के साथ-साथ लुप्त होते जाते हैं।

मूलवृत्तियों का मिश्रण (Fusion of Instincts) मन के अचेतन स्तर पर जीवन और मृत्यु की मूल वृत्तियो का एक-दूसरे के साथ घुल-मिल होना। इसकी विरोधी क्रिया अर्थात् इन प्रवृत्तियो का अलग अलग होना मूल वृत्तियों का पृथक्करण कहलाता है। यह भी साधारणत मन के अचेतन स्तर पर ही घटित होता है।

Instrumental Conditioned Response[इस्ट्रुमेन्टल कन्डिशन्ड रेस्पान्स] औपकरणिक अनुबधित अनुक्रिया।

पावलॉव के प्रयोग में अनुबधित लाला-प्रतिक्रिया मुँह मे भोजन की प्राप्ति की तैयारी मात्र है लेकिन यह भोजन की प्राप्ति म सहायक नही होता। अनुबधित क्रिया का कार्यवाहक भाग भोजन की ओर अभिगमन की गति, भोजन की प्राप्ति मे सहायक नही थी। एक सहायक अनुबधित क्रिया पुनर्बलन (reinforcement) ग्रहण कर लेती है और प्रयोगात्मक अवस्था मे पुनर्बल का आना आवश्यक है। सहायक प्रकार के व्यवहार का वातवरण पर प्रभाव चलन (locomotion) या हस्तादि प्रयोग (manipulation) द्वारा कार्य करता है और इसीलिए पुरस्कार की प्राप्ति होती है। इस नई औपकरणिक अनुबधित अनुक्रिया द्वारा थार्नडाइक का प्रयत्न और त्रुटि द्वारा सीखना और पावलाव के अनुबधन सिद्धान्त मे समायोजन स्थापित हुआ। पज़ल बॉक्स मे सफलता पाना सहायक है और अनुबधित प्रतिक्रिया भी है। पावलाव के अनुबधन प्रयोग और स्किनर के पज़ल बॉक्स के प्रयोग को निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है पावलाव म 'मेट्रोनम', 'लाला-स्राव' 'भोजन' और 'भोजन करना' है, स्किनर मे सभी उपस्थित हैं—केवल यह विशेषता रही कि चूहो का भोजन के पास पहुँचना सहायक रहा और कुत्ते की लाला स्राव की प्रतिक्रिया भोजन की प्राप्त करने की क्रिया मे नही सहायक होती।

Insulin Therapy [इन्सुलिन थेरेपी] इन्सुलिन चिकित्सा।

मानसिक रोग के लिए एक प्रकार का उपचार जिसका अन्वेषण वियाना के डॉ॰ साकल (१९२७) ने किया है। उपचार की इस विधि का उपयोग अकाल मनोभ्रश (Dementia Praecox) मे सबसे अधिक सफलता से हुआ है। यह एक प्रकार का इन्ट्रावीनस इजेक्शन है जिसको देने के पश्चात रक्त मे शक्कर की कमी हो जाती है और रोगी को समूर्च्छा (coma) सी आ जाती है। इस इजेक्शन से रोगी को बहुत पसीना आता है और कभी कभी हिस्टीरिया की ऐंठ (convulsion) भी आती है। यदि रोगी की कोमा की अवस्था अपने-आप न हटी तो इजेक्शन से बेहोशी हटाई जाती है। अधिकतर हफ्ते मे दो बार इसका इजेक्शन दिया जाता है और यह क्रम दस हफ्ते तक चलता रहता है। उपचार की दृष्टि से यह

पर्याप्त प्रभावशाली है।

Intelligence [इन्टेलिजेन्स] : बुद्धि।

नई परिस्थितियों में नये ढग से सफलता-पूर्वक और शीघ्र अभियोजन कर सकने की जन्मजात सामर्थ्य। बुद्धिसगत व्यवहार की चार प्रमुख विशेषताएँ हैं : गत अनुभव का उपयोग, अभियोजनशीलता, सूझ तथा दूरदर्शिता।

बुद्धि के सिद्धान्त—(१) शक्ति-सिद्धांत (विक्टोरिया हेजलिट)—बुद्धि एक ऐसी शक्ति या योग्यता है जो व्यक्ति के सभी कार्यों को समान रूप से प्रभावित करती है। (२) सीमित शक्ति-सिद्धान्त (बिने)—बुद्धि विभिन्न असम्बद्ध योग्यताओं का समुच्चय मात्र है। (३) अनेक शक्ति-सिद्धांत (थार्नडाइक)—बुद्धि बहुत-से अनिश्चित परस्पर असम्बद्ध स्वतंत्र बीज तत्वों का सम्मिश्रण है। (४) द्वय शक्ति-सिद्धांत (स्पियरमैन)—बुद्धि के दो अंग हैं : सामान्य और विशिष्ट। सामान्य या 'जी फैक्टर' व्यक्ति के सब कार्यों में समान रूप से सहायक होता है और विशिष्ट बुद्धि या 'एस फैक्टर' विशिष्ट कार्यों में विशेष योग्यता का सूचक है।

बुद्धि-माप—बुद्धि-माप के अन्वेषण के प्रारम्भ का श्रेय जर्मनी के कुछ मनोवैज्ञानिकों को है। प्रारम्भ में बुद्धि की माप व्यक्ति की संवेदनशीलता के आधार पर होती थी। १८४३ मे सेगुइन और १८६९ में गाल्टन ने अपने अध्ययनों द्वारा मनोवैज्ञानिकों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया।

बुद्धिमाप के प्रवर्तक बिने है। इंगलैंड में डॉ॰ सीरिल बर्ट तथा अमेरिका में टरमन ने बिने द्वारा निर्मित प्रश्नावलियों मे अपने देश की परिस्थितियों के अनुकूल सुधार किया।

Intelligence Quotient [इन्टेलिजेन्स कोशेन्ट] : बुद्धिलब्धि।

किसी व्यक्ति की बौद्धिक प्रगति के वेग का माप जो किसी बुद्धि-परीक्षण के द्वारा ज्ञात उसकी मानसिक आयु की उसकी वर्ष-क्रम आयु के साथ तुलना से प्राप्त होता है। मानसिक आयु को वर्ष-क्रम आयु से भाग करके भजनफल को दशमलव से मुक्त रखने के लिए १०० से गुणा कर दिया जाता है $\frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}} \times १०० =$ बुद्धिलब्धि। देखा गया है कि किसी व्यक्ति की बुद्धिलब्धि उसकी किसी आयु पर भी ज्ञात करने से लगभग उतनी ही बैठती है। मानसिक अभ्यास और पोषण के अन्तरों का इसकी स्थिरता पर कोई विशेष प्रभाव नही पडता। केवल कुछ रोगों के आक्रमण से व्यक्ति की बुद्धिलब्धि घट जाती है। किसी आयु के कसी भी व्यक्ति के लिए बुद्धिलब्धि १०० सामान्य मानी जाती है। उससे यह समझा जाता है कि व्यक्ति का सामान्य गति से बौद्धिक विकास हुआ है, हो रहा है और होता रहेगा। बुद्धिलब्धि १२० का यह अर्थ होगा कि व्यक्ति का बौद्धिक विकास सामान्य से २० प्रतिशत तीव्रतर गति से होगा। प्रत्येक बुद्धिलब्धि का सभी आयु के व्यक्तियों के लिए एक ही अर्थ होगा। १०० से न्यून अथवा अधिक कोई बुद्धिलब्धि सामान्य से कितनी न्यून अथवा अधिक समझी जाए, यह समाज में बुद्धिलब्धियों के वितरण पर निर्भर होगा। यदि परीक्षण विश्वासयोग्य है और उससे प्राप्त फलों को अर्थपूर्ण होना है तो इस वितरण मे सब आयु वर्गों के मध्यक तथा प्रमाप विचलन एक-से होने चाहिएँ। आजकल बुद्धि-परीक्षण निर्माण मे इस ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। आदर्श तो यह भी है कि किसी व्यक्ति की बुद्धिलब्धि प्रत्येक परीक्षण के अनुसार उतनी ही हो। परन्तु वास्तव में ऐसा हो नही पाया है। इसलिए प्रत्येक बुद्धि-परीक्षण के विषय में यह ज्ञात करना भी आवश्यक हो गया है कि उसके द्वारा प्राप्त कोई बुद्धिलब्धि अन्य किस-किस परीक्षण द्वारा प्राप्त कितनी-कितनी बुद्धिलब्धि के समान होती है।

Intelligence Test [इन्टेलिजेन्स टैस्ट] :

बुद्धि परीक्षण।

बुद्धि को मापने के लिए उपयोग में लाए जाने वाले परीक्षण। इन परीक्षणों में कोई समस्या या समस्याओं की शृंखला अथवा कोई कार्य या कार्यों की शृंखला सम्पादित करने के लिए दी जाती है और इसी आधार पर व्यक्ति की जन्मजात बौद्धिक योग्यता का अनुमान किया जाता है।

बुद्धि परीक्षण कई प्रकार के होते हैं (१) वैयक्तिक—जिनका एक बार में एक व्यक्ति पर प्रयोग किया जा सकता है। (२) सामूहिक—जिनका एक साथ एक से अधिक व्यक्तियों पर प्रयोग किया जा सकता है। (३) भाषा सम्बन्धी—ये लिखित और मौखिक दोनों प्रकार के हो सकते हैं। (४) निर्माण परीक्षण—इनमें व्यक्ति को कोई कार्य करने को दिया जाता है।

Interactionism [इन्टरएक्शनिज्म] अन्योन्यक्रियावाद।

मन और शरीर के पारस्परिक सम्बन्ध का वह सिद्धान्त जिसमें क्रिया-प्रतिक्रिया अथवा पारस्परिक सम्बन्ध कार्य कारण सम्बन्ध माना गया है यह कि मन का प्रभाव शरीर पर और शरीर का मन पर पड़ता है। इस प्रकार मनोदैहिक समस्या का समाधान इस सिद्धान्त में हुआ है। क्रिया-प्रतिक्रिया सिद्धान्त में दार्शनिक द्वैतवाद (Dualism) की समस्या निहित है। किन्तु एक साधारण परिकल्पना के रूप में इसे स्वीकार करना मनोवैज्ञानिकों को मान्य रहा।

Interest [इन्टरेस्ट] अभिरुचि।

इस शब्द का प्रयोग दो अर्थों में होता है—१ एक प्रकार की भावात्मक अनुभूति जो किसी वस्तु अथवा क्रिया विशेष की ओर ध्यान के साथ संलग्न रहती है, २ व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषताओं का एक निर्णायक तत्व जिसके कारण उसका ध्यान किसी वस्तु, क्रिया अथवा विषय विशेष की ओर जाता है।

अभिरुचि जन्मजात होती है (नवजात शिशु की स्तनपान में रुचि) और अर्जित भी (भोजनोपरान्त पान में रुचि)। अभिरुचि क्षणिक होती है (साइकिल में पंचर हो जाने पर साइकिल की दूकान में अभिरुचि) और स्थायी भी (चिन्तक की ज्ञानार्जन में अभिरुचि)।

अभिरुचि और अवधान अन्योन्याश्रित हैं। जिस विषय-वस्तु में व्यक्ति की अभिरुचि अधिक होती है उसकी ओर उसका ध्यान अपेक्षाकृत अधिक जाता है। किसी वस्तु-विशेष की ओर लगातार ध्यान देते रहने पर उसमें अभिरुचि उत्पन्न भी हो जाती है।

अभिरुचि सिद्धान्त—शिक्षण का प्रमुख सिद्धान्त जो बालकों के शिक्षण को उनकी वर्तमान रुचियों पर आधृत कर उन्हीं के आधार पर उनमें नई-नई रुचियों को जागृत करने पर बल देता है।

Interest measurement [इन्टरेस्ट मेज़रमेंट] अभिरुचि मापन।

व्यक्ति की अभिरुचियों (विशेषकर व्यावसायिक) को मापने की प्रणाली। इस प्रणाली में भिन्न-भिन्न प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग होता है—यथा विषय की लम्बी सूची देकर प्रयोज्य से उनमें अपनी रुचि बतलाने का निर्देश देना। विभिन्न परीक्षणों में 'कूडर प्रिफरेन्स टेस्ट' और 'स्ट्रांग इन्टरेस्ट टेस्ट' प्रसिद्ध हैं।

Interval Scale [इन्टरवल स्केल] : अन्तरमापनी।

ऐसे मनोवैज्ञानिक मापदण्ड जिन पर क्रमिक माप श्रेणियों के बीच के अन्तर सब समान परिमाण में होते हैं। इसलिए इन्हें समान इकाई वाले मापदण्ड भी कहा जाता है। इनकी समान अन्तर रूपी इकाइयाँ समान अनुभवगत अन्तरों की द्योतक होती हैं। इनके द्वारा प्रदत्तों की मात्राओं का नहीं, इनके परस्पर अन्तरों का ही मापन होता है। सुविधा के लिए किसी एक माप श्रेणी को शून्य मान लिया जाता है। परन्तु यह शून्य कहीं भी रखा अथवा

खिसकाया जा सकता है। अर्थात् यह वास्तविक नही कल्पित होता है। इस परिवर्तन से अन्तरा के मापों पर कोई प्रभाव नही पड़ता। इन पर प्राप्त मापो के अनुपातों का कोई विश्वासयोग्य वास्तविक अर्थ नही लगाया जा सकता। समान इकाइयों के कारण इन मापदण्डो पर प्राप्त प्रदत्तों के बीच के अन्तरो को जोडा जा सकता है और माध्य (Mean), मानक विचलन (Standard deviation), सहसम्बन्ध गुणक (Coefficient correlation) आदि लगभग सभी साधारण *सांख्यिकीय माप* (Statistical measurement) किये जा सकते हैं। केवल परिवर्तन गुणक के शून्य के स्थान पर निर्भर होने के कारण इनका अन्तरीय मापो पर अनुप्रयोग अनुचित हो जाता है। अन्तरीय मापदण्डों के निर्माण की समद्विभाजन विधि (*Bisection method*) और समानान्तर बोध-विधि दो—विधियाँ प्रचलित हैं।

Intervening Variable [इन्टरवेनिंग वैरिएबल] : मध्यवर्ती परिवर्त्य।

मनोवैज्ञानिक प्रयोगों में एक को छोड़ (स्वतन्त्र परिवर्त्य) प्राय: सभी परिवर्तनशील घटकों *अथवा परिस्थितियों* को नियन्त्रित किया जाता है। फिर इस स्वतन्त्र परिवर्त्य की *मात्रा* को घटा-बढ़ाकर किसी दूसरे परिवर्त्य (आश्रित परिवर्त्य) पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। परन्तु कभी अनजाने ही कोई घटक प्रयोगकर्ता के नियन्त्रण से बच निकलता है और प्रयोग, प्रयोग-परिणामों को अप्रत्याशित रूप में प्रभावित करने लगता है। इसी को मध्यवर्ती परिवर्त्य कहते हैं। यथा अनुबन्धन-सम्बन्धी (*Conditioning*) एक प्रयोग में पावलोव की उपस्थिति अनजाने ही, कुत्ते मे प्रत्याशित परिणाम (घंटी की आवाज के प्रति लालास्रव) को प्रकट करने के मार्ग मे बाधक सिद्ध हो गई थी।

'मध्यवर्ती परिवर्त्य' की धारणा को एक परिष्कृत रूप टॉलमैन ने दिया है। इसके अन्तर्गत टॉलमैन ने *मांगें* (demands), तृष्णा (appetite), विभेद (discrimination), क्रियात्मक दक्षता इत्यादि को सम्मिलित किया है। परिभाषा इस प्रकार है : "ये मध्यवर्ती परिवर्त्य प्राणी की प्रतिक्रियाओं को उत्तेजित परिस्थिति मे प्रभावित करती है।" क्लार्क एल० हल के अनुसार आदत-शक्ति (*Habit strength*) मध्यवर्ती परिवर्त्य है।

Interview [इन्टरव्यु] : प्रत्यक्षालाप, अभिमुखालाप।

किसी व्यक्ति के साथ किसी विशिष्ट प्रयोजन से की गई औपचारिक अन्तर्वार्ता। मनोविज्ञान मे इसका प्रयोग परिस्थितियो, जनमत, सामाजिक जीवन को समझना, व्यक्तित्व-सम्बन्धी अनुसधान, किसी व्यक्ति-विशेष का योग्यता-स्तर, मत, व्यावसायिक रुझान अथवा मानसिक स्वास्थ्य जानने के लिए या किसी के मानसिक रोग के निदान अथवा उपचार के लिए किया जाता है। योग्यता-परीक्षा के लिए प्रत्यक्षालाप के उपयोग मे निम्नलिखित कठिनाइयाँ होती हैं : समय की अपर्याप्तता, प्रत्यक्षालाप मे आए व्यक्ति की उद्वेगिक अशान्ति, तथा विभिन्न प्रत्यक्षालाप द्वारा दिये गए अंकों में विशेष अन्तर। निदानात्मक प्रत्यक्षालाप में निम्नलिखित विशेषताएँ होती है : पहले से ही रोगी के विषय में जानकारी प्राप्त कर लेना, पद्धति-संयोजन परिचय के समय पहले समालाप्य से घनिष्ठता-स्थापन (rapport), छोटे-छोटे अर्थपूर्ण व्यवहारों का प्रेक्षण, रोगी को मुक्त साहचर्य की स्वतन्त्रता, उपेक्षा-रहित अनुमोदन, रोगी को समझने का मनोभाव। उपचारात्मक प्रत्यक्षालाप में उपचारक के उपचार-सिद्धान्त के अनुसार अलग-अलग पद्धति का अनुसरण किया जाता है।

Introspection [इन्ट्रोस्पेक्शन] : अन्तर्निरीक्षण।

अन्तर्निरीक्षण सुव्यवस्थित आत्मनिरीक्षण है। इस अर्थ में इस शब्द का व्यापक रूप से प्रयोग हुआ है। मनोवैज्ञानिक प्रयोग में यह प्रचलित है। उन्नीसवीं शताब्दी में मनोवैज्ञानिक अनुसन्धानों की यह मूल विधि थी। मनोविज्ञान में अन्तर्निरीक्षण दृष्टि का प्रयोग दर्शनशास्त्र से नहीं, अपितु भौतिकशास्त्र अथवा शरीर-शास्त्र से आया है। भौतिकशास्त्र में इस शब्द का उपयोग गति तथा ध्वनि के अध्ययन के सम्बन्ध में और शरीर शास्त्र में इन्द्रिय संस्थान के सम्बन्ध में हुआ है। प्रयोज्य के सम्मुख एक उत्तेजन प्रस्तुत करके उससे यह पूछना कि उस पर इसका क्या प्रभाव पड़ा। इन्द्रिय शरीर-वेत्ताओं ने रोचक सूचनाएँ दी हैं। क्रियात्मक मनोविज्ञान में अन्तर्निरीक्षण प्रणाली वस्तुनिष्ठ विधि (Objective method) से विस्थापित हुई। व्यवहारवादियों ने निरीक्षण की बाह्य विधि का प्रचार किया। बाद में अन्तर्निरीक्षण विधि की प्रमाणता पर प्रश्न उठाए गए और बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में इसका परित्याग कर दिया गया। किन्तु प्रायोगिक मनोविज्ञान में अन्तर्निरीक्षण विवरण (Introspective report) का बहुत महत्व है।

Introspectionism [इन्ट्रोस्पेक्शनिज़्म] अन्तर्निरीक्षणवाद।

वह सैद्धान्तिक मनोविज्ञान की प्रणाली जो अन्तर्निरीक्षण पर आधारित है—जिसमें मनोवैज्ञानिक सामग्री-प्रदत्त अन्तर्निरीक्षण द्वारा प्राप्त किए जाते हैं। मनोविज्ञान की एक प्रणाली के रूप में इसका घनिष्ठ सम्बन्ध मनोवैज्ञानिक तत्त्ववाद, साहचर्यवाद (Associationism) तथा संरचनावाद (Structuralism) से है।

देखिए—Structuralism, Introspection

Introvert [इन्ट्रोवर्ट] अन्तर्मुखी।

(युंग) व्यक्तित्व का एक प्रकार। इस वर्ग के व्यक्ति की विशेषताएँ हैं जगत् और जीवन के प्रति विराग भाव रखना, अपने में तल्लीन रहना, गूढ़ दार्शनिक सूक्ष्म विषय पर विचार करना, मित्रों से विमुख रहना, सांसारिक ख्याति के प्रति उदासीन होना इत्यादि। इनमें विचार भाव की प्रधानता होती है और ये आदर्शवादी होते हैं। दार्शनिक विचार-प्रधान होता है, कवि तथा चित्रकार भाव-प्रधान होता है। युग के अनुसार यह व्यक्ति की जन्मदत्त प्रवृत्ति और विशेषता होती है। इसके विपरीत प्रकार का व्यक्ति बहिर्मुख होता है।

इस प्रसंग में अन्तर्मुखता (Introversion) की धारणा का स्पष्टीकरण आवश्यक है। अन्तर्मुखीकरण काम शक्ति का आभ्यन्तर की ओर मोड़ है। इसमें शक्ति बाह्यवस्तु व्यक्ति (Object cathexis) के स्थान पर अहम् में अभिनिवेश (Ego-cathexis) होती है। कला भावना तथा कला सृजन इसी काम-शक्ति की अन्तर्मुखता का फल है।

Involutional Melancholia [इन्वोल्यूशनल मेलनकोलिया] अपविकासात्मक विषाद रोग।

एक प्रकार का मानसिक रोग जिसमें विषादात्मक प्रतिक्रियाएँ मिलती हैं। यह रोग अधिकतर पचास वर्ष की अवस्था में होता है। रोगी इसमें अपने को ही दोषी ठहराता है कि उसने ईश्वर को धोखा दिया है, पाप किया है और सगे सम्बन्धियों के दुःख का कारण है। अपने को दोषी ठहराने की उसमें एक बान सी पड़ी रहती है। विषाद की भावना अधिक होने से उसे जीवन में कोई रस नहीं मिलता और म्लानमन रहने से उसे शरीर और आत्मा-सम्बन्धी अनेक प्रकार के भ्रम होने लगते हैं। शरीर के बारे में वह सोचता है कि उसका मस्तिष्क छलनी हो गया है, रक्त पानी हो गया है और शरीर में कोई श्री नहीं। आत्मा के बारे में यह विचार कि वह पतित और कुण्ठित हो गई है और प्रकाशयुक्त नहीं रह गई।

अपविकासात्मक विषाद के बारे में मूल

दो सिद्धान्त हैं : (१) ग्रन्थि-स्राव सिद्धान्त, (२) मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त।

भावना और ग्रन्थि-स्राव मे अनन्य सम्बन्ध है। ग्रन्थि-स्राव में परिवर्तन होने का प्रभाव मानव के भावात्मक क्षेत्र पर विशेष पडता है। पचास वर्ष की अवस्था के लगभग स्त्रियों और पुरुषों मे ग्रन्थि-स्राव मे परिवर्तन होने के कारण अवयव मे एक नए प्रकार का समायोजन होता है और इस कायिक परिवर्तन के कारण उसकी भाव-अनुभूति और प्रतिक्रियाओ में भी परिवर्तन होना है। किन्तु अप-विकासात्मक विषाद के प्रसग में प्रस्तावित ग्रन्थि-सिद्धान्त पूर्णरूप से मान्य नही : (१) ग्रंथि-उपचार होने पर भी रोगी की मानसिक अवस्था स्वस्थ नही हो पाती, (२) ग्रन्थि-स्राव में परिवर्तन होते ही स्त्रियो मे रोग का आक्रमण नहीं होता। मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य मे इस रोग का आक्रमण व्यक्तित्व-सम्बन्धी कुछ गुण-विशेषताओं के रहने पर ही होता है। जो व्यक्ति सजग-चेतन, सवेदनशील, आश्रित, सजालु और जिद्दी स्वभाव के हैं उनमें यह रोग विशेष होता है। इस वर्ग के व्यक्ति की रुचि-आस्था परिवार मे अधिक रहती है और कर्तव्य की भावना सबल होती है।

इस रोग पर विद्युत्-चिकित्सा (E.S.T.) अत्यधिक लाभप्रद सिद्ध होती है। बिजली का आघात देने पर रोगी वातावरण से समायोजित हो जाता है, जीवन मे रस लेने लगता है और अपने को दोषी ठहराने की भावना में कमी हो जाती है।

Isolation [आयसोलेशन] : पृथक्करण।

प्राणियों के किसी वर्ग अथवा समूह-विशेष का अपनी ही जाति के अथवा समान प्राणियों से पृथक् अस्तित्व। इसके दो प्रमुख भेद हैं : (१) भौगोलिक पृथक्करण--किसी भौगोलिक अवरोध (यथा विशाल समुद्र, दुर्गम पर्वत, मरु-भूमि आदि) के कारण किसी समूह-विशेष का पृथक् अस्तित्व, (२) जैविक पृथक्करण—इसमें ऋतु-विशेष में उत्पन्न होनेवाली परिपक्वता में भिन्नता अथवा प्रजनन-यत्र की कोई विशेषता संकरण (Inter-breeding) मे बाधक सिद्ध होती है।

पृथक्करण-युक्ति (Isolation Mechanism) : (मनोविश्लेषण) हठ प्रवृत्ति-सम्बन्धी मनस्ताप मे पाया जानेवाला एक लक्षण-विशेष, जिसके अन्तर्गत किसी दुखद घटना अथवा तन्त्रिका-विकृति की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण वैयक्तिक प्रक्रिया के पश्चात् ऐसी विराम अथवा ठहराव की स्थिति अन्तर्भावित होती है जिसमें न तो कोई घटना घटती है और न कोई क्रिया ही सम्पादित की जाती है।

Isomorphism [आयसोमॉरफिज्म] : समाकृतिकता, समरूपता।

चेतन तथ्य-सामग्री तथा सक्रिय मस्तिष्क के विभिन्न भागो मे बनावट-सम्बन्धी पारस्परिक सम्बन्ध। यह धारणा बीसवीं शताब्दी मे स्थापित गेस्टाल्ट मनोविज्ञान में प्रयोग की गई है। गेस्टाल्ट-सिद्धान्त प्रत्यक्षण का स्थानिक प्रतिरूप (Spotial pattern) है जो कि मस्तिष्क मे होनेवाली आधारभूत उत्तेजना का समरूप है। यह पारस्परिक सम्बन्ध भूम्याकार है, क्षेत्रीय नही, यह टोपोलॉजिकल है, आकृति नहीं, अपितु क्रम (order) सुरक्षित बनाए रखा जाना है। एक तन्त्र (system) के दो बिन्दुओं मे, एक बिन्दु दूसरे बिन्दु से परस्पर सम्बन्धित होगा। मानसिक तथा शारीरिक एक ही प्रकार की घटना नहीं है—बल्कि इन घटनाओं की बनावट या स्वरूप मे समानता है। शारीरिक विद्युत्-सचालन की विभक्ति को समझ लेने पर दृष्टि-भ्रान्ति के स्वरूप की पूर्व-सूचना दी जा सकती है। समरूपता के कारण शरीर तथा मन की एकता के विषय में सस्थात्मक प्रकार का अनुसधान हुआ।

Item Analysis [आइटम ऐनेलिसस] : पद-विश्लेषण।

किसी परीक्षण के निर्माण अथवा संशोधन में उसमें रखने के लिए सूझे

हुए प्रश्नों को किसी नमूना रूप व्यक्ति-समूह से कराकर उनकी प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण समस्त नमूना रूप व्यक्ति समूह को श्रेष्ठ योग्यता निम्न योग्यता तथा मध्यम योग्यता वाले तीन वर्गों म विभक्त कर लिया जाता है और तब प्रत्येक प्रश्न के विषय में यह गिन लिया जाता है कि प्रत्येक वर्ग म से कितने व्यक्तियों ने उसका ठीक उत्तर दिया, कितनों ने प्रत्येक सम्भव अयथार्थ उत्तर दिया और कितनों ने कोई उत्तर नहीं दिया। इन संख्याओं को सुविधा के लिए एक तालिका में लिख लिया जाता है और इस तालिका के आधार पर यह निर्णय करने का प्रयत्न किया जाता है कि प्रश्न कितना कठिन है, श्रेष्ठ तथा निम्न वर्ग में अन्तर व्यक्त करता है कि नहीं, और प्रश्न के साथ उपलब्ध किये गए सभी सम्भव वैकल्पिक उत्तर आकर्षक हैं कि उनमें से कोई व्यर्थ भी है। इससे यह निर्णय किया जाता है कि कौन-कौनसे प्रश्न परीक्षण में रखने योग्य हैं और कौनसे निकाल देने योग्य, और प्रश्नों को परीक्षण में किस क्रम से रखना चाहिए। प्रायः पद विश्लेषण के पद-कठिनता मापन तथा पद-वैधता मापन दो स्पष्ट तथा मुख्य अंग होते हैं।

Item Difficulty [आइटम डिफी-कल्टी] पद-कठिनता।

शक्ति-परीक्षणों म प्रश्नों का एक गुण जो समाज की योग्यता से सम्बद्ध है। इसे प्रश्न का यथार्थ उत्तर देने वालों की संख्या के आधार पर भी निर्धारित किया गया है और अयथार्थ उत्तर देने वालों की संख्या के आधार पर भी। अयथार्थ उत्तर देने वालों की संख्या के आधार पर प्रश्न-कठिनता का एक माप है

$$\frac{१०० \times अ}{२ व (अ-१)}\left(^{त}_{श्र} + ^{त}_{नि} \right)$$

जिसमें अ=प्रश्न के साथ उपलब्ध किए गए वैकल्पिक उत्तरों की संख्या।

व=श्रेष्ठ वर्ग के व्यक्तियों की संख्या, जो निम्न वर्ग के व्यक्तियों की संख्या के समान ही होती है।

$^{त}_{श्र}$ =श्रेष्ठ वर्ग में त्रुटियात्मक उत्तर देने वालों की संख्या।

$^{त}_{नि}$ =निम्न वर्ग में त्रुटियात्मक उत्तर देने वालों की संख्या।

यथार्थ उत्तर देने वालों की संख्या पर आधारित पद-कठिनता के दो मुख्य माप हैं। यदि प्रश्न के साथ उपलब्ध किये गए वैकल्पिक उत्तर समानतया आकर्षक हों तो कठिनता का माप होगा—

$$\frac{\frac{य_{श्र} - \frac{^{त}_{श्र}}{अ-१}}{व-स \times य_{श्र}} + \frac{य_{नि} - \frac{^{त}_{नि}}{अ-१}}{व-स \times य_{नि}}}{२}$$

जिसमें उपरोक्त चिह्नों के अतिरिक्त [illegible]

$य_{श्र}$ =श्रेष्ठवर्ग म यथार्थ उ[illegible] देने वालों की संख्या।

$य_{नि}$ =निम्नवर्ग में यथार्थ उ[illegible] देने वालों की संख्या।

स=कुल व्यक्ति संख्या।

यदि वैकल्पिक उत्तर समानतया आक[illegible]र्षक न हो तो कठिनता माप होता है—

$$\frac{य - ^{त}_{प्र}}{स_{क}}$$

जिसमें

य=यथार्थ उत्तर देने वालों की संख्या।

$^{त}_{प्र}$ =सर्वप्रिय त्रुटियात्मक उत्तर देने वालों की संख्या।

$स_{क}$ =प्रश्न का कुछ भी उत्तर देने वालों की संख्या।

Item Validity [आइटम वैलिडिटी] : पद-वैधता ।

किसी परीक्षण के निर्माण (अथवा संशोधन) में उसमें रखने के लिए सूझे हुए किसी प्रश्न में उस गुण के मापन की सामर्थ्य जिस गुण के मापन के लिए सम्पूर्ण परीक्षण का निर्माण किया जा रहा है । किसी परीक्षण प्रश्न की वैधता ज्ञात करने के लिए चार मुख्य विधियों का प्रयोग हुआ है—स्थिर विधि, विभेद सामर्थ्य विधि, कसौटी सहसम्बन्ध विधि तथा परिवर्त्यन विश्लेषण विधि । सर्वाधिक प्रयोग कदाचित् विभेद सामर्थ्य विधि का हुआ है । इसमें पद की श्रेष्ठ तथा निम्न योग्यता स्तरों में भेद करने की सामर्थ्य देखी जाती है, जिसे या तो प्रश्न कठिनता के आधार पर ज्ञात किया जाता है या समान श्रेष्ठ तथा निम्न वर्ग बनाकर दोनों वर्गों के प्रश्न का यथार्थ उत्तर देने वालों की संख्याओं के अन्तर के अथवा किसी ऐसे ही अन्य रूप में ज्ञात किया जाता है । दोनों वर्गों में अयथार्थ उत्तर देने वालों की संख्याओं के अन्तर का भी उपयोग किया गया है । ऐसे ही, प्रश्न का यथार्थ उत्तर देने वालों तथा प्रश्न का अयथार्थ उत्तर देने वालों के मध्यक कुल परीक्षणांकों का अन्तर भी पद-वैधता का इसी प्रकार का माप है । कसौटी सहसम्बन्ध विधि का प्रयोग भी बहुत हुआ है । इसमें सम्पूर्ण नवीन परीक्षण से अथवा उसी गुण के किसी अन्य मान्यताप्राप्त परीक्षण से प्रत्येक प्रस्तावित प्रश्न का सहसम्बन्ध ज्ञात करके उसे उस प्रश्न की प्रामाण्यता का माप माना जाता है । अथवा प्रत्येक प्रस्तावित प्रश्न का अन्य प्रस्तावित प्रश्नों से मध्यक अन्तर्सहसम्बन्ध ही उसकी वैधता का परिचायक मान लिया जाता है।

James Theory of Emotion [जेम्स थियोरी ऑफ इमोशन] : जेम्स संवेग-सिद्धान्त ।

यह संवेग-सिद्धान्त आधुनिक काल में विलियम जेम्स (१८४२-१९१०) और डैनिश दार्शनिक लँग द्वारा निर्मित किया गया है, किन्तु यह मूल में देकार्त के समय से ही प्रचलित है । इस सिद्धान्त के अनुसार संवेग की अनुभूति वस्तुतः शारीरिक परिवर्तनों की अनुभूति है जो किसी उत्तेजन स्वरूप वस्तु के प्रत्यक्षीकरण होने पर ही होती है । वस्तुतः हम दौड़ते हैं इसलिए हमें भय होता है, यह नहीं कि हमें भय होता है और तब हम दौड़ते हैं ।

इस सिद्धान्त का उद्देश्य संवेग और उसकी अभिव्यक्ति में जो भेद-दूरी स्थापित है उसका निवारण करना है । इसके अनुसार संवेग या अस्तित्व शारीरिक परिवर्तनों से पृथक् नहीं होता । प्रत्येक संवेग शारीरिक परिवर्तनों के प्रतिध्वनन की उपज है । इस सिद्धान्त की महत्ता इस बात में है कि इसमें इस दृष्टिकोण का उन्मूलन कर दिया गया है कि शारीरिक अभिव्यक्ति से पूर्व संवेग की उपस्थिति होती है । संवेग में उन अनुभूतियों का दिग्दर्शन होता है जो उग्र शारीरिक प्रतिक्रियाओं मात्र से उत्पन्न हुई हैं ।

J-Curve [जे-कर्व] जे-वक्र ।

एफ० एच० आलपोर्ट द्वारा प्रतिपादित एक अवलोकन कि लोगों की प्रवृत्ति अपने अनुभावों व विचारों को सूचित अथवा वर्णन करने में, किसी भी दिए हुए समुदाय के समाज द्वारा स्वीकृत सामान्यकों के अनुरूप चलने की होती है ।

Just Noticeable Difference [जस्ट नोटिसेबल डिफरेन्स] : न्यूनतम ज्ञेय भेद ।

संवेदनों की तीव्रता उत्तेजनों की तीव्रता पर आश्रित है । जैसे-जैसे उद्दीपन की तीव्रता बढ़ेगी, संवेदनात्मक अनुभूति की तीव्रता में भी अन्तर आता जाएगा । प्रयोगात्मक परिणामों से यह स्पष्ट हुआ

है कि उद्दीपन की प्रत्येक घटा बढी संवेदन मे अन्तर उत्पन्न करने मे समर्थ नही होती। इस प्रकार का अन्तर उत्पन्न करने के लिए उद्दीपन को एक निश्चित मात्रा मे बढाना होता है। उदाहरण के लिए, यदि १० मोमबत्तियो की रोशनी मे कम से कम एक मोमबत्ती की रोशनी और जोड दी जाए तो अब यह ११ मोमबत्तियो वाला प्रकाश १० मोमबत्तियो वाले प्रकाश से भिन्न मालूम होगा। इसी प्रकार अब यदि १०० मोमबत्तियो वाले प्रकाश म इसी प्रकार की भिन्नता उत्पन्न करनी हो तो उसमे हमे कम से-कम १० मोमबत्तियो का प्रकाश और मिलाना होगा। अन्यथा इससे कम मिलाने पर वह पहले वाले प्रकाश से भिन्न नहीं मालूम होगा। दो संवेदना के बीच की यही न्यूनतम भिन्नता, जिसके फलस्वरूप एक संवेदना दूसरी से भिन्न प्रतीत होती है, ग्राह्यमान भिन्नता कहलाती है। इस न्यूनतम बोध भेद सीमा (Differential Threshold or limen) भी कहते हैं। यह सीमा भिन्न भिन्न इन्द्रिय सबधी संवेदना के लिए भिन्न भिन्न होती है।

देखिए—Weber Fechner Law

Juvenile Court [जुवेनाइल कोर्ट] बाल-अपराधी न्यायालय।

कम उम्र मे अथवा प्रारम्भिक अवस्था मे अपराध करने वाले व्यक्तियों के न्याय के लिए एक विशेष न्यायालय। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इस प्रकार का विशेष आयोजन आवश्यक है क्योकि बाल्यावस्था मे व्यक्ति लचीला होता है उसकी भावना क्रिया मे सहज ही परिवर्तन परिवधन लाया जा सकता है और व्यक्तित्व के विकास की दृष्टि से कठोर शासन नियम प्रतिबन्ध विशेष हानिकारक होता है। बाल-अपराधी न्यायालय म बालक के मनोभाव, मनोवृत्ति, इच्छाओ, आशा निराशा, कुठाओ, व्यक्तित्व तथा असमायोजन की समस्या सुधारने का प्रयास किया जाता है, अथवा मन की स्थिति का पूर्ण ध्यान रखकर निर्णय दिया जाता है। निर्णय का उद्देश्य सजा देना नहीं है, बल्कि सुधार करना है। उन्हें ऐसा अवसर देना है जिसमे वे अपनी प्रकृत भाव इच्छाओं का परिमार्जन कर सकें और उनका सामाजिक, बौद्धिक, नैतिक स्तर ऊँचा हो। बालक के लिए कठोर दण्ड अहितकर होता है। इससे मानसिक विकार हो जाते हैं, मन मे हीनत्व ग्रन्थि पडती है और व्यक्ति निष्क्रिय हो जाता है या विद्रोहात्मक बनता है। इसीसे बाल-अपराधियो के लिए विशेष न्यायालयो की आवश्यकता वर्तमान मनोवैज्ञानिक युग मे अनुभव की गई है। यह योजना अपराध रूपी सामाजिक रोग के निवारण के लिए बनी है।

Kymograph [काइमोग्राफ] काइमोग्राफ।

एक यत्र जिसम धुएँ से काला किया हुआ एक बेलन (ढोल) घूमता रहता है और उस पर समय की इकाइया व, प्रयोजक द्वारा परिस्थिति नियन्त्रण के, तथा प्रयोज्य द्वारा होने वाली प्रतिक्रियाओ के चिह्न बनते जाते हैं। ढोल उसके नीचे लगी स्प्रिंग चलित बल द्वारा नियन्त्रित गति से घूमता है। चिह्न उसके गिर्द लिपटे हुए धुएँ से काले किए कागज पर बनते हैं। रेखा बन जाने के उपरान्त कागज को उतारकर चपडे और स्पिरिट के घोल म डुबो दिया जाता है और तब सूखने के लिए लटका दिया जाता है। सूखने के बाद धुआँ कागज पर भली प्रकार चिपक जाता है और रेखा हाथ अथवा किसी वस्तु के स्पर्श से नही बिगडती।

Laboratory [लैबोरेटरी] प्रयोगशाला।

ऐसी जगह, कमरा या इमारत जहाँ पर वैज्ञानिक अन्वेषण अथवा अनुसधान के हेतु विभिन्न प्रयोगो को कर सकें। ऐसे स्थानों पर सामान्यत वे सब दशाएँ व स्थितियाँ उपस्थित होती हैं या उत्पन्न की जा सकती हैं जिससे कि उन प्रभावकारी

दशाओं और तत्वों को नियन्त्रित किया जा सके जिनके प्रभावों के अन्दर अध्ययन करने वाले तथ्य को विभिन्न परिवर्तनों में सचालित किया जा सके जिससे कि उस तथ्य के विभिन्न दशाओं मे होने वाले व्यवहारों से सम्बन्धित नियमों को विश्लेषण द्वारा निकाला जा सके।

Laboratory Experiment [लैबोरेटरी एक्सपेरिमेंट] : प्रयोगशाला-सम्बन्धी प्रयोग।

ऐसा प्रयोग जो कि किसी प्रयोगशाला में किया गया हो तथा प्रयोगशाला में पाई जाने वाली नियंत्रित दशाओ मे किया गया हो। भौतिक विज्ञान, रासायनिक विज्ञान, जीव विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान तथा दूसरे प्राकृतिक विज्ञानो के अधिकतर प्रयोग प्रयोगशाला मे ही किए जाते हैं; मनोविज्ञान के भी पर्याप्त प्रयोग प्रयोगशाला मे ही होते हैं।

Ladd Franklin Theory [लैड फ्रैन्कलिन थियरी] : लैड फ्रैन्कलिन सिद्धांत।

रग दृष्टि का एक सिद्धान्त जो हेल्म होलत्ज (१८२१-१८९४) और हेरिंग (१८३४-१९१८) के रग दृश्य के सिद्धान्तों का मध्यवर्त्ती है। इस सिद्धान्त की पृष्ठभूमि मे प्रमुख विचार यह है कि अक्षिपट के फोटो रासायनिक तथ्यों का तीन रूप में आणविक संघटन होने की संभावना है : (१) श्वेत-श्याम, (२) नीला-पीला और (३) लाल-हरा। पूर्ण रग अन्धापन तथा वर्णविहीन दृश्य में पहली अवस्था दृष्टिगत होती है। डाइक्रोमैटिक दृश्य में, जिसमें लाल-हरा अन्धापन होता है, पहली और दूसरी अवस्था दृष्टिगत होती है। साधारण रंग दृश्य में तीनों अवस्थाएँ मिलती हैं। डाइक्रोमैटिक दृश्य-सम्बन्धी कुछ तत्व हैं जो इस सिद्धान्त से समायोजित नहीं हो पाते। दृष्टांत स्वरूप हरापन लिये लाल और लाल हरापन लिये होता है। यदि यह सिद्धान्त सत्य है तो इसमे पीला दिखलाई पड़ना चाहिए।

Lamarckism [लैमार्किज्म] : लामार्कवाद।

यह विकास का वह सिद्धान्त है जिसमें विवरण के लिए यह परिकल्पना प्रमुख मानी गई है कि अर्जित विशेषताओं का संक्रमण होता है। लैमार्क ने यह प्रतिपादित किया कि अर्जित विशेषताएँ पैतृक बन दूसरी पीढ़ी में जाती रहती हैं। लैमार्क का प्रमुख रूप से ध्यान आदतों के विकासात्मक प्रभाव की ओर था जिन्हें पशु अपने जीवनकाल में अर्जित करता है। लैमार्क के सिद्धान्त पर आक्षेप हुआ है।

Lasbley's Jumping Apparatus [लैशले जम्पिग ऐपेरेटस] : लैशले का प्लुति-उपकरण।

छोटे पशुओं में परखने की प्रक्रिया के अध्ययन के लिए लैशले ने इस यंत्र को बनाया। इसमें प्रयोगसाध्य पशु को उस मचान पर कूदना पड़ता है जो कि कई रंगो या कई दृष्टिगत शक्लो के द्वारा कुछ विभागो में बँटा होता है। अगर प्रयोगसाध्य पशु मचान के उस विभाग पर कूदता है जिसको कि प्रयोगकर्ता ने स्वैच्छिक रूप से उस प्रयोग के लिए सही निश्चित कर रखा है तो उसे भोजन इत्यादि के रूप में इनाम मिलता है। यदि उस नियुक्त किये हुए 'सही' भाग के अलावा किसी दूसरे भाग पर वह कूदता है तो दड मिलता है। ऐसे प्रयोगों में पशु अभ्यास द्वारा धीरे-धीरे सही मचान की परख करना सीख जाता है।

Latency Period [लेटेन्सी पिरियड] : अव्यक्ति-काल (मनोविश्लेषण)।

बालक के मानसिक काम-विकास की चौथी महत्वपूर्ण अवस्था जिसमे प्रथम तीन अवस्थाओं में व्यक्त रूप से विकसित होती हुई कामशक्ति सामाजिक अवरोधों के दमन के कारण अव्यक्त रूप मे आ जाती है। यह अवस्था साधारणतः ४ या ५ से १२ वर्ष तक रहती है। इसमे काम-चेष्टाओं के लक्षण दृष्टिगत होते हैं। दमित कामशक्ति अपने उन्नत रूपों में प्रकट होती है

और बालक तरह-तरह के समाजोपयोगी कार्यों में संलग्न होता है। उसकी स्वरति अवस्था (Autoerotic stage) की आत्म-केन्द्रित भावनाओं में कमी आने लगती है। लड़कियों में अव्यक्ति-काल अपेक्षाकृत देर से आता है और जल्दी जाता है।

शिक्षण के दृष्टिकोण से अव्यक्ति-काल बालक के जीवन का सबसे उपयोगी समय है। उसकी अधिकांश मान्यताओं का बीज इसी काल में पड़ता है। इसी से इसे सुपाहम् (*Superego*) के स्थापन का काल माना जाता है।

कुछ ऐसे भी विकृत और असमायोजित बालक हैं जो अव्यक्ति काल में भी काम सम्बन्धी भावनाओं से मुक्त कल्पना-जगत् में नहीं रहते। हस्तमैथुन इसका स्पष्ट दृष्टांत है।

Latent Content [लेटेंट कन्टेंट] अव्यक्तांश।

इस शब्द का प्रयोग फ्रायड ने स्वप्न-विश्लेषण के प्रसंग में एक विशेष अर्थ में किया है। स्वप्न की दो अवस्थाएँ होती हैं व्यक्तांश और अव्यक्तांश। अव्यक्तांश स्वप्न का वास्तविक मूल तथ्य है, अथवा व्यक्ति की दमित इच्छाओं-कुंठाओं का द्योतक है और इसका ज्ञान व्यक्त अंश के व्याख्या विश्लेषण से ही होना सम्भव है। जो कुछ स्वप्नद्रष्टा वर्णन करता है वह व्यक्त अंश है, जिस ओर उसका अज्ञात मन के स्तर पर संकेत है वह अव्यक्त अंश है। यह व्यक्त अंश की तुलना में विशद् और समृद्ध है और स्वप्नद्रष्टा की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि का ज्ञान करने के लिए अव्यक्त अंश तक पहुँचना-पैठना आवश्यक होता है। व्यक्त अंश का आवरण स्वप्न का व्यक्तांश होता है।

स्वप्न के अव्यक्तांश के बारे में गूढ़ अध्ययन करके फ्रायड ने यह स्थापित किया कि स्वप्न का कारण अज्ञात स्तर पर दमित काम इच्छाएँ हैं और इस प्रकार स्वप्न के बारे में विशेष अध्ययन करके उन्होंने अपने सामान्य काम-सिद्धान्त की पुष्टि की।

Latent time [लेटेन्ट टाइम] अव्यक्त काल।

वह समय अथवा काल जो उत्तेजना उत्पन्न होने और उससे सम्बन्धित प्रतिक्रिया के उत्पन्न होने के बीच में पड़ता है। उत्तेजना और प्रतिक्रिया-काल साथ साथ नहीं होते, बल्कि क्रम से होते हैं। पहले उत्तेजना पैदा होगी, फिर प्रतिक्रिया होगी। दोनों के बीच का समय, अव्यक्त काल कहलाता है, यह चाहे क्षण या पल भर का ही क्यों न हो।

Law [लॉ] नियम।

नियम एक परम्परा है जो कि क्रमबद्ध परस्पराश्रित हो और जो जैसा अनुमानित है, कार्य-कारण प्रकृति का हो। प्राकृतिक सिद्धान्त द्वारा इस बात की व्याख्या होती है कि किस प्रकार की घटनाएँ एक रूप में प्रकृति में घटती देखी जाती हैं। यदि निश्चित तत्त्व, एक निश्चित परिस्थिति में उपस्थित है तो एक विशेष परिणाम प्राप्त होने की सम्भावना की जा सकती है। उनमें परिवर्तन मनुष्य की शक्ति के बाहर है और इनका कोई नैतिक या नीतिशासन-सम्बन्धी प्रयोग नहीं होता, न तो इनका मानव-कल्याण से ही कोई सम्बन्ध है। मनोवैज्ञानिक नियम सामान्य परिस्थिति में एक रूप-व्यवहार उत्पन्न करते हैं। इन नियमों की सत्यता बार-बार के निरीक्षणों से प्रमाणित हुई है। समाज मनोवैज्ञानिकों का ऐसे नियमों में विश्वास नहीं है जिनकी पुष्टि अधिकांशतः सामाजिक और मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों से नहीं हो पाती।

Learning [लर्निंग] सीखना, अधिगम।

गत अभ्यास के आधार पर प्राणी की अनुभूतियों और व्यवहार में उत्पन्न होने वाला परिवर्तन या परिमार्जन। अभ्यास के अनुरूप यह परिवर्तन प्रगतिशील ढंग से उत्पन्न होता है और आगे चलकर व्यक्ति के व्यक्तित्व का लगभग स्थायी अंग बन जाता है।

अर्जित परिवर्तन परिपक्वताजन्य

परिवर्तनों से भिन्न है। परिपक्वताजन्य परिवर्तन की तरह अर्जित परिवर्तन स्वतः नहीं होते और यह एक जाति के सभी व्यक्तियों में समान रूप से पाया भी नहीं जाता। अर्जित परिवर्तन अभ्यास के द्वारा उत्पन्न होता है।

मानव और पशुओं के सीखने में अन्तर है। सीखने की क्रिया में मानव पशुओं की अपेक्षा अधिक कुशल होता है। इसका प्रमुख कारण मानव की निम्न विशेषताएँ हैं: १. निरीक्षण प्रक्रिया में प्रचुर मात्रा का संभव होना। २. समस्या-समाधान-काल में स्वयं अपने पर और परिस्थितियों पर चिन्तन, नियमन और नियन्त्रण। ३. भाषा का प्रयोग। ४. परिस्थितियों की अनुपस्थिति में भी उनके बारे में चिंतन करना। सीखने के सिद्धान्त—मनोवैज्ञानिकों ने अर्जित परिवर्तनों की व्याख्या तीन प्रमुख सिद्धान्तों के आधार पर की है: (१) अनुबन्धन (Conditioning), (२) प्रयत्न और त्रुटि (Trial & error) तथा (३) सूझ या अंतर्दृष्टि (Insight)।

सीखने की विधियाँ—मनोवैज्ञानिकों ने सीखने की तीन प्रमुख विधियाँ बतलाई हैं (१) मौखिक आवृत्ति—किसी वस्तु को पढ़ना और बार-बार मन-ही-मन दोहराना। (२) संकलित अथवा संतराल या वितरित रीति से सीखना—किसी भी विषय-वस्तु के सीखने के लिए मिले समय को लगातार उसी में लगाना संकलित रीति है और बीच-बीच में थोड़ा-थोड़ा विश्राम करते हुए उसे अर्जित करना वितरित रीति कहलाता है। इससे व्यक्ति अनावश्यक थकान से बचता है, पढ़े हुए विषय की छाप उसके मस्तिष्क पर दृढ़ होती है और गलत साहचर्यों के भूल जाने तथा सही साहचर्यों के दृढ़ होने की सम्भावना बढ़ जाती है। (३) पूर्ण अथवा खंड रीति से सीखना—किसी भी विषय को सारा-का-सारा एक साथ याद करने का प्रयास करना 'पूर्ण विधि से' और उसे छोटे-छोटे उपयुक्त भागों में बाँटकर अलग-अलग याद करना 'खंड रीति से' सीखना कहलाता है। इन अलग-अलग भागों को एक-दूसरे के साथ सम्बद्ध करते हुए उनके पारस्परिक सम्बन्धों की ओर ध्यान देते हुए याद करना 'प्रगामी खंड रीति से' सीखना कहलाता है। यह पहली दोनों विधियों से अधिक उपयोगी है।

सीखने में दक्षता—यह तीन प्रमुख तत्वों पर निर्भर है: (१) व्यक्ति—उसकी आयु, स्वास्थ्य, रुचि, मनोवृत्ति, शारीरिक और मानसिक विकास, बुद्धि, तात्कालिक स्थिति और वातावरण आदि। (२) विषयवस्तु—विषय का सार्थक होना तथा उसके भिन्न-भिन्न भागों का एक-दूसरे के साथ सम्बद्ध होना (३) सीखने की विधि—विषय के अनुरूप विधि का चुनाव।

ये तत्व जितनी ही अधिक अनुकूल मात्रा में उपलब्ध होते हैं, व्यक्ति सीखने में उतनी ही अधिक दक्षता प्राप्त करता है।

अधिगम वक्र (Learning curves)—ग्राफ पर शिक्षण में प्रगति की सूचक रेखाएँ 'अधिगम वक्र' कहलाती हैं। इनमें से ऊर्ध्वमुखी रेखा उन्नति की, अधोमुखी अवनति की और समतल यथास्थिति की परिचायक हैं। अधिगम-वक्र में बने पठार गत्यवरोध के सूचक हैं।

प्रशिक्षण का अंतरण (Transfer of training)—एक कार्य अथवा शरीर के किसी अंग-विशेष द्वारा अर्जित व्यवहार का अन्य कार्यों में अथवा अन्य अंगों के लिए बाधक या सहायक सिद्ध होना।

Learning Curve [लर्निंग कर्व] : अधिगम-वक्र।

सीखने में प्रगति या ह्रास सूचक वक्र रेखाएँ। उनके चार प्रमुख रूप हैं—१. सरल रेखा—यथास्थिति की सूचक, उन्नति अवनति का अभाव। २. नतोदर (Convex curve), अवनति अथवा घटाव की सूचक। ३. उन्नतोदर (Concave curve)—उन्नति प्रगति अथवा बढ़ाव की सूचक। ४. मिश्रित—उन्नति और अवनति के मिलेजुले रूप की सूचक।

अधिगम वक्र के प्राय तीन प्रमुख स्तर हैं: १ प्रारम्भिक स्तर—उन्नति अथवा प्रगति का सूचक। २ अर्जन का स्तर—प्रगति की एक विशेष सीमा का सूचक। यहाँ पर वक्र एक पठार का रूप धारण करती प्रतीत होती है (Plateau) और प्रगति अवरुद्ध होती हुई सी ज्ञात होती है। ३ अर्जन का उच्च-स्तर प्राणी का सप्रयास दूसरे स्तर को पारकर अर्जन मे और अधिक प्रगति करना (दे० Physiological limit)। अधिगम-वक्र प्राय अव्यवस्थित अथवा अनियमित ढग को मिलती हैं। इस अनियमितता के कारणो मे अवधान भग, थकावट, रुचि का अभाव तथा भौलिक परिस्थितियो मे परिवर्तन आदि प्रमुख हैं।

Lesion [लेज़न] क्षत।

१ व्यापक अर्थ मे शरीर के किसी भाग मे लगी चोट अथवा घाव। २ जीवित प्राणियो के किसी भी अग विशेष मे उत्पन्न दूषित अथवा अस्वस्थ परिवर्तन। यह जीवो मे किसी भी प्रकार के विकृत परिवर्तनो की ओर सकेत करता है। यह मनोविज्ञान म मस्तिष्कीय क्षति के अर्थों मे प्रयोग हुआ है। मस्तिष्क क्षति का अर्थ है मस्तिष्क द्रव्य के किसी भी प्रकार की क्षति के फलस्वरूप, व्यावहारिक विकृतता का हो जाना।

Libido [लिबिडो] काम-शक्ति।

मनोविश्लेषण मे 'लिबिडो' शब्द का प्रयोग काम-शक्ति के अर्थ मे किया गया है। 'काम शक्ति' ही मनोलोक का जीवन है और इस पर हरेक प्रकार की व्यवहार क्रिया निर्भर है। जब इसका असाधारण दमन होता है, व्यक्ति मानसिक रोग का शिकार होता है, जब उसका उन्नयन किया जाता है, कला तथा धर्म की उत्पत्ति होती है।

काम-शक्ति के विकास की तीन अवस्थाएँ हैं (१) स्वरति अवस्था (Autoerotic stage), (२) आत्म-रति अवस्था (Narcissistic stage), (३) बाह्य वस्तु-रति (*Allo eroticism*)।

काम शक्ति का प्रवाह निम्न प्रकार से होता है: (१) बहिर्मुखीकरण, (२) अन्तर्मुखीकरण, (३) केन्द्रयण, (४) प्रत्यावर्त्तन, (५) प्रतिबन्धन, (६) दिशान्तरण। मनोविश्लेषण का खडन विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान मे किया गया है। युग के मत से लिबिडो' काम शक्ति का पर्यायवाची नही है। यह वास्तव म एक 'मानसिक शक्ति' है जिसके द्वारा व्यक्ति की प्रत्येक वर्ग की क्रियाएँ सचालित होती हैं। यह एक ऐसी शक्ति है जिसका प्रवाह कई दिशाओ मे हो सकता है। जिस व्यक्ति मे जिस प्रवृत्ति की प्रधानता रहती है, उसी दिशा मे उसकी मानसिक शक्ति का विशेष व्यय-प्रवाह होता है। किसी व्यक्ति की 'मानसिक शक्ति' के प्रवाह का रुख किस तरफ है, इससे उसके चरित्र और व्यक्तित्व के प्रकार का निर्धारण होता है।

Lie-Detector [लाइ डिटेक्टर]. अनृत दर्शनी, असत्यसूचक यत्र।

व्यक्ति मे सवेगात्मक तनाव के सह-सम्बन्धी शारीरिक परिवर्तनो को अकित करनेवाले यत्र विशेष। इनमे से तीन प्रमुख हैं (१) स्फिग्मोमैनोमीटर (Sphygmomanometer) —रक्तचाप मे उत्पन्न परिवर्तनो का सूचक, (२) न्यूमोग्राफ (Pneumograph)—श्वास-प्रश्वास के अनुपात का सूचक तथा (३) साइकोगैल्वानोमीटर (Psychogalvanometer)—वैद्युतिक त्वक् प्रतिक्रियाओ का प्रदर्शक।

अपराधी तथा मिथ्याभाषी व्यक्तियो की उक्त दैहिक क्रियाओ मे सवेगात्मक अनुभूति के कारण परिवर्तन हो जाता है। अत कुछ स्थितियो मे सदिग्ध व्यक्तियो पर इन यत्रो के प्रयोग द्वारा अपराध की खोज मे पर्याप्त सहायता मिलती है। परन्तु अभ्यस्त की जाँच मे इस विधि की सफलता सदिग्ध है।

Life Space [लाइफ स्पेस] : जीवन-समष्टि।

लेविन (१८९०-१९४७) के क्षेत्र-

सैद्धान्तिक सम्प्रदाय में यह धारणा आधार-भूत-सी है। व्यक्ति का सम्पूर्ण क्रिया-व्यापार उसके जीवन-समष्टि पर निर्भर करता है। जो घटनाएँ व्यवहार सम्बन्धी नहीं हैं, वे जीवन-समष्टि के अन्तर्गत नहीं होतीं। जीवन-समष्टि का प्रतिनिधित्व उन्हीं भौतिक, सामाजिक, दैहिक प्रक्रियाओं द्वारा होता है जिनका प्रभाव आंतरिक अवस्थाओं पर पड़ता है और जो अन्ततोगत्वा व्यवहार को प्रभावित करता है।

लेविन ने मनोवैज्ञानिक समस्याओं पर क्षेत्र-भौतिकियों की तरह मनन किया है। अर्थात्, जो क्षेत्र में घटती हैं उनका घटनाओं के रूप में विचार किया है। जीवन-समष्टिक और भौतिकीय क्षेत्र में अनेक सामान्य तथ्य मिलते हैं। इस जीवन-समष्टि में एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु पर मनोवैज्ञानिक क्रियाएँ एक ऐसे क्षेत्र की रचना के लिए विकसित होती रहती हैं जिसमें भौतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत सब सम्बन्ध अन्तर्हित रहते हैं। इसके लिए गणित की युक्ति आवश्यक है। स्थान विज्ञान गणित की वह शाखा है जिसमें ऐसे प्रकार के विभिन्न क्षेत्रों की व्याख्या की गई है। विचार का विषय निजी क्षेत्रीय विशेषताएँ हैं; परिमाणात्मक सम्बन्ध नहीं हैं। स्थान-विज्ञान में मुख्य तथ्य सीमाएँ और विभिन्न भाग हैं—अथवा अवरोध तथा बाधा के सबल-निर्बल होने पर विकास तथा परिवर्तन की सम्भावना कहाँ तक है, इत्यादि। इन सब वैज्ञानिक मूल तथ्यों को व्यवहृत करके लेविन ने वैज्ञानिक ढंग से मनोवैज्ञानिक चलन (Locomotion) को जीवन-क्षेत्र के निश्चित भाग के अन्तर्गत बतलाया। मानसिक वृत्तियों की प्रकृति, इन पर अवरोध ध्येय सन्निहित क्रियाएँ, अनुरूप गमन-परिवर्तन—ये सब मनोवैज्ञानिक तथ्य शब्दों में नहीं रेखाचित्रों में प्रस्तुत किये गए हैं।

Light Adaptation [लाइट एडैप्टेशन] : प्रकाशानुकूलन।

सापेक्ष रूप से अधिक तीव्रतापूर्ण प्रकाश उद्दीपनों का आँख से इस प्रकार का अनुकूलन जिससे कि आँख कम तीव्रतापूर्ण प्रकाश के लिए सापेक्ष रूप से असंवेदनशील हो जाती है। केवल प्रकाश अभियोजक आँख ही रंगों को साफ-साफ प्रत्यक्ष देख सकती है।

Litigous Paranoia [लिटिगस पैरेनोइया] : अभियोगात्मक संविभ्रम।

वह संविभ्रम रोग जिसमें रोगी भ्रामक प्रतिशोध की भावना से प्रेरित होकर न्याय-दण्ड का सहारा लेता है। कल्पित शत्रु की हत्या तक का षड्यंत्र रचता है। रोगी के मन में यह बात बैठी रहती है कि उसकी कोई भूल नहीं है। जो कुछ भी वह सोचता-समझता और कहता है, वह सत्य है। अन्य लोग ही अपराधी-दोषी हैं। अन्य व्यक्तियों के प्रति अपमान-संविभ्रम होने पर ही यह गलतफहमी होती है।

Lobotomy [लोबोटोमी] : शल्योपचार।

थैलमस से अग्र-खंडों को जोड़ने वाले श्वेत स्नायविक तन्तुओं का शल्य-कर्तन। यह शल्य-क्रिया (जिसे मनोशल्य चिकित्सा अथवा साइको-सरजरी भी कहते हैं) कभी-कभी कुछ प्रकार के मानसिक विकारों के उपचार के लिए प्रयोग की जाती है।

इसको अग्र खंड-खंडन (Lobectomy) से भिन्न समझना चाहिए। यह अग्र खंड-द्रव्य के कुछ भाग को शल्य-क्रिया द्वारा हटाना है।

Localized Stimulus [लोकेलाइज्ड स्टिमुलस] : स्थानीय उद्दीपन।

ऐसा उद्दीपन जो शरीर के अत्यधिक सीमित भाग अथवा क्षेत्र पर प्रयोग में लाया जाता है।

Localization [लोकैलिजेशन] : स्थान-निर्धारण, स्थानाकरण।

निरीक्षक का किसी भी स्थान-सम्बन्धी या आवाज-सम्बन्धी उद्दीपन के स्थान अथवा मूलकारण को स्थिर कर लेना अथवा निर्धारित कर लेना कि इसका प्रादुर्भाव कहाँ से हुआ अथवा किस स्थान पर उत्तेजना उत्पन्न हुई।

वर्ण-सम्बन्धी स्थान निर्धारण—सिर्फ आवाज के संकेत के बल पर वर्ण उद्दीपक के कारण या स्थान की दूरी निरीक्षक से व दिशा के बारे में स्थिर कर लेना। सामान्यतः ऐसे प्रयोगों में स्वर पिंजर यंत्र का प्रयोग होता है। स्पर्श सम्बन्धी स्थान-निर्धारण—बिना दृष्टि के इस्तेमाल किए चर्म पर उद्दीप्त स्थान को निर्धारित करना अथवा स्थिर करना तथा भूल की दिशा व परिमाणिक अंशों का निर्णय करना।

Localization, Cortical [लोकैलिज़ेशन, कार्टिकल] वल्कीय स्थानीकरण।

विशिष्ट ज्ञानात्मक, क्रियात्मक तथा अन्य उच्चस्तरीय मानसिक क्रियाओं का बृहत् मस्तिष्कीय वल्क के विशिष्ट भाग अथवा भागों से सम्बन्ध स्थापित करना। उन्नीसवीं शती के पूर्वार्ध में फ्रांज तथा ल्यूरोने ने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। उनके अनुसार यद्यपि मस्तिष्क के भिन्न-भिन्न केन्द्र भिन्न-भिन्न प्रकार की क्रियाओं का नियन्त्रण करते हैं परन्तु फिर भी मस्तिष्क अपनी समग्रता में ही कार्य करता है।

देखिए—Equipotentiality

Logical Positivism [लॉजिकल पॉज़िटिविज़्म] तार्किक वस्तुवाद।

यह दर्शनशास्त्र में एक ऐसी विचारधारा है जो सामान्यतः विज्ञान या मनोविज्ञान में भौतिकवाद बन जाता है—एक ऐसा आन्दोलन जिससे वैज्ञानिक भाषा भौतिक शास्त्र की जातीय भाषा में परिणत हुई है। यह दार्शनिक आंदोलन वियाना में प्रारंभ हुआ और इसके सदस्य मौरिज, श्लिक, ओटो न्यूरेथ, रोडोल्फ कार्नेप और फिलिप फ्रेंक थे। इस आन्दोलन का उद्देश्य वैज्ञानिक तर्कों के क्रमबद्ध अन्वेषण द्वारा दर्शन का प्रतिस्थापन करना था।

वस्तुवाद के तीन प्रकार होते हैं (१) कान्ट का सामाजिक वस्तुवाद (२) प्रयोगात्मक वस्तुवाद, (३) क्रियात्मक वस्तुवाद जिसको तार्किक वस्तुवाद भी कहते हैं। क्रियात्मक वस्तुवाद प्रारंभिक आधारभूत प्रदत्तों की ओर गमन का एक प्रयास है और इस प्रकार सहयोग (agreement) की वृद्धि करना है और विरोध को कम करना है जो अर्थ में अप्रकाशित पृथकता के कारण उत्पन्न हो जाता है। अनुभव वैज्ञानिक आधारभूत है—यह विचार असफल है। अन्तर्दृष्टि से तथ्यों का दिग्दर्शन होता है—इस पर बहुत वाद-विवाद रहा। मनोविज्ञान में जिन कारणों से व्यवहारवाद (Behaviourism) ने अन्तर्निरीक्षणवाद (Introspectionism) का स्थान ग्रहण किया, वस्तुतः उन्हीं कारणों से क्रियात्मक वस्तुवाद ने प्रयोगात्मक वस्तुवाद का स्थान ग्रहण किया है। क्रियावाद इसका प्रमाण है। वस्तुवाद का प्रभाव मनोविज्ञान पर विशेष पड़ा है।

Logomania [लॉगोमेनिया] निर्बाध प्रलाप।

मानसिक रोग का एक लक्षण। कुछ प्रकार के मनोविकारों में रोगी निर्बाध बोलता है। यह संवेगात्मक असमायोजन का द्योतक है और व्यक्तित्व-विच्छेद का भी सूचक है। फ़िशर ने अपने 'एबनॉरमल साइकॉलोजी' नामक ग्रन्थ में एक रोगी स्त्री का रोचक उदाहरण दिया है जिसकी यह बान पड़ जाने पर वह अपने परिवार के लिए एक बड़ी समस्या बन गई।

Longitudinal Studies [लांगिच्युडिनल स्टडीज] अनुदैर्घ्य अध्ययन।

व्यक्ति विकास के वे अध्ययन जिनमें विकास के एक एक अंग के अथवा सम्पूर्ण व्यक्तित्व के प्रारम्भ से प्रौढ़ता अथवा ह्रास तक के इतिहास की खोज की जाती है।

इस प्रकार के अध्ययन से यह सुविधा होती है कि एक ही आयु अथवा आयु-काल के व्यक्तियों में व्यक्तिगत अन्तरों पर ध्यान केन्द्रित नहीं किया जाता जिससे किसी भी आयु के व्यक्तियों की वैकासिक अवस्था को समझना और उसका मानसिक चित्र बना लेना सरल हो जाता है।

परन्तु ऐसे अध्ययनों के लिए एकत्रित प्रदत्तों में प्रायः कुछ दोष आ जाते हैं।

उसी मानसिक गुण के मापन के लिए विभिन्न आयु के व्यक्तियों के साथ विभिन्न परीक्षणों का उपयोग करना कई कारणों से आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार विभिन्न परीक्षणों द्वारा प्राप्त प्रदत्तों की तुलना करने का और उनको मिलाकर विकास का आदि से अन्त तक एक चित्र बनाने का महत्त्व असंदिग्ध नहीं कहा जा सकता। इस ओर ध्यान जाने पर कि उन विभिन्न परीक्षणों का उपयोग करने वाले परीक्षक भी प्राय भिन्न ही होंगे, परिस्थिति और भी जटिल हो जाती है।

Luminosity Curve [ल्युमिनॉजिटी कर्व] : ज्योति वक्र।

दृष्टिगोचर सप्तरंगी की भिन्न-भिन्न तरंगों की लंबाइयों के रूप में विदित चमकीलेपन को एक वक्र रेखा के रूप में अंकित किया जाता है। इस प्रकार की दो वक्र रेखाएँ बनती हैं : एक तो प्रकाश-अभियोजित दृष्टि की—अर्थात् नेत्र-शंकु दृष्टि की, तथा दूसरी अन्धकार-अभियोजित दृष्टि की—अर्थात् नेत्र-शलाका दृष्टि की। दोनों वक्र रेखाओं में पाए जाने वाले परम दीप्ति के बिन्दु क्रमशः सप्तरंगी के हरे-पीले व पीले-हरे भागों में पाए जाते हैं।

Manic Depressive Insanity [मैनिक-डिप्रेसिव इन्सैनिटी] : उत्साह-विषाद विक्षिप्ति, उन्माद-अवसाद-विक्षिप्ति।

यह एक जटिल प्रकार का मानसिक रोग है। इसमें एक ही रोग में दो विरोधी अवस्थाएँ—विषाद व उत्साह—दृष्टिगत होती हैं। रोगी कभी तो अत्यधिक प्रसन्न होता है और कभी अत्यधिक उदास। अत्यधिक प्रसन्न होने की अवस्था उत्साहावस्था है; उदासी की अवस्था विषादावस्था है। इन दोनों अवस्थाओं का क्रम से आगमन सदैव आवश्यक नहीं है। लक्षण : अत्यधिक अकारण प्रसन्न होना, आवेश में रहना, नाचना-गाना, अत्यधिक बोलना, नैराश्य भाव, अपने को दोषी समझना, अपर्याप्त प्रत्यक्षीकरण, चेतना का ह्रास, मिथ्या निर्णय इत्यादि। इसमें रोगी की दृश्य और पहचानने की शक्ति क्षीण हो जाती है। उसे वस्तुओं का धुँधला ज्ञान होता है, क्योंकि एकाग्रता प्रक्रिया ठीक नहीं चलती। अत्यधिक बावलेपन और विषाद की अवस्था में रोगी को अपने व्यक्तित्व, समय और स्थान का भी ज्ञान नहीं रह जाता। कारण है कि रोगी का ज्ञात मन अज्ञात मन की भाव-ग्रंथियों से पूर्णतः आक्रान्त हो जाता है। रोगी झूठ को सत्य और सत्य को झूठ समझता है।

उन्मादावसाद का मूल कारण सुप्राहम (Superego) का अत्यधिक बली होना है। अज्ञात मन में अपराध-भाव उत्पन्न होने की प्रतिक्रिया में वह या तो म्लान और खिन्न रहने लगता है या बावलेपन की अवस्था को प्राप्त करता है।

उन्मादावसाद विक्षिप्ति के उपचार के लिए विद्युत्-चिकित्सा (E.S.T.) का अधिकतर उपयोग होता है। मेट्रोजाल का इन्जेक्शन भी लाभप्रद है। निद्रा-उपचार सफल होता है। किन्तु निद्रा-उपचार से कनवल्शन उपचार अधिक प्रभावशाली है। इसका प्रभाव अधिक स्थायी पड़ता है। रोगी को चिकित्सालय में रखना आवश्यक है। उपचार करते समय निम्न बातें ध्यान में रखना आवश्यक है :

१. रोगी उत्तेजित तो नहीं होता।

२. उस पर व्यर्थ प्रतिबंध तो नहीं लगाया जा रहा है।

३. उसमें विश्वास तो बना है।

Manifest Content [मैनिफेस्ट कन्टेंट]: व्यक्तांश।

(फ्रायड) स्वप्न-विवेचना में फ्रायड ने स्वप्न की दो अवस्थाएँ इंगित की हैं : (१) स्वप्न का व्यक्तांश, (२) अव्यक्तांश। व्यक्तांश स्वप्न का वह भाग तथा वस्तु-कथा है जो स्वप्नद्रष्टा के जागृत होने पर उसके चेतन मन में जिस रूप में बनी रहती है और वह उसको निद्रा की अनुभूति कहकर

वर्णन करता है। व्यक्ताश अज्ञात मन के मूल तथ्यों का विकृत रूप होता है। वस्तुत अज्ञान मन मे विस्थापन (displacement), सक्षेपण (condensation), नाटकीकरण और प्रतीकीकरण (symbolization) की पद्धतियाँ क्रियमाण रहती हैं और जिनके होने से वास्तविक तथ्य को ऐसा विकृत रूप मिलता है जिसे समझना आसान नहीं है। विस्थापन की पद्धति के कारण स्वप्न के अनावश्यक अश आवश्यक, और आवश्यक अनावश्यक प्रतीत होते हैं, सक्षेपण के कारण स्वप्न का व्यक्ताश बहुत सूक्ष्म और सक्षेप हो जाता है, और प्रतीकीकरण की पद्धति के होने से वास्तविक तथ्य का पूर्णत कलेवर ही बदल जाता है। इसी से स्वप्न का व्यक्ताश सदैव पहेली-सा प्रतीत होता है—अद्भुत और अर्थहीन।

Masculine Protest [मैस्कुलाइन प्रोटेस्ट] पुस्पृहा।

इस शब्द का प्रयोग मानव-स्वभाव के प्रसग म पारिभाषिक रूप मे एडलर ने किया था। सामाजिक व्यवस्था मे पुरुष शक्ति की तथा स्त्री हीनता का सदैव प्रतीक रहा। अत स्त्रियो मे प्रारभ से ही पुरुष के समान शक्ति-सम्पन्न बनने की एक स्पर्धा दृष्टिगत होती है। इसी को पुस्पृहा कहते हैं। यह आधिपत्य प्रवृत्ति कमजोर एव हीन पुरुषों मे भी पाई जाती है।

पुस्पृहा भिन्न भिन्न रूपों मे प्रकट होती है—बचपन मे अभिभावकों के क्रूर एव कठोर व्यवहार से प्रताडित व्यक्ति का कठोर एव स्वेच्छाचारी पति अथवा पिता के रूप में प्रकट होना, पुरुषो से स्पर्धावश स्त्री का काम विमुख हो जाना या वेश्या-वृत्ति जागृत होना।

Masochism [मैसोकिज्म] स्वपीडन रति।

अपने को शारीरिक और मानसिक यातना देकर काम-तुष्टि का अनुभव करना। आस्ट्रिया के उपन्यासकार लूथर वान सैकर मैसाक (१८३५-१८९५) ने अपनी कहानियों में जो घटनाएँ प्रस्तुत की हैं उन्हीं के आधार पर फ्रायड ने इस धारणा का निर्माण किया है। यह एक प्रकार की काम विकृति है। कवि की विरह-भरी रचनाएँ और कलाकार के चित्र इस प्रवृत्ति-स्वभाव के द्योतक हैं।

स्वपीडन रति स्त्री-स्वभाव की विशेषता है। स्त्रियो की प्रकृति स्वपीडन प्रकार की होती है। फ्रायड के इस सिद्धान्त का खडन हुआ है। वस्तुत स्वपीडन-रति प्रवृत्ति और स्वभाव का प्रश्न नहीं है। यह विशेषता सभ्यता-सस्कृति का परिणाम है। सस्कृति के प्रभाव से स्त्रियो मे इस प्रकार के स्वभाव का विकास हो जाता है। यह नव फ्रायडवादी दृष्टिकोण है।

एडलर का कथन है कि जिसमे दैहिक दोष है उसमे स्वपीडन-रति का स्वभाव विशेषत मिलता है।

स्वपीडन वास्तविक (जिसमें चाबुक वगैरह का प्रयोग होना) और प्रतीकात्मक (अपने ही प्रति दया का कारण ढूंढना और उसम आनन्द-विभोर होना) दोनों प्रकार का होता है।

Materialism [मैटेरिएलिज्म] भौतिकवाद।

भौतिकवाद एक तात्विक सिद्धान्त है जिसके अनुसार पदार्थ ही एकमात्र तत्व होता है। प्राचीन काल मे डिमोक्रिटस और इपीक्यूरियस ने भौतिकवादी एव यान्त्रिक सिद्धान्त का विकास किया। अठारहवी और उन्नीसवी शताब्दी के चिन्तन में हॉब्स और ल्यमेट्री ने इसे पुनर्जीवित किया। दर्शन की इस प्रसिद्ध धारा मे मानसिक समस्याएँ भौतिक समस्याओ के रूप मे प्रस्तुत हुई हैं। भौतिकवाद के प्रभाव के फलस्वरूप जर्मनी मे मुख्य रूप मे हैकल के शिष्यो मे, रूढिवादी यान्त्रिकवाद का विशेष विकास हुआ। फ्रास और इटली मे इस यन्त्रवादी विचार-धारा का प्रभाव जमा और उसने अनात्मवादी मनोविज्ञान को जन्म दिया। वाट्सन द्वारा प्रतिपादित व्यवहारवादी मनोविज्ञान भौतिकवाद का मनोविज्ञान पर प्रभुत्व का ही प्रतिफल था। मार्क्स का 'द्वन्द्वात्मक

भौतिकवाद' हीगल के थीसिस, ऐन्टी-थीसिस और सिंथेसिस के सिद्धान्त पर आधारित भौतिकवाद का ही एक नया रूप है।

Mathematical Psychology [मैथेमेटिकल साइकॉलोजी] : गणितीय मनोविज्ञान।

मनोविज्ञान की इस विशेष पद्धति की नींव हर्बार्ट (१७७६-१८४१) ने डाली है। हर्बार्ट के अनुसार मनोविज्ञान में गणित का उपयोग अनिवार्य है। भौतिकविज्ञान में गणना और प्रयोग दोनों का उपयोग होता है; मनोविज्ञान में गणना मात्र ही होनी चाहिए; प्रयोग नहीं। हर्बार्ट ने इस बात की व्याख्या करने के लिए कि अनुभूतियों की इकाइयाँ अथवा भाग किस प्रकार एक-दूसरे से सम्बद्ध होते हैं, गणितीय पद्धति की योजना निकाली। उन्होंने ऐसे सूत्रों का निर्माण किया जिनके आधार पर मन की गणना की रचना की जा सकती है तथा उन सिद्धान्त-नियमों को भी परिभाषित किया जिनकी सहायता से विभिन्न भागों को, जिनका कारण अज्ञात था, एक साथ रखा जा सकता है। फेक्नर (१८०१-१८८७), एबिनघोस (१८५०-१९०९) आदि मनोवैज्ञानिकों की तरह मनोविज्ञान पर पर्याप्त प्रभाव हर्बार्ट की *गणितीय विधि* का भी पड़ा है।

Maturation [मैचुरेशन] : परिपक्वन।

(१) मनोदैहिक तन्तु की पूर्ण विकास *की अवस्था*, (२) वह प्रक्रिया जिसके द्वारा वह पूर्ण विकास को प्राप्त होता है, (३) *वृद्धि तथा विकास (Development)* जो किसी अर्जित व्यवहार के प्रकट होने के *पूर्व अथवा किसी विशिष्ट व्यवहार के* अर्जन किए जाने के पूर्व आवश्यक है। उदाहरणार्थ, जब तक बालक के *मुख-गह्वर सम्बन्धी अंग विकास* और *वृद्धि की* एक निश्चित सीमा नहीं पार कर लेते उसमें स्वतः उच्चारण नहीं प्रकट हो सकता और जब तक उसमें स्वतः उच्चारण नहीं प्रकट होता तब तक वह बोलना सीख नहीं सकता।

प्रक्रियाओं के विकास में परिपक्वन और अर्जन के तुलनात्मक महत्त्व पर प्रकाश डालने के लिए गेसेल, थाम्पसन, जरसिल्ड, हॉलिंगवर्थ, मर्क आदि विद्वानों ने मानव तथा पशुओं पर अनेक महत्त्वपूर्ण प्रयोग किए हैं। इनके प्रयोग-परिणाम निम्न प्रकार हैं—

(१) प्राणी का ऐसा सभी व्यवहार जो उसकी जाति-विशेष अथवा जीवमात्र के लिए स्वाभाविक है, अंग-प्रत्यंगों के परिपक्वन द्वारा ही प्रकट होता है। अभ्यास का इस व्यवहार पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

(२) विशेष योग्यताएँ जो प्राणी को एक-दूसरे से पृथक् करती हैं यथा— गाना, पढ़ना, साइकिल चलाना, सरकस के पशुओं का तरह-तरह के कौशल दिखाना आदि अभ्यास पर ही निर्भर हैं।

(३) बिना पूर्ण परिपक्व हुए किसी भी व्यवहार का अभ्यास तत्सम्बन्धी परिपक्वन के बिना सफल नहीं हो सकता।

Maturation Hypothesis (continued) [मैचुरेशन हाइपोथेसिस] : परिपक्वन प्राक्कल्पना।

वह प्राक्कल्पना-विशेष, जिसमें प्रतिपादन किया गया है कि व्यवहार की कुछ प्रणालियाँ जन्मजात होती हैं, लेकिन उत्तेजन के प्रकट होने पर भी ये तब तक सक्रिय नहीं होती जब तक कि संबंधित अंग-वृद्धि एवं विकास एक निश्चित सीमा तक नहीं पहुँच जाते।

Maturity *[मैचुरिटी] : परिपक्वता।*

विभिन्न विज्ञानों में परिपक्वता पद का अर्थ—*मूल्य विभिन्न माना गया है*। जीवविज्ञान में परिपक्वता का अर्थ है 'विकास' अथवा पूर्ण 'विकास की प्राप्ति'। मनोविज्ञान में इस धारणा का संबंध 'विकास की प्रक्रिया' से है। वस्तुतः जीवविज्ञान में इस शब्द का प्रयोग जिस अर्थ में हुआ है वह मनोविज्ञान के अनुकूल है। जीवविज्ञान में शारीरिक विकास का अध्ययन

होता है और मनोविज्ञान मे किशोरावस्था और परिपक्वावस्था की प्रारम्भिक अवस्था को कायिक (शारीरिक) परिवर्तनो के कारण जो पूर्णता मिली है, उसीको क्रिया मात्र माना है।

सामाजिक अर्थ मे परिपक्वता पद का प्रयोग एक विशेष अर्थ मे हुआ है। सामाजिक परिपक्वता (Social maturity) का अर्थ है किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत रूख सामाजिकता, सवेगात्मक स्थिरता मे एक परिपक्व समायोजन, वातावरण के साथ एक विशेष रूप मे किस दूरी तक मिलता है। जिस व्यक्ति म सामाजिक भाव, आदान प्रदान की सामर्थ्य होती है और जो किसी भी सामाजिक उत्तेजन के प्रति सही रूप मे प्रतिक्रिया कर पाता है और उससे समायोजित कर लेता है, उसमे सामाजिक परिपक्वता होती है। व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, जिसमे सवेगात्मक परिपक्वता है उसमे सामाजिक परिपक्वता भी सभव है। कुछ व्यक्ति उम्र वढ जाने पर भी सामाजिक दृष्टि से बालक ही बने रहते हैं।

Maze Learning [मिज़ लर्निंग] · 'व्यूह अधिगम'।

व्यूह से तात्पर्य ऐसी रचनाओ से है जिनमे प्रवेश कर गन्तव्य-स्थान तक पहुँचने के लिए व्यक्ति-पशु को कई घुमावदार पथो मे घुसना पडता है जिनमे से अधिकाश अधपथ (Blind alleys) होते हैं और आगे जाकर अवरुद्ध हो जाते हैं, कुछ सही रहते हैं जिनका अनुसरण कर प्राणी अपने गन्तव्य स्थान तक पहुँच सकता है। व्यूह अधिगम का तात्पर्य है कि प्राणी प्रवेश-द्वार से प्रवेश कर, भूल किए बिना अपनी सामर्थ्य भर कम-से-कम समय मे गन्तव्य स्थान तक पहुँच जाए। इस प्रकार के प्रयोगो मे प्राणी प्रारम्भ मे प्राय अध-पथो मे भटकता है और इस प्रकार अनावश्यक प्रतिक्रियाएँ करता है। धीरे-धीरे अगले प्रयासो म उसकी भूलो की सख्या और व्यतीत समय कम हो जाते हैं और अन्ततोगत्वा एक ऐसा समय भी आता है जबकि वह बिना भूल किये हुए कम-से-कम समय मे अपने गन्तव्य-स्थान तक पहुँचना सीख जाता है।

इस प्रकार के प्रयोगो का प्रवर्त्तन थार्नडाइक (१८७४-१९४९) ने अपने प्रयत्न और त्रुटि-सम्बन्धी अध्ययन के क्रम मे किया। बाद मे तो मानवो और पशुओ दोनो पर ऐसे अनेक प्रयोग हुए। इन प्रयोगो मे यह पाया गया कि क्रियात्मक अर्जन के क्षेत्र मे मानवो और पशुओ मे कोई मौलिक अन्तर नही। भेद है तो केवल निम्न बातो को लेकर (१) सूक्ष्म निरीक्षण, बौद्धिकता, तर्क, शीलता और भाषा विकास की दृष्टि से बढा-चढा होने के कारण मानव इनका अधिक-से-अधिक उपयोग करता है, (२) प्रेरणा और दत्त विषय पर ध्यान के अधिकाधिक केन्द्रित करने मे मनुष्य पशु से पीछे रहता है तथा (३) मनुष्य अविराम विधि से प्रयोगशाला मे प्राय एक ही बैठक मे सीखता है और पशु विराम विधि से।

Maze-Test [मिज़ टेस्ट] : व्यूह-परीक्षण।

व्यक्तिगत बुद्धि-परीक्षणो का एक प्रकार। इसमे परीक्षार्थी को कुछ उपस्थापित भूलभुलैयो मे से बाहर जाने के रास्ते निकालने पडते हैं। प्राय प्रत्येक भूल-भुलैया कागज पर बनी होती है और परीक्षार्थी को पेन्सिल से उसमे बने हुए रास्तो मे से होकर बाहर पहुँचना होता है। भूलभुलैयाएँ बढती हुई कठिनता के क्रम से एक-दूसरे के बाद परीक्षार्थी के समक्ष उपस्थापित की जाती हैं। कभी अकन के लिए प्रत्येक व्यूह का आयु-स्तर पूर्व-निश्चित होता है। तब जिस कठिनतम व्यूह मे परीक्षार्थी उत्तीर्ण हो जाता है उसका आयु-स्तर परीक्षार्थी का मानसिक आयु स्तर माना जाता है। कभी प्रत्येक व्यूह का आयु-स्तर अक पूर्व निश्चित नही होता है, तब व्यक्ति द्वारा सब व्यूहो पर प्राप्त अको का योग ज्ञात करके उसे पूर्व-

निश्चित मानकों के आधार पर मानसिक आयु अथवा बुद्धिलब्धि में परिवर्तित कर लिया जाता है। इस परीक्षण द्वारा पूर्व दृष्टि एवं योजना-योग्यता की परीक्षा होती है। इससे साधारण जीवन की सामाजिक एव व्यावहारिक आवश्यकताओ के प्रति समायोजन का पता चलता है। इसमें प्राप्त अकों मे मस्तिष्काघात और मस्तिष्कशल्य का प्रभाव भी प्रगट होता है। गति अक से सतर्कता अथवा प्रवृत्ति-शीलता का अनुमान हो जाता है। एक लापरवाही और त्रुटिशीलता का प्रकारात्मक अक भी प्राप्त होता है।

Mean [मीन] : माध्य।

मनोविज्ञान में सर्वाधिक व्यवहृत विश्वसनीय अथवा यथार्थ सांख्यिकीय माध्य। अर्थात् किसी अकावली का सार व्यक्त करने अथवा प्रतिनिधित्व करने वाला अंक। किन्ही व्यक्तियों अथवा प्रयोज्यों के समूह का औसत करके ज्ञान किया हुआ केन्द्रीय माप। इसे प्राप्त करने के लिए सभी मापित व्यक्तियो के अंकों को जोड़कर उनकी सख्या से भाग कर दिया जाता है। यदि अक वर्गीकृत होते हैं तो प्रत्येक अंकवर्गान्तर के मध्य अक को उस वर्ग की आवृत्ति से गुणा किया जाता है और इस प्रकार प्राप्त गुणनफलों को जोडकर कुल व्यक्ति अथवा अंक-सख्या से भाग किया जाता है। जब वर्गीकृत अंकावली लम्बी हो, उसके प्रत्येक पद का परिमाण बडा हो, और पदों मे छोटे-छोटे अन्तर हो, तब समय तथा श्रम की बचत के लिए एक लघु रीति का उपयोग किया जाता है। इसमें अंकावली के किसी एक अंकवर्गातर के माध्य को माध्य मानकर, इस कल्पित माध्य से प्रत्येक अंकवर्ग के वर्गसख्यात्मक विचलन को उस अंकवर्ग की आवृत्ति से गुणा कर दिया जाता है। इस प्रकार प्राप्त गुणनफलो को जोड़कर कुल व्यक्ति अथवा अक-सख्या से भाग कर दिया जाता हैं। प्राप्त भजनफल को अक रूप में कल्पित माध्य मे जोड देने से अंकावली का वास्तविक माध्य ज्ञात हो जाता है। माध्य ज्ञात करने में अकावली के प्रत्येक अक को समान महत्व मिलना माध्य के इस रूप का विशेष गुण है जो माध्यिका आदि माध्य के अन्य रूपों में नही है।

Meaning [मीनिंग] : अर्थ।

इस शब्द का प्रयोग दो प्रमुख अर्थों में हुआ है : (१) अभिप्राय (Intention) और (२) महत्त्व। अर्थ के बारे मे जो विभिन्न सिद्धान्त हैं उनमें इन दोनो दृष्टि से पृथकता मिलती है। मनोवैज्ञानिक समस्या अर्थ की महत्ता में निहित है। एक सम्प्रदाय के अनुसार अर्थ का महत्व ज्ञानात्मक है और दूसरे सम्प्रदाय के अनुसार संवेगात्मक। इस विषय पर पर्याप्त वाद-विवाद मिलता है।

व्यवहारवादियों के अनुसार 'अर्थ' अनुबंधन (conditioning) मात्र है। यह एक प्रकार का व्यवहार है। विभिन्न क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं की सहायता से किसी शब्द विशेष का अर्थ लगाया जाता है।

Measurement [मेजरमेंट] : माप।

वैज्ञानिक परीक्षण द्वारा प्राप्त प्रदत्तों, वस्तुओ, घटनाओ, गुणो के अनुभवों का नियमानुसार सख्याओं में वर्णन जिससे उनकी मात्राओं का ज्ञान हो और जिससे सांख्यिकीय क्रियाओं द्वारा अन्य निष्कर्ष निकाला जा सके। मनोविज्ञान में मापन की प्रेरणा-विशेष तथा एक-दूसरे के गुणों का पक्षपातरहित यथार्थ अनुमान, योग्यता, वृत्ति, मनोरचनाओं की मात्रा, विस्तार, गहराई आदि जानने की आवश्यकता से मिली है। मनोवैज्ञानिक माप के विषय अर्थात् परिवृत्य व्यक्तियों अथवा समूहों का स्वभाव अथवा व्यवहार के गुण होते हैं। इसका उद्देश्य इन गुणों में व्यक्तिगत अन्तरो को ज्ञात करना होता है। मनोवैज्ञानिक मापन के चार स्तरों में भेद किया गया है जिन्हे नामीय, क्रमीय (ordinal), अन्तरीय तथा अनुपातीय स्तर कहा जाता है। प्राप्त माप-फल पदों

अथवा अकों के रूप मे होते हैं। अक समयाक, शैश अक, कठिनता अक विशिष्टता अक आदि कई प्रकार के होते हैं।

Mechanical Aptitude [मिकेनिकल एप्टिट्यूड] यान्त्रिक अभिक्षमता।

उन योग्यताओं का समूह जिनकी वर्तमान उपस्थिति के आधार पर यह पूर्वानुमान लगाया जा सके कि कोई व्यक्ति यत्र-व्यवहार वाले व्यवसायो मे पडने से उनमे सफल हो सकेगा। इसमे प्राय चार प्रकार की योग्यताओं को विशेष महत्त्व दिया जाता है—

(१) यन्त्र ज्ञान अर्थात् यत्र सम्बन्धी जानकारी और यत्र सम्बन्धी समस्याओ को सुलझाने की योग्यता।

(२) यत्र समझ, अर्थात यान्त्रिक सम्बन्धो तथा सरल यत्र सिद्धान्तो को समझने की योग्यता।

(३) यत्र सयोजन अर्थात् फुरती से और त्रुटि बिना किसी साधारण यन्त्र के खोले हुए पुर्जों को फिर से जोड देने की योग्यता।

(४) मन किया आसजन, जिसके परीक्षणो के खण्ड विश्लेषण मे पता चला है कि इसके छ मुख्य खण्ड हैं—(i) देशबोध अर्थात् आकृतियो के विषय मे तर्क की तथा उनके परस्पर सम्बन्ध पहचानने की योग्यता, (ii) प्रत्यक्षानुभव योग्यता, (iii) हस्तकौशल मे फुरती, (iv) नियमित द्रुत क्रिया, (v) बल (vi) अचचलता, अर्थात् किसी एक आसन को बनाए रखने अथवा किसी नमूने की शुद्ध प्रतिलिपि बनाने की योग्यता। अचचलता के चार मुख्य प्रकार हैं—आसन की अचचलता, भुजा की अचचलता, हाथ की अचचलता और निशाना लगाने मे अचचलता।

Mechanical Aptitude Tests [मिकेनिकल एप्टिट्युड टेस्ट्स] : यान्त्रिक अभिक्षमता परीक्षण।

यान्त्रिक व्यवसायो के लिए उपयुक्त व्यक्तियों को चुनने और उन्हें उपयुक्त निर्देशन देने के हितार्थ निर्मित मनोवैज्ञानिक परीक्षण। इनके चार मुख्य प्रकार है—

(१) यंत्र-सयोजन परीक्षण, जिनमे साइकिल की घटी जैसे साधारण यान्त्रिक उपकरणो के पुर्जे खोलकर व्यक्ति के सामने रख दिए जाते हैं और उसे कहा जाता है कि फिर से सयोजन करके वही उपकरण बना दे। ऐसा करने मे उसकी गति और यथार्थता पर अक दिए जाते हैं।

(२) यत्र-ज्ञान परीक्षण, जिनमे यत्र-सम्बन्धी ज्ञान और यन्त्र सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने की योग्यता की परीक्षा की जाती है।

(३) यंत्र-सिद्धान्त परीक्षण, जिनमे यन्त्र-व्यवहार परिस्थितियो मे परिस्थिति की समझ, परिणामो के अनुमान एव निष्कर्षों पर पहुँचने की योग्यता देखी जाती है।

(४) यत्र व्यवहार मन क्रिया परीक्षण, जिनमे यत्र-व्यवहार मे काम आने वाली अश रूप मानसिक क्रिया-योग्यताएँ, देशबोध, प्रत्यक्षानुभव, हस्तकौशल, नियमित द्रुत क्रिया-बल तथा अचचलता की परीक्षा की जाती है।

Median [मीडियन] माध्यिका।

परिमाणानुसार आरोही अथवा अवरोही क्रमानुसार अकावली मे प्राप्ताको को समान सख्या के दो भागों मे विभाजित करने वाला माध्य या प्राप्तांक। जब अकावली म कुल प्राप्ताको की सख्या विषम होती है, तब माध्यिका क्रमानुसार विन्यास के पश्चात् $\frac{\text{प्राप्तांक सख्या} + १}{२}$ वें प्राप्तांक को कहा जाएगा। जब अकावली मे प्राप्तांको की सख्या सम होती है तब बीच

के दो अकों के जोड को २ से भाग करने से माध्यिका ज्ञात हो जाती है। यदि अंको का केवल वर्गीकृत आवृत्ति वितरण ही उपलब्ध हो, तो माध्यिका ज्ञात करने के लिए सूत्र है

$$\text{अ} + \frac{\frac{\text{स}}{२} - \text{आ}_{\text{अ}}}{\text{आ}_{\text{म}}} \times \text{व}$$

इसमें अ = जिस अक वर्गान्तर मे माध्यिका है उसका अधर छोर

स = कुल व्यक्ति-सख्या

$\text{आ}_{\text{अ}}$ = माध्यिका वाले अक वर्गान्तर के अध.छोर तक की आवृत्तियो अर्थात् माध्यिका वाले अंकवर्ग के नीचे के अक वर्गों की आवृत्तियो का जोड़

$\text{आ}_{\text{म}}$ = माध्यिका वाले अक वर्गान्तर की आवृत्ति

व = अक वर्गान्तर का आकार।

Meissner Corpuscle [माइस्नर कार्पसिल] : माइस्नर कणिका।

चर्म के रोमरहित भागों में पाए जानेवाले, छोटे-छोटे दीर्घ वृत्ताकार पिंडो (Elliptical bodies), जिनमे दवाव या स्पर्श के अन्त्य अगों (End-organs) के तंत्रिका छोरों (nerve endings) के पाए जाने का विश्वास किया जाता है।

Memory [मिमरी] : स्मृति।

व्यक्ति की वह विशेषता जिसके अन्तर्गत गत-अनुभूतियों की उस पर पडी छाप न केवल उसके अपने-आपमें सग्रहीत रहती है प्रत्युत उसकी भावी अनुभूतियों और व्यवहारों का परिशोधन या परिमार्जन भी करती है। स्मरण-प्रक्रिया एक जटिल मानसिक क्रिया है। साधारणतः इसके चार प्रधान अंग माने जाते हैं—(१) सीखना अथवा अर्जन करना, (२) धारण करना—अर्जित व्यवहार को अपने मस्तिष्क में बनाए रखना, (३) पुन.स्मरण—धारण की हुई वस्तु को आवश्यकतानुरूप पुन: अपनी तात्कालिक चेतना मे ला सकना तथा (४) प्रत्यभिज्ञान—पुन.स्मृत वस्तु के विभिन्न अशो के प्रति इस बात का विश्वास होना कि वे प्राणी के गत अनुभव मे आ चुके हैं।

स्मृति के दो प्रधान भेद हैं—रटने पर आधारित (Rote Memory) और तर्क पर आधारित (Logical Memory)। रटने पर आधारित स्मृति मे विषय के अर्थ और उसके विभिन्न भागो के पारस्परिक सम्बन्धो पर बिना ध्यान दिए उसे केवल रट लिया जाता है। इसके विपरीत तर्कप्रधान स्मृति मे अर्थ और साहचर्य-सम्बन्ध का पूरा लाभ उठाया जाता है।

देखिए—Retention, Recall, Recognition.

Memory Image [मिमरी इमेज] : स्मृति-प्रतिमा, स्मृति-चित्र।

वस्तु की अनुपस्थिति मे उससे सम्बन्धित अनुभूति की मानसिक चित्रो के रूप मे पुनर्जागृति ही स्मृति-प्रतिमा कहलाती है। स्मृति-प्रतिमाओ का अनुभव प्राय. हमे समय और स्थान के प्रसग मे होता है। कभी-कभी ऐसा नहीं भी होता; प्रतिमाओं के साथ परिचित होने का आभास तो मिलता है पर उसे यह निश्चित स्पष्ट नही हो पाता।

प्रतिमा तथा स्मृति-प्रतिमा साधारणतः समानार्थक हैं। इनके छ: भेद हैं : (१) चाक्षुष प्रतिमा, अर्थात् पहले देखी हुई वस्तु की मानसिक पुनर्जागृति, (२) श्रवण प्रतिमा, (३) घ्राण-प्रतिमा, (४) स्वाद-प्रतिमा (५) स्पर्श-प्रतिमा तथा (६) गति-प्रतिमा।

सभी व्यक्तियो में सभी प्रतिमाएँ समान रूप में नही पाई जाती। किसी मे किन्हीं की बहुलता होती है और किसी में दूसरे प्रकार की। गाल्टन ने अपने एतद्-सम्बन्धी अध्ययन के आधार पर प्राणियों

मे विशेष प्रकार की प्रतिमाओ की बहुलता के दृष्टिकोण से उन्हें चाक्षुष प्रतिमा-प्रधान, श्रवण-प्रतिमा प्रधान, गति-प्रतिमा-प्रधान आदि वर्गो मे बाँटा है। इस वर्गीकरण को प्रतिमा-प्ररूप (Image Type) कहते हैं।

Memory Span [मेमरी स्पैन] स्मृति-विस्तार।

किसी भी वस्तु अथवा वस्तुओ के प्रत्यक्षण के तुरत बाद व्यक्ति वस्तु के जितने अगो को पुनस्मरण करने मे समर्थ हो पाता है वही उसका स्मृति-विस्तार (अवधान विस्तार) है। एबिंगहाउस (१८५०-१९०९) के अन्वेषण से प्रेरित हो इस सम्बन्ध मे सबसे पहला क्रमबद्ध अध्ययन १८८७ मे जैकब्स ने किया और एक अवधान विस्तार परीक्षण का आविष्कार किया। बाद मे इस विषय पर अन्यान्य मनोवैज्ञानिको ने अनेक प्रयोगात्मक अध्ययन किये। इसमे निरर्थक पद सम्बद्ध अथवा असम्बद्ध शब्द और वाक्य अथवा सख्याएँ याद करने को दी गईं। इन प्रयोगो से यह निष्कर्ष निकाला कि इस प्रकार के प्रत्यक्षण के उपरान्त व्यक्ति अधिक-से अधिक चार-पाँच पदार्थो को स्मरण रख सकता है। ये सरल भी हो सकते हैं और जटिल भी। जटिल पदार्थ कई मिलकर बनते हैं—यथा, अक्षरो से शब्द, शब्दो से वाक्य आदि।

अवस्था और अभ्यास मे वृद्धि के साथ व्यक्ति की यह शक्ति भी बढती हुई प्रतीत होती है। वस्तुत स्मृति-विस्तार नही बढता। मानसिक विकास के साथ-साथ उसमे अधिक वस्तुओ को इकाई के रूप में प्रत्यक्षण कर सकने की क्षमता बढती है। इसी से वह किसी विशेष ढग के अपेक्षाकृत अधिक तथ्यो को स्मरण रखने मे समर्थ हो जाता है।

Memory Trace [मेमरी ट्रेस] : स्मृति-चिह्न, स्मृति छाप।

स्मृति-प्रक्रिया की व्याख्या दैहिक और मनोवैज्ञानिक आधार पर की गई है। दैहिक आधार की दृष्टि से शरीर शास्त्रियों का ऐसा अनुमान है कि जब भी व्यक्ति किसी नई अनुभूति या व्यवहार का अर्जन करता है तो उसकी छाप उसके मस्तिष्क पर पडती है। मस्तिष्क पर पडी इन्ही छापो को स्मृति-चिह्न कहा जाता है। स्मृति-चिह्नो के माध्यम से ही स्मृति-प्रक्रिया सम्पादित होती है। जिस विषय के स्मृति चिह्न गहरे और स्पष्ट होते हैं उसकी स्मृति भी अच्छी होती है। इसके विपरीत धुँधले और उथले स्मृति चिह्न धुँधली स्मृति के प्रतीक हैं।

Mendalism [मेन्डेलिज्म] मेडलवाद।

अभिजनन प्रयोग द्वारा वशागत सम्बन्ध मे अध्ययन किया हुआ वश-लक्षण-बीज के व्यवहार का विज्ञान। मेडल का सिद्धान्त वशागत सिद्धान्त है। इसके अनुसार विशेषताओ का सक्रमण एक विशेष अनुपात मे होता है जिसे मेडल-अनुपात कहते हैं—यह प्रभावी (*dominant*) और अप्रभावी (recessive) गुण का अनुपात है। पहली पीढी मे यह अनुपात तीन प्रभावी और एक अप्रभावी के अनुपात मे रहता है। मेडल का वशागत सिद्धान्त पर्याप्त विस्तारित है, किन्तु अब बहुत परिवर्तित हो गया है। फिर भी शारीरिक और मानसिक विशेषताओं की व्याख्या, जो बालक ने माता-पिता से प्राप्त की है, मेडल की उपकल्पना के आधार पर ही की जाती है।

Mental Aberration [मेन्टल ऐबरेशन] मानसिक विपथन।

किसी भी प्रकार की मानसिक विकृति, जिसमे सामान्य या औसत से विचलन हुआ हो, जैसे हिस्टीरिया, कल्पनाग्रह, भीतिरोग इत्यादि। रुग्णावस्था मे उपस्थापित विभिन्न अद्भुत लक्षणो का उपयुक्त निदान और निवारण समुचित व्यक्तित्व विकास के लिए आवश्यक है।

Mental Age [मेन्टल एज] : मानसिक आयु।

व्यक्ति के बौद्धिक विकास का एक माप

जिसकी इकाइयाँ वर्ष और मास होते हैं, परन्तु जिसका परीक्षार्थी की शारीरिक वर्षक्रम आयु से कोई सम्बन्ध नहीं होता। बिने के मापदण्ड के अनुसार जो व्यक्ति जिस आयु के लिए निर्धारित परीक्षण ठीक से कर लेता है वही उसकी मानसिक आयु होती है। इसके हूर्मन द्वारा निर्मित स्टैन-फ़ोर्ड संस्करण में मानसिक आयु ज्ञात करने में आंशिक वर्षांकों का भी प्रयोग होता है। जिस आयु तक के सब परीक्षण परीक्षार्थी ठीक से कर लेता है, वह उसकी आधारभूत मानसिक आयु कहलाती है। अगले प्रत्येक वर्ष के जितने परीक्षण वह ठीक से कर लेता है उनके आंशिक वर्षांक इस आधारभूत आयु में जोड़कर उसकी अन्तिम मानसिक आयु ज्ञात की जाती है। यदि किसी वर्ष के लिए ५ परीक्षण निर्धारित किये गए हैं तो इनमें से प्रत्येक परीक्षण का अंक ⅕ वर्ष होता है, इत्यादि।

Mental Blindness [मेन्टल ब्लाइण्ड-नेस] : मानसिक अन्धता।

किसी वस्तु का प्रत्यक्षण करना किन्तु उसका अर्थ न लगा सकना। इसका कारण दृश्य-अंग में दोष नहीं है। रेटीना पर चित्र स्पष्ट पड़ता है, किन्तु मस्तिष्क के क्रियमाण न होने से व्यक्ति उसका पिछले अनुभव के आधार पर विवरण नहीं दे पाता। यह मस्तिष्क के निष्क्रिय होने का परिणाम है। यह मानसिक रोग का लक्षण है और प्रमुख रूप से अकाल मनोभ्रंश (Dementia Praecox) में दृष्टिगत होता है।

Mental Chemistry [मेन्टल केमिस्ट्री] : मानसिक रसायन।

यह अभिव्यक्ति पहले-पहल जॉन स्टुअर्ट मिल (१८०६-१८७३) द्वारा प्रयुक्त हुई। इसका आधार रासायनिक प्रक्रिया का वह उपमान था जिसके अनुसार दो वस्तुओं को इस प्रकार मिलाया जा सकता है जिससे उनसे उत्पन्न परिणाम ऐसे गुणों से युक्त हों जो पृथक् उन दोनों में से किसी में भी न पाए जा सकें। नये निर्मित साहचर्यों, प्रारम्भिक मूल तथ्यों को पहचानना सम्भव नहीं रहता। जॉन स्टुअर्ट मिल ने मानसिक रसायन शब्द का प्रयोग अपने पिता जेम्स मिल (१७७३-१८३६) के उस सिद्धान्त के विरोध में किया जिसके अनुसार जटिल परिणामियों की प्रकृति को समझने के लिए भी उनमें विद्यमान उनके अवयवों की प्रकृति को समझना जरूरी है।

Mental Deficiency [मेन्टल डेफ़िसि-एन्सी] : मानसिक क्षीणता।

अपनी अथवा दूसरों की रक्षा की दृष्टि से दूसरों द्वारा देखभाल, पर्यवेक्षण तथा नियन्त्रण की आवश्यकता में रहना। इस अवस्था में जनता का २ प्रतिशत सर्वाधिक मात्रा में असमर्थ भाग होता है। बच्चों में २½ प्रतिशत इस गिनती में आते हैं। वे साधारण शिक्षा से लाभ उठाने के अयोग्य होते हैं। कभी-कभी इनमें से केवल निम्न स्तरों के अथवा समस्यात्मक व्यवहार वाले बच्चों को ही मानसिक दृष्टि से क्षीण कहा जाता है। मानसिक क्षीणता की पहचान सामान्य प्रेक्षण के आधार पर व्यक्तिगत समायोजन के अनुमान द्वारा भी की जा सकती है और किसी मानप्राप्त बुद्धि-परीक्षण के उपयोग द्वारा भी। परीक्षण-विधि अधिक तथ्यात्मक होती है। निम्न-स्तर के मनोनिकृष्टों का विकास पूर्वबाल्य से आगे नहीं होता। उनकी देखभाल घर पर अथवा संस्थाओं में करनी पड़ती है। बहुत-से बोलना अथवा अपने को स्वच्छ रखना नहीं सीख पाते हैं। कुछ लोग कभी-कभी नित्यप्रति के कार्य अथवा घरेलू काम अथवा बागबानी सीख पाते हैं। उच्च स्तर की मानसिक क्षीणता होने पर बहुत-से लोगों को किसी शिक्षा से कोई लाभ नहीं होता; परन्तु कुछ तो कौशल-पूर्ण काम भी सीख पाते हैं, चाहे उन्हें इन कामों के सीखने में असाधारण देर ही लगे। उनकी व्यावहारिक योग्यता उनकी भाषात्मक योग्यताओं से अधिक होती है।

Mental Hygiene [मेन्टल हाइजीन] : मानसिक आरोग्य-विज्ञान।

वह वैज्ञानिक अध्ययन जिसमे मानसिक आरोग्य सम्बन्धी नियमो सिद्धान्तो का अन्वेषण हुआ है जिससे मन स्वस्थ रहे और मानसिक रोग न फैले और व्यक्ति मे सवेगात्मक प्रौढता का विकास हो।

मानसिक आरोग्य विज्ञान का आरम्भ वर्तमान मे हुआ है और इसके प्रमुख प्रवर्तक डब्ल्यू० बीअर हैं। उन्होने यह व्यक्तिगत अनुभव किया है कि व्यक्तित्व-सम्बन्धी विकारो और सवेगात्मक अस्थिरता के निवारण और उनके अस्वास्थ्यप्रद प्रभावो से मुक्त होने के लिए कुछ नियमन होना चाहिए जिनक सम्पादन से मन क्षेत्र मे व्यवस्था आ सके। परिणामस्वरूप १९०८ मे एक मानसिक आरोग्य-विज्ञान समिति बनी और एक ही वर्ष पश्चात एक राष्ट्रीय परिषद् भी। यह आन्दोलन यूरोप मे ऐसी तीव्र गति से चला कि १९११ मे इसे अन्तरराष्ट्रीय ख्याति मिल गई। यहाँ तक कि १९३० मे इसका पहला अन्तरराष्ट्रीय अधिवेशन भी वाशिंगटन मे हुआ।

कैरोल ने मानसिक आरोग्य के निम्न सिद्धान्त बताये हैं और ये अत्यधिक अर्थ-युक्त हैं जिनका पालन करने से मानव मन सचमुच आरोग्य रहता है

(१) अपने तथा अन्य के व्यक्तित्व के प्रति सम्मान का भाव रहना।

(२) अन्य व्यक्तियो की तथा अपनी सीमाओ का ध्यान रखना।

(३) व्यवहार कार्य-कारण के नियम से सचालित है—इसका ध्यान रखना।

(४) यह समझना कि व्यवहार पूरे व्यक्तित्व का परिणाम है।

(५) उन प्रकृत प्रेरणाओ-आवश्यकताओ का ज्ञान रखना जिनसे व्यवहार प्रेरित होता है।

मानसिक आरोग्य विज्ञान के उद्देश्य हैं :

(१) मानसिक रोगो को रोकना,

(२) मानव के व्यक्तित्व विकास मे सहायक होना,

(३) मानव जीवन मे सतुलन लाना.

(४) प्रकृत इच्छाओ की तुष्टि का उचित उपाय बतलाना।

अत मानसिक आरोग्य विज्ञान का सैद्धान्तिक महत्त्व मात्र नही जिससे असमायोजित व्यवहार-सम्बन्धी सिद्धान्तो का अनुमान लगता है, इसका वस्तुत व्यावहारिक उपयोग है। इसके नियमो का पालन करने से सामान्यत मन का स्वस्थ रहना सम्भव है।

Mental Mechanism [मेन्टल मेकेनिज्म] रक्षायुक्ति।

यान्त्रिक प्रकार की प्रक्रिया जो दमित सवेगात्मक भाव-ग्रन्थियो से उद्भूत होती है और ऐसे प्रयोजनो ध्येयो की ओर निर्देशित होती है जो अचेतन रूप से निर्धारित की गई रहती है।

इन रक्षायुक्तियो की निम्न विशेषताएँ हैं :

(१) कामशक्ति की तुष्टि के लिए प्रकृत माध्यम के स्थान पर कुछ और विषय वस्तुएँ देना जैसे, अपराध भाव का समाज सुधारक के भ्रम का रूप लेना।

(२) कामभाव से निवृत्त कामशक्ति का वह रूप लेना जो अह से समन्वित हो।

(३) ये रक्षायुक्तियाँ दीवार रूप मे हैं जिनका कार्य बिना परिमार्जन के कामशक्ति की अभिव्यक्ति नही होने देना है।

रक्षायुक्तियाँ कई हैं। उनमे विस्थापन (displacement) सक्षेपण (condensation) तादात्म्य, प्रक्षेपण (projection), प्रतीकीकरण (symbolication), कल्पना क्रिया, युक्त्याभास, उन्नयन, दमन (repression) और प्रतिगमन (regression) प्रमुख हैं। ये रक्षायुक्तियाँ मन की रक्षा के हेतु क्रियमाण रहती हैं। इसी से इन्हे रक्षार्थ कार्य पद्धतियाँ अथवा 'डिफेन्स मेकेनिज़म' भी कहते हैं। अचेतन मे ऐसी अनेकानेक इच्छाएँ हैं जो चेतन में उसी रूप मे प्रकट नही हो सकती। उन्हे ऐसा रूप देना आवश्यक है जो ज्ञात मन को मान्य हो।

Mesomorphy [मिसोमॉर्फी] : आयताकृति।

अमरीका के विद्वान शेल्डन द्वारा प्रतिपादित शारीरिक आकृति के तीन उपादान उपकरणों में से एक। इसमें अस्थिपेशी की प्रधानता होती है। इसकी पहचान शरीर की लम्बाई और हृष्ट-पुष्टता से है। अन्य दोनों उपकरणों (गोलाकृति और लम्बाकृति) की भाँति इसके भी सात परिमाण निर्धारित किये गए हैं। सातवें अर्थात् सर्वोच्च परिमाण पर सरकसों और अखाड़ों आदि के व्यावसायिक पहलवान रखे गए हैं। किसी व्यक्ति का आयताकृति के सप्तपदीय दण्ड पर आकन फोटो पर पाँच ऐसे अंगों के मापों के माध्य के आधार पर किया जाता है जिन पर शरीर के मांस के घटाव-बढ़ाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। व्यक्ति की शारीरिक आकृति के संख्याओं में लिखने में (जैसे ७-१-२ में) बीच की संख्या आयताकृति की मात्रा होती है, पहली गोलाकृति की और तीसरी लम्बाकृति की। इस प्रकार सभी व्यक्तियों में आयताकृति की कुछ-न-कुछ मात्रा अवश्य होती है। जिस व्यक्ति में आयताकृति की मात्रा गोलाकृति अथवा लम्बाकृति दोनों की मात्रा से अधिक हो उस व्यक्ति को आयताकृति-प्रधान कहा जाता है।

शेल्डन का विश्वास है कि व्यक्ति का यह शरीराकृति प्रकार आहार अथवा वायु के परिवर्तन से बदलता नहीं।

Metabolism [मिटाबॉलिज़म] : चयापचयन, उपापचय।

देहधारियों में होनेवाले भौतिक तथा रासायनिक परिवर्तनों की समग्रता जिससे उन्हें अपनी जैव प्रक्रियाओं के लिए शक्ति प्राप्त होती रहती है। इसके अन्तर्गत दो प्रमुख क्रियाएँ आती हैं : (१) उपचय (Anabolism)—ग्रहीत भोजन का अनेक जटिल परिवर्तनों के पश्चात् शरीर का निर्माण करनेवाले आवश्यक तत्त्वों के रूप में परिवर्तित होना उपापचय ही प्राणियों में उनकी वृद्धि और विकास का कारण है। (२) अपचय (Katabolism)—शक्ति उत्पन्न करने के लिए साँस के द्वारा ऑक्सीजन लेने और कार्बन इत्यादि को बाहर निकालने की क्रिया में शरीर के तत्त्वों का नाश होना और शक्ति का उन्मोचन होना। इसी को अपचय कहते हैं। निर्माण और नाश की ये क्रियाएँ ही जीवन की सभी प्रक्रियाओं का कारण और स्रोत है।

Method of Averages [मेथड ऑफ ऐवरेजेज़] : माध्य प्रणाली।

मनोवैज्ञानिक प्रदत्तों के अनुकूल सरल रेखा के समीकरण ज्ञात करने की एक विधि, जिसका विशेष गुण यह है कि इसमें सम्पूर्ण प्रदत्तों का उपयोग होता है। प्रेक्षित परिणामों और परिगणित परिमाणों के अन्तर जिन्हें 'शेष' भी कहा जाता है, कोई धनात्मक होंगे और कोई ऋणात्मक। ये सब समसम्भावित प्रेक्षण त्रुटियों के कारण ही होंगे। यदि संयोग मात्र हो, तो ये त्रुटियाँ जितनी बार ऋणात्मक होंगी उतनी ही बार धनात्मक भी होंगी। इसलिए प्रदत्तों के सर्वाधिक मात्रा में अनुकूल वह रेखा होगी जिस पर इन योगों का योग शून्य हो जाएगा :

अर्थात् $\Sigma\left(य_{प्र} - य_{प}\right) = ०$

परन्तु सरल रेखा का सामान्य गणित समीकरण यह है :

$$य_{प} = क\,र + ख$$

जिसमें रेखा के सभी बिन्दु (र, य) के विभिन्न परिमाण हैं। इसलिए उपरोक्त समीकरण यों हो जाता है :

$$\Sigma\left(य_{प्र} - क\,र - ख\right) = ०,$$

$$\text{अर्थात् } \Sigma\, य_{प्र} = क\,\Sigma\, र + स\, ख$$

जिसमें स को (र, य) के विभिन्न परिमाणों की संख्या का चिह्न माना गया है। क और ख का परिमाण ज्ञात करने के लिए प्रदत्तों के दो यथासम्भव समान भाग कर लिये जाते हैं, जिसमें दो समीकरण

बन जाते हैं

$$\Sigma\ य' = क\ \Sigma\ र' + स'ख$$
$$\Sigma\ य'' = क\ \Sigma\ र'' + स''ख$$

इनको बीजगणित विधि से हल कर लिया जाता है।

Methodology [मेथॉडॉलोजी] विधि-तन्त्र, प्रक्रिया विधान।

सिद्धान्तो और पद्धतियों का नियमबद्ध और तर्कसगत अध्ययन तथा उनकी रचना।

प्रक्रिया विधान का सामान्य रूप से या सीमित रूप से किसी विज्ञान या केवल किसी एक विशेष अनुसन्धान मे तन्वो तथा सत्यता की खोज के लिए उपयोग होता है।

अन्वेषण की कार्य प्रणाली या रीति इस विधान का अग है।

Mind [माइन्ड] मन।

मन शब्द का प्रयोग मनोवैज्ञानिक और तात्त्विक अर्थों मे प्रमुखत किया गया है। मनोविज्ञान की दृष्टि से यह मानसिक रचनाओ और प्रक्रियाओ का एक सघटित पूर्णाकार है—चेतन, अवचेतन इत्यादि। सामान्य रूप से यह व्यक्तिगत मन या तदनुरूप है जिसमे प्रत्यक्षण, स्मृति, कल्पना भावना, तर्क, चिन्तन इत्यादि प्रक्रियाएँ चलती रहती हैं। यह क्रियात्मक रूप से व्यक्तिगत दैहिक अवयव से सबधित है। तात्त्विक दृष्टि से मन एक सत्ता है, अथवा उपरोक्त रचनाओ और प्रक्रियाओ का आधारभूत है। तत्त्ववाद मे मन शब्द का प्रयोग एक तत्त्व के रूप मे हुआ है जो व्यक्तिगत मन का विस्तारण और जो पदार्थ अथवा स्थूल वस्तु का मूलत विरोधी है।

Minimal Changes, Method of [मिनिमल चेन्जेज, मेथड ऑफ] न्यूनतम परिवर्तन प्रणाली।

मनोवैज्ञानिक प्रयोग की एक विधि जिस मे प्रयोगकर्त्ता उपस्थापित उत्तेजना की मात्रा को इस प्रकार बारी-बारी क्रमानुसार घटाता है और बढाता है कि प्रयोज्य को उस घटाव बढाव का आभास होता रहता है। इस विधि का उपयोग प्राय उत्तेजना बोध-द्वार, अन्तर्बोध-द्वार अथवा समानता बोधमान ज्ञात करने के लिए किया जाता है। इसमे प्रयोज्य को यह अवसर प्राप्त होता है कि वह आरोही तथा अवरोही दोनो प्रकार की श्रेणियो के आरम्भ मे तो अपने अवधान को कुछ ढीला रखे, परन्तु जैसे-जैसे ज्ञातव्य परिवर्तन समीप आता है उसकी अवधान क्रिया तीव्रतर हो जाती है और वह यथार्थतर प्रेक्षण कर पाता है। परन्तु इस विधि मे ज्ञान दोष, आशा दोष तथा आरम्भिक उत्तेजना प्रभाव-दोष हुआ करते हैं।

Mirror Drawing Experiment [मिरर ड्राइग एक्सपेरिमेंट] - दर्पण आरेखण प्रयोग।

प्रयत्न तथा त्रुटि द्वारा सीखने की और अर्जित योग्यता के अन्तरण की प्रक्रियाओ के अध्ययन के लिए उपयोग की जानेवाली प्रयोगात्मक परिस्थिति। इसमे प्रयोज्य से उसके समक्ष उपस्थित परदे द्वारा छिपाई हुई किसी आकृति का दर्पण मे प्रतिबिम्ब देखकर उस पर लेखनी फेरने की क्रिया करवाई जाती है। उपयुक्त यह है कि यह क्रिया प्राय थोडी देर की हो, प्रयोज्य के लिए कुछ कठिन हो, और तथ्यात्मक आधारो पर मापी जा सके। आकृति प्रायः चौडी किनारी के सितारे की होती है और प्रयोज्य को आदेश दिया जाता है कि उसकी लेखनी इस चौडी किनारी के किनारो से बचती हुई चले। किसी किनारे को छू लेना या उसे लाँघ जाना त्रुटि माना जाता है।

M M P I [एम एम पी आई] मिनेसोटा बहुपक्षी व्यक्तित्व सूची।

एस० आर० हैथावे तथा जे० सी० मैकिन्ले द्वारा कई प्रकार के व्यवहार विकारो को पहचानने के लिए बनाई गई एक सूची या तालिका जो पहले १९४३ मे और फिर सशोधित रूप मे १९५१ मे प्रकाशित हुई है और अब नैदानिक मनोविज्ञान (Clini-

cal Psychology) का एक प्रमुख साधन बन गई है। इस परीक्षण की सहायता से किसी व्यक्ति को मनोविकार के सभी अंगों एवं प्रकारों पर अंक देना सम्भव समझा गया है। इसमे शारीरिक अवस्था से लेकर उत्साह और सामाजिक जीवन-सम्बन्धी भावों तक विभिन्न विषयों के ऐसे ५५० लक्षणवाक्य एकत्रित हैं जिनके आधार पर किसी विकार से ग्रस्त रोगी का सामान्य लोगो से भेद किया जा सकता है। निर्माताओं ने इसके अनेक वाक्य-समूहों को विभिन्न मनोरोगों एवं मानसिक गुणों के मापदंडों का काम देने योग्य माना है। हिस्टीरिया, विषाद, शरीर-चिंता, सविभ्रम आदि कुछ के मापदंड निर्धारित किए जा चुके हैं। प्रत्येक मापदंड की विशेषता उसकी अलग अंकन-कुंजी है। इस सूची द्वारा केवल १५ वर्ष से अधिक आयु के सहयोगशील पढ सकने वाले व्यक्तियों की परीक्षा हो सकती है। प्रत्येक ऐसे व्यक्ति को परीक्षण में प्रत्येक परीक्षण वाक्य के विषय में यह बताना होता है कि वह इसे अपने बारे मे प्रायः सत्य पाता है, असत्य पाता है, अथवा निश्चित रूप से सत्य या असत्य नही पाता। जब वह यह कर चुकता है, तब परीक्षक उसकी की हुई प्रतिक्रियाओं में से उन प्रतिक्रियाओं को छाँट लेता है जो साधारण व्यक्ति कम संख्या में करते हैं। परीक्षण-निर्माताओं ने अनुभव के आधार पर महत्त्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं की सूची उपलब्ध कर दी है। व्यक्ति की महत्त्वपूर्ण प्रतिक्रियाएँ अलग कर लेने के बाद उपलब्ध अंकन-कुंजियों के अनुसार उसे प्रत्येक मापनी पर अंक दे दिए जाते हैं। इनके अतिरिक्त इन बातों पर भी अंक दिए जाते हैं कि वह झूठ कितना बोलता है, अपने विकारों को छिपाने का कितना प्रयत्न करता है, कितनी मात्रा में अनिश्चित रहता है और प्रश्नोत्तर कितनी लापरवाही से देता है।

Mode [मोड] : बहुलक।

किसी अंकमाला का सबसे अधिक आवृत्ति वाला अंक। यह वास्तविक अंकमाला का ही एक अंक होता है। इसलिए इसे एक प्रकार का वर्णनात्मक माध्य कहा जा सकता है। जब सब मूल अंक न ज्ञात हों और केवल उनका वर्गीकृत आवृत्तिबंटन ही उपलब्ध हो, सर्वाधिक आवृत्ति वाले वर्ग के मध्य अंक को ही बहुलक मान लिया जाता है। यदि आवृत्ति-बंटन के विषय मे केवल माध्य (Mean) तथा माध्यिका (Median) ज्ञात हो तो बहुलक ज्ञात करने के लिए इस सूत्र का उपयोग किया जाता है :

बहुलक = ३ माध्यिका — २ माध्य। बहुलक से यह पता चलता है कि अंकों का सर्वाधिक जमाव कहाँ पर है। अर्थात् *विभिन्न व्यक्तियों मे सबसे अधिक व्यक्ति* किस माप के हैं। अथवा एक ही व्यक्ति का सबसे अधिक अवसरों पर प्राप्त होने वाला माप क्या है? बहुत-से पूर्वानुमान बहुलकों के आधार पर ही किए जाते हैं।

Molar [मोलर] : पुंज।

मात्रा या मात्रों से सम्बन्धित तथा सापेक्ष रूप से बडे और बिना विश्लेषण किए हुए तथ्यों से सम्बन्धित।

Molar Behaviour [मोलर बिहेवियर] : पुंजव्यवहार।

आधुनिक मनोविज्ञान मे व्यवहार के बारे की वह धारणा-विशेष जिसके अनुसार व्यवहार शारीरिक अंशों-क्रियाओं के जोड से अधिक हो, अथवा भिन्न हो। अर्थात् व्यवहार की परिभाषा केवल उसके आधार-भूत शारीरिक विस्तार, ग्राहक क्रियाओं, प्रभावक क्रियाओं के अर्थ में न करके व्यवहार की 'निर्गत घटना' (Emergent phenomenon) माना जाए जिसमे वर्णन की जाने योग्य अपनी निज की निश्चित विशेषता हो—जिसमे कि उद्दीपक तथा अनुक्रिया का सरल सम्बन्ध मात्र नहीं होता, अथवा जिसकी परिभाषा उद्दीपन अनुक्रिया के पारस्परिक सम्बन्ध से विभिन्न दी जाती है। सी० डी० ब्राड ने अपने ग्रन्थ (Mind And Its

Place in Nature) मे पहले-पहले पुंज (Molor) और आणविक (Moleculas) व्यवहार के अन्तर को स्पष्ट किया। ब्राड के व्यवहारवाद की पुंज परिभाषा उस प्रचलित व्यवहारवाद के विवरण से विभिन्न है जिसका केवल स्थूल निरीक्षण की जानेवाली क्रिया से सम्बन्ध है तथा तन्त्रिकातन्त्र अथवा मस्तिष्क के अणु मे होनेवाली अनुमानित क्रिया से सम्बन्धित है। ऐतिहासिक दृष्टि से व्यवहारवाद मे वाटसन द्वारा अंकित विवरण व्यवहार की आणविक परिभाषा (Mollcula definition) है। पश्चात् के व्यवहारवादियो ने, जैसे हाल्ट डी लागूना, वेस, कादर, टॉलमैन आदि ने व्यवहार की पुंज परिभाषा उपस्थापित की है। वस्तुत व्यवहार या व्यवहार प्रक्रियाओ मे पर्याप्त रूप से अपने निजी गुण होते हैं। अर्थात् उनकी तादात्म्यता तथा विवरण उनके आधारभूत स्नायविक क्रिया तथा मानसिक ग्रन्थियो के बिना भी की जा सकती है।

Molecular [मालेक्युलर] आणविक।
अणु (Molecule) से सम्बन्धित। सापेक्ष रूप से लघुता अथवा विस्तृत विश्लेपण के परिणामस्वरूप प्राप्त तत्त्वो की विशेषता सूचक।

देखिए—Molar Behaviour

Mongolism [मगालिज्म]
इस वर्ग के व्यक्तियो की आकृति एक विशेष प्रकार की होती है। इनका सिर गोल और छोटा होता है। सिर के आगे-पीछे का भाग समतल होता है, गाल की हड्डी उभडी रहती है जिह्वा बडी, नाक और मुह के पास की रेखा मे दोष होता है, नाक छोटी होती है होठ मोटा होता है और कान आकार मे बडा होता है। इनका अँगूठा और कानी उँगली बहुत छोटी होती है। मगोल मे दो तिहाई निर्बल रहते हैं और एक-तिहाई जड वर्ग (Idiot) के। निग्रो जाति के बच्चो मे यह दोष मिलता है अन्य जाति मे कम होता है। इस वर्ग के बालक अधिक उम्र मे बोलना प्रारम्भ करते हैं और कभी तो इस गुण से वंचित रहते हैं। स्वभाव मे सरल और सहानुभूतिशील रहते हैं। देखने मे सजीव प्रखर होते हैं, किन्तु बुद्धि-स्तर निर्बल रहता है। मगोल प्रकार के बच्चो के पैदा होने का कारण: (१) माता-पिता का मद सेवन, (२) सिफलिस, (३) विटामिन डी की कमी, (४) ग्रन्थि-स्राव मे असतुलन, (५) अधिक उम्र पर बालक का जन्म (आयु का प्रभाव विवादास्पद है), (६) वंशागत विशेषता इत्यादि।

Mood [मूड] भावदशा।
भावदशा भावात्मक अवस्था अथवा भावात्मक रुख है जो कुछ समय तक स्थिर होकर रहती है और अर्द्ध उत्तेजना की अवस्था मे विशेष सवेग से सम्बन्धित रहती है ताकि सुगमता से जागृत हो सके (क्षोभ, चिन्ता, आह्लाद)। भावदशा की परिभाषा इस प्रकार है—"यह सवेगिक क्षोभ का स्थायी तत्कालीन परिणाम है अथवा अधिक समय का विलुप्त सशक्त भाव स्वर है।" भावदशा जीवरसायन तथ्य पर अवलम्बित है, तथा यह सामान्य शारीरिक अवस्था तथा व्यक्ति के अनुभव पर निर्भर है। प्राय भावदशा उत्तेजक मे अस्पष्ट स्वरूप से उत्पन्न होती है तथा अन्त ग्राहको (interceptors) को प्रभावित करती है। भावदशा की स्थापना स्थायी द्वन्द्वपूर्ण तनाव के द्वारा भी होती है।

ऐसे व्यक्ति जिनकी अस्वाभाविक रूप से उग्र तथा अनियन्त्रित भावदशा रहती है, जिन्हे साधारण उल्लास से लेकर अत्यधिक विषाद होता है, उन्हे साइकोथायमिक कहते हैं। भावदशा के अत्यधिक उलट-फेर का कारण विटामिन सम्बन्धी न्यूनता, गलग्रन्थी सम्बन्धी दोष, दोषपूर्ण स्वास्थ्य तथा मद का अत्यधिक सेवन होते हैं। ये शारीरिक कारण हैं। भावदशा की प्रबलता का मनोवैज्ञानिक कारण भी है।

भावदशा से व्यक्ति की सम्पूर्ण तात्कालिक अनुभूति को भावात्मक वर्ण प्रदान होता है।

Mores [मोर्स] : लोकप्रथा।
किसी भी सामाजिक समुदाय के ऐसे विशिष्ट अनुमोदनप्राप्त रीति-रिवाज जिसके उल्लघन करने वाले दोषी दड के भागी होते हैं !

Moron [मोरोन] : मूढ।
मानसिक विकास के दृष्टिकोण से अपेक्षाकृत कम पिछड़ा हुआ व्यक्ति जिसकी बुद्धि-लब्धि ५० से ७० तक पाई जाती है। ऐसे व्यक्ति जीवन की साधारण परिस्थितियों मे अपने-आपको एक सीमा तक अभियोजित कर सकते हैं। छोटे-मोटे कार्यों को, जिनमे विशेष चातुर्य अथवा बौद्धिकता की आवश्यकता नही हो, सीख सकते हैं। उचित देख-रेख मे साधारण अध्ययन (अधिक-से-अधिक चौथी-पाँचवी कक्षा तक) से भी लाभ उठा सकते हैं। इनका सामाजिक विकास प्रौढ व्यक्तियो के सामाजिक विकास के समान होता है, लेकिन इनमे प्रौढ़ कल्पना और निर्णय-बुद्धि का अभाव पाया जाता है। लगातार कुछ समय तक किसी काम मे लगे रहना अथवा उत्तरदायित्व वहन करना इनके वस का नही। जीवन मे अधिकाशत: ये अपनी आदतों और प्रारम्भिक अवस्था मे प्राप्त प्रशिक्षण से ही निर्देशित होते हैं। शारीरिक दृष्टि से ये साधारण व्यक्ति की तरह होते है। इनमें 'सामाजिक हीनता' भी रहती है।

Morphology [मॉरफॉलोजी] : आकृति-विज्ञान।
वह जीव-विज्ञान जिसमें कि शारीरिक आकारों और उनकी रचनाओ का अध्ययन होता है।

Motive [मोटिव] : प्रेरक, प्रेरणा।
अन्तर्नोद (Drive) एव लक्ष्य (Goal) से सहसम्बन्धित एक सामान्य विचार। बिना अतर्नोद एवं लक्ष्य के प्रेरक का होना असभव है। प्रेरक गतिमान् एव निर्देशित शक्ति होती है। प्रेरक की यह भी परिभाषा की जा सकती है कि यह मानव या अवयव की शारीरिक शक्तियो को वातावरण के किसी चुने हुए भाग की ओर गतिमान एव निर्देशित अवस्था है। बहुत-से समाज-मनोवैज्ञानिक प्रेरक और अंतर्नोद को एक ही स्वरूप मानते हैं जो व्यवहार का निर्देशन मात्र है। प्रेरक का सम्बन्ध व्यवहार की निर्देशित श्रेणी से नही है, बल्कि यह अवयव की एक अवस्था है। प्रेरक किसी व्यवहार के प्रदर्शन का सकेत नही करता है वरन् यह किसी व्यक्ति की शक्ति को एक निश्चित दिशा मे नियोजित करने का एक मार्ग है।

Motivation [मोटिवेशन] : अभिप्रेरण।
वृत्ति, अतर्नोद माँग द्वारा प्रेरित क्रिया को ही अभिप्रेरण कहते है। इसके तीन प्रमुख कार्य है : (१) क्रिया को उत्पन्न करना, (२) उसे बनाए रखना, तथा (३) लक्ष्य की प्राप्ति तक उसे एक निश्चित दिशा की ओर निर्दिष्ट करते रहना। उदाहरण के लिए क्षुधावृत्ति से आक्रान्त होने पर व्यक्ति के पाचन-तत्र मे एक विशेष प्रकार की सक्रियता आ जाती है। यह सक्रियता व्यक्ति के बाह्य व्यवहार एव अनुभूति (एक प्रकार का तनाव) मे भी लक्षित होती है और तब तक बनी रहती है जब तक कि उसकी क्षुधातृप्ति नही हो जाती।
अभिप्रेरण की क्रिया मे तीन तथ्यो का विशेष महत्त्व है: (१) आवश्यकता—प्राणी के शारीरिक अथवा मानसिक जीवन में किसी आवश्यक तत्त्व के पूर्ण अथवा आंशिक अभाव के कारण उसकी पूर्ति का भाव, (२) अंतर्नोद—उक्त अभाव के कारण व्यक्ति के सतुलन-अभियोजन में गड़बड़ी और तनाव की अनुभूति। यह तनाव की अनुभूति ही व्यक्ति को अभाव-पूर्ति अथवा सतुलन-सामजस्य की ओर अग्रसर करती है, (३) उद्दीपक—वह वस्तु जो चालन की तीव्रता को और अधिक बढाती अथवा शान्त करती है। शरीर में जलीय अश की कमी होने पर प्यास लगती है। प्यास एक प्रकार की तनाव की स्थिति है जो प्राणी को जलीय द्रव्य की खोज कर उसे शान्त करने की ओर

अग्रसर करती है। जलीय द्रव्य वह उद्दीपक है जिसका प्रत्यक्षण मात्र प्यास को और भी बढा देता है तथा पान उसे शान्त कर देता है। प्रेरक का वर्गीकरण कई प्रकार से हुआ है, यथा जन्मजात (भूख, प्यास आदि) और अर्जित (प्यार, सुरक्षा, आत्म-सम्मानादि)। दूसरा वर्गीकरण है व्यक्तिगत प्रेरक (जीवन लक्ष्य, आकाक्षा का स्तर, मद व्यसन आदि) और सामाजिक प्रेरक (सामुदायिकता, आत्मस्थापन एव युयुत्सा आदि)।

देखिये—Motive

Motor Ability [मोटर एबिलिटी] : गति-योग्यता।

इसके अन्तर्गत प्राय हस्तक्रिया-कौशल तथा खेल कूद मे प्रवीणता की गणना की जाती है। इनके परीक्षणो का खण्ड-विश्लेषण करने के कई प्रयत्न हुए हैं, किंतु विभिन्न क्रिया योग्यता परीक्षणो मे परस्पर सहसम्बन्ध (Coefficient correlation) बहुत लघु रहे हैं और एक सामान्य क्रिया-योग्यता की धारणा की पुष्टि नही प्राप्त हुई है। इसलिए इन परीक्षणो द्वारा मापित क्रियाओ को अधिकाशत विशिष्ट माना गया है। केवल कुछ सापेक्षत सकुचित सामूहिक खण्ड पहचाने गये हैं, जैसे स्थिरता परीक्षणो (Steadiness) मे एक सामान्य खण्ड मिला है। क्रियासुधार, विशिष्ट क्रियावेग सीमित दोलनात्मक गतियो मे अगुल हस्त तथा अग्रभुजा के वेग मे भी सामूहिक खण्ड मिले हैं। प्राप्त सामान्य खड प्राय पेशिसमूहो, शरीर के अग अथवा सवेदनो से नही गति के प्रकार की अथवा उसकी आकृति की समानताओ से सम्बन्धित है। जटिल गति परीक्षणो मे बहुधा देश खण्ड भी पाया जाता है। प्रमुख परीक्षण खटखटान परीक्षण हैं जिसमे यह देखा जा सकता है कि परीक्षार्थी अभ्यास के बिना एक सैकड मे कितनी बार खटखटा सकता है।

Motor Area [मोटर एरिया] गति क्षेत्र।

बृहत्-मस्तिष्क के अग्र खड मे रोलैंडो की दरार के ठीक सामने स्थित क्षेत्र जिसका सम्बन्ध प्राणी की क्रियावाही समर्थनाओ से है। प्रत्येक गतिवाही प्रक्रिया का केन्द्र यही है और यही से वे सचालित होती हैं। यहाँ से निकलकर प्रेरकतन्त्रिका शरीर के प्रत्येक प्रभावक अगो मे जाते हैं। यदि इस क्षेत्र के किसी भी भाग को कृत्रिम ढग से उत्तजित किया जाए तो उससे सम्बन्धित ऐच्छिक मासपेशियो मे गति देखने को मिलती है और उस भाग को नष्ट कर देने पर सम्बन्धित गति भी विकृत हो जाती है। मस्तिष्क पर आघात लगने से यदि इस क्षेत्र मे रक्त-सचालन बन्द हो जाए तो व्यक्ति पर पक्षाघात का आक्रमण होता है।

गति-क्षत्र मे प्रभावक अगो को नियन्त्रित करनेवाले केन्द्र ऊपर से नीचे को ओर पाए जाते हैं, अर्थात् पैर की उँगलियों के केन्द्र सबसे ऊपर, पैर के उससे नीचे, घुटनो के उससे नीचे, जाँघों के उससे नीचे, इसी क्रम मे सिर के सबसे नीचे।

Movement Error [मूवमेंट एरर] : गति त्रुटि।

मनोवैज्ञानिक प्रयोग की मध्यक त्रुटि विधि मे गति दिशा के कारण होने वाली स्थिर त्रुटि। इसका परिमाण ज्ञात करने के लिए विपरीत दिशाओ की गति की अवस्थाओ मे प्राप्त मध्यक प्रेक्षणो के अन्तर का आधा कर लिया जाता है। इसका सूत्र है

$$\text{गति त्रुटि} = \frac{\text{म}_1 - \text{म}_2}{२}$$

जहाँ म_1 तथा म_2 दोनो विपरीत दिशाओ मे की गई गतियो से प्राप्त मध्यक प्रेक्षण है। गति त्रुटि ज्ञात करने का महत्त्व तब होता है जब परिवर्तन विश्लेषण द्वारा दोनो दिशाओ की गतियों के प्राप्त प्रेक्षण-समूहो मे महत्त्वपूर्ण अन्तर प्रतीत हो और इसलिए सभी प्रेक्षणो को एक साथ जोडकर एक मध्य त्रुटि माप ज्ञात करना उचित न हो।

Muller Lyer Illusion [मूलर लायर एल्यूजन] : मुलर लायर भ्रम ।

मुलर लायर द्वारा आविष्कृत विशेष प्रकार के ज्यामितिक विपर्यय । इसमें भौतिक दृष्टि से दो समान दूरियाँ अन्य रेखाओं तथा क्षेत्रों के प्रभाव के कारण समान नहीं प्रतीत होतीं, जैसे (१) बाण-पंख रेखायुक्त—इसमें समान लम्बाई की दो सरल रेखाओं में से एक के दोनों छोरों पर बाण-रेखा और दूसरे के दोनों छोरों पर पंख-रेखा रहती है । इन बाण और पंख-रेखाओं के प्रभाव-स्वरूप पंखयुक्त रेखा बाणयुक्त रेखा से बड़ी मालूम होती है । अभ्यास द्वारा यह भ्रम-प्रभाव घटते भी देखा जाता है । (२) मुलर-लायर समकोण चतुर्भुज—इसके अन्तर्गत दो वर्गों और वर्गों के समान ही लम्बाई वाले दो समकोण चतुर्भुजों के बीच घिरा हुआ स्थान अथवा क्षेत्र रिक्त से छोटा मालूम पड़ता है ।

Multiple Choice Test [मल्टिपल् चॉयस टेस्ट] : बहुविकल्प-परीक्षण ।

मनोवैज्ञानिक तथ्यात्मक परीक्षणों की एक आकृति जिसमें परीक्ष्य व्यक्ति के समक्ष प्रत्येक प्रश्न अथवा अधूरे वाक्य के साथ तीन, चार या पाँच वैकल्पिक उत्तरों का उपस्थापन किया जाता है और उसे उनमें से यथार्थ अथवा सर्वश्रेष्ठ उत्तर को पहचानकर बताना होता है । इस प्रकार के परीक्षणों में विशेष लाभ यह है कि संयोगिक सफलता की सम्भावना दो से अधिक विकल्पों में बँट जाने से द्विविकल्प परीक्षणों की अपेक्षा कम हो जाती है और किसी भी विकल्प का सर्वथा यथार्थ अथवा अयथार्थ होना आवश्यक नहीं होता । बहु-विकल्प परीक्षण मुख्यतः निम्न प्रकार की बातें पूछने के लिए विशेषतया उपयोगी है—(१) परिभाषाएँ, (२) उद्देश्य, (३) कारण, (४) परिणाम, (५) सम्बन्ध, (६) त्रुटि-अस्तित्व, (७) त्रुटि-स्वरूप, (८) मूल्य, (९) अन्तर, (१०) समानता, (११) क्रम, (१२) पूर्ति, (१३) सन्दर्भ बाह्यता, (१४) विवादग्रस्त विषय, (१५) बहुउत्तरता ।

Multiple Personality [मल्टिपल् पर्सनेलिटी] : बहुपक्षी व्यक्तित्व ।

किसी एक ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का आंशिक रूप से स्वतन्त्र अनुभूति-प्रणालियों में विघटित हो क्रियाशील रहना । व्यापक दृष्टि से द्वैध व्यक्तित्व (Dual Personality) भी इसी के अन्तर्गत आ जाता है ।

व्यक्तित्व का यह विघटन विशेष मानसिक तनाव के कारण होता है । इनमें से प्रत्येक विघटित व्यक्तित्व-प्रणाली की अपनी स्पष्ट एवं भिन्न संवेगात्मक तथा चिन्तन-प्रक्रियाएँ होती हैं और वह एक विशिष्ट एवं अपेक्षाकृत स्थिर व्यक्तित्व का प्रतिनिधित्व करती हैं । ये प्रायः एक-दूसरे की विरोधी होती हैं—यथा एक यदि सरल प्रकृतिवाली है तो दूसरी जटिल, एक यदि नैतिक है तो दूसरी अनैतिक । एक प्रणाली के अन्तर्गत जो होता है, प्रायः दूसरी को उसका कोई ज्ञान नहीं रहता । कभी-कभी इनमें से एक पूर्णतः व्यक्त रहती है और चेतन रूप से सक्रिय रहती है; दूसरी अवचेतन रूप से सक्रिय रहती है । उसे सह-चेतन व्यक्तित्व कहते हैं । ऐसे में सहचेतन व्यक्तित्व चेतन की सभी बातों-क्रियाओं का ज्ञान रखता है और उसे प्रकारान्तर से (यथा स्वप्रेरित लेखन के द्वारा) प्रकट भी कर सकता है, पर चेतन अवचेतन के क्रिया-कलापों से पूर्णतः अनभिज्ञ रहता है । सहचेतन व्यक्तित्व एक से अधिक भी हो सकते हैं ।

मार्टन प्रिंस द्वारा उद्‌घाटित ब्यूकैम्प का प्रसिद्ध केस बहुपक्षी व्यक्तित्व का एक सुन्दर उदाहरण है । ब्यूकैम्प एक नवयौवना नर्स थी । उच्च आदर्शों के कारण उसका व्यक्तित्व विघटित हो गया था । इन विघटित प्रणालियों में से प्रमुख 'सन्त', 'नारी' एवं दानवी के व्यक्तित्व थे । अपने साधारण व्यक्तित्व में वह एक हारी-थकी लड़की थी । सम्मोहनावस्था में उसका यही

व्यक्तित्व कुछ और स्वतन्त्र एव असमर्मित रूप मे प्रकट होता था। इसी प्रकार मास का एक लूई विवेट का केस था जिसमे कम से-कम छ भिन्न व्यक्तित्व पाए जाते थे।

कथा साहित्य से पृथक् व्यावहारिक जीवन मे बहुरूपी व्यक्तित्व के उदाहरण कम मिलते हैं।

Mutism [म्युटिज्म] · मूकता।

वाक्‌शक्ति का पूर्ण अथवा आंशिक अभाव। यह प्राय बहरेपन के साथ पाया जाता है। इसका कारण मुखगह्वर-संस्थान का कोई दोष है। यह मनोवैज्ञानिक अथवा संवेगात्मक संघर्ष के कारण भी हो सकता है। हिस्टीरिया के रोगी मे यह लक्षण प्राय दृष्टिगोचर होता है।

Mycro-cephaly [मायक्रो सिफेली].

यह मानसिक क्षीणता (Mental Deficiency) का एक नैदानिक प्रकार है और इसका मुख्य लक्षण बुद्धि स्तर का निर्बल और जड होना है। इनका कद छोटा रहता है, मस्तिष्क विकसित नहीं हो पाता, और इनकी लम्बी आयु नहीं हो पाती। इसका ठीक-ठीक कारण अभी तक समझा नहीं जा सका है। कुछ ऐसी धारणा है कि गर्भावस्था म एक्सरे मे किरण प्रवेश कर जाने से इस प्रकार के बालकों का जन्म होता है। मायक्रोसिफली म व्यक्ति की भावात्मक अभिव्यक्ति पूर्णत स्वतन्त्र रहती है, जाद अज्ञान मे कोई रोक-टोक नही रहती इच्छा भाव का दमन नहीं होता और भाव का मुक्त प्रदर्शन होता है। स्वभाव मे ये अस्त व्यस्त और उग्र पाए जाते हैं।

Mysticism [मिस्टीसिज्म] रहस्यवाद।

सामान्यत इस धारणा का अर्थ है—यह विश्वास कि सत्य की प्राप्ति ध्यान द्वारा होती है जो अन्तर्दृष्टि अथवा ज्ञान द्वारा अभेद्य है। विलियम जेम्स (१८४२-१९१०) के अनुसार रहस्यवाद अनुभूति का वह आंतर रूप है जिसमे व्यक्ति जगत् मे ऐसे सत्ता के सम्पर्क म आता है जिनसे संवेदनात्मक और आध्यात्मिक प्रक्रियाओ द्वारा अवगत नही हो सकता। यह अदृश्य जगत मे झाँकी लेने की एक खिड़की है—सत्य से साक्षात् का एक तरीका जो अदृश्य-तिरोहित है। जेम्स ने इस अन्त स्फुरित अनुभूति की अवस्था के बारे मे दो सामान्य तथ्यो का निरूपण किया है (१) रहस्यात्मक अनुभूति सुखात्म है—यह दुख-वेदना पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् अनुभव होती है, और (२) इसमे जगत का प्रदर्शन समन्वित रूप मे होता है।

मनोविश्लेषण के अनुसार रहस्यवाद-सम्बन्धी अनुभूतियाँ सुपरअहम्‌न (Superego) का प्रक्षेपण (Projection) मात्र है।

देखिये—Superego

Narcissism (Narcism) [नारसिज्म] आत्मरति।

अपने प्रति कामोत्तेजक प्रेम भाव। प्रसिद्ध पौराणिक कथा है कि नारसीसस ने अपनी छाया जल मे देखी और उसी पर मुग्ध हो गया, "लुक, लुक इन दि मिरर, हाउ ब्यूटीफुल आई एम, आई ड नॉट वान्ट एनी थिंग बट दी।" इस पौराणिक कथा के आधार पर फ्रायड ने इस प्रत्यय अथवा कल्पना धारणा का अनुमान लगाया है। जिस व्यक्ति के आकर्षण प्रेम की वस्तु बाह्य जगत म नही होती और उसका प्रेम अपने पे होता है वही आत्मप्रेमी कहलाता है। व्यक्ति बाह्य वस्तु मे रस नहीं लेता, उसका केन्द्रीयण अपने मे रहता है। सामान्यत यह विशेषता अन्तर्मुखी व्यक्तियों की होती है। यह विशेषता संविभ्रम (Parano a) और अकाल मनोभ्रंश (Dementia Praecox) के रोगी की भी होती है। तनाव से मुक्त होने के लिए बाह्य वस्तुओ म रुचि-आस्था का होना आवश्यक है। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है। प्रारम्भिक आत्मरति मे बालक के प्रेम और आकर्षण की वस्तुएँ अपना शरीर मात्र होता है। फ्रायड के अनुसार यह मनोलैंगिक विकास (Psycho-sexual development) की प्रारम्भिक अवस्था है।

Nativism [नेटिविज़म] : आनुवंशिकतावाद।

प्रायोगिक मनोविज्ञान के इतिहास में यह एक अरोचक-शुष्क विषय-समस्या है। दार्शनिक देकार्त का जन्मदत्त प्रत्ययों के अस्तित्व पर एकपक्षीय रूप से बल देना, लाइबनीज़ का प्राग् स्थापित समायोजन का सिद्धान्त तथा कांट का प्रागनुभव अन्तःप्रज्ञा (Apriori Intuition) का उल्लेख प्रसंगानुकूल है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में मुलर ने आनुवंशिकतावाद को पूर्णतः स्वीकार किया। उनका दृश्य-दिक् प्रत्यक्षण-सिद्धान्त विशिष्ट-शक्ति सिद्धान्त और कांट के अन्तःप्रज्ञावाद से भी सम्बन्धित है। मन द्वारा दृष्टिपटल की प्रतिमा के दिक् सम्बन्धों का प्रत्यक्ष अवलोकन होता है। दृष्टि तन्त्रिकातन्तुओं से, जिनके साथ मन का प्रत्यक्ष ज्ञानात्मक सम्बन्ध होता है, ये सम्बन्ध सुरक्षित रहते हैं। हेरिंग, लॉटस, स्टम्फ, गौये तथा वर्तमान सम्पूर्ण गेस्टॉल्टवादी मनोविज्ञान आनुवंशिकतावादी है जो स्वत.स्फूर्त अन्त.प्रज्ञावाद के प्रवर्तक थे।

Naturalism [नैचुरेलिज़म] : प्रकृतिवाद।

विश्व तथा उसमें मानव के महत्त्व से सम्बन्धित एक दार्शनिक सिद्धान्त जो प्राकृत शक्तियों एवं नियमों के क्रिया-व्यापार पर बल देता है और इसके अतिरिक्त अन्य किसी सत्ता को नहीं मानता। बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में ग्रीक दार्शनिक एरिसटॉटिल के सिद्धान्तों का पुनरुत्थान होने पर मनीषियों की प्रकृतिवाद में रुचि उत्पन्न हुई। सत्रहवीं शताब्दी में व्याप्त भौतिकवादी परम्परा से हॉब्स भी प्रभावित हुए और इसी आधार पर उन्होंने अपनी मानव-स्वभाव की उस विशद कल्पना का निर्माण किया जो कालान्तर में प्रकृतिवादी कहलाई। हॉब्स की मानव-स्वभाव की व्याख्या का आधार प्रकृतिवाद ही रहा। उनका कथन है कि मानव स्वभाव वस्तुतः प्राकृत, ध्वंसात्मक, एवं पशु-तुल्य होता है।

Need [नीड] : आवश्यकता।

आवश्यकता एक शारीरिक अवस्था है जो अधिकतर शरीर में किसी प्रकार का अभाव या कमी का द्योतक है। कभी-कभी यह अधिकता का भी द्योतक होता है। आवश्यकता व्यक्ति को ऐसे व्यवहार के लिए बाध्य करती है जिससे शारीरिक अवस्था सुयोजित हो जाए। यह व्यवहार अन्तर्नोद है। आवश्यकता का अस्तित्व बिना अन्तर्नोद (Drive) के भी हो सकता है। उदाहरण के लिए एक चूहे को विटैमिन 'ए' से तब तक के लिए वंचित किया गया जब तक कि शारीरिक माँग जागृत न हो गई। जब चूहे को भोजन के चुनाव की स्वतन्त्रता रहती है तब भी यह आवश्यक नहीं है वह उसी भोजन को चुने जिसमें विटामिन 'ए' है। अन्तर्नोद बिना माँग के भी उपस्थित हो सकता है। एक कुत्ते में यह अन्तर्नोद हो सकता है कि वह अपने स्वामी को न कोच ले। एक मुर्गी, जिसने अनाज के ढेर को छोड़ दिया है यदि क्षुधित मुर्गी वहाँ लाई जाए तो वह फिर वहाँ आ सकती है और भोजन में संलग्न हो सकती है। शारीरिक अवस्थाएँ प्राणी में सामान्य बेचैनी तनाव उत्पन्न कर सकती हैं। ऐसी अवस्था में अन्तर्नोद विशेष हीन हो जाता है। मनोवैज्ञानिक अभी तक अन्तर्नोद की परिभाषा भोग के अर्थ में स्वीकार करने के लिए तत्पर नहीं हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इन्हें निश्चित अर्थ प्रदान किया है; कुछ ने इन धारणाओं को व्यापक अर्थ में प्रयोग किया है। तब भी आवश्यकता के लिए जो प्रयोग हुए हैं अर्थ द्वारा इनमें पारस्परिक विभिन्नीकरण का सफल प्रयास नहीं हो सका है।

देखिए—Drive.

Negative after Image [निगेटिव ऑफ्टर इमेज] : विषम उत्तर-प्रतिमा।

जब उत्तर-प्रतिमा की अनुभूति मूल उद्दीपन की विरोधी अथवा उसके पूरक रंग की होती है—यथा लाल की हरी, नीले की पीली, सफेद की काली—तो

उसे विषम उत्तर-प्रतिमा या विषम अनुबिम्ब कहते हैं। (दे० After Image)

Negativism [निगेटिविज्म] नकार वृत्ति।

दूसरो द्वारा कथित अथवा निर्दिष्ट बातो का कडा विरोध करने की प्रवृत्ति। कभी-कभी यह प्रवृत्ति इतनी बढ जाती है कि व्यक्ति से जो कहो वह उसका उल्टा करता है। यह सामान्य (सभी बातों का विरोध) अथवा विशिष्ट (कार्य विशेष, जैसे खाने, पहनने, देखने सुनने आदि का विरोध) दोनो ही प्रकार की होती है। छोटे छोटे बच्चों तथा कैटेटोनिया प्रकार के अकाल मनोभ्रंश मे यह लक्षण अथवा प्रवृत्ति विशेष रूप से पाई जाती है। यह इस मानसिक रोग का एक प्रमुख लक्षण है। बच्चो मे भी यह आदत देखी जाती है।

Negative Valence [निगेटिव वैलेन्स] विकर्षण शक्ति।

देखिए—Valence

Neonate [निओनेट] नवजात।

नया पैदा हुआ बच्चा। शिशु के जन्म से कुछ सप्ताह तक की अवस्था के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है। जन्म बालक के जीवन मे एक घटना मात्र है। बहुत-सी विशेषताएँ जन्म के पूर्व ही उसकी विकसित हो जाती हैं। गर्भ से बाहर आने पर वह कतिपय जटिल सहज क्रियाओ—छींकना, खांसना, आँखें झपकाना, पकडना, हाथ-पैरो का फेंकना आदि—के सम्पादन मे समर्थ होता है।

प्रारम्भ मे नवजात शिशु का व्यवहार, उसकी प्रतिक्रियाएँ सामूहिक होती हैं। किसी भी उत्तेजक के प्रभाव में उसका सम्पूर्ण अवयव उत्तेजित हो जाता है। आगे चलकर इन प्रतिक्रियाओ में वैभिन्य और सन्तुलन का स्पष्ट आभास मिलने लगता है। पहले हाथो और भुजाओ मे गति आती है। तदनन्तर जघाओ और पैरो में विकास अपने इसी क्रम मे सामान्य से विशिष्ट तथा सामूहिक और असन्तुलित से पृथक् और सन्तुलित की ओर बढता है। तन्त्रिकातन्त्र मे जितनी ही परिपक्वता आती है, अग प्रत्यग की गतियो का पृथक्करण भी उतना ही स्पष्ट होता जाता है। नवजात शिशु की प्रेरक प्रतिक्रियाओ मे रुदन, अँगूठा चूसना, पैरो का सचालन, पैर के अँगूठे का सिकोडना-फैलाना, पकडना, छींकना, खांसना, जमुहाई लेना, वमन करना आदि प्रमुख हैं।

सवेदी प्रतिक्रियाओ मे विशेषकर दृष्टि-सवेदन और श्रवण सवेदन अत्यधिक प्रारम्भिक रूप से एक निश्चित आकार ग्रहण करती हैं। नवजात मे सोने, हँसने-मुस्कराने तथा सवेगात्मक क्रियाओ को प्रकट करने की क्षमता भी पाई जाती है।

Neoplasm [निओप्लाज्म] : मस्तिष्क अर्बुद।

मस्तिष्क मे किसी वजह से उत्पन्न हुई सूजन या गाँठ (tumour)।

Nerve Cell [नर्व सैल] तन्त्रिका-कोशिका।

कभी-कभी एक न्यूरॉन (Neuron) को तथा कभी-कभी न्यूरॉन के बीजाडकाय (Nucleus) सहित, परन्तु तन्त्रिकाक्ष (Axon) और शाखिकाओ (दे० Dendrites) के विस्तार के बिना केन्द्रीय भाग को कहा जाता है। कोशिकापिड और तन्त्रिकाकोशिका शरीर इसके पर्याय-वाची हैं।

Nerve Conduction [नर्व कण्डक्शन] : तन्त्रिका सवहन।

तन्त्रिकीय ततुओ द्वारा उद्दीपन तरगो का सक्रमण। सवेदी ततु सवेदन ग्राहकों से आए हुए आवेगो को सुषुम्ना और मस्तिष्क तक पहुँचाते हैं और क्रियावाही, मस्तिष्क और सुषुम्ना से प्रभावकों या कार्यकारी अगो तक सक्रमण करते हैं। साहचर्य ततु (association fibres) मस्तिष्क और सुषुम्ना नाडी तक ही रहते हैं, जो कि ज्ञान और क्रियातन्तु के बीच साहचर्य और दूसरे साहचर्य ततुओं के बीच सम्बन्ध स्थापित करते हैं। तन्तुओ मे

आवेगों का संवहन-तन्तु की शाखिका (Dendrite) से कोशिका अंग की ओर संवहन होता है और वहाँ से लांगूल बहुत ही समीप संसर्ग में होते हैं, उछलकर दूसरे तन्तु के चेताग्रोम की ओर जाते हैं।

Nerve Impulse [नर्व इम्पल्स] : तंत्रिका-आवेग, विद्युत् रासायनिक।

विक्षोभ जो कि तंत्रिकीय आवेगों के रूप में ज्ञात है, विद्युत्वाहक यंत्र पर, विद्युत् दाब में एक परिवर्तन के रूप में अंकित किया जाता है। एक तंतु से जाते हुए, हर उत्तरोत्तर आवेग में वही दाब होता है, चाहे जैसी भी उद्दीपनकारी उत्तेजक की प्रकृति या उत्तेजना की तीव्रता हो। एक प्रबल उत्तेजक द्वारा उद्दीप्त आवेग में वही दाब होता है जैसा कि एक निर्बल उत्तेजक द्वारा उद्दीप्त आवेग (ऑल और नन लॉ)। लेकिन निर्बल उत्तेजक में प्रबल उत्तेजक के रहने पर अपेक्षाकृत एक सेकण्ड में अधिक आवेग उद्दीप्त होते हैं (आवृत्ति संख्या सिद्धान्त)। इसलिए केवल, एक तंत्रिकीय तंतु में उत्तेजक तीव्रता में अन्तर का प्रभाव, विभिन्न तरह के आवेगों की उद्दीप्ति में नहीं, बल्कि आवेगों के अधिक बारम्बार आने में प्रगट होता है। झिल्ली सिद्धान्त के अनुसार, उत्तेजना प्रशामक विद्युत् धारा या विस्तारित विक्षोभ ही तंत्रिकीय आवेग है। इसके संक्रमण की गति, भिन्न-भिन्न स्थूलता के तंतुओं के लिए भिन्न-भिन्न होती है लेकिन औसत गति एक मिनट में चार मील होती है।

Nerve Impulse [नर्व इम्पल्स] : तंत्रिका-आवेग।

शरीरशास्त्रवेत्ताओं के अन्वेषणों के अनुसार तंत्रिका सूत्रों में एक प्रकार की विद्युत्-रासायनिक तरंग (electro-chemical wave motion) पाई जाती है। इसी को तंत्रिका-आवेग कहते हैं। यह तंत्रिका आवेग ही तंत्रिका सूत्रों में गतिशील रहकर बाह्य उत्तेजन की सूचना को केन्द्र तक ले जाता है और केन्द्र से प्राप्त सूचना को प्रभावक अंग तक पहुँचाता है। जिस प्रकार किसी बिजली के बटन को दबाते ही सम्बन्धित तार में एक विद्युत्-प्रवाह उत्पन्न होकर उससे संलग्न बल्ब को जला देता है, उसी प्रकार किसी भी बाह्येन्द्रीय पर पड़ा हुआ उत्तेजन का प्रभाव तंत्रिका-आवेग का रूप धारण कर संलग्न संवेदी सूत्र के द्वारा मस्तिष्क के किसी केन्द्र-विशेष में पहुँच उसे उत्तेजित कर देता है और प्रतिक्रिया का कारण बनता है।

प्रकृति में सभी तंत्रिका-आवेग एक ही प्रकार के होते हैं। भिन्न स्रोतों से प्रारम्भ होकर प्रमस्तिष्कीय वल्क के भिन्न केन्द्रों में पहुँचने के कारण ही ये भिन्न-भिन्न प्रकार की अनुभूतियों को जागृत करने में समर्थ होते हैं।

तंत्रिका-आवेग की गति का मापन १८५० में सबसे पहले होल्ज ने किया था। उनके अनुसार मेढक की प्रेरक तंत्रिका में इसकी गति लगभग २२ मीटर प्रति सेकण्ड और मानव की संवेदी-तंत्रिका में ५० से १०० मीटर प्रति सेकण्ड के बीच होती है। शरीरशास्त्री इस गति को लगभग १२० मीटर प्रति सेकण्ड मानते हैं।

Nervous System [नरवस सिस्टम] : तंत्रिका तंत्र।

किसी भी जीव के शरीर में स्थित तंत्रिकाओं की समग्रता। इसके तीन प्रमुख भाग हैं—केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र, परिधि-तंत्रिका तंत्र तथा स्वचालित तंत्रिका तंत्र।

तंत्रिका तंत्र वह यन्त्र है जो जीव के शरीर के प्रत्येक भाग को एक-दूसरे से सम्बद्ध रखता है और उसे एक इकाई के रूप में काम करने की क्षमता प्रदान करता है। जीव जितना ही विकास की उच्चकोटि का होता है उतना तंत्रिका तंत्र भी उतना ही जटिल होता है।

देखिए—Central Nervous System,
Autonomic Nervous System.

Neurasthenia [न्यूरेसथेनिया] : मनः-

थान्ति।

बीअर्ड (१८७५)—इस शब्द का अर्थ है तंत्रिका बल का ह्रास होना अथवा थकान। यह एक प्रकार का मानसिक रोग है। साधारण और स्नायविक रोग की थकान मे भेद है—(१) इसकी थकान गहरी होती है, (२) यह हर समय बनी रहती है, (३) इस पर विश्राम का कोई प्रभाव नही पडता, और (४) इसका सम्बन्ध तत्रिका से नही होता। आंखो मे घुटन, भारीपन धुन्ध व दुखन सिर मे दर्द गठिया की तरह जोड पर दर्द, कोष्ठ-बद्धता, भूख का कम लगना, अनिद्रा, चिन्ता, अस्थिर मन, चिडचिडा स्वभाव इत्यादि इसके अन्य लक्षण हैं। यह रोग प्राय भावुक तथा अन्तर्मुखी व्यक्तियो को होता है। परिस्थिति का प्रतिकूल होना और इच्छाओ का परस्पर सघर्ष इस मानसिक रोग का मूल कारण है। उपचार के लिए निर्देशन और मनोविश्लेषण की विधियाँ उत्कृष्ट हैं। विश्राम का प्रभाव उलटा पडता है। पुन शिक्षण व्यर्थ है। जब रोगी अपनी दुर्बलता मान लेता है, वह स्वस्थ हो जाता है।

Neurohumoral [न्यूरोह्यूमोरल] अन स्रावी ग्रथि अग।

यह अत स्रावी ग्रथि अग (Endocrines) के स्राव के बारे का अध्ययन, व्याख्या-विवरण है जैसे गलग्रथि से थायराक्सीन, एड्रिनल से एड्रेनीन का स्राव इत्यादि। मानव का मानसिक तथा शारीरिक विकास बहुत-कुछ इन ग्रथियो के न्यून तथा अधिक मात्रा मे स्राव होने पर निर्भर करता है। इन ग्रथियो के स्राव का प्रभाव सवेग (Emotion), भावदशा (Mood) और स्वभाव(Temperament) पर अत्यधिक पडता है।

Neuron [न्यूरॉन] तत्रिका कोशिका।

यह तत्रिका कोशाणु का ही विकसित रूप है। इसे तत्रिका ततु की इकाई माना गया है। इसके प्रमुख तीन भाग हैं: १ कोशिकापिंड—यह तत्रिकाकोशिका का मध्य भाग है। कोशिकापिंड सम्पूर्ण सूत्र का पोषक और उसको जीवन शक्ति है। २ शाखिका—तत्रिकाकोशिका के दो छोरो मे से एक शाखिका होती है। इसमे बहुत-सी शाखाएँ होती हैं। यह उत्तजन को ग्रहण करने का काम करता है। ३ तत्रिकाक्ष—यह सूत्र का दूसरा कम घना तथा लम्बा छोर है। तत्रिकाक्ष का कार्य उत्तेजन को दूसरे तत्र अथवा प्रभावक अग तक पहुँचाना है।

तत्रिकाकोशिकाओ को कार्य-प्रणाली की दृष्टि से तीन वर्गों मे रखा गया है: १ सवेदी तत्रिकाकोशिका (Sensory Neuron)—ये सूत्र ज्ञान का वहन करते हैं। ज्ञानेन्द्रियो के भिन्न-भिन्न भागों से प्रारम्भ होकर केन्द्रीय तत्रिकातत्र तक जाते हैं। इनका शाखिका ज्ञानेन्द्रियो मे और तत्रिकाक्ष ज्ञानेन्द्रियो के बाहर होते हैं जिनका अन्तिम सिरा प्राय केन्द्र मे दूसरी तत्रिकाओ से सम्बन्धित रहता है। इनका कार्य ग्राहक कोषो मे उत्पन्न तत्रिका आवेग को केन्द्रीय तत्रिकातत्र तक पहुँचाना है। २. प्रेरक तत्रिका-कोशिका (Motor Neuron)—ये केन्द्र से चलकर शरीर के भिन्न भिन्न भागो मे स्थित प्रभावको तक जाते हैं। इनकी कोशिकाएँ प्राय केन्द्र मे तथा तत्रिकाक्ष केन्द्र के बाहर प्रभावको मे स्थित हैं। इनका कार्य तत्रिका आवेग के रूप मे मिली उत्तेजना को उसके गन्तव्य स्थान तक पहुँचाना है। ३. सयोजक तत्रिका-कोशिका (Connecting Neuron)—ये तत्रिकाकोशिका प्राय केन्द्रीय तत्रिका-तत्र मे पाए जाते हैं। ये अन्यान्य प्रेरक तत्रिका सूत्रों मे परस्पर सम्बन्ध स्थापित करते हैं।

तत्रिकाकोशिका सिद्धान्त (Neuron theory)—१८६१ मे वाल्डेयर ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इसके अनुसार तत्रिकातत्र असख्य पृथक् तत्रिका-कोषो से निर्मित है जो केवल तत्रिका-सन्धियो पर एक-दूसरे से सम्पर्क स्थापित

करते हैं। इससे पूर्व समस्त तंत्रिकातंत्र की एक अखण्ड इकाई के रूप में ग्रहण किया जाता था।

Neurogram [न्यूरोग्राम] : तन्त्रिका-लेख।

मार्टन प्रिंस (१) केन्द्रीय प्रक्रिया अथवा उद्दीपन के फलस्वरूप केन्द्रीय तन्त्रिकातन्त्र पर पड़ी स्थायी छाप या उसमे निर्मित चिह्न। ये चिह्न प्राणी की स्मृति, व्यक्तित्व आदि का आधार हैं। (२) कोई भी सुनिश्चित केन्द्रीय तन्त्रिका मार्ग।

Neurology [न्यूरोलोजी] : तन्त्रिका-विज्ञान।

जीवविज्ञान की शाखा-विशेष जिसमें तन्त्रिकातन्त्र की रचना, बनावट तथा उसकी कार्य-प्रणाली के बारे मे विशद अन्वेषण प्रस्तुत मिलता है।

देखिए—Nervous System.

Neurophysiology [न्यूरोफिज़िऑलो'जी] : तन्त्रिकीय शरीर-क्रियाविज्ञान।

शरीर-क्रियाविज्ञान की वह शाखा-विशेष जिसमें तंत्र की रचना और उसकी कार्य-प्रणाली का विशेष रूप से अध्ययन होता है। मनोविज्ञान में इसके महत्त्व का सूत्रपात शेरिंग्टन के अनुसधान द्वारा होता है। इसके अन्तर्गत तन्त्रिका-आवेग की प्रकृति तथा उसके सवहन और सक्रमण (transmission) अथवा पारेषण के सम्बन्ध में विशेष रूप से खोज की जाती है।

Neuropsychiatry [न्यूरोसाइक्याट्री] : तन्त्रिकीय मनोविकारविज्ञान।

चिकित्साशास्त्र की शाखा विशेष जिसमें मानसिक विकृतियों (विशेषकर सांरचनिक) की उत्पत्ति, विभिन्न लक्षणों तथा निदान सम्बन्धी अन्वेषण मिलते हैं।

Neuropsychology [न्यूरोसाइकोलोजी] : तन्त्रिकीयमनोविज्ञान।

मनोविज्ञान की शाखा-विशेष जिसमे प्रतिक्रिया यन्त्र की आधारभूत इकाइयो, तन्त्रिकाकोश, उनकी विशेषताओं तथा उनकी कार्यप्रणाली अथवा पूर्ण तन्त्रिकातन्त्र के मनोवैज्ञानिक पक्ष—महत्त्व का विशेष रूप से अध्ययन होता है।

देखिये—Nervous System.

Neuroses [न्यूरोसेस] : तन्त्रिकाताप, मनस्ताप।

वह मनोविकार जो विक्षेप से कम गंभीर और संवेग-सम्बन्धी हो। 'न्यूरोसिस' शब्द 'साइकोन्यूरोसिस' का तद्रूप है किन्तु यह उससे अधिक प्रचलित और स्वीकृत है। प्राचीन ग्रथों मे 'न्यूरोसिस' के अन्तर्गत तीन प्रकार के मानसिक रोग माने गये हैं : न्यूरेस्थेनिया, साइकेस्थेनिया और हिस्टीरिया। अमेरिका की मनोविकार समिति (१९५२) ने मानसिक दुर्बलता मे निहित प्रतिक्रियाओ का निम्न प्रकार से वर्गीकरण किया है :

१. चिन्ता प्रतिक्रिया २. बाध्यकारी मनोग्रस्तियुक्त प्रतिक्रिया ३. भीति प्रतिक्रिया ४ दुर्बल विषाद प्रतिक्रिया ५. रूपान्तर प्रतिक्रिया ६. विच्छेद प्रतिक्रिया तथा ७. अन्य विशिष्ट दुर्बल प्रतिक्रियाएँ।

Nissl Bodies [निसल बॉडीज] : निसल पिंड।

पिंड शाखिकाएँ (Dendrites) और **nerve cell body** में पाए जाने वाले बड़े-बडे दाने (granules)।

Noesis [नॉयसिस्] : ज्ञान-प्रक्रिया।

मानसिक प्रक्रियाएँ जोकि मूलतः निर्णय की प्रक्रियाएँ ही हैं 'नॉयटिक प्रोसेस्' कहलाती हैं। प्रज्ञान का व्यवहार मनोवैज्ञानिकों ने किसी वस्तु का बोध होने वाली मानसिक क्रिया के लिए किया है। यह अनुभव और इच्छा की क्रिया से भिन्न है। प्रज्ञान (Cognition) में प्रमुख प्रक्रियाओ द्वारा गृहीत मार्ग के अभिधान के लिए स्पीयरमैन ने 'नॉयजेनेसिस' (Noegenesis) शब्द का प्रयोग किया है।

Non Directive Therapy [नॉन डायरेक्टिव थेरेपी] : अनिर्देशात्मक चिकित्सा।

(रोजर्स) मानसिक उपचार की एक विधि जिसमे रोगी को सक्रिय रखकर बिना

कोई निर्देश दिये उसे स्वस्थ बनाने का प्रयास किया जाता है। एक प्रकार से यह स्व सरक्षण है। रोगी चिकित्सक पर आश्रित नही होता, और इसमे परिस्थितियो की व्याख्या नही की जाती, रोगी को परोक्ष रूप से सहायता दी जाती है जिससे उसके ज्ञानात्मक और सवेगात्मक क्षेत्र मे परिपक्वता आए और वह अपने को वर्तमान और भविष्य की परिस्थितियो से समायोजित कर सके। स्व रक्षण की व्यवस्था रहे यह चिकित्सक का दायित्व होता है। सवेगात्मक क्षेत्र मे समायोजन लाने के लिए चिकित्सक का सहयोग आवश्यक है।

यह विधि मनोविश्लेषण से मिलती-जुलती है। दोनो मे ही चेतन-अवचेतन स्तर पर प्रस्तुत भावना-इच्छाओ की अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता रहती है। अन्तर यह है अनिर्देशात्मक उपचार मे रोगी का परिचय वर्तमान की समस्याओं से रहता है मनोविश्लेषण मे अतीत की स्मृति अनुभूतियो की ओर सकेत रहता है। यह विधि सफल रही है और इसमे रोगी मे एक विशिष्ट सूझ का विकास होने से वह स्वस्थ हो जाता है।

अनिर्देशात्मक उपचार के कुछ दोष हैं (१) कुछ ऐसे व्यक्ति और रोग हैं जिन पर इसका कोई प्रभाव नही पडता। (२) जिनका बौद्धिक स्तर ऊँचा है उन पर ही यह विधि सफल होती है। (३) इसमे वर्तमान परिस्थितियो से सम्बन्धित समस्याएँ सुलझ जाती हैं, अतीत मे डली भावना ग्रन्थियाँ अछूती रह जाती हैं।

Nonsense Syllables [नॉनसेंस सिलेबल्स] अर्थहीन अक्षर, निरर्थक अक्षर।

मनोवैज्ञानिक प्रयोगो म प्रयोग होनेवाली भाषात्मक सामग्री का एक प्रकार, जिसका मुख्य उद्देश्य प्रयोग परिस्थितियो को यथासम्भव स्थिर रखना, सामग्री की इकाइयो का धारणा-भार समान रखना और विभिन्न प्रयोज्यो के सम्बन्ध म प्राप्त प्रदत्ता को तुलना योग्य रखना होता है। निरर्थक अक्षर को बनाने का सरलतम ढग यह है कि क्रम से एक-एक व्यजन को क्रम से एक-एक अन्य व्यजन के साथ मिलाकर बीच मे क्रम से एक-एक स्वर-मात्रा लगा दी जाती है। इस प्रकार की सामग्री का उपयोग विशेषतया स्मृति सम्बन्धी प्रयोगो मे किया जाता है।

Nonverbal Test [नॉनवरबल टेस्ट] - अशाब्दिक परीक्षण, अमौखिक परीक्षण।

एक प्रकार के सामूहिक बुद्धि परीक्षण जिनमे परीक्षार्थी को मौखिक आदेश दिया जाता है और परीक्षण सामग्री सब चित्रो अथवा पदार्थों के रूप मे होती है। इसके उपयोग के लिए परीक्षार्थियो मे केवल श्रवण-योग्यता एव इतनी भाषा-योग्यता का ज्ञान होना आवश्यक होता है कि उसमे वह परीक्षक द्वारा दिए गए आदेशो को सुन सके और समझ सके। परन्तु उनमे पठन-योग्यता की आवश्यकता नहीं होती। इसलिए ऐसे परीक्षण उन बच्चा की बुद्धि-परीक्षा के लिए विशेषत उपयुक्त होते हैं जिनका भाषा-विकास तो हुआ है परन्तु अभी साक्षर नही हैं।

Normal [नॉरमल] सामान्य, प्रसामान्य। देखिये—Abnormal

Normal Distribution Curve [नॉरमल डिस्ट्रिब्युशन कर्व] प्रसामान्य वितरण वक्र।

वह अक वितरण वक्र जिसका समीकरण यह हो—

$$\text{ख} = \frac{\text{स}}{\sigma\sqrt{2\pi}}\ \text{व}^{-\frac{\text{क}^2}{2\sigma^2}}$$

इस समीकरण मे

ख = क्षैतिज अक्ष के ऊपर वक्र की ऊँचाई अर्थात् किसी क मान की आवृत्ति

स = व्यक्ति अथवा अन्य प्रदत्त सख्या

σ = वितरण का प्रमाप विचलन

π = ३.१४१६

व = २.७१८३

क = क्षैतिज अक्ष पर स्थित अक विचलन

इस वक्र की आकृति सममित एवं घटी जैसी होती है। अधिकांश अंक बीच के अकमानो मे स्थित होते हैं। बीच से दोनों ओर अक-आवृत्ति अर्थात् वक्र की ऊँचाई घटती जाती है। दोनो सिरों पर बहुत पतली लम्बी दुम बन जाती है। वक्र के नीचे माध्य से प्रत्येक ओर १ मानक विचलन तक ३४·१३ %, २ मानक विचलन तक ४७·७२ %, और ३ मानक विचलन तक ४६·८६ % क्षेत्रफल होता है।

Normative Science [नॉरमेटिव साइन्स] : मानकी विज्ञान।

मानक शब्द का अर्थ है व्यवस्थापन। इसका सकेत एक स्थापित दृष्टिकोण की ओर है जिससे विचार सम्पादित होता है। मानकी विज्ञान मे उन विज्ञानो की शृंखला मिलती है जिनका सम्बन्ध मूल्यों से है—जिनसे नॉर्म (मानक) अथवा आचरण के नियम इत्यादि निश्चित होते हैं। इसमे नीतिशास्त्र (Ethics), सौन्दर्य बोधशास्त्र (Aesthetics) और तर्कशास्त्र (Logic) व मूल्यमीमासा सम्मिलित है। नीतिशास्त्र मानकी विज्ञान है क्योंकि इसमें आचरण के नियमों की स्थापना हुई है; मूल्यमीमासा (Axiology) में मूल्यों के बारे में निर्णय देने के लिए मानक प्राप्त है; और तर्कशास्त्र मे मान्य अनुमान के नियमन मिलते हैं। मनोविज्ञान मानकी विज्ञान नही है। यह वस्तुपरक विज्ञान (Positive Science) है।

Norm [नॉर्म] : मानक।

किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त परीक्षणांक का अर्थ अथवा महत्त्व समझने के लिए कसौटी रूप उसकी जाति के परीक्षणफल। इनके चार मुख्य रूप हैं—

(१) आयु मानक, अर्थात् विभिन्न आयु-स्तरों के माध्याक, जिनके उपयोग में यह देखना होता है कि व्यक्ति का प्राप्तांक किस आयु-स्तर के माध्याक के साथ मेल खाता है।

(२) वर्ग मानक, अर्थात् विभिन्न कक्षाओं अथवा वर्गों के माध्यांक, जिनके उपयोग में यह देखना होता है कि व्यक्ति का प्राप्तांक किस कक्षा अथवा वर्ग के माध्यांक के साथ मेल खाता है।

(३) शतमक मानक, अर्थात् जाति के निम्नतम व्यक्ति से लेकर विभिन्न प्रतिशत व्यक्ति सख्याओ के प्राप्तांकों की ऊपर सीमाएँ, जिनके उपयोग मे यह देखना होना है कि व्यक्ति जाति के कितने प्रतिशत व्यक्तियो से ऊपर है।

(४) मानक नॉर्म, अर्थात् जाति के अक वितरण मे माध्य से १, २, ३, आदि मानक विचलन ऊपर तथा नीचे के अक, जिनके उपयोग मे यह देखना होता है कि व्यक्ति का प्राप्तांक माध्यांक से कितने मानक अंक ऊपर अथवा नीचे है।

Nosology [नॉसॉलो'जी] : रोग-वर्गीकरण विज्ञान।

चिकित्सा-विज्ञान की एक शाखा, जिसमें रोगों के वर्गीकरण करने व उनके बीच में पाए जानेवाली विभिन्नताओं का अध्ययन किया जाता है।

Nosogenesis [नोसोजेनेसिस] : रोगोत्पत्ति विज्ञान।

नोसोलोजी (Nosology) रोगों के वर्गीकरण एवं उनके नामकरण का विज्ञान है। 'नोसोजेनेसिस' दो शब्दों—'नोसोस' (Nosos) और 'जेनेसिस' (Genesis)—से मिलकर बना है। नोसोस ग्रीक भाषा का शब्द है जो रोग के अर्थ में व्यवहृत हुआ है। जेनेसिस का अर्थ है जनन अथवा सृष्टि। अत: नोसोजेनेसिस का शाब्दिक अर्थ हुआ रोगों की उत्पत्ति एवं विकास। मनोविश्लेषण में इसका व्यवहार 'तन्त्रिका विकृति की उत्पत्ति तथा विकास के ढग एव परिस्थितियों की दृष्टि से वर्गीकरण' के अर्थ में हुआ है।

Object Constancy [ऑब्जे'क्ट कॉन्स्टेन्सी] : वस्तुस्थैर्य, वस्तुसातत्य।

किसी भी वस्तु को भिन्न दिशाओं, भिन्न दूरियों एव भिन्न परिस्थितियो में देखने पर भिन्न-भिन्न रूपों में दिखलाई

पड़ने पर भी उसके रूप, आकार एवं चमक को स्थिर रूप में एक समान ही अनुभव करना—गाय को एक स्थान पर बाँधकर चार भिन्न दिशाओं से देखने पर, नजदीक से बड़ी, दूर से छोटी, धूप में चमकदार, सफेद एवं छाया में धूमिल सफेद प्रतीत होगी। गाय वही है उतनी ही बड़ी है एवं उसी रंग की है—हमारी इस प्रतीति में कभी कमी नहीं आती।

Object Libido [ऑब्जेक्ट लिबिडो] वस्तु लिबिडो।

यह धारणा मनोविश्लेषण में प्रतिपादित हुई है। यह लिबिडो का बाह्य विषय वस्तु पर केन्द्रीयण है। ऐसी अवस्था में व्यक्ति की रुचि और आकर्षण अन्य व्यक्ति की ओर होता है। आकर्षण का पात्र सहवर्गी हो या परवर्गी—दोनों ही सम्भव हैं। व्यक्ति की प्रतिक्रियाएँ अन्य व्यक्ति अथवा समूह के प्रसंग में होती हैं। व्यक्ति की लिबिडो का एक तरह से पूर्णत बहिर्मुखीकरण हो जाता है। सम्भव है कि ऐसा होने पर व्यक्ति की संवेगात्मक अनुभूतियों में गम्भीरता और स्थिरता न रह जाए और लिबिडो का अधिक क्षय हो जाने के कारण वह रचनात्मक कार्य न कर सके।

Objective Method [ऑब्जे'क्टिव मे'थड] वस्तुनिष्ठ विधि।

विज्ञान की अन्यान्य शाखाओं के समान मनोविज्ञान के अध्ययन में प्रयुक्त विधि-विशेष, जिसके द्वारा प्राणी के स्वभाव का अनुशीलन अन्यान्य भौतिक वस्तुओं के समान आत्म निरपेक्ष दृष्टि से किया जाता है। इसकी विशेषताएँ निम्न हैं—१ इसके अन्तर्गत जीव के व्यवहार विशेष का भौतिक यन्त्रों से गणनात्मक ब्योरा लिया जा सकता है। २ इच्छानुसार विषय की रचना की परख की जा सकती है। ३ इसके अध्ययन का विषय निरीक्षक से पृथक् उसके मनोवैज्ञानिक विस्तार में स्थित होता है। ४ निर्णय निरीक्षक के पक्षपात, द्वेष, पूर्वाग्रह आदि से अपेक्षाकृत स्वतन्त्र रहता है।

Objective Test [ऑब्जे'क्टिव टेस्ट]: वस्तुनिष्ठ परीक्षण।

निबन्ध परीक्षा प्रणाली के बहु-आलोचित दोषों से मुक्ति पाने के लिए प्रस्तावित नवीन प्रकार के परीक्षण। इनमें प्रत्येक प्रश्न के बनाने के साथ ही उसका एक यथार्थ उत्तर भी निश्चित कर लिया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक प्रश्न का यथार्थ उत्तर पूर्णतया पूर्वनिश्चित होने से परीक्षक कोई भी हो, कितने भी अलग-अलग परीक्षक हों, उनके अंक देने में व्यक्तिगत अन्तरों का अवसर ही नहीं रहता। परीक्ष्य व्यक्ति को प्रश्न का अर्थ अथवा विषय निर्धारित करने में अपनी व्यक्तिगत योग्यता अथवा रुचि से काम लेने का भी अवसर नहीं होता। परिणामस्वरूप सभी परीक्ष्य व्यक्तियों के लिए उसका एक ही अर्थ और स्वरूप होता है। प्रश्न के साथ प्राय एक-वाक्य वैकल्पिक उत्तर भी प्रस्तुत किए जाते हैं और परीक्ष्य व्यक्ति को इनमें से यथार्थ अथवा सर्वश्रेष्ठ उत्तर चुनकर किसी चिह्न द्वारा बताना होता है। क्योंकि प्रश्न और प्रस्तुत विकल्प प्राय छोटे-छोटे होते हैं और व्यक्ति को पहचान चिह्न के अतिरिक्त कुछ लिखना नहीं होता, इसलिए परीक्षण में बहुत बड़ी संख्या में प्रश्न रखकर परीक्षा-विषय की अधिक अलग-अलग बातें पूछी जा सकती हैं। वस्तुनिष्ठ परीक्षणपत्रों में प्राय निम्न प्रकार के प्रश्न रखे जाते हैं—

(१) हाँ नहीं प्रश्न, जिनमें प्रत्येक प्रश्न के सामने छपे शब्दों 'हाँ' और 'नहीं' में से परीक्ष्य व्यक्ति एक को यथार्थ उत्तर बताता है।

(२) सत्य-असत्य प्रश्न, जिनके प्रत्येक प्रश्नवाक्य के सामने छपे शब्दों 'सत्य' और 'असत्य' में से उसे एक को अपनाना होता है।

(३) बहुविकल्प प्रश्न, जिनमें वह प्रस्तुत तीन, चार अथवा पाँच वैकल्पिक

उत्तरों अथवा पूर्तियों में से एक को अपनाता है।

(४) पूर्ति प्रश्न, जिनमें परीक्ष्य व्यक्ति से प्रस्तुत अधूरे वाक्य की सर्वोचित पूर्ति करवाई जाती है।

५. मेल प्रश्न, जिनमे प्रत्येक प्रश्न मे कई समस्याएँ एक साथ दी जाती हैं, और उनमे से प्रत्येक का सुलझाव अथवा सम्बन्धी उतने ही अधिक उत्तरों की एक सूची मे से चुनना पड़ता है। प्राय. परीक्ष्य व्यक्ति का काम पूर्ण का अंश से, कार्य का कारण से, घटना का तिथि से, वस्तु का गुण से, व्याख्या का विषय से, अथवा चित्रित वस्तु का नाम से मेल मिलाना होता है।

Obsession [ऑब्सेशन] : मनोग्रस्ति।

इस शब्द का प्रयोग व्यापक रूप में हुआ है और संकुचित अर्थ में भी। व्यापक अर्थ में इसके अन्तर्गत सभी प्रकार के मनस्ताप (Psychoneuroses) प्रकार के मानसिक विकार—हिस्टीरिया, चिन्ता रोग, भीति रोग इत्यादि—सम्मिलित हैं। सामान्यत: 'ऑब्सेशन' शब्द का प्रयोग सीमित अर्थ में किया गया है। वस्तुत: यह एक प्रकार का मनस्ताप है जिसमे व्यक्ति के मन में कोई-न-कोई विचार-धारणा, भावना-कल्पना चक्कर काटा करती है। रोगी यह समझता है कि उसका भाव-विचार-कल्पना आधारहीन है, किन्तु उसका अपने पर बस नही रहता। जब वह किसी एक आग्रही—हठीली कल्पना से छूटने का प्रयास करता है तो उसे दूसरी घेर लेती है और इस प्रकार उसके मन पर भाव-विचार का तांता-सा छाया रहता है, कल्पनाओं की एक लड़ी-सी बनी रहती है।

मनोग्रस्ति के रोगी का आध्यात्मिक विकास पर्याप्त हुआ रहता है। वह विचारशील रहस्य है। सन्देहो-शकी स्वभाव का होता है। विलक्षण विचार-भाव-कल्पनाएँ क्योंकर होती हैं इसके बारे मे भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिकों या भिन्न-भिन्न मत है। किस कारण यह रोग हुआ है—यह उस रोगी-विशेष की मनोवृत्ति, जीवन-इतिहास तथा वातावरण पर निर्भर करता है। फ्रायड ने कामवृत्ति पर बल दिया है। कामवृत्ति का दमन ही इस रोग का प्रधान कारण है। इसमें विस्थापन (Displacement) की कार्यपद्धति विशेष रूप से क्रियमाण रहती है और इससे व्यक्ति का भाव विचार आवश्यक विषय-वस्तु से हटकर अनावश्यक विषय-वस्तु पर स्थानान्तरित हो जाता है। मनोग्रस्ति रोग के उपचार के लिए मुक्त साहचर्य (Free association) की विधि उत्कृष्ट है। मस्तिष्क शल्य (Brain surgery) का भी प्रयोग होता है। मस्तिष्क चिकित्सा के अग्रखण्ड को थैलमस से जोड़ती हुई कुछ नसें हैं उनको इसमें काट दिया जाता है और रोगी स्वस्थ हो जाता है।

Obstruction Method [ऑब्सट्रक्शन मेथड] : बाधा विधि या अवरोध विधि।

आंगिक आवश्यकताएँ (Organic needs) या प्रेरकों (Motives) के अध्ययन में प्रयुक्त एक विशिष्ट विधि जिसके अन्तर्गत व्यक्ति या पशु मे किसी प्रेरणा को जगा उसकी पूर्ति के मार्ग मे अवरोध उपस्थित कर देखा जाता है कि अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्राणी उस अवरोध का कहाँ तक तथा किस सीमा तक अतिक्रमण करता है। अवरोध की गम्भीरता, तीव्रता अथवा अतिक्रमण की बारम्बारता के आधार पर ही प्रेरकों की तीव्रता का अनुमान लगाया जाता है। इस सम्बन्ध के अधिकाश प्रयोग पशुओं—विशेषकर चूहों पर किए गये हैं। इसके लिए एक अवरोध बक्स (Obstruction box) बनाया जाता है।

सामान्यत: इस यन्त्र में दो बक्स जैसे खाने होते हैं, जिसमे एक बक्स या खाने मे प्रेरित पशु (जो कि भूखा, प्यासा, या कामोद्वेग से भरा होता है) बन्द होता है तथा दूसरे खाने मे वह वस्तु (भोजन,

पानी, अथवा उसका भिन्नलिंगी साथी) जिससे कि उसके अन्तर्नोद अर्थात् ड्राइव की पूर्ति होगी, रखी होती है। दोनो खाने एक निकास मार्ग के द्वारा जुड होते है। इस निकास मार्ग के फर्श मे एक विद्युत् सचारित धातु की जाली जुडी होती है, जो कि प्रयत्नो मे, विद्युत् आघात के रूप मे बाधा का काम करती है। अब देखा जाता है कि उस उद्दीपक की प्राप्ति मे प्रयोज्य कहाँ तक प्रयत्नशील होता है। इस विधि से वस्तुत दो द्वन्द्वात्मक इच्छाओ का तुलनात्मक अध्ययन होता है—एक तो अभीप्सित वस्तु को प्राप्त करने की आवश्यकता और दूसरे पीडा से बचने की आवश्यकता।

Occasionalism [अकेजनलिज्म] प्रसगकारणवाद।

ज्ञान का वह सिद्धान्त जो मन तथा शरीर के सम्बन्ध की व्याख्या बिना उनके प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया के करता है। मन के अन्तर्गत होने वाली घटना, शरीर के अन्तर्गत होने वाली घटना के सम्बन्ध से घटित होती है। अत ईश्वर इसे इस प्रकार देखता है कि कोलाहल का विचार मन मे उस समय आता है जबकि भौतिक कोलाहल के घटित होने का अवसर आता है। यह शरीर तथा मन की समस्या का द्वैध सिद्धान्त है, जिसके सम्बन्ध मे ईश्वर का प्रसग प्रेषित है और जिसका हस्तक्षेप है।

Occipital lobe [ऑक्सिपिटल लोब] अनुकपाल पालि।

प्रमस्तिष्क का मध्यखण्ड और शखखण्ड के पीछे का भाग जो चाक्षुप सवेदन (Visual sensation) का केन्द्र है। यदि अनुकपाल पालि के इस भाग को काटकर निकाल दिया जाए तो जीव मे चाक्षुप प्रक्रिया नही हो पाती।

देखिए—Cortex

Occultism [अकल्टिज्म] गुह्यविद्या।

यह अगम्य विज्ञान—जैसे कीमिया (Alchemy), ज्योतिषशास्त्र, थियोसोफी तथा वे सभी विज्ञान जिनका उद्देश्य जादू अथवा मिथ्या जादू-प्रणाली द्वारा प्रकृति पर नियन्त्रण करना है—के अभ्यास के लिए दिया गया सामान्य नाम है। मनोविज्ञान का एक नवीन क्षेत्र जिसे 'साइकिकल रिसर्च' या परामनोविज्ञान कहते हैं तथा जिसमे 'सुपरनॉरमल' अथवा अधिसामान्य पक्ष की वैज्ञानिक एव सुव्यवस्थित खोज होती है तथा जो अत प्रसारण, या पारेन्द्रिय ज्ञान (Telepathy) और अध्यात्मवाद (Spiritualism) से सम्बन्धित है—ये समस्त तथ्य मनोविज्ञान के अन्तर्गत लाये गये हैं।

देखिए—Telepathy, clairvoyance.

Occupational Neurosis [ऑकुपेशनल न्यूरोसिस] व्यावृत्तिक मनस्ताप।

एक प्रकार की मानसिक दुर्बलता जिसका अभिव्यक्तिकरण व्यावृत्ति के प्रसग मे होता है। यह अवस्था होने पर व्यक्ति के जीवन के अन्य क्षेत्रों मे मानसिक सतुलन-समायोजन दृष्टिगत होता है, आचार-विचार मे सगठन होता है, किन्तु वह व्यावृत्ति-मात्र मे रुचि नही लेता—इससे भागा-भागा सा फिरता है। सामान्यतः उसे साधारण सा कार्य सम्पादन करना भी अप्रिय लगता है। यह दोष उन्ही व्यक्तियो मे दृष्टिगत होता है जो स्वभाव से दुर्बल हैं।

व्यावृत्ति-मनस्ताप अपने मे ही स्वतत्र प्रकार की दुर्बलता नही है। भावात्मक अस्थिरता होने के कारण मनुष्य इस प्रसग मे उद्वेलित मात्र होता है और विक्षोभ होने से यह मानसिक विकृति मिलती है।

Occupational Therapy [ऑकुपेशनल थे'रपी] व्यावृत्तिक चिकित्सा।

मानसिक रोगो के उपचार की एक विधि जिसमे रोगी को उसके अभिक्षमता (Aptitude), अभिरुचि (Interest) अथवा मानसिक अवस्था के अनुरूप कार्य मे सलग्न रख कर चिकित्सा का प्रयास होता है। प्रारम्भ मे इसका प्रयोजन रोगी का मनोरजन मात्र

था; अब इसका प्रयोग उपचार के लिए होता है—ऐसी व्यवस्था जिससे रोगी कार्य में पुनः संस्थापित हो सके, कार्य-नियुक्ति ग्रहण करने योग्य हो और प्रदर्शन द्वारा उसके आन्तरिक क्षेत्र का तनाव कम हो सके। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है 'खाली दिमाग मे भूत का वास रहता है'। मानसिक अवस्था को समायोजित करने के लिए यह अच्छा साधन है और यह आवश्यक है। चित्र इत्यादि के बनाने मे भाव की अभिव्यक्ति हो जाती है। विभिन्न कार्य औषधि रूप में कार्य करता है। इससे मानसिक स्थिरता और विमूढ़ता कम होती है। सम्भव है एक बार उपयुक्त दिशा मे शक्ति चलायमान होने पर रोगी में जीवन के प्रति रुचि और आस्था उत्पन्न हो जाए।

Ochlophobia [ऑक्लोफोबिया] : भीड़-भीति, समर्द-भीति।

एक प्रकार का भीति रोग है जिसमें भय का विषय व्यक्तियों का समुच्चय है जो साधारण भय के लिए पर्याप्त कारण नहीं होता।

Oedipus Complex [इडिपस कॉम्पले'क्स] : इडिपस मनोग्रन्थि।

फ्रायड की यह धारणा-प्रत्यय ग्रीकपुराण की 'इडिपस' की आख्यायिका पर आधारित है। इडिपस ने अपने पिता की हत्या की और माँ से विवाह किया। इस आख्यायिका के आधार पर फ्रायड ने यह प्रमाणित करने का प्रयास किया कि लड़कों में माँ की ओर एक स्वाभाविक आकर्षण होता है और उसे प्राप्त करने की आकांक्षा होती है। नैतिक मन (Super-ego) के कारण उसे इसकी चेतना नहीं हो पाती। यह सिद्धान्त मान्य नहीं। इडिपस नहीं जानता था कि जिसकी वह हत्या कर रहा है वह उसका पिता है और जिससे वह विवाह करने जा रहा है वह उसकी माँ है। जिस स्त्री की ओर वह आकर्षित हुआ और उसने विवाह किया, वह उसकी सौतेली माँ थी।

Olfactory Sensation [ऑलफैक्टरी सेन्सेशन] : गन्ध-संवेदन, घ्राण-संवेदन।

गन्ध-सम्बन्धी उत्तेजनों की नाक के माध्यम से मस्तिष्क के घ्राण-केन्द्र में होने वाली सर्वप्रथम प्रतिक्रिया। सम्भवतः घ्राण-संवेदन प्राणी का सबसे प्राचीन संवेदन है। वातावरण के प्रति अभियोजन में इसका महत्त्वपूर्ण हाथ रहा है। गन्ध की संवेदन की ज्ञानेन्द्रियाँ नासिका-गर्त में ऊपर की ओर वायु-प्रवाहों के रास्ते से कुछ हटकर स्थित हैं। साधारण श्वास-प्रश्वास की क्रिया मे वायु-प्रवाहों का इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। गन्ध-संवेदन के लिए उपयुक्त उत्तेजन गन्ध के कण हैं। अपने जड़ अथवा चेतन स्रोतों में मिश्रित ये कण वायु के साथ मिलकर जब गन्ध की ज्ञानेन्द्रियों से टकरा एक विशेष प्रकार की रासायनिक क्रिया द्वारा तन्त्रिका आवेग में परिवर्तित हो घ्राण-नाड़ी द्वारा मस्तिष्क के घ्राण-केन्द्र मे पहुँच उसे प्रभावित करते हैं तभी घ्राण-संवेदन होता है।

घ्राण-संवेदन अत्यधिक सूक्ष्म होता है। कुत्ता, बिल्ली आदि पशुओं में तो यह विशेष रूप से बढ़ा हुआ पाया जाता है। मनुष्य मे भी कुछ गन्धों के प्रति (कपूर, कस्तूरी आदि) असीम संवेदनशीलता देखी गई है।

गन्धों का वर्गीकरण : हेनिंग ने अपने प्रयोगात्मक परिणामों के आधार पर मूल गन्धों की संख्या छः बतलाई है—फूलों की गन्ध, फलों की गन्ध, मसालों की गन्ध, राल की गन्ध, सड़ान्ध तथा जलने की गन्ध। अन्य सभी गन्धें किसी-न-किसी रूप में इन्हीं गन्धों का मिश्रण होती हैं।

गन्धों का सम्मिश्रण : मनोवैज्ञानिकों ने ध्वनि अथवा रंगों के समान गन्धों को भी मिलाकर उनके संमेलित मिश्रण तैयार करने का प्रयास किया है। पर ऐसे मिश्रणों में मिश्रित गन्धों में से कभी एक की और कभी दूसरी की संवेदना होती है। कभी कोई तेज गन्ध अन्य सारी गन्धों को दबा देती है। कुछ गन्धें एक-दूसरे की मारक

भी होती है यथा सरसों के तेल की गन्ध मिट्टी के तेल की गन्ध को मार देती है।

गन्ध-समायोजन एक ही गन्ध का अनवरत व्यवहार करते रहने से उसके प्रति प्राणी की संवेदनशीलता समाप्त-सी हो जाती है। उसके गन्धस-कोष ऐसी गन्ध के प्रति अपने को समायोजित कर लेते हैं। लहसुन, प्याज खाने वालों को उसकी गन्ध उतनी तीव्र नहीं मालूम होती जितनी कि न खाने वालों को।

Olfactometer [ऑल्फैक्टोमीटर] गन्ध मापी।

गन्ध-तथ्य का अध्ययन करने के लिए *बनाया हुआ एक यंत्र जिसमें प्रयोग के* लिए गन्ध से भरी वस्तु घ्राण-त्वचा के सम्मुख उपस्थापित की जाती है। आरम्भ में ह्स्वारडेमाकेर ने इस यंत्र को बनाया था। 'हेरिंग' ने इसमें संशोधन किया। इसमें नाक के एक छेद अथवा दोनों छेदों को एक साथ प्रयोग किया जा सकता है। अर्थात् घ्राण-अंग के एक या दोनों नाक-छिद्रों को उत्तेजन करने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। इससे व्यक्ति की घ्राण-त्वचा (olfactory epithelum) की संवेदनशीलता का अनुमान लग जाता है।

Ontogenetics [आन्टोजेनेटिक्स] व्यक्तिविकास विज्ञान।

एक जीव (organism) या उसके किसी एक अंग विशेष या क्रिया के उत्पत्ति व विकास का अध्ययनात्मक इतिहास।

Open end Questions [ओपेन एण्ड क्वेश्चन्स]।

एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक परीक्षण जिसमें परीक्षार्थी के समक्ष कुछ पूर्व-निर्धारित वैकल्पिक उत्तर अथवा प्रतिक्रिया उपस्थापित करने की जगह उसे जो और जैसा चाहे उत्तर देने अथवा प्रतिक्रियाएँ करने की स्वतन्त्रता दी जाती है। ऐसे परीक्षणों में अंकन विधि का निर्णय अपेक्षाकृत कठिन होता है तथा बन जाने पर अंकन विधि व्यावहारिक दृष्टि से अपेक्षाकृत जटिल होती है।

Operant Behaviour [ऑपरेन्ट बिहेवियर] *क्रियाप्रसूत व्यवहार।*

देखिए—Behaviour

Operationism [ऑपरेशनिज्म] : *क्रियावाद।*

यह एक सिद्धान्त है—वैज्ञानिक क्रियाओं के मूल्यांकन का एक तरीका और इससे वैज्ञानिक धारणाओं को एक निश्चित यथार्थ अर्थ दिया जा सका है। इस प्रकार के प्रयास से अवैज्ञानिक और मिथ्या समस्याओं का पृथक्करण हो जाता है और यह भी कि विज्ञान और तत्त्ववाद विभिन्न होते हैं। वस्तुतः *क्रियावाद—भौतिकवाद*, दर्शन और मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि है। भौतिकवाद में ब्रिजमैन ने यह स्पष्ट किया है कि धारणाएँ क्रियाओं के रूप में परिभाषित करके, जिस रूप मात्र में हो निरीक्षण सम्भव है और उन्हें यथार्थ, स्पष्ट और अर्थयुक्त बनाया जाता है। हरेक धारणा सम्बन्धित क्रियाओं का पर्याय है। दर्शन पर इसका प्रभाव वियाना के मारटिज, स्कलिक, यॉटो न्यूरॅथ, रुडौल्फ, कार्नप और फिलिप फ्रैंक इत्यादि की कृतियों में स्पष्ट है। इन्होंने व्यवस्थित अन्वेषण करके दर्शन को तर्क विज्ञान से विस्थापित कर दिया।

Ordinal Scale [ऑरडिनल स्केल] : *क्रमसूचक मापनी।*

ऐसी मनोवैज्ञानिक मापनी जिनका उद्देश्य प्रदत्तों का किसी विशेष गुण की दृष्टि से स्थान निश्चित कर देना होता है। यह गुण ऊँचाई, उष्णता, तीव्रता, मापयोग्यता, बहिर्मुखत्व आदि कुछ भी हो सकता है, और प्रदत्त व्यक्ति, पदार्थ, जातियाँ, घटनाएँ अथवा गुण कुछ भी हो सकते हैं। प्रायः सर्वश्रेष्ठ विभक्ति को 'विभक्ति १' कहा जाता है और उसके नीचे वाली विभक्तियों को 'विभक्ति २', 'विभक्ति ३', आदि। प्रत्येक विभक्ति में एक ही प्रदत्त रहता है, अर्थात् प्रत्येक विभक्ति की आवृत्ति १ होती है। विभक्ति १ और विभक्ति २ में, विभक्ति

२ और विभक्ति ३ में और इसी प्रकार आगे भी अन्तर आवश्यक नहीं कि समान हों। क्रमसूचक मापनी पर प्राप्त मापन-फलों के विषय में सांख्यिकीय क्रियाओं में से मध्यका, शतांशक तथा क्रमिक सह-सम्बन्ध गुणक ज्ञात कर लेना विशिष्टतया उपयोगी होता है।

Ordinate [ऑरडिनेट] : कोटि।

द्वि विमिक क्षेत्र के सन्दर्भ में उदग्र अक्ष (Vertical axis)।

देखिए—Abscissa.

Organic Need [ऑरगेनिक नीड] : आंगिक आवश्यकता।

आंगिक आवश्यकता आन्तरिक उत्तेजनाएँ हैं और इनकी पूर्ति जीवित रहने के लिए आवश्यक है। शरीर एक यन्त्र की तरह है; ईंधन या विद्युत् से ही यह चलायमान-सक्रिय रहता है। शारीरिक समायोजन रखने के लिए आंगिक आवश्यकता की तुष्टि कभी तो स्वयं हो जाती है; कभी कृत्रिम उपायों द्वारा।

विभिन्न आंगिक आवश्यकता में भूख, प्यास, श्वास-उश्वास, रक्षा और काम प्रमुख हैं। भूख शरीर की प्रमुख मांग है और सबसे अधिक प्रभावशाली है। शरीर जल से बना है; जल एक अनुपात में है। उस अनुपात में कमी होने पर प्यास का अनुभव होता है। व्यक्ति जल का सेवन करके अपने को स्वस्थ बनाता है। श्वास-उश्वास की मांग स्वत: पूरी होती रहती है। हानिप्रद वस्तु से रक्षा करने के साधन व्यक्ति में जुटे हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इन दैहिक मांगों में भूख और काम को विशेष महत्ता दी गई है। इनकी तीव्रता की माप के लिए कई प्रयोग भी हुए हैं। जब चूहे भूखे रहे उन्होंने हाथ-पैर फेंका, समस्या-बक्स से बाहर निकलने का प्रयास किया; जो चूहे भूखे नहीं थे वे उसी स्थान पर आराम से विचलन करते रहे। इस प्रकार व्यवहार आंगिक आवश्यकता पर निर्भर करता है। भूख और काम की आंशिक आवश्यकता में कौन अधिक तीव्र है इसका अनुमान लगाने के लिए दोनों लक्ष्य की प्राप्ति का साधन एक साथ ही जुटाया गया। जिसको चुनौती दी गई, उसे अधिक तीव्र स्थापित किया गया।

Organic Psychoses [ऑरगेनिक साइकॉसिस] : आंगिक मनोविक्षिप्ति।

सिफलिस वृद्धावस्था, मादक अथवा विषैली वस्तुओं के प्रभाव एवं मस्तिष्क पर लगे आघातों के फलस्वरूप बृहत् मस्तिष्कीय आवरण के कोषों के कमज़ोर, क्षीण अथवा क्षत-विक्षत हो जाने के कारण जो विक्षिप्त प्रतिक्रियाएँ होने लगती हैं वे आंगिक विक्षिप्ति वर्ग में सन्निहित हैं। उत्पत्ति के आधार पर इन्हें छः भागों में बाँटा गया है। १. पैरेसिस, २. जराजन्य विक्षिप्त, ३. औषधिजन्य विक्षिप्ति, ४. मदजन्य विक्षिप्ति, ५. आघातजन्य विक्षिप्ति और ६. मस्तिष्कार्बुदजन्य विक्षिप्ति।

यद्यपि इनमें से प्रत्येक के पृथक्-पृथक् लक्षण हैं फिर भी मानसिक क्रियाओं एवं समर्थता का ह्रास, भाव एवं चेष्टा के नियमन एवं नियन्त्रण का अभाव सभी में समान रूप से पाया जाता है।

Organization [ऑरगेनिजेशन] : संघटन।

मनोविज्ञान में संघटन की धारणा जीवविज्ञान (Biology) से ली गई है। इसका प्रयोग अवयव के विभिन्न भाग और क्रियाओं के पृथक्करण और उनके पूर्णाकार में व्यवस्थित संघटन के लिए किया गया है। इस नयी धारणा को महत्ता विशेष रूप से गेस्टाल्टवादियों ने प्रदर्शित की है। जहाँ अवयव का सम्बन्ध है वहाँ संघटन अवश्यम्भावी और स्वाभाविक है। वस्तुत: गेस्टाल्ट सम्प्रदाय ने संघटन के प्रमुख मानसिक सिद्धान्तों का अन्वेषण किया। अवयव की संवेदनात्मक प्रक्रिया में भी संघटन की प्रक्रिया विद्यमान है। इस सिद्धान्त का उत्कृष्ट दृष्टांत प्रत्यक्षण क्षेत्र की 'आकार-भूमि' में संरचना-संगठन

का एक आधारभूत सिद्धान्त है। बनावट सरल और जटिल दोनो प्रकार की हो सकती है। जितनी ही स्पष्ट होगी उतनी ही जटिल होगी। एक उत्कृष्ट आकृति (Good figure) की अनुभूति स्पष्ट होती है—जैसे कि वृत्त, जिसका प्रभाव दृष्टि पर *अपेक्षाकृत स्थायी पड़ता* है। इसी तरह से एक उत्कृष्ट आकृति परस्पर सम्बद्ध होता है और विश्लेषण तथा दूसरी आकृति के साथ एकीकरण करने से भी *विघटित नहीं होता।* बली आकृति दुर्बल आकृति को आत्मसात कर लेती है। बद आकृति बली और उत्कृष्ट होती है जबकि खुली आकृति (वह आकृति जिसमे रिक्त स्थान है) अपने को प्राकृत उत्कृष्ट आकृति मे पूर्णता प्रदान करने के क्रम मे बद होती हुई सी प्रतीत होती है और इस प्रकार उसे स्थायित्व मिलता है। सघटन स्वाभाविक रूप से स्थायी होते हैं। भागों का पुनर्घटन अपने को पूर्णता प्रदान करने मे समग्रता की पुन-स्थापना करता है। आकृति मे सतुलन और अनुपात होता है। समान आकृति, माप और वर्ण की इकाइयाँ मिश्रित होकर स्पष्ट पूर्णाकृतियो मे सगठित होती हैं। सघटित आकृति अर्थयुक्त होती है और वह वस्तु के विभिन्न भागो के परस्पर सम्बन्ध पर निर्भर करती है, न कि विभिन्न भागो की विशेषताओ पर। गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के अनुसार सघटन के मूल नियम सिद्धान्त का सम्बन्ध प्रायोगिक मनोविज्ञान से होता है।

देखिए—Gestalt Psychology, Good Figure, Figure Ground.

Organismic Psychology [*ऑरगैनिज़्मिक साइकॉलोजी*]. सर्वांगिक अथवा अवयवी मनोविज्ञान।

अवयव अथवा उसकी व्याख्या से *सम्बन्धित मनोविज्ञान। इसमें व्यक्ति एक* पूर्ण अवयव अर्थात् सर्वांग-रूप माना गया है—यह मानव को उसकी समग्रता मे ग्रहण करता है। अवयवी मनोविज्ञान जैविक है क्योंकि यह चेतन अवयव को ही अपने चिन्तन का केन्द्रबिन्दु मानती है। अवयव की पूर्णता की धारणा प्राचीन शरीर और मन के द्वैत तथा उनकी पृथक् क्रियाओ और प्रेरणाओं आदि की धारणा को मिथ्या प्रमाणित करती है। *अडोल्फ मेअर, कान्ट्रहिल, गोल्डस्टीन* और मैंटर अवयवी मनोविज्ञान के मुख्य प्रवर्तक हैं। अवयवी मनोविज्ञान के अनुसार मानसिक क्रियाओ का अवयव अथवा *मस्तिष्क के भिन्न भिन्न भागो मे स्थानी*करण नहीं किया जा सकता। मनोवैज्ञानिक घटनाएँ अवयव तथा वातावरणगत वस्तुओ के घात-प्रतिघात का ही प्रतिफल हैं।

Oscillograph [ऑसिलोग्राफ] : दोलनलेखी।

एक भौतिक यन्त्र जिसके द्वारा विद्युत् परिवर्तनों को दृष्टि द्वारा निरीक्षण किया जा सकता है। सामान्यत यह एक भासमान-आवरण का बना होता है, जिस पर एक कैथोड किरणपुज आरोपण की जाती है। विद्युत्-क्षेत्र मे किसी भी विद्युत-तथ्य के द्वारा उत्पन्न किये हुए परिवर्तन कैथोड किरणपुज विक्षप पैदा करते हैं, जिससे भासमान आवरण पर विद्युत् तरगो के द्वारा बने हुए भिन्न-भिन्न प्रतिकृतियो के रूप मे, वह विद्युत्-तथ्य उपस्थापित हो जाए।

Over-learning [ओवर-लर्निग] : अत्यधिगम।

किसी भी वस्तु के सीखने मे आवश्यकता से अधिक प्रयास करना। किसी भी वस्तु को सीखने मे, उसके धारण *अथवा तात्कालिक पुन स्मरण के लिए* जितने प्रयासो की आवश्यकता है उससे अधिक प्रयास करना अत्यधिगम और कम प्रयास करना अपूर्ण या न्यूनाधिगम *(Under-learning) कहलाता है। अत्य*धिगम के प्रत्यय का भी सबसे पहले प्रयोग एबिंगहाउस ने ही यह देखने के लिए किया कि किसी भी वस्तु के सीखने मे

आवश्यकता से अधिक प्रयासों का धारण-प्रक्रिया (Retention) पर क्या प्रभाव पड़ता है। प्रयोग द्वारा उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि एक सीमा के अन्दर आत्मार्जन हेतु जितने ही अधिक प्रयत्न किये जाते हैं, विषय के धारण और पुन-स्मरण (Recall) में उतनी ही सहायता मिलती है। अत्यधिगम से मस्तिष्क पर पडे स्मृति-चिह्न दृढ होते है और उद्दीपन-अनुक्रिया के पारस्परिक सम्बन्ध मे अधिक परिपक्वता आती है। इस प्रकार व्यक्ति विषय को धारण करने में अधिक समर्थ होता है।

देखिए—Retention.

Over-determination [ओवर-डिटर-मिनेशन] : अति-निर्धारण।

अज्ञात मन के स्तर पर एक प्रकार की संक्षेपण कार्य-पद्धति जो विभिन्न इच्छाओं के सम्मिश्रण की द्योतक है। अज्ञात मन में अनेक इच्छाएँ निहित होती हैं जिनमें से कुछ में एकत्व और समानता रहती है। इस कार्य-पद्धति के कारण इच्छाएँ मिश्र रूप मे प्रकट होती हैं। उदाहरणार्थ, "एक बालिका स्वप्न में अपने को झूले पर झूलते हुए तथा एक युवक को सैनिक वेप-सज्जा मे घोड़े पर चढे और हाथ में मूल्यवान हीरे की अँगूठी पहने अपनी ओर आते हुए देखती है।" इस स्वप्न में युवक द्वारा युवती की कई इच्छाओं का प्रतिनिधित्व होता है। युवक का व्यक्तित्व, यौवनावस्था, युवती की कामवृत्ति का द्योतक है; उसका वेप युवती की आत्म-स्थापन वृत्ति पर प्रकाश डालता है और हीरे की अँगूठी युवती की संचय-वृत्ति को प्रदर्शित करती है।

Pacini Corpuscle [पैसीनी कार्पुसल] : पैसीनी कणिका।

एक प्रकार के झिल्ली चढे हुए तंत्रिकीय अन्त्यांग (nerve end organ)जो कि शरीर के बिना बालो वाले भागो में स्थित मांसल अधश्चर्मऊतकों (tissue) में जैसे स्पर्श-कणिका तन्त्रिकाओं के मार्ग के साथ-साथ जोड़ों के निकट और आँतों में पाए जाते हैं। कुछ लोगों का यह विश्वास है कि इनसे जोड़ पर एक खास तरह का ग्रन्थि-सम्बन्धी संवेदन जागृत होता है और आतरांग (Viscera) मे दबाव या निपीड़-सम्बन्धी संवेदन जागृत होता है।

Paired Comparison Method [पेअर्ड कम्पेरिजन मे'थड] : युग्मित तुलना-विधि।

एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक सोपान-विधि जिसमे अनेक उद्दीपनो के मानसिक परिमाण ज्ञात करने के लिए प्रयोज्यों से उनकी दो-दो करके विशेष गुण मे परस्पर तुलना कराई जाती है और इस प्रकार प्राप्त प्रदत्तों से सामान्य वितरण के सिद्धान्तानुसार प्रत्येक उद्दीपन का मान-सिक मापदण्ड पर अक निर्धारित किया जाता है। उद्दीपन रग, लिखाई के नमूने, अभिनेताओं के नाम अथवा कोई भी समान जाति के तथ्य हो सकते है और उनको सुखकारिता, श्रेष्ठता, योग्यता, लोकप्रियता आदि किसी गुण के सोपान पर मापना होता है। सब उद्दीपनों के सभी सम्भव युग्मित जोड सोच लिये जाते हैं और उन्हें किसी अवशिष्ट क्रम से एक ही प्रेक्षक व्यक्ति के सामने कई बार अथवा एक-एक बार कई व्यक्तियों के सामने उपस्थापित किया जाता है। प्रेक्षक का काम यह बताना होता है कि कोई विशिष्ट गुण उपस्थापित युगल के किस उद्दीपन मे दूसरे उद्दीपन की अपेक्षा अधिक मात्रा में प्रतीत होता है। अब यह गिन लिया जाता है कि प्रेक्षक अथवा प्रेक्षको की कुल तुलनारूपी प्रतिक्रियाओ मे प्रत्येक उद्दीपन प्रत्येक अन्य उद्दीपन की अपेक्षा कितने प्रतिशत अथवा प्रति सहस्र बार बडा, अधिक अथवा श्रेष्ठतर बताया गया है। प्रत्येक उद्दीपन के सम्बन्ध में प्राप्त अनुपातों का योगफल प्राप्त करके इन योगफलों के अनुसार उद्दीपनों का मापक्रम निर्धारित किया जाता है। इस क्रम के अन्दर आने वाले प्रत्येक युगल के

उद्दीपनो के विषय मे ऐसे ही प्रतिशत आदि अन्य युगलो के विषय मे प्राप्त प्रतिक्रियाओ से भी गणितिक अनुमान द्वारा ज्ञात कर लिये जाते हैं। इस प्रकार प्रत्येक क्रमिक युगल के बारे मे प्राप्त कुल प्रदत्तो से प्रसामान्य वितरण सिद्धान्त के अनुसार एक उद्दीपन का दूसरे उद्दीपन से मापदण्डीय अन्तर निश्चित कर लिया जाता है और इन अन्तरो के आधार पर सब उद्दीपनो के मनोवैज्ञानिक मान निर्धारित किये जाते हैं।

Parameter [पैरामीटर] प्राचल।

किसी जन-समूह के सब व्यक्तियों के मापन से प्राप्त मापन फल। यह न्यादर्शाधारित मापफलो की अपेक्षा स्थिरमान समझे जाते हैं। परन्तु व्यावहारिक दृष्टि से किसी सम्पूर्ण जन समूह के ऐसे मापफल प्राप्त कर लेना असम्भव नहीं तो बहुत ही कठिन अवश्य होता है। इसलिए प्राय: न्यादर्शाधारित मापफल प्राप्त करके ही इनके आधार पर सार्वजनिक मापो के विषय मे अनुमान कर लिया जाता है। और साथ ही यह भी ज्ञात कर लिया जाता है कि न्यादर्शाधारित अनुमान वास्तविक सार्वजनिक मापो को कहाँ तक प्रतिबिम्बित करते होगे, अर्थात न्यादर्शाधारित मापफल अथवा अन्य अनुपात कहाँ तक महत्त्वपूर्ण माने जा सकते हैं।

Paramnesia [पैरम्नेसिया] मिथ्या-स्मृति।

एक प्रकार की स्मृति सम्बन्धी विकृति। इसमे स्मृति का अभाव नही रहता। रोगी अतीत की घटनाओ को मिथ्या रूप देता है। यह मानसिक अव्यवस्था और रोग का लक्षण है।

Paranoia [पैरानोइया] सविभ्रम, मिथ्याज्ञान।

मनोविक्षिप्ति (psychoses) वर्ग का जटिल मानसिक रोग जिसका उपचार कठिन होता है। इसका मुख्य लक्षण 'भ्रम' है। यह भ्रम व्यवस्थित प्रकार का होता है। रोगी को मुख्यत ऐश्वर्य-भ्रम और अपमान-भ्रम होता रहता है। अपने को बडा समाज-सुधारक तथा ईश्वर का दूत समझना ऐश्वर्य-भ्रम है। रोगी की यह धारणा कि अन्य व्यक्ति उसके विरुद्ध षड्यन्त्र कर रहे हैं या धोखा देने की योजना बनाते हैं, अपमान-भ्रम है। अपमान-भ्रम का मूल कारण अज्ञात मन का अपराध-भाव है। रोगी प्राय अपने अपराध भाव को अनजाने मे प्रिय पर आरोपित करता है और ज्ञात मन में अपने को दोषी न ठहरा 'प्रिय' को दोषी ठहराता है। यह उभयभाविता (Ambivalence), प्रेम और घृणा का प्रमाण है। सविभ्रम विवादास्पद (Litiguous paranoia), रत्यात्मक (erotic poranoia), सुधारात्मक (Refermatory paranoia), कायिक (Hypochondriacal paranoia), और धार्मिक (Religious paranoia) प्रकार का होता है।

सविभ्रम के रोगी प्राय महत्वाकांक्षी, सशयालु और अस्थिरचित्त होते हैं। रोगी की कामशक्ति अहं मे ही सीमित केन्द्रित होती है। वह अन्तर्मुखी अथवा आत्मरति वाला (Narcissism) होता है। वह अपने में ही लीन मग्न और सन्तुष्ट रहता है। उसे कामतृप्ति के लिए अपने से भिन्न कोई अन्य वस्तु-व्यक्ति नही चाहिए।

सविभ्रम के रोगी के लिए चिकित्सालय आवश्यक है। रोगी की मानसिक स्थिति इसमे ऐसी विकट होती है कि निर्देशन, पुन शिक्षण, अबाध मन आयोजन मात्र पर्याप्त नहीं होता।

Para Psychology [पैरा साइकॉलोजी] परा मनोविज्ञान।

मनोविज्ञान की वह शाखा जिसमे उन व्यवहारो अथवा वैयक्तिक योग्यताओ का अध्ययन होता है जो स्पष्ट तथा अभौतिक अर्थात् इन्द्रियो की सीमाओ से परे हैं अथवा भौतिकी नियमो के अन्तर्गत असम्भव प्रतीत होती हैं। इसके दो मुख्य विभाग हैं: एक मे अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष (Extra sensory perceptics) और

दूसरे में अदैहिक गति का अध्ययन किया जाता है। अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष के सम्बन्ध में पारेन्द्रिय ज्ञान (Telepathy), अतीन्द्रिय-दृष्टि (Clairvoyance) एवं पूर्वसिज्ञान (precognition) अध्ययन के विशेष विषय हैं।

देखिए—Telepathy, Clairvoyance, Precognition.

Para Sympathetic System [पैरा सिम्पैथटिक सिस्टम] : सहानुकम्पी तन्त्र।

देखिये—Autonomic Nervous System.

Paresis [पैरेसिस] : लकवा, पक्षाघात।

यह एक प्रकार का देहजात विक्षेप है। पैरेसिस का आक्रमण प्रौढ़ावस्था में लगभग ४५ वर्ष की अवस्था में होता है। यह पुरुषों में स्त्रियों से अधिक और गाँवों की अपेक्षा शहर में अधिक प्रचलित है। इसमें अधिकतर रोगी की मृत्यु हो जाती है।

पैरेसिस रोग का मूल कारण सिफलिस है। किन्तु सभी सिफलिस के रोगी पैरेसिस से नहीं आक्रान्त होते। मस्तिष्क-मेरु-तरल जो मेरुदण्ड और मस्तिष्क के गुहा में है, की परीक्षा द्वारा सिफलिस का निदान सम्भव है। सिफलिस की छूत का कारण वंशागत विशेषता है। अधिक काल तक सिफलिस का रोग रहने पर इसका मस्तिष्क पर हानिप्रद प्रभाव पड़ता है और पैरेसिस के रोग की सम्भावना बढ़ती है। प्रारम्भिक अवस्था में यदि उपयुक्त उपचार हो जाए तभी पैरेसिस के आक्रमण से व्यक्ति की रक्षा की जा सकती है।

पैरेसिस के मानसिक और शारीरिक लक्षण निम्न प्रकार हैं :

मानसिक लक्षण—(१) तात्कालिक तथा सुदूर स्मृति में अव्यवस्था, (२) निर्णय और सूझ-प्रक्रिया का ह्रास, (३) भ्रम, भ्रान्ति, (४) मानसिक क्षमता का अभाव। शारीरिक लक्षण—(१) आँख की पुतली की प्रक्रिया में कमी अथवा अभाव, (२) मांसपेशियों के संघटन पर प्रभाव—लेखन और जिह्वा में कम्पन, उदर का निष्क्रिय पड़ना, हकलाना, शरीर के हलन-चलन में बेतुकापन, मूर्च्छा के रोगी की तरह ऐंठ इत्यादि।

पैरेसिस चार प्रकार का होता है : (१) साधारण, (२) उत्साहात्मक, (३) विषादात्मक, (४) विद्रोहात्मक। उपचार की प्रमुख तीन विधियाँ हैं : (१) ज्वर उपचार, (२) बिजली उपचार, (३) वायु-अभिसन्धान युक्ति। इनमें ज्वर-उपचार सबसे अधिक प्रचलित और व्यावहारिक है। मलेरिया इत्यादि की वैक्सीन की सुई देकर ज्वर लाया जा सकता है। रोग के प्रारम्भ में ही उपचार का प्रयत्न करने से सुधार की सम्भावना बढ़ती है। पैरेसिस में मस्तिष्क का अधिक ह्रास नहीं होता; तब भी रोगी पूर्ण निरोग नहीं हो पाता।

Parathyroid Gland [पैराथाइरायड ग्लैण्ड] : पैराथाइरायड-ग्रन्थि।

वाहिनीहीन ग्रन्थियों में इन ग्रन्थियों का प्रमुख स्थान है। थाइराइड के दाएँ और बाएँ ये दो दो की संख्या में स्थित हैं। इनसे निकलने वाले स्राव को पैराथाइरायड कहते हैं। इस स्राव का प्रमुख कार्य थाइरायड ग्रन्थि की क्रिया में सन्तुलन बनाए रखना है। इससे उचित मात्रा में स्राव होने पर अवयव सन्तुलित रहता है; और अभाव में तन्त्रिका-तन्त्र (Nervous system) अति उत्तेजित हो उठता है। यदि इन ग्रन्थियों को हटा दिया जाए तो व्यक्ति की मांसपेशियों में कम्पन तथा ऐंठन पैदा हो जाएगी।

Parent Child Conflict [पेरेन्ट चाइल्ड कान्फ्लिक्ट] : अभिभावक-बालक-द्वन्द्व।

मनोविश्लेषण में अभिभावक-बालक-संघर्ष को एक नया रूप दिया गया है। फ्रायड का मत है कि यौनाकर्षण की अचेतन प्रेरक (Unconscious motive) से बालक का स्वाभाविक झुकाव माँ की ओर और बालिका का पिता की ओर होता है। बालक अपनी माँ पर एकाधिकार चाहता

है और पिता को अपने प्रतिद्वन्द्वी के रूप मे देखता है, बालिका पिता पर अपना एकाधिकार चाहती है और मां को प्रतिद्वन्द्वी समझती है।

Parent Child Relationship [पैरेन्ट चाइल्ड रिलेशनशिप] अभिभावक-बालक सम्बन्ध।

यह बालक के भावी विकास की नीव है। बालक की सबसे पहली पाठशाला उसका परिवार है। अभिभावको से प्राप्त मूल्यों की छाप बालक के जीवन पर अमिट पड़ती है। इसलिए अभिभावकों के लिए यह आवश्यक है कि वे बालको के सम्मुख ऐसा उदाहरण रखें जिससे बालकों के आभ्यन्तरिक जीवन मे मनोग्रन्थियां न पडें। उन्हें उचित प्यार, स्नेह एव सुरक्षा प्रदान कर संवेगात्मक परिपक्वता प्राप्त करने मे सहायक हो।

बालकों के स्वस्थ मानसिक विकास के लिए अभिभावकों का निम्न बातों की ओर विशेष ध्यान देना है (१) भूले से भी बालक की उपेक्षा न करें। (२) आवश्यकता से अधिक उनको प्यार न करें। (३) अनावश्यक हर समय-स्थान-परिस्थिति मे उसकी सहायता के लिए तत्पर न रहें, उसे आत्मनिर्भर बनने दें। (४) उसके सामने उसकी शक्ति से परे ऊंचे नैतिक मापदण्ड न रखें। (५) अत्यधिक कठोर अनुशासन स बचाएँ। (६) व्यवहार मे समरसता बरतें। (७) पारिवारिक झगडों की छाया बालक पर न पडने दें। (८) स्नायविक प्रतिक्रियाओं एव भाव-सम्बन्धी दुर्बलताओं से उसकी रक्षा करें। (९) परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति स्नेह-सहानुभूति का भाव उत्पन्न करें। ऐसे वातावरण मे सामाजिक और संवेगात्मक परिपक्वता अवश्यम्भावी है।

Parole System [पैरोल सिस्टम] पैरोल-पद्धति, कारागारावकाश।

यह प्रणाली प्रौढ अपराधी मे सुधार लाने के लिए अन्वयिन एक नई योजना है। इसमे सजावधि पूर्ण होने से पहले ही अपराधी को कुछ काल के लिए कारागार से रिहा कर दिया जाता है। वस्तुत यह अपराधी के आचरण की परीक्षा है। जिनका आचरण अच्छा रहता है उन्हें कुछ छूट दी जाती है। इसका मुख्य लाभ यह है कि जो सुधार योग्य हैं उन्हे अच्छा आचरण रखने का एक अवसर मिलता है जिससे वे उपयुक्त लाभ उठा सकें। अपराधी कारागार से जल्दी रिहा होने की आशा मे अच्छा व्यक्ति बनने के लिए प्रयत्नशील होता है। यह प्रथा असामाजिक व्यवहार मे सुधार लाने के लिए एक प्रोत्साहन (incentive) रूप मे है।

Pellagra [पैलाग्रा] वल्कचर्म, पैलाग्रा।

भोजन में वल्कचर्म प्रतिबन्धक तत्वों (जीवति ख$_2$) अभाव मे उत्पन्न एक विकृति विशेष जिसमे व्यक्ति के हाथो के पृष्ठभाग, नासिका, कपोलों तथा ग्रीवा के अग्रभाग पर वल्कवत् रक्तिम चकत्ते उभर आते हैं। ये चकत्ते आंतों की गड़बड़ी से सम्बद्ध होते हैं। वल्कचर्म का रोगी स्नायुविकृति के रोगी के समान थकावट, अनिद्रा, चिन्ता, भय, विस्मृति, मन की चंचलता, उत्साहहीनता आदि से भी पीडित रहता है। कभी कभी अत्यधिक उत्साह अथवा आत्महत्या की वृत्ति से युक्त घोर विषाद के लक्षण भी प्रकट होते हैं। कतिपय स्मृतिभ्रश तथा विभ्रमों से युक्त तीव्र सन्निपात की सी स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

इसकी निवृत्ति के लिए रोगी की उचित देखभाल, उपयुक्त सेवा तथा यकृत-रस और जीवति ख (विशेषकर जीवति ख$_2$) से युक्त पौष्टिक एव पाचन योग्य भोजन की आवश्यकता है।

Percentile [परसेन्टाइल] शततमक, शतमक।

किसी अक वितरण मे वह अक जिसके नीचे वितरण के १० प्रतिशत, २३ प्रतिशत, ४६ प्रतिशत आदि कितने भी वाछित प्रतिशत अक अथवा माप हों। इसलिए कोई शतमक १०वां, २३वां, ४६वां आदि शतमक कहलाएगा। २५वें शतमक को

प्रथम चतुर्थक, ५०वें शतमक को मध्यिका और ७५वें को तृतीय-चतुर्थक भी कहा जाता है।

किसी अङ्क-वितरण का कोई भी शतमक ज्ञात करने के लिए इस सूत्र का प्रयोग किया जाता है—

$$\text{शतमक}_{\text{प्र}} = \text{अ} + \frac{\text{सं०}_{\text{प्र०}} - \text{आ यो}}{\text{आ प्र}} \times \text{व}$$

यहाँ शतमक$_{\text{प्र}}$ = शतमक$_{१०}$, शतमक$_{२३}$, आदि कोई शतमक

अ = जिस अंक वर्ग मे वह शतमक$_{\text{प्र}}$ है उस अंक वर्ग का अधर छोर

सं०$_{\text{प्र}}$ = माप सख्या का शतमक$_{\text{प्र}}$ तक पहुँचने वाला भाग

आ यो = अ से नीचे तक की आवृत्तियो का योग

आ प्र = शतमक वाले वर्ग की आवृत्ति

व = वर्गान्तर

किसी अंक वितरण के प्रमुख शतमक ज्ञात कर लेने से यह समझ लेना सुगम हो जाता है कि किसी विशेष अंक पाने वाले विशिष्ट व्यक्ति का, मापित गुण की दृष्टि से, *अपने समूह में कौन-सा स्थान है*, वह अपनी जाति में उस गुण में कितनो से आगे है और कितनों से पीछे है।

Performance Test [परफॉरमेन्स टेस्ट] : निष्पादन परीक्षण।

सामान्य बुद्धि के वह परीक्षण जिनमें परीक्षार्थी को प्रस्तुत समस्या का हल नेत्र-हस्त सहकार्य द्वारा व्यक्त करना होता है। वैक्सलर-बैलवू बुद्धि मापदण्ड में इस प्रकार के पाँच परीक्षण हैं—चित्रविन्यास, चित्रपूर्ति, ब्लाक डिज़ाइन (Block design), वस्तु सहिति (Object assembly) और अंकचिह्न प्रतिस्थापन। इनके आधार पर एक अलग क्रियात्मक बुद्धिलब्धि की प्राप्ति होती है। ग्रेस आर्थर द्वारा रचित बुद्धि मापदण्ड सम्पूर्णतया निष्पादन-परीक्षणों से बना है। उसकी एक आकृति में नौक्सघन, सेंगुइन, आकृति पट, द्वयाकृति पट, खण्डिताकृति पट, मानव सहिति, मुखाकृति सहिति, हेत सहिति, हीले चित्रपूर्ति, पोरटियस व्यूह, तथा कोज ब्लाक डिज़ाइन (block design) हैं। दूसरी आकृति मे केवल नौक्सघन, सेंगुइन आकृति पट, पोरटियस व्यूह, हीले चित्रपूर्ति तथा आर्थर स्टेंसिल डिज़ाइन है। कौरनेल-कोक्स क्रिया योग्यता मापदण्ड विशेषतया बच्चो की परीक्षा के लिए बना है। इसमें मानव सहिति, ब्लाक डिज़ाइन (block design), अंकचिह्न, आकृति स्मरण, घन निर्माण तथा चित्रपूर्ति हैं। भारत मे डॉ० चन्द्रमोहन भाटिया द्वारा रचित क्रियात्मक बुद्धि परीक्षणावली मे कोज ब्लाक डिज़ाइन (Koh's block design), खिसकाओ परीक्षण, प्रतिमान आरेखन (Pattern drawing), तात्कालिक शब्द स्मृति, तथा चित्र सहिति हैं।

Perseveration [परसिवेरेशन] : अनुभव प्रसक्ति।

अनुभव, विचार, मनोवृत्ति अथवा गतिवृत्ति की चेतना में प्रसक्ति। तात्कालिक स्मृति इसी पर निर्भर होती है। स्पियरमैन ने *सतनन को स्वभाव की तीन* विमाओं मे से एक माना है। शेष दो विमाएँ (fluency) मनोप्रवाह तथा दोलन (Oscillation) हैं।

किसी व्यक्ति मे सतनन की मात्रा ज्ञात करने के लिए कई परीक्षण बन चुके हैं। उनमे त्रिकोण परीक्षण और एस-परीक्षण अधिक प्रसिद्ध हैं। एक में व्यक्ति से एक निश्चित समय तक त्रिकोण बनवाए जाते हैं, फिर उतने ही समय तक उल्टे त्रिकोण और फिर उससे दोगुणे समय तक एकान्तर से एक सीधा और एक उल्टा त्रिकोण, फिर एक सीधा, एक उल्टा, ऐसे ही बनवाते हैं। प्रथम दो परिस्थितियों मे बनाए गए त्रिकोणों की सख्याओं के जोड में से तृतीय परिस्थिति मे बनाए गए त्रिकोणों की संख्या को

घटा देने से व्यक्ति का सनतन अक प्राप्त हो जाता है। एस-परीक्षण मे व्यक्ति से अग्रेजी अक्षर एस लिखवाते हुए इसी विधि का उपयोग किया जाता है।

Persona [परसोना] पर्सोना।

ऐसी क्रिया शैली जो कि परिस्थितियो के समायोजन हेतु अथवा किसी विषय वस्तु के सम्ब ध मे आवश्यक सुगमता उत्पन्न करने हेतु विद्यमान हो गई है परन्तु वैयक्तिकता (individuality) से भिन्न है। दूसरे शब्दो मे व्यक्ति की किसी वस्तु पर परिस्थिति के प्रसग मे प्रतिक्रियाओ का निधारण पर्सोना द्वारा ही होता है। युग ने इस धारणा का प्रयोग 'ऐनिमा' के विरोधी रूप मे किया।

Personal Equation [पर्सनल इक्वेशन] व्यक्तिगत समीकार।

एक निरीक्षण-काल के आरम्भ काल को नोट करने व अवलोकन करने मे होने वाला काल विभ्रम (Time disagreement) जो कि निरीक्षक मे तथा कुछ *सीमा तक समय-समय पर* एक ही निरीक्षक मे मान मे बदलता रहता है। व्यक्तिगत समीकार की परिवर्तनशीलता, उत्तेजक की प्रकृति व तीव्रता, निरीक्षक के ध्यान की दिशा तथा निरीक्षक की आयु परिपक्वता व दैहिक दशा आदि से प्रभावित होती रहती है। ज्योतिषशास्त्रियो ने तारो के गति काल को नोट करने मे पाई जाने वाली वैयक्तिक विभिन्नताओ को समझने के लिए इस पद व प्रत्यय का निर्माण किया था। व्यक्ति की क्रियाओ मे वैयक्तिक विभिन्नता की विशेषताओ के वर्णन मे इसका उपयोग होता है।

Personality [पर्सनैल्टिी] व्यक्तित्व।

'व्यक्ति के अन्दर की उन मनोभौतिकी प्रणालियो का गत्यात्मक सगठन जो कि उसकी परिस्थितियो व उसके वातावरण से उसके विशिष्ट समायोजनो को निर्धारित करता है'—आल्पोर्ट। 'एक निर्माणित, जीव परिवेश-क्षेत्र (organism-environment field) जिसका प्रत्येक पहलू अथवा अग एक दूसरे से गत्यात्मक रूप से सम्बन्धित है।"—मर्फी

व्यक्तित्व मे प्रमुखत दो समस्याएँ सयुक्त हैं (१) यह कि किस प्रकार अथवा कैसे एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से भिन्न है, (२) यह कि मनुष्य की कैसे अथवा किस प्रकार से रचना हुई है कि वह दूसरे प्राणियो से ऐसा भिन्न है।

जैविक अथवा पार्थिव क्रम मे, व्यक्ति का *इतिहास उसकी आनुवंशिक सम्भावित* शक्तियो को लिये हुए उसके गर्भाधान से शुरू होता है। इन गर्भाधान मे आई हुई आनुवंशिक सम्भावित शक्तियो का, गर्भावस्था मे, गर्भ के अन्दर पाई जाने वाली भौतिक रासायनिक परिस्थितियो की उस विशेषता की ओर भी निर्देश करता है जो कि समुदाय के सदस्यो मे एक विशिष्ट प्रकार की क्रम व्यवस्था की ओर सकेत करता है जिसके आधार पर, उनके व्यवहार नियमबद्ध होते हैं।

Personality Inventory [पर्सनैल्टिी इन्वेंटरी] व्यक्तित्व-सूची।

व्यक्ति के स्वभाव, समायोजन, रुचि आदि से सम्बन्धित क्रिया, आदत अथवा अनुभूतियो की सूची, जिसे व्यक्ति के समकक्ष रखकर उससे पूछा जाता है कि इनमे से कौन से लक्षण उसमे हैं और कौन से नहीं, और किनके विषय मे वह निश्चित रूप से नही बता सकता। व्यक्ति के उत्तरो के आधार पर उसका स्वभावाक, समायोजनाक अथवा रुच्याक निश्चित किया जाता है।

इस प्रकार की लक्षणावली मे सूचीबद्ध लक्षण कभी कभी प्रश्नो अथवा कथनो के रूप मे होते हैं। इन्हें विभिन्न क्षेत्रो से एकत्रित किया जाता है। उदाहरणार्थ समायोजन के लक्षण, मानसिक रोगियो की वैयक्तिक कथा, इस विषय पर लिखित पुस्तक तथा लेख मनोचिकित्सक के सुझाव आदि मे ढूंढे जाते हैं, व्यक्तित्व लक्षणावलियो पर किसी व्यक्ति से प्राप्त प्रतिक्रिया से उसके व्यक्तित्व का यथार्थ ज्ञान

कहाँ तक प्राप्त हो सकता है यह इस बात पर निर्भर है कि वह व्यक्ति कहाँ तक सत्य एवं स्पष्ट प्रतिक्रिया कर सकता है, उसमें अपने को समझने की क्षमता कितनी है, एवं उसकी पठन-योग्यता कितनी है। कुछ सूचियों या तालिकाओं के निर्माता व्यक्ति द्वारा अपने विषय में सत्य को छिपाने के प्रयत्नों से प्रभाव-मुक्त रहने की युक्तियों का निर्माण भी करते हैं।

Personality Measurement [पर्सनैलिटी मेजरमेंट] : व्यक्तित्व माप।

वे कलाएँ या वैज्ञानिक विधियाँ जिनके द्वारा व्यक्तित्व के विशेष लक्षण, विशिष्टताएँ या इसकी अनन्यता व अपूर्वता को आंका जा सके। इन पद्धतियों में कागज, पेंसिल, परीक्षा, प्रक्षेपण परीक्षण (Projective Test), प्रश्नावली प्रत्यक्षालाप, (Interview), प्रायोगिक और सूचक (Questionnaire) पद्धतियाँ आदि हैं।

देखिए—Projective Test, Interview, Questionnaire.

Personalism [पर्सनलिज्म] : व्यक्तिवाद।

दर्शन और मनोविज्ञान में 'व्यक्ति' अध्ययन तथा चिन्तन का केन्द्र है। इस पर व्यक्तिवाद में एकमात्र बल दिया गया है। व्यक्तित्व की महत्ता प्रमुख है और सत्य का अर्थ अथवा वास्तविक तथ्य का *अन्वेषण करने की यह कुंजी है।*

Personalistic Psychology [पर्सनलिस्टिक साइकॉलोजी] : व्यक्तिवादी मनोविज्ञान।

यह व्यक्तिवादी मनोविज्ञान के उद्भव का आधारभूत था कि 'आत्म' अथवा 'सेल्फ' वृत्तात्मक अनुभूति का अंश है। ग्रीक दर्शन में व्यक्ति-सम्बन्धी सिद्धान्त पर्याप्त विकसित है और इसमें 'आत्म' या 'सेल्फ' को केन्द्र माना गया है, जो मानव की समस्त क्रियाओं का स्रोत है। मनोविज्ञान क्षेत्र में विलियम जेम्स ने पहले-पहल चेतना को व्यक्तिगत रूप में प्रस्तुत किया (अर्थात्, वह तत्त्व जो व्यक्ति की निज की निधि है)। विलियम जेम्स की शिष्या मेरी कॉल्किन्स ने इस दृष्टिकोण का और भी स्पष्टीकरण किया और 'आत्म' अथवा 'सेल्फ' को तात्कालिक अनुभूति का निरन्तर विषय प्रमाणित किया जो वैज्ञानिक मनोविज्ञान का वस्तुतः प्रमुख विषय है। विलियम स्टर्न ने व्यक्ति (Person) की धारणा का प्रयोग 'यंत्र' और प्रयोजन के समन्वय के लिए किया। किसी भी व्यक्ति का अध्ययन यान्त्रिक रूप से सम्भव है (अर्थात् कार्य कारण और विभिन्न वस्तुओं में पारस्परिक क्रिया-प्रतिक्रिया रूप में); *व्यक्ति का समग्र रूप* में अध्ययन ज्ञान, ध्येय, मूल्य इत्यादि के प्रसंग में होता है। स्टर्न ने औपचारिक और निर्देशन कार्य-क्षेत्र में अपने व्यक्तिवादी मनोविज्ञान का उपयोग किया है। समसामयिक मनोवैज्ञानिकों में व्यक्ति-सम्बन्धी सबसे उल्लेखनीय अन्वेषण ऑलपोर्ट का है, किन्तु ऑलपोर्ट के अनुसार विशिष्ट व्यक्ति का दिग्दर्शन प्रयोज्य रूप में प्रत्यक्षण, स्मृति इत्यादि पर प्रयोग करते समय नहीं होता। मनोविश्लेषण में भी सभी अन्वेषण सामान्य कारणों (Universal cause) की ओर इंगित मात्र करते हैं।

Personal Unconscions [पर्सनल अन्कॉन्शस] : व्यक्तिगत अथवा वैयक्तिक अचेतन।

विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के प्रवर्त्तक कार्ल जेस्टाव युग के अनुसार यह अचेतन मन का वह भाग है जिसमें व्यक्ति की सभी दमित इच्छाएँ संग्रहीत रहती हैं। जब कभी परिस्थिति और सामाजिक प्रतिबन्धों के कारण जिन किन्हीं प्रकृत इच्छाओं का दमन होता है अथवा चेतन मन (Conscious mind) से निष्कासन होता है, वे सब व्यक्तिगत अचेतन मन में संचित हो जाती हैं। जो अनुभूतियाँ अतीत की हैं और सुदूरवर्ती हैं, उनका भी संकलन मन के इस भाग में रहता है। आवश्यकता पड़ने पर अतीत की संचित

स्मृतियाँ चेतन मन मे प्रवेश करती हैं। युग की व्यक्तिगत अचेतन मन की धारणा मे फ्रायड का पूर्वचेतन (Preconscious) और अचेतन मन (Unconscious) निहित है। युग की सामूहिक अचेतन मन (Collective unconscious) की धारणा इसके अतिरिक्त है।

Perspective [पसपे क्टिव] परिप्रेक्ष्य, सदर्श।

परिप्रेक्ष्य, दृष्टिगोचर वस्तुओ का उनकी स्थिति दूरी एव आकार इत्यादि की दृष्टि से प्रत्यक्षण है। सदर्श का लाक्षणिक प्रयोग, मूल्याकन उनके आपेक्षिक महत्त्व, सिद्धान्तो विचारो एव घटनाओ के लिए भी होता है। इस शब्द का प्रयोग केवल एक विशेष अर्थ मे भी होता है जो सदर्भ के आधार पर समझा जाता है। जैसा कि वायुमण्डल के सदर्श का नामकरण प्रकाश एव छाया से होता है वैसा ही सामान्यत दृष्टि से सम्बन्धित वायुमण्डल का क्षेत्र दूरी एव गहराई से होता है। कालगत परिप्रेक्ष्य उपमान के द्वारा विचारो का उनके आपेक्षिक, सामयिक स्थिति के अनुसार घटना की स्मृति मे स्थानान्तर है।

Perversion [पर्वर्जन] विपर्यास।

वास्तविक उद्देश्य अथवा लक्ष्य से परे किसी भी मूलप्रवृत्ति अथवा मनोवृत्ति मे विकृत परिवर्तन। साधारण व्यवहार से परे विकृत दिशा मे गमन। इस शब्द का प्रयोग अधिकाश मे समाज द्वारा वर्जित यौनाचार के लिए किया जाता है। जिस व्यक्ति मे इस प्रकार का आचरण पाया जाता है उसे 'विमार्गी' अथवा 'कामविपर्यस्त (sexual pervert) कहते हैं।

कामविपर्यास के अनेकानेक रूप हैं। उनमे से प्रमुख निम्न हैं (१) परपीडन (Sadism)—दूसरो को पीडा पहुँचाकर अथवा पीडित होते हुए देखकर कामसुख का अनुभव करना। (२) आत्मपीडन—स्वय अपनी पीडा, लज्जा एव हीनता के माध्यम से कामानुभूति। कामव्यवहार मे परपीडन पुरुष की तथा आत्मपीडन स्त्री की विशेषता मानी जाती है। (३) प्रदर्शन-वृत्ति (Exhibitionism)—छोटे बच्चो मे यह व्यवहार बहुतायत से देखने को मिलता है। (४) पशुकामिता (Beastiality)—पशुओ के द्वारा कामवासना की तृप्ति। (५) शवकामिता (Necrophilia)—शवो के साथ समागम द्वारा काम सुख की अनुभूति। (६) मूर्तिकामिता (Pygmalionism)—मूर्तियो को सजाने सँवारने एव उनके स्पर्श द्वारा कामसुख प्राप्त करना। (७) प्रतीकाधभक्ति (Fetichism)—परवर्गी व्यक्तियो से सम्बन्धित वस्तुओ (यथा—कपड, बाल, शृगार-प्रसाधन आदि) के प्रत्यक्षीकरण द्वारा कामतृप्ति। (८) आत्मरति (Narcissism)—स्वय अपने-आपको ही सजानेसँवारने, अपनी वृत्तियो को अपने-आप पर ही केन्द्रित करने, अपने आपको ही चाहने मे काम सुख का अनुभव करना। (९) हस्तमैथुन (Masterbation)। (१०) समलिंगिता (Homosexuality)—अपने ही वर्ग के प्राणी के साथ (पुरुष का पुरुष के साथ एव स्त्री का स्त्री के साथ) ससर्ग द्वारा काम-सुख का अनुभव करना।

Phantasy (fantasy) [फैन्टसी] : कल्पना क्रिया।

अज्ञात मन की एक रक्षार्थ रूप मे मानसिक कार्य-पद्धति जो बाल्यावस्था और युवावस्था मे विशेष रूप से क्रियमाण रहती है और जिससे अचेतन रूप से विचार क्रिया का निर्धारण होता है। इस पद्धति का क्रियमाण होना इसका द्योतक है कि व्यक्ति मे बौद्धिक, शारीरिक, आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से अभाव—कमी है, वह निराशा से अभिप्रेत है और वह कल्पना द्वारा अपनी कमी की पूर्ति का प्रयास करता है। शरीर से दुर्बल व्यक्ति अपने को पहलवान की कल्पना कर प्रसन्न होता है, एकाकी बालक कल्पित साथी के साथ खेलता है, और निर्धन अपने को धनी मानकर प्रसन्न होता है। यह

कल्पना-क्रिया साधारण अवस्था का भी सूचक है। अत्यधिक कल्पना-क्रिया का होना विकृत अवस्था का लक्षण है। असामयिक मनोह्रास (Dementia Praecox) में कल्पना-क्रिया का प्राबल्य मिलता है।

Phenomenon [फ़ें'नॉमें'नन्] : घटना।
इस शब्द का अर्थ है कोई उपस्थापन, ज्ञान या अनुभूति। प्रतिभासित के लिए भी इस शब्द का प्रयोग हुआ है। निरीक्षित अवस्थाएँ (दृश्य सत्ता) प्रतिभासित होती हैं।

१. भौतिक वस्तुस्थिति—अर्थात् वास्तविक और संभावित प्रत्यक्षित वस्तुओं का योग। २. मानसिक वस्तुस्थिति—अन्तः-प्रेक्षण की हुई वस्तुओं का योग। इसके दो रूप हैं—(अ) वस्तुस्थिति की पृष्ठभूमि मे उपस्थित सत्य की अस्वीकृति, (ब) इसका समर्थन कि वस्तुओं की सत्यता अपने में ही है, किन्तु जानी नहीं जा सकती।

देखिए—Phenomenology.

Phenomenology [फ़ें'नॉमें'नॉलोजी] : घटना-विज्ञान।
'चेतन अनुभूति का अनुभूति रूप में क्रमबद्ध अन्वेषण'। ब्रेन्टॅनो के शिष्य हुसर्ल ने एक सम्प्रदाय के रूप में इसका विकास किया जिसका सम्बन्ध शुद्ध चेतना से था। मनोविज्ञान मे घटना-विज्ञान के विषय सवेदना, कल्पना-सम्बन्धी प्रदत्त, वर्ण और प्रतिमाएँ इत्यादि हैं। ये घटक भौतिकवाद के प्रदत्त नहीं होते। घटना-विज्ञान भौतिकवाद और मनोविज्ञान का प्राग्-विज्ञान है क्योंकि इसमे प्रायोगिक तथ्यों के पूर्व का अध्ययन होता है।

Philosophy [फ़िलॉसफ़ी] : दर्शनशास्त्र।
दर्शनशास्त्र ज्ञान की वह शाखा है जिसमें सत्य के वास्तविक स्वरूप का अन्वेषण होता है। यह शब्द दो ग्रीक शब्दो को मिलाकर बना है—'फ़िलाइन'=प्रेम, 'सोफ़िया'=ज्ञान-बुद्धि। पाइथोगॅरस को ज्ञान से प्रेम था; दर्शन का संकेत ज्ञान का अन्वेषण और अन्वेषित ज्ञान दोनों ही और है—प्रारम्भिक रूप में वे सब सामान्य सिद्धान्त जिनके द्वारा सभी वृत्यो का विवरण दिया जा सके। इस अर्थ में दर्शन-शास्त्र का पृथक्कीकरण विज्ञान से सम्भव है। आधुनिक युग मे दर्शनशास्त्र प्रत्यय का प्रयोग व्यक्तिगत ज्ञान के अर्थ मे होता है। यह शान्ति और सन्तोप का बड़ा साधन है। दर्शनशास्त्र में तत्त्ववाद, तार्किकी, प्रमाणवाद, तर्कवाद, सौन्दर्य-शास्त्र और नीतिशास्त्र आते हैं।

दर्शन और मनोविज्ञान में अनन्य सम्बन्ध है। उन्नीसवी शताब्दी तक तो यह दर्शन का एक भाग ही था। अब मनोविज्ञान की स्वतन्त्र सत्ता वैज्ञानिक रूप से स्थापित हो गई है और इसका मूल कारण यह है कि अब इसमें वैज्ञानिक विधियो का प्रयोग होता है।

Philosophical Psychology [फ़िलॉसाफ़िकल साइकॉलो'जी] : दार्शनिक मनोविज्ञान।
ज्ञानमीमांसा (Epistemology), तत्त्व-मीमांसा (Ontology) तथा नीतिशास्त्र के प्रणेता दर्शनशास्त्र में ज्ञान और शुभ (good) की वास्तविक प्रकृति के बारे मे अन्वेषण होना है। इस क्षेत्र मे मनोविज्ञान भी सम्मिलित है। उन्नीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में मनोविज्ञान दर्शन-शास्त्र की ही एक शाखा थी। अनुभववाद के प्रचलित होते ही दर्शनशास्त्र ने एक प्रकार से मनोवैज्ञानिक रूप धारण कर लिया। शरीर-शास्त्र से घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण शरीर-सम्बन्धी प्रायोगिक मनोविज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ। देकार्टे, मनोविज्ञान में द्वैधवादी विचारों के जन्मदाता हैं। यह विचारधारा आंग्लीय अनुभववाद के साथ चलती रही। आंग्लीय अनुभववाद का प्रारंभ दार्शनिक 'हाब्स' ने किया और इसे एक निश्चित सुदृढ़ रूप देने का श्रेय जॉन लॉक को है। जॉन लॉक ने 'साहचर्यवाद' का प्रतिपादन किया, जो उन्नीसवी शताब्दी के प्रायोगिक मनोविज्ञान का मूल आधार सिद्ध हुआ। लॉक की विचारधारा के

विरोधी लिबनिज थे। लिबनिज उन सबसे अग्रज रहे जिन्होने ये देनो की भांति बुट के सत्ववाद का विरोध किया। लॉक के पश्चात बर्क ह्यूम, हार्टले आदि दार्शनिकों की विचारधारा से आगल्य मनोविज्ञान प्रभावित हुआ। उन्नीसवी शताब्दी के बाद मिल्स और बेन का महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ा जबकि स्कॉट विचारधारा सर्वाधिक अग्रगण्य थी। दार्शनिक मनोविज्ञान आधुनिक प्रायोगिक मनोविज्ञान से तार्किक रूप से अधिक सम्बन्धित नही है।

Phi phenomenon (Continued) गति विपयय।

गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने प्रायोगिक रूप से, गतिशीलता की प्रामाणिकता, बिना आधारभूत तत्त्व से सम्बन्धित तात्कालिक अनुभव के रूप में प्रकट की। वरदाईमर (१८८०-१९४३), जो कि प्रमुख गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिक हैं उन्होने विशुद्ध गतिशीलता को फाई (Phi) का नामकरण विशुद्ध गतिशीलता को स्पष्ट करने के लिए दिया है अर्थात जो गतिशीलता बिना गतिशील वस्तु के देखी जा सके। उसे ऐसा गति विपयय भी कहा जाता है जो अनेक विभिन्न तथा स्थिर दृश्य द्रुतगति से एक दूसरे के बाद प्रस्तुत करने से उत्पन्न होता है। इस विचार का कारण यह है कि गतिशीलता प्रारम्भिक है। प्रत्यक्षात्मक गतिशीलता पर वरदाईमर ने जो प्रयोग किया है वह प्रतिष्ठित है जबकि दो अभिव्यक्तियों के बीच में मध्यान्तर अर्थात् दो खडी रेखाएँ पर्याप्तरूपेण बडी हैं, तब प्रयोज्य उसका प्रत्यक्षण क्रमिक रूप से करता है। परन्तु जब मध्यान्तर अत्यधिक छोटा रहता है, तब इसका प्रत्यक्षण समकालीन होता है। इस क्रमिकता तथा समकालीनता के बीच मे वरदाईमर को गतिशीलता आभासित हुई।

Phobia [फोबिया] : दुर्भीति।

विभिन्न मानसिक रोगों में यह भी एक रोग है। इसका प्रमुख लक्षण भय है। साधारण और भीति रोग के भय मे भेद है। साधारण भय क्षणिक होता है, परिस्थिति बदलते ही समाप्त हो जाता है। भीति रोग का भय रोगी के व्यक्तित्व का आवश्यक भाग रहता है यह आधाररहित और अर्थहीन होता है। भय उत्पन्न करने के लिए उत्तेजक पर्याप्त नही होता। भय हास्यास्पद है, यह समझते हुए भी उस पर उसकी रोकथाम नही हो पाती।

भीति रोग अनेक प्रकार के हैं और यह वर्गीकरण विभिन्न प्रकार के उत्तेजकों के आधार पर किया गया है। जन्तुभीति (Zoophobia), विषभीति (Toxophobia), भीडभीति (Ochlophobia), रोगभीति (Pathophobia) सवृत स्थानभीति (Claustrophobia), 'गगनभीति' आदि।

भीति रोग का मूलकारण कामवासना की अतिवृद्धि है। अह का अत्यधिक विकास हो जाने से यह रोग होता है। अह का तादात्म्य कुछ स्थूल वस्तुओं से होता है। अतीत की अनुभूतियों से रोग का सम्बन्ध रहता है। दो विरोधी प्रतिक्रियाएँ मिलती हैं। इसके उपचार मे विश्लेषण की विधि सफल सिद्ध हुई है। निदान के लिए विश्लेषण (analysis) आवश्यक है।

Phrenology [फ्रेनॉलोजी] कपालविद्या।

उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भ का यह एक मिथ्या वैज्ञानिक आन्दोलन था जो मनोशारीरिकी का पद ले लेना चाहता था। इस आन्दोलन के प्रवर्तक एफ० जे० गोल और स्परज्हीम थे। कपाल विद्या में यह दर्शाने का प्रयास हुआ है कि विभिन्न मानसिक क्रियाएँ मस्तिष्क के विभिन्न भागों पर निर्भर करती हैं। मस्तिष्क के भिन्न-भिन्न भागों की वृद्धि ही इसका प्रमुख आधार है। इसमे व्यक्ति की कपाल की अस्थियों तथा उनके आकार आदि के निरीक्षण के द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व-निदान का सहज उपाय प्रस्तुत किया

गया है, अर्थात् कपाल-विद्या के अनुसार विशिष्ट मानसिक शक्तियाँ विभिन्न मस्तिष्कीय क्षेत्रों में स्थित हैं और उनके विकास का अनुमान इस क्षेत्र को आच्छादित करने वाले कपाल के भाग-विशेष के झुकावों अथवा फैलाव को देखकर लगाया जा सकता है।

इस आन्दोलन में तीन प्रमुख बातें थीं :

१. बाह्य कपाल भीतरी मस्तिष्क के आकार-प्रकार के अनुसार होता है।
२. मन की व्याख्या विभिन्न शक्तियों और क्रियाओं के रूप में की जा सकती है। कपाल-वैज्ञानिकों ने संख्या ३७ मानी है।
३. ये शक्तियाँ और प्रक्रियाएँ मस्तिष्क के विभिन्न भागों में अपने-अपने स्थान पर स्थित हैं और इनमें से किसी अथवा किन्हीं की वृद्धि सम्बन्धित मस्तिष्क के भाग अथवा भागों की वृद्धि की सूचक है। यद्यपि यह आन्दोलन अवैज्ञानिक था, फिर भी मनोविज्ञान में इसकी उपयोगिता को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। दो बातों की स्थापना के स्पष्ट संकेत हैं—

(१) मस्तिष्क मन का अंग है और
(२) मन की भिन्न-भिन्न क्रियाएँ मस्तिष्क के भिन्न-भिन्न भागों में स्थित हैं।

Physicalism [फिज़िकॅलिज़्म] : शारीरिक व्याख्या।

वैज्ञानिक अनुभववाद के अन्तर्गत विकसित विचारधारा-विशेष। प्रत्येक वर्णनात्मक पद ऐसे पदों से सम्बद्ध रहता है जो वस्तुओं की दृश्य विशेषताओं का सूचक है। यह सम्बन्ध इस प्रकार का होता है कि पद को उपयोग में लाने वाली योजना का निरीक्षण द्वारा विषयीगत दृष्टिकोण से प्रमाणीकरण किया जा सकता है। मनोविज्ञान में शारीरिक व्याख्या का उपयोग व्यवहारवाद या तार्किक आधार है।

Physiognomy [फिज़िआगनॉमी] : आकृति विद्या।

शरीर व उसके अंगों की बनावट व उनकी सूचक चेष्टाओं, मुख्यतः चेहरे की आकृति व अभिव्यक्ति के आधार पर संवेगात्मक और दूसरी मानसिक दशाओं की व्याख्या व विश्लेषण करने वाली कला। प्रचलित अर्थ में यह शब्द चेहरे पर की अभिव्यक्ति या चेहरे की आकृति का पर्यायवाची है। इसका पर्यायवाची लोग 'कपाल' विद्या भी बतलाते हैं। वैसे यह पद उस अवैज्ञानिक अध्ययन की प्रणाली के लिए प्रयुक्त होता है जिसमें मानवीय आचरण की व्याख्या व विश्लेषण, चेहरे की आकृति व दूसरे बाह्य अंगों की आकृतियों पर आधारित करके करते हैं।

देखिए—Phrenology.

Physiotherapy [फिज़ियोथेरेपी] : शरीर चिकित्सा।

मानसिक उपचार की इस विधि में रोगी को स्वस्थ करने के लिए शरीर की मालिश की जाती है। इसका प्रभाव मानसिक अवस्था पर अच्छा पड़ता है।

Physiological Limit [फिज़ियालोजिकल लिमिट] : शारीरिक सीमा।

किसी भी कार्य का अभ्यास करने पर और अधिक प्रेरणा मिलने से व्यक्ति सीखने में उन्नति करता है। किन्तु इस उन्नति के क्रम में एक सीमा ऐसी भी आती है जिसके आगे फिर सभी प्रेरणा, सभी प्रयास व्यर्थ सिद्ध होते हैं। सीखने की सामर्थ्य की यही सीमा 'शारीरिक सीमा' कहलाती है। किसी भी विषय को सीखने में व्यक्ति की गतिवाही सामर्थ्य उसके तन्त्रिकाविशेष यन्त्र के विकास और प्रतिक्रियाओं के नियन्त्रण पर निर्भर है।

प्रमाणित हुआ है कि यह शारीरिक सीमा क्रियात्मक अर्जन के क्षेत्र में ही मिलती है; बौद्धिक अर्जन में नहीं। वस्तुतः मानव के शिक्षण में यह सीमा सम्भवतः नहीं आती। इसके पूर्व ही प्रेरणा के अभाव में व्यक्ति निष्प्रभ और शिथिल हो जाता है।

Physiological Psychology [फ़िज़ियॉलोजिकल साइकॉलो'जी] : शरीर-क्रिया-मनोविज्ञान।

ऐतिहासिक दृष्टि से मनोविज्ञान की यह शाखा प्रायोगिक मनोविज्ञान का तद्रूप है। आधुनिक दृष्टि से यह तन्त्रिका-विज्ञान और मनोविज्ञान की सीमा रेखा है। मूलत शरीर क्रिया मनोविज्ञान से उस मनोविज्ञान का बोध होता था जिसमे दैहिक विधियो का प्रतिपालन होता था, जैसा कि वुट ने किया है। परन्तु शीघ्र ही यह शाखा मनोविज्ञान मे उन अन्वेषणो की प्रतीक बन गई जिनमें व्यवहार की व्याख्या शारीरिक आधार पर हुई है और जेम्म ने शारीरिक क्रियाओ को मानसिक क्रियाओ का द्योतक चिह्न माना। प्रारम्भ मे इस मनोविज्ञान का प्रमुख विषय केन्द्रीय तन्त्रिकातत्र था क्योकि यह प्रचलित धारणा थी कि अनुभूतियाँ प्रमस्तिष्कावरण की क्रियाओ पर निर्भर हैं। वाल्डेअर का तन्त्रिका सिद्धान्त, शेरिंगटन का प्रक्रियाओ का सहज क्रियाओ पर आश्रित रहने से सम्बन्धित अन्वेषण, लैशले का प्रमस्तिष्कीय आवरण—स्थानीयकरण—ये बीसवी शताब्दी की शरीर सम्बन्धी मनोविज्ञान की प्रमुख देन हैं।

Physiological Zero [फिजियॉलोजिकल ज़ीरो] शारीरिक शून्य।

त्वचा का वह तापक्रम जिस पर औष्मिक अनुभव उत्पन्न नही किए जा सकते हैं। आम तौर पर, खुले हुए त्वचा क्षेत्रो का ऐसा तापक्रम करीब ३३° सेन्टीग्रेड होता है। लेकिन, यह अग प्रत्यगो के अनुसार पर्याप्त बदलता रहता है जैसे मुँह के अन्दर ३७° सेन्टीग्रड है और कान की लहर का २८° सेन्टीग्रेड है।

Pituitary Gland [पिट्यूटरी ग्लैण्ड] पीयूष ग्रन्थि।

एक छोटी मयुक्त अन्तरासर्गी ग्रन्थि जो कि मटर के एक दाने के बराबर होती है तथा इसका वजन मनुष्यो मे एक धान्य के बराबर होता है। यह मस्तिष्क मूल के स्थान पर जतुकास्थि (Sphenoil bone) मे एक गर्त (depression) पल्याणिका (Sella Turcica) मे स्थित होती है। यह शरीर मे पाई जाने वाली बहुत ही आवश्यक वाहिनीहीन ग्रन्थि है और सब वाहिनीहीन ग्रन्थियो के कार्यों को हारमोन्स के विस्तरण द्वारा, जो कि रक्त मे मिलकर प्रवाहित होते हैं और ग्रन्थियो को प्रभावित करते हैं, नियन्त्रित करती है।

इसके पश्च खड का द्रव (रस) जो कि पीयूष रस (Pituitrin) कहलाता है, रक्त निपीड को बढा देता है तथा मूत्र की मात्रा को नियन्त्रित करता है। पीयूष ग्रन्थि के कार्यों मे विक्षोभ होने से असामयिक बुढापा, ह्रास मासलता मे कष्टदायी अत्यधिक वृद्धि और लैंगिक विकास मे भिन्न भिन्न प्रकार के विक्षोभो की उत्पत्ति हो जाती है।

Plateau [प्लेटो] पठार।

सीखने की प्रगति के क्रम मे सामयिक अथवा अस्थायी गत्यावरोध। किसी विशेष प्रकार के सीखने मे शिक्षण-वक्र का वह पक्ष जहाँ पर प्रयास करने पर भी सीखने की गति मे कोई वृद्धि न हो रही हो। यहाँ पर शिक्षण वक्र समतल होता-सा प्रतीत होता है। यह भी सीखने मे गत्यवरोध का ही सूचक है। किन्तु यह गत्यवरोध प्राय अस्थायी होता है। निराश होना, प्रयास तथा रुचि का अभाव, किसी भ्रामक आदत का पड जाना, सीखी जाने वाली वस्तु मे किसी कठिनाई का आना, आत्म विश्वास तथा प्रतिकूल परिस्थितियाँ आदि इसके प्रमुख मनोवैज्ञानिक कारण हैं। इन कारणो का निवारण कर यदि शिक्षणार्थी के कार्य मे पुन रुचि उत्पन्न कर उसे प्रोत्साहन दिया जा सके तो प्राय यह इन गत्यवरोधो को पार कर उन्नति करता है।

कभी कभी इन पठारो के निर्माण का *कारण सीखने से सम्बन्धित सामर्थ्य* की शारीरिक सीमा (physiological limit) भी बतलाई जाती है।

देखिए—Physiological limit

Play [प्ले] खेल, क्रीडा।

प्राणी की स्वयप्रेरित, स्वतन्त्र, स्वलक्ष्य

तथा स्फूर्तिदायक प्रतिक्रिया। किसी भी व्यवहार-विशेष का अभ्यास जिससे स्पष्ट रूप से प्राणी की किसी आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती।

खेल की व्याख्या भिन्न-भिन्न आधारों पर की गई है, यथा अतिरिक्त शक्ति का व्यय (Surplus Energy Theory), भावी जीवन की तैयारी, विश्राम, दमित भावनाओं एवं संवेगों का प्रकाशन आदि।

खेल के चार प्रमुख प्रकार हैं—(१) शारीरिक (कबड्डी, हॉकी आदि), (२) मानसिक (ताश, गोरखधंधे आदि), (३) ताल-स्वर-सम्बन्धी (नाचना-गाना आदि) तथा (४) रचनात्मक (मिट्टी के खिलौने, कागज की नाव बनाना आदि)।

Pleasure Principle [प्लेज़र प्रिंसिपल] : सुखेप्सा सिद्धान्त।

मानव व्यवहार, क्रिया-व्यापार प्रतिक्रियाओं के विभिन्न स्वरूप और प्रवृत्ति के आधार पर फ्रायड ने कुछ सिद्धान्तों को अन्वेषित किया है। ऐसी प्रतिक्रियाएँ, जो विचारगम्य नहीं हैं, सामाजिक प्रतिबन्ध, नैतिक-अनैतिक की कसौटी पर नहीं कसी होतीं, जिन पर वास्तविकता के आधार पर विचार-विमर्श नहीं हुआ रहता और बाह्य परिस्थितियों से प्रेरित और प्रभावित नहीं रहती—उनका संचलन, सुखेप्सा-सिद्धान्त से होता है। जो प्रतिक्रियाएँ सुखेप्सा-सिद्धान्त से संचलित हैं उनका एकमात्र उद्देश्य मूल प्रवृत्ति का समाधान मात्र करना है। इदं, स्वभाव से प्रकृत और प्रारम्भिक होता है। इसी से इससे सम्बन्धित प्रतिक्रियाएँ सुखेप्सा-सिद्धान्त से संचलित मानी गई हैं। प्रवृत्त्यात्मक होने के कारण अचेतन मन का यह स्वभाव है कि यह उन प्रेरणाओं से नहीं प्रभावित होता जिनसे इसकी मूल प्रकृत इच्छाओं की तुष्टि नहीं हो पाती। अपने को शोभनीय-अशोभनीय किसी रूप में तुष्ट करना अचेतन मन अथवा इदम् के लिए आवश्यक-सा रहता है। इसी से यह स्थापित हुआ कि मन अथवा इदं सुखेप्सा-सिद्धान्त से संचलित होता है।

Pneumograph [न्यूमोग्राफ] : श्वसन-लेखी, न्यूमोग्राफ।

ऐसा यन्त्र जो श्वास-प्रक्रिया की गति, उच्छ्वासों की गहराई व विस्तार, तथा श्वास-गति-सम्बन्धित और प्रक्रियाओं का माप, वक्ष स्पन्दनों द्वारा, जोकि साँस लेने व निकालने से उत्पन्न होते हैं, लेना है। यह माप युक्ति द्वारा घूमती हुई कागज की पट्टी या ढोल पर अंकित होता चलता है।

Point Scales [पॉइन्ट स्केल्स] : अंक-मापनी।

वह मनोवैज्ञानिक मापनी जिस पर मापित गुण की विभिन्न मात्राओं को अंकों द्वारा व्यक्त किया जाता है। परीक्षार्थी को प्रत्येक प्रश्न के उत्तर अथवा अन्य प्रतिक्रिया पर अंक मिलते हैं। इन अंकों को जोड़कर उस व्यक्ति का कुल कच्चा परीक्षणांक निकाल लिया जाता है। तब इसका व्यावहारिक अथवा मूर्त अर्थ जानने के लिए कभी उसकी माध्य से दूरी मानक विचलनों में ज्ञात की जाती है और कभी उसे शतमक, मानकांक, मानसिक आयु आदि में बदल लिया जाता है। योग्यता-मापक अंक मापनी में सभी प्रश्नों का अथवा प्रत्येक विभिन्न क्रिया कराने वाले प्रश्नों का क्रम बढ़ती हुई कठिनता के अनुसार होता है। व्यक्तित्वमापक अंक मापनी में प्रश्नों का क्रम प्रायः यत्र-तत्र हुआ करता है।

Polarities [पोलैरिटीज़] : ध्रुवताएँ।

किसी भी कारक के दो विरोधी छोरों के बीच बदलने की विशेषता। यथा, भावना का सुख-दुख के बीच, संवेग का प्रसन्नता-निराशा के बीच। मनोविश्लेषण में इन ध्रुवताओं को अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। फ्रायड ने जीवन और मृत्यु की मूल प्रवृत्तियों के बीच ध्रुवता को समस्त जीवन का आधार माना है। इसके अतिरिक्त इन लोगों ने सक्रियता-निष्क्रियता, स्त्रीत्व-पुरुषत्व, सुख-दुख,

राग द्वेष आदि की ओर भी संकेत किया है।

समाजशास्त्र म (१) दो व्यक्तियो के बीच पाया जाने वाला एक प्रकार का सम्बन्ध जिसमे एक व्यक्ति दूसरे की ओर आकर्षित होता है। आकर्षित होने वाले व्यक्ति को अनुलोम और आकर्षित करने वाले को प्रतिलोम ध्रुव कहते है। (२) व्यक्तियो की सामाजिक सम्बन्धो मे सक्रिय या निष्क्रिय होने की प्रवृत्ति।

Polygraph [पौलीग्राफ] पौलीग्राफ।

ऐसा यन्त्र जो एक ही समय मे कई शरीर प्रक्रियाओ, जैसे हृदय-गति, साँस लेने व निकालने की प्रक्रिया, पेशियो का सकुचन को एक घूमते हुए ढोल अथवा घूमती हुई कागज की पट्टी पर समयाकन रेखा के साथ साथ उस माप को अकित करता चलता है।

Polymorphous Perverse [पोली मॉरफस परवर्स] बहुरूपी विपर्यस्त।

यह शब्द मनोविश्लेषको द्वारा रचित है। यह प्रत्यय मनोविज्ञान मे युवा बच्चा की कामभावना के प्रसग मे मनोविश्लेपको ने प्रयोग किया और कामविपर्यस्त व्यक्तियो के लिए भी जो विभिन्न काम-विकृति का प्रदशन करते हैं।

Positivism [पॉजिटिविज्म] प्रत्यक्ष-वाद (आगस्त कोमटे)।

दशन की वह शाखा जिससे अनुभवजन्य तथ्यो को ही ज्ञान का आधार माना गया है। वस्तुओं की तात्त्विक प्रकृति के सम्बन्ध मे विचार करने का यह विरोधी है। कामटे ने इस शब्द का प्रयोग 'तात्कालिक निरीक्षणीय' के लिए किया जिसकी सत्ता अनुमान से पहले है और जिसके सम्बन्ध मे विचार की कोई सम्भावना नही। अत वास्तव मे प्रत्यक्ष का अर्थ हुआ—आधारभूत, निरीक्षणीय, अनुमान के पूर्व, विवादरहित। कौन से वस्तु-तथ्य निर्विवाद रूप से वास्तविक है, इसका प्रत्युत्तर विभिन्न दार्शनिको ने भिन्न भिन्न रूप मे दिया है। कामटे की धारणा थी कि आधारभूत तथ्य सामाजिक है। अत समाजविज्ञान के अतिरिक्त वैयक्तिक मनोविज्ञान की कोई सम्भावना ही नही। दूसरी ओर मैक ओर उनके अनुगामी कुल्पे तथा टिचनर ने अन्तर्निरीक्षण के लिए प्रस्तुत तात्कालिक अनुभूतियो को ही आधारभूत तथ्य माना है। प्रत्यक्षवाद का कोई भी वर्तमान सम्प्रदाय ऐसा नही जो अनुमान पूर्व आधारभूत तथ्यो को वैज्ञानिक निरीक्षण का मूल मानता हो। कुल्पे तथा टिचनर की अन्तर्निरीक्षण विधि अनुमान-पूर्व निर्विवाद निष्कर्षो को नही प्रस्तुत कर सकी। अत एक तीसरे ही प्रकार के प्रत्यक्षवाद को मान्यता वर्तमान मनोवैज्ञानिको ने दी है।

Positive After Image [पॉजिटिव आफ्टर इमेज] सम उत्तर प्रतिमा।

जब उत्तर प्रतिमा की अनुभूति मूल उद्दीपन के अनुरूप अर्थात् उसी रग की होती है—यथा लाल की लाल, नीले की नीली, तो उसे सम उत्तर प्रतिमा या समानुबिम्ब कहते हैं।

Positive Transference [पॉजिटिव ट्रान्सफरेन्स] अनुकूल सक्रमण।

(मनोविश्लेपण) वह मानसिक अवस्था जिसमे रोगी अनजाने मे मनोविश्लेषक के प्रति मुग्ध-आकर्षित हो जाता है, अथवा मनोविश्लेषक रोगी के प्रेम, श्रद्धा, आकर्षण का पात्र बन जाता है। वस्तुत यह अतीत की सवेगात्मक अनुभूति का स्थानान्तरण है जिसके परिणामस्वरूप रोगी का आन्तरिक तनाव हल्का हो जाता है।

अनुकूल सक्रमण सम्बन्धी कई समस्याएँ भी है। रोगी का आकर्षित होना मनोविश्लेषक के लिए एक जटिल प्रश्न है। रोगी भावलहरो मे न बहने पाए इसका ध्यान मनोविश्लेषक को रखना पडता है—यह कि उसका आकर्षण मिथ्या है और इसके द्वारा वह केवल अतीत की महानो मात्र का पुनराह्वान कर रहा है। यह तभी सम्भव है जब मनोविश्लेषक निर्लिप्त हो, मनोग्रन्थियों से मुक्त हो। इसके लिए

उसका विश्लेषण आवश्यक है ।

फ्रायड के दृष्टिकोण से अनुकूल संक्रमण उपचार की आवश्यक सीढ़ी है। नव-फ्रायडवादियों ने इसका खण्डन किया है। हार्नी, क्लेरा थोम्पसन इत्यादि के अनुसार अनुकूल संक्रमण से रोगी मे नई मनो-ग्रन्थियाँ पड जाती हैं और इस प्रकार यह अवस्था रोग के उपचार मे सहायक नहीं बाधक है।

Positive Valence [पॉजिटिव वैलेन्स] : आकर्षण शक्ति।

देखिए—Valence.

Post Hypnotic Phenomenon [पोस्ट हिप्नॉटिक फेनॉमिनन] : सम्मोह-नोत्तर घटना।

सम्मोहन अवस्था मे प्राप्त आदेश को निश्चित समय पर जिस प्रकार का आदेश है उसी रूप में व्यक्ति का उसे कार्यान्वित करना। उसे सम्मोहित अवस्था के आदेश-अनुभूति की स्मृति नही रहती। कार्य सम्पादित मात्र होता है। दृष्टान्त के लिए सम्मोहित अवस्था मे व्यक्ति को यह निर्देश हुआ कि वह प्रातःकाल बाग से फूल लाकर गुलदस्ते मे लगा दे। वह प्रातः होते बाग से फूल लाकर गुलदस्ते मे लगा देता है; किन्तु उसे यह चेतना नही रही कि यह कार्य-सम्पादन करता है।

सम्मोहनोत्तर घटना अचेतन मन के अस्तित्व का प्रमाण है। सम्मोहन अवस्था मे दिया हुआ आदेश अचेतन मन में स्थापित हो जाता है जो समयानुकूल पुनरा-ह्वान और कार्यान्वित होता है।

Precognition [प्रिकॉग्निशन] : प्राक्-सज्ञान, अग्रसज्ञान।

भविष्य की ऐसी घटनाओ का अतीन्द्रिय बोध द्वारा प्रत्यक्ष ज्ञान जिसका केवल संयोग से अनुमान असम्भव हो और जो उस अनुमान से सम्भव हो जाने वाली न हो। प्राक्सज्ञान के उदाहरण इतिहास में भविष्यवाणी के रूप मे उपलब्ध हैं। अब परामनोवैज्ञानिको ने प्रायोगिक विधि से भी अग्रसंज्ञान की सम्भावना में विश्वास दिलाने वाले बहुत से तथ्य एकत्रित किये हैं। इनसे पता चलता है कि प्राक्सज्ञान न तो दूरी से सीमित है और न काल से। ड्यूक विश्वविद्यालय के आचार्य रहाइन द्वारा प्रचलित की गई कार्डविधि से देखा गया है कि गड्डी के पत्तो को उन्हें फेंटने से भी अग्रसज्ञान मे कमी नही आती। इससे पता चलता है कि यह प्राक्सज्ञान फेंटने मे प्राप्त अतीन्द्रिय बोध पर आधारित नही।

Preconsciousness [प्रिकॉन्शसनेस] : अग्रचेतना।

(फ्रायड) स्थल बोधिक दृष्टि से विभाजित मन का एक भाग। मन का मध्यस्तर। ज्ञात और अचेतन मन के बीच स्थित यह मध्य-स्थता का कार्य करता है। इसमे सचित भाव-इच्छा, स्मृति, अनुभूतियों की चेतना व्यक्ति को नही रहती; परन्तु आवश्यकता पड़ने पर उनको सहज ही चेतना मे प्रवेश-पत्र मिल जाता है। चेतन मन के विषय-वस्तु के बहुत-कुछ अनुकूल रहने से और प्रकृति में वर्जित-निष्कासित वर्ग की न होने से चेतना स्तर पर आवाहन करने मे कोई बाधा नही पडती।

अग्र चेतन का अचेतन मन से जटिल सम्बन्ध है और इसमें और अचेतन मन में स्वतन्त्र आदान-प्रदान नहीं हो पाता। अग्र चेतन और अचेतन मन के बीच प्रवेश-द्वार पर द्वारपालक के होने से अचेतन मन में संचित अनभूतियाँ इसमे सहज ही प्रवेश नही हो पाती, प्रतीक रूप मे प्रवेश करती हैं।

Pre-Frontal Lobotomy [प्रि-फ्रन्टल लोबोटॉमी] : पूर्व अग्रपालीय शल्योपचार।

मानसिक रोगो के उपचार के लिए शल्योपचार की अवतारणा (१९३६) का श्रेय लिस्बन-विश्वविद्यालय के तन्त्रिकाशास्त्र के एक भूतपूर्व प्राध्यापक मोनिज़ को है। उन्होने रोगी के कपाल मे दोनों ओर दो स्थानो पर छेद कर उनके द्वारा मस्तिष्क मे अग्रपालि और थैलेमस को जोड़नेवाले तन्तुओं को काट दिया। उसके बाद इस प्रकार की सहस्रों शल्यक्रियाएँ की गईं

और उनमे और भी विकसित विधियों को अपनाया गया। अकाल मनोभ्रंश (Dementia Praecox), उन्माद-अवसाद विक्षिप्ति (Manic-Depressive insain), अपविकासात्मक विषाद (Involutional Melancholia) तथा कतिपय मनोदौर्बल्य के उपचार मे इससे पर्याप्त सफलता मिली है।

Pregnanz [प्रग्नान्ज़] · परिपूर्णता।

(गेस्टाल्ट स्कूल) इसको परिशुद्धता (Precision) का नियम भी कहते हैं। अवयवी मनोवैज्ञानिकों (Organismic Psychology) ने व्यवहार और अनुभवों के सगठन का इसे एक बहुत ही व्यापक नियम मान लिया है। उसके अनुसार अवयव के अन्दर जहाँ तक कि दशाएँ अनुकूल होती हैं वहाँ तक स्पष्ट रूप से निरूपित या परिभाषित या सुतथ्य, स्थायी, दृढ व्यवस्थित, सरल, सुडौल, अर्थपूर्ण और लाघव होने की प्रवृत्ति होती है।

Preparatory Response [प्रिपेरेटरी रेसपॉन्स] पूर्व अनुक्रिया।

ऐसी अनुक्रिया जो कि किसी व्यवहार-क्रम की प्रारंभिक या माध्यमिक अवस्था मे घटित होती है तथा जिससे उस व्यवहार-क्रम की अन्तिम अनुक्रिया सम्भव हो जाती है।

Prepotent Response [प्रिपोटेंट रेसपॉन्स] पूर्वशक्त अनुक्रिया।

एक अनुक्रिया जिसका प्रभुत्व अन्य स्पर्धा की अनुक्रियाओ पर हो जब कि सब प्रकार की अनुक्रियाओं के लिए उपयुक्त उत्तेजनाएँ एक साथ ही प्रस्तुत हो। शेरिंगटन ने एक ऐसे डीसेरेब्रेटेड कुत्ते पर प्रयोग किया जिसमे मुखाद्रिक सहज क्रियाएँ सम्बन्धित होती रही—हाथ पैर का विस्तारण, खुरदने की अनुक्रिया, कधे की टिकलिंग, पैर म कुछ चुभाने पर पैर हटाना इत्यादि। जब कई एक उत्तेजनाएँ एक साथ दी गयीं, पैर खीच लेने की अनुक्रिया से सब अनुक्रियाएँ प्रतिबन्धित हो गयी। इस दृष्टात में पैर खीचना पूर्वशक्त अनुक्रिया है और चुभाना पूर्वशक्त उद्दीपन।

Prestige Suggestion [प्रेस्टिज सजेशन] प्रतिष्ठा ससूचन।

ससूचन से हमारा तात्पर्य उस विशिष्ट मानसिक क्रिया से है जो दूसरे व्यक्ति अथवा व्यक्तियो के, अथवा कुछ विशेष परिस्थितियो मे स्वय अपने ही मन की क्रियाओ पर निर्भर शब्दो, मनोवृत्तियो अथवा क्रियाओ के रूप मे उद्भूत विचारो अथवा विश्वासो को बिना कुछ सोचे-समझे ग्रहण करने अथवा आत्मसात करने के रूप मे फलित होती है। जब ससूचन प्रक्रिया मे प्रतिष्ठा का आश्रय लेते हैं, जो किसी भी व्यक्ति, व्यवसाय, सस्था से सम्बन्धित है जिसमे परामर्श हो मादा है और इस प्रकार ससूचन मूल्य हैं, तो उसे प्रतिष्ठा-निर्देशन कहते हैं—यथा, किसी नई प्रकार की मोटर गाडी के विज्ञापन मे इस प्रकार का उल्लेख होना कि इसे न केवल प्रधान मत्री प्रत्युत केन्द्र-सरकार के अनेक मन्त्रियो एव विदेशी राजदूतो ने भी खरीदा है। या, किसी चित्र के बारे मे यह विज्ञापित करना कि इसे सबसे पहले लालबहादुर शास्त्री ने देखा और इसकी प्रशसा की। इस प्रकार के विज्ञापनों का सीधा उद्देश्य दर्शकों अथवा पाठको पर निरपेक्ष रूप से यह प्रभाव डालना है कि जिस काम को ऐसे ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने किया उसे किया जाना चाहिए और व्यक्ति मे इस ओर एक स्वाभाविक झुकाव होता है।

Pre-Testing [प्रि टेस्टिंग] प्राक् परीक्षण।

किसी नवीन परीक्षण के निर्माण में परीक्षण मे रखने के लिए सूझे हुए प्रश्नों का सग्रह करने के पश्चात् की क्रिया। इसमे इन प्रश्नों को परीक्षण रूप मे उस जन-समूह के एक छोटे से न्यादर्श से करवाकर देखा जाता है जिस जन समूह के ऊपर नवीन परीक्षण का उपयोग करना होता है। इसका उद्देश्य होता है—(१) प्रत्येक प्रश्न के दोष-गुण विश्लेषण करने

के लिए आवश्यक प्रदत्त एकत्रित करना, (२) परीक्षण के लिए बनाये हुए आदेश तथा सामान्य बाह्य आकार के दोषों का पता लगाना। (३) परीक्षण के लिए उचित समय-सीमा स्थिर करना, (४) परीक्षण के लिए उचित प्रश्न संख्या स्थिर करना।

प्रायः प्रश्न-विश्लेषण के बाद परीक्षण के अन्तिम रूप में बन जाने के बाद एक और प्राक्परीक्षण परीक्षण की विश्वस्यता (Reliability) जानने के लिए भी किया जाता है।

Primary Mental Abilities [प्राइमरी मेन्टल ऐबिलिटीज़] : प्राथमिक मानसिक योग्यताएँ।

बुद्धि-परीक्षणों के खण्ड-विश्लेषण के आधार पर थर्स्टन द्वारा प्रतिपादित प्राथमिक मानसिक योग्यताएँ, जिनमें से बहु स्वीकृत निम्न हैं—

(१) भाषा-प्रबोध योग्यता—पठन-परीक्षण, भाषात्मक उपमा परीक्षण, विशृङ्खल वाक्य-परीक्षण, भाषात्मक तर्क-परीक्षण तथा लोकोक्ति मेल परीक्षण आदि का प्रमुख खण्ड।

(२) शब्दप्रवाह योग्यता—शब्द परिवर्तन परीक्षण, तुकान्त परीक्षण, एक वर्गीय शब्द परीक्षण आदि का मुख्य खण्ड।

(३) संख्यात्मक योग्यता—वेग तथा यथार्थता से सरल गणित क्रियाएँ कर लेना।

(४) दैशिक योग्यता—देशात्मक सम्बन्धों का प्रत्यक्ष बोध तथा नवीन देशात्मक सम्बन्धों की कल्पना।

(५) साहचर्यात्मक स्मृति—सम्बद्ध जोड़ों को रटने में काम आने वाली योग्यता।

(६) प्रत्यक्ष वेग—दृष्ट विषयों, समानताओं तथा विषमताओं को शीघ्रता तथा यथार्थता से ग्रहण कर लेना।

(७) आगमन अर्थात् सामान्य तर्क—संख्या शृङ्खला पूर्ति परीक्षणों आदि में नियम ज्ञात कर लेना।

Principle [प्रिंसिपुल्] : सिद्धान्त।

जहाँ तक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का सम्बन्ध है, ये प्रारम्भिक और मूलभूत सामान्य अनुमान हैं, जो कि मनुष्य की पारस्परिक क्रिया-प्रतिक्रिया की व्याख्या में प्रयुक्त होते हैं। मनोविज्ञान में यह मनोवैज्ञानिक नियमों की आगमन पद्धति (Inductive) पर की गई व्याख्या है। सिद्धान्त दो प्रकार के होते हैं : वर्णनात्मक और व्याख्यात्मक। सामान्य अनुमान जो निर्देशक रूप में लाभदायक हैं, किन्तु उन्हें वैज्ञानिक व्याख्या के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता, प्रथम प्रकार के सिद्धान्त हैं। उपयुक्त रूप से परीक्षित व्याख्या, व्याख्यात्मक सिद्धान्त है। यदि इसे आसान करके कहा जाए तो यह प्रकृति की किसी एकरूपता के लिए प्रयुक्त होता है, जो यदि सूत्र रूप में कहा जाए तो नियम (Law) कहा जा सकता है।

देखिए—Law।

Proactive Inhibition [प्रोएक्टिव इन्हिबिशन] : 'अग्रलक्षी अवरोध'।

जबकि सीखने वाली मालाओं में पहले के सीखे हुए कुछ पद उन्हीं मालाओं में बाद में आने वाले पदों के सीखने को और कठिन बना देते हैं, तो उस प्रकृति प्रक्रिया को अग्रलक्षी अवरोध कहते हैं।

Probable Error [प्रॉबेब्ल एरर] : प्रसभाव्य त्रुटि, सम्भव त्रुटि।

किसी मापन की अविश्वस्यता अथवा अनिश्चितता का एक माप। यह किसी 'प्रसामान्य माप वितरण' के मानक विचलन का ·६७४५वाँ अंश होता है। इस परिमाण को ज्ञात करलेने पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि माप माध्य की २५ प्रतिशत सम्भावना किसी माप से इतना परिमाण अधिक होने की है; २५ प्रतिशत उससेइतनी कम होने की है और ५० प्रतिशत इन दोनों सीमाओं के बीच होने की। इस प्रकार सम्भव त्रुटि प्रसामान्य वितरण के चतुर्थक विचलन के बराबर होती है और यदि किसी वितरण में प्रसामान्यता मान ली

जाए तो सम्भव त्रुटि को चतुर्थक विचलन ज्ञात करने की विधि से प्राप्त किया जा सकता है।

माध्य से सम्भव त्रुटि के परिमाण की दूरी पर ऊपर-नीचे दोनों ओर की सीमाओ के बीच के ५० प्रतिशत अर्थात् आधे माप वितरण का आ जाना मनोविज्ञान मे बहुत महत्त्वपूर्ण समझा जाता है, क्योकि इस बीच के आधे वितरण को ही व्यावहारिक दृष्टि से प्रसामान्यता का विस्तार मान लिया जाता है। इस विस्तार के ऊपर का चौथाई अर्थात् २५ प्रतिशत वितरण सामान्य की अपेक्षा उत्कृष्ट तथा इस विस्तार के नीचे का एक-चौथाई अर्थात् २५ प्रतिशत वितरण सामान्य की अपेक्षा निकृष्ट स्तर पर माना जाता है।

सम्भव त्रुटि का प्रसामान्य वितरण के माप को इकाई के रूप मे भी उपयोग किया जाता है। तब यह कहा जाता है कि माध्य से $\pm$१ सम्भव त्रुटि मे वितरण के ५० प्रतिशत माप आ जाते हैं, माध्य से $\pm$ २ सम्भव त्रुटि मे वितरण के ८२.२६ प्रतिशत माप, माध्य से $\pm$ ३ सम्भव त्रुटि मे वितरण के ९५.७० प्रतिशत माप, एव माध्य से $\pm$४ सम्भव त्रुटि मे वितरण के ९९.३० प्रतिशत माप।

किसी माप की अविश्वसनीयता का दूसरा माप मानक विचलन, सम्भव त्रुटि का १.४८२६ गुना अर्थात् लगभग ड्योढ़ा होता है।

Probability[प्रोबबिलिटी] प्रायिकता।

किसी घटना के होने की प्रत्याशा को विज्ञान मे प्रायिकता कहते हैं। यह किसी विशेष घटना के बराबर घटित होने तथा जो होने की पूरी सख्या है उसके अनुपात को भी कहते हैं। सांख्यिकी दृष्टि से इसका गणितीय प्रायिकता सिद्धान्त के आधार पर मापन होता है, जिसमे किसी घटना का घटित होना अवसर सिद्धान्त से निश्चित होता है। प्रायिकता वक्र घटा आकार की होती है।

एक घटना की आवृत्ति और सम्भावित घटना की आवृत्ति की पूरी सख्या के अनुपात को प्रायिकता अनुपात (Probability ratio) कहते हैं।

Probation System : [प्रोबेशन सिस्टम] परिवीक्षा पद्धति।

अपराध क्षेत्र मे मनोवैज्ञानिक आधार पर सयोजित एक सुधारात्मक प्रणाली जो बाल-अपराधियो (Juveniles) मात्र मे सुधार लाने के प्रयोजन से अन्वेषित की गई है। इसमें परिवीक्षक की नियुक्ति की जाती है और उनका प्रमुख कार्य बाल-अपराधियो को जेल की सजा होने से मुक्त कराकर अपनी सरक्षता मे रखकर उनकी मानसिक अवस्था का सूक्ष्म अध्ययन करना है तथा बाल-अपराधी के गृह-वातावरण मे समुचित सुधार करना जिससे उनका मानसिक परिवर्धन हो जाए और सवेगात्मक समायोजन प्राप्त हो। बालक अधिकाशत परिस्थिति से विवश होकर अनुपयुक्त पारिवारिक वातावरण होने के कारण अपराध करता है। गृह-वातावरण मे समुचित सुधार लाने के पश्चात् बाल अपराधी के सुधरने की सम्भावना रहती है। कुशल परिवीक्षक में मानव की कमजोरी तथा प्रकृत आवश्यकताओ को समझने की सामर्थ्य होती है। तभी वह उचित और उपयुक्त निर्देशन दे पाता है। वह अपने और बाल-अपराधी के बीच आत्मीयता का भाव स्थापित कर उसे सुधारने का प्रयास करता है। परिवीक्षक कुशल समाज-सुधारक की तरह बाल-अपराधी के पारिवारिक वातावरण का निरीक्षण करता है और परिवार के सम्मुख समय समय से परोक्ष रूप से सुझाव रखता है जिससे बाल-अपराधी के सम्मुख उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत रहे। बालक मे अनुकरण की प्रवृत्ति होती है, वह वातावरण से सीखता है। दोषयुक्त वातावरण रहने पर प्रकृत इच्छा को जब ठेस पहुँचती है तब उसका आन्तरिक मन क्षोभ से क्षुधित हो जाता है और वह निकृष्ट कार्य सहज ही करने लगता है। जब गृह के

वातावरण मे सुधार सम्भव नही होता, तब परिवीक्षक बाल अपराधी को गृह-वातावरण से हटाकर चरित्र-सुधारालयों (Reformatories) में रखने का प्रबन्ध करता है।

Problem Box [प्रोबलम बॉक्स] : समस्या-पेटी।

ऐसी पेटी या बक्स जो कि कम या अधिक जटिल व कठिनाइयों से पूर्ण गुत्थियों से भरा होता है। ये गुत्थियाँ डोरी, काठ या लोहे की बनी होती हैं और इनको एक विशेष प्रक्रिया द्वारा ही खोला या सुलझाया जा सकता है। व्यक्ति को, प्रयोग करते समय इनको खोलना पड़ता है; या पशुओं को, खाना पाने या सगी मिलने या छुटकारा मिलने के लालच में इन गुत्थियों को खोलना पड़ता है।

Problem Solving [प्रोबलम सॉल्विंग] : समस्या-समाधान।

प्रयोग का एक रूप, जिसमें किसी प्रकार की वस्तु स्थिति किसी भी व्यक्ति या पशु के सामने उपस्थित की जाती है और जिसमें कि एक विशेष लक्ष्य-प्राप्ति के लिए विचार-क्रम अथवा क्रियाओं की गहन श्रेणी के प्रयोग की आवश्यकता पड़ती है। इसका उपयोग सीखने के कुछ तरीकों मे, अन्तर्दृष्टि तथा विचार के अध्ययन में होता है जैसा समस्या-पेटी (Problem box)।

देखिए—Problem Solving.

Product Scales [प्रोडक्ट स्केल्स] : उत्पाद मापनी।

एक प्रकार की मनोवैज्ञानिक मापनी जिसमे उत्पादों के कुछ नामक नमूनों की एक लडी उपलब्ध होती है। किसी व्यक्ति के उत्पाद का मापन करने मे यह देखा जाता है कि वह तुलना मे मापनी की किस कृति के सर्वाधिक समान है और तब उसे वही अंक दिया जाता है जो मापनी के निर्माताओं द्वारा मापनी के उस उत्पाद के लिए निश्चित किया हुआ होता है। इस प्रकार की मापनी प्रायः लिखाई, सिलाई, रेखांकन और अन्य हस्तकलाओं की परीक्षा के लिए बनाई गई हैं और उन सब गुणों की परीक्षा के लिए बनाई जा सकती हैं जो टिकाऊ निरीक्ष्य उत्पादों की रचना मे प्रगट होते हैं। इनका निर्माण युग्मित तुलना विधि के उपयोग से बहुत से निर्णायकों से प्राप्त अनुमानों के आधार पर किया जाता है।

Productive Thinking [प्रोडक्टिव थिंकिंग] : फलद चिन्तन।

वह प्रक्रिया जिसके द्वारा समस्या-समाधान के नए तरीके कार्य मे आते हैं। कुछ लोगों के अनुसार फलद-चिन्तन चार प्रक्रम में सन्निहित हैं : (१) तैयारी (Preparation), (२) मन पर छाप (Inculcation), (३) प्रभासन (Illumination), (४) एकीकरण (Unification)।

परम्परागत तर्कशास्त्र, साहचर्यवाद आदि ने विभिन्न सुझाव इस क्रिया के बारे में दिए। इसमे वरदाईमर का अवयवी उपागमन अधिक सत्याभासक मालूम होता है। उनके अनुसार फलद-चिन्तन में कई प्रक्रियाएँ सन्निहित हैं, जैसे वस्तुस्थिति की सरचनात्मक आवश्यकताओं (Structural requirements) के अनुसार, समुदायीकरण, केन्द्रीकरण, सगठनीकरण प्रक्रियाएँ अवयवी हैं, योग नही। उनके अलावा दूसरी प्रक्रियाएँ, जैसे आन्तर सम्बन्धों का बोध, विच्छेदों या अन्तरों को भरना, सरचनात्मक समुदायीकरण और पृथक्करण, सरचनात्मक प्रधानता, परिवहनशील तथा खण्ड-खण्ड रूप में सत्य के खोज की अपेक्षा संरचनात्मक सत्य की खोज करता।

सृजनात्मक चिन्तन-क्रिया में प्रेरक होता है और सत्य का सामना करने की योजना होती है।

Projection [प्रोजे'क्शन] : प्रक्षेप, प्रक्षेपण।

सामान्यतः इसका अर्थ है किसी भी वस्तु का उसकी सीमा के बाहर फैलाव। सामाजिक दृष्टि से यह व्यक्तिगत अनुभव का

अन्य पर प्रक्षेपण है। शैक्षिक मनोविज्ञान मे इसकी व्याख्या एक प्रकार से दी गई है और मनोविश्लेषण मे दूसरे प्रकार से। शैक्षिक मनोविज्ञान मे यह जो स्थान उत्तेजित हुआ है उस स्थान पर सवेदन का स्थानीकरण होना है। दृश्य सवेदन का दृश्य-क्षेत्र मे, स्पर्श का त्वचा श्रव्य का श्रव्य-क्षेत्र इत्यादि। मनोविश्लेषण के अनुसार (फ्रायड ने सन् १८९४ म इस धारणा का एक विशेष अर्थ म प्रयोग किया है) प्रक्षेपण अचेतन मन की व्यक्तिगत सामजस्य हेतु एक आत्मरक्षार्थ कार्य पद्धति है। यह अपनी भाव इच्छा प्रेरणा का अन्य पर आरोपण है। आभ्यन्तरिक क्षेत्र मे ऐसी योजना है कि व्यक्ति अपने अपराध भाव को बाह्य विषयवस्तु पर आरोपित करके अपना भार हल्का कर लेता है। यह आरोपण अव्यक्त और अनजाने मे होता है। वस्तुत अचेतन मन ऐन्द्रिक वासना क्षेप्सा सिद्धान्त (Pleasure principle) से चालित है। अचेतन स्वर पर वेदना का भाव रहना सभव नही है। इसी से स्वरक्षार्थ यह योजना ढूंढी गयी है। यह कार्य पद्धति सविभ्रम रोग मे विशेष रूप से मिलती है। सविभ्रम के रोगी का अपमान भ्रम इसका उत्कृष्ट प्रमाण है। यह तो मानव स्वभाव भी है कि वह अधिकाशत किसी भी बाह्य विषय वस्तु की व्याख्या अपने ही भाव विचार-इच्छा के अनुकूल देता है—"जाकी जैसी भावना, हरि मूरत तिन देखी जैसी।"

Projective Test [प्रोजेक्टिव टेस्ट] प्रक्षेपण परीक्षण।

एक सापेक्षित रूप से अस्पष्ट उत्तेजक-वस्तुस्थिति के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुए मानवीय प्राणी के व्यवहार के निरीक्षण की एक प्रामाणिक मनोविश्लेपण विधि, जिसके द्वारा उसकी विशेष व्यक्तित्व सचालक शक्ति का निश्चय किया जा सकता है। जैसे रोरशाख का मसी लक्ष्म परीक्षण (Ink blot test), मरे का मत-स्चेतनाभिवेचन परीक्षण (Thematic Apperception Test) वाक्यपूरक परीक्षा, कार्टून व रेखाचित्र परीक्षण, खेल परीक्षा और अस्पष्ट ध्वनि परीक्षा। प्रक्षेपण परीक्षण को प्रयोग करने के लिए, विशेष शिक्षा की आवश्यकता होती है।

देखिए—Ink Blot Test, Thematic Apperception Test

Propensity [प्रोपेन्सिटी] प्रवृत्ति।

किसी भी निर्दिष्ट कार्य अथवा व्यवहार-प्रणाली के प्रति जन्मजात अथवा अर्जित शक्तिशाली तीव्र स्वाभाविक-झुकाव।

Proprioceptors [प्रोप्राआसेप्टर्स]. मध्यग्राहक।

उद्दीपन बाह्य और आतरिक हैं और अन्दर और बाहर दोनों ओर से जीव पर आघात करते हैं। अत इन उद्दीपनो को ग्रहण करने वाले ग्राहक-कोष भी प्राणी के अन्दर और बाहर दोनों ओर पाए जाते हैं। जो ग्राहक-कोष शरीर के बाह्यागो (यथा आंख मे) स्थित रहकर बाहरी उत्तेजनाओं को ग्रहण करते हैं उन्हें बाह्यानुग्राहक (Exteroceptors) और जो शरीर के भीतरी भागो (यथा अतडियो) मे स्थित रहकर भीतरी उत्तेजनाओं को ग्रहण करते हैं उन्हें 'अन्तरानु ग्राहक' (Interoceptors) कहते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ ग्राहक-कोष मास-पेशियो, जोडो, पुट्ठो और उनके आवरणो मे भी पाए जाते हैं जो इनमे होने वाली गतियो परिवर्तनो को ग्रहण कर केन्द्रीय तन्त्रिकातन्त्र तक पहुँचते हैं। इन्हीं की उत्तेजना को 'मध्यग्राहक' कहते हैं। इनसे उक्त अगों के स्वत अभियोजन मे सहायता मिलती है।

Protopathic Sensitivity [प्रोटोपैथिक सेन्सिटिविटी] आद्यमार्गी सवेदनशीलता, स्थूल स्पर्श सवेदनशीलता।

सवेदन ग्राह्यक्षमता की एक प्रणाली, जिसमे कुछ अतरागो (viscera) व चर्म-तलो पर दबाव शीत और उष्णता के केवल पीडाजनक तीव्र उत्तेजनाओ को ही अनुभव कर पाते हैं तथा जहा पर

अधिक सूक्ष्म विभेद करने वाली संवेदन-शीलता का अभाव होता है। जैसे सर।

Pseudo Psychology [स्यूडो साइकॉलोजी] : कूट मनोविज्ञान।

कोई भी सिद्धान्त, प्रणाली अथवा सम्प्रदाय, जो मनोविज्ञान होने अथवा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने का दावा तो करता है, पर अपनी खोज में ऐसी विधियों एवं नियम-सिद्धान्तों का उपयोग करता है, जो मनोविज्ञान की निश्चित-निर्धारित एवं सर्वमान्य प्रणालियों एवं सिद्धान्तों के पूर्णतः विपरीत हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक परामनोविज्ञान (Para Psychology) को भी इसी के अन्तर्गत रखते हैं।

देखिये—Para Psychology.

Psychasthenia [साइकेस्थेनिया] : साइकेस्थेनिया, मनोदौर्बल्य।

इस धारणा का अन्वेषण १८८६ में फ्रांस के मनोवैज्ञानिक जैने ने किया है। यह मानसिक दुर्बलता की अवस्था है, जिसमें मानसिक समायोजन निर्बल पड़ जाता है और भीति, चिंता, हठ प्रवृत्ति, व्यक्तित्व, अप्रतीति इत्यादि लक्षण दृष्टिगत होते हैं। करीब-करीब सभी मानसिक दुर्बलता के लक्षण इसमें मिलते हैं। साइकेस्थेनिया के अन्तर्गत मनोग्रस्ति (Obsession), दुर्भीति (Phobia), हिस्टीरिया और चिन्ता रोग (Anxiety Neurosis) सम्मिलित हैं। मनःश्रांति (Neurasthenia) में तन्त्रिका सम्बन्धी समस्याएँ होती हैं, यद्यपि इसका कारण मानसिक होता है; साइकेस्थेनिया में विचार-सम्बन्धी जटिलताएँ रहती हैं।

देखिये—Obsession, Phobia, Anxiety neurosis.

P. S. E. (Point of Subjective Equality) [पॉइन्ट ऑफ सब्जेक्टिव इक्वैलिटी] : विषयीगत समताबिन्दु।

यदि प्रयोज्य के समक्ष एक स्थिर मानक उद्दीपन उपस्थापित किया जाता है और बहुत सी विभिन्न मात्राओं के परिवर्त्य उद्दीपन भी उपस्थापित किए जाते हैं और प्रयोज्य से कई बार मानक उद्दीपन के बराबर प्रतीत होनेवाली परिवर्त्य उत्तेजना चुन लेने को कहा जाता है, तब प्रयोज्य द्वारा चुनी गई विभिन्न मात्राओं की परिवर्त्य उत्तेजनाओं के माध्य को विषयीगत समता बिन्दु कहा जाता है। यह बिन्दु न्यूनतम परिवर्तन विधि से भी ज्ञात किया जा सकता है और स्थिर उद्दीपन विधि से भी।

Psyche [साइकी] : मन, मानस, साइकी।

'साइकी' ग्रीक भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है आत्मा, विश्वात्मा अथवा प्रेतात्मा। प्लेटो के दर्शन में सृष्टि के आदि में उस एक से जो दूसरा व्यक्त हुआ उसे इसी नाम से पुकारा गया। अतः मूलतः इसका अर्थ है 'जीवन का सिद्धान्त'। वर्तमान युग में इसे मनोधातु, मन (विशेषकर मनोविश्लेषण में) के पर्याय के रूप में व्यवहार में लाया जाता है।

Psychiatry [साइकिआट्री] : मनोविकार विज्ञान।

औषधि की वह शाखा जिसमें मानसिक विकृति के निदान और उपचार का प्रयास होता है। चिकित्सा में जिन विधियों का प्रयोग होता है वे मानसिक (Psychotherapy) और औषधि (Medicotherapy) दोनों प्रकार की हैं।

Psychic Causality [साइकिक कॉज़ैलिटी] : मानसिक कारणता।

यह वैज्ञानिकों की वह परिकल्पना है जिसके अनुसार किसी भी घटना अथवा कारक का घटना अथवा उसकी उपस्थिति नियत तथा निश्चित रूप से अपनी किसी सहवर्तिनी अथवा पूर्ववर्ती घटना का परिणाम होता है। मनोविज्ञान में भी कार्य-कारण का सिद्धान्त स्वीकृत और संस्थापित है जिसके अन्तर्गत दो प्रकार की निर्भरता मानी गई है :

१. मन की शरीर पर अथवा प्रतिक्रिया की उत्तेजना पर।
२. चेतन तथ्यों की परस्पर निर्भरता।

इनमे से पहला मनोभौतिक है और दूसरा वास्तविक अर्थ में मानसिक।

कार्य और कारण भौतिक धारणाएँ हैं, किन्तु इनका प्रयोग मन के सम्बन्ध मे भी हुआ है। मानसिक कारणता मन के विकास का सिद्धान्त मात्र है जहाँ परिवर्तन सक्रिय मन की प्रकृत प्रक्रिया है। सिद्धान्त के रूप मे इससे इस बात की स्थापना होती है कि चेतना स्रोत की गति और रूप अनुक्रम (sequence) के निश्चित नियमो पर निर्भर है। विज्ञान के रूप मे मनोविज्ञान मे जितने भी नियम उपस्थित हैं वे मानसिक कारणता मे सामान्य नियम के अन्तर्गत हैं।

Psychic Determinism [साइकिक डिटरमिनिज़म] . मनोनियतिवाद।

मानसिक क्षेत्र कार्य-कारण के नियम से वैसा ही बद्ध है जैसे कि भौतिक क्षेत्र, इसी के प्रसग मे इस परिकल्पना का अन्वेषण फ्रायड द्वारा हुआ है। रोगियों की मानसिक अवस्था का और उनके स्वप्नों का सूक्ष्म निरीक्षण-अध्ययन करके फ्रायड ने इस प्राक्कल्पना की सार्वभौमता स्थापित की और यह प्रमाणित किया कि केवल स्वप्न और विक्षिप्त क्रिया कार्य-कारण के सम्बन्ध मे बँधी नही है। बल्कि दैनिक क्रियाएँ भी आकस्मिक नहीं हैं। जिन क्रियाओ का विवरण चेतन मन नही दे पाता उनका कारण अचेतन मन मे सदैव निहित रहता है। फ्रायड की इस धारणा का विशेष महत्त्व है और इस परिकल्पना से मनोविज्ञान के क्षेत्र मे एक बडी कमी की पूर्ति हो गई। मनोविज्ञान को एक वैज्ञानिक पद प्राप्त हुआ। अथवा यह कि अन्य प्रकृत विज्ञानो मे यह भी एक प्रकृत विज्ञान है। कुछ मनोवियो ने मनोनियतिवाद की परिकल्पना का खण्डन इस आधार पर किया कि मानसिक क्रियाएँ क्षणिक होती हैं इनमे परिवर्तन होता रहता है, और इनमे क्रम-व्यवस्था नहीं होती, इस प्रकार भौतिक क्षेत्र की तरह हमें सार्वभौमता और क्रम-व्यवस्था मानसिक क्षेत्र मे नही मिलती। फ्रायड ने इस आक्षेप का समाधान किया और यह प्रमाणित किया कि मानसिक क्षेत्र मे स्थिरता होती है और यह नियमबद्ध होता है कि मानव की अनुभूति तथा व्यवहार का स्रोत कही अवश्य रहता है। मानसिक क्रियाएँ निष्प्रयोजन नही होती।

Psychic Fusion [साइकिक फ्युज़न] : मानसिक सयोजन।

एक नई अवस्था के निर्माण के लिए अनेक पृथक् मानसिक अवस्थाओ का आनुमानिक मिश्रण। १९वीं शती के मनोविज्ञान मे 'सयोजन' साहचर्य का एक प्रचलित रूप था जो मूल तत्त्वो की पारस्परिक सयुक्ति का प्रतीक था। उदाहरण के लिए तीव्र स्वर, दृष्टि स्थानीकरण आदि।

मानसिक सयोजन की सम्भावना एक अत्यधिक विवादग्रस्त प्रश्न है। इसकी पुष्टि मे दिये गए दृष्टान्तो की व्याख्या स्मृति-क्षेत्र मे जागृत प्रतिमाओ के मानसिक सयोजन के आधार पर की जा सकती है।

Psycho-analysis [साइको-एनैलिसिस] मनोविश्लेषण।

सिग्मड फ्रायड (१८५६-१९३९)— मनोविश्लेषण शब्द का प्रयोग कई अर्थों मे हुआ है (१) अन्य मानसिक उपचार विधियों की तरह मनोविश्लेषण भी एक विधि है और इसके द्वारा रोगी स्थायी रूप से स्वस्थ किया जा सकता है। (२) अज्ञात मन के अन्दर स्थित द्वन्द्व तथा भावना ग्रन्थियो की जानकारी प्राप्त करने की यह विशेष युक्ति है। (३) मनोविश्लेषण एक सकारात्मक विज्ञान या सिद्धान्त है जिसकी निज की अपनी धारणाएँ और मान्यताएँ हैं और जो फ्रायड के द्वारा प्रतिपादित की गई हैं। वस्तुतः मनोविश्लेषण शब्द का मूल प्रयोग इस अर्थ में हुआ है कि यह एक सम्प्रदाय है। वर्तमान युग मे फ्रायड के मनोविश्लेषण की अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित हुई

है और यह एक स्वतन्त्र विज्ञान माना जाता है।

फ्रायड के ग्रन्थों में कामवृत्ति एवं कामशक्ति का अधिकतर उल्लेख मिलता है और इन्हीं के प्रसग मे मानव के सभी व्यवहार और व्यक्तित्व की व्याख्या करने का प्रयास हुआ है। स्वप्न और विकृत व्यवहार की व्याख्या में कामवृत्ति का एकमात्र महत्त्व है। कला-धर्म एक प्रकार से कामवृत्ति का परिमार्जन मात्र है। पौराणिक कथाएँ कामवृत्ति की महत्ता स्थापित करने के लिए विशेष उपयुक्त हैं। किन्तु कामवृत्ति और कामशक्ति सिद्धान्त के कारण मनोविश्लेषण का विशेष खण्डन हुआ। वस्तुत. मानवस्वभाव बहुरंगी होता है। जीवन की प्रत्येक समस्या का निराकरण काम-प्रसग मे करना सीमित दृष्टिकोण का लक्षण है।

मनोविश्लेषण के अनुसार मन के तीन भाग हैं : ज्ञात, ईषद् ज्ञात और अज्ञात मन। अज्ञात मन सबसे बड़ा भाग मन का है। अचेतन मन की धारणा ने २०वी शताब्दी में मनोविज्ञान सम्बन्धी अन्वेषण में एक क्रान्ति को ला दिया है और इसीसे १९वी शताब्दी से पृथक् एक नई व्याख्या २०वी शताब्दी मे हमें हरेक मानसिक क्रिया-व्यापार को मिलती है।

फ्रायड का स्वप्न-सिद्धान्त विश्व-प्रसिद्ध है। उन्होंने पहले-पहल स्वप्न की मानसिक महत्ता की ओर सकेत किया। इस प्रसग मे स्वप्न-व्याख्या (Dream interpretation), स्वप्न-क्रिया (Dream work), व्यक्त अंश (Manifest content), अव्यक्त अंश (Latent content), विस्थापन (Displacement), संक्षेपण (Condensation) और प्रतीकीकरण (Symbolization) इत्यादि विशिष्ट धारणाएँ प्रतिपादित हुईं और इनके संदर्भ में स्वप्न की व्याख्या की गई है।

फ्रायड के अनुसार मानसिक दौर्बल्य का प्रमुख कारण कामवृत्ति का दमन है। जब कामशक्ति का उपयुक्त विकास नही होता व्यक्ति में दुर्बलता आती है। दमन (Repression), अन्तर्द्वन्द्व (Conflict), कामविकृति (Sex perversion), कामशक्ति का दोषयुक्त विकास इत्यादि की धारणाएँ विस्तारित की गई हैं।

देखिये—Libido, Repression, Dream work, Dream interpretation, Condensation, Displacement, Sex-perversion, Manifest content, Latent content, Unconscious

Psycho-biology [साइको-बायलॉजी] : मनोजैविकी, मनोजीवविज्ञान।

अमरीका मे १९१८ में अडोल्फ मेयर द्वारा चिकित्साशास्त्र-शिक्षा के सन्दर्भ में जीव-विज्ञान के अन्तर्गत रखा गया मनुष्य के व्यक्तित्व का अध्ययन। इसमें मुख्यतः व्यक्ति की सामान्य प्रतिक्रियाओं की ओर विशेष ध्यान दिया गया था। इन प्रतिक्रियाओ की न्यूनाधिक चेतना के आधार पर इन्हें जीव के अलग-अलग अंगों तथा अवयवो के प्रकार्यों से भिन्न समझा गया था। इनका प्रतीकोपयोग द्वारा मानसिक एकीकरण अध्ययन का प्रमुख विषय था। मनोजैविकी में प्रतीकोपयोग का अर्थ है कालबद्ध अनुभवों का प्रत्यक्ष प्रतिमा तथा अर्थयुक्त शब्दो में अभिव्यक्त होकर वर्तमान एव भावी व्यवहार को दैहिक प्रकार्यों के प्रभावों से भी आगे और अधिक प्रभावित करना। प्रत्यक्षण, स्मृति, कल्पना, प्रत्याशा, भाषा, गणित, तर्क एव दर्शन इस प्रतीकोपयोग के विभिन्न रूप हैं। चेतना की धारणा सोने और स्वप्न देखने से लेकर जागने और स्पष्ट चिन्तन तक किसी भी स्तर पर जैवी क्रिया की धारणा हैं। व्यक्ति केवल अगों तथा अवयवों के विषय मे शारीरिक और देहकार्यिक प्रदत्तों का योग नही वरन् इन पर ही आधारित समस्त एव पूर्वानुभव से परे, एक स्वायत्त जीवन क्रियाशील, भावशील, विचारशील, स्मरणशील एवं आशाशील अपनी जीवन-कथा का निर्माता सम्पूर्ण है। इस व्यक्ति

का व्यवहार, व्यक्त प्रेक्ष्य तथा अर्थसूचक भी होता है, और अव्यक्त, संवेदन, प्रत्यक्ष, स्मृति कल्पना आदि मानसिक प्रक्रिया रूप भी होता है। मस्तिष्क इसके व्यवहार की एकीकारता का शारीरिक एवं देहकायिक आधार है। इसके मुख्य प्रकार्य ये हैं—मूल प्रवृत्तियाँ, जागने और सोने का चक्र, स्वास्थ्य और कौशल के परिवतन, बौद्धिक योग्यता आदि नैसर्गिक गुण, अर्जित योग्यताएँ, मूल चिन्तावस्थाएँ और अनेक परिवर्तन आदतें, स्मृतियाँ, आकांक्षाएँ, सम्भावनाओं के बोध, प्रत्याशाएँ, कल्पना और तर्क। व्यक्ति के जीवन-इतिहास को शैशव, बाल्य, कैशोर्य, प्रौढता तथा अवनति मे विभाजित करके प्रत्येक काल का विशेष अध्ययन करने का अभिप्राय था।

Psychodrama [साइकोड्रामा] मनोनाटक।

मनोनाटक एक मानसिक चिकित्सा की विधि है और इसका अन्वेषण मोरेनो ने किया है। इसमे मन के निचले स्तर की सामग्री, विषय वस्तु की अभिव्यक्ति विशेष प्रकार के खेल-नाटक द्वारा होती है और जिसमे एक ही व्यक्ति कई पात्रो का कार्य करता है। इस युक्ति से 'मानसिक कैथारसिस' होता है और संवेगात्मक बाधाएँ हट जाती हैं। नाटक द्वारा विद्रोह कामसम्बन्धी इच्छाओ का, जो बडी तीव्र और बलशाली रहती हैं, अभिव्यक्तीकरण हो जाता है जिससे आभ्यन्तरिक क्षेत्र मे तनाव, दबाव और मूक भारीपन नहीं रह जाता। अभिव्यक्तीकरण आवश्यक है। भाव इच्छा की अभिव्यक्ति न होने पर मनुष्य खोया-खोया सा रहता है। वह बोझ से बेचैन रहता है और कभी तो मानसिक अवस्था एक ऐसे स्तर पर पहुँचती है जब उसका एकमात्र उपचार सास्थायिक देख रेख रह जाता है। मनोनाटक विधि मे हमे मुख्य रूप से यह देखना है कि (१) रोगी का रुख जीवन के प्रति कहाँ तक बदला है और (२) उसका अपने मे विश्वास कहाँ तक उत्पन्न हुआ है।

Psychograph [साइकोग्राफ] मनोलेख, मनोलेखाचित्र।

व्यक्ति के अन्दर विभिन्न गुणो की विद्यमता को तथ्यात्मक एवं मूर्त रूप से प्रदर्शित करने के लिए बनाया गया लेखाचित्र। इस पर एक दृष्टि डालते ही पता चल जाता है कि अनेक गुणो के परीक्षणो अथवा मापनो मे व्यक्ति की क्या स्थिति है। एक ही व्यक्ति से कई गुणो के मापो की तुलना इसका विशेष लक्षण है। परन्तु प्राय विभिन्न मनोवैज्ञानिक मापनो की अपनी-अपनी अलग इकाइयाँ होती हैं। किसी मे प्राप्ताक सैकडो मे होता है, तो किसी मे पुन स्मृत शब्दो की सख्या के रूप मे, किसी मे ठीक हल की गई समस्याओ की सख्या मे, तो किसी मे विचित्र व्यक्तियो द्वारा अनुमोदनों की सख्या मे। इसलिए किसी व्यक्ति का मनोलेखाचित्र बनाने से पहले विविध गुणों मे उसे प्राप्त हुए अको को एक ही प्रकार की तुल्य इकाई मे परिवर्तित करना आवश्यक होता है। सर्वाधिक प्रचलन प्रत्येक गुणो मे प्राप्त अकों को शतमक, मानकाक अथवा मानसिक आयु मे परिवर्तित कर लेने का है।

Psycholinguistics [साइकोलिंग्युसटिक्स] मनोभाषा विज्ञान।

मनोविज्ञान का एक नया परस्पर नियन्त्रित क्षेत्र है। यह सव्यवहार या सचारण तथा सचारणकर्ता और सचारण प्रतिग्राहक के बीच के सम्बन्धों से मार्ग रखता है।

मुख्यत यह उन प्रक्रियाओं से, जिनके द्वारा सचारणकर्ता अपने अनुभवो को प्रतीकों मे प्रदर्शित करने का प्रयास करता है (इसको साकेतिक रूप देने की प्रक्रिया कहते हैं) और जिनके द्वारा सचारण का प्रतिग्राहक उन प्रतीको का अर्थपूर्ण अनुभवो के रूप मे व्याख्या करता है। (इसको 'साकेतिक भाषा को अर्थपूर्ण अनुभवो मे बदलने की प्रक्रिया' कहते हैं।)

पूर्ण प्रक्रिया इस प्रकार है—

प्रत्यय (idea) या अनुभवों (experiences) का होना → संकेतों में बदलना (coding) → प्रतीकों (symbols) में या भाषा (pagauga) ↓ भौतिक सक्रमण साधन (physical transmission)

प्रतीकों (symbols) का प्रतीको का बदले जाना (decoding) ← प्रत्यय (idea) व अनुभव (experience) को समझना
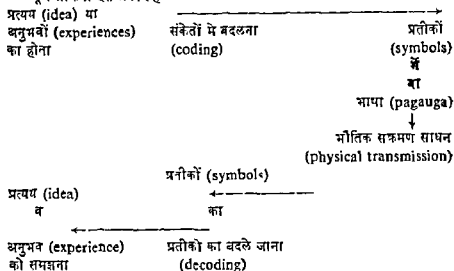
Psychological Motives [साइकॉलोजिकल मोटिव्स] : मानसिक प्रेरक।

मानव के व्यवहार और व्यक्तित्व के प्रसंग में मानसिक प्रेरकों का महत्त्व विशेष होता है। मानसिक प्रेरको में काम (sex), स्वप्रतिष्ठा, स्वरक्षा, स्वाग्रह और विद्रोह के प्रेरक प्रमुख हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने मानव के व्यवहार एवं व्यक्तित्व के प्रसंग में केवल एक मूल प्रेरक माना है, जैसे फ्रायड ने कामप्रेरक पर और एडलर ने स्वाग्रह पर बल दिया है। कामप्रेरक तीव्र होने पर व्यक्ति में परवर्गी को प्राप्त करने की उत्कट अभिलाषा होती है। स्वाग्रह प्रेरक तीव्र होने पर व्यक्ति समाज में मान-प्रतिष्ठा का इच्छुक होता है; दूसरों पर हुकूमत करने में आत्म-सन्तोषण प्राप्त करता है। सामाजिक प्रेरक अधिक क्रियमाण होने पर व्यक्ति के व्यवहार में सहानुभूति, दया आदि का भाव अभिव्यक्त होता है। स्वरक्षा का प्रेरक होने से व्यक्ति आर्थिक सुरक्षण और सवेगात्मक सुरक्षण का प्रयास करता है। स्थायी व्यवसाय न होने पर वह चिन्तित होता है।

मानव-जीवन मे कामप्रेरक की महत्ता निर्विवाद है। फिर भी फ्रायड के मानसिक प्रेरक सिद्धान्त का खण्डन हुआ। मानव में एक नही अनेक प्रेरक होते हैं। किस प्रेरक को अधिक महत्त्व दिया जाए यह व्यक्तिगत विशेषता का प्रश्न है और उसी को व्यक्ति व्यवहार-निर्धारण के प्रसंग में अचेतन रूप से चुनौती देता है। सम्भव है व्यक्ति मे कामप्रेरक तीव्र न हो—समलिंगी-विपमलिंगी की ओर झुकाव-सम्बन्धी समस्या न हो; मूल्यांकन में स्वप्रतिष्ठा का प्रमुख स्थान हो और सब प्रेरक गौण हों। जिसमें स्वप्रतिष्ठा का प्रेरक मुख्य संचालक है उसके किसी प्रेरक का अत्यधिक तीव्र होना विकृत होने का लक्षण है। प्रत्येक प्रेरक अपने में बड़े प्रभावशाली हैं और इनसे व्यक्ति का व्यवहार सचालित होता है। मानसिक प्रेरकों के सम्बन्धों में समस्या विशेष रूप से उठती है क्योंकि इन पर समाज का अनुशासन है। शारीरिक मांगों की तरह इनकी तुष्टि नहीं हो पाती मानसिक प्रेरकों और आंगिक आवश्यकताओं (organic needs) मे मूल भेद है। मानसिक प्रेरक सार्वभौम नही होते—एक व्यक्ति एक प्रकृति और प्रकार का तथा दूसरा दूसरे प्रकार का। विभिन्नता का मूल कारण (१) व्यक्तिगत अनुभूति और

(२) सामाजिक वातावरण है। व्यक्ति अपने स्वभाव और संस्कृति के अनुसार किसी प्रेरक-विशेष को चुनौती देता है। सांस्कृतिक पद्धति के अनुसार प्रोत्साहन दिया जाता है। पश्चिमी संस्कृति में काम-प्रेरक को प्रोत्साहन दिया गया है। साज-शृंगार के साधन का उपयोग 'सेक्स अपील' के लिए किया गया है और रहन-सहन उसी के अनुरूप है। भारतीय संस्कृति में इस पर निरोध रखा गया है। धर्म और नीति की दृष्टि से स्वच्छन्दतापूर्वक कामतुष्टि करना वर्जित माना गया है। बहुविवाह और काममुक्त पारस्परिक सम्बन्ध (promiscuity) की निन्दा की गई है। कहीं ऐसी सभ्यता-संस्कृति है जिसमें कि आत्म-प्रतिपादन की वृत्ति को प्रोत्साहन दिया गया है। बचपन से ही परिवार में इसके विकास के लिए प्रयास होता है, कहीं इसको निरुत्साहित किया गया है और आरम्भ से ही व्यक्ति को दूसरे के आधिपत्य का पालन करने पर बल दिया गया है।

इन प्रेरकों के परस्पर सम्बन्ध का प्रश्न जटिल और महत्त्व का है। यदि दो प्रेरक स्वभाव और प्रकृति में विरोधी हैं और समान रूप से बलशाली हैं और मूल महत्त्व के हैं तब आन्तरिक क्षेत्र में संघर्ष होता है और व्यक्ति समायोजित नहीं हो पाता। दो विरोधी प्रतिद्वन्द्वी प्रेरकों से व्यवहार का संचालन होने पर व्यक्तित्व का असमायोजित होना अवश्यम्भावी है।

Psychologism [साइकॉलोजिम] मनोविज्ञानवाद।

वह दृष्टिकोण जिसके अनुसार दर्शन तथा मानवी विज्ञानों का एकमात्र आधार मनोविज्ञान होना चाहिए। अपने अतिवादी रूप में यह कि मनोविज्ञान सभी विज्ञानों का आधार है। ह्यूम, मिल, जेम्स इत्यादि दार्शनिकों ने नैतिक, दार्शनिक, तार्किक, सौन्दर्यात्मक तथा आध्यात्मिक समस्याओं के समाधान का आधार-भूत मनोविज्ञान माना है और यह मनोविज्ञानवाद कहलाता है। हसर्ल और जर्मनी के अन्य मनीषियों ने मनोविज्ञानवाद शब्द की कटु आलोचना की है। उनके अनुसार इसे स्वीकार करना तार्किक तथा ज्ञान तत्त्वों की अवहेलना करना है और मनोविज्ञान को अनावश्यक अतिवर्धक महत्त्व प्रदान करना है।

Psychologists Fallacy [साइकॉलोजिस्ट्स फैलेसी]: मनोविज्ञान का दोष।

इस पद का प्रयोग मनोविज्ञानी के दृष्टिकोण और प्रयोज्य द्वारा दी गई अन्तर्दृष्टयात्मक सूचना, जो मनोविज्ञानी के निष्कर्ष का आधार है—में पारस्परिक अनमेल का द्योतक है। अन्तर्दृष्टि विधि द्वारा अनुभूतियों का विश्लेषण होता है और इससे विशेष तथ्यों का अन्वेषण होता है। परन्तु यह समझना कि ये तथ्य जिनका अन्तर्दृष्टि द्वारा अन्वेषण होता है निरीक्षण के पूर्व ही स्थापित रहते हैं, भ्रांति है, इसे ही मनोविज्ञानी का दोष कहते हैं। मनोविज्ञानी की अनुभूति वही होती है जो वह चिंतन करता है। दृष्टान्त स्वरूप चाय-प्रेमी चाय के स्वाद में किन तथ्यों का समावेश है इसे जानने का अभ्यास करता है, जो अनेक निरीक्षकों के लिए ऐसे संयोजन के रूप में है जिसका विश्लेषण नहीं किया जा सकता। चाय-प्रेमी को अपनी अनुभूति का विश्लेषण करना सम्भव है। इसका अर्थ यह नहीं है कि विभिन्न विश्लेषित तथ्य हरेक की चेतना में उपस्थित हैं जो संयुक्त वस्तु का स्वाद लेता है। इस प्रकार की प्रस्तावना मनोविज्ञानी का दोष है। उन्नीसवीं शताब्दी का अणुवादी और तथ्यवादी मनोविज्ञान इस प्रकार की प्रस्तावना के लिए दोषी है और यह दोष इसमें अन्तर्दृष्टि विधि का प्रयोग करने से उत्पन्न हो गया है।

Psychology of Religion [साइकॉलाजी आफ रेलिजन] : धर्म-मनोविज्ञान।

धार्मिक क्रिया के प्रसंग में मानसिक जीवन और व्यवहार का वैज्ञानिक और

वर्णनात्मक अध्ययन। इस अध्ययन का उद्देश्य आलोचना करना नहीं है बल्कि इसके स्वरूप, आकार-प्रकार का वर्णन करना है, जिस रूप में मानसिक प्रक्रिया का इसमें प्रतिबिंब है। इस विषय का वैज्ञानिक अध्ययन इस शती के प्रारम्भ में हुआ और धार्मिक परिवर्तन, विभिन्न धार्मिक अनुभूतियाँ, ईश्वर और अमरत्व में आस्था का स्वरूप और उद्भव, रहस्यवादी युक्तियाँ, पूजन-प्रकार इत्यादि पर विचारशील वाद-विवाद हुआ। वर्तमान में व्यवहारवाद (Behaviourism) की नींव पड़ने से धर्म की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि के विषय पर कम विचार होने लगा है।

Psychogalvanic Reflex [साइकोगालवैनिक रिफ्लेक्स] : मनोविद्युत प्रतिवर्त।

ऐन्द्रिय प्रत्ययनिक उद्दीपनजन्य शारीरिक कारणों से त्वचा के विद्युत अवरोधन में परिवर्तन (सामान्यतः कम होना)। स्वेद जल या पसीने की ग्रन्थि अंग की क्रिया पर, स्वतन्त्र तन्त्रिकातन्त्र के प्रभाव के कारण, यह परिवर्तन इसके नियमन में रहता है। विद्युतवादी चर्म अणु क्रिया, फेरे तथ्य, 'तारखनोफ' प्रभाव, मनोविद्युलवाही प्रतिक्रिया, विद्युतवाही प्रतिक्रिया, सामान्य स्वतंत्र प्रतिक्रिया इस शब्द के पर्यायवाची हैं।

इस यन्त्र की रचना में, त्वचा में विद्युत द्वार बँधे होते हैं, जो कि एक विद्युत (परिपथ) से जुड़े होते हैं।

एक मामूली विद्युत्धारा विद्युत् द्वारों से गुजरती हुई, त्वचा में से पार होती है। मनुष्य शरीर के द्वारा उत्पन्न हुआ विद्युत् प्रवाहमार्ग के अवरोधन को विद्युत्वाह मापयन्त्र द्वारा नापते हैं और आवश्यकता पड़ने पर उचित वृद्धि की जाती है। भौतिक या प्रत्ययनिक उद्दीपक का परीक्षार्थी पर उपयोग होने पर, शरीर की विद्युत् अवरोधन शक्ति में परिवर्तन उत्पन्न होता है। इसका निरीक्षण माप के द्वारा किया जा सकता है या प्रत्यक्ष रूप से अंकित किया जा सकता है।

Psychometrics [साइकोमिट्रिक्स] : मनोमिति।

मनोविज्ञान की वह शाखा जिसका मुख्य उद्देश्य मनोवैज्ञानिक तथ्यों के मापन की विधियों का व्यवहारिक तथा सैद्धान्तिक विकास है। इसके चार विस्तृत क्षेत्र हैं— सामान्य मनोमापन सिद्धान्त, मनोवैज्ञानिक प्रयोग विधि सिद्धान्त, मनोवैज्ञानिक माननिर्धारण सिद्धान्त तथा मनोवैज्ञानिक परीक्षण सिद्धान्त। प्रायः प्रयोग विधियों में माध्य त्रुटि विधि, न्यूनतम परिवर्तन विधि, और स्थिरोद्दीपन विधि; मनोवैज्ञानिक माननिर्माण विधियों में युग्मित तुलना विधि, क्रमांकन विधि, अन्तरानुमान एवं अनुपातानुमान विधि, श्रमिक प्रकार विधि तथा आकन मापदण्ड विधि। और मनोपरीक्षण सिद्धान्त के अन्तर्गत परीक्षण भेद, परीक्षण वैधता एवं विश्वस्यता, परीक्षण निर्माण तथा खण्ड विश्लेषण की व्याख्या होती है। मनोमिति का अधिकांश सांख्यकीय सिद्धान्तों, नियमों तथा विधियों का अनुप्रयोग है।

Psychoneuroses [साइकॉन्यूरोसिस] : मनस्ताप।

सामान्य रूप से यह उन मानसिक रोगों का समूह है जिनका कारण मूलतः भावसम्बन्धी होता है। इसके अन्तर्गत स्नायविक (neurasthenia), मनोग्रस्ति (obsession), हठप्रवृत्ति (compulsion), भीति, चिन्ता और हिस्टरीया के रोग हैं। इसमें रोगी को समय, स्थान और उसके व्यक्तित्व का भली-भाँति ज्ञान रहता है। उसकी बौद्धिक-आध्यात्मिक शक्ति बनी रहती है जिसके कारण बातचीत तर्कयुक्त और अर्थयुक्त होती है। उसका बाह्य-जगत् से सामाजिक सम्बन्ध बना रहता है। इसी से इन्हें संस्थालय में रखने की आवश्यकता नहीं होती।

मनस्ताप रोग में भय, चिन्ता, अनिद्रा, निद्राभ्रमण, थकान इत्यादि लक्षण प्रमुखतः मिलते हैं।

मनोविश्लेषण मे इस शब्द का प्रयोग सकुचित अर्थ मे हुआ है। इसके अन्तर्गत केवल आत्मरति (Narcissism) और अन्यारोपण (Transference) प्रकार की दुर्बलताएँ आती हैं जिनका कारण अज्ञात मन का सघर्ष है और जिनका प्रभाव मानसिक और सामाजिक समायोजन पर पडता है। फ्रायड के अनुसार चिन्ता और तन्त्रिकीय रोग वास्तविक प्रकार की दुर्बलताएँ हैं। मनोविश्लेषण मे 'साइकोन्यूरोसिस' और 'एक्चुअल न्यूरोसिस' को अलग-अलग स्पष्ट किया गया है।

Psychophysics [साइकोफिजिक्स] : मनोभौतिकी।

मानसिक घटनाओ तथा उनसे सम्बद्ध भौतिक घटनाओ के परस्पर सम्बन्धो का सख्यात्मक विज्ञान। यह मनोविज्ञान का एक बडा अग है और मनोवैज्ञानिक प्रयोगो का एकमात्र प्रथम क्षेत्र। इसके प्रमुख निर्माता फेक्नर, मुलर और वुण्ट थे। इसकी रुचि प्राय सवेदनो मे रही है। इसमे उद्दीपन के उपस्थापन की आवृत्ति, उसकी अवधि तथा मनोस्थिति, उत्प्रेरणा आदि आन्तरिक परिस्थितियो को स्थिर रखकर व्यवहार अर्थात् प्रतिक्रिया को केवल उद्दीपन के माध्य अगो का फलन माना जाता है। इसके मूल में यह विश्वास है कि भौतिक और मानसिक दो सतत त्रिम एँ हैं। किसी उद्दीपन अथवा उत्तेजनात्मक अस्तर के अनानुभव का अनुभव मे परिवर्तन वास्तव मे उद्दीपन के किसी एक मान पर नही परन्तु एक परिवर्तन क्षेत्र मे फैला हुआ होता है और बोधद्वार इस क्षेत्र के सांख्यकीय माध्य पर माना जा सकता है।

Psychopathology [साइकोपैथॉलोजी]: मनोविकृति विज्ञान।

वह विज्ञान जिसमे ऐसे व्यक्तियो की मानसिक अवस्था और व्यवहार का अध्ययन होता है जिनके व्यक्तित्व और व्यवहार मे प्रकार-प्रकार की विकृतियाँ और व्यतिक्रम मिलते हैं। विकृतियाँ सवेग-सम्बन्धी होती हैं और व्यक्तित्व सम्बन्धी भी। सवेग-सम्बन्धी मानसिक रोग सरल कम भयकर होता है (Psychoneuroses), व्यक्तित्व-सम्बन्धी जटिल प्रकार का (Psychoses)। मनोविकृति विज्ञान मे मन सम्बन्धी रोग के कारण निदान और उपचार के बारे मे विशद वर्णन-निरूपण मिलता है।

Psychophysical Methods[साइकोफिजिकल मेथड्स] : मनोभौतिक विधियाँ।

उत्तेजनाओ तथा प्रतिक्रियाओ के मात्रात्मक सम्बन्धो के अध्ययन की विधियाँ। इनमे मध्यक त्रुटि विधि, न्यूनतम परिवर्तन विधि, स्थिरोद्दीपन विधि तथा तुलनात्मक अनुमान विधि मुख्य हैं। इनका उपयोग विशेषतया उद्दीपनबोध देहली, अन्तरबोध देहली तथा समानताबोध मान ज्ञात करने मे एव वेबर तथा फेकनर द्वारा प्रतिपादित मनोभौतिकीय नियमों की परीक्षा करने मे होता है।

Psychopath [साइकोपैथ] : मनोविकृत।

एक स्वार्थी प्रवृत्तिशील, असामाजिक, अनैतिक, उच्छृखल, अनुशासन विहीन, हठी और सवेगात्मक दृष्टि से अस्थिर व्यक्ति। इस वर्ग के व्यक्ति के आभ्यन्तरिक क्षेत्र में सघर्ष द्वन्द्व-तनाव नही रहता और इसका मूल कारण इनका अपने रग मे रगे रहने और मनमाना कार्य करने की प्रवृति है। इनका बौद्धिक स्तर ऊँचा होता है। भविष्य की चिन्ता न होने से और वर्तमान में बेरोक-टोक सलग्न रहने से इनका कार्य असगत होता है और निर्णय दोषयुक्त होता है।

मनोविकृत शब्द की परिभाषा कई प्रकार से की गई है। कुछ मनोवैज्ञानिको के अनुसार जो व्यक्ति मनस्ताप (Psychoneuroses) और मनोविक्षिप्ति (Psychoses) वर्ग मे नही आता और उसकी मानसिक अवस्था विकृत है, वह इस वर्ग

का समझा जाएगा।

Psychosis [साइकॉसिस] : मनोविक्षिप्ति।

यह ऐसे मानसिक रोगों का समूह है जो जटिल प्रकार के हैं, व्यक्तित्व-सम्बन्धी हैं और जिसमे प्रकार-प्रकार के भ्रम-भ्रान्तियाँ होती हैं। रोगी को समय, स्थान और व्यक्तित्व का ज्ञान नही रहता, किसी बात को परखने की सामर्थ्य नही रहती, बाह्य जगत् के वस्तु-व्यक्ति के प्रति राग-भाव नही रहता और बातचीत संगत और तर्कयुक्त नही होती। विक्षेप संवेगात्मक असमायोजन के कारण नहीं होता, इसमें व्यक्तित्व व्यतिक्रम मिलता है। विक्षेप का कारण स्नायु विघटन, अन्तःस्राव व्यतिक्रम, मानसिक आघात इत्यादि हैं। इसमें मुख्य दो वर्ग हैं : (१) मानसिक विक्षिप्ति और (२) आंगिक विक्षिप्ति। मनोजात विक्षिप्ति के अन्तर्गत अकाल मनोभ्रंश (Dementia Praecox), संविभ्रम और उत्साह-विषाद-विक्षिप्ति (Manic Depressive Insanity) के रोग हैं। कायिक विक्षिप्ति के अन्तर्गत जराजन्य विक्षिप्ति पेरेसिस, औषधि विक्षिप्ति मदजन्य विक्षेप इत्यादि हैं। इनका उपचार सरल नही है। उपचार के लिए विद्युत आघात (E. S T) इन्सुलीन, मस्तिष्क-शल्य (Brain Surgery) का प्रयोग होता है।

Psychosomatics [साइकोसोमैटिक्स]: मन शारीरिक चिकित्सा विज्ञान।

औषधि मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें मन और शरीर में अनन्य सम्बन्ध है। इसका प्रतिपादन वैज्ञानिक रूप से हुआ है। इसमें यह अन्वेषित किया गया है कि शारीरिक रोग का बहुत बड़ा कारण उद्वेलित मानसिक अवस्था है। चिन्ता, भय, द्वन्द्व, तनाव-संघर्ष होने से पेचिश, टी. बी., साँस, उदर, अलसर इत्यादि का रोग हो जाता है। स्वस्थ, समायोजित संवेगात्मक अवस्था रहने पर शरीर भी नीरोग रहता है। इसी कारण बीसवीं शताब्दी में अनेक शरीर रोग के उपचार के लिए भी मानसिक उपचार का प्रयोग निर्देशित किया गया है। यह अनुसंधान हुआ है कि निर्देशन, विश्राम व्यक्ति को किसी कार्य मे लगाए रखना, परामर्श इत्यादि मनोवैज्ञानिक उपचार शरीर के रोग निवारण के लिए अनिवार्य हैं। औषधि के साथ मनोवैज्ञानिक उपचार का प्रबन्ध होने पर उपचार में अधिक सफलता मिलती है।

Psychotechnology [साइकोटैकनॉलोजी] : मन प्रौद्योगिकी।

विज्ञान की शाखा-विशेष जो व्यापार, उद्योग एव इसी प्रकार के अन्य व्यवहारिक क्षेत्रों में मनोवैज्ञानिक पद्धतियों एवं निष्कर्षों के उपयोग से सम्बन्धित है। यह सामान्य सिद्धान्तो के अन्वेषण की अपेक्षा कौशल एव व्यावहारिक उपयोगिता की कला की प्रक्रियाओ पर अधिक बल देती है।

मनस्तत्व का विशेष विकास द्वितीय महायुद्ध के उपरान्त हुआ। विज्ञान एवं उद्योगो की उत्तरोत्तर प्रगति के फलस्वरूप लोगों का झुकाव ऐसी समस्याओं की ओर अनायास होता गया जिनमे संगणना सम्भव थी। बोलेशेविक क्रान्ति के बाद रूस में मनस्तत्व का विशेष रूप से विकास हुआ। वहाँ मनोविज्ञान को भी द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद के साँचे मे ढाला गया। उसके केवल उसी रूप को स्वीकृत और विकसित किया गया जो उद्योग, व्यापार आदि की वास्तविक उन्नति एवं व्यक्ति को सामाजिक ढाँचे में ढालने में सहायक था। व्यक्तिगत-भिन्नता आदि के प्रत्ययों को पूँजीवादी विचारधारा का अवशेष मानकर बहिष्कृत कर दिया गया। मार्क्सवादी दर्शन की मान्यता के अनुरूप प्राणी को भी एक यन्त्र के रूप मे ही ग्रहण किया गया और उसी के अनुरूप उसके विकास एवं समाजीकरण की योजनाएँ बनाई गई।

Psychotherapy [साइकॉथेरेपी] : मनश्चिकित्सा।

असमायोजित व्यक्ति के व्यवहार और रूप में उचित परिवर्तन लाकर रचनात्मक कार्य में सक्रिय करना अथवा संवेगात्मक प्रकार की समस्या को मानसिक युक्तियों द्वारा सुलझाना तथा विकृत लक्षणों का निवारण कर व्यक्तित्व का उचित विकास करना। तब रोगी अपनी कमजोरियों के साथ समझौता करना सीखता है और वस्तु स्थिति का सत्य मूल्यांकन करने लगता है। मानसिक उपचार का यही तो गूढ़ रहस्य है।

मुख्यत मानसिक उपचार के पाँच स्तर हैं और यह सभी प्रकार के मानसिक उपचार में दृष्टिगत होते हैं

१ उपयुक्त वातावरण तथा घनिष्टता (Rapport)।
२ संवेग की अभिव्यक्ति, खेल, कलात्मक रचना इत्यादि द्वारा।
३ अन्तर्दृष्टि (insight) जीवन के प्रति आस्था राग तथा घृणा विद्रोह का विघटन।
४ संवेगात्मक पुन शिक्षण अन्तर्दृष्टि हो जाने से सहज ही रोगी के भाव का पुन शिक्षण हो जाता है। रोगी में परिवर्तन धीरे धीरे होता है और इसके लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता पड़ती है।
५ परिसमापन (termination)—चिकित्सक के प्रति विकृत राग के स्थान पर आदर-सम्मान के भाव की उद्भूति।

इस प्रकार उपचार होने के पश्चात् रोगी का मनोभाव अपनी ओर (सेल्फ इमज) तथा जीवन की समस्याओं की ओर पूर्णतया परिवर्तित हो जाता है।

मानसिक उपचार के अन्तर्गत मुक्त साहचर्य (Free association), सम्मोहन (Hypnotism), सूचन (Suggestion), पुनर्शिक्षण (Re-education), सामूहिक चिकित्सा (Group therapy), निर्देशात्मक चिकित्सा (Non-directing therapy) की विधियाँ हैं।

Puberty [पबर्टी] यौवनारम्भ।

जीवन का वह काल जबकि उत्पादक अंग परिपक्व होते हैं और उनमें सक्रियता आती है। इस काल में गौण यौन-विशेषताओं का स्पष्ट आभास मिलता है: यथा, लड़कों में मूँछ, दाढ़ी, आवाज का भारीपन तथा लड़कियों में स्तनों का विकास आदि।

यह अवस्था लड़कियों में लड़कों की अपेक्षा कुछ जल्दी आती है और ११½ से १३½ साल तक रहती है। इस बीच में शरीर के भार और ऊँचाई में तीव्रता से वृद्धि होती है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह अवस्था विशेष महत्व की है। यौनांगों में परिपक्वता के साथ ही प्राणी का उनकी ओर ध्यान जाना, उनमें रुचि उत्पन्न होना स्वाभाविक है। मनोविश्लेषण के अनुसार यौवनारम्भ में व्यक्ति की सुप्त यौन-भावना जागृत होती है और वह विपरीतलिंगी के प्रति एक विशेष प्रकार का आकर्षण अनुभव करने लगता है। फ्रायड ने इसी अवस्था को जनन-अवस्था (Genital Stage) कहा है जिसका चरम एवं स्वाभाविक उत्कर्ष स्त्री-पुरुष के पारस्परिक मिलन एवं सन्तानोत्पत्ति में होता है।

Pubertus Praecox [पबर्टस प्रैकॉक्स]: अकाल यौवनारम्भ।

यह एक प्रकार की विकृति है जो छोटी अवस्था में ही एड्रिनल ग्रन्थि के अत्यधिक सक्रिय होने से प्रकट होती है। इसमें समय से पूर्व ही तारुण्य प्रकट हो जाता है यथा, किसी छ वर्ष के बालक में ही उसके लिंग का पूर्ण विकसित हो जाना, आवाज का भारी हो जाना, एवं अन्य गौण यौन विशेषताओं का प्रकट हो जाना आदि।

Purkinje Phenomenon [पर्किन्जे फेनॉमिनन] पर्किंज-घटना।

प्रकाश की भिन्न-भिन्न तरंगों की लम्बाई के अनुसार आँख की संवेदनशीलता में परिवर्तन होना। यह परिवर्तन भिन्न-भिन्न रंगों के चमकीलेपन या प्रभा

से सम्बन्धित है। जैसे सप्तरंगी धनुप में लम्बी तरंगों वाला सिरा छोटी तरंगों वाले सिरे की अपेक्षा जल्दी गहरा हो जाता है। लाल रंग तीव्र प्रकाश में और नीला रंग मंद प्रकाश मे अधिक चमकीले लगते हैं। इसके लिए अंधकार अनुकूलशीलता की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि फल, दृष्टि के नेत्र शकुओं से नेत्र-शलाकाओं पर स्थानान्तरित होने पर निर्भर करता है।

Pyromania [पायरोमेनिया] : अग्नि प्रज्वलन प्रवृत्ति।

आग लगाने की तीव्र प्रवृत्ति या रुझान। मनोविश्लेषण के अनुसार ऐसे व्यक्तियों मे रति-स्थिरण (erotic fixation) मिलता है। यह कामतुष्टि के निमित्त होता है।

Pyrophobia [पायरोफोबिया] · दहन-भीति :

आग लगने का विकृत भय।

देखिए—Phobia.

Quasi-Need [क्वासी नीड] : आभासी आवश्यकता।

जीव की तनावपूर्ण अवस्था, जो कि एक लक्ष्य और लक्ष्योन्मुख क्रिया को निर्धारित करती है। इसकी उत्पत्ति जैविक अपर्याप्तता (Biological Inusfficiency) से नही बल्कि व्यक्ति की इच्छा और उसके उद्देश्य से होती है। इस धारणा का अन्वेषण लेविन ने यह स्पष्ट करने के लिए किया कि 'माँग' शारीरिक अथवा पार्थिव आवश्यकताओं से भिन्न है। माँग शारीरिक है, इसका केवल आभास होता है।

Questionnaire [क्वेस्चनाअर] : प्रश्नावली।

व्यक्तित्व के मनोवैज्ञानिक मापन में एक बहुप्रयुक्त साधन। इसमें किसी व्यक्ति से प्रस्तुत प्रश्नों के उत्तर में अपने विचारों, अथवा अपनी आदतों, विशेषताओं, वृत्तियों, योग्यताओं, अयोग्यताओं आदि के विषय में स्वयं बताने को कहा जाता है। कुछ प्रश्नावलियों का उद्देश्य प्रस्तुत प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करना और उनके द्वारा प्रकारात्मक तथ्य ज्ञात करना होता है। परन्तु बहुत सी प्रश्नावलियाँ परीक्षणात्मक होती हैं। उनमें प्रत्येक प्रश्न के साथ सम्भव उत्तर भी उपस्थापित होते हैं, और प्रत्येक सम्भव उत्तर के अंक भी पूर्वनिश्चित किए हुए होते हैं, जिससे परीक्षार्थी की प्रतिक्रियाओं के आधार पर उसे पूर्वनिश्चित अंकन-पद्धति के अनुसार अंक दिए जा सकें, और इस प्रकार उसमे किसी व्यक्तित्व-गुण की मात्रा ज्ञात की जा सके। अंक देने से प्रश्नावलियों में एक प्रकार की तथ्यात्मकता आ जाती है। परन्तु फिर भी उनमें व्यक्तियात्मकता के कई अवसर रहते हैं। परीक्षार्थी की प्रश्नावली के प्रश्नों की ओर प्रतिक्रियाएँ उसके उत्प्रेरणों से अप्रभावित नही रह पातीं। वह जान-बूझकर ऐसी प्रतिक्रियाएँ कर सकता है कि उसका वास्तविक व्यक्तित्व बनावट के पीछे छिप जाए। अनजाने ही अचेतन विरूपण भी हो सकता है। तीसरे, परीक्षक के पूछे हुए किसी प्रश्न का परीक्षार्थी अपनी व्यक्तिगत बुद्धि, शिक्षा, रुचि तथा सूझ के अनुसार ही तो अर्थ लगाएगा। कुछ परीक्षणात्मक प्रश्नावलियों में तथ्यात्मकता को बढ़ाने और जान-बूझकर अथवा अनजाने ही किए जाने वाले धोखे का व्यक्तियात्मक प्रभाव कम करने के लिए एक झूठे मापदंड का आयोजन भी होता है।

Racial Unconscious [रेशियल अन्कॉन्शस] : प्रजातीय अचेतन।

देखिए—Collective unconscious.

Race Psychology [रेस साइकॉलोजी]: प्रजाति मनोविज्ञान।

मनोविज्ञान की एक शाखा-विशेष जिसमें मानव की भिन्न-भिन्न प्रजातियों की मानसिक विशेषताओं का अन्वेषण एवं उनका तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। इस दृष्टि से इसे तुलनात्मक मनोविज्ञान

का एक अग भी कहा जाता है।

प्रजाति मनोविज्ञान के वैज्ञानिक अध्ययन का सूत्रपात गाल्टन की खोजो से होता है। डार्विन ने इस बात का सकेत किया था कि किसी विशिष्ट जलवायु के प्रति अपने जीवन को अभियोजित करने के कारण किसी प्रजाति विशेष की त्वचा, उसके अग-उपागो का अनुपात आदि विशिष्ट प्रकार का हो जाता है। यह भिन्नता न केवल व्यक्ति-व्यक्ति मे उत्पन्न होती है बल्कि व्यापक भिन्नता एव प्राकृतिक चुनाव (Natural selection) नई प्रजातियो को भी विकसित कर सकते हैं। गाल्टन ने न केवल शारीरिक विशेषताओ प्रत्युत मानसिक गुणो—यथा प्रतिभा, बुद्धिमन्दता आदि, एव मनोवृत्तियो, यथा अपराधवृत्ति आदि—को भी वशानुक्रमज ही माना है।

१८६० मे स्टीनथल तथा लज़ारस के अध्ययन प्रकाश मे आए। जातीय भिन्नता को आधार मानकर इन्होने विभिन्न जातियों की लोकगाथाओ, रीति रिवाजो एव धर्म आदि से सम्बन्धित तथ्यों का सकलन एव अध्ययन किया। किसी जाति विशेष की समान मनोवैज्ञानिक विशेषताओ की समग्रता के आधार पर सामाजिक मन की कल्पना की। इन लोगो ने यह जानने का भी प्रयास किया कि एक प्रकार के सामाजिक मन से दूसरे प्रकार का सामाजिक मन किस प्रकार सक्रमित होता है।

१९०४ मे विभिन्न प्रजातियों की बुद्धि-उपलब्धि की तुलनात्मक विवेचना से उडवर्थ ने यह निष्कर्ष निकाला कि विभिन्न प्रजातियों की औसत योग्यताएँ भिन्न होती हैं जैसे दूसरी प्रजातियो की अपेक्षा नीग्रो लोगो की योग्यताएँ स्पष्ट ही औसतन कम होती हैं।

१९१० मे फर्ग्युसन ने कुछ चुने हुए बुद्धि परीक्षणो द्वारा कई सौ नीग्रो बच्चो की बुद्धि परीक्षा कर उनकी औसत उपलब्धि के आधार पर उनकी समान बौद्धिक हीनता की ओर सकेत किया। बाद मे १९१७-१८ मे भर्ती किए गए नीग्रो की बुद्धि-परीक्षा ने भी इसी तथ्य की पुष्टि की। पीटरसन और क्लाइनबर्ग के अध्ययनो में इस बात का सकेत मिला कि उक्त प्रजातीय भिन्नता सास्कृतिक भिन्नता के कारण भी हो सकती है। डारसी आदि विद्वानो की खोजो ने यह स्पष्ट किया कि मगोलियन समूहो के बच्चे जो घर पर चीनी या जापानी बोलते थे अगरेजी भाषा के परीक्षणो मे अगरेज बच्चों से पीछे रह गए, निर्भाषिक परीक्षणों मे दोनो मे कोई विशेष अन्तर नही मालूम पडा।

आगे चलकर प्रजाति मनोविज्ञान के अन्तर्गत इसी प्रकार के अन्य अनेक महत्त्वपूर्ण अध्ययन हुए।

Random Error [रैन्डम एरर] : याहच्छिक त्रुटि।

परीक्षण और प्रयोग द्वारा मनोमापन मे वह त्रुटियाँ जो नियमहीन हो, जिनकी कुछ भी मात्रा होने की तथा किसी भी प्रकार की होने की समान सम्भावना हो। यह त्रुटियाँ कभी बडी होती हैं, कभी छोटी, कभी धनात्मक, कभी ऋणात्मक। इसीलिए इन त्रुटियो को अस्थिर अथवा क्रमहीन भी कहा जा सकता है। यह विश्वास है कि यदि मापन बारम्बार करते ही चलें जाएँ तो सम-सभाविक त्रुटियो का माध्यक शून्य हो जायगा। मापन की पुनरावृत्ति जितनी बढेगी यह मान्यता उतनी ही यथार्थ होवेगी। इस प्रकार समसम्भाविक त्रुटियाँ वह हो जाती हैं जिनको सख्या बहुत बढने पर उनका मध्यक शून्य हो जाता है अथवा उसका शून्य से अन्तर छोटी से छोटी सख्या से भी छोटा होता है। प्राय मनोवैज्ञानिक प्रत्येक प्रतिचयन को माध्य समसम्भाविक त्रुटि को शून्य ही मान लिया करते हैं। ऐसे ही इन त्रुटियो की समसम्भाविकता का अर्थ ही यह है कि इनकी प्रत्येक मात्रा की सम्भावना उच्च वास्तविक मात्रा के तथ्यों के मापन मे भी होगी। इसलिए बारम्बार मापन करते रहने पर मापित गुण की वास्तविक

मात्राओं और यादृच्छिक त्रुटियों का सह-सम्बन्ध शून्य के सन्निकट होता जायगा। सुविधा के लिए प्राय: मनोवैज्ञानिक प्रत्येक न्यादर्श के वास्तविक मापों और प्राप्त मापों की यादृच्छिक त्रुटियों के सह-सम्बन्ध को शून्य मान लिया करते हैं।

इसी प्रकार इन त्रुटियों की समसम्भाविकता का यह अर्थ भी है कि एक परीक्षण अथवा प्रयोग में होने वाली यादृच्छिक मापन त्रुटियों के किसी अन्य परीक्षण अथवा प्रयोग में होने वाली यादृच्छिक मापन त्रुटियों से किसी प्रकार के सम्बन्ध की आशा नहीं की जा सकती। अर्थात् मापन की पुनरावृत्ति बढ़ने पर दो यादृच्छिक त्रुटि-समूहों का सह-सम्बन्ध शून्य के सन्निकट होता चला जाएगा।

उपरोक्त तीन लक्षणों द्वारा परिमापित इन यादृच्छिक त्रुटियों का स्वरूप तथा नियमन मनोमापन सिद्धान्त का और विशेषतया मनोपरीक्षण सिद्धान्त का मुख्य विषय है।

Random Sample [रैन्डम सैम्पुल] : यादृच्छिक प्रतिचयन।

किसी जन-समूह का वह नमूना अथवा न्यादर्श जिसे किसी विशेष आधार पर चुना नहीं गया हो, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के लिए जाने की समान सम्भावना हो, और किसी व्यक्ति का उसमें लिया जाना किसी दूसरे व्यक्ति के उसमें लिया जाने से बाधा न हो। अर्थात् जिसके बनने में संयोग मात्र को पूरा अवसर मिला हो। यादृच्छिक प्रतिचयन सम्पूर्ण जन-समूह का सर्वोत्तम प्रतिनिधि माना जाता है। ऐसे प्रतिचयन में प्रत्येक प्रकार के व्यक्ति उसी अनुपात में होंगे जिस अनुपात में वे सम्पूर्ण जन-समूह में हैं।

किसी जन-समूह में से यादृच्छिक प्रतिचयन लेने के लिए कई विधियां प्रचलित हैं। उदाहरण के लिए यदि प्रतिचयन में प्रति सौ में एक व्यक्ति लेना हो तो जन-समूह के सब व्यक्तियों के नाम वर्णक्रम से लिख लिये जाते हैं और पहले सौ नामों में से आँख मूँदकर जिस नाम पर उँगली पड़ जाए उसको और उसके बाद के प्रत्येक सौवें नाम को प्रतिचयन में रखा जाता है। कुछ यादृच्छिक संख्याओं की सूचियाँ भी उपलब्ध हैं जिनमें व्यक्तियों की क्रम संख्याओं को यादृच्छिक क्रम से रख दिया गया है।

Range [रेन्ज] : परास।

किसी मनोमापन में लघुतम प्राप्तांक से लेकर महत्तम प्राप्तांक तक का अंकों का विस्तार। इसे ज्ञात करने के लिए सभी प्राप्तांकों को परिमाण-क्रम से लिखकर प्रथम अंक एवं अन्तिम अंक के अन्तर में एक जोड़ दिया जाता है।

किसी अंकावली के फैलाव का और उसकी रचना एवं आकृति का ज्ञान प्राप्त करने का तथा उसके अंक माध्य से कितनी दूर स्थित है यह पता चलाने का तरीका है। जितना ही अंकावली में अंक-संख्या अधिक होगी, उतना ही उनके समान अन्तरों पर फैले होने की सम्भावना अधिक होगी और अंकपरास विचलन (Deviation) का श्रेष्ठतर द्योतक होगा।

Rank Order Method [रैंक आर्डर मेथड] : कोटि क्रम विधि।

मनोवैज्ञानिक मापन की एक पद्धति जिसमें व्यक्तियों से कहा जाता है कि बहुत से उद्दीपनों को अपने अनुमान के आधार पर किसी विशेष गुण की मात्रा की दृष्टि से क्रमानुसार रखें। इन क्रम-निर्णयों को सांख्यिकीय विधियों द्वारा मिलाकर उस गुण के मापदण्ड पर प्रत्येक उद्दीपन के लिए स्थान निर्धारित किया जाता है। इस पद्धति का उपयोग, कलात्मक रचना, विज्ञापन, हँसी की बात के मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन के लिए किया जा चुका है। इसमें प्रदत्त प्राप्ति एवं मूल्य निर्धारण दोनों की विधि सरल है। परन्तु इसके सार्थक उपयोग के लिये जिन उद्दीपनों के मनोवैज्ञानिक मूल्य निर्धारित करना है, वह ३० से अधिक नहीं होने चाहिये।

Rapport [रैपोर्ट] : घनिष्ठता।

पारस्परिक सम्बन्ध, प्रतिक्रिया, आदान-

प्रदान की वह अवस्था जिसमें दो या दो से अधिक व्यक्तियों का समूह तात्कालिक सहानुभूतिपूर्ण और स्वत प्रतिक्रिया देता है। पारस्परिक सम्बन्ध प्रतिक्रिया शब्द का प्रयोग सम्मोहक और सम्मोहित के सम्बन्ध के प्रसग मे भी हुआ है—यह कि सम्मोहन की अवस्था मे सम्मोहित सम्मोहक के अतिरिक्त, सभी प्रकार के उद्दीपनो के प्रति सवेदनहीन हो जाता है।

मनोविश्लेषण मे इसका मूल्य-महत्त्व उपचार-क्षेत्र मे विशेषत है। यह मन-समीक्षक और रोगी के सवेगात्मक सम्बन्ध को अकित करता है। रोगी की आस्था मन समीक्षक मे स्थापित होने के लिए पारस्परिक सवेगात्मक सम्बन्ध आवश्यक है। अन्यथा रोगी अपनी कमजोरियो को स्वीकृत नही करता और उसकी निचले स्तर की गुत्थियाँ और ग्रथियाँ अछूती रह जाती हैं। विश्वासपात्र बनने पर ही मन-समीक्षक रोगी के भाव-विचार-क्रिया मे उपयुक्त परिवर्त्तन ला सकता है।

Rational Psychology [रैशनल साइकॉलोजी] परिमेय मनोविज्ञान।

यह धारणा प्राग् वैज्ञानिक मनोवियो द्वारा सम्पादित मनोविज्ञान के लिए है जबकि मनोविज्ञान परिकल्पना मात्र था। परिमेय मनोविज्ञान, परिमेय सृष्टिविज्ञान और परिमेय धर्मशास्त्र परिकल्पित अध्यात्मशास्त्र के विभिन्न भाग हैं। परिमेय मनोविज्ञान मे आत्मा और उसकी विभिन्न शक्तियो का निरूपण है। वर्तमान युग मे मनोविज्ञान द्वारा जिन मानसिक प्रक्रियाओं का अन्वेषण हुआ है वे प्राचीन काल मे आत्मा अथवा चेतना की विभिन्न शक्तियो के रूप मे ग्रहण की जाती थी और परिमेय विधि से विश्लेषण द्वारा उसका पता लगाया जाता था। काट ने परिमेय मनोविज्ञान को तर्कहीन प्रयास समझकर उसे कोई महत्त्व नहीं दिया बल्कि उस पर आक्षेप किया है। ये भिन्नताएँ मनोविज्ञान की अपेक्षा तर्क के आधार पर निश्चित की गईं। कालान्तर मे परिमेय मनोविज्ञान का स्थान अनुभववादी (Empiricism) और प्रायोगिक मनोविज्ञान (Experimental Psychology) ने ले लिया।

Rationalization [रैशनैलिज़ेशन] : यौक्तिकीकरण।

औचित्य स्थापन—सन् १९०८ मे अर्नेस्ट जोन्स (मनोविश्लेषण) ने इस धारणा का अन्वेषण किया है। यह 'सेल्फ जस्टीफिकेशन' है जिसके द्वारा अतीत के व्यवहार का वास्तविक नहीं युक्तिसगत कारण दिया जाता है। 'अगूर नही मिले तो अगूर खट्टे हैं।' परीक्षा में ऊँची श्रेणी या सफलता न मिल सकी तो इसका कारण है रुग्णता। यह अचेतन मन के भाव इच्छा-क्रिया के समर्थन का एक अज्ञात बौद्धिक प्रयास भी है। यह कार्य-पद्धति आत्मरक्षार्थ है और सदैव ज्ञात और अचेतन मन मे कार्यान्वित होती रहती है।

Rating Method [रेटिंग मेथड] : निर्धारण विधि।

मनोवैज्ञानिक मापन की एक पद्धति जिसमे किसी व्यक्ति के जानने, देखने वालों के अथवा उसके अपने ही आंकनो के आधार पर उसके व्यक्तित्व गुणो का माप निश्चित किया जाता है। इस विधि से प्राय ऐसे गुणो का मापन किया जाता है जैसे प्रयास आचार, सहयोगिता, शिष्टाचार, आज्ञापालन, दृढता, सयम, अवधान और स्वास्थ्य। प्रत्येक गुण की व्यावहारिक परिभाषा करके उसे मापन का एक आयाम मान लिया जाता है। कभी कभी विशिष्ट परिस्थितियो की प्रतिक्रियाओ को ही आयाम बना लिया जाता है। प्रत्येक आयाम को प्राय एक सरल रेखा द्वारा व्यक्त किया जाता है। इसके दोनों सिरो पर उस गुण की धनात्मक एव ऋणात्मक सीमाएँ और इनके बीच उसकी अन्य मात्राएँ समझ ली जाती हैं और इस रेखा पर व्यक्ति का स्थान निर्धारित करना ही उसके इस गुण का मापन समझा जाता है। सिरे की तथा बीच की मात्राओं को प्राय:

१, २, ३, ४, ५ आदि संख्यात्मक नाम दिये जाते हैं। कभी-कभी प्रतिशत जैसे (०% २५%, ५०%, ७५%, १००%); कभी ए० बी० सी० आदि द्वारा; कभी सुपरिचित व्यक्तियों के नामों अथवा कभी भाषात्मक विवरणों का प्रयोग भी किया जाता है। संख्यात्मक अंकन-दण्डों में धनात्मक एवं ऋणात्मक दोनों प्रकार की संख्याओं का व्यवहार किया जाता है जैसे —२, —१, ०, +१, +२ और कभी केवल धनात्मक संख्याओं का।

निर्धारण-विधि में विधि को इस प्रकार नियन्त्रित करने का विशेष प्रयास किया जाता है कि अंक देने वाले परिचित होने से अंकन में व्यक्ति के प्रति संकोच न करें, स्वाभाविक दयालुता न दिखाएँ, पूर्वग्रहों अथवा जाति धारणाओं से प्रभावित न हों, व्यक्ति को सभी गुणों में एक-सा समझने की त्रुटि न करें, और यथा-शक्ति तथ्यात्मक रहें। यदि ऐसी त्रुटियाँ हों भी, तो अन्तिम माप निश्चय पर उनका प्रभाव यथासाध्य कम करने के लिए उपयुक्त व्यवस्थाएँ की जाती हैं।

Ratio Judgment Method [रेशियो जजमेंट मेथड] : अनुपात निर्णय विधि।

मनोमिति की एक विधि जिसमें मनोमितिज्ञ प्रेक्षक अर्थात् प्रयोज्य से यह बताने को कहता है कि एक उपस्थापित उद्दीपन दूसरे उपस्थापित उद्दीपन से किसी विशिष्ट अनुपात में है। अर्थात् उसके 'इतने गुना' अथवा 'यह भिन्न' है। कभी-कभी इस विधि में प्रेक्षक के समक्ष बहुत-से अलग-अलग उद्दीपन उपस्थापित करके उससे कहा जाता है कि उनमें से एक विशेष उद्दीपन से एक विशिष्ट अनुपात में होने वाली उत्तेजना चुन दे। यदि दूसरी उत्तेजना को प्रथम उत्तेजना का कोई भिन्न होना होता है, तो विधि को प्रभाजन (Fractionation) विधि कहते हैं। यदि दूसरी उत्तेजना को प्रथम उत्तेजना का कोई गुणज होना होता है, तो विधि को गुणजोत्तेजना विधि कहा जाता है। कभी-कभी प्रेक्षक के समक्ष दो उत्तेजनाएँ उपस्थापित की जाती हैं और उससे यह पूछा जाता है कि एक-दूसरे को कितनी गुनी है या १०० अथवा अन्य अंक को उन उत्तेजनाओं में यथायोग्य बाँटने को कहा जाता है। इसे 'स्थिर योग विधि' कहते हैं। इस प्रकार अनुपातानुमान विधि के तीन प्रकार हो जाते हैं।

Raw Score [रॉ स्कोर] : मूल प्राप्तांक।

किसी परीक्षण में किसी व्यक्ति को परीक्षण के प्रश्नों में प्राप्त अंकों का योग। प्रायः प्रत्येक प्रश्न के यथार्थ उत्तर के लिए निश्चित अंक १ हुआ करता है। किसी परीक्षण में किसी व्यक्ति का मूल प्राप्तांक उन प्रश्नों की संख्या होता है जिनका उसने यथार्थ उत्तर दिया है। बहुधा परीक्षणों में व्यक्तियों को अंक देने में प्रत्येक यथार्थ उत्तर के लिए अंक १ देने के साथ साथ प्रत्येक अयथार्थ उत्तर के लिये कोई ऋणात्मक एवं भिन्नात्मक अंक भी दिया जाता है। परन्तु यह ध्यान में रखा जाय कि किसी व्यक्ति द्वारा किसी प्रश्न का यथार्थ उत्तर अनुमान मात्र के आधार पर व्यक्ति द्वारा केवल संयोग मात्र से भी दिया जा सकता है और इस प्रकार के यथार्थ उत्तरों के लिये उसे अनधिकार अंक देने से बचना हो, तब इस सूत्र के अनुसार अंक दिये जाते हैं—

$$\text{मूल प्राप्तांक} = \text{यथार्थोत्तरों की संख्या} + \frac{\text{अयथार्थ उत्तरों की संख्या}}{\text{प्रश्न के सम्भव वैकल्पिक उत्तरों की संख्या}}$$

इस सूत्र के अनुसार यदि परीक्षण 'हाँ'-'नहीं' तथा 'सत्य'-'असत्य' प्रकार का हो तब अंक देने के लिए केवल यथार्थोत्तरों की संख्या में से अयथार्थोत्तरों की संख्या को घटा देना होगा।

अंक देने में संयोगिक यथार्थानुमान से

बचने की एक विधि यह भी है कि किसी प्रश्न का उत्तर न देने के लिए उसे आंशिक अंक दिया जाए। इससे व्यक्ति जिस प्रश्न का यथार्थोत्तर न निर्णय कर पाता होगा उसमें सयोगिक यथार्थता से लाभ उठाने के लिए अनुमान से कुछ उत्तर दे देने की अपेक्षा उसमें कोई उत्तर देगा ही नहीं। यों अंक देने के लिये सूत्र यह है—

$$\text{मूल प्राप्तांक} = \text{यथार्थोत्तरों की संख्या} + \frac{\text{छोड़ दिये गए प्रश्नों की संख्या}}{\text{कुल प्रश्नों की संख्या}}$$

यदि परीक्षण विशेष के उपयोग का पर्याप्त अनुभव उपलब्ध हो तब प्रत्येक यथार्थोत्तर के लिये अंक +१ रखते हुए अयथार्थोत्तरों के लिये अंक उस पूर्वानुभव पर भी आधारित किये जा सकते हैं। इससे अंकन की प्रामाण्यता में लगभग ०२ से ०३ तक वृद्धि हो सकती है।

Reaction Formation [रिऐक्शन फारमेशन] विप्रतिक्रिया विधा।

एक रक्षा-युक्ति जिससे व्यक्ति समायोजन हेतु अजाने में उसकी जो निज की गुण विशेषता है उसके विपरीत गुण-विशेषता का प्रदर्शन करता है। इस कारण व्यक्ति में जिस गुण विशेषता का आभास मिलता है उसे उस व्यक्ति की निज की गुण विशेषता नहीं माननी चाहिये। सम्भव है वह विशेषता विप्रतिक्रिया विधा का परिणाम मात्र हो। जो शासक है और अनुशासनप्रिय है उसका व्यवहार अपराध की विद्रोहात्मक वृत्ति गुप्त रखने की प्रतिक्रिया मात्र हो। जो ईश्वर का पूजक है, ईश्वर में आस्था और श्रद्धा रखता है—यह तीव्र कामवृत्ति की प्रतिक्रिया मात्र हो। मदिरा का व्यसन त्यजना मदिरा की तृष्णा का सूचक हो, मानव सेवा का भाव अत्यधिक क्रूरता की प्रतिक्रिया मात्र हो।

विप्रतिक्रिया विधा का प्रमाण चेतन अनुभूति और व्यवहार मात्र में ही दृष्टिगत नहीं होता, इसका प्रचुर प्रमाण स्वप्न, विशिष्ट प्रतिक्रियाओं और पौराणिक कथाओं में भी मिलता है। यह रक्षार्थ मानसिक कार्य पद्धति अचेतन मन में सदैव क्रियमाण रहती है और इसके द्वारा व्यक्ति बाह्य और आन्तरिक जीवन में समायोजन-समझौता स्थापित करता है।

Reaction Time [रिऐक्शन टाइम] : प्रतिक्रिया-काल।

प्रयोगकर्ता का उद्दीपन प्रस्तुत करना और प्रयोज्य का प्रतिक्रिया देना—इसके बीच का समय। प्रतिक्रिया देने में किसी को अधिक और किसी को कम समय लगता है। यह व्यक्तिगत भेद का प्रश्न है। प्रतिक्रिया काल से किसी व्यक्ति में प्रस्तुत कार्य-कुशलता का अनुमान लगाया जा सकता है। कुछ ऐसे विशेष प्रकार के कार्य हैं जिनमें ऐसे व्यक्तियों की चुनौती की जाती है जो प्रतिक्रिया में कम समय लगाते हैं—जैसे मोटर हाँकने का व्यवसाय है। १७९६ में प्रतिक्रिया समय की माप के लिए पहले पहल प्रयास किया गया। हेल्महोल्ट्ज ने इस प्रकार आयोजन किया कि त्वचा के दो बिन्दुओं पर स्पर्श करने पर व्यक्ति को प्रतिक्रिया में जो समय लगा उससे तंत्रिका आवेग ले जाने के समय का माप हो गया। वुन्ट ने जर्मनी में अपनी मनोविज्ञानशाला में प्रतिक्रिया समय के माप का पहले पहल प्रयास किया और आगे जाकर कैटल ने उस पर अनेक संशोधित अन्वेषण किए।

प्रतिक्रिया काल से व्यक्ति की संवेगात्मक अवस्था का भी अनुमान लग जाता है। जब आन्तरिक अवरोध होता है प्रतिक्रिया काल अधिक लगता है। शब्द-संधान विधि में प्रतिक्रिया काल का महत्त्व माना गया है। सामान्यतः निरपराध व्यक्ति निश्चित समय में साधारण रूप की प्रतिक्रिया करता है, अपराधी व्यतिक्रम

करता है। प्रतिक्रिया काल अधिक होने के कारण थकान, ध्यान का स्थिर न होना भी होता है। उद्दीपन की तीव्रता और आकार पर भी यह निर्भर करता है। विभिन्न इन्द्रियों की प्रतिक्रियाओं में विभिन्न समय लगता है।

Reaction Word [रिऐक्शन वर्ड] : प्रतिक्रिया शब्द।

उद्दीपन-स्वरूप शब्दों की एक लम्बी सूची की प्रतिक्रिया में एक-एक करके बारी-बारी से दिये हुए शब्द। कभी तो प्रत्युत्तर में दिये हुए शब्द पर प्रतिबन्ध रखा जाता है—विरोधी शब्द कहा जाए, जैसे श्वेत के प्रत्युत्तर में श्याम शब्द; कभी तो यह आदेश रहता है कि जो शब्द उसके मन में आए वह कहे किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं रखा जाता। समय तथ्य का महत्त्व होता है। प्रतिक्रिया जल्दी-से-जल्दी होनी चाहिए।

प्रतिक्रिया शब्द से व्यक्ति की मानसिक अवस्था के ज्ञान का प्रयास किया जा सकता है। व्यक्ति के आन्तरिक द्वंद्व, संघर्ष, विप्लव के भाव का अनुमान लग जाता है। मानव कैसा दृढ़ और मुक्त स्वभाव का हो उसमें अपने भाव को छिपाने का कौशल होता है। मानव पारखी के हाथ में आने पर मनोभाव को छिपाए रखना मुश्किल हो जाता है। सब शब्दों की प्रतिक्रिया में प्रयोज्य एक ही शब्द बार-बार कहता है या विभिन्न शब्द कहता है, इसका महत्त्व होता है। यह भी कि प्रत्येक शब्द के प्रत्युत्तर में प्रयोज्य एक ही शब्द का प्रयोग करता है या पृथक्-पृथक् शब्द का। इससे व्यक्ति की मनःस्थिति का आभास मिल जाता है।

Reality Principle [रियैलिटी प्रिंसपल] : यथार्थता : वास्तविकता सिद्धांत :

मानव क्रिया-व्यापार, व्यवहार के प्रसंग में यह धारणा मनोविश्लेषण में फायड द्वारा निर्मित हुई है। वास्तविकता सिद्धांत सुखेप्सा सिद्धान्त के विपरीत है। जो प्रतिक्रियाएँ विचार-गम्य हैं, सामाजिक नियम-परम्परा से बँधी हैं, नीति-अनीति भाव से सचलित हैं वे वास्तविकता सिद्धान्त से परिचालित होती हैं। ऐसी प्रवृति अहं द्वारा सचलित प्रतिक्रियाओं की होती है। अहं की यह प्रकृति है कि यह सुख मात्र की ओर नहीं झुकता। जो समाज-संस्कृति नीति-धर्म की दृष्टि से हेय और त्याज्य है, अहं को यह कभी भी स्वीकृत नहीं होता। समूह आदर्श, समूह नैतिकता का मूल्य-महत्त्व अहं के लिए रहता है। वस्तुतः अहं विचारशील है, किसी भी क्रिया को करने से पहले वह उस पर सोच-विचार कर लेता है। मनोविश्लेषण में यह स्पष्ट रूप से प्रेषित किया गया है कि अहं अथवा ज्ञात मन वास्तविकता सिद्धान्त से सचलित है और इद अथवा अचेतन मन सुखेप्सा सिद्धान्त से और इसका बहुत-कुछ कारण अहं अथवा चेतन मन तथा इद अथवा अचेतन मन की निज की प्रकृति और विशेषता है।

Reasoning [रीज़निंग] : तर्कना।

विचार करने की एक प्रक्रिया। मनोविज्ञान में तर्कना मन की सक्रिय गतिशील व्यायाम की क्रिया-प्रक्रिया है, निर्णयों को सम्बन्धित करने की सामर्थ्य है, बुद्धि को उपयोग में लाने का तथ्य और शक्ति है, अनुमान लगाने के निमित्त वाद-विवाद तर्कना की विचार-प्रक्रिया है, मन की वाद-विवाद की विशेषता का अभिव्यक्तीकरण है, और अन्य को स्वीकृत और मान्य करने के लिए वाद-विवाद का उपयोग है। संक्षेप में, तर्कना विचार का व्यवस्थित विकास है—इस दृष्टि से कि स्वीकृत निष्कर्ष पर पहुँचा जा सके।

तर्कना के आरम्भ, प्रकृति और मूल्य के बारे में विवादयुक्त प्रश्न है जो आत्मवाद से लेकर भौतिकवाद (Materialism) तक विस्तृत है। आत्मवाद की दृष्टि से तर्क आत्मा की शक्ति का उपयोग है। वस्तुवाद के अनुसार तर्क असम्बद्ध उत्पत्ति है जो मस्तिष्क पर निर्भर करता है। आधुनिक मनोविज्ञान के विभिन्न सम्प्रदायों

का स्थान इन्हीं के बीच कहीं-न-कहीं स्थापित मिलता है।

सब सम्प्रदायों में इस शब्द के मूल्यांकन के बारे में कुछ सामान्य तथ्य हैं १ तर्कना निर्णय और सूझ की अनुवर्त्ती है चाहे जो भी मानसिक विकास में पहले घटित हो। २ तर्क चार प्रकार से होता है —सामान्य तर्क, विशेष तर्क, सभावी तर्क, मिथ्या तर्क। ३ तर्क मे विश्वास रहता है और इसमे सन्देह का स्थान नहीं रहता। अथवा इसकी विधि तार्किक है जिसका सघटन तार्किक सिद्धान्त के रूप में किया जा सकता है। ४ कुछ अन्य सिद्धान्तों का प्रसग इसकी प्रगति को प्रमाणित करने के लिए आवश्यक होता है।

Recall [रिकॉल] पुन स्मरण।

वह मानसिक क्रिया है जिसके अन्तर्गत पूर्वअनुभूत घटनाएँ, परिस्थितियाँ अथवा व्यक्ति बिना मौलिक उत्तेजक परिस्थिति की उपस्थिति के तात्कालिक चेतना मे आते हैं। यह पुन स्मरण अनुभूति यद्यपि मूल उत्तेजक परिस्थिति की प्रतिकृति ही मानी जाती है तथापि कुछ अशों मे यह उससे निश्चय ही भिन्न होती है। बार्टलेट एव वुडहेलमल के मतानुसार पुन स्मरण स्वय अपने आप मे एक रचनात्मक एव गतिशील मानसिक क्रिया है।

पुन स्मरण धारण पर आधारित है। अत धारण में सहायक प्राय सभी तत्त्व पुन स्मरण की क्रिया मे भी सहायक होते हैं। इनमे से प्रमुख निम्न हैं · (१) अनुकूल मनोदैहिक स्थिति : (२) उपयुक्त सकेत एव दृढ साहचर्य सम्बन्ध, (३) अनुकूल वातावरण एव सन्दर्भ तथा (४) पुन स्मरण के समय की व्यक्त रुचि एव मनोवृत्ति। ये बातें जितनी अनुकूल होती हैं, पुन स्मरण की क्रिया में उतनी ही अधिक सहायता मिलती है।

Recognition [रिकग्नीशन] : प्रत्यभिज्ञान।

अनुभूत विषय के पुन प्रत्यक्षण होने पर इस बात का ज्ञान होना कि वह इससे पहले भी अनुभव मे आ चुकी है पहचानना है। परिचित वस्तु ही पहचानी जाती है। प्रत्यभिज्ञान के दो भेद हैं .

१ *निश्चित प्रत्यभिज्ञान*—इस बात के आभास के साथ-साथ कि यह वस्तु अनुभव मे आ चुकी है, इस बात का भी ज्ञान होना कि वह वस्तु अनुभव मे कब आई और कहाँ आई।

२ अनिश्चित प्रत्यभिज्ञान—केवल इस बात का आभास होना कि वह वस्तु अनुभव मे आ चुकी है—कब आई, कहाँ आई, इसका कोई भी ज्ञान नही होता।

प्रत्यभिज्ञान पुन स्मरण से भिन्न है। पुन-स्मरण मे मूल उत्तेजना अनुपस्थित रहती है लेकिन प्रत्यभिज्ञान मे वह उपस्थित रहती है। प्रत्यभिज्ञान की क्रिया अपेक्षाकृत सरल भी है।

Re-conditioning . [रिकंडीशनिंग] : पुनरनुबन्धन।

(पॉवलाव) किसी उत्तेजन को किसी प्रतिक्रियाविशेष के साथ अनुबन्धित (Conditioning) करने के पश्चात् पुन उसे किसी दूसरी प्रतिक्रिया के साथ अनुबन्धित करना। यथा, सम्बन्ध-अनुबन्धन की विधि से पहले खिलौने (उत्तेजन) के साथ भय (प्रतिक्रिया) को सम्बद्ध करने पर बालक को खिलौने से भय लगता है, लेकिन उसी विधि से जब उसी खिलौने को चाकलेट के साथ सम्बद्ध कर दिया जाता है तो बालक खिलौने के प्रति आकृष्ट होने लगता है। इस दृष्टान्त मे खिलौने का पुन. चाकलेट के साथ सम्बद्ध होना ही पुनरनुबन्धन है। बालकों की (प्रौढ़ों की भी) अस्वाभाविक आदत, भाव, भूल तथा संवेग के निवारण मे पुनरनुबन्धन की विधि पर्याप्त सहायक होती है।

Re-integration [रिइण्टीग्रेशन] : पुनर्घटन, पुन समाकलन।

इसको प्रत्यार्पण भी कहते हैं। किसी भी ऐसे प्रस्तुतीकरण के, जो कि पहले उपस्थापित हो चुका हो, केवल आंशिक रूप

से रचनातत्वों के दृश्य होने पर ही, उस प्रस्तुतिकरण का स्मृति या प्रत्यय के रूप में, पूर्ण रूप से पुनर्स्थापन होना। इस प्रक्रिया को पुन.समाकलन कहते हैं।

किसी भी प्रतिक्रिया के, जो कि आरम्भ मे किसी उत्तेजक के द्वारा उमडती है, केवल उस उत्तेजक के अश भाग के उपस्थापन से ही उमड़ आने की प्रक्रिया को भी कहते हैं।

Re-education [रिएजुकेशन] पुनर्शिक्षण।

पुनर्शिक्षण उपचार विधि का प्रतिपादन फ्रैन्ज तथा वेल्स द्वारा मानसिक रोग के निवारण के लिए किया गया था। यह विक्षिप्त व्यक्तियों के लिए उसी प्रकार आवश्यक है जिस प्रकार शिक्षा साधारण वर्ग के व्यक्तियो के लिए है। यह विधि जैने के 'मनोविच्छेद सिद्धान्त' पर आधारित है। फ्रैन्ज के अनुसार पुनर्शिक्षण का मुख्य ध्येय है व्यक्तियो मे इस प्रकार के भले और शिष्ट भाव-स्वभाव जागृत करना जिससे कि वे अपने को समाज के अनुकूल बना सकें। इसमे रोगी की प्रकृत इच्छाओं को सुसंस्कृत करने का प्रयत्न किया जाता है और इससे रोगी अपनी निम्न कोटि और निरी प्रकृत इच्छाओं से परिचित हो जाता है। पुनर्शिक्षण का प्रयोग करने के पूर्व चिकित्सक रोगी की सभी क्रिया-प्रतिक्रियाओं को 'असाधारण' समझ लेता है। फिर वह यह जानने की चेष्टा करता है कि मनोविच्छेद कहाँ से और कैसे हुआ : मनोग्रन्थियो का क्या स्वभाव है, तथा उनके पडने का क्या कारण है ? मनोग्रन्थियों के कारण की खोज के बाद उपचार प्रारम्भ होता है। उपचार के द्वारा अभिव्यक्त इच्छाओं का उन्नयन करने की चेष्टा की जाती है। रोगी को परोक्ष या अपरोक्ष रूप से यह निरन्तर शिक्षा दी जाती है कि वह अपनी मानसिक शक्ति को स्वाभाविक इच्छाओं के समाधान में व्यय न करके सामाजिक, आध्यात्मिक तथा नैतिक दृष्टि से उपयोगी दिशाओ मे व्यय करे। इस प्रकार इस विधि के द्वारा इच्छाओ का दमन करने के स्थान पर उनमे सुधार किया जाता है। इसमे कठिनाई पड़ती है : प्रश्न यह उठता है कि किस प्रकार रोगी की मानसिक स्थिति, उसकी दमन की हुई इच्छा तथा अज्ञात मन मे बसी ग्रन्थियों का पता लगाया जाए जिससे रोग का ठीक-ठीक उपचार हो। वस्तुत. वास्तविक इच्छाओं के बारे में पता होने पर ही सुधार लाया जाता है और तभी पुनर्शिक्षण का लक्ष्य सिद्ध होता है।

जो व्यक्ति विक्षिप्तावस्था मे असामाजिक तथा अनैतिक क्रियाएँ करता है—जैसे, किसी पर बलात्कार करना, किसी की हत्या करना—उसके लिए यह विधि विशेष उपयोगी है। कार्ल्सन ने उन रोगियों पर भी इस विधि का सफलता से प्रयोग किया है जो लकवा तथा कम्पन से पीड़ित थे।

पुनर्शिक्षण के लिए कुछ बातें आवश्यक है :—

(१) रोगी को अपनी साधारण अवस्था की चेतना रहे।
(२) रोगी का चिकित्सक में विश्वास हो।
(३) रोगी में स्वस्थ होने की तीव्र आकांक्षा रहे।
(४) रोगी को उचित परामर्श दिया जाय जिससे वह उपचार से पूरा लाभ उठा सके।

Reflex [रिफ्लेक्स] : प्रतिवर्त।

प्रभावकों (मांसपेशी अथवा ग्रन्थि) द्वारा प्रतिपादित एक ऐसी सरल एवं स्वसंचालित प्रतिक्रिया जो उपयुक्त उद्दीपनों द्वारा ज्ञानेन्द्रियों के उत्तेजित होते ही अतिशीघ्र घटित हो जाती है। यथा—आँख के सामने अचानक किसी वस्तु के पहुँचते ही आँख का झपक जाना स्वादिष्ट वस्तु देखकर मुंह मे पानी आना। ये क्रियाएँ सरल तथा जन्मजात होती हैं। इनमें एकरूपता पाई जाती है—अर्थात् एक विशेष प्रकार के उत्तेजन से सदा एक विशेष प्रकार की ही प्रतिक्रिया प्रकट होती है। ये चेतन (खांसी,

छीक आदि) तथा अचेतन एव नियन्त्रा-त्मक अथवा अनुबधित (Conditioned reflex) तथा अनियन्त्रणात्मक दोनो ही प्रकार की होती हैं। अनियन्त्रणात्मक से तात्पर्य किसी उद्दीपन के प्रति साधारणत और स्वभावत प्रकट होने वाले प्रतिवर्तों से है।

देखिए—Reflex Arc Reflexiology

Reflex Arc [रिफ्लेक्स आर्क] प्रतिवर्त चाप।

तन्त्रिकातत्र की वह इकाई जो किसी प्रतिवर्त विशेष को सम्पादित करती है। प्रतिवर्त चाप एक रचना है और सहज क्रिया उसका कार्य। इस रचना मे कम से-कम निम्न पाँच अग सम्मिलित रहते हैं (१) ज्ञानेन्द्रिय जो उद्दीपन को ग्रहण करती है। (२) सवेदी तत्रिका जो ज्ञानेन्द्रिय द्वारा ग्रहीत उद्दीपन प्रभाव को केन्द्रीय तत्रिकातत्र मे पहुँचाती है। (३) तत्रिका सधि जो सवेदी तत्रिका से ग्रहीत उद्दीपन-प्रभाव को साधारणत किसी प्रेरक तत्रिका की ओर मोड देती है। (४) प्रेरक तत्रिका जो तत्रिका सधि से प्राप्त प्रभाव को किसी प्रभावक (मासपेशी अथवा ग्रन्थि) तक पहुँचाती है। (५) प्रभावक जिसके द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त होती है। जीव द्वारा सम्पादित सरल से सरल क्रियाएँ भी कम-से कम उक्त पाँच अगो की सहायता के बिना नही घट सकती।

कभी-कभी कुछ प्रतिवर्त ऐसे भी घटित होते हैं जिनमे उत्तेजन प्रतिक्रिया अन्योन्याश्रयी बन जाती है। स्वत क्रिया कुछ समय तक स्वत चलती रहती है। ऐसी क्रिया मे सलग्न तत्रिकातत्र की इकाई या यन्त्र प्रतिवर्त वृत्त कहलाता है।

Reflexiology [रिफ्लेक्सॉलोजी] प्रतिवर्त।

इस शब्द का निर्माण रूस के मनोवैज्ञानिक बेखतरेव ने किया। अनुबधन के अन्वेषक पॉवलॉव के बेखतरेव शिष्य थे। वस्तुत सेचेनाव ने मानव के व्यवहार के प्रसग म प्रतिवर्त सिद्धान्त का अन्वेषण किया और प्रतिवर्त की नीव डाली। सेचेनाव ने अपने लेख 'हू मस्ट इन्वेस्टिगेट द प्रॉब्लम ऑफ साइकॉलॉजी एण्ड हाऊ' म यह स्पष्ट किया है कि मनोविज्ञान की समस्याओ का अन्वेषण प्रतिवर्तों के अध्ययन द्वारा होता है। बेखतरेव ने प्रतिवर्तवाद के सामान्य सिद्धान्तो की नीव डाली। उन्होने मानसिक प्रक्रियाओ के अध्ययन के लिए दृष्टिकोण रखा और मानसिक धारणाओ पर प्रयोग करने का विरोध किया। उनके अनुसार प्रतिवर्त प्रमुख धारणा है। इसी के आधार पर सब उच्चस्तरीय मानसिक प्रक्रियाओ की व्याख्या की जा सकती है। यह भी स्थापित हुआ कि सहज क्रियाएँ केवल उपयुक्त उत्तेजन मात्र के रहने पर ही नही घटती। उन सभी उत्तेजनाओ का भी, जो इनसे सम्बद्ध होती हैं अथवा जो इनसे हो जाती हैं इनमे योग रहता है। साहचर्यवादियो के लिए साहचर्य एक प्रमुख मानसिक प्रक्रिया है किन्तु सहज क्रियावाद म यह भी धारीदार मासपेशियो की सहज प्रतिक्रिया मात्र है। बेखतरेव ने सामाजिक समूहो की क्रिया-प्रतिक्रिया से उत्पन्न अनुभूतियो को भी अपने अध्ययन के क्षेत्र मे लिया और उनके लिए सामूहिक प्रतिवर्त (Collective Reflexiology) शब्द का प्रयोग किया।

Reformatory Paranoia [रिफॉर्मेटरी पैरेनोइया] सुधारात्मक सविभ्रम।

यह स्थिरभ्रम का एक प्रकार है और इसका मुख्य लक्षण ऐश्वर्य भ्रान्ति (दे० (Delusia of grandeur) है। धार्मिक सविभ्रम और सुधारात्मक सविभ्रम मे अन्तर यह है कि धार्मिक मे भ्रम का विषय 'ईश्वर' होता है और सुधारात्मक मे भ्रम का विषय समाज होता है। सुधारात्मक सविभ्रम मे यह भ्रम घर कर लेता है कि लोक का नैतिक, सामाजिक, सास्कृतिक दृष्टि से पतन होता जा रहा है और इसमे वही एक सच्चा सुधारक है।

Refractory Phase [रिफ्रैक्टरी

फेज] : अननुक्रिया प्रावस्था, अनुत्तेज्यता प्रावस्था।

वह अल्पकाल या अन्तर काल जो कि किसी तंत्रिकातन्तु या पेशियों के उत्तेजन होने के तुरन्त बाद आता है और उस समय में मांसपेशी या तन्तु उन आवेगों का संक्रमण नहीं करता है। अर्थात् आवेगों के संक्रमण होने व उत्तेजना के प्राप्त होने के बीच का क्षणिक काल। तंत्रिकाकोशिका की विशेषता है कि इसमें एक निश्चित मात्रा में तन्त्रिका आवेग करने की क्षमता वर्तमान होती है। उपर्युक्त उत्तेजन के प्रभाव में आते ही यह तंत्रिका आवेग उत्पन्न हो जाता है। उसके बाद कुछ क्षणों के बाद ऐसी स्थिति आती है जबकि उस तन्तु को उत्तेजित नहीं किया जा सकता। पूर्ण अननुक्रिया प्रावस्था (Absolute Refractory Phase) में चाहे जितना ही तीव्र उत्तेजक क्यों न हो, तंतु कोई प्रतिक्रिया नहीं करेगा। उसमें जितनी क्षमता थी उसका उपयोग हो गया। यह पूर्ण अनुत्तेज्यता उत्तेजन के तुरन्त बाद ही प्रारम्भ हो जाती है। इस पूर्ण स्थिति के बाद सापेक्ष अननुक्रिया प्रावस्था (Relative Refractory Phase) आती है जिसमें केवल बहुत ही तीव्र उत्तेजकों के प्रति ही तंतु प्रतिक्रिया करेगा। क्योंकि इसके बाद तन्तु पुनः शक्ति-सपन्न होने लगता है। साधारण से अधिक तीव्रता वाले उत्तेजन का प्रयोग कर तन्तु को पुनः उत्तेजित किया जा सकता है। इस सापेक्षित प्रावस्था के बाद एक क्षणिक अन्तरकाल अति उद्दीपनशीलता का आता है और उसके बाद तन्तु फिर अपनी सामान्य उद्दीपनशील तन्तु की स्थिति प्राप्त कर लेता है।

Regression [रिग्रेशन] : प्रतिगमन।

इसका सामान्य अर्थ है प्रारम्भिक आदिम अवस्था की ओर मुड़ना। इस शब्द का तीन दृष्टिकोण से प्रयोग हुआ है :

१. अवयव या सामाजिक समूह की पीछे की ओर प्रत्यावर्तित होने की प्रवृत्ति।

२. मनोविश्लेषण के अनुसार प्रतिगमन में कामशक्ति का प्रवाह आगे जाते-जाते सहसा पीछे की गति ले लेता है। इस प्रकार कामशक्ति का विकास अपनी सहज साधारण रीति से चलते-चलते सहसा किसी घटना या परिस्थिति-विशेष के कारण बाधा पा जाता है और प्रेम और स्थानान्तरण का आकर्षण 'प्रारम्भिक अवस्था' की रुचि के पात्रों की ओर हो जाता है। कामशक्ति के केन्द्रीयण और प्रतिगमन में अन्तर है। प्रतिगमन में साधारण रीति पर विकास होते-होते कामशक्ति पीछे को घूम पड़ती है, केन्द्रीयण में इसका विकास किसी पिछली अवस्था पर रुक जाता है।

३ सांख्यिकी में इसे 'समाश्रमण' कहते हैं जिसका प्रयोग दो परिवर्त्यों के पारस्परिक सम्बन्ध के प्रसंग में होता है।

Reinforcement [रिइन्फ़ोर्समेंट] : प्रबलन, पुनर्बलन।

जब किसी तन्त्रिका-उत्तेजन-प्रक्रिया का प्रभाव किसी दूसरी प्रक्रिया पर इस रूप में पड़े कि उसकी तीव्रता अथवा कुशलता बढ़ जाए तो उसे 'पुनर्बलन' या 'प्रबलन' कहते हैं। यथा, अनुबंधन(Conditioning) सम्बन्धी प्रयोगों में घंटी की आवाज के बाद जैसे-जैसे कुत्ते को उसका प्रिय खाद्य—मांस—दिया जाता है वैसे ही वैसे उसकी घंटी की आवाज़ के प्रति लालास्राव की क्रिया में तीव्रता आती जाती है और दोनों के बीच का सम्बन्ध दृढ़तर होता जाता है।

प्रबलन भावात्मक और अभावात्मक दोनों ही प्रकार का होता है। जब प्राणी किसी कार्य को करता है और फलस्वरूप उसको उसका पुरस्कार मिलता है तो उसका उस काम को करने का उत्साह और भी बढ़ जाता है—यह भावात्मक प्रबलन है। इसी के विपरीत जब किसी काम को करने पर प्राणी को दण्डित होना पड़ता है तो भविष्य में वह उसका पुनरावर्तन नहीं करना चाहता। यही अभावात्मक प्रबलन है।

Rejecting Parent [रिजेक्टिंग पेरेन्ट] उपेक्षक अभिभावक, सन्तानों की उपेक्षा करने वाले अभिभावक।

उपेक्षा का प्रभाव बालक के मानसिक विकास पर, विशेष रूप से संवेगात्मक अवस्था पर, अत्यधिक पड़ता है।

देखिए—Parent Child Relationship

Rejected Child [रिजेक्टिड चाइल्ड] वंचित बालक।

बालकों का अपने अभिभावकों का प्रिय पात्र बनना, स्वीकृत किया जाना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। वे ही उसकी शक्ति और सुरक्षा का प्रधान स्रोत हैं। इसी सुरक्षा का सम्बल ले वह बाह्य संसार से सम्बन्ध जोड़ता है और भाँति-भाँति की सफलता-असफलता और समस्या का सामना करता है। सुरक्षित और उपयुक्त गृह व्यवस्था के अभाव में बालक के व्यक्तित्व में स्थायी विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं।

अभिभावकों की उपेक्षा का बालक पर जो प्रभाव पड़ता है वह कई बातों पर निर्भर है, अभिभावकों में किसका उदार भाव है, उनका स्नेह किस अंश तक है, उसके प्रति उपेक्षा का किस रूप में प्रकाशन होता है, ऐसा तो नहीं कि पहले स्नेह था और अब उदासीन हो गए। साधारणतः वंचित बालक डरपोक, असुरक्षित, दूसरों का ध्यान अपनी ओर खींचनेवाला, द्वेषी, उग्र प्रकार तथा अकेलापन के भाव से त्रस्त होता है। ऐसे बालक अधिकांश भावी जीवन में दूसरों के प्यार को स्वीकार करने तथा उसके प्रति अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करने में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

उपेक्षा के अत्यधिक सक्रिय और दमनात्मक होने पर बालक में अपने वातावरण के सभी दबावों के प्रति खुले विद्रोह की भावना उत्पन्न हो जाती है और उसमें तरह-तरह के समाज विरोधी व्यवहार—झूठ, चोरी, अनाचार, व्यभिचार आदि—पैदा हो जाते हैं। सम्भवतः उपेक्षा की सभी स्थितियाँ आत्म-अवमूल्यन तथा संसार को असुरक्षित और बीहड़ स्थान समझने की भावना उत्पन्न करती हैं।

Relaxation Therapy [रिलैक्सेशन थेरेपी] शिथिलन चिकित्सा, विश्रान्ति चिकित्सा।

मानसिक रोग के उपचार के लिए शिथिलन एक विधि है, विशेषतः उस अवस्था में जब रोगी अत्यधिक तनाव की अवस्था में हो। इसका एक रूप यह है कि रोगी कोच पर लेटकर अपनी विभिन्न पेशियों का सकुचन-आकुचन विधिपूर्वक जान में करता रहे। इस प्रकार करने से वह अपनी पेशियों पर इच्छानुसार संयम रख पाता है और इच्छानुसार अपने सम्पूर्ण अवयव को शिथिल कर ले सकता है। शरीर शिथिल कर लेने पर तनाव नहीं रह जाता और रोगी को निद्रा आ जाती है। रोगी में मुख्य रूप से यह विश्वास उत्पन्न करने का प्रयास किया जाता है कि वह जब चाहे अपने को विश्रान्ति की अवस्था में ला सकता है।

सम्भवतः यह चिकित्सा विधि जैने के मूल सिद्धान्त 'शक्ति को बचाए रखना' पर आधारित है।

मानसिक उपचार की यह प्रमुख विधि नहीं है, यह एक सहायक विधि है। इसमें दो दोष हैं

१. 'शिथिलता' चिकित्सा की एक स्वतन्त्र विधि नहीं है।
२. कभी कभी इसका प्रभाव रोगी पर उल्टा पड़ता है।

Relearning [रिलर्निंग] पुनरधिगम।

किसी विषय अथवा कौशल को एक बार सीख लेने के पश्चात कुछ समय के उपरान्त पुनः सीखना। धारण क्रिया के स्वरूप का अध्ययन करने के लिए इस प्रत्यय का मनोवैज्ञानिक संदर्भ में सबसे पहला प्रयोग एबिंगहॉस (Ebbinghaus) ने किया। पुनर्शिक्षण में समय और प्रयासों की बचत धारण क्रिया को प्रमाणित करती है।

देखिए—Retention

स्वभाव तथा सामान्य व्यवहार का अध्ययन करने का प्रयास होता है। यह विधि अवैज्ञानिक एवं अविश्वसनीय है। इसी से अप्रचलित है किन्तु मनोविश्लेषण ने अचेतन मन में संग्रहीत बाल्यावस्था की स्मृतियों को विशेष महत्व प्रदान कर पुनः इसे नया रूप दिया है।

Repression [रिप्रे शन] दमन।

(मनोविश्लेषण) अचेतन मन की वह रक्षार्थ कार्य-पद्धति जिसमें जो भावना-इच्छाएँ वर्जित हैं उनका स्वतः दमन हो जाता है और इस प्रकार वे चेतन में प्रवेश करने में असमर्थ हो जाती हैं। किन्तु दमन करने से भावना-इच्छाएँ निष्क्रिय नहीं हो जातीं बल्कि अधिक सजग और क्रियमाण हो जाती हैं। इसी से इच्छाओं का दमन करने से वस्तुतः तनाव कम नहीं होता, बल्कि अचेतन स्तर पर संघर्ष तनाव जटिल रूप धारण करता है। मन के निचले स्तर से व्यक्ति का व्यवहार और व्यक्तित्व सदैव प्रभावित होता रहता है। हमें इसका ज्ञान नहीं होता। इसी से तो मानव की व्यवहार-क्रियाएँ पहेली रूप में प्रस्तुत होती हैं।

फ्रायड के अनुसार दमन युक्ति का प्रश्न कामवृत्ति के प्रसंग में उठता है और अत्यधिक दमन का परिणाम यह होता है कि व्यक्ति मानसिक रोग का आखेट होता है। फ्रायड के मानसिक रोग के सिद्धांत में दमन की धारणा अत्यधिक महत्व की है और बिना इसको समझे मानसिक रोग को समझना दूभर है।

Residues [रेसिड्यूज़] अवशेष।

इस शब्द का प्रचार पैरेटो और उनके समर्थकों ने मूक प्रारम्भिक स्थायीभाव की अभिव्यक्ति के प्रसंग में किया है जिससे मानव को प्रेरणा मिलती है। पैरेटन सम्प्रदाय में छः मूल वर्ग अथवा प्रेरणा तत्त्व माने गए हैं मिश्रण की वृत्ति, मिश्रण अथवा परम्परा का स्थायित्व, स्थायी भावों के वाह्यीकरण की वृत्ति, समाज वृत्ति, व्यक्ति की समाज की माँग के विरोध में संघटन संस्थापित करने की इच्छा, और काम (Sex) की अभिव्यक्ति की इच्छा। इस शब्द से फ्रायड की कामशक्ति तथा युंग और अन्य चिन्तकों के जातीय स्मृति अथवा वृत्ति तथा बुनियादी सार्वभौम इच्छाओं की प्रकृति और स्वरूप का उपस्थापन होता है। इसके द्वारा प्रमुख इच्छा तथा इच्छा-मुद्रा की कल्पना का प्रयास हुआ है जिसके प्रसंग में अन्य प्रक्रियाओं की व्याख्या हो सके।

Resonance Theory [रेज़ोनेन्स थियेरी] अनुनाद सिद्धान्त।

हेल्महोल्ज़ के ध्वनि-सम्बन्धी 'प्लेस सिद्धान्त' व प्यानो सिद्धान्त' से मिलता-जुलता एक सिद्धान्त। इसके अनुसार मिश्रित ध्वनियों का, ध्वनि के सादे संयोगी तत्त्वों द्वारा कान की झिल्ली के अलग-अलग सूक्ष्मांशों में उत्पन्न किये हुए, श्रवण तंत्रिका में विशेष प्रतिक्रियाओं जैसे अनुनादी कम्पन या प्रतिध्वनि के द्वारा, विश्लेषण किया जाता है।

Response [रेस्पॉन्स] अनुक्रिया।

किसी भी भौतिक शक्ति के प्राणी को प्रभावित करने पर उसके शरीर में उत्पन्न पेशीय, ग्रन्थीय स्राव, अथवा अन्य प्रक्रिया। मनुष्य कभी निष्क्रिय नहीं रहता। उद्दीपन के प्रभाव में सदैव अनुक्रिया किया करता है। अधिकतर अनुक्रियाएँ वाह्य जगत् से सामंजस्य स्थापित करने के हेतु होती हैं।

Response Decrement [रेस्पॉन्स डिक्रेमेंट] अनुक्रिया अपक्षय।

पेशी संकोचन लेखी (Ergograph) द्वारा रचित कार्य वक्र (Work curve) में पाई जाने वाली विशिष्टताओं में से एक ऐसी विशिष्टता जो कि कार्य वक्र के आखिरी भाग में पाई जाती है। यह थकान की शुरुआत होने के साथ-साथ कार्य मात्रा में लगातार होती हुई कमी की ओर निर्देश करता है। देखिए—Ergograph, Work curve.

Response Mechanism [रेस्पॉन्स मेकैनिज़्म] अनुक्रिया क्रियाविधि।

वह क्रियाविधि जिसके द्वारा जीव उद्दीपन

के प्रभाव को ग्रहण करता तथा उपयुक्त अनुक्रियाओं को प्रतिपादन करता है। मानव की अनुक्रिया क्रियाविधि में ये अग सम्मिलित हैं : (१) ग्राहक अथवा ज्ञानेन्द्रिय—जो उद्दीपन को ग्रहण करती तथा तन्त्रिकातन्त्र मे भेजती है। (२) तन्त्रिकातन्त्र सस्थान—जो उद्दीपन प्रभाव को आवश्यकतानुसार बाहर से अन्दर, अन्दर से बाहर भेजता तथा शरीर के एक भाग का दूसरे भाग से सम्बन्ध स्थापित करता है तथा (३) पेशियाँ अथवा ग्रन्थियाँ—जो वास्तविक अनुक्रिया का सम्पादन करती हैं। ये तीनो मिलकर एक ऐसे जटिल यन्त्र का निर्माण करते हैं जो प्राणी को, अपने को प्रभावित करने वाली वातावरणगत भौतिक शक्तियों के प्रति सगठित रूप मे अनुक्रियाएँ प्रकट करने की सामर्थ्य प्रदान करता है।

Rest Pause [रेस्ट पॉज़] : विश्रामकाल।

कार्यकाल के अन्तर्गत होने वाले छोटे-छोटे विश्रामकाल। इनका प्रयोग कार्यकाल में इस दृष्टिकोण से किया जाता है कि जिससे कार्यवाही पेशियों की थकान दूर हो सके तथा उनकी कार्यक्षमता में वृद्धि हो।

Retardation [रिटार्डेशन] : मन्दन।

किसी भी गति अथवा विकास का मन्द पड़ जाना। साधारणतः मनोविज्ञान में इसका प्रयोग बालक के मानसिक विकास के लिए किया जाता है। मन्दित बालक की बुद्धि-लब्धि (I.Q.) निश्चित रूप से साधारण की अपेक्षा कम और कभी कभी तो ७० के भी नीचे होती है।

देखिए—*Intelligent Quotient*.

Retention [रिटेन्शन] : धारण।

सीखे हुए विषय को सस्कारों के रूप में मस्तिष्क में सुरक्षित रखने की क्रिया। यह एक जैव प्रक्रिया है, अतः इसका प्रत्यक्ष निरीक्षण सम्भव नही। प्रत्यावाहन, पहचानना तथा पुनर्शिक्षण के द्वारा इसके बारे में ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

धारण-प्रक्रिया का दैहिक आधार स्मृति-चिह्न (Memory trace) तथा मनोवैज्ञानिक आधार उत्तेजन-प्रतिक्रिया सम्बन्ध अथवा साहचर्य है। इन्ही के माध्यम से व्यक्ति विषय को धारण करने में समर्थ होता है। स्मृति-चिह्नों के पुष्टिकरण की दैहिक-प्रक्रिया सीखने के बाद भी कुछ समय तक चलती रहती है। यही कारण है कि जब व्यक्ति किसी विषय को सीखने के पश्चात् तुरत किसी दूसरे विषय के अर्जन में प्रवृत्त होता है तो पहले वाले विषय का धारण निर्बल पड जाता है।

धारणा-प्रक्रिया पर स्वास्थ्य, मस्तिष्क की बनावट, अभिरुचि, मानस-वृत्ति, विषय के स्वरूप एव शिक्षण की मात्रा तथा विधि आदि का महत्वपूर्ण प्रभाव पडता है।

Retina [रेटिना] . दृष्टिपटल।

नेत्र मे सबसे अन्दर पीछे की ओर अर्द्ध-चन्द्राकार से कुछ *अधिक भाग* मे प्रसरित एक आवरण-विशेष जो प्रकाश-तरगो का वास्तविक ग्राहक है। यह दो विशेष प्रकार की कोशिकाओं—शलाका (Rods) और शकु—से युक्त अत्यधिक सूक्ष्म तंत्रिकाओं का घना पतला जाल-सा है।

देखिए—Rods.

Retinal Disparity [रेटिनल डिसपैरिटी] : दृष्टिपटलीय विसगति।

जब एक ठोस वस्तु दोनो आँखों द्वारा देखी जाती है तो दृष्टिपटल पर पडने वाली दोनों प्रतिमाओं में भिन्नता होती है, क्योंकि दोनों आँखें वस्तु को दो भिन्न चक्षुकोणों से देखती हैं। यह तो दोनों प्रतिमाओं का एकीकरण अथवा संयोग है जो कि गहराई या तीसरी दिशा का अनुभव उत्पन्न करता है।

Retroactive Inhibition [रिट्रोएक्टिव इन्हिबिशन] : पूर्वलक्षी अवरोधन।

किसी भी साहचर्य क्रम मे बाद में बने हुए साहचर्य-क्रम की निरोध प्रवृत्ति, जो कि पहले बने हुए साहचर्य-क्रमों में निरोध उत्पन्न करती है।

Retrocognition [रिट्रोकॉग्निशन] :

प्रत्यभिज्ञान ।

वर्तमान संज्ञान का भूतकालीन संज्ञानों के धारण पर प्रभाव, किसी भी वस्तु की जानकारी पर पुनर्विचार द्वारा उसका और भी अधिक ज्ञान प्राप्त करना ।

Revised Stanford Scale [रिवाइज्ड स्टैनफोर्ड स्केल] संशोधित स्टैनफोर्ड मापनी ।

बिने कृत बुद्धिमापनी का अमरीका में टर्मन तथा मेरिल द्वारा १९३७ ई० में प्रकाशित संशोधित रूप, जिसे बिने-पद्धति का सर्वश्रेष्ठ परीक्षण माना जाता है। इसमें दो वर्ष से लेकर प्रौढ आयु के २० स्तरों के लिए नियत परीक्षण हैं। इसकी दो आकृतियाँ हैं। प्रत्येक आकृति में १२२ परीक्षण हैं। ६ वर्ष तक के सात आयु-स्तरों में से प्रत्येक के लिए एक अतिरिक्त परीक्षण भी है, और चार अलग-अलग प्रौढ स्तरों के लिए भिन्न-भिन्न परीक्षण हैं। कुछ परीक्षण शाब्दिक हैं, जैसे साधारण वस्तुओं के नाम बताना, शरीर के अंगों के नाम बताना, शब्द-संयोजन, वस्तुओं के व्यावहारिक उपयोग बताना, सुनाए हुए अंक दुहराना, शब्दों के अर्थ बताना, वाक्यपूर्ति करना, प्रचलित प्रथाओं के कारण बताना, सुनाई गई गद्य सामग्री का सारांश बताना। परन्तु कुछ परीक्षणों में मनकों, रंगीन घनों आदि की सहायता से सुलझाने वाली समस्याएँ उपस्थापित की जाती हैं—जैसे त्रियाकृति पट, मनके पिरोना, प्रस्तुत घनों से पुल आदि बनाना, सरल ऊर्ध्वाधर रेखा खींचना भूलभुलय्याँ में से मार्ग निकालना।

यह बुद्धिमापनी वैयक्तिक आयुमापनी है। प्रत्येक आयुवर्ष के लिए नियत परीक्षणों में उस वर्ष के महीने बराबर-बराबर बाँट दिए जाते हैं, जिससे यदि परीक्षार्थी किसी वर्ष के लिए नियत सब परीक्षणों में सफल न हो तो उसे आंशिक आयु प्राप्तांक दिए जा सकें। इस प्रकार सब वर्षों के लिए नियत परीक्षणों पर प्राप्त आयु अंकों के जोड़ को परीक्षार्थी की मानसिक आयु माना जाता है। इस मानसिक आयु की उसकी वर्षक्रम आयु से भाग द्वारा तुलना की जाती है और भजनफल में भिन्न अथवा दशमलव से मुक्ति पाने के लिए १०० से गुणा करने से बुद्धि-परीक्षा का फल बुद्धिलब्धि के रूप में प्राप्त हो जाता है।

Role [रोल] . कर्तव्य, भूमिका ।

किसी व्यक्ति के द्वारा की जाने वाली वह सामाजिक क्रिया अथवा कार्य, जो कि समाज अपने प्रत्येक सदस्य से, सामाजिक क्रम में उसके पद के अनुसार किसी विशेष प्रकार के व्यावहारिक सामाजिक कर्तव्य (Social role) की अपेक्षा करता है। समाज मनोविज्ञान में सामाजिक व्यवहार की व्याख्या के प्रसंग में अन्य सिद्धान्तों की तरह इसका भी विशेष महत्त्व है।

Role Theory [रोल थियॅरी] . कर्तव्य-भूमिका सिद्धान्त ।

एक उपकल्पना जो कि समाज मनोवैज्ञानिक तथ्यों को किसी भी दिए हुए संस्कृति प्रसंग में, किसी भी व्यक्ति के द्वारा किए हुए सामाजिक कार्यों या क्रिया-व्यापार के रूप में समझने का प्रयत्न करती है।

'रोल' का अर्थ है उस व्यक्ति की 'सामाजिक स्थिति या पदवी'। सामाजिक स्थिति और रोल अविभेद्य हैं। यह कर्तव्यों और अधिकारों का एक समूह है। किसी भी एक विशेष संस्कृति में निहित अधिकार और कर्तव्य ही, किसी भी समुदाय या जातिमंडल में, किसी व्यक्ति के स्थान या पदवी को निर्धारित करते हैं। इसके अतिरिक्त, रोल, दूसरे लोगों की प्रत्याशाओं (expectation) के पूर्वावधारणा स्वरूप किसी ऐसे व्यक्ति के द्वारा किये हुए कार्यों को कहते हैं जो कि एक निश्चित सामाजिक स्थिति पर धारण है। जब वह किसी भी संस्कृति में निहित कर्तव्यों और अधिकारों के स्वरूप कार्य करता है तो यह कहा जाता है कि वह उस रोल को अदा कर रहा है जिसकी उससे प्रत्याशा है।

दूसरों का रोल लेना या अदा करना सामाजिक मानव का एक चिह्न है। एक व्यक्ति का रोल लेना, दूसरे का रोल अदा करने के बारे में पूर्वकल्पना करता है। इसलिए रोल व्यवहार लोगों को स्वीकृत करने व दूसरे लोगों द्वारा स्वीकृत होने का अवसर देता है। रोल व्यवहार एक समुदाय में ही संभव है।

Rods [रॉडस्] : शलाका।

नेत्र के अन्तरीयपटल या अक्षिपट में पाए जाने वाले दण्डाकार कोशिका जो प्रकाश के संवेदन के उत्पादक हैं। ये अत्यधिक संवेदनशील होते हैं और कम-से-कम प्रकाश में भी सक्रिय रहते हैं। कालिदास ने १८५४ में सबसे पहले अन्य कोशिकाओं से पृथक् इनकी सत्ता स्थापित की और वोनक्रीज़ ने इस सिद्धान्त का प्रवर्तन किया कि प्रकाश तरंगों की ओर प्रतिक्रियान्वित हो ये अवर्णक संवेदन (Achromatic sensation) उत्पन्न करते हैं। इनमें दृष्टि-लोहित (Visual purple) नामक एक पदार्थ पाया जाता है जो अन्धकार-अनुकूलन (Dark adaptation) के लिए आवश्यक माना जाता है।

Rorschach Test [रोर्शाख टेस्ट] : रोर्शाख परीक्षण।

व्यक्तित्व के कुछ पहलुओं को अध्ययन करने के लिए, स्विट्जरलैंड के चिकित्सक हरमन रोर्शाख के द्वारा 'मसि-लक्ष्म' के रूप में बनाया एक परीक्षण। इस प्रक्षेपणात्मक परीक्षण में, दस 'मसि-लक्ष्म' के चित्र प्रयोग में लाए जाते हैं। यह चित्र रंगीन और वर्ण-विहीन दोनों ही होते हैं। परीक्षार्थी से यह कहा जाता है कि वह बताए कि वह इन धब्बों में क्या देख रहा है। परीक्षार्थी धब्बों का कौन-सा भाग अपने अनुभव के लिए प्रयोग करता है और उन भागों में वह क्या देखता है तथा उन वस्तुओं को कैसा (चलता, खड़ा, बैठा, जड़ इत्यादि) देखता है—इन्हीं तीन पहलुओं पर आधारित, उसकी प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करके, परीक्षार्थी की कुछ वैयक्तिक विशिष्टताओं को समझा जाता है। आरम्भ में चिकित्सा-सम्बन्धी योजनाओं में प्रयोग करने के लिए एक प्रायोगिक और निरीक्षण के औजार के रूप में प्रयोग करने के लिए बनाया गया था। परन्तु बाद में, इसका प्रयोग अन्य क्षेत्रों तक विस्तृत हो गया। इस परीक्षण से सम्बन्धित जितना अनुसंधान कार्य हुआ है, उतना और किसी भी 'प्रोजेक्टिव' अथवा मनोवैज्ञानिक परीक्षण के लिए नहीं हुआ।

Rote Memory [रोट मेमरी] : रटन-स्मृति।

विषय-वस्तु के संगठन, अर्थ तथा प्रसंग की ओर ध्यान दिए बिना रट कर सीखना और धारण करना। सभी विषयों को स्थायी-स्मृति की आवश्यकता नहीं होती। कुछ विषयों का केवल सामयिक महत्त्व होता है। व्यक्ति कुछ समय के लिए उन्हें रट कर स्मरण करता है और कार्य हो जाने पर भूल जाता है—यथा नाटक का पार्ट, परीक्षा के लिए प्रश्नोत्तर आदि।

रटन-स्मृति नीचे स्तर की स्मृति है। इसमें न केवल समय, प्रयास और शक्ति का अपव्यय होता है, प्रत्युत स्थायित्व का भी अभाव रहता है। अन्य स्मृति-विधियों के समान इसमें मस्तिष्क का सक्रिय सहयोग नहीं होता।

Sadism [सैडिज्म] : परपीड़न रति।

फ्रायड ने इस धारणा का अन्वेषण फ्रांस के उपन्यासकार मार्किवस डे साडे (१७४०-१८१४) के नाम पर किया है। इस शब्द का प्रयोग किसी भी प्रकार के सुख की अनुभूति के प्रसंग में किया जा सकता है। मनोविश्लेषण में इसका प्रयोग कामतुष्टि के प्रसंगमात्र में हुआ है। यह एक प्रकार की काम-विकृति है जिसमें 'प्रिय' के प्रति निर्दयता, उत्पीडन, यातना, ताड़ना और क्रूर व्यवहार (विशेष रूप से शारीरिक यातना करने पर ही कामतुष्टि प्राप्त होती है। यह प्रवृति विशेषतः पुरुषों की होती है। 'प्रिय' को शारीरिक

और मानसिक यातना देकर उसे काम-सम्बन्धी सन्तोषण मिलता है। परपीडक मे यह भाव परवर्गी के ही प्रति नही, बच्चो के प्रति भी मिलता है। उसका क्रूर व्यवहार प्रतिशोध की भावना से प्रेरित नही रहता, कामतुष्टि के निमित्त रहता है। एडलर के अनुसार परपीडन रति का मूल कारण हीनता ग्रंथि (Inferiority complex) है। यह एक प्रकार की पूरक प्रक्रिया हीन भावना के हेतु है।

दैहिक व्याख्या के अनुमोदक, कैनन और यर्सटन का कथन है कि परपीडन रति अन्त स्राव मे दोष होने पर मिलती है। वस्तुत मानव-व्यवहार और ग्रंथिस्राव मे अनन्य सम्बन्ध है, सत्य रहते हुए यह मान्य नही है कि परपीडन रति की ओर झुकाव ग्रंथि स्राव के कारण होता है। जो व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से पूर्णत साधारण है उसमे भी परपीडन रति की ओर झुकाव मिलता है। मनुष्य का यह अभ्यास प्रकृत और आदिम जीवनयापन करने पर बन जाता है और इस विशेषता को प्रकृति, स्वभाव विकृति की सज्ञा दी जाने लगती है।

फ्रायड ने अपने पिछले ग्रथो मे परपीडन रति को मानव के स्वभाव की विशेषता बतलाया है। मरण प्रवृत्ति (Thanatos) होने से व्यक्ति विध्वसात्मक व्यवहार करता है। कुछ न-कुछ परपीडन की इच्छा हरेक व्यक्ति मे होती है, अधिक होने पर काम विकृति आती है और व्यक्ति व्यवहार मे ऐसा हिंसक होता है कि इसका एकमात्र सुझाव उसे उपचारालय मे रखना है।

नव फ्रायडवाद के अनुसार यह विशेषता-सस्कृति सामाजिक वातावरण से प्राप्त होती है।

Satiation [सैटियशन] तृप्ति।

लगातार अधिक समय तक अथवा कई बार क्रम से, एक उत्तेजक द्वारा उद्दीपन पैदा होते रहने पर, उससे उत्पन्न हुई जीव की वह अवस्था, जबकि वह उद्दीपन के प्रति सापेक्ष रूप से असवेदनशील हो जाता है।

प्रेरणा के क्षेत्र मे जीव की वह अवस्था, जबकि उसकी किसी एक आवश्यकता की पूर्ति पूर्ण रूप से हो गई हो।

प्रान्तस्था तृप्ति (Cortical satiation) पद को कोहलर ने केन्द्र मस्तिष्कीय-माध्यम मे होने वाले कुछ प्रकार के विद्युज्जन्य परिवर्तनो के, जो कि आकृतिक अनुप्रभाव (Figural after effect) के तथ्य से सम्बन्धित है के लिए प्रयोग किया है।

Saturation [सैचुरेशन] सतृप्ति, सतृप्तीकरण।

रगो की तीन प्रमुख विशेषताएँ हैं—प्रकार, चमक और शुद्धता। जब एक ही लम्बाई और ऊँचाई की प्रकाश-तरगें किसी वस्तु से परावर्तित हो हमारी दृष्टि-इन्द्रिय को प्रभावित करती हैं तो हमे शुद्ध रग का सवेदन होता है। विभिन्न लम्बाई और ऊँचाई वाली प्रकाश-तरगो के सम्मिश्रण से अशुद्ध रग का सवेदन उत्पन्न होता है। जो रग जितना ही शुद्ध होगा वह उतना ही गाढा और जो जितना ही अशुद्ध होगा वह उतना ही फीका होता है। प्रयोगशाला की नियत्रित परिस्थितियो से पृथक् व्यावहारिक जीवन मे हमे शुद्ध रगो का सवेदन प्राय नही होता।

Scaling Method [स्केलिंग मेथड]: मापनी विधियाँ।

किसी मनोवैज्ञानिक विमिति अर्थात् मापदण्ड पर किसी व्यक्ति, गुण, व्यवहार, वृति अथवा अन्य मनोवैज्ञानिक विषय का स्थान, मूल्य, महत्त्व अथवा अक निर्धारित करने की विधियाँ। इनमे युग्मित तुलना विधि, पदक्रमीय विधि, आँकन विधि तथा समानान्तर बोध विधि प्रमुख हैं। विमिति प्राय कोई योग्यता होती है अथवा व्यक्तित्व का कोई गुण भावात्मक मूल्य, विश्वास अथवा प्रवर्तनशीलता आदि कोई मनोस्थिति होती है। लिखाई, रेखाकन अथवा लेख रचना जैसी कोई योग्यता होती है, या नेतृत्व, चातुर्य अथवा सामाजिकता जैसा कोई व्यक्तित्व गुण होता है। अधिकाश मापनी विधियो की उत्पत्ति

मनोभौतिकी से हुई है परन्तु उनका विकास मनोपरीक्षण निर्माण की ओर झुका है।

Schizoid [स्कीजॉइड] : अन्तराबन्धवत्।

एक व्यक्तित्व प्रकार जिसमे रुचि अथवा कामशक्ति (Libido) वाह्य जीवन से अधिक अंतरिक जीवन की ओर उन्मुख रहती है—ब्लायर (Bleuler)

२. अतरोन्मुख, असामाजिक, कल्पनालीन, जिनका संवेगात्मक जीवन असाधारण मानसिक विकास के कारण उनके विचारात्मक विषय-वस्तुओं से कम या अधिक भिन्न है; क्रेश्मर (Kretschmor)।

३. अन्तराबन्ध (Schizophrenia) के सदृश अथवा सम्बन्धी जिसका कि विषय इस प्रकार के लोग होते है।

देखिए—Biotypes, Schizophrenia.

Schizophrenia [स्कीजोफ्रेनिया] : अन्तराबन्ध।

देखिए—Dementia Praecox.

Scopophilia [स्कॉपोफ़िलिया] : नग्न रूप रति।

यह एक प्रकार का कामदोष है। इसका अर्थ है किसी व्यक्ति के नग्न प्रदर्शन से काम-संतुष्टि प्राप्त करना।

Scores [स्कोर्स] : प्राप्तांक।

अन्तरीय अथवा अनुपातीय स्तर पर मनोमापन के फलस्वरूप प्राप्त होने वाली किसी व्यक्ति के किसी परिवर्त्यगुण की मात्रा की सूचक संख्या। प्राप्तांकों के रूप कई प्रकार के होते हैं :

(१) समय-प्राप्तांक (Time scores)—किसी दिए गए काम को करने में लगा समय।

(२) राशि-प्राप्तांक अर्थात् परिमाण प्राप्तांक—निश्चित समय मे किए गए कार्य की राशि।

(३) कठिनता प्राप्तांक—जिनसे यह व्यक्त होता है कि व्यक्ति किस मात्रा की कठिनता का काम कर पाता है।

(४) श्रेष्ठता प्राप्तांक—व्यक्ति की क्रिया अथवा कृति की श्रेष्ठता की मात्रा।

Second Order Conditioning [सेकन्ड आर्डर कॉन्डिशनिंग] : गौण अनुबन्धन।

दूसरे क्रम, तीसरे क्रम और उससे ऊँचे क्रम का अनुबन्धन उस तथ्य की ओर निर्देश करता है जबकि एक अनुबन्धित प्रतिक्रिया का अनुबधित उद्दीपक एक नया सम्बन्ध स्थापित करने के लिए एक अनुबधित उद्दीपक की तरह कार्य करता है जिससे कि एक नया उद्दीपक एक पुराने अनुबधित उद्दीपक की जगह स्थानापन्न हो जाता है। यह पद अतिरिक्त अनुबधन का पर्यायवाची है।

देखिए—Conditioning.

Selective Forgetting [सेलेक्टिव फॉरगेटिंग] : वरणात्मक विस्मरण।

(फ्रायड) वरणात्मक विस्मरण एक प्रकार की रक्षा-युक्ति (Defence mechanism) है और यह इस बात का द्योतक है कि जो घटनाएँ और वस्तु-स्थितियाँ दुःखद रहती हैं या प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मन पर आघात करती है वे विस्मृत हो जाती हैं। इससे व्यक्ति तीव्र वेदना से चेतन स्तर पर मुक्त हो जाता है और इस प्रकार अपने को वह समायोजित कर लेता है। वेदना भरी स्मृतियाँ या अनुभूतियाँ ज्ञात मन में प्रवेश नही कर पाती। विस्मरण या स्मृति मानसिक दोष नही है; यह एक प्रकार का आंतरिक समायोजन है। अनेक बातें अचेतन रूप से विस्मृति के गह्वर में डाल दी जाती हैं। विस्मरण स्वतः होता है, पर इसकी पृष्ठभूमि में सदैव भावना-सम्बन्धी गूढ इतिहास छिपा रहता है। चेतन या अचेतन स्तर पर वरणशील होना मानव की विशेषता है। इस दृष्टि से मानव निम्न स्तर के जीवों से श्रेष्ठ है।

Self [सेल्फ़] : आत्म।

मनोविज्ञान में इस पद का प्रयोग 'व्यक्तित्व' अथवा 'अहं' के लिए हुआ है जो एक अभिकर्त्ता है और जिसमे अपनी सतत तादात्म्यता की चेतना है। सामा-

न्यत. आत्म शब्द का प्रयोग 'अहं', 'ज्ञातृ', 'मैं', 'मम' के प्रसग मे हुआ है जो वस्तु अथवा वस्तु-सघटन के विपरीत है। आत्म मे व्यक्तिगत गुण, परिवर्तन मे स्थायित्व भी निहित है जिससे कोई व्यक्ति अपने को 'मैं' पुकारता है। आत्म मे विभिन्नता 'मैं स्व' माईसेल्फ, 'तुम स्व' योरसेल्फ के रूप मे प्रस्तुत की गई है।

दर्शन मे यह तत्त्ववादी एकता के सिद्धान्त के लिए है जो आभ्यन्तरिक अनुभूतियो की पृष्ठभूमि मे है और जो अवयव पर निर्भर करता है।

इस प्रकार 'आत्म' शब्द का अर्थ तात्त्विक मायावादी और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुअर्थी हो गया है और यह पृथक्‌करण स्पष्ट करना आवश्यक है (१) आत्म जिसमे आन्तरिक अनुभूति होती है, अथवा भौतिक और शरीरधारी आत्म, (२) आत्म जो अनुभूति के विषय वस्तु तथ्य के रूप मे प्रयुक्त हुआ अथवा मनोवैज्ञानिक आत्म जो प्रवेगिकी पूर्णाकार रूप मे अनुभूतियो का सघटन है।

Self Rating [सेल्फ रेटिंग] : आत्म-मूल्याकन।

मनोमिति की अकन-विधि मे किसी व्यक्ति द्वारा किसी अकन मान पर अपना स्थान स्वय निश्चित करने की क्रिया। इसमे व्यक्ति अपनी दृष्टि के अनुसार अपने गुणो, अपने अनुभवो अथवा अपनी वृत्तियो को बताता है। इस प्रकार के आत्म-मूल्याकन की प्रामाण्यता व्यक्ति की आत्मप्रेक्षण तथा आत्मविश्लेषण की योग्यताओ पर तथा अपनी आन्तरिक वास्तविकता को प्रगट करने की योग्यता पर निर्भर होगी। इनमे से कुछ सीमाओ का व्यक्ति को स्वय आभास हो सकता है, परन्तु कुछ का आभास न होना भी सम्भव और स्वाभाविक है। इसलिए किसी व्यक्ति के आत्म-मूल्याकनों की उसके विषय में अन्य व्यक्तियों द्वारा किए गए मूल्याकनो से तुलना की जाती है। अथवा आत्म-मूल्याकनो और दूसरो द्वारा किए गए मूल्याकनों को सम्मिलित करके एक सयुक्त मूल्याकन प्राप्त कर लिया जाता है।

Self regarding Sentiment [सेल्फ-रिगार्डिंग सेंटिमेंट] : 'आत्ममान भाव'।

मैक्डूगल (१८७१-१९३८)। किसी भी वस्तु, व्यक्ति विचार पर सवेगों का केन्द्रीयण स्थायीभाव (Sentiment) कहलाता है। 'आत्म' (Self) के सज्ञान के साथ-साथ उसके विचार पर केन्द्रित सवेगात्मक वृत्तियाँ आत्ममान के स्थायीभाव के नाम से प्रसिद्ध हैं। मैक्डूगल के अनुसार इस स्थायीभाव के निर्माण मे निम्न स्तर पाए जाते हैं: (१) शिशु के अपने ही प्रयासों द्वारा वातावरण से पृथक् उसमे अपने 'आत्म' के प्रति चेतना जगती है। (२) इस आत्म का एक नाम-विशेष से सम्बोधन होता है। (३) जैसे-जैसे वह दूसरों की तुलना मे अपने को प्रतिज्ञापित अथवा स्थापित करता है उसके 'आत्म' का और भी विस्तार होता जाता है। (४) 'आत्म' को सामाजिक वातावरण मे, जो उसका अपना क्रिया-व्यापार है, उसके अनुसार प्रशसा अथवा निन्दा का पात्र बनना पडता है। (५) 'आत्म' अब अपनी विशेषताओ एव न्यूनताओ के प्रति सचेत होता है। (६) वास्तविक पुरस्कार एव दण्ड नैतिक स्वीकृति एव अस्वीकृति का रूप धारण करता है। (७) 'आत्म' अनुनय द्वारा स्वय अपने और दूसरों के बारे मे निर्णय देना सीखता है: अपने लिए मान्यताओ की एक योजना खडी करता है और अपनी इन मान्यताओ के प्रति उसका विशिष्ट सवेगात्मक झुकाव होता है।

Semantics [सिमैंटिक्स] . अर्थविज्ञान।

शब्द, वाक्याश एव वाक्य जैसे भाषात्मक चिह्न के, उनके विषय अथवा अर्थ से सम्बन्धो का, तथा शब्दो के अर्थों के ऐतिहासिक परिवर्तनो का, अध्ययन करने वाला शास्त्र। इसके विकास मे मनोविज्ञान की व्यवहारवादी गेस्टाल्टवादी, मनोविश्लेषणवादी, विकार सम्बन्धी, विचार-

सम्बन्धी, समाज-सम्बन्धी एव प्रयोगात्मक धाराओ ने महत्त्वपूर्ण योग दिया है। इन्होने भाषा के मनोवैज्ञानिक स्वरूप का विश्लेषण किया है और उसे प्रत्ययो तथा अन्य मानसिक क्रियाओ का एक प्रमुख निर्धारक सिद्ध किया है।

शब्दों के अर्थ के अध्ययन का औपचारिक महत्त्व भी है। कुछ शब्दो का ऐसा भावात्मक मूल्य-महत्त्व होता है कि व्यक्ति यह नही समझ पाता कि ये मौखिक प्रतीक हैं और इनसे वस्तु-विचार का प्रतिनिधित्व मात्र होता है। कुछ शब्द सवेग से ऐसे परिप्लावित रहते हैं कि वे आन्तरिक मूल्य-महत्त्व के हो जाते हैं और उनके प्रयोग द्वारा उद्वेग का वस्तुतः अभिव्यक्तिकरण हो जाता है।

Semi Circular Canal [सेमी सरकुलर कैनाल] : अर्ध-वृत्ताकार नलिका।

मनुष्यों के कान के अन्दरूनी भाग की मध्यगुहा प्रघाण (Vestibule) के पिछले भाग मे, एक-दूसरे पर समकोण बनाती हुई करीब-करीब अर्ध-वृत्ताकार जैसी रूप मे पाई जानेवाली अस्थिमय नलिकाएँ। यह शरीर के भौतिक साम्य-सन्तुलन के अंगों का कार्य करती हैं और इस प्रकार से स्थित्यात्मक-भावना के निर्माण में मदद करती हैं।

Senile psychoses [सिनाइल साइकॉसिस] : 'जराकालीन मनोविक्षिप्ति'।

वृद्धावस्था का एक मानसिक रोग। यह अधिक आयु होने पर होता है—करीब ६०-७० के बीच में। वृद्ध होने पर शारीरिक ह्रास होता है और मस्तिष्क के कोश निर्बल पड़ जाते हैं। इससे मानसिक प्रक्रियाएँ भी क्षत-विक्षत हो जाती हैं।

लक्षण: उच्च-वर्ग की मानसिक प्रक्रियाओं निर्णय, तर्क, चिन्तन—का ह्रास, स्मृति में शिथिलता और दोष, ध्यान एकाग्र न होना समय-स्थान का ठीक-ठीक ज्ञान न रहना, चिन्तन में क्रमबद्धता का अभाव; स्नेह, सहानुभूति का अभाव इत्यादि। इस रोग का आक्रमण होने पर व्यक्ति अत्यधिक स्वार्थी, चिड़चिड़ा, अपने स्वास्थ्य के बारे में अतिचिन्तक बन जाता है। काम-प्रवृत्ति तीव्र रहती है जिससे रोगी में काम-विकृत प्रक्रियाएँ मिलने लगती हैं। अंग-प्रदर्शन का दोष मिलता है। अशोभनीय रूप से काम-प्रवृत्ति की तुष्टि चाहता है। भ्रम होता है। बातचीत कम करता है और लेखन में कम्पन रहता है जिसका मूल कारण क्रियात्मक सगठन का निर्बल हो जाना है। उसके गुच्छ कोश की क्षति हो जाती है और मस्तिष्क मे चर्बी इकट्ठी हो जाती है।

जराकालीन विक्षिप्ति के निम्नलिखित प्रकार हैं :

१. साधारण, २. चित्तविभ्रमात्मक ३. विषादात्मक ४. विद्रोहात्मक ५. भ्रमात्मक।

जराकालीन विक्षिप्ति का प्रमुख कारण वृद्धावस्था है। देख-रेख रखना इस रोग का उपचार है। उपयुक्त देख-रेख से रोगी की अवस्था सुधारी जा सकती है।

Sensation [सेन्सेशन] : सवेदन।

सवेदी तन्त्रिकाओं के माध्यम से वृहद् मस्तिष्क के सवेदनात्मक केन्द्रो पर किसी उद्दीपन की तात्कालिक अनुक्रिया यह अनुक्रिया मस्तिष्क मे किसी भी गत अनुभूति के जाग्रत होने के पूर्व घटित होती है। इसके द्वारा प्राणी को उत्तेजन का आभास मात्र होता है; उसका ज्ञान नही होता है। वस्तुतः विशुद्ध सवेदन (Pure Sensation) एक मनोवैज्ञानिक कल्पना मात्र है। व्यक्ति जब भी किसी उत्तेजन के सम्पर्क मे आता है वह इसे किसी-न-किसी रूप में, यह रूप चाहे जितना भी अस्पष्ट क्यो न हो, जान लेता है।

सवेदन की प्रमुख विशेषताएँ हैं :—

(१) गुण—एक प्रकार का सवेदन दूसरे प्रकार के संवेदन से अथवा एक ही संवेदन के अन्तर्गत भिन्नताएँ—यथा चाक्षुष संवेदन की श्रवण सवेदन से भिन्नता अथवा चाक्षुष संवेदन के अन्तर्गत लाल, हरे, नीले, पीले की भिन्नता (२) तीव्रता—मात्रा में अन्तर—यथा दाल मे नमक का

कम होना या ज्यादा होना, प्रकाश का कम होना या अधिक होना (३) विस्तार—ज्ञानेन्द्रिय के कम या अधिक क्षेत्र का प्रभावित होना। यथा—एक ही घड़े में उँगली डालना या पूरे हाथ का डूबा होना (४) अवधि सवेदन का अनुभव कम समय तक या अधिक समय तक होना (५) स्थानीय चिह्न (local signs) ज्ञानेन्द्रिय के भिन्न भिन्न क्षेत्रों के प्रभावित होने से उत्पन्न होता है। यथा—एक ही आलपिन यदि पैर के तलुवे, हथेली और ओठ में चुभाई जाए तो इन तीनों स्थानों पर उत्पन्न अनुभूतियों का स्वरूप एक दूसरे से भिन्न होगा। (६) स्पष्टता—सवेदनात्मक अनुभूतियों का स्पष्ट या अस्पष्ट होना।

सवेदन आठ प्रकार के होते हैं (१) चाक्षुष सवेदन (२) श्रवण-सवेदन (Auditary Sensation) (३) घ्राण सवेदन (Olfactory Sensation) (४) स्वाद-सवेदन (५) स्पर्श सवेदन (Tactual Sensation) (६) सन्तुलन का सवेदन (७) गति सवेदन तथा (८) आगिक-सवेदन (Organic Sensation)।

उक्त सभी सवेदनों के घटित होने की प्रणाली एक ही है। किसी सवेदन का विश्लेषण करने पर निम्न स्तर मिलते हैं (१) उद्दीपन की उपस्थिति (२) ग्राहकेन्द्रीय पर उद्दीपन का प्रभाव (३) ग्राहकेन्द्रीय में तन्त्रिका आवेग की उत्पत्ति (४) तन्त्रिका आवेग का ग्राहकेन्द्रीय से सम्बन्ध सवेदी तन्त्रिका विशेष द्वारा मस्तिष्क के सवेदनात्मक केन्द्र विशेष में पहुँचना, तथा (८) केन्द्र की तन्त्रिका-कोशिकाओं में एक प्रकार का परिवर्तन या सवेदन।

Sensation Circles [सेन्सेशन सरकल्स] सवेदन वृत्त।

देखिए—Aesthesiometric Index

Sensationism [सेन्सेशनिज्म] सवेदनवाद।

यह एक मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है जिसमें सभी मानसिक क्रियाओं एव विषय वस्तुओं का विश्लेषण उनके आधारभूत तत्त्वों अर्थात् सवेदनों की इकाइयों में किया जाता है। विभिन्न सवेदनों में सम्बन्ध स्थापित करने वाला सिद्धान्त साहचर्य (Association) है। कौडिलैक पहला दार्शनिक था जिसने पहले-पहल सवेदनवाद को उसके शुद्ध रूप में प्रस्तुत किया। उसने यह तक प्रस्तुत किया कि समस्त मानसिक क्रियाओं की व्याख्या सवेदनों के आधार पर की जा सकती है।

देखिए—Associationism

S C T (Sentence Completion Test) [सेन्टेन्स कम्प्लीशन टेस्ट] वाक्यपूर्ति परीक्षण।

एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक परीक्षण जिसमें परिक्षार्थी के समक्ष सम्बद्ध अथवा असम्बद्ध ऐसे अधूरे वाक्य उपस्थापित किए जाते हैं जिनमें से कुछ शब्दों को हटाकर उनके स्थान रिक्त रखे हुए होते हैं। परीक्षार्थी से कहा जाता है कि वह इन रिक्त स्थानों को ऐसे शब्दों द्वारा भर दे कि वाक्यों की उपयुक्त पूर्ति हो जाए। बहुधा प्रत्येक रिक्त स्थान के लिए सम्भव वैकल्पिक पूर्तियाँ भी दे दी जाती हैं। तब परीक्षार्थी को इनमें से ही सर्वोपयुक्त पूर्ति करनी होती है। इस प्रकार के परीक्षणों का उपयोग शिक्षात्मक निष्पत्ति, बुद्धि तथा व्यक्तित्व सभी के मापन में किया जाता है। व्यक्तित्व मापने में प्राय इनका प्रयोग प्रक्षेपक परीक्षणों के रूप में होता है।

Sentiment [सेन्टीमेंट] स्थायीभाव।

विचार और भावात्मक वृत्ति का समन्वय। जब किसी एक ही वस्तु, व्यक्ति या घटना के प्रति बार बार किसी एक ही प्रकार के सवेग या सवेगों का अनुभव होता है तो वे सवेग स्वभाव में स्थायित्व ग्रहण कर लेते हैं—यथा राग, द्वेष आदि। मूल प्रवृत्तियों के साथ मिलकर कभी-कभी इनका रूप और भी जटिल हो जाता है। अत अनेक सवेगात्मक वृत्तियों का

समन्वित अथवा सगठित रूप में किसी एक ही पदार्थ अथवा विचार में केन्द्रीभूत हो जाना ही स्थायीभाव कहलाता है।

स्थायीभाव अर्जित हैं। व्यक्ति में इनके विकास की तीन प्रमुख अवस्थाएँ हैं : (१) मूर्त, विशिष्ट—किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना-विशेष के प्रति व्यक्ति के संवेगात्मक झुकावों का स्थायित्व ग्रहण कर लेना (२) मूर्त, सामान्य—उस प्रकार के अथवा उसके समान सभी पदार्थों के प्रति उन्हीं संवेगात्मक झुकावों की प्रतीति, तथा (३) अमूर्त—केवल उस गुण अथवा विचार के प्रति, जिसका वह पदार्थ प्रतिनिधित्व करता था, वही प्रतीति होना। उदाहरण के लिए, एक बालक का अपने धर्म-प्रधान पिता के प्रति आकर्षण और आदर (मूर्त-विशिष्ट), आगे चलकर पिता के समान अन्य धार्मिक व्यक्तियों के प्रति आकर्षण और आदर (मूर्त-सामान्य) और अन्ततोगत्वा धर्ममात्र में उसकी विशेष रुचि का उत्पन्न हो जाना (अमूर्त)।

Set [सेट] : विन्यास।

जीव की, सापेक्ष रूप से अल्पकालिक वह अवस्था जो कि एक विशिष्ट तरह की क्रियाशीलता को सहज कर देता है। मानसिक विन्यास (Mental Set)—किसी विशिष्ट प्रकार की मानसिक क्रिया करने की प्रस्तुतता की अवस्था की ओर निर्देशित करता है। गति विन्यास (Motor Set)—किसी दी हुई पेशीय गति की प्रस्तुतता की अवस्था की ओर निर्देशित करता है। तंत्रिकीय विन्यास (Neural Set)—एक अनुक्रिया परिपथ (Response Circuit) के अनुदीपन की अल्पकालिक अवस्था की ओर निर्देश करता है। प्रस्तुतकारी गति-विन्यास शारीरिक वृत्ति या संस्थिति (Posture) की ओर, जो कि एक व्यक्ति को दूसरी प्रतिक्रियाएँ करने के लिए तैयार करता है, निर्देशित करता है।

Sex [सेक्स] : लिंग, काम।

'काम' एक जाति के अन्तर्गत प्रजनन-सम्बन्धी विभिन्नता है। स्पर्म और ओवा की उत्पत्ति के अनुसार जाति का दो भागों में विभाजन होता है। मनोगतिकी में 'काम' शब्द का प्रयोग वृहत् अर्थ में हुआ है और इसमें वे तथ्य भी निहित हैं जिनका प्रजनन से कोई भी सम्बन्ध नहीं होता। मनोविश्लेषणात्मक काम-सिद्धान्त के अनुसार बालक की सुख अनुभूति और युवक की परिपक्व कामतुष्टि में भेद नहीं होता। दोनों में साम्य होता है। मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त में सभी वृत्तियाँ कामवृत्ति में निहित हैं।

Sex Complex [सेक्स कॉम्पलेक्स] : काम-ग्रन्थि।

मनोग्रन्थि से तात्पर्य किसी भी ऐसे पूर्ण अथवा आंशिक रूप से दमित विचार या विचार-समूह से है, जिसमें न केवल अत्यधिक संवेगात्मकता पाई जाए प्रत्युत जो प्राणी की ज्ञात मान्यताओं के विपरीत भी हो। जब इस प्रकार के विचार अथवा विचार-समूह का केन्द्र-बिन्दु व्यक्ति की कामुकता अथवा लैंगिक वृत्ति रहती है तो उसे काम-ग्रन्थि कहते हैं। अन्य ग्रन्थियों के समान काम-ग्रन्थि भी निरपेक्ष रूप में व्यक्ति के चेतन व्यवहार को अचेतन रूप से प्रभावित करती रहती है। परन्तु व्यक्ति प्रकाश्य रूप में अपने इस व्यवहार को अन्यान्य कारणों की ही उपज मानता है। यथा—किसी स्त्री में अपने अज्ञात मन में पति के प्रति घोर घृणा की ग्रन्थि का उसके किसी सोहाग-चिह्न के बार-बार खो जाने के रूप में प्रकट होना।

काम-ग्रन्थि की महत्ता और विशद विवरण का दिग्दर्शन, व्यवहार और व्यक्तित्व के प्रसंग में, फ्रायड के ग्रन्थों में मिलता है।

Shape Constancy [शेप कॉन्सटेन्सी]: आकृति-स्थैर्यता।

वह तथ्य जिसमें कि वस्तु की आकृति भिन्न-भिन्न दृष्टि-सम्बन्धी स्थानों को रेखागणित के अनुसार बदल-बदलकर देखने पर भी, वही रहता है। दृष्टिपटल

पर, एक मेज की आकृति का दृक् प्रक्षेपण (Optical projection) चित्र देखने के स्थान के परिवर्तन के साथ साथ बदलता रहता है किन्तु मेज हमेशा आयताकार दिखती है चाहे दृष्टिपटल पर प्रतिमा का प्रक्षेपण चित्र चतुर्भुज रूप मे ही क्यो न हो।

Shock Therapy [शॉक थेरेपी] प्रघात चिकित्सा।

मानसिक रोग के उपचार की एक विधि। इसके अन्तर्गत मेट्रोजाल, इन्सुलिन और विद्युत् का प्रयोग होता है। मेडूना (१९२८) ने मेट्रोज़ाल, वियाना के साकल (१९४०) ने इन्सुलिन, और बर्क विट्ज (१९४०) ने विद्युत् आघात (E S T) का अन्वेषण किया। इन सबका प्रभाव मस्तिष्क पर पडता है और सम्भव है कि इससे व्यक्ति पुन सन्तुलित प्रतिक्रियाएँ करना प्रारम्भ करे। सविभ्रम (Paranoia), अकाल-मनोभ्रश (Dementia Praecox), अप विकासात्मक विषाद (Involutional Melancholia) और उन्माद-अवसाद पागलपन (Manic Depressive insanity) मे मनोचिकित्सकों ने उपचार की इस विधि का विशेषत प्रयोग किया है।

Sigma [सिगमा] सिगमा।

यूनानी भाषा का एक अक्षर। मनोविज्ञान मे सांख्यिकीय क्रियाओ मे इसके छोटे अथवा बड दोनो रूप व्यवहार म आते हैं। बडे सिगमा की आकृति Σ है। यह किसी परिवर्त्य के विभिन्न मानों के योग का चिह्न होता है। छोटे सिगमा की आकृति σ है। यह किसी माप वितरण के मानक विचलन का चिह्न है। इस रूप म और मानक विचलन ही के अर्थ में यह मापो को उपयोगी व्युत्पन्न रूप देने के लिए नई इकाई का भी काम देता है। ऐसी परिस्थिति मे परीक्षण से प्राप्त अक मे से मध्यमान घटाकर शेष को ज्ञात किये गए मानक विचलन से भाग करते हैं और भजनफल को सिगमा अक कहा जाता है।

Sign-Gestalt [साइन-गेस्टाल्ट] सकेत-गेस्टाल्ट।

वह बोधात्मक सिद्धान्त जिसमे किसी विषय पर पूर्णांक रूप से विचार किया गया है, आशिक रूप से नही। यह उद्दीपन-अनुक्रिया सिद्धान्त से भिन्न है जिसमे यात्रिक शिक्षण प्रक्रिया मात्र की ओर सकेत रहता है। जिस विधि से पूर्ण स्थिति का प्रत्यक्षात्मक सघटन होता है वह ऐन्द्रिक क्रियात्मक प्रक्रियाओ से अधिक महत्त्व की होती है।

सकेत गेस्टाल्ट प्रत्याशावोधात्मक नक्शे हैं और ये प्रयोगशाला मे बनते हैं। उदाहरणार्थ, चूहे का व्यूह द्वारा अभ्यसन। अन्ध रास्ते मे प्रवेश करने का कोई महत्त्व नही होती। पुरस्कृत होना बोधात्मक दृष्टि से महत्त्वशील क्रिया होती है। इसी से टाल्मैन और उनके अन्य सहयोगियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि शिक्षण-प्रक्रिया की केन्द्रीय तथा बोधात्मक अवस्थाएँ प्रमुख महत्त्व की होती हैं।

टालमैन ने तीन प्रमुख आधारभूत सिद्धात बतलाए हैं

(१) अवयव सकेत—गेस्टाल्ट प्रत्याशा के लिए ठीक अवस्था म हो और इस स्थिति मे कि वह अपने अतीत की अनुभूतियों से लाभ उठा सके।

(२) अवयव का परिस्थितियों मे पारस्परिक सम्बन्ध देखने और उनमे सघटन स्थापित करने अथवा बोधात्मक नक्शा बनाने के योग्य होना।

(३) अवयव मे बोधात्मक नक्शा सघटन करने के लिए उपयुक्त लचीलापन का होना, अन्यथा जटिल समस्याओ को सीखने के योग्य अवयव नही रहेगा। उसकी अवस्था कुण्ठित सी रहेगी।

कोहलर ने सीखने के चार आधारभूत सिद्धान्त दिए हैं जो गेस्टाल्ट सिद्धान्त म मिलते हैं। स्मृति छाप और वर्तमान वरि स्थिति की प्रत्यक्षात्मक व्यवस्था का प्रभाव सघटन (organization) पर पडता है और इसके आधार हैं—

(१) सादृश्य सिद्धान्त

(२) सामीप्य सिद्धान्त
(३) सवरण सिद्धान्त
(४) पूर्णता सिद्धान्त

Similarity Law of [सिमिलैरिटी लॉ ऑफ] : सादृश्यता नियम ।

(अरस्तू) साहचर्य का एक प्रमुख नियम जिसके अनुसार वे अनुभूतियाँ जिनमे समानता है, हमारे मानसिक जगत् मे साथ-साथ रहती हैं और उनमे से एक की उपस्थिति दूसरी सदृश अनुभूतियों की स्मृति दिला देती है । यथा—चन्द्रमा को देखकर किसी के चन्द्रमुख की स्मृति ।

Situationism [सिचुएशनिज्म] : परिवेशवाद ।

क्षेत्र-सिद्धान्त से कुछ भिन्न, समाजशास्त्र का एक दृष्टिकोण, जिसके अनुसार, व्यक्ति या समूह का व्यवहार वस्तुस्थिति के द्वारा निर्दिष्ट होता है । यह ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भिन्न है क्योंकि वह भूतकालीन तत्त्वों पर अधिक जोर डालता है तथा अन्य दृष्टिकोणों से भी, जो कि वैयक्तिक तत्वों पर अधिक जोर डालते हैं, भिन्न है । परिवेशवाद में वस्तुस्थिति पर, न कि वैयक्तिक तत्वों पर बल दिया गया है ।

Size-Constancy [साइज कॉन्सटेन्सी] : आकार-स्थैर्यता ।

वह तथ्य, जिसमें देखने की परिवर्तित दशाओं में भी, वस्तु या पदार्थ अपना वही प्रकट आकार धारण किए रहता है । वस्तु या व्यक्ति को भिन्न-भिन्न दूरी से देखने पर भी, उनका आकार बदलता नहीं मालूम पड़ता है । इस तरह से, यदि एक युवक को सौ गज की दूरी से भी देखा जाए, तो भी वह छः फीट के करीब लम्बा लगता है ।

Size-Weight-Illusion [साइज-वेट-इल्युजन] : आकार-भार-भ्रम ।

एक मनोभौतिक (Psycho-physics) प्रयोग, जिसमे भिन्न-भिन्न मात्राओं के भार, एक ही आकार, नाप व आकृति की छोटी-छोटी डिब्बियों मे रखे जाते हैं अथवा इसके विपरीत, एक ही मात्रा के भार, भिन्न-भिन्न आकार वाली छोटी-छोटी डिब्बियों मे अलग-अलग रखे जाते हैं । प्रत्यक्षदर्शी या परीक्षार्थी को भ्रम होता है, जबकि वह भार को डिब्बी के आकार पर आधारित करके अथवा आकार को भार पर आधारित करके निर्णय देता है ।

Skewness [स्क्यूनेस] : वैषम्य ।

किसी माप-वितरण मे प्रसामान्यता अर्थात् सममितता का अभाव । अर्थात् माध्य के दोनों ओर की माप सख्याओं मे असमानता । यदि अधिकांश माप माध्य के बाईं ओर पड़ते हैं और परिणामस्वरूप वितरण वक्र मे दाईं ओर पतली लम्बी चोंच निकल आती है तो इसे धन वैषम्य कहते हैं । और यदि अधिकांश माप माध्य के दाईं ओर पडते हैं और वितरण वक्र में बाईं ओर पतली लम्बी चोंच निकल आती है तो इसे ऋण वैषम्य कहा जाता है । विषम वितरणों मे माध्य वितरण वक्र के शिखर से चोंचीले अर्थात् विषम सिरे की ओर खिंच जाता है । वितरण वैषम्य के मापने के लिए दो सूत्र प्रचलित हैं—

$$\text{वैषम्य} = \frac{३\ (\text{माध्य} - \text{माध्यिका})}{\text{मानक विचलन}}$$

और

$$\text{वैषम्य} = \frac{(९०\text{वाँ शतमक} + १०\text{वाँ शतमक})}{२} - ५०\text{वाँ शतमक}$$

जब वितरण मे धन वैषम्य होता है, तृतीय चतुर्थक और द्वितीय चतुर्थक का अन्तर द्वितीय चतुर्थक और प्रथम चतुर्थक के अन्तर से बडा होता है । ऋण वैषम्य की अवस्था में द्वितीय चतुर्थक और प्रथम चतुर्थक का अन्तर तृतीय चतुर्थक और

द्वितीय चतुर्थक के अन्तर से बड़ा हो जाता है। वैषम्य के अभाव मे अर्थात् समानित वितरण की अवस्था मे यह दोनो अन्तर समान हुआ करते हैं।

माप वितरणो मे वैषम्य के प्रमुख कारण तीन हैं—

(१) प्रतिचयन का दोषयुक्त चुनाव,
(२) अनुपयुक्त अथवा निर्माण दोष युक्त परीक्षणो का उपयोग तथा,
(३) विषम वितरण गुणो का मापन।

Skinner's Box [स्किनर बॉक्स] स्किनर बॉक्स।

सामान्यत सीखने के प्रयोगो मे पशुओ के लिए उपयोग किया जाने वाला यन्त्र-रूप मे एक बक्स या बक्सनुमा खाना, जो कि इस तरह बना होता है कि केवल सही क्रिया करने पर ही उसे या तो बक्स के अन्दर से भागने का रास्ता मिल जाता है अथवा भोजन या भिन्न लिंगी के मिलने के रूप मे कोई पुरस्कार मिल जाता है। इस तरह की तरकीब या तो एक लिवर या एक बटन या एक कुण्डी या एक कड़ी होती है जिसको उपाय द्वारा दबाने या खोलने पर पुरस्कार मिलता है, या बक्स से मुक्ति मिलती है।

Sleep Therapy [स्लीप थेरेपी] निद्रोपचार।

एक प्रकार की मानसिक चिकित्सा। कुछ मानसिक रोगो मे रासायनिक द्रव्यो द्वारा रोगी मे अस्वाभाविक रूप से निद्रा उत्पन्न की जाती है और उसे इस अवस्था मे रखकर उसकी विकृत अवस्था का उपचार किया जाता है। सोडियम अमोटल का प्रयोग अधिकाश प्रचलित है। यह एक प्रकार का नशा है और इसके द्वारा रोगी हफ्तों निद्रा मे पड़ा रहता है। बड़ी कठिनाई से वह स्नान और भोजन के लिए जगाया जाता है। इस विधि का प्रयोग उत्साह विषाद पागलपन (Manic Depressive insanity) मे विशेष रूप से होता है और उसमे यह सफल भी होती है। इसमे रोगी की देखभाल आवश्यक है, नहीं तो हानिप्रद प्रभाव पड़ता है।

Sociability [सोशिएबिलिटी] सामाजिकता मिलनशीलता।

समूह मे बँधने का या समूह से बाँधा जाने का एक तरीका। विभिन्न प्रकार की परस्पर अन्योन्याश्रिता 'स्व' अथवा 'अह' 'वह', 'वे' और विभिन्न प्रकार का 'हम' से आशिक मिश्रण, सामाजिकता के प्रकारो का दृष्टात हैं। मनोविज्ञान मे सामाजिकता शब्द का प्रयोग इस प्रसग मे भी किया गया है कि व्यक्ति मे सामूहिक जीवन में बँधने की कितनी योग्यता है।

Social Attitude [सोशल एटिट्यूड] सामाजिक अभिवृत्ति।

वह अभिवृत्ति जो सचारित हो अर्थात् दूसरे के साथ भोगी जाए या समाज के लिए लाभप्रद हो। यह व्यक्तिगत रुचि से परे है दृष्टान्त स्वरूप यदि एक सैनिक वैयक्तिक विचारो को त्यज समाज-कल्याण का भाव ही प्रसारित करता है तो उसकी अभिवृत्ति सामाजिक मानी जाएगी। अर्थात् सामाजिक वृत्ति के द्वारा सामाजिक तथ्यो और विषयो के प्रति जो मनोवृत्तियाँ हैं उनका सदेश मिलता है। इससे व्यक्तियो के एक समुदाय द्वारा पोषित वृत्तियो का भी सदेश मिलता है। अभिवृत्ति मनुष्यो की वस्तुओ के कुछ वर्गों—श्रेणी के प्रति तत्परता की एक ऐसी मानसिक या तत्रिकीय अवस्था है जो कि उन वस्तुओ के वास्तविक स्वरूप पर नही आधारित होती बल्कि वे जैसी दृष्टिगत होती हों। इस तत्परता का वस्तुओ से सम्बन्धित अनुभूतियों और क्रियाओ पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

Social Climate [सोशल क्लाइमेट] सामाजिक वातावरण।

किसी भी समुदाय या समाज मे प्रचलित उन मनोवैज्ञानिक ढगो और रूढियो को कहते हैं जिनमे कि मनोवैज्ञानिको की रुचि होती है।

मनोवैज्ञानिक वातावरण (psychological climate) व्यापक अर्थ में किसी भी व्यक्ति के वातावरण में प्रचलित मनोवैज्ञानिक विशिष्टताओं को कहते हैं।

देखिए—Field Theory.

Social Distance [सोशल डिस्टेंस] : सामाजिक अन्तर।

वह दूरी जो कोई व्यक्ति अपने परस्पर सामाजिक सम्बन्धों में अन्य विशिष्ट प्रकार के व्यक्तियों से बरते अथवा बरतना चाहते हैं। इस अन्तर को अन्तर्जातीय मनोभावों एवं पूर्वाग्रहों का महत्वपूर्ण लक्षण समझा जाता है। इसकी पहचान यह जानकर की जाती है कि वह व्यक्ति उन अन्य विशिष्ट प्रकार के व्यक्तियों के साथ किस प्रकार का अर्थात् कितना घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए तैयार है। किसी जाति के व्यक्तियों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने को तैयार होना उस जाति से न्यूनतम अंतर का चिह्न समझा गया है। किसी वर्ग के व्यक्तियों को अपने देश से निकालना चाहना, अथवा यह चाहना कि कोई उन्हें गोली से उड़ा दे, अधिकतम अन्तर का चिह्न समझा जाएगा। इस प्रकार की सामाजिक अन्तर के आधार पर किसी जाति के प्रति भिन्न-भिन्न जातियों के मनोभावों की परस्पर तुलना की जा सकती है। और किसी एक ही व्यक्ति के विभिन्न जातियों के प्रति मनोभावों की परस्पर तुलना करना भी सम्भव हो जाता है।

Social Field [सोशल फील्ड] : सामाजिक क्षेत्र।

सामाजिक तथ्यों या वस्तुओं के रूप में बने हुए सन्दर्भों की एक मनोवैज्ञानिक रचना, जिसका सामाजिक व्यवहारों को समझने के लिए प्रयोग किया जाता है। सामाजिक क्षेत्र लोगों से भरा-पूरा क्षेत्र है और व्यक्ति के दूसरे लोगों से प्रभावित व्यवहारों की ओर संकेत करता है।

Social Heredity [सोशल हेरेडिटी] : सामाजिक आनुवंशिकता।

वस्तुएँ, विचारों या पीढ़ी-दर-पीढ़ी रस्मों, विश्वासों, अन्धविश्वासों आदि सामाजिक संस्थाओं जैसे सामाजिक मार्गों और व्यक्तियों द्वारा संक्रमण होना।

यह जैविक आनुवंशिकता (Biological heredity) से भिन्न है। जैविक आनुवंशिकता में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जनन-कोशिका (Germ Cells) द्वारा संक्रमण होता है।

Social Interaction [सोशल इन्टरएक्शन] सामाजिक अन्योन्यक्रिया।

दो इकाइयों अथवा व्यक्तियों के बीच पारस्परिक आदान-प्रदान का सम्बन्ध जिसमें उनके व्यवहार, उनकी अनुभूतियाँ एक-दूसरे के व्यवहार एवं अनुभूतियों को प्रभावित, नियमित एवं नियंत्रित करती हैं, अन्योन्यक्रिया सम्बन्ध कहलाता है। समूह विशेष के सभी व्यक्तियों के बीच पाया जाने वाला इस प्रकार का सम्बन्ध सामाजिक अन्योन्यक्रिया सम्बन्ध कहलाता है—जैसे किसी टीम के खिलाड़ियों का पारस्परिक सम्बन्ध।

सामाजिक अन्योन्यक्रिया प्रायः निम्न रूपों में व्यक्त होती है : सहयोग, प्रतियोगिता, संघर्ष, समझौता एवं आत्मीकरण। सामाजिक अन्योन्यक्रिया के लिए निम्न तत्वों की आवश्यकता है : १. लोग एक-दूसरे के सन्निकट हों। २. वे अभियोजित करने के लिए तत्पर हों। ३. उनमें भावों के पारस्परिक आदान-प्रदान की क्षमता हो। ४ उनका एक निर्दिष्ट लक्ष्य हो। ५. उनमें शारीरिक सामर्थ्य हो एवं, ६. वातावरण अनुकूल हो।

Social Intelligence [सोशल इन्टेलिजेन्स] : सामाजिक बुद्धि।

जिस प्रकार सामान्य बुद्धि का अनुमान लगाने के लिए अनेक परीक्षाएँ हैं, उसी प्रकार कुछ ऐसी परीक्षाएँ भी हैं जिनसे सामाजिक बुद्धि का अनुमान लग जाता है। मौस ने सामाजिक बुद्धि के माप के लिए कुछ परीक्षाएँ निकाली हैं। मौस का निष्कर्ष रहा कि—

(क) सामाजिक बुद्धि और सामान्य बुद्धि में सम्बन्ध होता है। जिस व्यक्ति की सामान्य बुद्धि अधिक होती है, उसकी सामाजिक बुद्धि भी अधिक होती है।

(ख) जिस व्यक्ति में सामाजिक बुद्धि अधिक है, वह बहिर पाठ्य चेष्टा में अधिक भाग लेता है। अधिकतर वह बहिर्मुखी होता है।

Social Maturity [सोशल मैचुरिटी] सामाजिक परिपक्वता।

व्यक्तिगत स्वतन्त्रता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के उपयोग की विकसित व्यवहारिक योग्यता। इसकी धारणा के स्पष्टीकरण तथा इसके मापन के लिए परीक्षण निर्माण का प्रथम श्रेय ऐडगर ए डोल को है। डोल द्वारा निर्मित 'वाइनलैण्ड सामाजिक परिपक्वता मापनी' में विभिन्न आयु स्तरों पर सामाजिक कौशल के मानकों को चित्रों और उनके साथ भावात्मक वर्णनों के रूप में श्रेणीबद्ध किया गया है। एक मास से २५ वर्ष तक के आयु-स्तरों में वर्गीकृत कुल ११७ पद प्रस्तुत किए गए हैं। इस मापनी पर किसी व्यक्ति का अंक आयुमान के रूप में प्राप्त होता है। प्राप्त अंक को सामाजिक आयु कहते हैं। *व्यक्ति द्वारा प्राप्त* सामाजिक आयु को उसकी वर्षक्रम आयु से भाग तथा १०० से गुणा करके उसकी सामाजिक लब्धि (Social quotient) ज्ञात कर ली जाती है।

Social Mind [सोशल माइन्ड] सामाजिक मन।

एक धारणा जिसका प्रयोग समाज वैज्ञानिकों द्वारा सामाजिक समूह की मानसिक एकता अथवा मानव के विशिष्ट समूह के सामूहिक मानसिक जीवन के लिए किया गया है। सामाजिक मन सिद्धान्त के अनुसार व्यक्तिगत मन के संवेदन, प्रत्यक्षण, अनुभूतियाँ, प्रवृत्तियाँ, कार्य आदि सामाजिक समूह के व्यक्तियों के संवेदनों आदि से मिश्रित होते हैं। इस प्रकार एक सामाजिक मन होता है जिसकी कुछ अनुभूतियाँ, प्रवृत्तियाँ एवं व्यवहारिक क्रियाएँ ऐसी होती हैं जो समाज के व्यक्तियों की व्यक्तिगत अनुभूतियाँ प्रवृत्तियाँ अथवा व्यवहारिक क्रियाएँ नहीं कही जा सकती हैं, और न उन पर निर्भर मानी जा सकती हैं। इस धारणा के अनुसार व्यक्ति के मन के ऊपर अपेक्षाकृत उच्चतर स्तर पर एक सामाजिक मन होता है, यद्यपि सामाजिक मस्तिष्क नहीं होता। जब सामाजिक मन क्रियाशील होता है, समाज के अन्दर के व्यक्तियों का व्यक्तिगत मन जैसे स्थगित हो जाता है, और व्यक्ति समाज के ही अनुसरण के लिए अपने को बाध्य समझने लगते हैं। यह धारणा आधुनिक मनोवैज्ञानिकों को स्वीकृत नहीं है और वे इसे केवल संस्कृति का आभ्यन्तरिक और मानसिक पक्ष में विवरण मात्र मानते हैं।

Social Norm [सोशल नार्म] सामाजिक मानक।

वह व्यवहार प्रकार जिसका समाज के व्यक्ति न्यूनाधिक मात्रा में अनुसरण करते हुए पाए जाएँ। प्रायः यह मानक समाज के ही व्यक्तियों के पूर्व व्यवहार द्वारा स्थापित हुए होते हैं। कभी कभी यह *समाज के अन्दर या बाहर कहीं से प्राप्त* सुझावों के आधार पर भी बन जाते हैं। यह मानक आधार अर्थात गत्यात्मक व्यवहार के क्षेत्र में तो होते ही हैं, कुछ अर्वाचीन प्रयोगों द्वारा यह प्रायः तथ्यात्मक समझे जाने वाले संवेदनात्मक व्यवहार में भी पाए गए हैं। एक प्रयोग में कुछ प्रयोज्यों को अलग अलग बैठाने पर उनके सामने अंधेरे में प्रस्तुत, वास्तव में स्थिर, प्रकाश बड़ी अलग अलग दूरियों तक चलता हुआ दिखाई दिया। परन्तु जब उन प्रयोज्यों को एक साथ बिठा दिया गया, जिसमें वह एक दूसरे द्वारा बताया गया प्रकाश गति की दूरी का अनुमान सुन सकें, तब उनकी बताई हुई दूरियों के अन्तर बहुत कम हो गये,

और दूरियाँ अपने ही मध्यक के बहुत समीप आ गई। यह नवीन सामाजिक स्थिति से उत्पन्न मान का प्रभाव माना गया। और यह प्रभाव प्रयोज्यों को फिर अलग-अलग कर देने पर भी बना रहा।

Social Perception [सोशल परसेप्शन] : सामाजिक प्रत्यक्षण।

इस पद को दो तथ्यों की ओर संकेत करने के लिए प्रयोग किया गया है। एक तो प्रत्यक्षण पर सामाजिक तत्वों का प्रभाव, जैसे सामुदायिक शक्तियाँ, दूसरा सामाजिक तथ्यों का ज्ञान जैसे मनोभाव और रूढ़ धारणाएँ (Stereotypes) आदि।

Social Process [सोशल प्रोसेस] : सामाजिक प्रक्रिया।

कोई भी परिवर्तन या क्रिया-प्रतिक्रिया जिसमें द्रष्टा को एक नियमित गुण दिखलाई पड़ता है अथवा मनोवृत्ति जिसे जाति की संज्ञा दी जा सकती है। सामाजिक परिवर्तनों का एक वर्ग या प्रतिक्रियाएँ जिनमें एक सामान्य नक्शा देखा जा सके या नामकरण हो। जैसे अनुकरण, मिश्रण, संघर्ष, सामाजिक प्रतिबन्ध, स्तरकरण। कोई भी सामाजिक प्रक्रिया स्वयं उत्कृष्ट और निम्न नहीं होती; यह परिस्थितिजन्य होता है। आन्तरिक मूल्यांकनों के प्रसंग में यह निश्चित-निर्धारित होता है। सामाजिक प्रक्रियाएँ अन्य प्रक्रियाओं की तरह संरचना का परिवर्तन है; सामाजिक संरचना अन्य संरचनाओं की तरह सापेक्ष रूप से स्थायी है। प्रत्येक सामाजिक प्रक्रिया के चार या पाँच रूप होते हैं: (१) अन्तर्वैयक्तिगत—जब क्रिया-प्रतिक्रिया व्यक्तित्व के विभिन्न स्व अथवा व्यक्तित्व के भाव-ग्रन्थियों के बीच घटना है, (२) व्यक्ति-व्यक्ति का सम्बन्ध, (३) व्यक्ति और समूह का सम्बन्ध, (४) समूह और व्यक्ति का सम्बन्ध और (५) समूह और समूह का सम्बन्ध।

Social Quotient [सोशल कोशेन्ट] : सामाजिक लब्धि।

इससे सामाजिक योग्यता-परिपक्वता का सही-सही ज्ञान हो जाता है : यह कि उस व्यक्ति-विशेष की रुचि अन्य व्यक्तियों में है और उसकी प्रतिक्रियाएँ और व्यवहार सामाजिक श्रेणी की हैं। जिस व्यक्ति की सामाजिक लब्धि अधिक है वह आत्मज, दृढ़ वयस्क, सहयोगी, सभी व्यक्तियों के प्रति व्यवहार में कुशल रहता है। इसका अभाव विकृत मानसिक अवस्था का चिह्न है।

सामाजिक लब्धि का माप डोल या इनलैंड की 'सामाजिक परिपक्वता-मापनी' से भलीभाँति किया जा सकता है।

Social Psychology [सोशल साइकॉलोजी] : समाज-मनोविज्ञान।

व्यक्ति की मानसिक प्रक्रियाओं का, एक सामाजिक प्राणी के रूप में, वैज्ञानिक अध्ययन—सामाजिक समूह के विकास की पृष्ठभूमि में उपस्थित मनोवैज्ञानिक अवस्थाएँ, अथवा मानसिक जीवन जो सामाजिक संघटन, संस्थाओं और संस्कृति में व्यक्त है और व्यक्ति के विकास का अध्ययन है। सारांशतः समाज-मनोविज्ञान में सभी समस्याएँ निहित हैं जिनके व्यक्तिगत और सामाजिक पहलू होते हैं।

समाज-मनोविज्ञान की नींव बीसवीं शताब्दी में पड़ी है। इसमें तीन प्रमुख दृष्टिकोणों से विकास हुआ है :

(१) वैज्ञानिक पद्धतियों और युक्तियों का प्रयोग।

(२) आवश्यक दृष्टिकोण या विकास। प्रारम्भ में अन्वेषकों की धारणाएँ जातीय केन्द्रीयता से रँगी रहती थीं। अब पूर्व-धारणाओं से मुक्त रूप में समस्याओं पर विचार और अन्वेषण होता है।

(३) सामाजिक व्यवहार का पारस्परिक क्रिया-प्रतिक्रिया के प्रसंग में अध्ययन। अथवा सामाजिक व्यवहार के प्रसंग में व्यक्ति और समूह में से एक को चुनौती नहीं दी गई है।

Sociogram [सोशियोग्राम] : समाज-आलेख।

समाजमिति में बनाया जाने वाला किसी

समूह के व्यक्तियों के परस्पर स्वीकृति-अस्वीकृति आकर्षण विकर्षण के भावों का लेखाचित्र।

Sociology [सोशिऑलोजी] समाज-विज्ञान।

वह विज्ञान जिसमे सामाजिक संगठन के विकास और नियम सिद्धान्तों का अध्ययन होता है। समाज विज्ञान के अनुसार समूह व्यवहार समूह मे व्यक्ति के व्यवहार से सामान्यतः भिन्न होता है। मनोविज्ञान के करीब-करीब सभी क्षेत्रों मे समाज समूह-सम्बन्धित विभिन्न तत्वों की महत्ता दर्शायी गई है। कुछ ने सम्बन्ध पर जैसे सामाजिक अन्योन्यक्रिया (Social interaction) साहचर्य इत्यादि पर बल दिया है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तियों के इस सम्बन्ध के प्रसंग मे व्यक्ति के ओहदों क्रिया व्यापार इत्यादि का विवरण दिया है। मनोविज्ञान एक विज्ञान है, यह विवादास्पद है, समाज-विज्ञान के अध्ययन की विधियाँ पूर्णतः वैज्ञानिक हैं और इसके सामान्य निष्कर्ष विस्तारित प्रत्यक्षण और समूह-व्यवहार की बारम्बार एकल्पना के विश्लेषण के आधार पर बने हैं।

Sociometry [सोशिओमेट्री] समाज-मिति।

मोरेनो द्वारा प्रतिपादित एक धारणा—परस्पर सम्बन्धों के अध्ययन की एक विधि। इसका मुख्य लक्ष्य व्यक्तियों के बीच स्वीकृति-अस्वीकृति अथवा आकर्षण-विकर्षण के भावों का अनुसन्धान करके उनके आधार पर अनुमानित स्वाभाविक समूहनों की वैज्ञानिक समूह रचना से सगति-असगति देखना होता है। इस विधि मे समूह के प्रत्येक व्यक्ति से गुप्त रूप से यह बतलाने को कहा जाता है कि उसे समूह के कौनसे अन्य व्यक्ति भले लगते हैं, उसे किस के साथ काम करना, भोजन करना या रहना अच्छा लगता है। और कौन उसे अच्छे नहीं लगते, वह किन से अलग रहना चाहता है। इस प्रकार एकत्रित प्रदत्तों को एक सामाजिक आलेख मे सकलित कर लिया जाता है। इस प्रकार के प्राय सभी लेखाचित्रों मे कुछ व्यक्ति अकेले पड़ गये मिलते हैं, जो समूह मे किसी को स्वीकृत नहीं। कुछ जोड़ मिलते हैं जो परस्पर एक दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं। कुछ तीन-तीन व्यक्तियों के त्रिकोण मिलते हैं जिसमे एक दूसरे की ओर, दूसरा तीसरे की ओर और तीसरा पहले की ओर आकर्षित होता है। कुछ सितारे भी होते हैं—यह वह व्यक्ति हैं जिनकी ओर अनेक व्यक्ति आकर्षित होते हैं।

Somatic Disorder [सोमैटिक डिस्आर्डर] कायिक विकार।

काया-सम्बन्धी और कायाजन्य विकार। अपसामान्य मनोविज्ञान मे मानसिक रोगों की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे दो प्रधान दृष्टिकोण हैं—कायाजन्य और मनोजन्य।

कायिक प्रक्रियाएँ (Somatic Functions)—कायिक नाड़ियों से सम्बद्ध संवेदन तथा पेशीय सकुचन की प्रक्रियाएँ।

कायिक मनोविक्षिप्ति (Somatopsychosis)—एक प्रकार की मनोविक्षिप्ति जिसमे रोगी को अपने शरीर के ढाँचे अथवा उसकी किसी स्थिति विशेष के सम्बन्ध मे किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न हो जाता है।

Somatotype [सोमैटोटाइप] कायिक रूप, देहाकृति।

शरीर के प्रकार का पर्यायवाची। शारीरिक आकृति की बनावट के आधार पर व्यक्तियों का वर्गीकरण होना। सामान्यतः कुछ मानसिक विशिष्टताओं की इन ऐसे वर्गीकरण से सम्बन्धित होने की कल्पना की जाती है।

Somesthesia [सोमेसथेसिया] बोधनभाव, तनुभाव।

आन्तरिक अथवा बाह्य स्पर्श संवेदन। स्पर्श, तापक्रम आदि सम्बन्धी अत्यधिक हीन तीव्रता वाली उत्तेजनाओं के फलस्वरूप उत्पन्न अनिश्चित संवेदन।

Somnambulism [सोमनैम्बुलिज्म] : निद्रा भ्रमण।

(जैसे १८८६) मनोविच्छेद का एक लक्षण। निद्रा-भ्रमण प्रमुखतः हिस्टीरिया का लक्षण है। यह निद्रा में अचेतनावस्था में इधर-उधर विचरना, जाग्रत व्यक्ति की तरह कुछ कार्य संपादन करना और तब भी किसी घटना की चेतना का न रहना है। इसका उपयुक्त दृष्टान्त शेक्सपियर के नाटक 'मैकबेथ' में मिलता है। लेडी मैकबेथ का एक विशेष अदा के साथ बिस्तर से उठना, नाइट गाउन बदलना, ड्रावर से कागज़ निकालकर उस पर कुछ लिखना और फिर ड्रावर में रख देना और फिर भी इन सबकी चेतना का न रहना निद्रा-भ्रमण का उदाहरण है।

निद्रा-भ्रमण का सम्बन्ध अचेतन मन से होता है। इस अवस्था का विश्लेषण करने पर उस व्यक्ति के अज्ञात मन का सूक्ष्म परिचय मिलता है। यह अत्यधिक दमन (Repression) का परिणाम है। जब दमित इच्छाएँ ज्ञात मन में किसी प्रकार प्रवेश नहीं कर पाती, किन्तु सक्रिय रहती हैं और स्वतन्त्र रूप से बलशाली रहती हैं तब संभव है रोगी में निद्रा विचरण के लक्षण मिलने प्रारम्भ हों।

मनोविश्लेषण में इसे दमित काम-इच्छा का प्रतीक माना गया है।

Soul [सोल] : आत्मा।

आत्मा के बारे में यह विवरण कि यह एक मानसिक सत्ता है आदिम निवासियों द्वारा स्वीकृत सिद्धान्त था। ह्यूम के अनुसार आत्मा और शरीर दो विभिन्न सत्ताएँ हैं जिनमें क्रमिक क्रिया-प्रतिक्रिया संभावित है; किन्तु अन्ततोगत्वा ये पृथक् सत्ताएँ हैं। प्राचीन रूढ़ि-मनोविज्ञान में यह विश्वास प्रचलित मिलता है कि देहावसान होने पर भी आत्मा जीवित रहती है। आदिम निवासियों में कई एक ऐसी व्यवस्थाएँ प्रचलित हैं जिनसे यह स्पष्ट है कि आत्मा शरीर को छोड़कर इधर-उधर भ्रमण करती है और पुनः शरीर में लौट आती है।

Soul Theory [सोल थियरी] : आत्म-सिद्धान्त, आत्मवाद।

इसमें मानसिक वृत्त-घटना सूक्ष्म पदार्थ या सत्ता की क्रियाओं का अभिव्यक्तिकरण माना गया है जो शरीर से पृथक् है। यह किसी-न-किसी रूप में बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक प्रचलित रहा। अब यह दार्शनिक और धार्मिक दृष्टिकोण का एक अंश मात्र माना जाता है जो वस्तुपरक विज्ञान (Positive science) की परिधि के बाहर है।

Space Perceptation [स्पेस परसेप्टेशन] . दिक्प्रत्यक्ष।

वह ढंग जिससे हमको विस्तार का बोध होता है। देश प्रत्यक्षण विस्तार के मनोविज्ञान में दूरी (Distance), दिशा (Direction), गहराई (Depth) के विभिन्न ऐन्द्रिय भूयिष्ठों (Modalities)—जैसे दृष्टि, श्रवण एवं गति आदि के संवेदन के प्रत्यक्षण की समस्याएँ निहित होती हैं।

Spatial Summation [स्पेशियल सम्मेशन] : दिक्-समाकलन।

दो स्थानों के संवेदनों का सम्मिलित प्रभाव।

Special Ability [स्पेशल एबिलिटी] : विशिष्ट योग्यता।

देखिए—Ability.

Sphygmomanometer [स्फिग्मोमैनोमीटर] : रुधिर दाबमापी।

इस यन्त्र का प्रयोग रक्तदाब और नाड़ी गति में परिवर्त्तनों का माप लेने में होता है। रक्तदाब के माप में, उत्तेजक के प्रयोग के ठीक पहले और बाद में रक्तदाब निर्धारित करने के लिए डाक्टरों द्वारा इस यंत्र का प्रयोग किया जाता है। जैसा श्वास-प्रश्वास गतिमापक यन्त्र न्युमोग्राफ में होता है, उसी प्रकार से इसमें भी रक्तदाब में परिवर्तन होने के साथ-साथ होने वाले परिवर्त्तनों को धूमित ढोल पर अंकित किया जा सकता है।

Specific nerve energies [स्पेसिफिक

नर्वं एनरजीज़] विशिष्ट तन्त्रिका ऊर्जा।

उन्नीसवीं शताब्दी का यह इन्द्रिय शरीर-विज्ञान सम्बन्धी सबसे प्रमुख सिद्धान्त है और यह मूलर द्वारा प्रतिपादित है जिन्होंने इस नियम-सिद्धान्त के अन्तर्गत इसकी रचना की है। इस सिद्धान्त का मुख्य तथ्य यह है कि हमें वस्तु की चेतना प्रत्यक्ष नहीं होती। जो वस्तुएँ प्रत्यक्ष दृष्टिगत होती हैं उनके और मन के मध्य में स्नायु (तन्त्रिका) क्रियान्वित होते हैं और उनकी विशेषताओं का प्रभाव मन पर पड़ता है। पाँच प्रकार की तन्त्रिकाएँ होती हैं और प्रत्येक के विशेष गुण का प्रभाव मन पर पड़ता है। उसी उत्तेजन की विभिन्न तन्त्रिकाओं पर उस विशेष तन्त्रिका के अनुकूल विभिन्न विशेषता उत्पन्न होती है, और विभिन्न उत्तेजन किसी तन्त्रिका पर उसके विशेष गुण के अनुकूल प्रभाव उत्पन्न करते हैं। तन्त्रिकाओं का बाह्य वस्तुओं से निश्चित सम्बन्ध बाह्य माध्यमों में उस विशेष तथ्य के होने पर ही होना है। साराश चक्षु से प्रकाश का प्रत्यक्षण होना है, दबाव का नहीं होना।

Spirit, Spiritism [स्पिरिट स्पि-रिटिज्म] चित्शक्ति, चित्शक्तिवाद।

चित्शक्ति शब्द का प्रयोग कई अर्थ में हुआ है (१) प्रारम्भ में चित्शक्ति का अर्थ था स्वदन अग्नि—अग्नि का जीवन-दायिनी और शक्तिदायिनी सिद्धांत जिसे 'न्युमेना' कहते थे। (२) चित्शक्ति का अर्थ है जो चेतन होने योग्य है और सामान्यतः वह जिसमें इच्छा और बुद्धि निहित है। (३) चित्शक्ति शब्द का प्रयोग सूक्ष्म, निराकार, आकार रहित चेतन सत्ता के रूप में भी हुआ है। इस धारणा का दार्शनिक अर्थ है।

चित्शक्तिवाद एक ऐसा सिद्धान्त जिसमें यह विश्वास प्रचलित है कि व्यक्ति और उसके पूर्वज तथा अन्य चित्शक्तियों में आदान-प्रदान होता है। इस सिद्धांत में चेतन ऐच्छिक सत्ताओं का अस्तित्व कायिक प्रकार से भिन्न माना गया है जिनका प्रतिनिधित्व पशु तथा मानव द्वारा होता है।

Spinal Cord [स्पाइनल कॉर्ड] : मेरु-रज्जु नाड़ी।

सिर से पुच्छस्थान तक प्रसारित रीढ़ की हड्डी का निर्माण करनेवाली ३२ छोटी-छोटी हड्डियों के बीच सुरक्षित कनिष्ठा उँगली के समान एक मोटी नाड़ी जो बाहर से श्वेत और भीतर से धूसरित दीख पड़ती है। धूसर भागकोश शरीर और श्वेत भाग के सूत्रों से निर्मित होता है। सिर के कुछ भाग को छोड़कर शरीर के प्रत्येक भाग से संवेदी तन्त्रिका यहीं आकर मिलती है और क्रियावाही तन्त्रिका यहीं से बाहर जाती हैं।

मेरुरज्जु के दो प्रमुख कार्य हैं : (१) तन्त्रिका आवेग का संचालन : यह शरीर के भिन्न भिन्न भागों से आने वाले आवेगों को आवश्यकतानुसार मस्तिष्क का ओर और मस्तिष्क की ओर से आने वाले आवेगों को शरीर के भिन्न-भिन्न भागों में भेजती है। (२) सहजक्रियाओं का संचालन और नियमन : मस्तिष्क और मेरुरज्जु के बीच स्थित सुषुम्ना या ही बढ़ा हुआ (लगभग १½ इंच लम्बा) तथा शेष तन्त्रिका की अपेक्षा कुछ मोटा भाग मस्तिष्क स्तम्भ या मेरुशीर्ष कहलाता है। सिर की अधिकांश तन्त्रिकाओं का सम्बन्ध मेरुशीर्ष से ही होता है। रक्त-संचालन, श्वास प्रश्वास तथा जीवन के लिए अन्य आवश्यक सहजक्रियाओं को गति देने में इसका महत्वपूर्ण स्थान है।

Spiritualism [स्पिरिचुएलिज्म] : अध्यात्मवाद।

यह सिद्धांत कि विश्व में नित्य सत्य आत्मा है जो मन से परे है, जो मानवी आत्मा की ही तरह है, किन्तु सम्पूर्ण जगत् में आधारभूत रूप में विस्तारित है। यह सम्प्रदाय वस्तुवाद का विरोधी है।

अध्यात्मवाद से आदर्शात्मक दृष्टिकोण का भी संदेश मिलता है—यह कि निरपेक्ष आत्मा और परिमित आत्माओं मात्र का अस्तित्व होता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार दृश्य-जगत् विचार-क्षेत्र मात्र है।

धर्मशास्त्र के शब्दकोश में अध्यात्मवाद की धारणा की व्याख्या के प्रसंग में विशुद्ध आत्मा के प्रत्यक्ष प्रभाव पर बल दिया गया है—विशेष रूप से सेंट जान्स के उपदेश को स्पष्ट करने के लिए कि ईश्वर-आत्मा और पूजन-आत्मा का आत्मा से आदान-प्रदान है। अध्यात्मवाद सम्प्रदाय में यह भी विश्वास प्रचलित है कि मृत की आत्मा तथा जीवित की आत्मा में आदान-प्रदान होता है और इसका माध्यम व्यक्त होता है। अन्य प्रकार के भी अभिव्यक्तीकरण होते रहते हैं। अध्यात्मवाद शब्द का प्रयोग इस अर्थ में अधिक उपयुक्त है।

देखिए—Spiritism.

S Factor (Specific Factor) [एस फैक्टर] : विशिष्ट कारक।

किसी परीक्षण-समूह के कारक-विश्लेषण में किसी परीक्षण के वह खण्ड जो केवल उसी परीक्षण के प्राप्तांक को प्रभावित करते हैं और किसी अन्य परीक्षण में विद्यमान नहीं हैं। विशिष्ट कारकों की मात्रा अथवा भार किसी परीक्षण में न्यून और किसी परीक्षण में अधिक होता है। जब किसी परीक्षण के विशिष्ट कारकों का भार अधिक होता है तब उसके अन्य परीक्षणों से सहसम्बन्ध उन परीक्षणों के आपस के सहसम्बन्धों की अपेक्षा बहुत कम होते हैं। विसलर जैसे कुछ मनोवैज्ञानिकों का यह सिद्धान्त रहा है कि प्रत्येक परीक्षण के द्वारा भिन्न गुणों का अर्थात् केवल विशिष्ट कारकों का मापन होता है। बिने तथा स्पियरमैन द्वारा प्रतिपादित सामान्य कारक (G Factor) की धारणा और थर्स्टन द्वारा प्रतिपादित बहुकारक (Multi-Factor) की धारणा इस सिद्धान्त की विरोधात्मक प्रतिक्रियाएँ हैं।

Speed Tests [स्पीड टेस्ट] : गति परीक्षण।

वह मनोवैज्ञानिक परीक्षण जिनका मुख्य उद्देश्य परीक्षित व्यक्ति की कार्य गति की परीक्षा करना होता है। इनमें परीक्षार्थियों को प्रतिक्रियाएँ करने के लिए समय को ऐसी सीमा में बाँधा जाता है कि सभी अथवा अधिकांश व्यक्ति परीक्षण में दिए गए कार्य को निर्धारित समय में पूरा न कर सकें। कार्य की अथवा सामग्री की कठिनता सम्पूर्ण परीक्षण में समान तथा नहीं के बराबर होती है, जिसका अर्थ यह है कि यदि किसी भी प्रस्तुत परीक्षार्थी को असीमित समय दिया जाय तो वह अवश्य ही आसानी के साथ पूर्णांक प्राप्त कर लेगा। टाइप, द्रुतगणन, पठन, यंत्र-चालन तथा आशुलिपि योग्यता के परीक्षण प्रायः गति परीक्षण होते हैं।

Stammering [स्टैमरिंग] : हकलाना, वाक्स्खलन।

रुक-रुककर बोलना जिसमें आवाज अवरुद्ध होती हुई-सी मालूम होती है और प्रायः शब्द बीच-बीच से टूट जाते हैं। हकलाने और तुतलाने (Lisping) की विशेषता आठ वर्ष की आयु के पूर्व मिलती है इस अवस्था के बाद भी इनका बना रहना एक विकृति है जिसका उपचार आवश्यक है। इन दोषों के तीन प्रमुख कारण हैं : (१) अंगीय दोष—मुखगह्वर तंत्र की विकृति-विशेष; (२) मानसिक अस्वस्थता—यथा अनावश्यक भय, हीनताभाव, दबाव, कठोर निषेधाज्ञाएँ तथा (३) तंत्रिकीय उद्वेग में संघर्ष।

मनोवैज्ञानिकों का ऐसा अनुमान है कि दाहिने हाथ से काम करने वालों के मस्तिष्क का बाँया भाग और बाएँ हाथ से काम करने वालों के मस्तिष्क का दायाँ भाग अधिक प्रबल होता है। वाणी-केन्द्र प्रबल भाग में ही होते हैं। ऐसी स्थिति में यदि किसी वएँ-हत्थे को दाहिने हाथ का ही उपयोग करने को विवश किया जाए तो उसके तंत्रिकीय उद्वेग में संघर्ष उत्पन्न हो जाएगा और

वाणी-केन्द्र के गड़बड़ाने से वाक्‌दोष उत्पन्न हो जाएँगे।

मानसिक अस्वस्थता तथा तन्त्रिकीय उद्वेग से उत्पन्न वाक्‌दोष मानसोपचार द्वारा दूर किए जा सकते हैं। अभिभावक यदि धैर्य, स्नेह एवं सहानुभूति के साथ बालक की वास्तविक कठिनाई को दूर करें और उचित अभ्यास के लिए प्रोत्साहन दें तो वाक्‌दोष का निवारण किया जा सकता है।

Standarization [स्टैंडेरिजेशन]: मानकीकरण।

किसी मनोवैज्ञानिक परीक्षण के उपयोग में और उसके द्वारा प्राप्त व्यक्तियों की प्रतिक्रियाओं के अंकन में एकरूपता तथा पूर्ण नियंत्रण लाने के लिए किए गए समस्त प्रबंध। इसके अंतर्गत परीक्षण के प्रत्येक पद को, परीक्षण के सम्पूर्ण रूप को, परीक्षार्थी को दिये जाने वाले आदेशों को और समय सीमाओं को, सभी परीक्षार्थियों के लिए एक-सा रखने के उद्देश्य से सम्पूर्णतया पूर्वनिश्चित कर लिया जाता है। किसी प्रकार का थोड़ा-सा परिवर्तन भी अनधिकृत समझा जाता है, चाहे वह शाब्दिक रूपांतरण, अनुवाद, पूर्वनिश्चित आदेश को अधिक स्पष्ट करने के लिए घटाव-बढ़ाव, अथवा समय-सीमाओं के विषय में थोड़ा-बहुत ढीलापन ही क्यों न हो। ऐसे ही अंकन पद्धति पूर्णरूप से इतने विस्तार से पूर्वनिर्धारित कर दी जाती है कि अंकक के लिए अपनी ओर से निर्णय करने को कुछ नहीं रह जाता। उसे केवल पूर्वनिर्धारित पद्धति का पालन करते रहना होता है। इतना ही नहीं, परीक्षार्थियों के प्राप्तांकों के अर्थ तथा महत्व समझने के लिए परीक्षण के पूर्व प्रयोगिक अनुभव के आधार पर अंकों के मानक निश्चित कर दिए जाते हैं और यह स्पष्टतया निर्णय कर लिया जाता है कि प्राप्तांकों को इन मानकों के समान अथवा उनसे कम अथवा अधिक होने से क्या निष्कर्ष निकाला जायगा।

Standard Deviation [स्टेन्डर्ड डिविएशन]: मानक विचलन।

किसी माप वितरण के फैलाव अथवा विस्तार का एक माप। यह उसके सम्पूर्ण विस्तार का लगभग छठा भाग होता है। इसे जान लेने के लिए व्यक्तिगत अंकों की माध्य से दूरियाँ ज्ञात करके उनके वर्गों के माध्य का वर्गमूल निकाल लिया जाता है। प्राप्तांकों को व्युत्पन्नांकों में बदलने के लिए एक प्रकार की इकाई के रूप में भी मानक विचलन का उपयोग होता है। प्रसामान्य अंक वितरणों में माध्य से ऊपर अथवा नीचे किसी और एक मानक विचलन तक ३४.१३ प्रतिशत, दो मानक विचलन तक ४७.७२ प्रतिशत और तीन मानक विचलन तक ४९.८७ प्रतिशत प्राप्तांक होने की सम्भावना होती है।

Statistical Technique [स्टैटिस्टिकल टेक्नीक]. सांख्यिकीय प्रविधियाँ।

मापकल रूपी प्रदत्तों से व्यावहारिक उपयोगिता पूर्ण परिगणन की तथा महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकालने की विधियाँ। मनोविज्ञान में विशेषतया उपयोगी सांख्यकीय विधियाँ यह हैं—माध्यनिर्धारण, परिवर्त्यता मापन, शतमक निश्चयन, लेखाचित्रण, प्रसामान्य वितरण वक्र का अनुप्रयोग, सहसम्बन्ध परिगणन सांख्यिकीय प्रतिफलों की विश्वस्यता की परीक्षा, प्राक्‌कल्पनाओं की जाँच, चर-विश्लेषण, दडीय मानानुमान, परीक्षण निर्माण तथा परीक्षण परीक्षा।

Sterilization [स्टरिलिजेशन]: वन्ध्यकरण जीवाणुनाशन।

शल्यक्रिया अथवा औषधोपचार द्वारा प्राणी को सन्तानोत्पत्ति के अयोग्य बनाने की प्रक्रिया। यह युक्ति ऐसे व्यक्तियों की उत्पत्ति की रोक-थाम के लिए निकाली गई है जिनमें मानसिक हीनता होने की सम्भावना है।

Stigma [स्टिगमा]: रोग-चिह्न, लाछन।

इसे हिन्दी में 'कलङ्क का धब्बा' या 'लाछन' भी कहते हैं। परन्तु यहाँ पर

यह उन विशिष्ट चिह्नों अथवा शरीर की बनावटों के लिए उपयुक्त होता है जो सामान्यतः ह्रास का चिह्न माना जाता है।

Stimulus [स्टिमुलस] : उद्दीपन।

ग्राहक से बाहर स्थित वस्तु व्यक्ति-स्थिति जो उसे उत्तेजित करती है। व्यापक अर्थ में कोई भी आन्तरिक अथवा बाह्य वस्तु या घटना — घटक का कोई भी पक्ष अथवा उसमें उत्पन्न परिवर्तन जो किसी अनुभूति को जागृत करते अथवा उसमें परिवर्तन लाते हैं।

Stimulus Error [स्टिमुलस एरर] : उद्दीपन त्रुटि।

टिचनर (१८६७-१९२७) ने इस पद का प्रयोग अन्तःप्रेक्षण के सम्बन्ध में किया है। एक प्रकार की त्रुटि जो मनोवैज्ञानिक प्रयोग मे दिये अन्तःप्रेक्षणात्मक विवरण में सम्भावित है। प्रयोज्य अनुभूति का विवरण न देकर उत्तेजन के स्वरूप-स्वभाव का विवरण देता पाया जाता है अथवा जो प्रशिक्षित नही है वे अनुभूति मे प्रेषित तथ्य का विवरण देने के स्थान पर वस्तु के बारे में विवरण देते हैं जिनसे वे उत्तेजित होते हैं। वस्तुतः प्रयोज्य को अपनी मानसिक अवस्था का विवरण देना चाहिए; यह नहीं कि वह किसके लिए क्रोधित है। वास्तविक विवरण में हुए ऐंद्रिय अथवा काइनेस्थेटिक संवेदन और उससे सम्बन्धित भावों— ऐसे तथ्यों का वर्णन मिलता है। अनुभूति और अर्थ की महत्वपूर्ण पृथकता का प्रत्याह्वान बीसवीं शताब्दी के गेस्टाल्ट मनोविज्ञान ने किया है।

Stimulus Generalization [स्टिमुलस जेनेरेलिज़ेशन] : उद्दीपन सामान्यीकरण।

(पावलाव) जब किसी उद्दीपन विशेष को अनुबन्धन (*Conditioning*) *की विधि से किसी प्रतिक्रिया-*विशेष के साथ सम्बद्ध कर दिया जाता है तो न केवल उस उद्दीपन-विशेष के प्रति बल्कि उसके समान सभी उद्दीपनों के प्रति वही प्रतिक्रिया प्रकट होने लगती है। इसी को उद्दीपन का सामान्यीकरण कहते हैं। यथा, यदि काला कम्बल ओढ़कर कोई किसी बालक को कई बार भयभीत कराए तो वह बालक न केवल उस कम्बल से बल्कि उसके समान प्रायः हर काले कपड़े से भयभीत होने लगेगा।

Stimulus Response Psychology [स्टिमुलस रेस्पॉन्स साइकॉलोजी] : उद्दीपन-अनुक्रिया मनोविज्ञान :

देखिए—Behaviorism.

Structure [स्ट्रक्चर] : संरचना।

संरचना विभिन्न भागों के जोड़ की व्यवस्था का नामकरण है। १९वीं शताब्दी मे इस शब्द का यही प्रचलित अर्थ यों जबकि मनोविज्ञान भी भौतिक विज्ञाना की तरह परमाणु (Atomism) *या* तत्त्ववादी (Elementarism) स्वरूप का था। २०वीं शताब्दी में गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने, जो तत्त्ववाद के विरोधी थे मनोविज्ञान को जिस अर्थ मे प्रयोग किया वह उन संगठित इकाई को संकेत करता है जो स्थिति एवं कार्य-विषयक अन्योन्याश्रितता के दृष्टिकोण से अनुभव की इकाइयों का निर्माण करते हैं। २०वीं शताब्दी में संरचना शब्द सम्पूर्ण व्यक्तित्व की इकाई के लिए प्रयुक्त हुआ।

देखिए—Atomisum, Elementarism.

Structuralism [स्ट्रक्चुरेलिज्म] : संरचनावाद।

(टिचनर—१८६७-१९२७) उन्नीसवीं शताब्दी में प्रायोगिक मनोविज्ञान के विकास मे व्यापक दृष्टिकोण-विशेष। संरचना शब्द का प्रयोग अंगों अथवा अवयवों की व्यवस्था और संगठन के लिए किया जाता है। संरचनावादी मनोविज्ञान का विचारबिन्दु मानसिक *अवस्थाओं और विषय-वस्तुओं की व्यवस्था* और मिश्रण है; इस सम्प्रदाय में विषय नहीं रहता। संरचनावादी मनोविज्ञान के

अध्ययन की मुख्य योजना निम्न है :

१—चेतन प्रक्रियाओं का मूल तत्त्वों में विश्लेषण

२—मूलतत्त्वों के निश्चयन की शैली

३—मूल तत्त्वों के सम्बन्धों के नियमों निश्चयन।

Stuttering [स्टटरिंग] तुतलाना।

बोलने से सम्बन्धित दोष विशेष जिसमें बालक 'त' 'ल' 'छ' आदि का बहुतायत से प्रयोग करता है यथा, हम तो तबते अत्ते (हम तो सबसे अच्छे)। मनोविश्लेषण की दृष्टि से यह संवेगात्मक असमायोजन का लक्षण है। इसका कारण शारीरिक दोष नहीं होता। कभी-कभी 'समस्या बालक' (प्रॉबलम चाइल्ड) में यह व्यवहारगत दोष भी मिलता है जो विशुद्ध संवेगात्मक अवस्था से सम्बन्धित रहता है।

देखिए—Stammering

Style of life [स्टाइल ऑफ़ लाइफ़] : जीवन शैली।

इस धारणा प्रत्यय का अन्वेषण वैयक्तिक मनोविज्ञान के प्रवर्तक अल्फ्रेड एडलर (१८७०-१९३७) ने किया है। जब बालक चार-पाँच वर्ष का रहता है तभी वस्तुत: उसके जीवन को एक मोड़ और ढंग मिलता है। और जो उसके व्यवहार और आचरण का निर्धारक रहता है। यही उसकी जीवन शैली है। यह परिवार और सामाजिक अवस्था का प्रतिफल है। प्रत्येक व्यक्ति की उसके वातावरण के अनुसार उसकी जीवन-शैली बनती है। एडलर वातावरण के पोषक थे। जो व्यक्ति उपयुक्त वातावरण के प्रभाव से बचपन में उपयुक्त जीवन शैली बना लेता है उसका व्यवहार सबद्ध होता है, व्यक्तित्व में क्रम-व्यवस्था रहती है और वह असामाजिक क्रियाएँ नहीं करता। दोष-भरी जीवन शैली होने पर प्रतिक्रियाएँ इसके विपरीत होती हैं। एडलर ने अपने ग्रन्थ में 'व्हाट लाइफ़ शुड मीन टू यू' में इसकी व्याख्या विस्तार में की है। जीवन-शैली में भेद होता है और इसका मूल कारण बचपन की विभिन्न अनुभूतियाँ हैं। जीवन शैली एक युक्ति है जिससे एक व्यक्ति दूसरे पर आधिपत्य रखता है। मानव का स्वभाव, चरित्र, व्यवहार तथा प्रतिक्रियाएँ उसके बचपन की निर्धारित जीवन शैली पर अवलम्बित होती हैं।

Subject [सब्जेक्ट] : प्रयोज्य, पात्र, विषयी।

मनोवैज्ञानिक प्रयोज्य वह व्यक्ति है जिसका निरीक्षण किया जाता है। अन्तर्निरीक्षण मनोविज्ञान (introspectionism) अन्य व्यक्ति के विवरण पर नहीं निर्भर होता। यह स्वय का ही अन्तर्निरीक्षण होता है। तात्पर्य है कि द्रष्टा और दृश्य एक ही रहता है। वह स्वय प्रयोज्य बनता है। अन्य मनोविज्ञान में 'प्रयोज्य' वह व्यक्ति है जो स्वय अनुभूति करता है अथवा वह व्यक्ति या पशु जिस पर प्रयोग किया जाता है।

Subjectivism [सब्जेक्टिविज़्म] : व्यक्तिपरतावाद, विषयीनिष्ठता, आत्मपरता।

वह सिद्धान्त जिसमें ज्ञाता के संवेदनात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक अवस्थाओं तक ज्ञान सीमित है—बाह्य सत्य मानसिक आन्तरिक अवस्थाओं से अनुमानित किया जाता है।

नैतिक व्यक्तिपरतावाद का विशेष अभिव्यक्तीकरण वेस्टरमार्क के सिद्धान्त में होता है—यह कि नैतिक निर्णय स्वीकृत और अस्वीकृत संवेगों के प्रसंग में होता है।

Sublimation [सब्लिमेशन] उदात्तीकरण।

(मनोविश्लेषण) अज्ञात मन की एक वांछनीय कार्य-पद्धति जिसके कारण कामशक्ति (Libido) ऐसी दिशा ले लेती है जो अकामुक हो, सामाजिक दृष्टि से उपयोगी हो, नैतिक हो और सांस्कृतिक और कलात्मक दृष्टि से श्रेयस्कर हो। प्रचलित अर्थ में परिमार्जन का अर्थ है—'जो निम्न है उसका उच्च में स्थानापन्न'। मनो-

विश्लेषण के अनुसार उदात्तीकरण में तीन मुख्य तथ्यों का समावेश है : (१) कामशक्ति का एकत्रीकरण, (२) एकत्रित कामशक्ति का उन्नयन, (३) उन्नत या परिमार्जित कामशक्ति का सामाजिक उपयोग। उदात्तीकरण का मुख्य प्रयोजन है कि कामशक्ति का ह्रास प्रकृत वर्ग के क्रिया-व्यापार में न होने पावे। जिस व्यक्ति ने बाल्यावस्था से ही उपयुक्त शिक्षा पाई है, उसकी कामशक्ति सहज ही अनजाने परिमार्जित हो जाती है और व्यक्ति सुसंस्कृत अर्थ करता है। इसका प्रमाण कला और धर्म है।

Successive Contrast [सक्सेसिव कॉन्ट्रास्ट] : क्रमिक-विपर्यास।

ऐन्द्रिय-उत्तेजना होने पर प्रतिकूल या विपरीत संवेदन का उभड़ना। यह सापेक्ष रूप से और इन्द्रिय-विषयक संवेदनों की अपेक्षा दृष्टि-संवेदन में अधिक निश्चित रूप से घटित होता है, जैसे विषम उत्तर प्रतिमा का तथ्य (Negative after image) विपर्यास या विरोध में मूल उद्दीपक की उपस्थिति के कारण विपरीत या प्रतिकूल विशिष्टताएँ तीव्र हो जाती हैं।

Suggestion [सजेशन] : संसूचन।

चेतनावस्था में ही रोगी को रखकर उसके रोग के निवारण का विविध उपाय सुझाना। संसूचन शब्द का प्रयोग विषम संसूचन (Hetero Suggestion) के ही प्रसंग में अधिकतर होता है। इसमें एक व्यक्ति दूसरे के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उसका आदेश ग्रहण कर लेता है। संवेगात्मक होने पर संसूचन अधिक प्रभावशाली सिद्ध होता है। किन्तु जब संसूचक का अपना आध्यात्मिक-बौद्धिक विकास नहीं हुआ करता, वह अन्य को प्रभावित नहीं कर सकता। यह विधि उन रोगियों पर सफल सिद्ध नहीं होती, जिनका अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व होता है। संसूचन कुछ मानसिक रोग के लिए उपयुक्त है; कुछ पर यह पूर्णतः असफल होता है। प्रलाप की अवस्था में रोगी को संसूचन हास्यास्पद प्रतीत होता है।

संसूचन-विधि का यह बड़ा दोष है कि इसमें बाह्य लक्षण को रोग का मूल कारण मान लिया जाता है। वस्तुतः बाह्य लक्षणों के उपचार के प्रयास का कोई सफल प्रभाव नहीं पड़ता। रोग का निवारण करने के लिए स्थिर रूप से मन के निचले स्तर में लुप्त-निहित कारणों का अन्वेषण करना है। अन्यथा मनोग्रन्थियाँ (Complexes) अछूती रह जाती हैं और उनका उन्मूलन न होने से स्थायी उपचार नहीं होता। संसूचन से रोगी पराश्रयी हो जाता है, उसकी स्वतन्त्र इच्छा, कल्पना-विचार शेष नहीं रह जाते।

Super-ego [सुपर इगो] : सुप्राहम्।

मनोविश्लेषण के पारिभाषिक कोश में इस शब्द का प्रयोग एक प्रकार से अन्तःकरण के पर्याय के रूप में हुआ है। नैतिक मन प्रायः बली होता है और व्यक्तित्व का प्रमुख निर्धारक है। इसी से मानव की समस्त क्रियाओं की आलोचना नैतिकता के आधार पर होती रहती है और व्यक्ति अनुचित कार्य करने से दूर भागता है। इसकी नीति की भावना कठिन और कठोर है। इसका प्रभुत्व इदं (Id) और अहं (Ego) दोनों पर रहता है। सुप्राहम् का विकास अहं से होता है—यह अहं की क्रियाओं का प्रतिफल है। सुप्राहम् के ही कारण व्यक्ति के आभ्यतरिक क्षेत्र में अपराध-भाव बनता है; उसे अपनी मातृ-पितृ कामेच्छा (Oedipus desire) के बारे में ज्ञान नहीं हो पाता; न यह कि उसमें अपने सगे-सम्बन्धी के प्रति उभयभाविता (Ambivalence) है, इसका ज्ञान हो पाता है। सुप्राहम् की प्रभुता अधिक होने पर प्रायः व्यक्तित्व में पूर्णतः विच्छेद हो जाता है और व्यक्ति रोग का आखेट बनता है, क्योंकि इद की प्रकृत इच्छाएँ मानव की स्वाभाविक माँग है और उनकी तुष्टि व्यक्तित्व और व्यवहार में समायोजन के लिए आवश्यक है। जब सुप्राहम् निर्बल रहता है अथवा इसकी

प्रभुत्व इद पर नहीं रहती, व्यक्ति प्रकृत इच्छा का दास बन असामाजिक क्रियाएँ सम्पादन करता है। सुपाहम् अह और इद का परस्पर समायोजन समझौता सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है।

Surplus Energy Theory [सरप्लस एनर्जी थियरी] अधिशेष ऊर्जा सिद्धात।

शिलर और स्पेन्सर द्वारा प्रतिपादित खेलने का एक सिद्धान्त। भोजन से शक्ति उत्पन्न होती है। इस शक्ति का बहुत थोडा सा अश बालक अपने दैनिक कार्यों मे व्यय कर पाता है। शेष शक्ति बच जाती है। यही बची हुई शक्ति अतिरिक्त शक्ति कहलाती है। इस सिद्धान्त के अनुसार बालक अपनी इसी 'अधिशेष शक्ति' को खेलो के माध्यम से निष्कासित करता है। जिस प्रकार इजिन के ब्वॉयलर मे भाप के रूप मे निर्मित अधिशेष शक्ति सेफ्टी बल्ब द्वारा बाहर निकलकर ब्वॉयलर को फटने से बचाती है उसी प्रकार बालक की अधिशेष शक्ति खेलो के माध्यम से अभिव्यक्त होती है और शरीर को हानि नही पहुँचा पाती।

Symbol [सिम्बल] प्रतीक।

वह वस्तु या विचार, जो किसी अन्य वस्तु या विचार का प्रतिरूप हो अथवा उसका स्थानापन्न बने। जिस मूल वस्तु या विचार इच्छा का वह प्रतीक है वह सदैव गूढ, अनिर्वचनीय, अप्राप्य और अज्ञात होता है। प्रतीक और मूल वस्तु या विचार मे अटूट सम्बन्ध होता है जिससे प्रतीक को न 'यथार्थ' वस्तु कहा जा सकता है, न अयथार्थ। प्रतीक अनेक हैं और इनसे व्यक्ति की विभिन्न प्रकृत इच्छाओ की व्यजना होती है। प्रतीक सार्वभौम हैं, प्राचीन हैं।

मनोविश्लेषण में प्रत्येक प्रतीक मनुष्य को कामवासना और उससे सम्बन्धित क्रियाओं का द्योतक माना गया है। अधिकतर काम-क्रिया तथा काम सम्बन्धी अग के ही प्रतीक मिलते हैं। हरेक प्रतीक का नियत और स्थायी अर्थ होता है। प्रकृति मे व्यक्तिगत होते हैं। फ्रायड के सिद्धान्त पर विशेष विवाद हुआ। प्रतीक का अर्थ स्थायी और नियत नही होता। प्रतीक का अर्थ उस व्यक्ति के स्वभाव, स्थिति तथा वातावरण के आधार पर ही लगाया जा सकता है। प्रतीक अव्यक्तिगत भी होते हैं। युग के शब्दो मे अव्यक्तिगत *प्रतीक सामूहिक अचेतन मन* मूल प्रारूप (Collective unconscious Archetype) के द्योतक हैं।

Symbolization [सिम्बॅलिजेशन] प्रतीकीकरण।

वह कार्य-पद्धति जिससे *अज्ञात मन की* दबी-दबाई इच्छाएँ प्रतीक (Symbol) के रूप मे प्रकट होती हैं। यह अचेतन मन की प्रमुख कार्य-पद्धति है। इस पद्धति की सहायता से अचेतन मन की सभी इच्छाएँ कैसी भी प्रकृत और वर्जित हों, भले ही रूपान्तर मे, अभिव्यक्ति पा जाती हैं। किन्तु प्रतीक रूप' उनके प्रकृत रूप' का ऐसा परिवर्तित रूप होता है कि वास्तविक स्वभाव को पहचानना असम्भव रहता है। वस्तुत प्रतीकीकरण अचेतन मन की इच्छाओ को व्यजित करने का मुख्य साधन है, अन्य कार्य-पद्धतियाँ इसमे सहयोग मात्र देती हैं। इस निष्कर्ष का प्रचुर प्रमाण 'सिम्बॅलिज्म ए साइकोलॉजिकल स्टडी' नामक ग्रथ मे मिलता है।

देखिए—Symbol

Symptomatic Acts [सिम्पटोमैटिक एक्टस] लक्षणात्मक क्रियाएँ।

कोई सरचनागत परिवर्तन अथवा व्यवहारगत विचित्रता जो विकृति की सूचक हो, 'लक्षण' कहलाती है। रोगी मे सापेक्ष अथवा निरपेक्ष रूप से रोग अथवा विकृति की सूचक क्रियाएँ लक्षणात्मक क्रियाएँ कहलाती हैं—किसी विवाहिता स्त्री का अपने बिछुए अथवा अन्य किसी सोहाग के गहने को बार-बार उतारना-पहनना पति के प्रति विरक्ति का सूचक हो सकता है। किसी व्यक्ति को पत्र

लिखना भूल जाना उस व्यक्ति के प्रति अवज्ञा के भाव का प्रदर्शन करता है। मनोविश्लेषण में इस पद का प्रयोग दैनिक क्रियाओं के प्रसंग मे एक विशेष अर्थ मे हुआ है।

Sympathetic Nervous System [सिम्पैथेटिक नर्वस सिस्टम] : अनुकंपी तंत्रिका तंत्र।

स्वायत्त अर्थात् स्वतंत्र तंत्रिका तंत्र का भाग-विशेष।
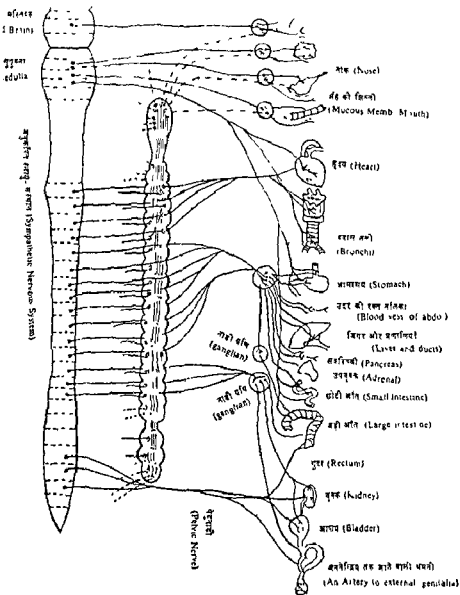
Symptomatology [सिम्पटोमेटॉलोजी]· रोग लक्षण विज्ञान, लाक्षिणिकी ।

तह मे छिपी किसी भी शारीरिक अथवा मानसिक विकृति अथवा विक्षोभ का सूचक। व्यक्ति के किसी अग-विशेष की कार्य-प्रणाली अथवा व्यवहार मे पाया जानेवाला विचलन लक्षण' कहलाता है। लक्षणो का क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित अन्वेषण करने वाला विज्ञान ही 'लाक्षिणिकी' या 'रोग-लक्षण विज्ञान' है। विकृत मनोविज्ञान का यह एक विशेष भाग है।

देखिए—Abnormal Psychology.

Synapse [सिनेप्स] सूत्रयुग्मन।

तत्रिका तत्र का वह भाग जहां पर एक तत्रिका दूसरी कोशिका तत्रिका (Neuron) से मिलती है, सूत्रयुग्मन' कहलाता है। ऐसे स्थान केन्द्रीय अथवा स्वायत्त तत्रिका तत्र के अन्दर पाए जाते हैं। सूत्रयुग्मन की तुलना किसी रेल के बडे जकशन से की जा सकती है। जिस प्रकार जकशन पर भिन्न-भिन्न दिशाओ से आने वाले यात्री अपनी निर्दिष्ट दिशा की ओर जाने वाली गाडियो मे चढ लेते हैं, उसी प्रकार उत्तेजन सूत्रयुग्मन पर आकर जिस दिशा मे उनके लिए जाना उचित होता है, वे जाते हैं।

सूत्रयुग्मन की निम्न विशेषताएँ हैं

(१) इन स्थलो पर एक सवेदी न्यूरोन का तत्रिकाक्ष एक अथवा अनेक प्रेरक अथवा सयोजक न्यूरोना के ग्राही तन्तुओ अथवा कोशिकाओ से मिलता है। (२) तन्तुओ का यह मिलन (Interlacing) बिजली के टूटे हुए दो या अधिक तारो के जोड की तरह होता है। (३) सूत्रयुग्मन पर तत्रिकावेग की गति केवल एक ओर ही होती है—यह गति अक्ष तन्तु से ग्राही तन्तु की ओर होती है, ग्राही तन्तु से तत्रिकाक्ष की ओर नहीं होती। (४) इन स्थलो पर चुनाव का सिद्धान्त लागू होता है, यह कि किसी विशेष ग्राहकेन्द्र से आया हुआ तत्रिकावेग किस अथवा किन प्रेरक अथवा सयोजक तत्रिका कोशिकाओ की ओर प्रवाहित होगा। इस धारणा का परिचय १६०६ मे शेरिंगटन ने दिया था।

Syndrome · [सिनड्रोम] समष्टि ।

लक्षण : किसी रोग-विशेष मे साथ-साथ पाए जाने वाले अथवा उसके सूचक लक्षणो का सघात।

Synaesthesia [सिनेस्थेसिया] : इन्द्रिय अनुभव सयोग।

कुछ व्यक्तियो मे घटित होने वाला एक तथ्य जिसमे एक इन्द्रिय विषयक प्रत्यक्ष अनुभव किसी दूसरी इन्द्रिय विषय के कुछ (कल्पित) अनुभवो से इस प्रकार जुड जाते हैं कि एक के उभडने पर दूसरा अनुभव भी उभड आता है। इस प्रकार जैसे वर्ण-श्रवण सयोग जिसे अग्रेजी मे क्रोमेस्थेसिया भी कहते हैं—मे कुछ ध्वनियो, कुछ अनुभवो को या कुछ अको की आकृतियो को, जहाँ कि अको की प्रतिमाएँ ज्यामित रूपो मे स्थान को घेरे हुए हैं, उभाडते हैं।

Taboo [टैबू] : वर्जन, वर्जना।

किसी भी क्रिया, पहनावे, रहन सहन, खान-पान, परस्पर सम्बन्ध आदि का परम्परागत रीति-रिवाज-जन्य वर्जन। इन वर्जनो का वैधानिक आधार नहीं होता। फिर भी सामाजिक निन्दा एव बहिष्कार के भय से प्राणी इन्हे नही अपनाता—यथा निकट सम्बन्धियो मे यौन-सम्बन्ध। फ्रायड का मत है कि ये वर्जन अधिकाश मे ऐसे होते हैं जिनके प्रति व्यक्ति के अचेतन मन (Unconscious) मे उत्कट अभिलाषा होती है।

Tactual Sensation [टैक्चुअल सेन्सेशन] · स्पर्श सवेदन।

किसी भी उद्दीपन अथवा वस्तु के शरीर के किसी भी भाग की त्वचा के निकट सम्पर्क मे आने पर मस्तिष्क पर जो उसकी तात्कालिक प्रतिक्रिया होती है उसे स्पर्श-सवेदन कहते हैं।

स्पर्श सवेदन चार प्रकार के होते हैं—दबाव, पीडा उष्णता, तथा शीत का सवेदन। ये चारो सवेदन एक-दूसरे से भिन्न

हैं और शरीर की त्वचा पर इनकी अनुभूतियों को ग्रहण करने वाले स्थान (बिंदु) भी भिन्न-भिन्न हैं। रूखड़े बाल, सूई की नोक, गर्म अथवा ठंडी की हुई पेन्सिल के समान किसी नुकीली वस्तु की सहायता से इन बिन्दुओं को ढूँढा जा सकता है। ये शरीर की समग्र त्वचा पर अनियमित रूप से फैले हैं।

Tambour [टैम्बूर] : तम्बूरा।
एक अभिलेखन यंत्र, जिसके एक सिरे पर एक लचीली झिल्ली तथा दूसरे सिरे पर एक रबर की नली और बीच की खाली जगह किसी द्रव पदार्थ या हवा से भरी हुई होती है। इस नली के द्वारा भिन्न-भिन्न दबाव की गतियाँ अन्दर भरे हुए द्रव या हवा पर उत्पन्न करके उस लचीली झिल्ली पर उसी प्रकार की गतियाँ पैदा की जाती हैं जो कि एक लेखन यंत्र पर, जो झिल्ली से जुड़ा रहता है, स्थानान्तरित हो जाती हैं।

Tapping Board [टैपिंग बोर्ड] : खट-फलक।
ऐसे परीक्षण में काम आने वाला उपकरण जिसमें व्यक्ति को, एक दिये हुए समय के अन्दर, एक शलाका द्वारा, एक धातु या लकड़ी के बने हुए पटरे पर यथासंभव अधिक-से-अधिक संख्या में थपथपाना पड़ता है। यह संख्या एक विद्युत यन्त्र के द्वारा अंकित होती रहती है। उद्वेग मनोविज्ञान के परीक्षणों में इसका प्रयोग होता है।

Tautophon [टाटोफोन] : यंत्र-विशेष।
प्रक्षेपण परीक्षण की युक्ति जिसमें एक ग्रामोफोन रिकार्ड में कुछ अस्पष्ट आवाजें भरकर प्रयोज्य को ग्रामोफोन पर सुनाकर मनोविश्लेषण हेतु उससे उन आवाजों के अर्थ पूछे जाते हैं।

Telekinesis [टेलेकिनेसिस] : टेलेकिनेसिस, मनोक्रिया।
दूर पर अर्थात् कर्मेन्द्रियों की भौतिक पहुँच के परे क्रिया कर लेना। इसका आधार मन में भौतिक पदार्थों को शारीरिक कर्मेन्द्रिय की सहायता के बिना प्रभावित कर लेने की सामर्थ्य है। इसलिये इसे मनोक्रिया भी कहा जाता है। स्वतः होने वाले परामानसिक अनुभवों में किसी परिवार के किसी व्यक्ति के संकट के समय किसी स्पष्ट भौतिक कारण के बिना घड़ी का बन्द हो जाना, टँगे चित्रों या दीवारों से गिर जाना आदि घटनाएँ इस प्रकार की दूर क्रिया अर्थात् मनोक्रिया के उदाहरण हैं। अब प्रयोगात्मक विधि से भी इसके प्रमाण जुटाये गए हैं। पासे फेंकते हुए माध्यम में मानसिक बल लगता है कि पासों में विशेष संख्याएँ ऊपर रहें। यह अनुभव किया गया है कि इसमें सफलता की मात्रा संयोगमात्र से हो जाने वाली मात्रा से अधिक होती है।

Teleology [टीलियोलॉजी] : उद्देश्यवाद।
प्रयोजन, ध्येय, प्रयोजनवाद, मूल्यांकन, प्रयोजनवत्ता, 'सबसे उत्कृष्ट' का सिद्धान्त। यांत्रिकी का यह विरोधी है। यांत्रिकवाद में वर्तमान और भविष्य की व्याख्या अतीत के प्रसंग में की गयी है; उद्देश्यवाद में अतीत और वर्तमान की व्याख्या भविष्य के प्रसंग में की गयी है। उन मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर इस विचारधारा का विशेषतः प्रभाव पड़ा है जिनमें प्रवृत्यात्मक वृत्ति और प्रयोजनात्मक संघर्ष की महत्ता पर बल दिया गया है।

Telepathy [टेलीपैथी] : पारेन्द्रिय ज्ञान।
इन्द्रियों की सहायता के बिना विचार का एक मन से दूसरे मन में पहुँच जाना, जैसे कि अन्दर-ही-अन्दर कोई तार भेजा जाए और पहुँच भी जाए। व्यक्तियों के बीच विभिन्न विचारों अथवा ज्ञान का अलौकिक आदान-प्रदान कुछ पौराणिक तथा ऐतिहासिक घटनाओं के वर्णन में आता है। अब इसकी सम्भवता एक मुख्य विषय है। मन-प्रसारण विषयक प्रयोग में सादेश प्रेषक (Sender) एक कक्ष में बैठता है और संग्राहक (Receiver) किसी दूसरे कक्ष में। इन कक्षों के बीच संज्ञापन की इतनी ही व्यवस्था होती है कि संग्राहक प्रेषक

से बता सके कि वह अगले प्रयत्न के लिए तैयार है। संदेश प्रेषक की ओर से जाने या अनजाने किसी प्रकार का सज्ञापन (Communication) असम्भव कर दिया जाता है। दोनों कक्षों में दूरी जितनी अधिक हो उतना अच्छा समझा जाता है। यह प्रयत्न भी किया जाता है कि प्रेषक के पास संदेश का कोई लिखित लेखा न हो, जिससे अतीन्द्रिय दृष्टि से सग्राहक उसे न जान पाए।

Temper Tantrum [टेम्पर टैन्ट्रम] 'त्रागा', मचलना।

यह क्रोध का उग्रतम रूप है और प्रायः बच्चों में दो से लेकर तीन अथवा साढे तीन वर्ष की अवस्था के बीच पाया जाता है। कुछ बच्चों में यह लक्षण १४-१५ माह की अवस्था में ही प्रकट हो जाता है। इसके अन्तर्गत क्रोधजन्य व्यवहार की सारी प्रतिक्रियाएँ अपने उग्रतम रूप में देखने को मिलती हैं, यथा—ठुकराना, नोचना, खसोटना, दाँत से काटना, चीखना-चिल्लाना, चीजों को फेंकना, तोडना-फोडना जमीन में लोटना, मचलना आदि। वह किसी तरह भी काबू में नहीं आता। मार-पीट, डराना-धमकाना सब निरर्थक है।

इस अकारण मचलने से बालक की रक्षा उसे प्रसन्नता, आह्लाद, स्नेह, सन्तोष आदि का अभ्यास कराने से हो जाती है। परिस्थितियों को यथासम्भव उसके अनुकूल बनाने का प्रयास आवश्यक है। यह ध्यान रखना है कि बालक कहीं अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों पर काबू पाने के लिए तो ऐसा नहीं करता। यह बात बनी रहने पर बालक का भावी सवेगात्मक विकास विकृत हो जावेगा और चिड़चिड़ापन उसके व्यक्तित्व का स्थायी अंग बन जावेगा।

Temporal lobe [टेम्पोरल लोब] शख-पालि।

प्र-मस्तिष्क गोलार्द्ध की एक पालि विशेष जो सिलव्हिस की दरार के नीचे तथा पृष्ठ-खण्ड के सामने स्थित है। श्रवण-केन्द्र दोनों ओर के शख पालियों में ही पाए जाते हैं।

Temperament [टेम्परामेंट] स्वभाव, चित्तप्रकृति।

स्वभाव मनुष्य की सवेगिक सरचना का अन्य इकाइयों के साथ सयोग है। व्यापक रूप से स्वभाव का सम्बन्ध मनुष्य की सामान्य प्रकृति से है। विशेषत यह उनके अनुभव के ज्ञानात्मक, भावात्मक पहलू तथा आवेश, क्षुधा, आकांक्षा तथा सवेग से सम्बन्धित है। मनुष्य के शरीर में विद्यमान विभिन्न वायरसों की प्रभाविता के अनुसार चार प्रकार की रचना का निरूपण किया गया है, जो इस प्रकार है: रक्त-प्रकृति (Sanguine), वातप्रकृति (Melancholic), श्लैष्मिकप्रकृति (Phlegmatic) और पित्तप्रकृति (Choleric)। वर्गीकरण के आधार पर शारीरिक, दैहिक अवस्था एवं प्रक्रिया को मान्यता देते हैं।

Tension [टेंशन] तनाव।

अभिप्रेरण (दे० Motivation) की समस्या का सबसे उपयुक्त स्पष्टीकरण तनाव की धारणा में हुआ है। जब कभी कोई भी आवश्यकता (दे० Need) जागृत होती है व्यक्ति के आभ्यन्तरिक क्षेत्र में तनाव होता है। उद्देश्य की प्राप्ति होने पर तनाव मिट जाता है। कुर्ट लेविन ने तनाव की धारणा का अन्वेषण किया और इस धारणा की महत्ता मनोवैज्ञानिक समस्याओं के स्पष्टीकरण में इतनी बढ़ी कि पूर्व प्रचलित अतर्नोद (drive), अभिलाषा (wish), आवश्यकता (need) और प्रेरक (motive) इत्यादि धारणाएँ एक प्रकार से लोप-सी हो गयीं और इस प्रकार एक नई व्याख्या पूर्व धारणाओं के स्थान पर इस धारणा की सहायता से दी जाने लगी।

व्यवहार सदैव प्रयोजनयुक्त होता है। ध्येय की प्राप्ति ही पर तनाव कम होता है। जिस ध्येय के रहने से तनाव कम होता है उसमें आकर्षण (Positive valence) होता है, जिससे तनाव में वृद्धि होती है उसमें विकर्षण (Negative valence) होता है। जो तनाव क्रियाओं की ओर

उन्मुख है, जिससे उद्देश्य की प्राप्ति होती है वे वास्तविकता (reality) के स्तर पर कहे जाते हैं; जो विचार मात्र से उत्पन्न होते हैं वे अवास्तविकता (irreality) के स्तर पर होते हैं। तनावों के रहने पर क्रम-विहीन, अशृंखलित व्यवहार होता है और व्यक्ति यह अनुमान नहीं लगा पाता कि उसके ध्येय की पूर्ति का कोई साधन है।

लेविन की तरह जैंगारनिक ने तनाव पर एक प्रयोग किया। अक्रमिक रूप से प्रयोज्य को कई एक कार्य करने को दिया। प्रयोगकर्ता द्वारा निश्चित-निर्धारित समय में कुछ कार्य पूरा किया जा सका और कुछ नहीं किया जा सका। प्रयोग मे ऐसा आयोजन किया गया कि काम समाप्त करने के पहले उसमें बाधा डाली जाय। दोनों ही परिस्थिति मे जब कार्य पूरा हो जाए और जब पूरा न हो सके, कार्य मे बाधा डालने पर प्रयोज्य के लिए पुनराह्वान कहाँ तक सभव है, यही अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

जैंगारनिक लब्धि (Zeigarnik quotient) (अपूर्ण कार्य, पूर्ण कार्य) का अनुपात १:६ था। लेविन का यह अनुमान था कि जब कार्य मे बाधा डाली जाती है और वह अधूरा छोड़ दिया जाता है, व्यक्ति के मन मे उस कार्य के अपूर्ण रह जाने मे तनाव उत्पन्न होता है और इसी से उसकी छाप तीव्र बनी रहती है और पुनराह्वान अधिक होता है। इस अभिनिवेशी प्रकृति (उत्तेजन हटा देने पर भी मानसिक क्रिया का क्रम बने रहना) को 'जैंगारनिक इफेक्ट' कहते हैं।

ध्येय प्राप्य है या अप्राप्य इसका प्रभाव सदैव व्यक्ति के आभ्यन्तरिक तनाव की अवस्था पर पडता है। इसकी पुष्टि के लिए एच० एफ० राइट ने एक प्रयोग आयोजित किया। छोटे बच्चो के एक समूह को खेलने के लिए एक ऐसी गुडिया दी जो उनके स्तर से ऊँची श्रेणी की थी। जब तक बालकों ने यह विचारा गुडिया प्राप्य है, उनकी श्रेणी की है, तनाव अत्यन्त तीव्र रहा; जब उन्हे यह मालूम पड़ा कि गुड़िया अप्राप्य है, तनाव कम हो गया। साधारण निराशा से तनाव बढता है और ध्येय अधिक मोहक लगता है, क्योकि उस वस्तु के प्राप्य की आशा रहती है, अत्यधिक निराशा होने पर तनाव निर्बल हो जाता है।

तनाव की जटिलता की व्याख्या वर्तमान परिस्थिति के प्रसग मे की गई है, अतीत के प्रसग मे इसका विवरण नही दिया गया है। अतीत का महत्व इस प्रसग मात्र में है कि वर्तमान तनाव की व्यवस्था पर कुछ अतीत की भी छाप होती है।

तनाव के प्रसग मे आकाक्षास्तर (level of aspiration) के सम्बन्ध मे भी महत्वपूर्ण अध्ययन हुआ है। अकांक्षास्तर वस्तुत: सफलता-असफलता पर निर्भर करता है। इस प्रयोग मे प्रयोज्य को एक कार्य-विशेष सपादित करने के लिए कहा गया और उसकी प्रतिक्रियाओ के आधार पर अक दिये गए। आवृत्ति पर दूसरा अंक दिया गया। यह निष्कर्ष रहा कि आकाक्षास्तर पर असफलता का मलीन प्रभाव पडता है। कई बार असफलता मिलने पर और फलस्वरूप आभ्यन्तरिक तनाव होने से विमुखता हो जाती है।

Test [टेस्ट] : परीक्षण।

किसी व्यक्ति मे कोई गुण कितनी मात्रा मे है इसको जानने के लिए एक वैज्ञानिक विधि, जिसमें व्यक्ति के समक्ष किसी पूर्व निर्मित सामग्री, परिस्थिति एव आदेश को रखा जाता है और उसके प्रति उसकी प्रतिक्रिया के आधार पर उसे उस गुण पर अक दिये जाते हैं।

परीक्षण द्वारा मापा जाने वाला गुण प्राय. कोई योग्यता, आयाम अथवा व्यक्तित्व के प्रमुख अग हुआ करते हैं। अधिकांश योग्यता-परीक्षणों का उद्देश्य सामान्य योग्यता अर्थात् बुद्धि, विशेष अर्जित योग्यता अर्थात् निष्पत्ति या विशिष्ट शिक्षा अथवा व्यवसाय, क्षेत्रीय संभाव्य योग्यता अर्थात् सुज्ञान को मापना होता है। अंगों के

परीक्षणो का उद्देश्य प्राय स्वभाव गुण, चरित्र गुण, रुचि अथवा समायोजन-विपमायोजन को मापना होता है।

परीक्षण मे परीक्षार्थी के समक्ष उपस्थित सामग्री प्राय शब्दो, प्रश्नो वाक्यो, चित्रो अथवा व्यावहारिक वस्तुओ के रूप मे होती है। अधिकाश परीक्षणो मे उसकी प्रतिक्रियाओ को भी किसी प्रकार के केवल आदेश द्वारा और कभी-कभी वरण के लिए कुछ पूर्व निर्मित प्रतिक्रियाएँ भी उपलब्ध करके, नियत्रित अथवा सीमित किया जाता है।

परीक्षण मे व्यक्ति को दिये जाने वाले अक समय प्राप्ताक (दे० Time scores), परिमाणाक, कठिनता अक अथवा श्रेष्ठता अक हो सकते हैं।

Thalamus [थैलेमस] थैलेमस।

मस्तिष्क का एक भाग-विशेष जो प्रमस्तिष्क के नीचे तथा अनु मस्तिष्क के सामने स्थित है। इसमे अनेक कोषकेन्द्र पाए जाते हैं जो परस्पर सम्बन्धित होने के साथ साथ मस्तिष्क तथा मेरुरज्जु के निम्न केन्द्रों और प्रमस्तिष्कीय अर्धखण्डो से भी सम्बद्ध रहते हैं। थैलेमस सावेदनिक वेगो को प्रमस्तिष्कीय वल्क के उपयुक्त स्थानो पर पहुँचाता है। सवेगों के सचालन, उनकी अभिव्यक्ति और नियन्त्रण में भी इसका महत्वपूर्ण सहयोग रहता है।

Thanatos[थैनटोस] मरणवृत्ति, मुमूर्षा।

फ्रायड का वृत्ति सिद्धान्त प्रसिद्ध है। उन्होने अपने पिछले ग्रन्थो मे मरणवृत्ति की धारणा का प्रतिपादन किया है। यह फ्रायड के सशोधित वृत्ति सिद्धान्त का द्योतक है।

मरणवृत्ति अपने को या दूसरों को मेटने की एक ध्वसात्मक वृत्ति है जो 'इरोस' अर्थात रचनात्मक अथवा सृजनात्मक वृत्ति के विपरीत है। इसका प्रभाव मानव-व्यवहार और व्यक्तित्व पर विशेष रूप से पडता है। खिलौनो का तोडना-फोडना, क्रोध म हाथ पैर पटकना इस प्रकृत वृत्ति के लक्षण हैं। इसे 'डेथ इन्सटिन्क्ट' भी कहते हैं।

नव फ्रायडवाद ने इस धारणा पर आक्षेप किया है। ध्वस करने की व्यक्ति मे कोई प्रकृति नहीं होती, व्यक्ति यह आदत सस्कृति से सीखता है।

Thematic Apperception Test (Tat) [थैमेटिक एपरसेप्शन टैस्ट]: अतश्चेतनाभिबोधन-परीक्षण।

एक प्रक्षेपण परीक्षा जिसमे व्यक्ति को प्रामाणिक चित्र देखकर उसी पर आधारित कहानियाँ बनानी पडती हैं। इस परीक्षा का प्रयोग व्यक्ति के अन्दर के सामजस्य, भावना सम्बन्धी इच्छा, द्वन्द्वो के विश्लेषण व ज्ञान प्राप्त करने के लिए किया जाता है। इसमे ३० चित्र होते हैं, जिनमे दस का उपयोग स्त्री और पुरुष दोनो के लिए होता है, दस पुरुष मात्र के लिए, और दस केवल स्त्रियो पर। यह व्यक्तित्व परीक्षण डॉ० मरे द्वारा निर्मित हुआ है और ब्यूरो ऑफ साइकॉलॉजी ने भारतीय सस्कृति के अनुकूलन हेतु इसमे उपयुक्त सशोधन करके प्रामाणिक चित्र तैयार किये हैं।

Thermal Sensitivity [थर्मल सेन्सिटिविटी] ताप सवेदनशीलता।

ताप का सवेदन होना। ताप का सवेदन, त्वचा के भिन्न भिन्न भागो पर भिन्न-भिन्न सख्या मे पाए जाने वाले सवेदन के अगो के उत्तेजन होने पर उत्पन्न होता है।

Theory [थियरी] सिद्धान्त।

सिद्धान्त शब्द किसी वस्तु के परिकल्पनात्मक स्वरूप की ओर सकेत करता है। अरिस्टॉटिल ने सिद्धान्त का अर्थ व्यवहारिक विशुद्ध ज्ञान माना है जो ज्ञान के विपरीत है। उन्होने इसे व्यवहार से पृथक् माना है—यह कि इससे व्यवहार की उद्भूति होती है। सिद्धान्त का तात्पर्य परिकल्पना या किसी प्रकार की कल्पना से है जो कि पुष्टि योग्य है पर जिसकी पुष्टि नहीं हुई है। पुष्टिप्राप्त परिकल्पना नियम (law) बन जाता है और वह सिद्धान्त नही रह जाता। सिद्धान्त का तात्पर्य क्रमबद्ध रूप से सयोजित ज्ञान

एवं उच्चस्तरीय ज्ञान से भी है। उदाहरण-स्वरूप भौतिकशास्त्र में प्रयुक्त प्रकाश का सिद्धान्त।

Threshold [थ्रेशोल्ड] : देहली।

संवेदन और प्रतिक्रिया उत्पन्न करने मे समर्थ उत्तेजना की सीमांत अर्थात् न्यूनतम अथवा अधिकतम मात्रा। न्यूनतम मात्रा को 'न्यूनतम भेद-बोध सीमा' कहा जा सकता है और अधिकतम मात्रा को 'उच्चतम भेद बोध-सीमा'। व्यवहार मे बोध-सीमा को उत्तेजना सीमा अथवा स्थिर बोध-सीमा भी कहा जाता है और उच्चतम बोध-सीमा को सीमांत उद्दीपन (Terminal stimulus) भीकहा जाता है। इस भेद-बोध सीमा का अध्ययन कम ही हुआ है।

वास्तव में किसी उद्दीपन की कोई ऐसी एक स्थिर मात्रा नही होती जिससे कम मात्रा पर कभी भी कोई संवेदना अथवा प्रतिक्रिया न होती हो और जिससे अधिक मात्रा पर सदैव ही संवेदना तथा प्रतिक्रिया होती हो।

मनोमिति मे उद्दीपन सीमा अर्थात् बोध-द्वार को निश्चित करने के लिए सांख्यिकीय विधि का सहारा लिया जाता है। उन सब उद्दीपनों के प्रेक्षण ले लिये जाते हैं जिनका कभी अनुभव तथा कभी अननुभव होता है और यह परिगणन कर लिया जाता है कि किस उद्दीपन मात्रा का आधी बार अर्थात् पचास प्रतिशत बार अनुभव होगा तथा आधी अर्थात् पचास प्रतिशत बार अननुभव। इस उद्दीपन मात्रा को ही बोध-सीमा माना जाता है।

Thinking [थिंकिंग] : चिन्तन।

यह शब्द प्राय: दो अर्थों मे व्यवहृत होता है : (१) विचारों प्रतीकों अथवा संकेतो का अव्यक्त (अथवा मानसिक) संचालन करनेवाली प्रक्रिया; तथा (२) वह अव्यक्त प्रक्रिया जिसके अन्तर्गत व्यक्तियों अथवा परिस्थितियों की अनुपस्थिति मे भी उनका प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतीकों अथवा संकेतों के माध्यम से अपने जीवन में आने वाली समस्याओं का व्यक्ति समाधान करता है। इस प्रक्रिया में प्रतिमाओं, भाषा, सूक्ष्मपेशी आकुंचनों, प्रत्ययों अथवा इन सभी का सम्मिलित योग भी हो सकता है।

चिन्तन दो प्रकार का होता है : (१) यथार्थ चिन्तन (Realistic thinking) और (२) स्वलीन चिन्तन (Autistic thinking)। वास्तविक चिन्तन व्यक्ति में बाह्य परिस्थितियों के प्रभावस्वरूप होता है। यह रचनात्मक होता है और किसी कार्य की पूर्ति अथवा किसी समस्या के समाधान की ओर निर्दिष्ट होता है। स्वलीन चिन्तन व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं, वासनाओं अथवा भावों के कारण होता है और इसका एकमात्र उद्देश्य आत्मतुष्टि है। इसमे बाह्य वास्तविकता की मर्यादा की प्राय. उपेक्षा होती है। दिवास्वप्न, स्वप्न आदि इसके उदाहरण हैं।

समस्त ज्ञान-विज्ञान रचनात्मक चिन्तन की ही उपज है। रचनात्मक चिन्तन की चार प्रमुख अवस्थाएँ हैं—(१) प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित तथ्यों का सकलन अथवा तैयारी की अवस्था; (२) गर्भीकरण—व्यक्ति के अनजाने अथवा अव्यक्त रूप में समस्या-समाधान में सलग्न रहना, (३) स्फुरण—व्यक्ति मे अकस्मात् समाधान का होना; तथा (४) प्रमापन—स्फुरित विचारों की सत्यता और विश्वसनीयता की जाँच।

T-Maze [टी-मेज़] : टी-भूलभुलय्या, टी-व्यूह।

ऐसी भूलभुलय्या जिसकी शक्ल अंग्रेजी अक्षर 'टी' की तरह होती है और पशुओं पर सीखना-सम्बन्धी जो प्रयोग हुआ है उसमे प्रयोग किया जाता है। इसमें लम्ब रूप मे बना हुआ मार्ग प्रवेश-मार्ग होता है और उस प्रवेश-मार्ग के दूसरे सिरे पर दो मार्ग एक ही सीध में, उसके दाहिने और बाएँ जाते हैं। इस प्रकार व्यूह मे सीखने की वस्तुस्थिति, बचाव और प्रबलन (Reinforcement) आदि से

म्बन्धित तथ्यो और प्रक्रियाओ का अध्ययन किया जाता है। अध्ययन के विषय के अनुसार ऊपर के दाएँ और बाएँ के मार्गों मे सशोधन भी किया जा सकता है।

Thumb Sucking [थम्ब सकिंग] अँगूठा चूसना।

अँगूठा या उँगलियाँ चूसना बालक की एक जन्मजात स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। गेसेल ने १६३७ मे एक ऐसे केस की ओर लोगो का ध्यान आकृष्ट किया जिसमे लगता था बालक गर्भ में ही अँगूठा चूसा करता था। पैदा होने के बाद उसका अँगूठा कुछ सूजा हुआ था। यह प्रतिक्रिया सभी बालको मे पाई जाती है। कुछ मे तो प्रौढ होने पर भी यह आदत बनी रहती है। तब यह विकृति का लक्षण है। मनोविज्ञान मे इसके प्रति तीन प्रमुख दृष्टिकोण हैं—(१) केवल स्तन पान या कृत्रिम दुग्धपान से ही बालको के चूसने सम्बन्धी यन्त्र का पर्याप्त अभ्यास नही हो पाता। इसकी कमी वह अँगूठा चूसकर पूरी करता है। (२) भोजन के द्वारा बालक जो आनन्द प्राप्त करता है उसी आनन्द को पुन प्राप्त करने के लिए वह अँगूठा चूसता है। (३) मनोविश्लेषण के अनुसार बालक के कामशक्ति के विकास की सबसे पहली अवस्था चूसने की अवस्था है। इस अवस्था म उसके कामसुख का केन्द्र विशेषकर ओठ होते हैं। इन्हीं के सञ्चालन द्वारा उसे आनन्दानुभूति होती है।

Tics [टिक्स] स्पद विकृति।

शरीर के किसी अग भाग अथवा पेशी-विशेष में अन्तर से अनवरत रूप से घटित होने वाला स्वचालित स्पन्दन (ऐंठन, सकुचन अथवा फडकन)। स्पद विकृति शरीर की किसी भी पेशी से सम्बन्धित हो सकती है। मुँह, हाथ पैर की पेशियो के अतिरिक्त साँस लेने वाली, भोजन पचाने वाली तथा अन्य आंतरिन्द्रिय पेशियो से भी यह सम्बन्धित होती है। इसका प्रमाण हिचकी ललाट की सिकुडन, भोज्य पदार्थ निगलना, सिर को विशेष ओर घुमाना, मे भी मिल सकता है। जब रोगी को इस विचित्र आदत की चेतना हो जाती है वह उन पर अधिकार कर लेता है, अन्यथा इसके लिए प्रोत्साहन मिलता है। ये यन्त्रवत् घटती रहती है निरर्थक एव निष्प्रयोजन सी होती है। स्पद विकृति का सम्बन्ध शरीर के उस भाग से भी रहता है जो निश्चेष्ट हो जाता है। उपचार का इस पर विशेष प्रभाव नही पडता। एक स्पदित पेशी को नियन्त्रित करने पर उसी प्रकार का स्पन्दन दूसरी पेशी मे प्रकट हो जाता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से किये स्पन्दन अज्ञात मानसिक क्रिया के व्यक्त सक्षिप्त रूप हैं। इनके स्वरूप इनके उद्गम के सम्बन्ध मे खोज करने पर इसका पूर्णत पुष्टीकरण हो जाता है। यह हिस्टीरिया का लक्षण है।

Time Motion Study [टाइम मोशन स्टडी] समय गति-अध्ययन।

यह युक्ति गिल्ब्रेथ ने अन्वेषित की है। इसका उद्देश्य है श्रमिक के प्रयास का और उस जो समय लगा है उसका सूक्ष्म अध्ययन विश्लेषण कर कुछ ऐसी योजना बनाना जिससे कि कम से कम प्रयास और समय मे अधिक से-अधिक कार्य किया जा सके। गिल्ब्रेथ ने श्रमिक के कार्य-सचालन का सूक्ष्म अध्ययन किया। ईंट ढोने वालो पर प्रयोग करके उन्होने यह निष्कर्ष निकाला कि जितने काम को वे १२ घटे मे करते हैं सही सचालन रखकर उतना ही काम आसानी से ५ घटे मे किया जा सकता है। ईंट ढोने की सख्या प्रति घण्टे १२० से ३५० की जा सकती है। उन्होने साइक्लोग्राफ यन्त्र से श्रमिक के प्रयास सचालन का विवरण लिया और विराम घडी से समय को नोट किया। अब एक दूसरे यन्त्र का प्रयोग होता है जिसे क्रोनो-साइक्लोग्राफ कहते हैं। इसमे विवरण लेने की प्रक्रिया और भी सूक्ष्म प्रकार की है। प्रयोग करने के पश्चात् गिल्ब्रेथ ने यह

सामान्य सिद्धान्त निरूपित किया कि ठीक युक्ति उपयोग में लाने पर समय की बचत होती है और निरर्थक प्रयास भी नही करना पडता।

Time-Order-Error [टाइम-आर्डर-एरर] : काल-क्रम-त्रुटि।

प्रस्तुत उत्तेजनाओ के तुलनात्मक परिमाणांकन मे वह त्रुटि, जो इस बात पर निर्भर हो कि उत्तेजना किस क्रम से आंका (rater) के सामने प्रस्तुत की गई है। यदि कोई मानक उद्दीपन (Standard stimulus) पहले प्रस्तुत किया जाता है और तब कोई परिवर्त्योद्दीपन (Variable stimulus) उसके साथ तुलना करने के लिए प्रस्तुत किया जाता है तो अधिकांश परिस्थितियो में मानक उद्दीपन का अधोअनुमान होता देखा गया है। यदि दो सम परिमाण उद्दीपन एक-दूसरे के बाद तुलना के लिए प्रस्तुत किए जाते हैं, तो अधिकाश बार दूसरा उद्दीपन बडा प्रतीत होता है और प्रथम अर्थात् मानक उद्दीपन तुलना में छोटा आंका जाता है। इन उदाहरणों मे काल-क्रम-त्रुटि ऋणात्मक है। जब दूसरा उद्दीपन अधिकाश बार प्रथम समपरिमाण उद्दीपन की अपेक्षा छोटा प्रतीत होता है तो धनात्मक काल-क्रम-त्रुटि होती है।

Time Sampling [टाइम सैम्पलिंग] : समय प्रतिचयन।

व्यक्तियों के व्यवहार के यथार्थ वैज्ञानिक प्रेक्षण की एक विधि। इसमे प्रेक्षण आरम्भ करने से पहले एक निश्चित प्रेक्षण कार्य-क्रम बना लिया जाता है। बहुत-सी छोटी-छोटी समान दूर-दूर फैली हुई प्रेक्षण अवधियाँ निश्चित कर ली जाती हैं। यदि बहुत से व्यक्तियो का प्रेक्षण करना होता है तो प्रेक्षण कार्य को इस प्रकार यत्र-तत्र फैलाया जाता है कि प्रत्येक व्यक्ति को तुल्य परिस्थितियों मे देखने का पर्याप्त अवसर रहे। साथ ही प्रेक्षण में व्यक्तियों का क्रम प्रतिदिन बदलता रहता है।

Time Scores [टाइम स्कोर्स] : समय प्राप्तांक।

मनोवैज्ञानिक परीक्षणों तथा प्रयोगों में परीक्षार्थी को दिए जाने वाले एक प्रकार के अक जिनका आधार उसे किसी दिए गए काम की एक इकाई को करने में लगा हुआ समय होता है। यह मापित गुण के सीधे, स्पष्ट, व्यक्त माप होते हैं और सतत मापदण्डों पर स्थित होते हैं। प्रतिक्रिया काल-सम्बन्धी प्रयोगो तथा परीक्षणो मे इसी प्रकार के बहुत छोटी (सेकण्ड के दसवें, सौवें अथवा सहस्रवें भाग की) इकाई वाले अंको का प्रयोग होता है। अभ्यास के परिमाण के अध्ययन मे दो प्रकार के प्राप्तांकों का प्रयोग होता है। या तो यह समय की बचत के माप होते हैं और एक कार्यांश को समाप्त करने मे अन्तिम चेष्टा मे लगने वाले मध्यक समय को प्रथम चेष्टा में लगने वाले समय से घटाकर प्राप्त किए जाते हैं। यह वह प्रतिचेष्टा समय की बचत के माप होते हैं. और इन्हे प्रतिचेष्टा कार्यांशों के लाभ (अर्थात् पूर्व से अधिक होने वाले कार्यांशो की सख्या) को आरम्भ में प्रति कार्यांश लगने वाले समय से गुणा करके प्राप्त किया जाता है।

Tonus [टोनस] : पेशी संकोच।

तन्त्रिका-सम्बन्धो के सुव्यवस्थित रहते जीवित पेशियो मे सतत वर्तमान मुद्रात्मक पेशिय संकुचन अथवा सकुचन के उपक्रमण की स्थिति। प्लैस्टिक सकोच (Plastic Tonus)—पेशी संकोच की एक ऐसी स्थिति है जिसमे पेशियों को जिस स्थिति में रख दिया जाता है वे उसी स्थिति में सकुचित बनी रहती हैं।

Topectomy [टोपेक्टॉमी] : टोपेक्टॉमी।

वह क्रमिक वैज्ञानिक अध्ययन जिसमें मस्तिष्क के विशेष भागों को शल्य द्वारा हटाकर यह निरीक्षण किया जाता है कि इसका व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ता है।

Topological Psychology [टोपोलॉजिकल साइकॉलॉजी] : स्थान मनो-

विज्ञान।

मनोविज्ञान की इस शाखा का विकास लेविन ने किया जिससे एक व्यक्ति के मानसिक वातावरण में उसके और वस्तुओं के क्षेत्रीय सम्बन्ध का दिग्दर्शन किया जा सके। इस प्रकार का दिग्दर्शन टोपोलॉजिकल कहा जाता है।

स्थान मनोविज्ञान वह पद्धति है जिसमे क्षेत्रीय सम्बन्धी विशेष धारणाओ का प्रयोग हुआ है। मनोवैज्ञानिक जीवन-क्षेत्र या जीवन-समष्टि (Psychological Life Space) की धारणा इसकी आधारभूत है। मनोवैज्ञानिक तथ्यो की व्याख्या क्षेत्रीय आधार पर हुई है।

देखिए—Life Space

Touch Spots [टच स्पाट्स] स्पर्श-स्थल।

त्वचा पर भिन्न प्रकार के स्पर्श-सम्बन्धी उद्दीपनों को ग्रहण करने वाले विशिष्ट भाग। ये स्थल चार प्रकार के होते हैं: भार, पीडा, उष्णता तथा शीत स्थल। इन्ही के उपयुक्त उत्तेजन से प्रभावित होने पर क्रमश भार, पीडा, उष्णता तथा शीत के सवेदन, तथा इनमे से कई के एक साथ प्रभावित होने पर मिले जुले स्पर्श सवेदन होते हैं।

स्पर्श स्थलो की तीन प्रमुख विशेषताएँ हैं (१) ये व्यक्ति के शरीर पर अनियमित रूप मे बिखरे है। (२) केवल विशिष्ट बिन्दुओ अथवा स्थलो के उत्तेजित करने पर ही विशिष्ट सवेदन घटित हो सकता है—यथा शीत स्थलो के उत्तेजित किए जाने पर ही शीत सवेदन हो सकता है आदि। तथा (३) ये सभी स्थल समान रूप मे सवेदनशील नही होते।

Toxophobia [टॉक्सोफोबिया] विष-भीति।

यह दुर्भीति रोग का एक प्रकार है। इसमे रोगी को अकारण यह विकृत भय होता है कि उसे कोई विष दे देगा।

देखिए—Phobia

Trait [ट्रेट] : गुण, विशेषक।

सामान्य रूप मे एक स्वतन्त्र आइटम, जो कि मानव व्यक्तित्व, समाज, सस्कृति या प्रकिया का हो। जीवविज्ञान के अनुसार इस शब्द का सम्बन्ध शारीरिक विशेषता से है, जो गुणसूत्र (chromosome) मे रहने वाल जीन (gene) द्वारा निर्धारित होते हैं।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह स्थायी व्यवहार का स्वरूप है, जिसे कि सस्कृति मे प्रफुल्लता, पवित्रता, विश्वासजन्यता, कायरता इत्यादि का नामावरण हुआ है। विचार, भाव तथा क्रिया की अर्जित या जन्मजात व्यक्तिगत विशेषता विशेषक कहलाती है। मनोविज्ञान के आधुनिक ग्रन्थो मे इस शब्द का प्रयोग इसी अर्थ मे हुआ है।

पूर्व ऐतिहासिक मानव सस्कृति मे विशेषक का अर्थ सस्कृति की उस इकाई से है, जो चाहे पार्थिव या अपार्थिव हो पर जिसमें स्वतन्त्र विस्तारण तथा सचिनकरण की क्षमता हो। जैसे कि अग्नि प्रज्वलित करने की पद्धति, सुसज्जित करने का नमूना, ईश्वर का नाम, एक विशेष मुद्रा, पाल्तू पशु, अमूल्य धातु इत्यादि। इस परिभाषा के अनुसार एक सस्कृति जिसे कि एक जटिल इकाई के रूप मे सगमित किया गया है, वह भी सस्कृति का एक विशेषक है। परन्तु जटिल सस्कृति विशेषको का बाह्य स्वरूप है तथा इस कारण से ऐसी जटिलता को कदाचित् ही विशेषक कहा जाएगा।

Training [ट्रेनिंग] प्रशिक्षण।

मानव अथवा पशु मे किसी भी आदत, योग्यता अथवा मनोवृत्ति को विकसित करने एव उन्नत बनाने के लिए नियोजित क्रमिक प्रक्रिया-माला। वृहत अर्थ मे मानव शिशुओ का शिक्षण एव पोषण।

Transfer of Training [ट्रान्सफर ऑफ ट्रेनिंग] प्रशिक्षणान्तरण।

जब एक विषय या वस्तु का शिक्षण दूसरे विषय या वस्तु के शिक्षण को प्रभावित करता है तो उसे प्रशिक्षणान्तरण कहते हैं। इस सम्बन्ध मे सबसे पहला

सुसम्बद्ध अध्ययन फेखनर (१८०१-१८८७) ने किया था।

प्रशिक्षणान्तरण दो प्रकार का होता है—

(१) अनुकूल या सकारी प्रशिक्षणान्तरण : जबकि एक वस्तु का शिक्षण दूसरी वस्तु के शिक्षण में सहायक सिद्ध होता है।

(२) प्रतिकूल या नकारी प्रशिक्षणान्तरण : जबकि एक वस्तु का अर्जन दूसरी वस्तु के अर्जन में बाधक सिद्ध होता है। इसे अभ्यस्त बाधा (Habit Interference) भी कहते हैं। इसे अभ्यास द्वारा दूर किया जा सकता है।

Transactional Psychology [ट्रांजॅक्शनल साइकॉलॉजी] : कार्य-व्यापार मनोविज्ञान।

कैंट्रिल के नेतृत्व में प्रिंसटन के मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तावित एक प्राक्कल्पना कि सभी मनोवैज्ञानिक व्यवहारों में विषयी और वस्तु ध्रुविताओं (object polarities) के बीच की परस्पर क्रिया सपृक्त होती है। प्राचीन मनोवैज्ञानिकों से भिन्न, जो व्यवहार की व्याख्या उत्तेजक के प्रति प्रतिक्रिया के होने के रूप में बात करते थे, यह दृष्टिकोण उत्तेजक द्वारा व्यवहार की वस्तु के साथ प्रतिक्रिया को प्रकाशित करने हेतु व्यापार सम्पादन के रूप में व्याख्या करता है।

Transference [ट्रान्सफरेन्स] : संक्रमण।

(फ्रायड)—मानसिक रोग उपचार सम्बन्धी मनोविश्लेषण की विधि की एक प्रमुख समस्या। इससे मन.समीक्षक के प्रति रोगी का जो आकर्षण-विकर्षण का भाव है उसका अभिव्यक्तीकरण होता है। संक्रमण दो प्रकार का होता है : अनुकूल या सकारी (Positive transference) और प्रतिकूल या नकारी (Negative transference)। अनुकूल संक्रमण से यह व्यक्त होता है कि रोगी का मन.समीक्षक के प्रति रागात्मक रुख है; प्रतिकूल संक्रमण इसके विपरीत की अवस्था है। इससे मन.समीक्षक के प्रति रोगी में जो घृणा का भाव है इसकी अभिव्यक्ति होती है। विश्लेषक के व्यक्तित्व बौद्धिक, नैतिक सफलता मे रोगी का विश्वास नही जमता।

मनोविश्लेषण की दृष्टि से संक्रमण का उद्गम इडिपस मनोग्रन्थि (Oedipus complex) मे होता है। यही कारण है कि रोगी और मन समीक्षक का सम्बन्ध बहुत-कुछ बालक और माता-पिता के सम्बन्ध की तरह ही होता है। संक्रमण की तीन अवस्थाएँ होती हैं : (१) प्रारम्भिक अवस्था, (२) संक्रमण मनस्ताप (Transference neurosis), (३) संघटन-विघटन। संक्रमण से रोग को समझना आसान हो जाता है। बचपन से तादात्म्य स्थापित होने के कारण रोगी की वासनाएँ-इच्छाएँ, जो पहले स्पष्ट नहीं थीं, स्पष्ट हो जाती हैं और उसकी भावना-ग्रन्थियों के बारे मे सूक्ष्म परिचय मिलता है। पिछली अनुभूतियों का जागृत होना, चिकित्सा की दृष्टि से विशेष लाभप्रद है। संक्रमण अतीत की स्मृति-अनुभूति को सजग अथवा जागृत करने मे उत्तेजक का कार्य करता है।

नव फ्रायडवाद मे इस धारणा पर आक्षेप हुआ है। हार्नी, सुलीवान, फ्रॉम के अनुसार संक्रमण से रोगी की अवस्था नही सुलझती; उसमे नई मनोग्रन्थियाँ पड जाती हैं।

Transference Neurosis [ट्रान्सफरेन्स न्यूरोसिस] : संक्रमण मनस्ताप।

यह धारणा मनोविश्लेषण मे मानसिक उपचार के प्रसंग मे प्रतिपादित की गई है। यह संक्रमण की दूसरी अवस्था है। इस अवस्था मे पहुँचकर रोगी की भावना का केन्द्रीयण विश्लेषक पर हो जाता है और यह रुझान एक मानसिक दुर्बलता का रूप ले लेती है। विश्लेषक से रोगी का सम्बन्ध वस्तुत: पिछले संघर्ष-भाव का एक प्रकार से नाटक है—अतीत की भावना-इच्छा की पुनरावृत्ति होती है। यह इडिपस मनोग्रन्थि (Oedipus complex) की पुनरावृत्ति है जिसमें विश्लेषक

पिता का प्रतिनिधि मात्र है।

फ्रायड के अनुसार यह मनस्ताप उपचार के लिए आवश्यक-सा है। नव फ्रायडवाद ने इसका खण्डन किया है।

Transvestism [ट्रान्सवेस्टिज्म] वस्त्र-विपर्यय।

किसी व्यक्ति की वह अवस्था, जिसमे उसकी सस्कृति मे उसके भिन्नलिंगी द्वारा उपयोग किये जाने वाले वस्त्रो के पहनने की दृढ इच्छा का होना अथवा अपनी ही जाति लिंग के वस्त्रो का इस्तेमाल करने पर आराम का अनुभव न होना अथवा भिन्नलिंगी के वस्त्रों के पहनने के साथ कामोद्दीपन के प्रादुर्भाव का दृढ साहचर्य।

Trauma, Traumatic Neurosis [ट्रामा, ट्रामेटिक न्यूरोसिस]: आघात, आघातज मनस्ताप।

इस शब्द का अर्थ है किसी भी प्रकार की चोट या घाव जो शारीरिक प्रकार की हो। यह चोट मानसिक प्रकार की भी होती है जैसे सवेगात्मक आघात जिससे मानसिक क्रियाओ मे पर्याप्त रूप से स्थायी अव्यवस्था उत्पन्न हो जाती है।

आघातज मनस्ताप एक प्रकार की मानसिक दुर्बलता है जिसका कारण सवेगात्मक प्रघात (emotional shock) है, जैसा हिस्टीरिया तथा भीति रोग मे दृष्टिगत होता है। मस्तिष्क पर आघात लगने पर भी इस प्रकार का मनस्ताप हो जाता है। उच्चवर्ग की मानसिक प्रक्रियाएँ—तर्क, चिन्तन, कल्पना—मस्तिष्क की अवस्था पर निर्भर करती हैं। तब व्यक्ति किसी समस्या के बारे मे तत्काल निर्णय देने मे असमर्थ हो जाता है, न तो वह किसी विषय पर अधिक समय तक ध्यान ही केन्द्रित कर सकता है।

Trial and Error [ट्रायल एन्ड एरर] *प्रयत्न और त्रुटि।*

मनोविज्ञान के क्षेत्र मे इस परिकल्पना का प्रथम सूत्रपात लॉयड-मार्गन ने किया। थॉर्नडाइक ने इसे वैज्ञानिक रूप दिया। इस शिक्षण विधि के अनुसार किसी समस्या के उपस्थित होने पर उसके समाधान के लिए व्यक्ति पहले अव्यवस्थित अथवा अनिर्दिष्ट प्रयास करता है और इसमे अनेक भूलें करता है। बार-बार प्रयास करने पर वह सही प्रतिक्रिया प्रकट करने मे समर्थ हो जाता है और उसे लक्ष्य की प्राप्ति हो जाती है। प्रारम्भ के प्रयासो मे उसकी अस्त-व्यस्त प्रतिक्रियाओं मे कमी हो जाती है और सही प्रतिक्रिया अपेक्षाकृत जल्दी प्रकट होने लगती है। अन्ततः परिस्थिति के उत्पन्न होते ही वह सही प्रतिक्रिया प्रकट करने मे समर्थ हो जाता है। थॉर्नडाइक ने एक ऐसा पिंजडा बनवाकर जिसके द्वार की सिटकनी हल्के सहारे से ही खुल जाती थी उसमे एक भूखी बिल्ली को बन्द कर दिया और बाहर एक मछली का टुकडा रख दिया। बिल्ली उस मछली के टुकडे को पाने के लिए बहुत उछली कूदी। इसी उछल-कूद मे एक बार अचानक बिल्ली का पजा सिटकनी पर पड गया और पिंजडे का द्वार खुल गया। पुन उसी परिस्थिति के बार-बार उपस्थित किए जाने पर बिल्ली ने हर बार पहली की अपेक्षा कम भूलें कीं और शीघ्र सफलता प्राप्त की। अन्ततोगत्वा वह बन्द किए जाते ही सिटकनी खोलकर बाहर आना सीख गई। मनोवैज्ञानिकों ने इसी प्रकार के अन्य कितने ही प्रयोग पशुओ और मानवों पर किए हैं।

प्रयत्न और त्रुटि सम्बन्धी सीखने मे चार प्रमुख बातें पाई जाती हैं: (१) प्रेरणा, (२) अव्यवस्थित प्रयास, (३) सही प्रतिक्रियाओ का सस्थापन, तथा (४) गलत प्रक्रियाओ अथवा भूलो का विस्थापन।

थॉर्नडाइक ने प्रयत्न और त्रुटि जन्य शिक्षण की व्याख्या दो प्रमुख नियमो—*अभ्यास नियम और परिणाम नियम*—के आधार पर की है (Law of Exercise तथा Law of Effect)।

यह शिक्षण-विधि यद्यपि यान्त्रिक है और

इसमें समय का अपव्यय होता है, किन्तु क्रियात्मक क्षेत्र में व्यक्ति बहुत-कुछ इसी ढंग से सीखता है।

Tropism [ट्रापिज्म] : अभिवर्तन।

यह जीवकोशिका, अंगों और अवयवों के भौतिक और रासायनिक तथ्यों की गति-प्रतिक्रिया है जिसका स्पष्टीकरण भौतिक, रासायनिक शब्दों में ही सम्भावित है। विशिष्ट रूप से यह उत्तेजन की प्रतिक्रिया मात्र है—दिशा व विस्तार उत्तेजक के प्रभाव पर सीधे निर्भर करता है। उदाहरण के लिए सूर्य की ओर सूरजमुखी फूल का घूम जाना। वक्रता की दिशा किस ओर होगी यह उत्तेजन के उद्गम पर निर्भर करता है। भौतिक और रासायनिक माध्यमों की ओर गति-प्रतिक्रिया भावात्मक है अथवा अभावात्मक, यह निर्धारित करने वाले माध्यमों पर निर्भर करता है जिसके फलस्वरूप जीव में वास्तविक गति-प्रतिक्रिया होती है। किन्तु *अभिवर्तन* वह क्रिया है जिसमें प्रयोजन, ध्येय का पूर्वज्ञान नहीं होता। प्रकृत आन्तरिक यन्त्र उत्तेजक के प्रति एक विशेष प्रकार से प्रतिक्रिया के लिए बाध्य मात्र करता है। सामान्यतः यह क्रिया पौधों, कीड़ों और नीचे की कोटि के पशुओं में मिलती है।

अभिवर्तन के सामान्य वृत्त का प्रभाव मनोविज्ञान की विचारधारा पर यह पड़ा कि व्यवहारवाद और प्रत्यक्षवाद की ओर मनोविज्ञान का विकास तीव्र गति से बढ़ा।

Type, Typology [टाइप, टाइपॉलोजी]: प्ररूप-विज्ञान।

प्ररूप शब्द का अर्थ है व्यक्तियों का समूह जिनकी विशेषताएँ या विशेषरूप सामान्य हों। अथवा मानसिक अवस्था के प्रसंग में समान रुचि रखना, एक प्रकार की प्रतिमाओं के लिए चुनौती का होना, स्वभाव में समान होना इत्यादि। शारीरिक आकार-प्रकार में भी समानता हो।

प्ररूप प्र-रूपों का अध्ययन है। आमतौर पर जीव या व्यक्ति के प्ररूपों के अध्ययन के लिए प्रयोग होता है तथा उन प्ररूपों के वर्गीकरण करने की एक खास प्रणाली। युग ने व्यक्तित्व को तीन वर्गों में बांटा है: अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी और उभयमुखी। क्रेश्मर ने शरीर-आधार पर चार वर्गों में बांटा है: पिकनिक, अथेलेटिक, एस्थेनिक और डिस्प्लैस्टिक। शैल्डन ने यह विभाजन एक्टोमोरफी, एनडोमोरफी, मेसोमोरफी में किया है।

Unconscious [अन्कॉन्शस] : अचेतन।

जर्मन भाषा में अज्ञात मन को 'अनबिवस्ट' कहते हैं। इसका अर्थ अंग्रेजी में 'अनुनोन' है अर्थात् 'अज्ञात' अथवा 'अचेतन'। अचेतन सम्पूर्ण मन का एक बड़ा, लगभग तीन-चौथाई भाग है। युग ने अचेतन की तुलना सागर से की है जिसमें चेतन मन केवल एक द्वीप के समान है। फ्रायड ने इसे एक बड़ा आइसबर्ग बतलाया है जिसका छोटा-सा भाग जल की सतह के ऊपर है और बड़ा भाग नीचे है जिससे अचेतन मन का प्रतिनिधित्व होता है। अचेतन मन द्वारा सम्पूर्ण शारीरिक और मानसिक—चेष्टात्मक, बोधात्मक और संवेगात्मक—क्रियाओं का संचालन होता है। पहले अचेतन मन से संचालित क्रियाओं का कारण भूत-प्रेत समझा जाता था। अचेतन मन एक अनुभवात्मक मानसिक शक्ति है। यह निरी कल्पना नहीं; यह अनुभव का विषय है। इसका अस्तित्व स्वप्न, संमोहनोत्तर घटनाओं (Post-hypnotic phenomena), मानसिक रोग के लक्षण, दैनिक जीवन की नित्य-प्रति की भूलें इत्यादि द्वारा भली-भांति प्रमाणित हो जाता है।

अचेतन मन गतिशील (Dynamic) है। इसमें सदा विरोधी इच्छाओं अथवा विचारों का संघर्ष चलता रहता है जिसकी चेतना नहीं रहती। अचेतन मन कभी निश्चेष्ट नहीं रहता, कुछ-न-कुछ क्रिया इसमें होती रहती है। अचेतन मन सुखेप्सा सिद्धान्त (Pleasure principle) से

संचालित होता है। वास्तविकता से इसका कोई सम्बन्ध नही। अचेतन मन सामाजिक नियमो से परिसीमित नही है। इसका काम केवल मूल प्रवृत्ति का समाधान करना है। अचेतन मन की इच्छाएँ वास्तविक रूप से अधिकतर नही प्रकट होती क्योकि इसमे संचित इच्छाएँ बहिष्कृत प्रकार की हैं। चेतन मन इन इच्छाओको प्रवृत्त रूप से प्रकट होने मे बाधा डालता है।

फ्रायड के अनुसार अचेतन मन दमित काम भाव का संग्रहालय है। युग ने अचेतन मन को दो भागो मे बाँटा है वैयक्तिक अचेतन (Personal unconscious) सामूहिक अचेतन (Collective unconscious)।

यद्यपि फ्रायड और युग ने अचेतन मन की विशेष महत्ता स्पष्ट की है और इस सम्बन्ध मे नवीन अन्वेषण किये हैं, इस शब्द की परिकल्पना का प्रादुर्भाव वस्तुत हर्बार्ट के मनोविज्ञान मे हुआ था। वैज्ञानिक और परिष्कृत रूप देने का श्रेय फ्रायड और युग को है।

देखिए—Personal Unconscious, Collective Unconscious

Unconscious Inference [अन्कॉन्शस इन्फरेन्स] अचेतन अनुमान, अचेतन अनुमिति।

अचेतन अनुमान का सिद्धान्त हेल्महोल्टज (१८२१—१८९४) के क्रमिक मनोविज्ञान का एक प्रसिद्ध भाग है। इस सिद्धान्त का आधार हेल्महोल्टज द्वारा प्रतिपादित अनुभववाद है। प्रत्यक्षण में बहुत से ऐसे अनुभवात्मक तथ्य होते हैं जिनका तात्कालिक प्रतिनिधित्व उत्तजना मे नही हो पाता। प्रत्यक्षण की वे अवस्थाएँ, जिनका उत्तेजना मे तात्कालिक प्रतिनिधित्व नही होता या जो प्रत्यक्षण मे पूर्व ज्ञात से विकास के आधार पर घटती हैं—इन अचेतन निर्धारित तथ्यो के लिए हेल्महोल्टज ने 'अचेतन अनुमान' की शब्दावली का प्रयोग किया। इसकी व्याख्या हेल्महोल्टज ने स्वय दी है "वे मानसिक क्रियाएँ जिनके द्वारा हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि कोई वस्तु-विशेष प्रकृति की किसी स्थान पर हमारे सम्मुख उपस्थित है, चेतन नही होती, अचेतन होती हैं।"

अचेतन अनुमान के बारे मे हेल्महोल्टज ने तीन प्रमुख विवरण दिये हैं (१) अचेतन अनुमान पर सामान्य रूप से रोक थाम या प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता, (२) अचेतन अनुमान अनुभव से निर्मित होता है। (३) परिणाम में अचेतन अनुमान चेतन अनुमान के सदृश है और इस प्रकार इन्डक्टिव है।

Utilitarianism [यूटिलिटेरियनिज्म]. उपयोगितावाद।

वह विचार धारा जिसमे समाज का एक मात्र ध्येय व्यवहार पर नियन्त्रण रख अधिक से-अधिक व्यक्तियो का अधिक-से-अधिक मात्रा मे उपकार करना है। इसके प्रवर्तक बेन्थम हैं। नैतिक क्षेत्र मे यह श्रेय अथवा 'शुभ' (good) की व्याख्या के लिए है जिसमें अधिक से अधिक व्यक्तियों के अधिकतम सुख का प्रतिनिधित्व होता है। उपयोगितावाद ने आर्थिक, नैतिक और सामाजिक क्षेत्र मे उस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है जिसमे व्यवहारिक उपयोगिता को ही मूल्याङ्कन का आधार माना गया है।

देखिए—Hedonism

Upright Vision [अपराइट विजन]. ऊर्ध्व दृष्टि।

यह इस प्रमेय (fact) की ओर संकेत करता है कि यद्यपि किसी भी देखी हुई वस्तु की प्रतिमा दृष्टिपटल पर उल्टे रूप में आरोपित होती है, परन्तु प्रत्यक्षकर्ता सदैव पदार्थों को ऊर्ध्वरूप (सीधा) मे ही देखता है, उल्टा नहीं।

स्ट्राटन ने ऐसे सालों के एक क्रम को इस्तेमाल करते हुए प्रयोग किया जोकि दृष्टिपटलीय प्रतिमा को सीधा ही रखते थे। उन्होंने दृष्टिचेष्टा समन्वय मे परिवर्तनो को नोट किया। इस प्रकार ऊर्ध्व-

दृष्टि समन्वय का कार्य माना जाने लगा। अवयवी मनोवैज्ञानिकों ने इस तथ्य को सापेक्षिक प्रस्तुति (Relational presentation) सिद्धान्त पर आधारित करके तथा ज्यामितीय सिद्धान्त (Geometrical principle), जिसमें वस्तुएँ उपस्थापित की गई हैं और कार्यकारी विस्तार (Functional space) जिसमे कि वे वस्तुएँ कार्यकारी रूप व सरूपण रूप (Contigurational) से देखी गई है, के बीच अन्तर करते हुए इसकी व्याख्या की।

Valence [वैलेन्स] : कर्षणशक्ति।

लेविन के सिद्धान्त मे एक महत्वपूर्ण धारणा जो मनोवैज्ञानिक परिवेश (Psychological environment) मे उपस्थित वस्तुओ की विशेषता है। व्यक्ति के लिए किसी वस्तु की ओर आकर्षण (positive valence) या उसकी ओर से विकर्षण (negative valence) रहता है। वह वस्तु, जो व्यक्ति-विशेष के लिए वांछित तथा आकर्षक होती है—उसमे अनुकूल कर्षण या आकर्षण शक्ति होती है; जो वस्तु व्यक्ति के लिए विरोधी तथा अवांछित है—उस वस्तु में उसके लिए विकर्षण शक्ति रहती है। आकर्षण शक्ति का अर्थ किसी ओर खिचाव है—व्यक्ति किसी वस्तु की ओर आकर्षित होता है और उसे प्राप्त करने का साधन जुटाता है। विकर्षण शक्ति का अर्थ है—उससे दूर भागना। जब किसी वस्तु में आकर्षण शक्ति मात्र रहती है या विकर्षण तो समस्या नही उठती। आकर्षण और विकर्षण दोनों के रहने पर समस्या उठती है।

लेविन की विचारधारा के अनुसार व्यवहार की दिशा का निर्धारण वस्तु की कर्षण-शक्ति से होता है और वातावरण की वस्तुओं की आकर्षण या विकर्षण शक्ति व्यक्ति की माँगों (need) पर निर्भर करती है। (१) असंतुष्ट अवस्था में माँग किसी वस्तु के लिए आकर्षण शक्ति निर्धारित करती है जिससे माँग की तृप्ति (satiation) हो पाएगी। (२) अत्यधिक सन्तुष्ट दशा में माँग किसी वस्तु के लिए विकर्षण शक्ति निर्धारित करती है।

Validity [वैलिडिटी] : वैधता।

किसी मनोवैज्ञानिक परीक्षण को वैज्ञानिक दृष्टि से स्वीकृत होने के लिए एक आवश्यक गुण। उसके द्वारा उसी गुण के मापन की मात्रा जिस गुण के मापन के लिए उसका निर्माण तथा उपयोग किया गया है। किसी परीक्षण की वैधता के मापन में प्रायः बहुत से व्यक्तियों के उस परीक्षण पर प्राप्त अकों का तथा जिस गुण के मापी के रूप में उसका प्रयोग किया गया है उसी गुण के किसी अन्य लक्षण में उन्ही व्यक्तियों के मापों का सांख्यिकीय सहसम्बन्ध ज्ञात किया जाता है। प्राप्त सहसम्बन्ध गुणांक को वैधता गुणाक कहते हैं।

Variable [वैरिएबल] : चर, परिवर्त्य।

मनोवैज्ञानिक प्रयोग मे वे परिस्थितियाँ जिनको प्रयोजक किसी नियम अथवा योजना के अनुसार परिवर्तित करता है और जिनके परिवर्तन के परिणाम का प्रेक्षण करना प्रयोग का उद्देश्य है। प्रायः प्रयोगों में एक परिवर्त्य नियम का व्यवहार हुआ है, अर्थात् एक प्रायोगिक परिवर्त्य के अतिरिक्त सभी परिस्थितियों को स्थिर रखा जाता है और तब प्रयोग-फलों में जो परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं उसे उस परिवर्त्य से ही उत्पन्न समझ लिया जाता है। कभी-कभी दो अथवा इससे भी अधिक परिस्थितियों का भी परिवर्तन किया जाता है। तब प्रयोग का अभियोजन इस प्रकार का होना पड़ता है कि प्रत्येक परिवर्त्य का काल स्पष्टतया अलग-अलग प्रेक्ष्य हो जाए।

Variance [वैरिएन्स] : प्रसरण।

किसी प्रदत्त वर्ग के अन्दर व्यक्तियों के परस्पर अन्तर का एक माप जो प्रदत्त वर्ग के वितरण के मानक विचलन के वर्ग के रूप में होता है। यह व्यक्तिगत विचलनों के वर्गों के योग का माध्य होता है। अर्थात् यदि इस योग में सब व्यक्तियों का बराबर

भाग होता तो उस भाग का परिमाण प्रसरण मानक विचलन का वर्ग होता है और दोनो ही से विक्षेपण (dispersion) की मात्रा का संकेत प्राप्त होता है। किसी परीक्षण मे मापित व्यक्तियो के अको का जितना ही अधिक विचरण होता है, उतना ही प्रत्येक व्यक्ति का मापन अधिक यथार्थ समझा जाता है। इसके दो अश होते हैं— सत्यांश प्रसरण एव त्रुट्यांश प्रसरण। सम्पूर्ण प्रसरण को प्रदत्तजनक परीक्षण की विश्वस्तता से गुणा करके ज्ञात किया जा सकता है। शेष प्रसरण त्रुट्यांश प्रसरण होगा। इसे सीधे ज्ञात करने के लिए परीक्षण की विश्वस्तता को १ से घटाकर शेष को सम्पूर्ण प्रसरण से गुणा करना चाहिए।

Vector Psychology [वेक्टर साइकॉलोजी] · सदिश मनोविज्ञान।

प्रसारक मनोविज्ञान, क्षेत्रीय अथवा ज्यामितिक मनोविज्ञान का एक अश-विशेष जो ज्यामितिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत आने वाली समस्याओ का समाधान शुद्ध क्षेत्रीय आधारो पर न कर उसमे परिस्थितियो की गत्यात्मकता का भी योग देता है। भौतिकी एव गणित में 'वेक्टर' का अर्थ निर्दिष्ट प्रसार अथवा किसी विशेष दिशा की ओर प्रसार है— यथा, वेग (Velocity)। १९वी शती मे भौतिकशास्त्र की प्रगति से प्रभावित मनोवैज्ञानिको ने मनोवैज्ञानिक तथ्यो का भी इन्हीं भौतिक प्रत्ययो के आधार पर विश्लेषण करने का प्रयास किया। फलत क्षेत्र सिद्धान्त (Field theory) अस्तित्व मे आया। मानव के मानसिक जीवन को जीवन-प्रसार-क्षेत्र मे, विभिन्न शक्तियों में सघर्षो एव तनावों की उपज माना जाने लगा। आधुनिक मनोविज्ञान मे इस दृष्टिकोण को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

देखिए—Field theory

Verbal Test [वरबल टैस्ट] शब्द-निष्ठ परीक्षण।

बुद्धिमाप में प्रयुक्त विशेष प्रकार के लिखित अथवा मौखिक परीक्षण जिनमे भाषा का उपयोग होता है। यथा, अधूरे वाक्यो को पूरा करना, समानता अथवा असमानता बताना, रिक्त स्थानो की पूर्ति करना।

Vierordt's Law [वीरोर्डट लॉ] वीरोर्डट-नियम।

एक सिद्धान्त, जोकि बतलाता है कि जितना ही कोई शरीर का अग गतिशील होता है, उसके चरम पर का द्वि-बिन्दु देहली (two pointlimen) उतना ही कम होता है। जैसे, कन्धे से उँगली के पोरो की ओर जितना ही बढते जाएँगे, उतना ही द्वि बिन्दु देहली कम होता जाएगा। अर्थात् यह सामान्यीकरण कि जितना ही शरीर का अग गतिशील होगा, उतना ही कम उसका द्वि बिन्दु देहली (two point threshold) होगा।

Visceral Drive [विसेरल ड्राइव] : आतरागी अतर्नोद।

शरीर के अन्दर होने वाली शारीरिक प्रक्रियाओ पर आधारित व शारीरिक आवश्यकताओ पर आधारित आतरागो (Visceral organ) द्वारा क्रिया प्रेरित अतर्नोद। यह पद सामान्यत वही अर्थ न रखते हुए भी, बहुत प्रयोग होता है। जैसे— शरीर की गर्म रहने की प्रवृत्ति को आतरागी कहा जा सकता है, यद्यपि इसमे स्पर्श तत्व काफी महत्वशील हैं। थकावट को भी अवसर आतरागी कहा जाता है जो कि सम्भवत एकदेशीय तथ्य है।

Visual Sensation [विजुअल सेनसेशन] दृष्टि सवेदन, चाक्षुष सवेदन।

नेत्रो के माध्यम से मस्तिष्क के दृष्टिकेन्द्र पर होने वाली प्रकाशतरगो की प्रारम्भिक प्रतिक्रिया जिसमे उनकी उपस्थिति का केवल आभास मात्र होता है।

नेत्रो की बनावट—इसमे तीन पटल होते हैं—(१) दृढ़पटल (Sclerotic) इसका अग्रभाग श्वेतमडल (Cornea) पारदर्शी होता है और शेष अपारदर्शी। (२) रक्तकपटल (Choroid) · काले या भूरे रग का

होता है। इसका कुछ भाग श्वेतमंडल में से दिखाई देता है जिसे परितारिका (Iris) कहते हैं। परितारिका के मध्य में एक रिक्त स्थान है जो 'तारा' कहलाता है। तारा के नीचे कैमरे में लगे लेन्स के समान 'ताल' होता है। (३) अन्तरीय या दृष्टि-पटल (Retina) ; आँख में अर्धचन्द्राकार से कुछ अधिक भाग में फैला पीछे की ओर स्थित अत्यधिक सूक्ष्म तन्त्रिकाओं का एक घना पतला जाल है। इसी में अधकार और प्रकाश के ग्राहक 'शलाका' (Rods) और रंगों के ग्राहक 'शकु' (Cones) रहते हैं। दृष्टि-पटल के लगभग मध्य में स्थित पीत स्थल (Yellow spot) नामक स्थान पर शकु अत्यधिक मात्रा में पाए जाते हैं। यहाँ से दृष्टि-संवेदन अत्यधिक स्पष्ट होता है। दृष्टि-पटल की तन्त्रिका नेत्र के पृष्ठ भाग में जहाँ से 'दृष्टि-नाड़ी' के रूप में संगठित हो मस्तिष्क की ओर जाते हैं ठीक उसी स्थल पर अन्ध बिन्दु (Blind spot) नामक एक स्थान है जहाँ केवल अत्यधिक तीव्र प्रकाश की प्रतिक्रिया हो सकती है। नेत्र के शेष भाग में एक प्रकार का जल-द्रव भरा रहता है।

किसी वस्तु के धरातल से प्रत्यावर्तित प्रकाश-तरंगें श्वेतमंडल से छनकर तारा के माध्यम से ताल में से होती हुई जब दृष्टि-पटल पर पड़ती हैं और वह उन्हे तन्त्रिका-आवेग के रूप में परिवर्तित कर दृष्टि-नाड़ी द्वारा मस्तिष्क के दृष्टि-केन्द्र में पहुँचा देता है तभी दृष्टि संवेदन होता है।

दृष्टि-संवेदन दो प्रकार से होता है—रंगों का संवेदन (Chromatic) और रंगहीन संवेदन (Achromatic)। भिन्न-भिन्न लम्बाइयों की प्रकाश-तरंगों से पृथक्-पृथक् शुद्ध रंगों की, उनके विभिन्न अनुपात में मिश्रण से अशुद्ध रंगों की और सबके मिश्रण से रंगहीन संवेदन होता है। प्रकाश-तरंगों की चौड़ाई या अन्तर रंगों की चमक में अन्तर उत्पन्न कर देता है।

Vitalism [वाइटॅलिज्म] : जीववाद। यह यन्त्रवाद का विरोधी दार्शनिक एवं जीववादी सिद्धान्त है। जीववाद में जीवन-तथ्यों के मूल में एक अभौतिक माध्य का अस्तित्व माना गया है। इस सिद्धान्त के अनुसार जीवन की व्याख्या के लिए भौतिक सिद्धान्त ही पर्याप्त नहीं है। जीवन की क्रिया-प्रतिक्रिया यान्त्रिक प्रतिक्रियाओं से मूलतः भिन्न संस्थापित हुई है। जीववाद में अनुभूतियों की विशद व्याख्या-विश्लेषण के स्थान पर उनकी समृद्धता को ही मुख्य माना गया है।

जोहनेस मिलर ने जीववाद, मनोविज्ञान का पहले-पहल प्रतिपादन किया। उन्होंने मानसिक सिद्धान्त, जिसका केन्द्र मस्तिष्क है और जिसके अनुसार जीवन शक्ति समस्त शरीर में व्याप्त है, में भेद स्पष्ट किया। जीवित शरीर में वैद्युत घटकों—तथ्यों का अन्वेषण जीववाद की विशेष देन है। मैकडूगल का 'अंतर्नोद सिद्धान्त' इस सम्प्रदाय का प्रबलतम समर्थक है। इसके बाद ही मनोविज्ञान में मैकडूगल-विरोधी एव दूसरी विरोधी भावना का जोर हुआ। वस्तुतः जीवन की क्रियाएँ-प्रतिक्रियाएँ यान्त्रिक गतियों की अपेक्षा इतनी जटिल हैं कि अवयव की तुलना यन्त्र से करना उचित नहीं है। न तो जीववाद में प्रतिपादित आधारभूत खण्डता पर जोर देने से कोई लाभ है। आधुनिक दृष्टिकोण समग्रतावादी है।

Vocational Aptitude [वोकेशनल एप्टिट्यूड] : व्यवसायिक अभिक्षमता।

व्यक्ति की वह वर्तमान योग्यता जिसके आधार पर यह निर्धारित किया जा सके कि किसी विशेष व्यवसाय में पड़ने से वह कहाँ तक सफलता प्राप्त कर सकेगा। किसी व्यक्ति में इस प्रकार की व्यवसायिक अभिक्षमता की परीक्षा के लिए तीन प्रकार के भविष्यसूचक मनोपरीक्षण काम में लाए जा सकते है—(१) ऐसे परीक्षण जिनके द्वारा उस व्यवसाय-विशेष में काम आने वाले गुणों का मापन हो जाए। (२) ऐसे परीक्षण जिनके द्वारा व्यक्ति के व्यवसाय से सम्बन्धित शब्दज्ञान तथा सामान्य

तथ्यज्ञान का मापन हो सके। (३) ऐसे परीक्षण जिनमे व्यक्ति को उस व्यवसाय के काम म डाल कर देखे कि वह उनमे कहाँ तक सफल हुआ है।

व्यक्तियो की व्यवसायिक अभिक्षमता जानने की दो प्रमुख व्यवहारिक उपयोगिताएँ हैं (१) इसके आधार पर विनिष्ट व्यवसायो मे नौकरी देने के लिए व्यक्ति चुने जा सकते हैं, (२) व्यक्तियो को अपनी अपनी अभिक्षमता के अनुसार अलग अलग विशिष्ट व्यवसायो को सीखने अथवा करने का निर्देश दिया जा सकता है।

Vocational Guidance [वोकेशनल गाइडेन्स] व्यवसायिक निर्देशन।

नैशनल इंस्टिट्यूट ऑव साइकॉलोजी मे व्यवसायिक निर्देशन का पहला प्रयोग हुआ। व्यवसायिक निर्देशन का अर्थ है श्रमिक की बुद्धि (Intelligence), अभिक्षमता (Aptitude) और अभिरुचि (Interest) की परख करके यह निर्देशन देना कि वह व्यक्ति विशेष किस प्रकार के व्यवसाय की शिक्षा लेने योग्य है। अथवा, आगे चलकर वह किस व्यवसाय को सफलता से सपादित कर सकता है। निर्देशन व्यक्तिगत निर्णय पर आधारित नही होता। इसकी वैज्ञानिक पृष्ठभूमि होती है। व्यवसायिक निर्देशन आवश्यक है। व्यवसायिक निर्देशन की योजना रहने पर व्यक्ति अपने भविष्य म अधिक समायोजन ला पाता है। जो व्यक्ति डॉक्टर बनने योग्य है उसे ही डॉक्टरी की शिक्षा लेना हितकारी है। जिसमे इजीनियर बनने की योग्यता—अभिरुचि है उसे इस विषय का ज्ञान उपलब्ध करना है। वस्तुत मानव मे वैयक्तिक भेद है। सगीत-योग्यता (Musical ability) कारखाने मे मशीन पर काम करने वाले के लिए निरर्थक है। गति योग्यता (Motor ability) की विशेषता की आवश्यकता एक अध्यापक के लिए नहीं होती।

देखिए—Guidance

Vocational Psychology [वोकेशनल साइकॉलोजी] व्यवसायिक मनोविज्ञान।

मनोविज्ञान की वह शाखा जिसका उद्देश्य व्यवसायो के स्वरूप एव उनके लिए उपयुक्त व्यक्तियो के चुनाव की प्रणाली का वैज्ञानिक आविष्कार करना है। इसके दो प्रमुख पक्ष हैं व्यवसायिक निर्देशन (Vocational guidance) एव व्यवसायिक चुनाव (Vocational selection)।

देखिए—Vocational Guidance, Vocational Selection

Vocational Selection [वोकेशनल सेलेक्शन] व्यवसायिक चुनाव।

किसी व्यवसाय विशेष के लिए आए आवेदको के समूह मे से उसमे अधिक सफल होने वाले व्यक्ति का परीक्षणों द्वारा चुनाव, जिसमें उस व्यवसाय को करने की योग्यता है। इसमे मुख्य दो बातें हैं (१) जिन व्यक्तियों मे से चुनाव करना है उनकी व्यक्तिगत विशेषता का अन्वेषण करना तथा यह कि (२) उस व्यवसाय मे कौन-कौन सी विशेषताएँ अनिवार्य हैं। यह व्यवसायिक निर्देशन (Vocational Guidance) मे भी आवश्यक होता है। भेद इतना है —व्यवसायिक चुनाव मे श्रमिक का चुनाव होता है, व्यवसायिक निर्देशन मे व्यवसाय का व्यक्ति के लिए चुनाव होता है। उपयुक्त व्यवसायिक चुनाव के लिए व्यक्ति की बुद्धि, अभिरुचि, व्यक्तित्व-विशेषता शरीर का डील-डौल, आयु, वर्ग शिक्षा का स्तर, अनुभव, आर्थिक-सामाजिक अवस्था इत्यादि का पता लगाना अनिवार्य है।

उपयुक्त व्यवसायिक चुनाव से लाभ होता है। श्रमिको को उनकी बुद्धि, स्वभाव अभिरुचि के अनुकूल व्यवसाय मिलता है और इससे उनकी दक्षता (Efficiency) मे अभिवृद्धि होती है। उपयुक्त व्यवसायिक चुनाव से उद्योगपति को भी लाभ होता है। श्रमिक मे दक्षता की वृद्धि होने पर उत्पादन अधिक होता है। दोषयुक्त होने पर श्रमिक की दक्षता पर

आघात होता है। वह एक व्यवसाय त्यज दूसरा व्यवसाय लेता रहता है।

व्यवसायिक चुनाव के लिए तीन विधियाँ हैं—(१) परिचय,(२)व्यक्तिगत विवरण और (३) नियुक्ति परीक्षाएँ।

Volition [वोलिशन] : सकल्प।

(१) किसी भी कार्यक्रम के बारे मे निर्णय देने तथा उसमे अग्रसर होने की प्रक्रिया। (२) किसी निश्चित लक्ष्य की ओर अग्रसर चेतन प्रक्रिया अथवा एक जटिल अनुभूति जिसमे गति-सवेदनी तथा लक्ष्य की प्रधानता पाई जाती है।

देखिए—Will, Voluntary action.

Voluntary activity [वॉलन्टरी एक्टिविटी] : ऐच्छिक क्रिया।

वह क्रिया जिसे व्यक्ति अपने सकल्प से सम्पादित करता है। ऐसी क्रिया मे व्यक्ति के सामने एक लक्ष्य होता है और वह उस लक्ष्य की प्राप्ति के प्रति बराबर सचेष्ट रहता है।

ऐच्छिक क्रिया के पाँच स्तर हैं :

(१) क्रिया का उद्‌भव—व्यक्ति में किसी लक्ष्य-प्राप्ति की लालसा अथवा प्रेरणा का उत्पन्न होना।

(२) प्रेरणाओं का संघर्ष - मानव अपने सभी लक्ष्यों को आसानी से नहीं प्राप्त कर सकता। इनकी पूर्ति में प्राय: तीन प्रकार की बाधाएँ सामने आती हैं :(क)व्यक्ति की अपनी न्यूनताएँ (ख) सामाजिक, नैतिक अथवा वैधानिक बन्धन (ग) दो या अधिक ऐसी प्रेरणाओं का एक साथ उदय होना जिनकी साथ-साथ पूर्ति संभव न हो। ऐसी स्थिति में व्यक्ति में एक प्रकार का मानसिक सघर्ष उत्पन्न हो जाता है।

(३) विचार करना—सघर्ष की स्थिति में विभिन्न विकल्पों के सभी पहलुओं पर तरह-तरह से विचार करना।

(४) निर्णय अथवा चुनाव—विभिन्न विकल्पो पर विचार करके किसी एक विकल्प को कार्यान्वित करने का निर्णय करना। इस निर्णय के तीन आधार हो सकते हैं—(क) व्यक्ति का अपना विवेक (ख) आदेश अथवा ऊब तथा (ग) किसी अन्य बाह्य सत्ता का प्रभाव।

(५) सकल्प—किसी एक विकल्प को कार्यान्वित करने का निर्णय कर लेने के उपरान्त उसकी पूर्ति के लिए दृढ़-प्रतिज्ञ होना।

Voluntarism [वॉलन्टॅरिज्म] : संकल्पवाद।

सकल्पवाद वह दार्शनिक दृष्टिकोण है जिसमें सत्य का वास्तविक तथ्य 'संकल्प' माना गया है। मनोविज्ञान में संकल्पवाद वह सम्प्रदाय है जिसके अनुसार मुख्य प्रारम्भिक मानसिक तथ्य 'सकल्प' है। प्रयत्नशील वृत्ति, इच्छा और क्रिया जो भावनायुक्त है और जिनपर निर्भर करना चाहिए। संकल्पवाद में सभी मानसिक प्रक्रियाएँ, सहजक्रिया तक, स्वभाव और प्रकृति मे ऐच्छिक मानी गई हैं। क्रियाएँ जो बहुत काल तक पाशविक इच्छाओं का प्रत्यक्ष अभिव्यक्तीकरण करती रहती हैं, यांत्रिक हो जाती हैं और इस प्रकार उनकी ऐच्छिक विशेषता दृष्टिगत नहीं हो पाती। मनोविज्ञान में 'संकल्पवाद' ऐच्छिक दर्शन का ही प्रभाव है।

Wais : वेक्सलर प्रौढ़ बुद्धि मापनी।

प्रौढ़ व्यक्तियों की बुद्धि के मापन का मानप्राप्त उपकरण। यह आयु मापनी नहीं, अंक मापनी है। इसमें ६ भाषात्मक तथा ५ क्रियात्मक उपपरीक्षण हैं। योग्यता का पूरा विस्तार माप्य है और ० से १९ तक तुल्य अंक प्राप्य हैं। भाषात्मक उपपरीक्षण सामान्य ज्ञान, समझ, अंकगणित, अंक दोहरावन, समानता ग्रहण तथा शब्दज्ञान के हैं। क्रियात्मक उपपरीक्षण चित्रपूर्ति, चित्रविन्यास, वस्तु-सयोजन, अभिकल्पानुसरण तथा अंक-चिह्न-प्रतिस्थापन के हैं। माप्य व्यक्ति प्रत्येक उपपरीक्षण के प्रथम पद से आरम्भ करके जितने पद कर सके, करता है। मानसिक

आयु ज्ञात करने की आवश्यकता नही होती, सीधे उसके कुल प्राप्तांक से ही उसकी मापात्मक निश्चयात्मक तथा सामान्य बुद्धिलब्धि का पता चल जाता है। उसकी स्वभावमूलक प्रतिक्रियाओ का तथा विशिष्ट पदो के उत्तर मे असाधारण प्रतिक्रियाओ का प्रकारात्मक प्रेक्षण भी किया जाता है। इस प्रकार व्यावहारिक जीवन म काम आने वाली बुद्धि का सर्वांगी मापन हो जाता है और मानसिक दोष अथवा अन्य मनोनिदानात्मक तथ्यों का पता चल जाता है।

War Neurosis [वार न्यूरोसिस] युद्ध-मनस्ताप।

यह दोष सैनिकों सम्बन्धी है और इसका सम्बन्ध मानसिक अवस्था से है। यह मनस्ताप स्वभाव जन्य है—मन की दुर्बलता है, परिस्थितिजन्य नही है। जो स्वभाव से दृढ प्रकृति नहीं हैं वे तात्कालिक परिस्थिति के दृढ होते ही चलल-उद्वलित हो जाते हैं। प्रथम महायुद्ध के पश्चात् सैनिकों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करके यह निष्कर्ष निकला कि अनेक सैनिकों म युद्ध मनस्ताप होता है जिसम वे शरीर सम्बन्धी असमर्थता का बहाना करते हैं और रणक्षेत्र से भाग खड़े होते हैं। जिनम यह मानसिक दुर्बलता है वे सैनिक पद के लिए सर्वथा अयोग्य हैं। अनेक रोगो का बहाना युद्धस्थल से मुक्त होने का आयोजन मात्र है। युद्ध की भया वह स्थिति से निर्बल होना मानसिक दुर्बलता मात्र है।

युद्ध-मनस्ताप स्वतन्त्र प्रकार की मानसिक दुर्बलता नहीं है। भावात्मक अस्थिरता होने पर कुछ विशेष परिस्थितियो मे व्यक्ति उद्वेलित मात्र हो जाता है।

Warm up Period [वार्म अप पीरियड] उत्साहकारी काल।

किसी भी कार्य के आरम्भ का वह अन्तकाल जिसमें परीक्षार्थी प्रारम्भिक समायोजन को प्राप्त करता है। यह कार्य वक्र की वह स्थिति है जिसमे जीव बढती हुई क्षमता (Efficiency) दिखाता है।

Waver Bray Effect [ववर-ब्रे एफेक्ट] वेवर ब्रे प्रभाव।

उद्दीप्त करने पर कान के अन्दर के श्रवण-शंख नाडी (Cohlea) मे उत्पन्न हुई विद्युत्यात्मक अनुक्रिया का श्रवण-नाडी के क्रिया विभवों (Action potential) के साथ सन्निहित होना। यह तथ्य श्रवण शंख नाडी को प्रदत्त उद्दीपक गुणों को प्रतिबिम्बित करता है, ऐसा विश्वास किया जाता है।

Weighting [वेटिंग] बलनिर्धारण।

किसी परीक्षण के विभिन्न भागो अथवा प्रश्नो के लिए अंको का भार निर्धारित करना। इसके विषय मे मनोमितिज्ञों (Psychometrics) में बहुत वाद-विवाद रहा है। बहुधा किसी परीक्षण के किसी भाग के भार का निर्णय परीक्षण-निर्माता की दृष्टि मे उसके सापेक्ष महत्व के आधार पर किया जाता है। इससे श्रेष्ठतर यह है कि परीक्षा के प्रयोगात्मक उपयोग के आधार पर उसके प्रत्येक भाग मे प्राप्त अंकों का वितरण ज्ञात कर लिया जाए और तब सर्वाधिक मानक विचलन वाले भाग को सर्वाधिक बल दिया जाए। इससे मापन अधिक यथार्थ हो जाता है, क्योकि इस प्रकार सम्पूर्ण परीक्षण का विश्लेषण अधिक विस्तृत हो जाता है परन्तु भारित अंकों का अभारित अंको से सह-सम्बन्ध इतना अधिक पाया गया है और बलनिर्धारण से परीक्षण की विश्वस्तता इतनी कम मात्रा मे बढती पाई गई है कि इसके लिए जितनी जटिल क्रियाओ की आवश्यकता पड़ती है वह प्राय इसके योग्य नहीं समझी जातीं। दूसरे, बलन क्रियाएँ जितनी जटिल हो जाएँगी उतनी ही त्रुटि की सम्भावना भी बढती जाएगी और समय का व्यय भी बढ जाएगा। इसलिए व्यवहारिक दृष्टिकोण से लिखित परीक्षणों मे तो बलनिर्धारण का प्रयत्न न करना ही उचित समझा गया है। हाँ, लिखित परीक्षण के साथ जब अंतर्वार्ता, क्रियात्मक परीक्षण, आकलन आदि भी करना

हो तब अवश्य इन सबकी तुलना में लिखित परीक्षण का भार निर्धारित करके ध्यान में रखना पड़ेगा। साधारण परिस्थितियों में लिखित परीक्षण का ही सर्वाधिक विशेषण होता है और यदि इससे मापन विषय की सबसे अधिक महत्वपूर्ण अंकों की परीक्षा हो जाती है तो इसी को सर्वाधिक भार देना चाहिए।

Weight Lifting Experiment [वेट लिफ्टिंग एक्सपेरिमेंट] : भारोत्तलन प्रयोग।

एक प्रयोग जिसमें परीक्षार्थी भिन्न-भिन्न मामूली मात्रा के भारों को, आसानी से, हाथ से उठाकर उनके बीच मात्राओं में पाए जाने वाले अन्तर के बारे में निर्णय करने का प्रयास करता है।

Whole and Part Learning [होल एण्ड पार्ट लर्निंग] : सम्पूर्ण और खण्ड अधिगम।

किसी भी विषय को सीखने के लिए प्रत्येक प्रयास में उसे आद्योपान्त पढ़ना 'सम्पूर्ण-विधि' है और उसे कुछ भागों में बाँटकर प्रत्येक भाग को अलग-अलग स्मरण करने का प्रयास 'खड-विधि' है। सीखने में इन दोनों विधियों में से कौन अधिक उपयोगी है—यह जानने के लिए मनोवैज्ञानिकों ने अनेकानेक प्रयोग किए हैं। इस सम्बन्ध में लोटीस्टेफेन्स, पेख-स्टाइन, विंच, रीड आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। किंतु इनके प्रयोग-परिणामों में समरसता नहीं। कुछ खड-विधि का समर्थन करते हैं; कुछ सपूर्ण विधि का।

वस्तुतः सीखने में प्रगतिशील आंशिक विधि (Progressive part method) विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध हुई है। इसके अन्तर्गत विषय-वस्तु को सुविधानुसार उपयुक्त खंडों में विभक्त कर प्रत्येक खण्ड को एक-दूसरे से सम्बद्ध करते हुए स्मरण करने का प्रयास किया जाता है।

Wishful thinking [विशफुल थिंकिंग]: इच्छानुकल्पन, इच्छाकल्पित चिन्तन।

इस विचार की स्वीकृति कि परिस्थितियाँ वैसी ही हैं जैसा कि व्यक्ति उन्हें चाहता है। यह कल्पना-प्रधान है। चिन्तन प्राय दो प्रकार का माना जाता है—वास्तविक और अवास्तविक। वास्तविक चिन्तन में व्यक्ति-वस्तु तथा उनके सम्बन्धों के बारे मे वैसा ही सोचा जाता है—जैसा कि वे वस्तुतः हैं। अवास्तविक चिन्तन में वास्तविकता की अवहेलना कर अपने मनोनुकूल व्यक्ति सोचता है। इच्छाकल्पित चिन्तन अवास्तविक चिन्तन का ही एक रूप है।

देखिए—Phontesy.

Will [विल] : इच्छाशक्ति, सकल्प।

विलम्बित चेतन अनुक्रिया (delayed conscious response) से सम्बन्धित मानसिक प्रक्रिया या प्रक्रियाएँ; किसी भी कार्य-विशेष में प्रवृत्त होने का चेतन-निर्णय; एक प्रकार की मानसिक तत्परता जिसमें गतियों की अनुभूति और यह ज्ञान कि वे गतियाँ सीधे उस तत्परता की ही उपज हैं (किसी बाह्य शक्ति के प्रभावस्वरूप नहीं)। संकल्प कोई शक्ति-विशेष नहीं प्रत्युत कार्य करने की एक प्रणाली है। संघर्षात्मक प्रेरणाओं के बीच निर्णय करना, किसी अवरोध को दूर करने के लिए प्रयास करना, किसी साध्य की प्राप्ति के लिए साधन-विशेष को अपनाना ही संकल्प करना कहलाता है। इच्छा-शक्ति (will power)—उपयुक्त उद्दीपकों तथा परिस्थितियों की सहायता से दूसरों की इच्छाओं, रुचियों तथा वासनाओं को जगाकर उन्हें अपने नियंत्रण में रख मनोनुकूल कार्य कराने अथवा स्वयं अपने पर ही नियंत्रण रखने की प्रवृत्ति। दुर्बल संकल्प (Abulia)—क्रियाओं में प्रवृत्त होने के लिए इच्छाओं अथवा प्रेरणाओं का पूर्ण अभाव। असाधारण उत्साहहीनता। इसके पीछे प्रायः आत्महीनता की भावना छिपी रहती है। इच्छा-स्वभाव परीक्षण (will temperament test)—जून ई० डाउने द्वारा

निर्धारित विभिन्न श्रेणियों के परीक्षण जो व्यक्ति की चेष्टा तथा धातुस्वभाव सम्बन्धी गुणात्मक भिन्नताओं के कुछ पक्षों पर प्रकाश डालते हैं।

Wish, Wish fulfilment [विश, विश फुल्फिलमेंट] अभिलाषा, अभिलाषा पूर्ति।

सामान्यतः इच्छा से संकेत किसी इच्छित वस्तु या स्थिति से है जिसकी प्राप्ति की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति मानव से होती है। फ्रायड और उनके समर्थकों ने इस शब्द का प्रयोग काम के अर्थ में किया है—कोई विशेष प्रवृत्ति धारा या प्रेरक शक्ति (motive force) जिसका स्वयं अस्तित्व और स्थान है। फ्रायड के अनुसार इच्छा सदैव काम सम्बन्धी होती है। अभिलाषा-पूर्ति (Wish fulfilment) (फ्रायड)—अभिलाषा या प्रवृत्ति विशेष, जो जान मे हो या अजान मे, स्वीकृत हो या अस्वीकृत हो, चेतन व्यक्तित्व को मान्य हो या अमान्य, उसकी पूर्ति। यह मानसिक जगत् मे अतृप्त तथा दमित कामनाओं की पूर्ति की ओर इंगित करता है। यथा—किसी अभाव मे होने पर व्यक्ति का यह कल्पना करना अथवा स्वप्न देखना कि वह अपने 'प्रिय' के साथ मुक्त रूप से भावना का आदान-प्रदान कर रहा है।

फ्रायड का स्वप्न का अभिलाषा-पूर्ति सिद्धान्त प्रसिद्ध है। अपने प्रारम्भ के ग्रन्थों मे फ्रायड ने स्वप्न को 'अभिलाषा पूर्ति' मात्र माना है। पिछले ग्रन्थो मे एक नई व्याख्या दी कि यह 'आवृत्ति बाध्यता' (Repetition compulsion) है। फ्रायड के अभिलाषा पूर्ति सिद्धान्त का अन्य मनोवैज्ञानिकों ने खंडन किया है। यह निर्मूल है कि सभी स्वप्न अभिलाषा पूर्ति मात्र हैं।

Wit [विट] नर्म।

साधारणतः मौखिक भाषा में प्रकाशित विचारों का ऐसा अप्रत्याशित तथा चातुर्यपूर्ण साहचर्य जो, जिस व्यक्ति की ओर वह इंगित होता है उसके अतिरिक्त सभी को आश्चर्य और आह्लाद उत्पन्न करता है। फ्रायड के अनुसार इस प्रकार की उक्तियाँ वक्ता की अज्ञात प्रेरणाओं की उपज होती हैं और वे इंगित व्यक्ति की ओर उसके दृष्टिकोण की परिचायक हैं।

Word Association Test [वर्ड एसोसिएशन टेस्ट]: शब्द साहचर्य परीक्षण।

(युग)—इस परीक्षण मे १०० शब्दों की एक सूची रखी गई है। इस सूची मे कुछ शब्द अनिर्णायक हैं और कुछ निर्णायक। प्रयोज्य सूची मे रखे शब्दों की प्रतिक्रिया बारी-बारी से देनी पड़ती है। इस प्रतिक्रिया द्वारा वास्तविक अपराधी का भी पता लगाने का प्रयास किया जाता है। इसमे तात्कालिक प्रतिक्रिया देने का आदेश रहता है। प्रतिक्रिया अपने-आप ही होती है, सोच विचार के नहीं। प्रतिक्रिया सदैव अचेतन मन के दबे भाव से अभिसिंचित रहती है। कभी तो प्रयोज्य विभिन्न शब्दों की प्रतिक्रिया मे एक ही शब्द को दोहराता है। 'ओक' शब्द की प्रतिक्रिया मे 'वृक्ष', 'रक्त' की प्रतिक्रिया मे 'वृक्ष' इत्यादि को दोहराया जा सकता है। यह भी सम्भव है कि एक शब्द यदि बार बार कहा जाए तो वह भिन्न-भिन्न प्रतिक्रिया देगा। 'लाल' शब्द के प्रत्युत्तर मे अपराधी एक बार 'पेन्सिल' कहता है और एक बार 'सिपाही'। अपराधी की प्रतिक्रियाएँ सदैव अर्थयुक्त रहती हैं।

परीक्षा के लिए शब्दों की सूची तैयार करना आसान कार्य नहीं। इस प्रकार की समस्याएँ बराबर उठती हैं कि निर्णायक और अनिर्णायक शब्दों को किस अनुपात मे चुना जाए? दोनों प्रकार के शब्दों को एक रूप में किस प्रकार रखें? यदि एक संज्ञा रूप मे है तो दूसरा भी इसी रूप मे हो, एक क्रिया रूप मे है तो दूसरा भी हो।

Work Curve [वर्क कर्व] कार्य वक्र।

कार्य की गति, उसमे वृद्धि-न्यूनता तथा बाधाओं के प्रभाव को प्रदर्शित करनेवाली

वक्ररेखाएँ।

Zeigarnik Effect [जैगारनिक एफक्ट] : जैगार्निक प्रभाव।
देखिए—Tension.

Zoophilia [ज़ूफिलिया] : जन्तुराग।
पशुओं के लिए या किसी विशेष वर्ग के पशु की ओर विकृत आकर्षण।

Zoophobia [ज़ूफोबिया] : जन्तुभीति।
एक प्रकार का भीतिरोग (Phobia) जिसमे पशुओं से या विशेष जाति या वर्ग के पशु से भय लगता है जो वस्तुतः सामान्य रूप से भय उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त नहीं होता।
देखिए—Phobia.